Rāmāyaṇa. - Laṅkākāṇḍa.

रामायण वाल्मीकीय भाषा

رامائن بالمیکی

लंकाकाण्ड



जिसको

सकल हरिभक्त व महात्माओं के रामचरित्र श्रवणार्थ श्री मुन्शी नवलकिशोर अवध समाचार सम्पादक ने अयोध्या संस्कृत पाठशाला के तृतीयाध्यापक श्री पण्डित महेशदत्त जी से संस्कृत वाल्मीकीय रामायण से भाषा में यथा तथ्य उल्था कराया

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

जूलाई सन् १८८३ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८२ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें वेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	महा भारत पर्व्व अलेह-	रामायण रामविलास	रामायण गीतावलीस-
महा भारत	दा भी हैं	रामायण तुलसीकृत	विनय पत्रिका वा·मो-
१- पहिले हिस्सा में-	१-आदि पर्व्व	रामायण सटीक मय मान-	विनय पत्रिका वा·शि-
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२-सभा पर्व्व	सदीपिका कोष आदि	विष्णुपुराण भाषा
वन पर्व्व	३-वन पर्व्व	रामायण तु॰टी॰ सुखदेवक-	लिंग पुराण
२- दूसरे हिस्सा में	४-विराट पर्व्व	तथा जिल्द बँधी	ब्रह्मोत्तरखण्ड
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	भविष्योत्तर पुराण
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६-भीष्म पर्व्व	तसवीर व क्षेपक	वाराह पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	७-द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसीकृत सा-	शुक्र नीति
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	८-कर्ण पर्व्व	तों काण्ड	रसवृष्टि व रसचंद्रोदय
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	९-शल्य पर्व्व व गदा	१-बाल काण्ड	सुदामा चरित्र
योशिक पर्व्व विशोक प-	पर्व्व सौप्तिक मय योशि-	२-अयोध्या काण्ड	कृष्ण गीतावली
र्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व	क व विशोक व स्त्री पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	श्री अनुरागरस
में राज धर्म्म आपद ध-	१०-शान्ति पर्व्व में राज	४-किष्किन्धा काण्ड	सौदागर लीला
र्म्म मोक्ष धर्म्म	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व दान	५-सुन्दर काण्ड	रासलीला
४- चौथे हिस्सा में	धर्म्म	६-लंका काण्ड	भुवनेश भूषण
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	११-अश्वमेध आश्र-	७-उत्तर काण्ड	**नाटक**
अश्वमेध आश्रम वा-	म वासिक मुशल पर्व्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोधचन्द्रोदय
सिक पर्व्व व मौशल पर्व्व	महा प्रस्थान स्वर्गा-	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
व महाप्रस्थान स्वर्गारो-	रोहण	रामायण मानसदीपिका	आनंदरघुनंदन
हण पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२- हरिवंश पर्व्व	रामायण कवितावली	क्षमनाल

श्रीरामोविजयतेतराम् ॥

रामायणवाल्मीकीय भाषा ॥

लङ्काकाण्ड ॥

दो० जलधि सेतु कारण निऋति मारण भारण दास ॥
दरदारण हारण विपति पुरवहिं रघुपति आश १
उदधि सेतुकरि समरहति रावण युत परिवार ॥
जनकसुता सँग अवधलहि रामहरहिं अघबार २
पवनतनय नय विनय युत अनयरहित सुग्रीव ॥
शुभ संगद अंगद सुखद समुद करहु ममजीव ३
जनकसुते शुभगुणयुते विश्वनुते वरदात्रि ॥
मामव भव भवतारिणि रिपुमारिणि शुचिगात्रि ४
श्रीमन्नवलकिशोर भव भव भव भयहृत्तस्य ॥
कमला चपलाऽचञ्चला तिष्ठतु सदने त्वस्य ५

अच्छीतरह कहे हनुमान्‌जीके वचनसुन अति प्रीतियुक्तहो श्रीरामचन्द्रजी बोले १ कि जो कार्य्य हनुमान्‌ने कियाहै वह भूतलमें दुर्लभहै क्योंकि इसमहीतलमें मनसेभी और कोई ऐसाकार्य्य नहीं करसक्ता २ भाई गरुड़ पवन व हनुमान् को छोड़ और किसीको पृथ्वीतलमें हम नहींदेखते जो समुद्र नांघजाय ३ देखो देवता दानव यक्ष गन्धर्व नाग व राक्षस रावणकी पाली लंकापुरीमें कोई जबरदस्ती नहींजासक्ते ४ तिसराक्षसोंसे रक्षित व बड़ेदुःखसे निरादर करनेके योग्य लंकामें बड़े विक्रम के साथ ये बेधड़क पैठगये भला इसतरह कौन पैठसकेगा ५ जोकि वीर्य्य व बलसे हनुमान् की समता न रखताहो कोईभी न पैठ सकेगा भाई सेवकको जैसा कार्य्यकरना चाहिये हनुमान्‌ने अपनेविक्रम के योग्य इसतरह अपना बलकर उससे बहुत अधिक सुग्रीवका कार्य्य करडाला ६ जो सेवक अपने स्वामीकी आज्ञा कठिनकर्म्म करनेकेलिये

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८२ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा (इतिहास)	महा भारत पर्व्व अलेह-	रामायण रासबिलास	रामायण गीतावलीस-
महा भारत	दा भी हैं	रामायण तुलसी कृत	विनयपत्रिका बा-मो-
१- पहिले हिस्सा में-	१-आदि पर्व्व	रामायण सटीकमय मान-	विनय पत्रिका बा-शि-
आदि पर्व्व सभा पर्व्व	२-सभा पर्व्व	स दीपिका कोष आदि	विष्णु पुराण भाषा
वन पर्व्व	३-वन पर्व्व	रामायण तु॰टी॰सुखदेवकृ-	लिंग पुराण
२- दूसरे हिस्सा में	४-विराट् पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	ब्रह्मोत्तरखण्ड
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	५-उद्योग पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की मय	भविष्योत्तर पुराण
भीष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	६-भीष्म पर्व्व	तसवीर व क्षेपक	वाराह पुराण
३- तीसरे हिस्सा में	७-द्रोण पर्व्व	रामायण तुलसीकृत सा-	शुक्र नीति
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व	८-कर्ण पर्व्व	तों काण्ड	रसवृष्टि व रस चंद्रोदय
गदा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	९-शल्य पर्व्व व गदा	१-बाल काण्ड	सुदामा चरित्र
योशिक पर्व्व विशोक प-	पर्व्व सौप्तिक मय योशि-	२-अयोध्या काण्ड	कृष्ण गीतावली
र्व्व स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व	क व विशोक व स्त्री पर्व्व	३-आरण्य काण्ड	श्री अनुरागरस
में राज धर्म्म आपद् ध-	१०-शान्ति पर्व्व में राज	४-किष्किन्धा काण्ड	सौदागर लीला
र्म्म मोक्ष धर्म्म	धर्म्म मोक्ष धर्म्म व दान	५-सुन्दर काण्ड	रासलीला
४- चौथे हिस्सा में	धर्म्म	६-लंका काण्ड	भुवनेश भूषण
शान्ति पर्व्व दान धर्म्म	११-अश्वमेध आश्र-	७-उत्तर काण्ड	**नाटक**
अश्वमेध आश्रम वा-	म वासिक मुशल पर्व्व	रामायण शब्दार्थ कोष	प्रबोध चन्द्रोदय
सिक पर्व्व व मौशल पर्व्व	महा प्रस्थान स्वर्गा-	रामायण का इतिहास	रामाभिषेक
व महा प्रस्थान स्वर्गारो-	रोहण	रामायण मानस दीपिका	आनंद रघुनंदन
हण पर्व्व हरिवंश पर्व्व	१२-हरिवंश पर्व्व	रामायण कवितावली	धमनाल

श्रीरामो विजयतेतराम् ॥

रामायणवाल्मीकीय भाषा॥

लङ्काकाण्ड ॥

दो० जलधि सेतु कारण निकृति मारण भारण दास ॥
दरदारण हारण विपति पुरवहिं रघुपति आश १
उदधि सेतुकरि समरहति रावण युत परिवार ॥
जनकसुता सँग अवधलहि रामहरहिं अघबार २
पवनतनय नय विनय युत अनयरहित सुग्रीव ॥
शुभ संगद अंगद सुखद समुद करहु ममजीव ३
जनकसुते शुभगुणयुते विश्वनुते वरदात्रि ॥
मामव भव भवतारिणि रिपुमारिणि शुचिगात्रि ४
श्रीमन्नवलकिशोर मव भव भव भयहत्तस्य ॥
कमला चपलाऽचञ्चला तिष्ठतु सदने त्वस्य ५

अच्छीतरह कहे हनुमान्‌जीके वचनसुन अति प्रीतियुक्तहो श्रीरामचन्द्रजी बोले १ कि जो कार्य्य हनुमान्‌ने कियाहै वह भूतलमें दुर्ल्लभहै क्योंकि इसमहीतलमें मनसेभी और कोई ऐसाकार्य्य नहीं करसक्ता २ भाई गरुड़ पवन व हनुमान् को छोड़ और किसीको पृथ्वीतलमें हम नहींदेखते जो समुद्र नांघजाय ३ देखो देवता दानव यक्ष गन्धर्व नाग व राक्षस रावणकी पाली लंकापुरीमें कोई जबरदस्ती नहींजासक्ते ४ जिसराक्षसोंसे रक्षित व बड़ेदुःखसे निरादर करनेके योग्य लंकामें बड़े विक्रम के साथ ये बेधड़क पैठगये भला इसतरह कौन पैठसकेगा ५ जोकि वीर्य्य व बलसे हनुमान् की समता न रखताहो कोईभी न पैठ सकेगा भाई सेवकको जैसा कार्य्यकरना चाहिये हनुमान्‌ने अपनेविक्रम के योग्य इसतरह अपना बलकर उससे बहुत अधिक सुग्रीवका कार्य्य करडाला ६ जो सेवक अपने स्वामीकी आज्ञा कठिनकर्म्म करनेकेलिये

पाय उसको बड़ेहर्षसे करताहै तत्वज्ञानी लोग उसे उत्तमपुरुष कहते हैं ७ व जो सेवक उसकार्य्य को करसक्ताहै व सबतरहसे समर्त्थभी है परन्तु जिस कार्यकेलिये स्वामीकी आज्ञाहोती केवल उतनाही करता और कुछ स्वामीका प्रिय नहींकरता उसको तत्वज्ञानी लोग मध्यम पुरुष कहते हैं ८ व जो सेवक उस कार्य्यके करनेमें समर्त्थहै व स्वामी की आज्ञापाय एकाग्रचित्तहो नहीं करता उसे वे लोग अधमपुरुष कहते हैं ९ तिससे देखो जिस सीता दर्शनकेलिये इन हनुमान्‌को आज्ञा हुईथी वह कार्य्य बड़े हर्षसे किया व राक्षसोंके सामने अपना छोटे भी न बने बरन बड़े प्रचण्ड बनेरहे व राक्षसों का निरादर भी किया इसकेलिये आज्ञा नहीं हुईथी परवहां उचित समझ यहभी किया इससे सुग्रीव व तिनके मित्रोंको भी सन्तुष्टकिया ऐसाकार्य्य करनेसे ये अत्युत्तम सेवकोंमें हैं १० व सेवकधर्म्ममें टिक इन्होंने वैदेहीजीको देखनेसे हमारी रघुबंशकी व महाबलवान् लक्ष्मणकी भी रक्षा की ११ अब इस समय ऐसा प्रियबचन कहनेवाले इन हनुमान्‌को जो हम इसकेयोग्य प्रियनहीं करसक्ते यह हमको बहुतखेद कराताहै क्याकहें १२ अब औरपदार्त्थ तो कोई इसके योग्य विद्यमानही नहीं जो दें हाँ यह अपना सर्व्व धनरूप छपटकर मिलना बस महात्मा हनुमान्‌को यही देतेहैं १३ यहकह श्री रामचन्द्रजी कार्य्य करके आयेहुये हनुमान्‌जीको प्रसन्नहो अच्छीतरह लपटकर मिले १४ व कुछदेरतक बिचारकर बानरोंके स्वामी सुग्रीवको भी सुनाय फिर यहबोले १५ कि यद्यपि हनुमान्‌ने अच्छीतरह सीताको ढूंढ़ा तथापि अब समुद्रनांघनेकी सुधिकर सीताके मिलनेकी ओरसे फिर हमारामन निराश हुआजाताहै १६ क्योंकि इसअपार अतिजलसमुद्रके दक्षिणपारको यहांसेजाय बानरलोग कैसेपहूंचेंगे १७ यद्यपि हनुमान् ने जानकीका यहवृत्तान्त आय हमसेकहा परन्तु बानरोंको समुद्रके उस पार जानेकेलिये कौनउत्तरहै १८ शत्रुओंको मारनेवाले श्रीरामचन्द्रजी इसतरहशोकसे सन्तप्तहो हनुमान्‌जीसेयहकह फिर कुछशोचनेलगे १९॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेप्रथमस्सर्ग्गः ॥ १॥

महाराजाधिराज दशरथजीकेपुत्र श्रीरामचन्द्रजीको इसतरह शोकसे

व्याकुलदेख श्रीमान् सुग्रीवजी शोकनाशकरनेवाला बचनबोले १ हे बीर आप प्राकृतीमनुष्योंके समान क्या बिषाद करते हैं ऐसे शोकाकुल न हूजिये जैसे उपकार न माननेवाला पुरुष सौहृद छोड़देता वैसेही शोक छोड़दीजिये २ हे राघव अब सीताजीके समाचारपाय व बैरीका स्थान जान आपके सन्तापका स्थान हमतो कुछभी नहींदेखते यहशोकका समय है कि खुशीहोनेका ३ हे राघव आपतो बड़ेबुद्धिमान् शास्त्रवेद जानने वाले बड़े प्राज्ञ व महापण्डित हैं फिर इस प्राकृती बुद्धिको छोड़दीजिये जैसे ब्रह्मज्ञानी अपनाको दूषणकरनेवाली प्राकृतीबुद्धिको छोड़देताहै ४ हमलोग महामीन व नाक मगर आदिसे भरे समुद्र को नाँघ लङ्काको चलेजायँगे व आपके शत्रुको मारडालेंगे ५ जो पुरुष उत्साहरहित दीन व शोककेमारे सदाव्याकुल बनारहता है उसके सबप्रयोजन नष्ट होजातेहैं व वह अधिक दुःखी होताहै ६ देखिये ये बड़ेशूर समर्थ व सबकहीं जानेमेंउद्यत बानर आपकेलिये ऐसाउत्साहकियेहैं कि कहिये तो अग्निमें भी पैठजायँ ७ यहबात हम इनलोगोंके हर्षसे जानतेहैं व इसविषयमें अनुमान भी हमारापुष्टहै इससेअबजैसाकरनेसे शत्रुकोमार विक्रमसे सीताजीकोलाव व पापी रावण सपरिवार माराजाय आपवैसाही करनेकेयोग्यहैं ८ हे राघव अबजिससे समुद्रमें सेतुबँधे व लङ्कापुरी सबजनदेखें आपवैसाकरनेके योग्यहैं ९ बस त्रिकूटपर्ब्बतपर बसी लङ्कापुरी जैसेहीदेखपड़ी कि युद्धमें रावणको माराहीसमझिये १० व बिनाइसघोर बरुणालय सागरमें सेतुबाँधे इंद्रादिदेवता व सब दैत्यभी लंकाकी भूमिनहींगोंजसक्ते ११ व जैसेही लङ्काकेसमीपसमुद्रमेंसेतुबँध गया तैसेही सबसैन्य उतरजायगी बस रावणको माराहीजानो १२ क्योंकि ये यथेष्टरूपधारी बानरबीर तैसेहीहैं समरमें क्या किसीकीगतिहै जो इनसेसामनाकरे १३ तिससे हे राजन् सबअर्थ नाशनेवाली यह व्याकुलबुद्धिछोड़ो क्योंकि इससे इसलोकमें पुरुषकी बड़ीनिन्दाहोती व शोकतोजानो सबशूरताको खींचहीलेताहै १४ व जो तुरंत शूरताका कार्य्य मनुष्यकरताहै वह करनेवालेका भूषणहोजाताहै १५ जिससे कि आपसरिखेशूर व महात्मालोगोंकाखराबहोगये व खोगयेपदार्थमें शोक करना सब अर्थोंका नाशक होताहै इससे अब इससमय परमतेजस्वी

आपधैर्य्यकरो १६ क्योंकि आपंतो बुद्धिमानोंमेंश्रेष्ठ व सबशास्त्रोंके अर्थ जाननेमें चतुरहो हमसरीखे मन्त्रियोंकेसाथ शत्रुकोजीतलो १७ क्योंकि हे राघव हमतीनोंलोकोंमें ऐसाकिसी को नहींदेखते जो धनुषलिये हुये आपकेसामने रणमें खड़ारहे १८ व जो आपकाकार्य्य बानरोंके सिपुर्द होगा वहकभी न नष्टहोगा इससे अपार समुद्रउतर शीघ्रही सीताजीको देखोगे १९ जिससे कि उचित समय परभी क्रोध न करनेवाले क्षत्रिय मन्द होतेहैं व उचित समयपर क्रोधकरनेवाले से सब डरते हैं तिससे शोककरनेसे कुछभी कामनहीं आपक्रोध कीजिये २० व हमलोगोंके साथ इसघोर समुद्र के नाँघनेकेलिये सूक्ष्मबुद्धिकर बिचारकीजिये २१ व समुद्रनाँघजानेपर रावणकीसेना हमारीसेनासे मारीहीपड़ी समझिये इससेसमुद्र उतरीहुई हमारी सेनाको जीतीहीहुई समझिये २२ क्योंकि॥

चौ० समरशूर अरु इच्छाचारी। ये सब बानर सब गुणकारी ॥ शिला वृक्ष नानायुध धारी। रिपुगण मरिहैं समरप्रचारी १। २३ कौनिउँ भाँति जलधिके पारा। सैन्यजाय असकरिय बिचारा॥ तौ रणमहँ समझिय रिपुमारा। शत्रु निवर्हण रामउदारा २। २४ बहुत कहे कुछनहिं रघुबीरा। सबबिधि तुम बिजयी रणधीरा॥ लषत निमित्त सकल यहि तीरा। अरुप्रसन्न मनगत सबपीरा ३। २५॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुद्धकाण्डेद्वितीयस्सर्ग्गः॥ २॥

हेतुसहित व परमार्त्थयुक्त सुग्रीवजीके बचनसुन श्रीरामचन्द्रजी ने अङ्गीकार किये व फिर वे हनुमान्‌जीसे बोले १ कि हम अपने तेजसे समुद्रमें सेतु बांधसक्तेहैं व नहींतो सागरको सुखा भी करसक्ते हैं इससे सबतरहसे हम इससमुद्रको नांघजानेमें समर्त्थ हैं इसबातकी कुछ शङ्का नहीं २ अब यहबताओ कि उस दुर्ग्गम लङ्कामें किले कितने हैं उनको हम तुम्हारे कहनेसे यहीं बैठेबैठे जानना चाहतेहैं ३ व वहांसेना कितनी है व द्वारोंमें कठिनतासे जानेकेलिये खावांआदि कितनेहैं व लङ्काकी रक्षा करनेकेलिये कितनी व कैसीऊँची चौड़ी छहरदीवारी व शहरपनाह आदि हैं व राक्षसोंके मन्दिर कितनेहोंगे ४ सुखपूर्व्वक लङ्कामें जैसाकुछ तुमने देखाहो सब हमसे कहो क्योंकि तुम सबतरहसे कुशलहो ५ श्रीरामचंद्र

जीके बचनसुन पवनकेपुत्र हनुमान्‌जी बाक्यजाननेवालोंमें श्रेष्ठतो थेही श्रीरामचन्द्रजीसे फिरबोले ६ कि सुनिये लङ्कापुरी जिसतरहसे बड़ी सेनासे रक्षितहै व उसमें जिसतरह क़िलाबन्दीहै सबकहतेहैं ७ व जिस तरह रावणके तेजसे राक्षसोंका स्नेहकियाजाता व जैसीलङ्काकी समृद्धि है व जैसा समुद्र भयानकहै ८ व जैसा सेनासमूहका बिभागहै व जितने बाहन वहांहैं सब कहतेहैं यहकह बानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान्‌जी कहनेलगे क्योंकि वहांके समाचार तो वे रत्तीरत्ती जानतेही थे ९ लङ्कापुरी हर्षित राक्षसोंसे भरीहै व मतवाले हाथियोंसे पूर्णहै बहुत रथोंसे भी सम्पूर्णहै राक्षसों की तो जानों राशिही वहांहै १० व बड़ेमज़बूत किवाड़ सरर जँजीरलगे बड़ेभारी चार फाटक उस पुरीमें हैं ११ उन फाटकोंमें बाण पत्थर व अन्य बड़ेबड़े यंत्र ऐसेलगेहैं कि वहां आईहुई सेना उनसे रुँक जातीहै १२ व उन्हींफाटकोंके सामने बहुत अच्छी मलीदली व पैनी व महाभयङ्कर हज़ारों शतघ्नी नाम अस्त्र धरेहैं इनको बीर राक्षसोंने ऐसी युक्तिसे बनायाहै कि थोड़ेसे महारे में दूरहीसे लक्षों मनुष्य उनसे मर-जातेहैं १३ व उसलङ्काका मणि मूंगा वैदूर्य्यमणि व मोतीजटित सुवर्ण का बड़ाभारी प्राकारहै जिसकेपार बड़ेदुःखसे कोईकोई जासक्ताहै १४ उसप्राकार अर्थात् शहरपनाहकी सबओर शीतजलभरा अथाहपनिया सोते व बड़े घड़ियाल मगर व बड़ेबड़े मच्छरोंसे पूर्ण महाभयङ्करखावां है १५ व चारोंफाटकोंके सामने आनेजानेकेलिये उसखावांमें बड़ेलम्बेचौड़े चारमञ्चानारूप संक्रमबनेहैं इनकेऊपर शतघ्नीआदि बहुत अस्त्रशस्त्र धरे हैं व बहुतमकान युद्धकरनेके उपयोगी इधरउधर बनेहैं जिनपर मारूतोपें लगीहैं १६ जब शत्रुकीसेना वहां फाटकोंके सामनेतक दौड़दौड़कर पहुंचती है व आय उनसंक्रमों पर चढ़तीहै तो उनमें जो कलेंलगीहैं उनसे वहसेना खावाँमें गिरपड़तीहै इसतरह वे संक्रमपुरी की रक्षा करते हैं १७ इनके सिवाय एक बड़ापुष्ट व बड़ा मज़बूत संक्रम सोनेके खम्भों व वेदियों से शोभित बनाहै यह किसीतरह शत्रुकी सेनासे कँपनहींसक्ता रावण उसी मार्गहोकर आताजाताहै औरोंकी नहीं १८ हे रामचन्द्रजी यद्यपि रावण सदा मदिरापान कियेरहता परंतु युद्धकरनेकेलिये सदा तैयाररहता सेना को जैसेही देखताबड़ी सावधानीके साथलड़नेपर उतारू होजाता १९ व

लङ्का पर्व्वतके ऊँचेपर होनेसे किसीओरसे चढ़जानेके योग्यनहीं क्योंकि उसके बाहरकी भूमि ऐसी चिकनी है कि पैरही नहीं ठहरता फिसिल पड़ताहै इससे देवताओंको भी दुर्ग्गम है व शत्रुओंको भय पहुंचानेवाली है व नादेय पार्व्वत वान्य व कृत्रिम चारतरह के वहांक़िले हैं नादेय वह जिसकी सबओरसे अथाह व भयकंर नदीभरीहो व पार्व्वत वह जो दुर्ग्गम पर्व्वतके बीचमेंहो व वान्य वह जिसकी सबओर दुर्ग्गम बनहो व कृत्रिम वह जिसे राक्षसोंने शहरपनाह खावाँआदिसे दुर्ग्गम बनाया था २० हेराघव इसतरहकी लंकापुरी बड़ीदूर फाटवाले समुद्र के उस पारहै इससमुद्र में नावभी नहीं चलसक्ती इससे वहांकिसीका सन्देश भी नहीं पहुंचसक्ता २१ व वह पर्व्वत के शृंगपर बसीहै इससे अति दुर्ग्गमहै व घोड़े हाथियोंसे सम्पूर्णाहै इससे इन्द्रपुरीसे कुछ कमनहींहै व शत्रुओंसे तो बड़ेदुःखसे जीतनेके योग्यहै २२ व दुष्टात्मा रावण की यह लंकापुरी खावाँ शतघ्नी व अन्य तोपआदि बड़ेबड़े यन्त्रोंसे शोभित होतीहै २३ इसलंका के पूर्व्ववाले फाटकपर शूलखड्गादि अस्त्रलिये बड़े दुर्द्धर्ष दशहजार राक्षस रात्रिदिन तैयार खड़े रहतेहैं २४ व दक्षिणके फाटकपर इससमय चतुरंगिनी सेनासहित बड़ेदुर्ज्जय लाषराक्षसहैं २५ व ढाल तलवारलिये सबअस्त्र शस्त्रमें बड़ेचतुर दशलाष राक्षस पश्चिम के फाटकपर रहतेहैं २६ रथ घोड़ोंपर सवार घरैया राक्षस जिनकी रावण के यहां बड़ी खातिरहै ऐसे किरोड़ राक्षस उत्तरके फाटकपर रहतेहैं २७ व लंकाके बीचवाले पड़ावपर एक किरोड़ छब्बिस लाष राक्षस युद्धकरनेमें बड़े कुशल रहतेहैं २८ परन्तु फाटकों के आगे जो पांचसंक्रम आने जानेकेलिये खावाँकेऊपर पटेबनेथे हमने सबतोड़डाले व खांवांभी सब पाटडाला व रत्तीरत्ती सब लंकापुरी जलाडाली व सब शहरपनाह खोदकरबहादी उसीसेतो खावांपटाथा २९ व जितनीसेना लंकामेंथी उसकी चौथाई तो हम मारआये रहा अब जिसकिसी मार्ग्ग की बनपड़े समुद्र उतरचलिये बस लंकापुरी वानरोंसे मारीहीसमझिये ३० सोभी बड़ीसेना लेजानेका कुछकार्य नहींहै केवल ॥

अंगद द्विविद मैन्द नलनीला । जाम्बवान पुनि पनस सुशीला ॥
अरु सुग्रीव चलहिं तवसाथा । औरन्ह काकरिहहु रघुनाथा १ । ३१

ये सबकूदि जलधिके पारा । लंकहि जाहिंकरहिं नहिंवारा ॥ पर्व्वतबन परिखा तोरणयुत । लंका भञ्जहिं हतहिं रिपुनसुत २ । ३९ सहित प्रकार भवन सब तोड़ैं । इमिसोपुरी भलीविधि गोड़ैं ॥ शुभ मुहूर्त महँ करहु तयारी । जनक सुतहि लावहिं कपिझारी ३ । ३३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेतृतीयस्सर्ग्गः ॥ ३ ॥

हनुमान्जीके बचन यथाक्रमसुन सत्य पराक्रम व महातेजस्वी श्रीरा-चन्द्रजी बोले १ हेपवनसुत भयंकर राक्षसकी जिसपुरीको विध्वंसकरने को कहतेहो उसे हमशीघ्रही नष्टभ्रष्ट करदेंगे तुमसे यह सत्यही कहते हैं २ हेसुग्रीव इससमय सूर्य मध्यमेंटिकेहैं इससे विजयकारक मुहूर्त्तहै इसीमें हमारी यात्राहोतीहै इसेतुमभी प्रसन्नकरो ३ सीताकोहर अपनी रक्षाकेलिये अब जहांचाहे वहां दुष्ट रावणजाय परन्तु जो जीताबनाहै तो कहांजावेगा मारहीडालेंगे व शकुनआदिसे हमारी यात्राजान सीता जीनेकी आशाकरेंगी जैसे विषपीकर मराप्राणी अमृतछू जीनेकी आशा करताहै ४ हेसुग्रीव आज उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रहै व प्रातःकाल हस्त होगा इससेमुहूर्त्त बहुत अच्छाहै अबसब सेनासंगलेआवो सबजनेचलें ५ जो कारण शुभशकुनों से इससमय दिखाईदेतेहैं उनसे यही दिखाई देताहैकि रावणकोमार जानकीकोलावेंगे ६ क्योंकि हमारे दहिनेनेत्रका ऊपर फरकताहै व हमारा विजयरूप मनोरथ कहताही साहै ७ राम-चन्द्रजीके ऐसाकहनेके अनन्तर सुग्रीव व लक्ष्मणजीने बड़ाईकी तबअर्थ जाननेमें बड़े निपुण श्रीरामचन्द्रजी फिरबोले ८ कि हजारोंलाखों वेग-वान् वानरोंकोसंगले नलइससेनाके आगेचलें जिसमें मार्ग्गअच्छीतरह देखरक्खें ९ हेनील जिसमार्ग्ग में फलमूल व शीतलजल सघनबन व सीधुमधुहो उसीकीसेना शीघ्रलेचलो १० व दुष्टात्मा राक्षसमार्ग्ग में फलमूल सबखराब करडालेंगे इससेउनसे सदा फलादिकोंकी रक्षा कियेरहना ११ बनोंमेंजहां नारखोर नीचीजमीनहो वहां वानरलोग पैठपैठ देखलियाकरें कि कहीं शत्रुकीसेनातो गाढ़दिये नहींबैठीहै १२ जोकुछ थोड़ीसेनाहो वह किष्किन्धामें रहनेदो व बाकीसबसेना लेचलो क्योंकि हमारायह कार्य्यबड़ाभारीहै बड़ीसेनासेहोगा वहभी बड़ाबिक्रम करनेसे कुछसहलमेंनहीं १३ हेमहाबल वानरसिंहो तुमसैकरों व हजारों

आगेआगे चलसमुद्रके जलकेसमान बड़ीभारी सेनाको आगेको बढ़ाते जावो १४ व पर्व्वताकार गजनामबानर व महाबली गवयव व गवाक्ष येतीनोंसेनाके आग आगेचलें जैसेसब गायबैलोंकेसमूहके आगे सांड़चलताहै १५ व कूदनेवालों में बड़ा श्रेष्ठ ऋषभनाम बानर सेनाके दहिने दहिने रक्षाकरताहुआचले १६ व मतवालेहाथीके समान बेगवान् गन्धमादननामबानर सेनाकी बाईं ओर रखाता हुआ चले १७ व सबसेनासमूह को हर्षित करातेहुये हम हनुमान् की पीठपरचढ़ सेनाके बीचमें चलेंगे १८ व यमराजके सम कोपकिये लक्ष्मणजी अङ्गद की पीठपर चढ़चलें जैसे सार्व्वभौम नाम अपने हाथीपरचढ़ कुबेरजी चलते हैं १९ व जाम्बवान् सुषेण व महाबाहु वेगदर्शी बानर ये तीनोंसेनाके पश्चाद्भागकी रक्षाकरतेचलें २० रामचन्द्रजीके बचनसुन सेनाभर के पति सुग्रीवजी ने बानरों को आज्ञादी २१ तब वे महापराक्रमी सब बानर गुहाओंसे व पर्व्वतोंके कँगूरोंपरसेकूदे २२ तब सुग्रीव लक्ष्मणसेपूजित धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी सेनासहित दक्षिणदिशाकोचले २३ व हाथियोंकेसमान सैकरों हज़ारों लाखों किड़ोरों बानरोंको संगले रामचंद्रजी चले २४ व तिनकेपीछेपीछे बानरोंकी बड़ीभारी सेनाचली २५ उससेना के सबबानर सुग्रीवसे पालित कूदते फाँदते व गर्ज्जतेचले २६ इसतरह फलखाते मधुपीते व नादकरते दक्षिण दिशाको चले २७ व मंजरी पुंज धारी वृक्षोंकोउखाड़ अपने ऊपर नीलकेलियेलाद आपसमें एकदूसरेके ऊपर पुष्पादि फेंकतहुयेचले २८ कोईकोई तो कूदकूदपरते कोई औरोंके ऊपरकूदते व रामचन्द्रजी के समीपजाय यही कहकह गर्ज्जते कि भाई हमको रावण मारनाहै २९ उससेनाके आगेआगे ऋषभ नील व कुमुद वीर ये सबमार्ग्ग शोधतेचलेजाते ३० व बीचमें बड़ेबली भयङ्कर बहुत बानरोंसेघिरे राजासुग्रीव व श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीचले ३१ व शतबलिनामबानर दशकिड़ोर बानर अपने संगलिये व सबसेनाकी रक्षाकरताहुआचला ३२ केसरी व पनस दोबानर अर्व्वबानरोंका परिवारसङ्गलिये उससेनाके दहिने परचले व गज व अर्कनामबानर बहुत बानर अपने संगलिये उसकी बाईंओर रखातेहुये चले ३३ सुषेण व जाम्बवान् ये दोनोंबानर बहुत ऋक्षोंको अपने सङ्गलिये सुग्रीवजीको

आगेकिये सेनाकेपश्चाद्भागकी रक्षाकरते जातेथे ३४ व उन शतवल्यादि वानरोंकीसेनाको मार्गके ग्रामोंको पीड़ा न होनेपावे इसलिये नीलनाम सेनापति रोंकताथा कोई किसीको दिक्कनहीं करनेपाताथा ३५ व दरीमुख प्रजङ्घ जङ्घ व रभसनाम बानर ये बीर सेनाकी सबओर चलते व सबको जल्दीके साथ चलाते ३६ इसतरह हमारेबलसे अहंकारयुक्त बानर चले जातेथे जातेजाते सैकरोंपर्ब्बतोंके बीचमें सह्यनाम पर्ब्बतदेखा ३७ कमल फूलेहुये बहुतसेसर व तडागभीदेखे व रामचन्द्रजीकी अतिभयङ्कर आज्ञा पाय नीलने सबकोरोंकदिया कि खबरदार कोई मार्गके ग्रामोंमें विद्दत नकरे ६ यहसुन डरतीहुई सबसेना ३८ नगर राज्य व गह्विने बसेदेश बराय बराय भयङ्करवेग समुद्रकेसमान भयकरातीहुई चलीजातीथी ३९ यही विदितहोताथा कि यहसेना नहींहै भयङ्कर शब्दकरता समुद्र उफ-लाया चलाजाताहै व उन रामचन्द्रजीके समीप समीप बड़ेशूरबीर वे बानर ४० अच्छेघोड़ोंके समान चलेजातेथे ४१ व हनुमानजीके ऊपर सबार श्रीरामचन्द्रजी व अंगदके ऊपर लक्ष्मणजी दोनोंपुरुषश्रेष्ठ महा-ग्रहोंसे छुये चन्द्रमा व सूर्यकेसमान शोभितहुये ४२ व तिसकेपीछे मार्ग के किसीपड़ावपरसे सुग्रीव व लक्ष्मणसे पूजित सहितसेना श्रीरामचन्द्र जी फिरचले ४३ अंगदकेऊपर सवार बड़ेस्मरण करनेवाले व बड़ेवितर्क करनेवाले लक्ष्मणजी सबतरहसे परिपूर्णार्थ वाले श्रीरामचन्द्रजीसे मधुरवाणीसे बोले ४४ कि रावणको समरमें मार हरीहुई वैदेहीजीको पाय अपनेअर्थ सिद्धकर अर्थसिद्ध अयोध्यापुरीको शीघ्रहीजावोगे ४५ क्योंकि तुम्हाराअर्थ सिद्धहोनेकेलिये आकाश व भूतलमें बहुतसे उत्तम कारण इससमय देखपड़तेहैं ४६ देखो पवन बहुत कोमलहित व सुख-कारी व सेनाकेअनुकूल बहताहै व ये सबमृगगण व पक्षी बड़ीसुहावनी बोलीबोलतेहैं ४७ व सबदिशा प्रसन्नहैं सूर्यविमल उयेहैं व शुक्रजीभी बहुतसाफहो तुम्हारेपीछे उयेहैं सम्मुख व दहिने नहींहैं ४८ व ध्रुवजी भी बहुत प्रकाशित उदितहैं व सब सातोऋषि उनकी प्रदक्षिणा कररहे हैं ४९ व हमलोग इक्ष्वाकुबंशियोंके पितामह त्रिशंकुराजर्षि विमलहो अपने पुरोहित बिश्वामित्रजीके साथ हमलोगोंके आगेउदितहैं ५० व हमलोग महात्मा इक्ष्वाकुबंशियोंका नक्षत्र विशाखा विमल व ग्रहा-

कान्ति रहितहो उदितहैं ५१ व राक्षसोंका नक्षत्रमूल आजकल धूमकेतु ग्रहसेपीड़ितहै इससे राक्षसोंकी पराजय अवश्यहोगी ५२ क्योंकि यह सब राक्षसों के विनाशहीके लियेहै राक्षस कालकेवशमें पड़ेहैं इसीसे उनका नक्षत्र केतु ग्रहसे पीड़ितहै ५३ व जलसाफ व मीठा होगयाहै बन सब फूलफल हैं व पवन जितना हमलोगोंको सुहाताहै उतनाही बहताहै व वृक्षोंमें बिनासमय फूल फूलउठेहैं ५४ व जिसतरह तारकामययुद्धमें देवताओंकी सेना प्रकाशितहुईथी वैसेही इससमय वानरोंकी सेना प्रकाशित होतीहै ५५ हेआर्य इनसब निमित्तोंकोदेख आप हर्षित होनेके योग्यहैं इसतरह प्रसन्नहो लक्ष्मणजीने अपने भाईसेकहा ५६ इसतरह वानरोंकीसेना बहुतदूर चलीगई ५७ व नखदांत आयुधवाले ऋक्ष व वानरशार्दूलोंके नहोंसे उठीहुईधूलिने ५८ सूर्यकीप्रभा आच्छादित करली व लोकमें अँधियारी छागई व वानरोंकीसेनाने पर्व्वत बन सहित दक्षिणदिशाको मूंदलिया ५९ जैसे बड़ा भयंकर सघन बादर आकाशको ढांकलेता है जब बहुत योजनोंतक निरन्तर वानरोंकी सेना उतरनेलगी ६० तो उनके खलभलवानेसे नदियां और जोरसे बहनेलगीं वहसेना बड़े अगाधतड़ागों व बहुत वृक्षलगे पर्व्वतोंपर ६१ व समदेशों में व फलबनोंमें होकर ऊंचेनीचे तिरछी सीधी सबओरसे व सब तरहसे चलीजाती ६२ इसतरह सबपृथ्वी में घूमती घामती चलीजाती व सब पवन सम वेगसे चलनेवाले वानर हर्षित चलेजाते ६३ व सब वानर श्रीराघवके अर्थ अच्छीतरह विक्रम करतेजाते व परस्पर हर्ष बीर्य व बलाधिक्य दिखातेजाते व युवावस्थाके घमण्डसे मार्ग्गमें विविध तरह की क्रीड़ा करतेजाते उनमेंकोई तो बड़ीशीघ्रतासे चलते व कोई उछलते हुये चलते ६४ कोई किलकिलाते कोई वानर अपनी पूंछ ऊपरको उठा फिरपटकते कोई अपनेपांव पटकते ६५ कोई भुजाफैलाय वृक्ष व पर्वत उखाड़ तोड़फोड़ डालते कोई कोई कूद कूद पर्व्वतोंके शृङ्गोंपर चढ़जाते ६६ कोई बड़ेजोरसे चिल्लाते कोई हँसौआ करते व कोई कोई अपनी जांघोंकेवेगसे लतासमूहोंको मींजेडालते ६७ कोईकोई जँभुआते व विक्रमसे शिलावृक्षादि उखाड़ बहायबहाय क्रीड़ाकरते तिन सैकरों हजारों लाखों किड़ोरों अर्व्वां खर्व्वां वानरोंसे ६८ पृथ्वी पूर्णहोगई व वहवान-

रोंकी सेना खातीपीती रात्रिदिन बराबर चलीजाती कहीं विश्राम नहीं करती ६९ सुग्रीव इसतरह उनका पालन करतेथे कि वे सब हर्षितचित्त युद्ध करने की इच्छासे चलेजाते ७० सीताजी के छुड़ानेकी इच्छाकिये जातेथे इससे रात्रिदिन कहीं क्षणमात्रकोभी नहींठहरतेथे ७१ इसतरह जालेजाते नानाप्रकारके वृक्षलगेहुये सह्यपर्वतके ऊपर सबवानर पहुंच व कूदकूद चढ़ ७२ व सह्य व मलय दोनोंपर्वतोंपर की नदियां व निर्झर आदि देखते भालते श्रीरामचन्द्रजी चलेजातेथे ७३ व उन पर्वतोंपरके चम्पक तिलक आम्र प्रसेक सिन्दुवार तिमिश करवीरादिवृक्ष वानरलोग तोड़ते चलेजाते ७४ व अशोक करञ्ज प्लक्ष न्यग्रोध जम्बुक आमलक पुन्नागादि वृक्षोंकोभी तोड़ते फाड़ते चलेजाते ७५ व अच्छेअच्छे पत्थरों पर चलेजाते व बैठगयेहुयेभी वानरोंके ऊपर बनकेवृक्ष फूलबरसातेथे ७६ व बनोंमें ठौरठौर भ्रमर गुंजरहेथे शीतलमन्द सुगन्ध पवन बहताथा जिसके लगने से सबको सुखहोता ७७ वह पर्वतराज धातुओंसे अधिक विभूषितथा इससे वायुकेवेगसे धातुओंके झड़जानेसे ऐसीधूलि उठी ७८ कि उसने वानरोंकी सेनाको मूंदलिया क्योंकि उसपर्वत पर सबओरसे ७९ केतकी सिन्दुवार वासन्ती माधवी व कुन्दकी झाड़ियां फूलरहींथीं ८० व चिलौल महुआ झाऊ वाकुल रजक तिलक व नाग वृक्ष फूलरहे थे ८१ व आम पाड़रडांड़ कोविदार मुचुकुन्द अर्ज्जुन शिंशपा कुरैया आदिवृक्ष फूले महकरहेथे ८२ व हिन्ताल तिमिश चूर्णककदम्ब नील अशोक सांखू अंकोल पद्मक ८३ ये पुष्प सहित वृक्ष सबहर्षित वानरोंसे पर्य्याकुल होगये व उसरम्य पर्वतपर रम्य बावियां व छोटीछोटी तलैयां ८४ थीं जिनमें चकई चकवा पक्षी बैठेथे व राजहंस भी बैठेबोलतेथे प्लवक्रौञ्चादि औरभी पक्षी मधुरबोली बोलतेथे व बराह मृगादि सब बनोंमें घूमरहेथे ८५ ऋक्ष व्याघ्र सिंह शार्दूल सर्पआदि भयंकरजन्तुओंसे सबओरसे सेवित ८६ व फूले कमलदल व नानाप्रकारके पुष्पोंसे बहुतरम्य सब वहांके जलाशय होरहेथे ८७ व जिसतिस पर्व्वतके ऊपर नानाप्रकारके पक्षी बोलाकरते तिनमें स्नानकर वानरलोग क्रीड़ाकरनेलगे ८८ व सबवानर पर्व्वतपर चढ़ एकदूसरेको ढकेलनेलगे व वृक्षोंके अमृतवत् मीठे व सुगन्धितपुष्प फल व मूल तोड़

तोड़ बहाने व खानेलगे ८६ व सब जहांतहां वृक्षोंमें लटकगये व मधु पीतेहुये स्वस्थचित्तहो आगेकोबढ़े ९० जिधरजाते वृक्षोंको तोड़ते लताओंको घसीटते व पर्ब्बतोंको धमकाते चलेजाते ९१ व बहुत बानर मधु पीनेसे दर्प्पितहो वृक्षोंपरसे औरवृक्षोंपर कूदजाते व बहुतदेरतक मधुपानही करतेरहते ९२ उनवानरोंसे पृथ्वी पूर्ण होगई जैसे जड़हनधान से पूर्णहोजातीहै ९३ फिर महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी महेन्द्राचलपर पहुंचे व वृक्षोंसे भूषित उसके शिखरपरचढ़े ९४ व उसकेशिखरपर अच्छीतरह चढ़ कछुआ मछली मगरआदि जीवोंसे भरा एक जलाशय देखा ९५ व उनसब श्रीरामादिकों ने सह्य व मलय पर्ब्बतको नांघ भयंकर शब्दयुक्त समुद्रदेखा ९६ व महेन्द्राचलकी तराईमें पहुंच समुद्रके किनारेके बनमें श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीव व लक्ष्मणसहित पहुंचे९७ व समुद्रकी लहरोंसे धोये समुद्रतटपर पहुंच श्रीरामचन्द्रजी बोले ९८ कि हे सुग्रीव अबतो हमलोग समुद्रके तीर पहुंचगये पर यहां वही चिन्ता फिरहुई जो प्रथम हुईथी ९९ यहांसेआगे अब समुद्रहोसमुद्रहै बिनाउपाय इस किसीतरह नहीं उतरसक्ते १०० तिससे अब यहींसबलोग बैठें व सलाहहो जिसमें यह बानरोंकी सेना समुद्रके उसपार जावे १०१ सीताजीके बिरहसे दुर्ब्बल महाबाहु श्रीरामचन्द्रजीने इसहेतु वहां सेनाटिकनेकेलिये आज्ञा दी १०२ हे बानरश्रेष्ठ सबसेना समुद्रके किनारेपर टिकादो व हमलोगों का यह सलाह करनेका समयहै इससे समुद्रउतरनेकेलिये सम्मत करें १०३ व अपनी अपनी सेनाछोड़ कोईकहीं अलग न जावे व हमलोगों को राक्षसोंसे यहां गुप्तभयहै इससे कुछ शूरबीर बानर सेनाकी चारोंओर घूमतेहुये उसे देखतेरहें कि किधरसे कौन भय आतीहै १०४ रामचन्द्र जीके बचनसुन लक्ष्मणसहित सुग्रीवजीने नानाप्रकारके वृक्षलगे समुद्र के किनारे सब सेनाओंको टिकादिया १०५ समुद्रके किनारेपर टिकने से वहसैन्य मधुसम धूसर रङ्गकेजलके दूसरे समुद्रही के समान शोभित हुई १०६ समुद्रके किनारेके बनकोपाय सागरके उसपार जानेकीइच्छा किये सब वानरलोग बैठे १०७ तहांबैठेहुये सैन्योंके सन्नहटके शब्दको मूंद समुद्रका बड़ाभारीनाद सुनाईदेनेलगा १०८ सुग्रीवकी पाली वह वानरोंकी सेना तीनभागहो वहांपड़ी व रामचन्द्रजीके अर्थमें तत्परहुई

१०९ समुद्रके तीरपर टिकी वह वानरोंकी सेना वायुके बेगसे अधिक लहरें लेतेहुये समुद्रको देखनेलगी ११० व दूरपारवाले व राक्षस सेवित सागरको देखतेहुये वानर वहांबैठे १११ जो सागर बड़ेबड़े नाके घड़ियालोंसे भयंकर व सन्ध्या प्रातःकालमें फेनोंसे जानों हँसरहा था व लहरोंसे नाचताथा ११२ व चन्द्रोदय होनेपर चन्द्रमाकी ओरको उफलाता चलाजाताथा व प्रचण्डपवनके समान अन्यजन्तुओंको पकड़ने के लिये दौड़तेहुये तिमि व तिमिङ्गिलादि मत्स्योंसे युक्तथा ११३ ॥

चौ० शतयोजनकर तिमिअस नामा। मत्स्य जलधिमहँ रहत ललामा ॥ त्यहिजो लीलसकै तानामा। अहै तिमिङ्गिल युत सबसामा १ बहुरि तिमिङ्गिल कहँ जो खाई। कहत तिमिङ्गिल गिल त्यहिभाई ॥ राघवनाम मत्स्य तहँरहई। भखत तिमिङ्गिल गिलकहँअहई २ ॥

व प्रकाशित फणवाले सर्प्पोंसे युक्त व अन्य जलचरजीवोंसे भरा इसीसे मार्ग्गरहित इसीसे किसीके भी जानेके अयोग्य व असुरों का स्थान ११४ व नानाप्रकारके पर्व्वतोंसे युक्त ऐसे समुद्रको देखतेहुये वानर वहां बैठे व उसमें मगर व सर्प्पोंके अंगोंसे युक्त पवनके बेगसे चलतीहुई ११५ बड़ीभारी लहरें उठतीं व गिरतीथीं व मणियोंसे प्रकाशित जलके सर्प्पोंसे युक्त इसीसे सदा भयंकर पाताल पर्य्यंत स्थापित सागरमें छोड़ाहुआ वहविष अग्निकी चिनगारियोंके तुल्य विदित होता था ११६ उससमय मणियोंके होनेसे समुद्र नक्षत्रयुक्त आकाशके समान बिदितहोता व आकाश नक्षत्रोंके होनेसे मणियुक्त समुद्रके तुल्य विदित होताथा इससे सागर व आकाशमें कोई बिशेषता नहीं दिखाई देतीथी ११७ व आकाशसे जल बँधाथा व जलसे आकाश इससे भी नक्षत्र व रत्नोंके होनेसे आकाश व समुद्रका तुल्यही रूप दिखाई देताथा ११८ व आकाशमें बादरोंके होनेसे व समुद्रमें लहरोंके उठनेसे भी आकाश व समुद्रमें कुछ बिशेषतानहीं पाईजातीथी ११९ व आपसमें लड़नेसेसमुद्र की लहरोंसे जो महानाद होताथा वहआकाशमें देवताओंके नगारों के समान बाजताथा इससे भी सागर व आकाशकीतुल्यता पाईजाती थी १२० व वायुसे बँधा इसीसे लहरसमूहको उछालताहुआ जलाखलभलाता था इससे जानों क्रोधकियेहुआ समुद्र कुछ बोलरहाथा व जलजन्तु भी

उमड़ते व नीचेको जातेथे १२१ इससे जानों वहपवनके लगनेसे अपनी बड़ीबड़ी लहरोंके उठनेसे आकाशसे कुछ वार्त्ता कररहाथा ऐसा समुद्र महात्मावानरों ने देखा १२२ बड़ी बड़ी लहरोंकेउठनके शब्दसे मानों आकाशसे वार्त्ताकरतेहुये समुद्रको देख महात्मा वानर बड़ी विस्मयको प्राप्तहुये १२३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ॥ ४ ॥

अपनेआप रक्षित उस सेनाको नलने समुद्रके उत्तरकूलपर अच्छी तरह टिकाया १ व मैन्द द्विविद दोनोंवानर सेनाकीरक्षाकेलिये सैन्यकी चारोंओर घूमनेलगे २ जब समुद्रके तीरपर अच्छीतरह सेना उतरचुकी तो बगलपर बैठेहुये लक्ष्मणजी से श्री रामचन्द्रजी बोले ३ जैसे जैसे समय बीतताजाताहै वैसे वैसे शोकदूर होताजाताहै यह लोकमें प्रसिद्धहै परंतु प्राणप्यारी जनककुमारीको बिना देखे हमाराशोक दिन दिन बढ़ताहै ४ हमको प्रियाके दूररहनेका इतना दुःख नहीं व न उनके हरजाने हीका इतना दुःखहै जितना इसका है कि उनकी अवस्था व्यर्थ बीती जातीहै ५ लक्ष्मण से ऐसाकह मारेशोकके पवनसे कहनेलगे हे पवन तुम बहो क्योंकि सीताजीको छूकर हमको छूतेहो इसीसे तुम्हारा छूना हमको चन्द्रमा के समागमके समान जानपड़ता है जैसे चन्द्रमा का उदयहोना तापको दूरकरता ऐसेही तुम्हारा बहना भी तापनाशक है ६ पवनसे ऐसाकह फिर लक्ष्मणजी से कहनेलगे कि हरनेके समय हमारी प्राणप्यारी ने जो हा नाथ कह हमको पुकाराथा वही हमारे अंगोंको जलायेदेताहै जैसे विषपान कियेहुये मनुष्यको विष जलाता है ७ उन जानकी जी के वियोगहीको इन्धन बनाये व उनकी चिन्ताको प्रज्वलितचिनगारीकिये ग्लानिरूप अग्नि हमारे अंगभस्म कियेदेताहै ८ हे लक्ष्मण हम बिना तुम्हारे समुद्रमें सोरहेंगे जिसमें जलके भीतर हमको अग्निरूपातिशय न भस्मकरे ९ जिससे कि हम व सीता एकही धरणीपरटिकेहैं इससेजीतेहैं नहींतो उनके वियोगसे ऐसेव्याकुल न जीते १० जैसे पानीसे खूब भरेहुये जड़हन के खेतकी सर्दीसे उसके निकटवाला सूखाभी जड़हनका खेत कुछहरा बनारहताहै इसीतरह हम जा-

नकीजीको जीतीसुनतेहैं इसीसेजीतेहैं ११ कबधोंसमरमें शत्रुओंकोजीत धनधान्ययुक्त लक्ष्मीकेसमान सीताकोदेखेंगे १२ कबधों मनोहर दाँत ओठयुक्त सीताजीका मुखचूंबेंगे जैसे बीमार रसायनको पीताहै १३ उन हसतीहुई सीताजीके तालफल समान पीनस्तन कब हमको भजेंगे १४ वे श्यामनयनी सीता राक्षसों के बीचमें बैठी हमको भी नाथपाय नाथहीनोंकीतरह अपना रक्षकनहीं देखती १५ भला जनकराज की कन्या व हमारीप्रिया व महाराज दशरथजीकी पुत्रबधूहो सीता कैसे राक्षसों के बीचमें सोतीहोंगी १६ क्षोभरहित राक्षसोंको कँपाय सीता वहां से उछलआवेंगी जैसे नीलकमल को कँपाय चन्द्रलेखा शरदऋतुमें निकल आतीहै १७ सीता एकतो स्वभावहीसे पतलीथीं फिर शोक व उपाससे और दुर्बलहोगईहोंगी क्योंकि देशकाल कोईभी सुखदायकनहींहै १८ नहीं जानते कब रावणकीछातीमें बाणमार अपनाशोकछोड़ उसकेऊपर शोक छोड़ेंगे १९ व नहीं जानते कब देवसुतोपमा व पतिव्रता सीता प्रीतिपूर्व्वक हमारेगले में लपटाय आनन्दके आँशु नेत्रोंसे छोड़ेंगी २० जानकीजी के विरहसे उत्पन्न शोक कब मलिनबस्त्रके समान छोड़ेंगे २१ इसतरह बिलापकरतेहुये श्रीरामचन्द्रजीको देख दिन व रात्रिके क्षयसे मन्दतेज सूर्य्य अस्ताचलको प्राप्तहुये २२ तब लक्ष्मणजीके बहुत समझानेसे रामचन्द्रजी ने सायंसन्ध्योपासन किया व फिर कमलनयनी सीताजीको स्मरणकरतेहुये रामचन्द्रजी शोकसेआतुरहुये २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपञ्चमस्सर्गः ॥ ५ ॥

वहां जब हनुमान्जी लङ्कामें बड़ा घोर भयङ्कर कर्म्मकर चलेआये जैसेमहात्मा इंद्र कुछकर्म्म अद्भुतकरडालतेहैं तब रावण १ मारेलज्जाके कुछनीचे मुखकर सब राक्षसों से बोला कि देखो उस जरासे वानर ने लङ्कामेंआय सबपुरी ब्याकुल करदी जोकि बड़ेही दुःखसे सहनेके योग्य थी व वह जानकी को भी देखगया २ व बड़ाभारी देवीका प्रासाद भी विध्वंसढाला व बड़ेप्रबल राक्षसोंकोभी मारडाला व सब लङ्कापुरीभर फूंकफांक हनुमान् ने मलिनकरदी ३ अब आपलोगोंका कल्याणहो बतावो तो हमक्याकरें तुमलोग इसविषयमें क्या योग्य समझतेहो अब वहींबताओ जो हमलोगों से होसके ४ हे महाबली बुद्धिमान् लोग क-

हतेहैं कि सलाहकेसाथ कार्य्यकरनेसे बिजयहोतीहै इससे रामचन्द्रके बिषयमें हमको सलाहहोकर कार्य्यकरना अच्छा लगताहै ५ लोकमें उत्तम मध्यम अधम तीनतरहके पुरुष होतेहैं उन सबोंके गुणदोष हम कहतेहैं ६ जो पुरुषसमर्थ व हितकारी मन्त्रियोंसे सलाहसे करनेवाले कार्य्यके बिषयमें सलाहलेता वा अपनी बराबरवाले मित्रोंसे वा एकाग्रचित्त अपने भाई भाई बन्धवोंसे ७ सलाहकर कार्य्य करनेको आरम्भ करता व देवताके कार्य्यमें भी कुछयत्नकरता उसे तो उत्तमपुरुष वेलोग कहतेहैं ८ व जो अकेलेही अर्थका बिचार भी करता व धर्म्ममें भीमति करताहै व अकेलाही कार्य्य भी करता उसको मध्यमपुरुष कहते हैं ९ व जो गुणदोष नहीं बिचारलेता व देवबलको भी दूरकरदेता व अपने मनमें बिचारता कि हम अकेलेही सबकार्य्य करलेंगे इस से औरों की उपेक्षाकरता उसेअधमपुरुषकहतेहैं १०।११ इसीतरहजहांशास्त्रकेअनुसार बहुतलोगइकट्ठेहोकर सम्मतकरतेहैं उसेउत्तम सलाहकहतेहैं १२ व जहां मन्त्रियोंकी प्रथम बहुत सलाहेंहोतीं फिरमिलकर एकहोजाती इसतरह से अर्थको निर्णय होती वह सलाह मध्यम कहातीहै १३ व जहां बहुतलोग बैठसलाह करते परउन सबकीराय अलगअलगहोती एक सम्मत होताही नहीं कि जिससे कल्याणहो वह सलाह अधम कहातीहै १४ तिससेआपलोग तो बड़ेबुद्धिमानोंसे भी बुद्धिमान्हैं इस बिषयमें जो कार्य्यकरनाहो बिचारें जो हमें कर्त्तव्यहै वह बतावो १५ अब वानरोंकी बड़ीभारी सेना सङ्गले श्रीरामचन्द्र हमारी लंकापुरीमें आयघेरेंगे १६ व रामचन्द्र अपने भाई मंत्री व सेना सहित समुद्र कोभी उतर आवेंगे इसमें कुछ भी संदेह नहीं १७ कि तो समुद्र को अपने वीर्य्य से सोखलेंगे व और ही कोई उपाय करेंगे इस बिषयमें जैसेबनेगा वानरोंकेसाथ सलाहकर कुछपैकुछ करहींगे इससेऐसा कोई उपायबिचारो जिसमें पुरी हम व सैन्यसबका हितहो १८।१९॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेषष्ठस्सर्गः॥ ६ ॥

जबरावणने उनमहाबली राक्षसोंसे ऐसाकहातो हाथजोर नीतिसे बाहरवचनबोले परन्तु शत्रुकेबलकीओर कुछबिचार नहींकिया १ हेराजन्

मुद्गर शूल शक्ति ऋष्टि पटा आदि अस्त्रयुक्त २ हमारी बड़ीभारी सैन्यहै आपबिषाद क्योंकरतेहैं आपनेभोगवती नाम नागोंकी पुरीमेंजाय समर में सर्प्पोंको जीतलिया ३ व कैलासपर्ब्बतपर रहनेवाले बहुतयक्षोंसहित कुबेरजीका बड़ा अनादरकर फिरअपने बश्यकरलिया ४ महादेवजीकी मित्रताहोनेकेकारण यद्यपि वे बड़ीबड़ाई करनेके योग्यथे तथापि तुमने समरमें उनकोजीतलिया वे कुछऐसे वैसेभीनहींहैं लोकपालोंमें बड़ेबल-वान्हैं ५ फिर यक्षसमूहोंको मार व भगाय व बहुतोंको बँधुआकर तुम कैलासपरसे यह पुष्पकनामबिमान हरलाये ६ व हेराक्षसश्रेष्ठ आपसे मिताई करनेकेलिये मयनाम दानवने अपनी कन्यातुमको स्त्रीबनाने के लियेदी ७ व बड़े वीर्य्यवाला दानवोंमें इन्द्ररूप बड़ेदुःखसे प्राप्तहोनेके योग्य तुम्हारीबहिन कुम्भीनसीका पति मधुदैत्य बड़ाबलवान् सहायक है ८ हेमहाबाहु रावण रसातलमेंजाय बासुकि तक्षक शङ्खजटिल आदि नागराजोंकोजीत तुमने अपनेबशमें करलिया ९ व अक्षय बलवान् शूर व बरदानपाये दानवोंसे व तुमसे बर्षदिनतक युद्धकर १० अपनेबलसे उनको अपनेबशमेंलाये व वहां बहुतसीमाया आपनेपाई ११ व शूरब-लवान् बरुणकेपुत्रोंको तुमनेरणमेंजीता जिनकेसङ्ग चतुरङ्गिनी सेनाथी व वे आपबड़े भाग्यवानथे १२ हेरावण महाघड़ियालरूप मृत्युदण्डयुक्त से मरके वृक्षसे भूषित महालहर रूप कालफांशी सहित व यमदूतोंको महानागबनाये १३ व महाज्वरसे बड़ेदुःखसे सहनेके योग्य ऐसे महा-सागररूप यमलोकमें अच्छीतरह स्नानकर १४ बड़ी भारी जयपाई व मृत्युको रोंकदिया व अच्छेयुद्धसे सबलोकों को सन्तुष्ट करदिया १५ व इन्द्रतुल्य पराक्रमी व बड़ेवीर बहुतसे क्षत्रियोंसे यह पृथ्वी पूर्णथी जैसे बड़ेबड़े वृक्षोंसे पूर्णरहतीहै १६ परन्तु उनलोगोंकेवीर्य्यगुण व उत्साहों के समान रामचन्द्र रणमें नहींहैं व उनसबको जबरदस्ती तुमने रणमें जीतलिया व यद्यपि दुर्ज्जयथे परमारडाला १७ तिससे आपबैठें श्रम करनेसेक्याहै अकेलेही ये मेघनाद सबबानरोंको मारडालेंगे १८ क्योंकि इन्होंने महादेवजीकी बड़ीभारी यज्ञकर अतिदुर्लभ बरपायाहै १९ व ॥

चौ० तोमर शक्ति मीनसम सारे। बीर आंत शैवल समन्यारे ॥ गज कच्छप सों सघन बहूता । तुरगभेक संकुल मजबूता १ । २० रुद्रादित्य

ग्राह सम नीके । पवन और वसुउरग सुठीके ॥ रथगज तुरगजलौघ बखाना । अरुपदाति सबपुलिन समाना २ । २१ यहिसुरबल सागरकहँ पाई । भलीभांति त्यहिमाहिं अन्हाई ॥ देवराजकहँ गहिलैआये । लङ्कहि मेघनाद सबगाये ३ । २२ ब्रह्मनिदेशपाय त्यहित्यागा । शम्वर वृत्त्र नाशअनुरागा ॥ सर्व्वदेवनुत शक्रस्वसदनू । गयहु तबहि लहिबहुबिधि कदनू ४ । २३ महाराज भोजियत्यहिआजू । इन्द्रजीतज्यहिनामसुसाजू ॥ जवलग रामसहित वानरदल । यमपुरजायकरिय तबलगकल ५ । २४ प्राकृतजनसों आईआपद । हैंअयोग्य जानियेरहितमद ॥ त्यहि न हृदय महँराखहुकाऊ । हतिहहु तुमरामहिं नवकाऊ ६ । २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेसप्तमस्सर्ग्गः ॥ ७ ॥

उसकेपीछे कालेबादरकी घटाकेसमान प्रहस्तनाम राक्षस सेनापति जो बड़ा शूरबीरथा हाथजोड़ रावणसेबोला १ कि देवता दानव गन्धर्व्व पिशाच सूर्य्य नाग इन सबलोगोंको हमलोग धर्षित करसक्ते हैं फिर मनुष्य राम लक्ष्मणको क्याकहैं २ जो कहिये उनकाभेजा एक छोटासा वानरआया जिसने तुमसबका अनादर करडाला तो हमलोगोंने जाना कि यह हमारा अनादर न करसकेगा इससे सबलोग प्रमत्तहो भोग बिलासमें पड़ेरहे इसीसे हनुमान्के छलमें आगये नहींतो जो सावधा-नतासे हमलोग रहते तो वह जीताहुआ कभी न जानेपाता ३ खैर तब जो हुआ सो हुआ अबहमको आप आज्ञादें तो सागर बन पर्व्वत सहित भूमि बिना वानरकी करडालें ४ व वानरोंसे सबकी रक्षाकरें व तुमको जो अपने अपराधसे दुःखहै वह तुम्हारे निकट न आनेपावे ५ यहसुन बड़ाक्रोधकर दुर्म्मुखनाम राक्षस रावणसे बोला कि उस वानरने जो हमलोगोंका अनादरकिया उसे हमलोग नहींसहसक्ते ६ व जो लङ्का व अन्तःपुरका व राक्षसेन्द्रका बड़ाभारी अनादर उसनेकिया उसेभी हम लोग नहींसहसक्ते ७ इससे अभी हम अकेलेहीजाय समुद्र आकाश पाताल जहांकहीं बानरहोंगे सबको समाप्तकरदेंगे ८ फिर बड़ाक्रोधकर महाबली वज्रदंष्ट्रनामराक्षस मांस रुधिरलगा परिघहाथमेंले बोला९ कि जब अतिदुर्द्धर्ष रामचन्द्र लक्ष्मण व सुग्रीव विद्यमान्हैं तो बेचारेतपस्वी

उसअकेलेहनुमान्को मारडालनेसे हमलोगोंका क्याप्रयोजन सिद्धहोगा १० इससेहम अकेलेही वहांजाय इसमुद्रसे रामचन्द्र लक्ष्मण व सुग्रीव को मार वानरोंकी सेना कँपाय चलेआवेंगे ११ हे राजन् इसकेसिवाय हमारी एक और बात सुनो व जो मनमेंपरे तो करो क्योंकि जो उपाय करनेमें कुशलहोता वही सावधानहो शत्रुओंको जीतताहै १२ हेराक्ष-साधिप भयंकररूप यथेच्छ रूपधारी बड़ेशूर ये राक्षसलोग बहुतनहीं तो तीनहजार एक निश्चयकर १३ मनुष्यबन रामचन्द्रजी के निकट पहुंच मनुष्य की बोलीसे बड़ी सावधानी के साथ रघुवंश शिरोमणिसे बोलेंकि १४ हमलोगोंको तुम्हारे छोटेभाई भरतजीने भेजा है यह सुन रामचन्द्र सेनाको छोड़ तुरन्त वहां चलेआवेंगे १५ तो हम सबलोग अतिशीघ्र शूलशक्ति गदादि धारणकिये व धनुषबाण खड्ग हाथमेंलिये झट उनकेपास जायँगे १६ व उनकोअपनी बशमेंकर सबजन आकाश को उड़जावेंगे वहांसेपत्थर व अस्त्रशस्त्रोंकी महावृष्टिकर वानरोंकीसेना मार यमपुरको भेजदेंगे १७ जब हमलोगोंका यह छल रामलक्ष्मण जानेंगे तो फिर अकेले पड़जावेंगे तो क्या करसकेंगे आप भागजावेंगे वा प्राणही छोड़देंगे १८ फिर कुम्भकर्णका बेटा बड़ावीर्यवान् निकुम्भ नाम राक्षस बड़ा क्रोधकर लोकको रोवानेवाले रावणसे बोला १६ कि आप सबलोग महाराज रावणके साथ यहींरहो हम अकेलेही रामचन्द्र व लक्ष्मणको मारडालेंगे २० व सुग्रीव हनुमान् सहित सब वानरोंकी सेनाभी समाप्त करदेंगे इसकेपीछे पर्वताकार वज्रहनुनाम राक्षस २१ क्रोधकेमारे जीभते ओठ चाटताहुआ बोला कि आप लोग यथेष्ट अपना अपना कार्य्यकरें २२ हम अकेलेही जाय सब वानरोंकी सेना खालेंगे तुमलोग स्वस्थ व निश्चिन्तहो क्रीड़ाकरो व वारुणी मदिरा पानकरो हम अकेलेही लक्ष्मण सहित सुग्रीवको मारडालेंगे २३ व अंगद हनु-मान् सहित सब वानरोंकोभी समाप्त करदेंगे २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टमस्सर्गः ॥ ८ ॥

तिसकेपीछे निकुम्भ रभस महाबली सूर्यशत्रु सुप्तघ्न यज्ञकोप महापार्श्व महोदर १ अग्निकेतु दुर्द्धर्ष रश्मिकेतु व रावणकापुत्र महाबलवान् मेघ-

नाद २ प्रहस्त विरूपाक्ष महाबली वज्रदंष्ट्र धूम्राक्ष निकुम्भ व दुर्मुखनाम राक्षस ३ येसब परिघ पट्टिश शूल फांसी शक्ति फरसा धनुषबाण व खड्ग धारणकिये ४ महाक्रोधकर प्रज्वलित अग्निके समान तेजस्वी राक्षस रावणसे एकहीसंग बोले ५ कि आजलक्ष्मण सुग्रीवसहित रामचन्द्रको मारडालेंगे व उसबेचारे हनुमान्‌कोभी मारडालेंगे जिसनेलङ्काकी दुर्द्दशाकी ६ उनसबोंको आयुधलियेदेख सबकोरोंक व फिर अपनेस्थानपर बैठाय हाथजोर विभीषणजी रावणसे बोले ७ हेतात सामदान व भेद इनतीन उपायोंसे जोकार्यनहींहोसक्ता उसीकी सिद्धिकेलिये विक्रमकर दण्डदेना चाहिये विद्वान्‌लोगोंने ऐसाकहाहै ८ सोभी जोलोगसावधान नहींरहते वा रोगादिकोंसेयुक्तहैं वे जबकभी युद्धकरनेकेलिये आगये तो उन्हींके ऊपर चलनेकेलिये ब्रह्माने बहुतशोचविचार विक्रम बनायेहैं ९ परंतुरामचन्द्रतो सावधानचित्त जीतनेकी इच्छाकिये बलमेंटिके रोषजीते व दुराधर्षहैं तुमलोग उनको कैसे जीताचाहतेहो १० व जो हनुमान्‌को मारनाचाहतेहो वह भी असम्भवहीहै क्योंकि नद नदियोंके पति घोर समुद्रकोनाँघ जो हनुमान् दो मुहूर्त्तमें यहांचलेआये तिसको लोकमेंकौन जानेगा व कौन तर्कणाकरेगा ११ हे राक्षसो जिन शत्रुओंकी अपरिमित सेनाहो व वीर्य्यभी अपरिमितहो उनशत्रुओंका अनादर एकाएकीकभी न करनाचाहिये १२ इसके सिवाय और भी कारणबतातेहैं कि रावण जिन रामचन्द्रजीकी भार्य्या तुम जनस्थानसे हरलायेहो उन्होंने उस समय तुम्हारा क्याअपराधकियाथा १३ जोकहो कि रामचन्द्रने रणमें खरको मारडालाथा तो प्राणीको ज़रूरही अपनी शक्तिभर अपने प्राण बचानेचाहिये १४ बस अपने प्राणबचानेके लिये खरको मारडाला जो तुम इसीकारण जानकीको हरलाये जिसकेहेतु हमलोगोंकेऊपर इतनी बड़ीबिपत्तिहुई व होनेवालीहै तो अब जानकीको छोड़दीजिये कलह करनेसे कुछभीप्रयोजनसिद्ध न होगा १५ उनधर्म्मानुवर्त्ती व वीर्य्यवान् रामचन्द्रकेसाथ निरर्थक बैरकरना हमअच्छा नहींमानते इससेउनकी मैथिली उनकोदेदो १६ जबतक रामचन्द्र हाथीघोड़े रथसहित व रत्नों से भरीपुरी लंकावाणोंसे न विदीर्णकरें तबतक उनकी मैथिली उनको देदो १७ व जबतक अतिभयङ्कर दुर्द्धर्ष व बड़ीभारी वानरोंकी सेना

हमारी लङ्काको न बिध्वंसे तबतक उनकी सीता उनको देदो १८ रामचन्द्रजीकी पत्नीदेडालिये क्योंकि जो अपनेआप न दोगे तो सहितराक्षस यहलङ्कापुरी नाशहोजायगी १६ हम तुम्हारे भाईबंधुहैं इससे तुमसे यह माँगतेहैं हमाराबचनकरो क्योंकि हम सत्य व तुम्हारे हितकी बात कहतेहैं अबउनकीमैथिली उनकोदेआवो २० व जबतक महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी सूर्य्यकी किरणोंके समान लपलपाते व नईफोंकेंलगेअति पोढ़े व सफलबाण तुम्हारे मारडालनेके लियेछोड़ें उसके प्रथमही श्रीरामचन्द्रजीको मैथिली देडालो २१ सुख व धर्म्मनाश करनेवाला कोप शीघ्रहीछोड़ो व सुख व कीर्त्तिबढ़ानेवाले धर्म्मकीसेवाकरो व प्रसन्नहोवो श्रीरामचन्द्रजीको सीता देदो जिससे पुत्र बान्धव सहित हम सब जन जीतेरहैं २२ बिभीषणके बचनसुन राक्षसोंका स्वामी रावण बिभीषणादि राक्षसोंको बिदाकर अपने जनाने मकानकोगया २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेनवमस्सर्ग्गः ॥ ६ ॥

जब प्रातःकाल हुआ तो धर्म्म अर्थ में निश्चय पायेहुये व भयङ्कर कर्म्म करनेवाले रावण के बोधकेलिये बिभीषणजी १ पर्ब्बत समूह समान प्रकाशित पर्ब्बतहीके शृङ्गके तुल्य ऊँचे बड़े बड़े हातों सहित व महाराजोंकी सामग्रीसेयुक्त २ व मतवाले हाथियोंकी श्वाससे ब्याकुल पवन संयुक्त शंखादि बाजोंके शब्दोंसे पूर्ण व नगारोंके शब्दसे भरे ३ व बुद्धिमान् व प्रेमी हथिवालोंसेघेरे व बड़े समर्त्थ राक्षसोंसेघिरेहुये ४ व स्त्रियोंसे भरेपुरे सड़कोंपर कहकहे उड़ते पक्के सुवर्णके दरवाजे लगे व उत्तमभूषणोंसेभूषित ५ गन्धर्व्वों व देवताओंके स्थानोंकेतुल्य रत्नोंकी अतिसञ्चयहोनेसे नागोंकेलोकके समान ६ तिसराक्षसाधिपके मन्दिरमें बादरकेबीचमें सूर्य्यकी किरणोंके समान बिभीषणजीपैठे ७ व वहां वेदवादीराक्षसोंसे उच्चारित पुण्यरूप पुण्याहवाचन अपने भाईकी विजयके विषयमेंसुने ८ दही घी फूलअक्षतआदि शुभवस्तुओंसेपूजित व मन्त्रवेद जाननेवाले ब्राह्मणोंकोभी महाबलवान् बिभीषणजीनेदेखा ६ व राक्षसोंसेपूजितहो व अपनेतेजसे प्रकाशित व आसनपर बैठेहुये कुवेरके छोटेभाई रावणको महाबाहु बिभीषणजीने जाय प्रणामकिया १० व दृष्टिमात्रसे

राजाकी आज्ञापाय सुवर्णसेभूषित वं परम्परासे जोउत्तम मन्त्रीकास्थान था उसपरमहापण्डित विभीषणजीजाबैठे ११व एकान्तजनरहितमन्त्रियोंकेजानेहीकेयोग्य स्थानमेंबैठे महात्मा अपने ज्येष्ठभाई रावणको १२ देशकाल ऊँचनीचजाननेमें बड़ेचतुर विभीषणजी प्रसन्नकर नानाप्रकारके कारणोंसेनिश्चितकर हित व बहुत अर्थयुक्त बचनबोले १३ हेमहाराज रावण जबसेयहां बैदेहीजीआईहैं तबसेसब अशुभहीनिमित्त दिखाईदेते हैं १४ जैसेकि मन्थनसमयमें अग्निधुआंसहितहीनिकलती व चिनगारियां उड़नेलगतीं व जोज्योति निकलती धुआँसहितहीरहती व यद्यपि अच्छेअच्छे मन्त्रबिधिसेपढ़ेजाते परवहआहुतिसे अच्छीतरह नहींबढ़ती १५ अग्निकेबालनेके स्थानोंमें व अग्निशालाओं व वेदपढ़नेकेस्थानोंमें बहुधासर्प्पदिखाईदेते व जोखीर होमकरनेकेलिये बनाईजाती उसमेंच्यूंटियांदिखाईदेतीं १६ गाइयोंकादूधसूखगयाहै हाथियोंकामद बहनाबन्द होगया घोड़ोंकोयद्यपि नईनईअच्छीघास दीजातीहै परवे दुःखितहिनहिनायाकरतेहैं १७ हेराजन् गधे ऊँट व खच्चर रोमखड़े किये रोदन किया करतेहैं यद्यपिउनकीऔषध बिधिसेकीजातीहै परवेअपने स्वभावपरनहीं आते १८ व कौओंके झुण्डकेझुण्ड सबदिशाओंमें क्रूर शब्दकरतेहैं व विमानोंकेऊपर कौंकौं करते मड़रातेहैं १९ व इसीतरह गीधोंके झुण्ड के झुण्ड पुरीकेऊपर बहुतनिकटही मड़राया करते व सियारिनियाँ लंकाके बनाय निकटआय प्रातःकाल व सायंकालमें अमङ्गलशब्द बोलतीहैं २० व भेड़िया ब्याघ्र सिंहादि मांसभक्षी जन्तुओंका शब्द बनायदरवाजोंके समीपही बहुत सुनाई देता बिदितहोता कि जानों बज्र गिरने चाहताहै २१ हेबीर इसविषयके शान्तहोनेकेलिये हमकोयही उपाय जानपड़ताहै कि रामचन्द्रजीको उनकी बैदेही देदीजिये बस सब उपद्रवशान्त होजायँगे २२ हेमहाराज जोयहबात हमनेमोह व लोभसे कहीहोतोभी इसमें कुछ दोषारोपण न कीजिये जैसाहमने कहाहै मानही लीजिये २३ यह दुर्न्निमित्त से उत्पन्न दोषसब राक्षसों राक्षसियों व पुरी व जनानेमें भी सबको बिदितहोताहै इससे जो हमारी कही युक्ति न कीजायगी तो इन सबकाविध्वंस होजायगा २४ यहसलाह देनेकेलिये औरभी बहुत मंत्री लोग तैयारथे परन्तु आपकेभयसे नहींदेसके परन्तु हमने जो देखा सुना

व विचारा आपसे कहदिया २५ अबजैसा उचित जानपड़े वैसाकीजिये यह अपनेमंत्रियोंके बीचमें बैठेहुये रावण अपनेभाईसे विभीषणजीनेकहा २६ तब इसतरहका हित महाअर्थयुक्त कोमल व हेतुयुक्त वर्त्तमानकाल व आगन्तुककालमें भी शुभकरनेमें समर्थ विभीषणका बचनसुन बहुत सन्तप्तहो रामचन्द्रजीके बैरकास्मरणकर रावण उत्तरदेनेलगा २७ कि हम कहींसेभी भयनहींदेखते इससे रामचन्द्र कभी न जानकीको पावेंगे व वे सबदेवताओंके साथभी हमारेसामने समरमें कैसेखड़ेहोसक्तेहैं २८॥

कुण्डलिका ॥

यह कहि सुरसेनाद रण महाबली दशशीश ।
युधि प्रचण्ड बिक्रम सुभग भुजा जासुहैं बीश॥
भुजा जासुहैं बीश सोइ निज भ्राता काहीं ।
बिदा कीन जो बचन कह्यो ज्यहि सम्मत नाहीं ॥
यदपिकह्योहितउचित पथ्यअरु सबबिधि सुखवह ।
तदपि न निश्चरनाह गह्यो यासों अचरज यह १ । २९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुद्धकाण्डेदशमस्सर्गः ॥ १० ॥

राजारावण जानकीजीकेलिये मोहितहो बनाय दुर्बल होगया व सुहृदोंका निरादर करनेसेभी बहुपापी दुर्बलहुआ १ रात्रिदिन जानकी जीहीको सुमिरताथा इतनेमें यद्यपि रामचन्द्रजीकेसाथ युद्धहोनेहीवाला था परन्तु रावणने समझा कि क्याजानें रामचन्द्र से युद्ध कबहोगा क्या अभीथोड़े होताहै परन्तु राक्षसों व सुहृदोंके कहनेसे जाना कि अबयुद्ध का समय आयगया २ इससे सुवर्णसे बनीहुई मणियों व मूंगोंसे भूषित रथके निकटजाय अच्छीतरह शिक्षितघोड़े नद्धे रथपर जाचढ़ा ३ उस मेघवत् घर्घरशब्दवाले रथपर चढ़ राक्षसोंमें श्रेष्ठ रावण अपनीसभाको चला ४ वहां ढाल तलवारलिये व अन्यभी आयुध धारणकिये राक्षस रावणकेआगे खड़ेहुये ५ व नानाप्रकारके बिकृतबेष धारणकिये व नाना प्रकारके भूषणोंसे भूषित राक्षसलोग रावणको चारोंओरसे घेरे चले ६ व बड़ेबड़े महारथी राक्षसलोग रथों व शीघ्रगामी मतवाले हाथियों व कूदते फांदतेहुये घोड़ोंपर चढ़ रावणके पीछेपीछे चले ७ वे लोग गदा

मुद्गर शक्तितोमरादि अस्त्रहाथोंमें लिये तैयारचलेजाते ८ व हजारों नगारों व शङ्खोंका तुमुलशब्द होनेलगा येसबबातें जबरावण सभाकोचला तब हुईं ६ व महात्मा रावण रथके शब्दसे सबओर सुनाताहुआ नानाप्रकार की शोभायुक्त राजमार्ग्गमें चलाजाता १० व उसराक्षसोंके अधिपरावण के ऊपर बिमल व उजला छत्र पूर्णमासी के चन्द्रमाके समान शोभित होता ११ व सुवर्ण से बने तथापि युक्तिसे शुद्धस्फटिक मणिके समान उजले चमर व पङ्खा तिसकी बाईं दहिनी बगलमें शोभितहोते १२ रथ पर चढ़ेहुये रावणको सबराक्षस पृथ्वीमें गिरगिर प्रणामकरते व हाथ जोड़खड़ेहोते १३ इसतरह राक्षसों से स्तुतिकिया जाताहुआ व जयके लिये आशीर्ब्बचन सुनताहुआ रावण अतिबिरचित सभा में पहुँचा १४ जिससभामें सुनहुले रुपहुले विस्तरा बिछेथे वे बीचबीचमें शुद्ध स्फटिकमणिके समान उजलेथे व सुनहुलीही चाँदनी ऊपर पड़ी थी १५ व छासौंपिशाच जिसकीरक्षा कररहेथे ऐसी सभामें शरीरसेशोभित महातेजस्वी रावण पैठा यहसभा बिश्वकर्म्मा ने बड़ी युक्तिसे बनाईथी १६ तिसमें वैदूर्य्य मणिसेबने व प्रियकानाम मृगका अतिकोमल चर्म्मबिछे व मसरंदलगे राजसिंहासनपरबैठा व बड़ेजल्दबाज दूतोंको आज्ञादेनेलगा १७ कि शत्रुओंकेसंग हमको बहुतकुछ करनाहै इसविषयको हमअच्छी तरहजानतेहैं इससे सब प्रसिद्ध प्रसिद्ध राक्षसोंको शीघ्र यहांलावो १८ तिसके ऐसे बचनसुन राक्षसलोग लङ्कापुरी के प्रत्येक गृहमें घूम घूम राक्षसोंको बुलानेलगे उनमें कोईकोई तो बिहार कररहेथे कोई सोतेही थे व बहुतसे उद्यानोंमें बिहरतेथे परसबोंको अपने संगही चलनेकेलिये आज्ञादी कि सबलोगचलो राजासाहब बुलातेहैं १६ यह आज्ञापाय कोई कोई रथोंपरसवारहो व कोई कोई अतिचञ्चल व पुष्टघोड़ोंपर व कोई कोई हाथियोंपर व बहुतसे पैदरहीचलदिये २० उससमय रथ व हाथीघोड़ोंसे वहपुरी पूर्णहो ऐसी शोभितहुई जैसे गरुड़ादि पक्षियोंके उड़नेसे आकाश शोभितहोताहै २१ सभाद्वारपर पहुंच द्वारपर अपनी अपनी सवारियां छोड़ सबपैदर सभामें पैठे जैसेसिंह पर्ब्बतकी गुहामें पैठतेहैं २२ सभामेंपहुंच राजाकेचरणोंमें प्रणामकर व महाराजकी आज्ञापाय कोई कोई कुरसीआदि आसनोंपर कोई अन्यविस्तरोंपर व कोई

ऐसेही भूमिहीपर बैठगये २३ व यथायोग्य स्थानपर बैठनेकेपीछे एक मनहो सब रावणकी स्तुतिकरनेलगे २४ व इसबुलावमें निश्चितअर्थ जाननेमें बड़े पण्डित मंत्रीलोग व बड़े बड़े गुणी अमात्यलोग सर्व्वज्ञ व बुद्धिद्वारा सबकुछ देखलेने वाले २५ हज़ारों शूरबीरलोग राजाके सबअर्थोंके बिचारनेकेलिये सुवर्णकेरङ्गकी उससभामें आये २६ तिसके पीछे सुन्दर जुआलगे व सुवर्णसेबने अतिमनोहर बड़ेभारी रथपर सवारहो महात्मा व महायशस्वी बिभीषणजी अपने जेष्ठभाईकी सभामें आये २७ व बड़ेभाईसे प्रथम अपनानामकह फिर प्रणामकिया व इसी तरह शुक व प्रहस्तनाम मंत्रियों ने आय आय अपना अपना नाम कह फिर प्रणाम किया तब रावण ने सब को अलग अलग बैठने के लिये आसन बताये २८ सुन्दरवर्ण के नानाप्रकार के मणियोंसे भूषित सुन्दर वस्त्र धारणकिये सभामें उन राक्षसोंके बड़े मोलके अगर चन्दन व मालाओंकी सुगन्ध चारोंओरसे आनेलगी २९ ॥

चौ० सभा माहिं करु कोइ न शोरा । मिथ्या बचनन नहिं करि जोरा ॥ सिद्धअर्थ सबसब बलधाना । लखहिं स्वामिमुख आननध्याना १ । ३० शास्त्रधारि बलकारिमनस्वी । तिनहूंसों दशकण्ठयशस्वी ॥ सभामाहिं निजतेज विराजा । वसुनमध्य जिमि श्रीसुरराजा २ । ३१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकादशस्सर्गः ॥ ११ ॥

समरमेंविजयी रावण सब समाजकीओर निहार प्रहस्तनाम सेनापतिको समझानेलगा १ हेप्रहस्त शस्त्रास्त्रविद्या में कुशल व रथ हाथी घोड़ोंपर चढ़ने व पैदर चलने से चारप्रकार के योधालोग जिसतरहसे नगरकी रक्षाकरनेमें तत्परहों वैसीतुमआज्ञादो २ यहसुन वशीकृतात्मा प्रहस्त राजाकी आज्ञा पूर्णकरनेकी इच्छासे मन्दिराकार पुरीकी रक्षा करनेकेलिये नगरके भीतरबाहर यथायोग्य सेनानियतकर फिरसभामें आया ३ इसतरह नगरकी रक्षाकेलिये सबसेना नियतकर प्रहस्तराजा के सम्मुख बैठकर बोला ४ कि बड़े बलवान् तुम्हारी सबसेना भीतर बाहर सब कहीं टिकादीगई अब जो आपको अभीष्ट हो प्रसन्नमनहो कीजिये ५ राज्यकेहित चाहनेवाले प्रहस्तके बचनसुन रावणराजा सबके

सुखकी चाहनासे सुहृदोंके बीचमें बोला ६ कि धर्म्म अर्थ काम इनके विषयमें कुछ कठिनता पड़नेपर प्रिय अप्रिय सुख दुःख लाभ व हानि समझानेकेलिये तुमलोग योग्यहो ७ क्योंकि आपलोगों की सम्मतिसे आजतक सबकार्योंका प्रारम्भ होतारहा परन्तुकोई विफल नहींहुआ ८ इससे जैसे चन्द्रमा सहित सबग्रह व नक्षत्रों व देवताओंके साथ इन्द्र शोभित होतेहैं वैसेही तुमलोगोंके संग हम सब राज्यलक्ष्मी पावेंगे ९ परन्तु हमअपना अभिप्राय आपलोगोंसे कहते पर कुम्भकर्ण के सोनेके कारण नहींकहा १० परन्तु यहमहाबली व सब शस्त्रास्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कुम्भकर्ण छःमासतक सोकर इससमय उठाहै ११ वह अभिप्राय यहहै कि राक्षससेवित जनस्थानसे जो रामचन्द्रजीकी पट्टरानी जनककुमारी हम हरलाये हैं १२ वह अलसगामिनी हमारी सेजपर नहीं चढ़ना चाहती परन्तु तीनोंलोकोंमें हमसीताकेतुल्य अन्यस्त्रीको नहींदेखते १३ क्योंकि करिहांव की पतली पश्चात् भागकी मोटी शरदऋतु के चन्द्रके समान मुखवाली व सुवर्ण और कुंदुरू के रंगकी सौम्यस्वभाव मयकी बनाई मायाकेसमान विराजमानहै १४ तिसके सुप्रतिष्ठित लालतरवा वाले चिकने चरणदेख हमकोकाम पीड़ाकराताहै १५ व बरतेहुये अग्नि की दीप्तिकेसमान प्रकाशित व सूर्यकीप्रभा के तुल्य सीताकी ऊँचीनाक व मनोहर लोचनयुक्त विमलमुख देख १६ हमतिसके वशीभूतहो काम के वशीभूत होगयेहैं इसविषय में क्रोध व हर्ष समान होनेसे व दुर्व्वर्ण होजानेसे १७ व शोक सन्ताप नित्यहोनेसे कामनेहमको बहुतब्याकुल किया व सीताको यहांआये वर्षहुआ चाहताहै पर उसनेहमको न चाहा १८ वह विशालनयनी रामचन्द्र अपने भर्त्ताकीही राह परखती है यह चारुनेत्रवाली सीताकी प्रतिज्ञा हमनेसुनीहै १९ इससे अब मार्ग्गचले- हुये घोड़ेके समान हम बनाय थकगये हैं जोकहो कि रामचन्द्र तो बड़े बलवान्हैं अपनी सीतालेही जायँगे तो येवानर २० व वे दोनों भाई दशरथकेपुत्र नानाप्रकार के बड़े बड़े जन्तुओंसे सेवित यह समुद्र कैसे उतरेंगे परयहभी नहीं कहसक्ते क्योंकि जिसके अकेलेही वानरने हम लोगोंका बड़ाभारी अनादर करडाला २१ तिसकी गति बड़े दुःखसे जानने के योग्यहै क्याजानें किसीतरहसे सागरपार चले न आवें इससे

इसविषयमें आपलोगोंके बिचारमें जो आवे कहो २२ यद्यपि मनुष्यसे हमकोभय कुछ नहीं तथापि तुमलोग इसका बिचारकरो क्योंकि जब तुमलोगों को सङ्गले हमने देवताओं व दैत्योंकोभी समर में जीतलिया तो प्राकृत मनुष्योंसे कौनभयहै व वेही आपलोग हमारे निकट विद्यमानहैं पर यहभी हमजानतेहैं कि सुग्रीवादि वानरोंकोसंगले वे दोनों राजकुमार समुद्रके उत्तरके किनारेपर २३ सीताके समाचारसुन आयेहैं परन्तु हमसीताको उन्हें न देंगे वरन उनदोनों महाराजकुमारों को मारडालेंगे २४ इससे आपलोग बिचारकरें व सुन्दर न्याययुक्त बचन कहें २५ हमतो और किसीमें ऐसीशक्ति नहींदेखते कि वानरोंकी सेनासे समुद्रको उतर इसपार चलाआवे इससे सबतरहसे हमारीही जयहोगी २६ कामके बशीभूत तिस रावणका ऐसा रोनासुन कुम्भकर्ण बड़ा क्रोध करबोला २७ कि जबरामचन्द्रजी व लक्ष्मणकी सीता तुम जबरदस्ती हर यहांलायेथे तभी इसबातका बिचार हम सबलोगोंसे पूछकर करते तो ठीकहोता जैसेयमुना पहिले कृष्णचन्द्रके अवतारहीके समय यमुना के बड़ेभारी कालियकुण्डका सेवन करतीहै क्योंकि अन्यसमयमें कृष्णचन्द्रकी प्राप्ति नहींहोसक्ती ऐसेही अब बिचार करनेसे क्या होसक्ताहै रामचन्द्रजी का कोप किसीके मानका नहींहै २८ हेमहाराज यह जो जानकी हरणादि कर्म्म तुमनेकिया सब अयोग्यही किया जब इसकर्म्म का आरम्भ करने लगेथे तभी हमलोगोंसे क्यों न पूछा कि रोंकदेते २९ मन्त्रसे निश्चय युक्त जिसराजाकी मतिहोतीहै व सबकार्य न्याययुक्तही करताहै तो वह पीछेसे कभी नहीं पछिताता न सन्तप्तही होताहै ३० मन्त्राद्युपाय रहित जो कर्म्म शास्त्रसे विपरीत कियेजातेहैं वे सबदूषित होजाते हैं जैसे अजितेन्द्रिय पुरुषोंके बशमें परने से यज्ञकरनेकी खीर दूषित होजातीहै ३१ जो प्रथम करनेवाले कार्यका बिचार पीछे करता व पीछेकरनेवालेको प्रथमबिचारता वह न्यायअन्याय दोनोंनहीं जानता ३२ विना बिचारे करने वाले पुरुषका अधिक बलदेख शत्रुलोग उनके कर्म्मोंमें छिद्रदेखने लगतेहैं जैसे हंसपक्षी क्रौञ्चनाम पर्वतपर षण्मुखके कियेहुये छिद्रको देखतेहैं ३३ जिसतुमने यह अविचारित कार्यकरनेका प्रारम्भ किया तिसको बड़ेभाग्यकी बातहुई जो रामचन्द्रजीने मार नहीं

डाला जैसे विषमिलाहुआ भोजन खानेवालेको मारडालताहै ३४ जब इसतरहके न्याययुक्त बचनोंमें रावणकीरुचि न देखी तो फिरकहनेलगा कि यद्यपि तुमने अच्छेकार्य्यका प्रारम्भ नहींकिया तथापि हम तुम्हारे शत्रुओंकोमार इसकार्य्यकी शान्तिकरेंगे ३५ हेनिशाचर जो तुम्हारे शत्रु इन्द्र व सूर्यकेसमान अग्नि व पवनकेसमान व कुवेर वरुणकेभी समान होंगे तो हममारडालेंगे ३६ क्योंकि पर्वताकारशरीर महापरिघले लड़ने वाले व तीषेदांतवाले हमारेशब्दसे इन्द्र डरतेहैं ३७ कदाचित् वे तुम्हारे शत्रुहमको बाणसेमारेंगे तो हमउनका रुधिरपीलेंगे तुमप्रसन्नहोवो ३८॥

दो० रघुपतिके बधसों बिजय सुख करतब हितलाउँ ।
राम लषणकहँ हतिबहुरि सब हरियूथप खाउँ १ । ३९ ॥
रमहु पिअहु बर बारुणी विज्वरह्वै करु काज ।
ममकर बधलहि रामतब सिय तवबश महराज २ । ४० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेद्वादशस्सर्गः ॥ १२ ॥

कुम्भकर्णके बचनसुन रावणको क्रुद्धजान महाबली महापार्श्वनाम राक्षस मुहूर्त भरतक बिचार हाथजोड़ रावणसे बोला १ कि जो मृग सर्प्पसेवित बनकोजाय व वहां मधुपायकर भी मधुपान नहींकरता वह बड़ा अनारी होताहै २ हे शत्रुनाशन सबके ईश्वर तो तुमहो फिर तुम्हारा ईश्वर दूसरा कहांसे आया इससे शत्रुओंके शिरपर पांवधर वैदेहीकेसङ्ग बिहारकरो ३ उसकी यही उपायहै कि जैसे मुरगा जबरदस्ती रति करताहै उसीतरह तुमभी जबरदस्ती वैदेहीको पकड़ उनकेसङ्ग बिहार करो ४ जब तुम्हाराकाम सिद्धहोजावेगा तो फिर तुमको कौन भयहोगी फिरप्राप्त व अप्राप्तकाल सब सहलोगे ५ कोईपीछेसे आयहीकर तुम्हारा क्याकरलेगा क्योंकि कुम्भकर्ण व मेघनाद तो हम लोगोंके साथ बज्र हाथमेंलिये इन्द्रको भी रोंक सक्तेहैं ६ हमतो जानते हैं कि जो पीछे से रामचन्द्रजी आवेंगे तो यातो कुछ देकर लौटादेंगे व समझाय बुझायकर व फोड़तोड़ कराय जो इनतीनोंसे कार्य्य न चलेगा तो फिर दण्डहीकरके हटादेंगे ७ हे महाबल यहां आयेहुये तुम्हारे सब शत्रुओं को व उनकी सेनाको अस्त्रशस्त्रोंसे हमलोग नाशही करदेंगे इसमें कुछ भी सन्देहनहीं

है ८ जब महापार्श्वने राजारावणसे ऐसाकहा तो वह उसके वचनकी बड़ाई करताहुआ बोला ६ हे महापार्श्व पूर्व्वकालमें जो वृत्तान्त हुआहै वह हमाराहित कहतेहुये तुमसे कहतेहैं यह हमीं जानतेहैं और कोईनहीं जानता १० बहुतदिन हुये कि पुंजकस्थलीनाम अप्सरा हमारी भयसे गुप्त ब्रह्माजीके स्थानको आकाशमें चमकतीहुई अग्नि शिखाके समान चलीजातीथी उसेहमने देखा ११ इससे हमने जबरदस्ती उसके सङ्ग भोगकिया व उसके वस्त्र छोड़ सब अलग फेंकदिये इससे कमलिनी के समान कांपतीहुई वह ब्रह्माजीके स्थानमें पहुंची १२ उन महात्मा ने उसकी जो दशा हमनेकीथी सबजानली इससे कोपकर ब्रह्माजी बोले कि १३ आजसे अब जबकभी किसी स्त्रीके साथ जबरदस्ती भोगकरोगे तो तुम्हाराशिर फटकर सौ टुकड़े होजावेगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं १४ इसीकारणसे उन ब्रह्माजीके शापसे डरकर जबरदस्ती उस सीता को अपनी सेजपर नहींलाते १५ जो कहो कि फिर ऐसाहीहै तो राम-चन्द्रजीकोही सीताको देडालो लो उनको जो देडालें तो हमारी बड़ी छुटाईहै क्योंकि सागरकासा तो हमारा बेगहै व पवनकीसी गति परन्तु रामचन्द्र इसबिषयको नहींजानते इसीसे हमारे ऊपरको चढ़आतेहैं १६ परन्तु गुहामें टिके सोतेहुये सिंह व क्रोधकियेहुये मृत्युको ऐसा कौन है जो जगाना व बतलाना चाहे १७ अभीतक हमारे चलायेहुये बाण दुमुहे सर्प्पोंके समान चलतेहुये रामचन्द्र ने कभीनहीं देखे इसीसे संग्राम में हमारे सम्मुख आतेहैं नहींतो कभी न आते १८ सो आनेदो कोईचिन्ता नहींहै क्योंकि शीघ्रही धनुषसे छूटेहुये बज्रसमान बाणोंसे रामचन्द्र को सौ प्रकारसे सन्दीपित करेंगे जैसे लुकेठोंसे लोग हाथीको सन्दीपित करतेहैं १९ तिससे हम बड़ीभारी सेना संगले रामचन्द्रकी सैन्यका विनाश करदेंगे जैसे प्रातःकाल उदितहो सूर्य्य नक्षत्रोंकी प्रभाका नाश करदेतेहैं २० ॥

॥ कुण्डलिका ॥

वासव नेत्र सहस्त्र युत बरुण महा रणधीर ।
समरमाहिंहमसनकबहुं जीतनसकहिंप्रवीर ॥
जीत न सकहिं प्रवीर धीरमनकै यह नगरी ।

याहीसों लैलीन धनदसों बहुविधि झगरो ॥
जिनपाली बहुभांति पानकरि वारुणी आसव ।
यासों जितहिं न राम जितेनहिं हमसों बासव॥१ । २१॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुद्धकाण्डेत्रयोदशस्सर्गः ॥ १३ ॥

राक्षसोंके राजा रावणके वचनसुन व कुम्भकर्णका गर्जना भी सुन विभीषणजी हित व अर्थयुक्त वचन राक्षसराज मुख्य रावणसे बोले १ हे राजन् वक्षस्स्थलहीको सर्पशरीर बनाये व चिन्ताहीको विषरूप धारणकिये व रावणके अनुचितकर्म देख जो किञ्चिन्मात्र हसना उसी को तीखे दांत बनाये पांचों अँगुलियोंको पांच शिरकिये ऐसा सीतारूप महाअजगर तुम अपनाओ व अपने वंशवालोंको निगलवानेकेलिये क्यों यहांलाये २ अब कल्याण इसीमेंहै कि जबतक दाँतोंको आयुध बनाये व नखोंकोभी शस्त्रकिये पर्वताकार वानर लंकापुरीमें इधरउधर दौड़दौड़ सबको न काटें तिसकेप्रथमही रामचन्द्रजीको जानकीदेदो ३ व जबतक बज्रसमान पोढ़े व बायुसमान बेगवाले रामचन्द्रजीके हाथोंसे छूटे बाण राक्षसश्रेष्ठोंके शिर न काटलें तिसके प्रथमही रामचन्द्रजीको जानकी दे दो ४ हे राजन् श्रीरामचन्द्रजीके सामने समरमें न तो कुम्भकर्ण व मेघ-नाद खड़ेहोसकेंगे व न महापार्श्व व महोदर व न निकुम्भ कुम्भ व अति-काय ५ बरन इसका परिणाम यहहोगा कि चाहे तुम्हारीरक्षा सूर्य्य व उन्हासो पवन भी करें परन्तु तुम रामचन्द्रजीसे जीते न बचोगे वे देख-तेही मारहीडालेंगे विभीषणजी के ऐसे बचन सुन प्रहस्त नाम राक्षस बोला कि ६ हम लोगोंको न तो देवताओं से भयहै न कभी दानवोंसे न यक्ष गन्धर्व्व व बासुक्यादि महासर्प्पोंसे फिर रामचन्द्रसे भयकहांसे आई उनसेभी भयनहीं समझते ७ प्रहस्तके अहितबचनसुन धर्म्म अर्थ कामों में निविष्ट बुद्धि व राजाका हित चाहने वाले विभीषणजी महा-अर्थयुक्त बचनबोले ८ हेप्रहस्तराजा महोदर व तुम व कुम्भकर्णअपना प्रयोजन जैसा रामचन्द्र प्रति कहतेहो वह किसीतरह तुमलोग नहीं करसक्ते जैसे स्वर्गकोजानेमें अधर्म्म बुद्धिकीगति नहींहोती ९ फिर हे प्रहस्त सकल अर्थ बिशारद श्रीरामचन्द्रजीका बध हमसे तुमसे व सब

राक्षसोंसे भी कैसेहोसक्ताहै जैसे बिना जहाज समुद्रका उतरना नहीं होसक्ता१० क्योंकि धर्म्ममें प्रधानमहारथ इक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न व सब कार्य्य करनेमें इक्ष्वाकुही के समान समर्थ श्रीरामचन्द्र जी के आगे देवतालोग भी मूढ़होजाते हैं ११ हे प्रहस्त जिससे कि कङ्कपत्र लगने से बड़ेदुःखसे टूटने के योग्य व तीखे रामचन्द्रजी के हाथसे छूटेबाण तुम्हारे शरीर को बिदीर्णकर उसपार अभी नहीं निकल गये इसीसे तुम ऐसाबकते व मनमाने लड्डूखातेहो १२ हे प्रहस्त जिससे कि वज्रतुल्य बेगवाले अति तीक्ष्ण व तुम लोगों के प्राणान्तकारक श्रीरामचन्द्रजी के हाथसे छूटे बाण तुम्हारे शरीरको भेदनकर भूमिमें जाय नहीं गड़ते इसीसे तुम ऐसा बक बक मनमोदकखाय अघातेहो १३ हे प्रहस्त इंद्रसे भी अधिक पराक्रमी श्रीरामचन्द्रजी को समरमें न तो रावण सहसक्ता है न अतिबलवान् त्रिशिरा न कुम्भकर्णकापुत्र निकुम्भ न इंद्रजित् १४ व न देवान्तक नरान्तक व महात्मा अतिरथ अतिकाय व उसी के समान सार अकम्पन ये कोईभी संग्राममें रामचन्द्रजीके आगे खड़ेहोसके १५ हम सबसे श्रेष्ठहैं इत्यादिदुःखोंसे अनादृत इसराजा रावणकीसेवा शत्रु तुल्य तुमलोग मित्रबनेहुये करतेहो क्योंकि यह तो कुछ देखभाल काम करताहीनहीं तुमलोग चाहोजोकरो १६ अब आपलोगोंसे यहीकहतेहैं कि अनन्तबलयुक्त शरीरधारी सहस्र शिरके महाबलवान् सर्प्पकेमुखमें जबरदस्तीसे फेंकेहुये रावणको किसीतरह मुखसेनिकालबचावो अर्थात् रामचन्द्रइसे मारेडालतेहैं किसीतरह बचावो १७ अबसबतरहसे परिपूर्णकाम आपलोग इकट्ठेहोकर भूतोंसेही पकड़ेहुये इसबेचारे राजारावण की रक्षाकरो नहीं तो अबयह जाताहीहै १८ जानकी बिरहरूप जलसे भरे राघवरूप सागरसेढँकेहुये वश्रीरामचन्द्ररूप पातालके मुखमें गिरते हुये इसरावणको इकट्ठेहोआपलोग निकालनेके योग्यहैं इससेनिकालें १९ नरेन्द्रपुत्र श्रीरामचन्द्रजीको मैथिलीदेदीजिये हमारा यहीमतहै व इसीमें इसलङ्कापुरी व सबराक्षसों व राजा व सब सुहृदजनोंका हित व पथ्यहै और किसी भी तरहसे इनसबके बचनेका उपायनहींहै २० जो शत्रुकाबीर्य्य व अपने पक्षकाबल व रिपुपक्षका भी बल व योग्यस्थान व क्षयकाल व वृद्धिकाल बुद्धिसे बिचार अपने स्वामीका हितकहताहै

वही मन्त्री कहाताहै इससे तुमलोग भी ये सबबातें बिचार राजाकेहित कोकहउत्तममन्त्रीहोवो २१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेचतुर्दशस्सर्गः ॥ १४ ॥

बृहस्पतिके तुल्य मतिवाले बिभीषणजीके बचनसुन राक्षसोंके यूथमें मुख्य व महात्मा मेघनाद बिभीषणसेबोला १ हे तात कनिष्ठ यहतुम्हारी अनर्थक व बहुतभययुक्त कैसीबाक्यहै ऐसा तो जोकोई इसराक्षसकुलमें उत्पन्नभी न होगा और ही किसीकुलमें उत्पन्नहोगा वहभी न ऐसाबचन कहहीगा न करहीगा व जो इस राक्षस कुल में उत्पन्न होगा वह तो कभी न ऐसाकहहीगा न करहीगा २ इसकुलमें तो सत्ववीर्य्य पराक्रम धैर्य्य व शौर्य्यसे रहित पुरुष एक तातकनिष्ठ बिभीषणहीहैं दूसरा तो कोईनहीं दिखाईदेता ३ हे महाभीरु बिभीषण हमलोगोंके आगे मानुष राजपुत्र दोनोंभाईक्याहैं उनकोतो राक्षसोंमें लघुअकेले हमींमारसक्तेहैं हमलोगोंको क्यों डरवातेहो ४ क्योंकि त्रिलोकीकेनाथ देवताओंकेराजा इंद्रको भी हमने युद्धमें हराय नीचेकरदिया व सब देवतागण भी मारे डरके सबदिशोंको भागगये ५ व हमने इंद्रकेहाथी ऐरावतकोभी मारा कि ऊर्ध्वश्वासलेताहुआ भूमिमेंगिरपड़ा व उसके दाँत जबरदस्ती तोड़ उन्हींसे सब देवताओंकोमारा कि वे आठोंदिशाओंमें भ्रमरकरनेलगे ६ सो हम देवताओंको भी अहङ्कार तोड़डालतेहैं व दैत्योंको शोककरातेहैं फिर इन प्राकृतनरेन्द्र पुत्रोंको क्योंनहींहटासक्ते ७ इसतरह इंद्रसमपराक्रमी बड़ेदुःखसे जीतनेकेयोग्य व महातेजस्वी मेघनादके बचन सुनशस्त्रधारियोंमें बड़े श्रेष्ठ बिभीषणजी महाअर्थयुक्त बचनबोले ८ हे तात तुम अबभी बालकहीबनेहो इससे तुम्हारी पक्कीबुद्धिनहींहै व इसीसे सलाह करनेमें तुमको निश्चयनहींहै तिसीसे तुमने भी अपने बिनाशहीकेलिये बहुत अनर्थ बचनबके ९ व जिस रावणका बिनाश रामचन्द्रसे सुनमारे मोहके उसबिषयमें तुमभी सम्मतिदेतेहो तिस रावणके पुत्ररूप मित्रबन तुम परेशत्रुरूपहो १० बाल व दृढ़ साहसी तुमको जो इन मन्त्रियों के बीचमें मन्त्र पूछनेकेलिये लायाहै वह बधकरने के योग्यहै व तुम दुष्ट मतिवाले भी मारहीजानेके योग्यहो ११ हे मेघनाद तुमबड़े अबिबेकीहो

इसीसे परिपक्व बुद्धिहीनहो व इसीसे बिनयरहितहो व इसीसे तीक्ष्ण स्वभाव युक्तहो व इसीसे तुम्हारी थोड़ीबुद्धिहै इसीसे दुष्टात्माहो व इसी से मूर्खहो व इसीसे अत्यन्त दुष्टमतिहो क्योंकि जो कुछ तुमकहते सब लड़कपनहीके कारणकहते कोई भी तुम्हारी बात ठीकनहीं १२ भला बताओ तो समरमें ब्रह्मदण्डके समान प्रकाशित देदीप्यमान कालदण्ड के तुल्य व यमदण्डसे भी अधिक श्रीरामचन्द्र के हाथोंसेछूटे बाणकौन सहैगा १३ मेघनादसे इतनाकह विभीषण रावणसे बोले हेराजन् धन रत्न सुन्दर भूषण दिव्यवस्त्र व चित्र विचित्रमणि व श्रीजानकीदेवी बस इतनेपदार्थ चलो श्रीरामचन्द्रजीको देदें फिर शोकरहितहो अपनी इस लङ्कापुरीमें बसेरहें १४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुद्धकाण्डेपञ्चदशस्सर्गः ॥ १५ ॥

बहुतपुष्ट व हितवचन कहतेहुये विभीषण से कालप्रेरित रावण बड़े कठोर बचनबोला १ कि शत्रुके व युद्ध विषधर सर्प्पके साथबसै परन्तु मित्रवत् आचरणकिये शत्रुकी सेवाकरतेहुये भाई बन्धुके साथ न बसै २ हेराक्षस सबलोकोंमें भी हमजाति बिरादरीवालों का स्वभाव जानतेहैं किजाति बिरादरीवाले लोग जाति बिरादरीवालोंके ऊपरदुःख पड़नेपर हर्षित होतेहैं ३ हेराक्षस राज्यादि पानेसे जोसब में प्रधानहोता व जो राजकार्य्य निबाहनेका साधकहोता व जोविद्यावान् होता व जोधर्म्मात्मा व शूरबीरहोता इनलोगोंको जातिवालेलोग जिसकिसी तरहसे बन पड़ता अनादरकरते व उनमें कुछपैकुछ दोष ढूंढ़ाकरते किजिसमें निरादर करीडालतेहैं ४ जातिकेलोग बड़े क्रूरहोते इसीसे अपने मनकी वृत्ति गुप्तरखते व आपसवालेको दुःखित देख बहुत हर्षितहोते इसीसे वे आततायीहोते व इसीसे नित्यही वे लोग भयदायीहोतेहैं ५ जाति वालोंसे सदासबको भयहोती चलीआईहै हमने पद्मबनमें हाथियों के गाये इस विषयमें श्लोक सुनेहैं जोकि फांशी हाथोंमें लियेहुये नरोंको देख उन्होंने गायेहैं हमतुमसे कहतेहैं सुनो ६ हाथियोंनेकहा कि नतो हमको अग्निसे भयहै न औरशस्त्रोंसे व न फांशियोंसे किन्तु क्रूरस्वभाववाले अपनमतलबी जातिहीके लोगहमको भयकारीहैं ७ क्योंकि पकड़नेका उपाययेही जा-

तिहीके लोगबतातेहैं इससेसब भयोंसे हमलोगोंको जातिवालोंसे बड़ी भयरहतीहै ८ गाइयोंमें हव्यकव्यादिके लिये दुग्धहोताहीहै व स्त्रियोंमें चञ्चलता होतीहीहै व ब्राह्मणमें तपस्या होतीहीहै इसीतरह जातिवाले लोगोंसे भयहोतीहीहै इसमें कुछभी सन्देह नहींहै ९ तिससे हेसौम्य तुमभी तो जातिके वल्कि भाईही ठहरे हमारा सत्कार जो लोकभर करताहै व बड़ाभारी ऐश्वर्य्यभीहै व शत्रुओंके शिरपरटिकेहैं तुमको यह बातनहीं अच्छीलगती १० जिसतरह कमलके पत्तोंपर जलकेबूंद नहीं ठहरसक्ते इसीतरह दुष्टस्वभाव वाले पुरुषोंमें सौहृद नहीं ठहरता ११ जैसे वर्षामें बरसने व गर्ज्जनेवाले भी मेघोंसे शरदऋतुमें भूमि नहीं भीजती तैसेही दुष्टस्वभाववाले पुरुषोंमें सौहृद नहीं कार्य्य करता १२ जैसेभ्रमर बड़ेअभिलाषसे पुष्पोंका रसलेताहै परन्तु रसपीनेके पीछे उस परबैठा नहींरहता तैसेही तुमभी यहांठहरे नहींहो व तैसेही दुष्टस्वभाव पुरुषमें सौहृद नहींटिकता १३ जैसेभ्रमर काशके पुष्पको पीताभीहै पर पुष्परस नहींपाता तैसेही दुष्टस्वभाववाले पुरुषकेसाथ सौहृदकरोभी पर सुखनहीं मिलता १४ जैसेपहिले हाथी स्नानकर साफ होजाता परन्तु फिरशूंड़से धूलिले अपनेऊपरडाल निर्म्मलताको दूषित करदेता तैसेही अनारीमें प्राप्तहो सौहृदअपने स्वरूपको दूषितकरदेता १५ हेनिशाचर जोऔर कोई ऐसाकहता तौतो अबतक हमउसे मारही डालते परन्तुकुल नाश करनेवाले तुझको धिक्कारहै १६ न्याय कहनेवाले विभीषणजी से जबरावणने ऐसाकहा तो विभीषण अपनेमन्त्री चारों राक्षसोंको सङ्गले वहांसेऊपरको उछलगये १७ व अन्तरिक्षमें जाय बड़ा क्रोधकर अपने भाईरावणसेबोले १८ कि हेराजन् तुमहमारे ज्येष्ठभाईहो इससेपिताके समानहो जोजो चाहो हमकोकहो पर धर्म्ममार्ग्गमें तुम टिकेनहींहो १९ इससेयद्यपि तुमज्येष्ठ भ्राताहो परन्तु तुम्हारा यह अतिकठोर बचन हम नहींसहते हेदशानन अज्ञानीलोग जब कालके वशीभूत होतेहैं तोहित-कारीके हित व नीतियुक्त बचननहीं ग्रहणकरते २० हेराजन् ऐसेपुरुष तोसंसारमें बहुतहैं जोसदा मुहदेखीकेकारण झूंठी प्यारीबोली बोलाक-रते परन्तुअप्रिय व पथ्यबचन कहने सुननेवालेलोग बहुतदुर्ल्लभहैं २१ जोकहो कि हमनेतो तुमसे पथ्यबचन पूंछेहेनहीं तुमक्यों कहनेलगे तो

सब प्राणियोंके नाशक कालपाशसे बँधेहुये व नाश होतेहुये तुमको हम नहीं छोड़सकेथे इससे हित व पथ्यबचन कहे जैसेअग्नि लगाहुआ घर छोड़नहीं दियाजाता बरन पानी वानी डाल बचायाहीजाता फिरचाहेवह बचे व न बचे २२ क्याकरें बलतीहुई अग्निकेसमान प्रकाशित पैने व सुवर्णसे बनेवाणोंसे रामचन्द्रजीके हाथोंसे मारेहुये तुमकोहम देखना नहीं चाहतेथे इससेहमने तुमको समझाया २३ सो तुम्हारी भी लगायनहीं क्योंकि शूरबीर बलवान् व समरमें शस्त्रास्त्र चलानेमें बड़े चतुर भी लोग जब कालके वशीभूत होतेहैं तो बालू के पुलके समान नाश होजाते हैं फिर तुमभी तो कालके बशीभूतहो २४ तिससे तुम्हारा हित जान जो अप्रियबचन हमने कहा आप हमारे भाईहो क्षमाकरो पर सब तरहसे अपनी व राक्षस सहित इसपुरी की रक्षाकरो तुम्हारा कल्याण हो हम जातेहैं हमें बिना तुम सुखीहोवो २५ हे निशाचर तुम्हारा हित चाहनेवाले हमने तुमको रोंका भो परन्तु तुम को हमारे वचन नहीं अच्छे लगते उसमें तुम्हारा भी कुछ दोष नहीं क्योंकि जिन लोगों की आयुष बीतजातीहै इससेबनाय मरनेपर तैयारहोते वे लोग अपनेसुहृदों की कहीबात नहींमानते २६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेषोड़शस्सर्गः ॥ १६ ॥

रावणके छोटेभाई विभीषणजी इसतरह कठोर बचन रावणसे कह एक मुहूर्त्तभरमें जहां रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीथे वहां आपहुंचे १ उनको मेरुपर्व्वतके शिखरके आकार व बिजुलीकेसमान प्रकाशित आकाशमार्ग होकर आतेहुये पृथ्वीपर बैठेहुये वानरोंने देखा २ वे मेघयुक्त पर्व्वताकार बज्रायुध सम प्रकाशित श्रेष्ठ आयुध धारणकिये अति बीर दिव्य भूषण धारणकियेथे ३ व जो भीमबिक्रमी उनके चार अनुचरथे वे भी ढाल तलवारलिये उत्तमभूषण धारणकियेथे ४ उनपांचों राक्षसोंकोदेख वानरोंके स्वामी सुग्रीवजी अपने बड़ेप्रतापी वानरोंकेसाथ बड़ीबुद्धिमत्ता के साथ चिन्तना करनेलगे ५ एकमुहूर्त्त भरतक बिचारांश कर हनुमानादि सबवानरोंसे बोले ६ कि सब आयुधलिये व चार राक्षस अपनेसङ्ग लिये यह राक्षस हमलोगोंके मारनेकेलिये आताहै तुम लोग देखो ७

सुग्रीवके ऐसे बचनसुन सब वानरोत्तम साखू व पर्ब्बत हाथों से उठाय यहबोले कि ८ जिससे कि मारजानेपर ये राक्षस पृथ्वीपर गिरपड़ेंगे इससे इनदुष्ट राक्षसोंके मारनेकेलिये हमलोगोंको आज्ञा दीजिये ९ ये वानरलोग आपसमें इसतरह बतलातेहीथे कि विभीषणजी समुद्र के उत्तरकिनारेपर आयहीगये परन्तु आकाशही में खड़ेरहे पृथ्वीमें नहीं उतरे १० व आकाशमें टिकेहीटिके महापण्डित व महात्मा विभीषण सुग्रीव व सब वानरोंको अच्छीतरह निहार बड़ेऊँचे व गम्भीर स्वरसे बोले ११ कि दुराचारी राक्षसोंका स्वामी जो रावणनाम राक्षसहै हम उसके छोटेभाईहैं व विभीषण हमारानामहै १२ उस दुष्टरावणने जटायु को मार जनस्थानसे सीताजीको चोरीसे लाय लङ्कामें राक्षसियों की रखवारीमें करदियाहै तिससे वे बड़ी दुःखितहैं १३ हमने बहुत सकारण बचन कहकह बारबार समझाया व ऊँची नीची सुझाया कि सीता रामचन्द्रजीको देदो १४ परंन्तु जैसे जो मरनेपर होता वह औषधकी इच्छा नहींकरता इसीतरह हमारेकहे हितबचन उस कालप्रेरित रावण ने नहीं ग्रहणकिये १५ व उलटे हमको बहुत ऊँचनीचे कठोरबचन कह कह दासोंकेसमान अपमानित किया इससेहम अपनेपुत्र व स्त्रियां छोड़ रामचन्द्रजीकी शरणमें आयेहैं १६ इससे आपलोग सबलोकोंके रक्षक व महात्मा श्रीरामचन्द्रजीसे जाय निवेदनकरें कि विभीषण आयेहैं १७ यह बचनसुन बड़ीशीग्घ्रताके साथ रामचन्द्रजीके निकटजाय लक्ष्मणजी के आगेही क्रुद्धहो सुग्रीव ऐसा बोले १८ कि यह विभीषण पहिले तो आपकेशत्रु रावणकी सैन्यमें रहतारहा इससे यह भी शत्रुही है व अब बिनाजाने सुने हमलोगोंके निकट आयाहै इससे जैसेही अन्तर पावेगा हमलोगोंको मारडालेगा जैसे उल्लूपक्षी कौओंको अन्तरपाय मारडालता है १९ इससे आपकोचाहिये कि करने व न करनेके बिचारमें व यथोचित सेनाके टिकानेमें व वृत्तान्त जाननेकेलिये दूतभेजनेमें सावधान चित्त हूजिये जिसमें राक्षसादिकोंकेशत्रु वानरोंका व आपकाभी कल्याण हो २० जो कहिये कि यहतो खुद अपनी रक्षाकेलिये आयाहै हमलोगोंकी कौनहानि करेगा सो नहीं क्योंकि ये राक्षसलोग मनमाना रूप धारणकरते व जबचाहते अन्तर्द्धान होजाते व शूरभी बड़ेही होते व इन

का अभिप्राय भी कोईनहीं जाननेपाता इससे इनका बिश्वास कभी न करनाचाहिये २१ यह राक्षसेन्द्र रावणका दूतहोगा इससे हमलोगोंके निकटआय भेदबुद्धि करादेगा २२ अथवा यह बुद्धिमान् तो हईहै जब हमलोग इसके बिश्वासमें आजायँगे तो यह आप हमसबोंको अवसर पाय मारडालेगा २३ जो कहिये कि यह अपनेभाईसे बिरोधकर यहां आयाहै अब हमारा सहायक होगा यहभी अनुचितही है क्योंकि मित्रों व बनबासी तपस्वीलोगों व अपने अधीन राजोंकी भेजीहुई व भारेपर की सेना इनसबका ग्रहणकरना तो ठीकहै परन्तु शत्रुकी सैन्यको छोड़ कर २४ यह एकतो राक्षसहै जो प्रकृतिहीसे दुष्टस्वभाव होताहै फिर आपके शत्रुका भाईहै उसमेंभी अपनेआप आयाहै इन कारणोंसे सब तरह यह शत्रुहीहै इसका बिश्वास किसीतरह माननेके योग्य नहींहै २५ व यह रावणकातो छोटा भाईहै व बिभीषण इसका नामहै व चार राक्षस संगलिये आपकी शरणमें आया है यहबात हमने उसीके कहने से जानीहै २६ परन्तु हमारीजान यह बिभीषण रावणहीका भेजाहुआ आयाहै इससे इसको दण्डहीदीजिये हमयही इसकेयोग्य मानतेहैं २७ क्योंकि आपको विश्वासमें डाल कुटिलबुद्धिसे यह रावणकाभाई राक्षस मायासे गुप्त आपको मारनेकेलिये यहां आयाहै २८ इससे क्रूरस्वभाव रावणके भाई इस वि भीषणको इसके चारों मंत्रियोंसहित मारहीडालिये अथवा कोई अतिदण्डही दीजिये २९ सुग्रीवकोपयुक्तहो श्रीरामचंद्रजीसे ऐसा कह बाक्यमें कुशल सुग्रीव बाक्यकुशल रामचन्द्रजीको समझाय चुपहोरहे ३० महाबलवान् श्रीरामचंद्रजी सुग्रीवके ऐसेबचनसुन अपने समीपही बैठेहुये हनुमानादि वानरोंसे बोले ३१ कि रावणके छोटेभाई के विषयमें सुग्रीवने जोअत्यर्थयुक्त व सहेतुक बचनकहा वहआपलोगों नेभीसुना ३२ व शास्त्रमेंलिखाहै कि जहांअर्थकरने अकरनेके विषयमें सन्देहहो वहां निरन्तर ऐश्वर्य पानेकीइच्छा कियेहुये समर्थ बुद्धिमान् को चाहिये कि सबसे सम्मतिले ३३ जब वानरोंसे रामचन्द्रजीने ऐसा कहा तो वे लोग स्वस्थहो रामचन्द्रजी का प्रिय जाननेकी इच्छा किये अपना अपना मत सहेतुक कहनेलगे ३४ हे रामचन्द्र जी तीनोंलोकोंमें ऐसीकोई बातनहीं जो आप न जानते हों परन्तु हमलोगों से सौहृद के

कारण जोकुछ आपपूंछतेहैं वहअपनी शरीर हमलोगोंकी बड़ाईकरतेहैं ३५ क्योंकि आप सत्यव्रत शूर धर्म्मात्मा दृढ़विक्रम व सलाह सहित कार्य्यकरते इससे सब सुहृदोंको अपने अधीन करलियाहै ३६ इससे सुग्रीवके सब मन्त्रीलोग वुद्धिमें बड़े सम्पन्नहो एकएक अपना अपना मत अलगकहें ३७ जबइसतरह रामचन्द्रजीसे सबोंनेकहा तो बड़ेमतिमान् अङ्गदजी विभीषणकी परीक्षा लेनेकेलिये सबसे पहिलेबोले ३८ कि ये विभीषण आपके शत्रुरावण के निकटसे आतेहैं इससे तर्कणाही करनेके योग्यहैं बिश्वास करनेके लायक तो किसीतरह से नहींहैं ३९ क्योंकि दुष्टलोग अपना अभिप्राय छिपाये घूमाकरतेहैं जबकोई छिद्र पातेहैं तो घातकरतेहैं इससे वह शत्रुजनोंके विश्वाससे उत्पन्नघात बड़ा अनर्थकारक होताहै ४० इससेअर्थ अनर्थका अच्छीतरह बिचारकर कामकरना चाहिये जो गुणदेखे तो संग्रहकरे व जो दोषलखे तो त्याग करे ४१ हेमहाराज इससे जो विभीषणमें बड़ेदोषहों तो निश्शङ्क परित्याग कीजिये वा उनमें गुणबहुतहों तो संग्रहकीजिये ४२ व विभीषण के विषयमें अच्छीतरह निश्चयकर शरभनाम सुग्रीवका मन्त्रीबोला कि हेनरव्याघ्र विभीषणके निकट प्रथम एकदूत भेजिये ४३ फिर उसकी द्वारा सब अभिप्रायजान आपअपनी सूक्ष्मबुद्धिसेभी बिचार यदिउचित्त समझिये तो संग्रह कीजिये ४४ इसकेपीछे परम चतुर जाम्बवान् जी शास्त्रबुद्धिसे सबबातें बिचार गुणयुक्त व दोषरहित बचन बोले ४५ कि आपसे बैरबाँधे व पापी रावणके यहां से कुसमय व कुदेश में आये हुये विभीषणसे सदाशंकाही करनी चाहिये ४६ तिसके पीछे नीति अनीति जाननेमें बड़ा प्रवीण मैन्दनाम मन्त्री बड़ी युक्तिसे अतिहेतु युक्त बचन बोला ४७ हे महाराजाधिराज इसदुष्टात्मा रावणके छोटेभाई विभीषण से मधुरवाणीसे पूंछना चाहिये ४८ इसका अभिप्राय अच्छीतरह जान बूझ वैसा कीजियेगा यदिदुष्टहो तो परित्याग कीजिये यदि सज्जनहो तो ग्रहण कीजिये यों एकाएकी ग्रहण अग्रहण दोनों अनुचित हैं ४९ इसकेपीछे सकल वेदशास्त्र जाननेमें निपुण व सबमन्त्रियों में उत्तम हनुमान्जी अर्थयुक्त मधुर व साफबचन बड़ी जल्दीकेसाथ बोले ५० कि बुद्धिसेश्रेष्ठ सबकुछ जानने करनेमें समर्थ सबअच्छे वक्तालोगोंसे श्रेष्ठ-

तर आपके सामने जो बृहस्पति भी बोलने लगें तो बचन से आपका अनादर न करसकें फिर अस्मदादि वानरोंकी क्यागणनाहै ५१ परन्तु अबकार्यके गौरवसे हमकुछ युक्तिबतातेहैं नतो बादकरनेकी रीतिसेक हैं न अनादरसे न अधिकबुद्धिमत्ता प्रकट करनेकेलिये न कुछलेने की इच्छा से केवलयथार्थ बचन कहतेहैं ५२ आपकेआगे अर्थअनर्थ बिचारने के विषयमें अंगदादि मंत्रियोंने जोकहा वहसब दोषही कहा क्योंकि इस समय परीक्षाकरनेका कोईभी प्रयोजन नहींहै ५३ किसीकार्य में बिना नियोजनाकिये हितअहित जाननेकी सामर्थ्य नहींहोसक्ती यदिकहिये कि फिर नियोजनाकरो तो शीघ्रनियोग करनेमेंभी हमदोषही समझते हैं ५४ इसतरह अंगदके मतको खण्डनकर शरभके मतको खण्डनेलगे कि जो मन्त्रियोंने कहा कि प्रथम बिभीषणकेपास दूत भेजना चाहिये उसविषयमेंभी कुछ प्रयोजन सिद्धनहीं होताहुआ दीखता इससेदूत न भेजना चाहिये ५५ व जो जाम्बवान्ने कहा कि विभीषण कुसमय व कुकालमें आये उसविषयमें भी हमको कुछ कथनीयहै अपनी मतिके अनुसार कहते हैं सुनिये ५६ रावण व रामचन्द्रके दोष व गुणबिचार अधर्म्मात्मा रावण पुरुषके निकट से अत्यन्त धर्म्मात्मा रामचन्द्रजी के निकट जो विभीषण आये तो रामचन्द्रके निकटका यहदेश सुदेशहै व तैसेही धर्म्मवान् पुरुषके निकट पहुंचानेवाला कालभी सुकालहै यह कुछभीअदेश व अकालनहींहै ५७ क्योंकि रावणमें दुष्टतादेख व आपमें विक्रम धर्म्मादि देख यहांचलेआना योग्यहीहुआ व विभीषणकी बुद्धि-मत्ताके तुल्यहीहुआ ५८ व जो मैन्दने कहा कि किसी अज्ञात पुरुषको विभीषणकेपास भेज उनके हृदयकी बात जानकर तैसा कीजिये इस विषयमेंभी हमने अच्छीतरहसे बिचारलियाहै इससे उसकाभी खण्डन करतेहैं ५९ क्योंकि जबकोई अनारी पुरुषजाय बिभीषण से पूंछेगा कि तुम कौनहो कहांसे आयेहो व तुम्हारे आनेका क्या प्रयोजनहै इत्यादि जब पूंछेगा तो वे बुद्धिमान् पुरुष हैं पूंछनेवालेके बचननमें शंका करेंगे कि हमने तो पहिलेही अपनाहाल कहदियाहै अबये क्योंपुंछातेहैं इससे वे कुछउत्तरही न देंगे फिरउनके स्वभावके समाचार कैसे मिलेंगे इसके सिवाय जो मित्रता समझबे आये हैं उसमेंदोष पड़जावेगा कि हम तो

इनकेपास सुखपूर्व्वकआये ये हमसे झूंठीमूंठी बातें करातेहैं तो वह आ-
पकी ओरकाप्रश्न मिथ्या होजावेगा जो कहिये कि लोकमें दूत भेजकर
शुभाशुभ वृत्त तो जानेजातेहैं कुछ अनुचित तो नहीं तो जबदूत बहुत
दिनोंतक जहाँ भेजाजाता वहाँरहता तो उसके शुभाशुभ वृत्तजानपाता
न कि तुरंत सोतो बहुतदिनतक वहां दूतकारहना ठीकहीनहीं क्योंकि
वे सेनाके निकटही खड़ेहैं ६० इससे हे राजन् जल्दीमें शत्रुका अभि-
प्राय नहींबिदित होसक्ता इससेअब अपनीसेनाके बीचमें उन्हें टिकाइये
व अच्छी अच्छी बातेंकीजिये वार्त्ताकरनेके समय दुष्टता अदुष्टता आप
खुलजावेगी ६१ वह मन तो इनकेविषयमें निश्चय करलियाहै कि ये
हमारे यहांका प्रियचाहतेहैं क्योंकि उनके वार्त्ता करने के समय कोई
दुष्टतानहीं बिदितहोती बरन बड़ीप्रसन्नताके साथ बातें करतेहैं इससे
हमेंकुछ भी संशयनहींहै ६२ जो कहिये कि शठलोग भी ऐसीचेष्टा ब-
नायेरहतेहैं वह बात बिभीषणमें नहीं दिखाईदेती क्योंकि उनको हम
लोगोंकीओरसे कुछशङ्कानहीं बिदितहोती जो छलीहोते तो हमलोगोंसे
वे आपडरते सो इसकेबिपरीत वेस्वस्थचित्तहैं इससे शठता उनमेंनहींहै
न कोई उनकी बाणीहीदुष्टहै इससे हमको उनकेबिषयमें कुछभी संशय
नहींहै ६३ व आकारकोचाहै कोई किसीभीतिरहसे छिपावे पर छिपानहीं
सक्ता इसीसे जबरदस्ती पुरुषोंका अभिप्राय प्रगटहोजाताहै इनमें कोई
भी दोषनहीं पायाजाता ६४ जो कहिये कि शठता नहींहै तो फिर यहां
क्यों आये तो हे कार्य्य जाननेवालोंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी देशकाल से
सिद्ध व सुन्दर बिचारसे सम्पादित कार्य्यकरनेवाले पुरुषको फलसंयुक्त
करताहै इससे इनकाआना सफलहै ६५ क्योंकि ये आपकोतो उद्योगी
जान व रावणको मिथ्याउद्योगमें लगादेख व बालीको माराहुआसुन व
सुग्रीवको राज्यपायेजान ६६ रावणके मारजानेपर राज्यपानेकी इच्छा
से बुद्धिपूर्व्वक यहां आयेहैं इनबातोंसे इनका संग्रह करनाही योग्यहै
६७ हे बुद्धिमानोंमेंश्रेष्ठ इन बिभीषणकी सिधाईके बिषयमें हमने अपनी
बुद्धिके अनुसारकहा परन्तु अब शेषकार्य्य करनेकेलिये आपही प्रमाणहैं
जैसा उचित समझें वैसाकरें ६८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेसप्तदशस्सर्गः ॥ १७ ॥

पवनतनयके बचनसुन सबशास्त्रबिशारद व दुःखसे धर्षणा करने के योग्य श्रीरामचन्द्रजी प्रसन्नहो अपनेमनकी बातकहनेलगे १ कि बिभीषणके बिषयमें हमभी कुछकहाचाहतेहैं व हमारेकल्याणमेंटिके आपलोगों से भी कुछसुनाचाहतेहैं २ हमारी तो यहबातहै कि मित्रभावसे आयेहुये बिभीषणको अबहम न त्यागेंगे चाहे उनमें दोषहों व गुण क्योंकि शरण आयेहुयेकी रक्षा न करना यहसज्जनोंकेबीचमें बड़ीनिन्दितबातहै ३ रामचन्द्रजी का बचनसुन व बिचार व फिर आप उसे बर्णनकर सुग्रीवजी अतिशुभतर बचनबोले ४ कि यह बिभीषण राक्षस चाहे बड़ादुष्टहो व अदुष्ट इससे तो कुछभी प्रयोजनही नहीं जो कहिये कि प्रयोजन क्यों नहींहै अदुष्टता इसमेंहै तो इसका ग्रहणहोना चाहिये तो ग्रहणके योग्य तो यह किसीतरहनहींहै क्योंकि जो ऐसे दुःखित अपने भाई रावणको इसने ऐसे समयमेंछोड़दिया जब कि उसके आप महाप्रचण्ड शत्रुशिरपै प्राप्तहुये ५ तो ऐसाअधिक इसको कौनप्रियहोगा जिसेयहसमय पड़ेपर न छोड़देगा बरन सबकोछोड़ेगा इससे यह महादुष्टहोने के कारण सब तरहसे त्यागही करनेकेयोग्यहै बानरराजका बचनसुन व सबकी ओर देख ६ सत्यपराक्रमी श्रीरामचन्द्रजी कुछहँसकर पुण्यलक्षणयुक्त लक्ष्मणजी से बोले ७ कि जिसतरहका बचन सुग्रीवजी ने कहाहै वैसा बिना सबवेदशास्त्रपढ़े व बिना वृद्धोंके निकट बैठेउठे व बिनाउनकी सेवाकिये कोई पुरुषनहीं कहसक्ता ८ जो कहोकि फिर सुग्रीवके सयुक्तिक बचन मान बिभीषणको त्यागो तो इसबिषयमें जैसाहमको बिदितहोताहै व बहुत सूक्ष्मतरहै व सबराजाओंके यहां तथालोकमें भी प्रसिद्धहै ९ वह यहहै कि अपने कुलके लोग व समीपके रहनेवाले लोग ये समयपाय अमित्रहोजातेहैं इसीसे दुःखके समय वे लोग अपने स्वामीको भी मार डालतेहैं इसीसे ये बिभीषण अपनी जातिकेशत्रु रावणकी भयसे यहां आयेहैं यदि भाईसे प्रीतिकर उसकेभेजेहुये यहांआते तो कृतघ्नता आदि दोषोंकी सम्भावना इनमेंहोसक्ती ये तो पापाचरणयुक्त अपने भाईके आचरणसे बिपरीत होनेके कारण उसके निकालेहुये यहांआये इससे इनमें कोई भी दोषनहीं १० व जो पापरहित अपने कुलवाले लोग होतेहैं वे अपने हितकारी कुलवालों को मानते हैं परंतु राजालोग नि-

दोष जातिवालेसे भी शंकामानतेहैं क्योंकि राजाओंके न होनेपर उसकी जातिहीकेलोग राज्यधनादि ग्रहणकरतेहैं ११ हे सुग्रीव जो दोष तुमने शत्रुकीसेना अपनेसंग रखनेम बताया उसविषयमें जो शास्त्रकी आज्ञाहै हम तुमसे कहतेहैं सुनो १२ राक्षस बिभीषण राज्यकी इच्छा करतेहैं परंतु हमलोग उनके कुलकेन हीं हैं इससे हमारे राज्यकी इच्छा न करेंगे क्योंकि अन्यजातिवालेका राज्य अन्यजातिवाले को नहीं मिलता जो वे राज्य पानेकी इच्छा करते हैं तो रावणके मरने पर अपनेहीं राज्यकी व रावणका बध जानो अपना को अभीष्टही ठहरा तिससे इनके संग मैत्रीकरनीहीचाहिये जो कहा कि राक्षसलोग तमोगुणी होते बिना प्रयोजन भी द्रोहकरतेहैं तो उनमें भी बिवेकीलोग होते हैं जैसे सत्व-गुणी देवता लोगोंमें कोई कोई अबिवेकी होतेहैं तिससे बिभीषण ग्रहण करनेहीके योग्यहैं १३ व हमलोगोंके सङ्गमें पड़नेसे विभीषणादि व्या-कुलताहीन होजावेंगे इसीसे हर्षितहोंगे इसीसे राक्षसोंको परस्परभय आई यहकोलाहल शब्दहोगा इसकारण राक्षसलोग बिनाशको प्राप्तहों-गे तिससेविभीषण ग्रहणही करनेके योग्यहैं १४ न कहो बिभीषणकेसङ्ग मैत्रीकरनेसे आपकास्नेह भाइयोंमें कमपड़जावेगा तो हेतात सुग्रीवसब भाई संसारमें भरतकेसमान नहींहोते कि जिन्होंने राज्यपायकर भी ह-मारे हवालेकरना चाहाथा व हमारेसमान पिताका आज्ञाकारी पुत्रभी न होगा जोकि राज्य पाकरभी न ग्रहणकिया व आपकी समताका मित्र भी दूसरा न होगा जोकिराज्य सुखछोड़ हमारेसङ्ग रावणसे लड़नेकेलिये चलेआये अर्थात् भाइयोंमें हमारा ऐसा स्नेहनहीं जो मित्रों में पड़नेसे कमपड़जावे क्योंकि जो कमहोने को होता तो तुम्हारी बराबर औरकौन स्नेहीहै परतुम्हारे स्नेहकरनेसे भरतादिकोंमें स्नेहनहीं कमहुआ तोअब काहेको होगा १५ इसतरह सब रामचन्द्रजीने सुग्रीव व लक्ष्मणजीसे कहा तो महाप्राज्ञ सुग्रीवजी उठकरयह बचनबोले १६ हेक्षमाकरनेवालों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी इसविभीषण नाम राक्षसको रावणका भेजाहुआ समझिये इससेहम उसकोदण्डही देनायोग्य समझतेहैं १७इससेहेपाप-रहित राक्षसकुटिल बुद्धिसे युक्तहोताहै इसीकारण यहरावणकी आज्ञासे यहां विश्वस्तपाय तुम्हारे वा हमारेऊपर ज़रूर प्रहार करेगा १८ वा

लक्ष्मणाहीके ऊपरप्रहार करेगा इससेक्रूर रावणका भाई यह विभीषण मन्त्रियों सहित मारही डालने के योग्यहै १६ वाक्य कहनेमें बड़ेचतुर सेनापति सुग्रीवजी वाक्यरचनामें अतिकुशल राघवश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी से ऐसाकह मौनहोगये २० सुग्रीवका वचनसुन बड़ीदेरतक बिचारश्रीराम अति शुभकर वचनबोले २१ किचाहे यहराक्षस दुष्टहो वा अदुष्ट परन्तु भला हमारे ऊपर थोड़ा भी अहित किसीतरह कर सक्ता है २२ क्योंकि हेवानरराज जोहमचाहें तो पिशाचदानवयक्ष व राक्षसादिकोंको अंगुली घुमादेनेहीसे मारडालें २३ जोकहोकि इसके अङ्गीकार में क्यों ऐसा आग्रह करतेहो तो हमने सुनाहै कि एक कबूतरकी स्त्री को चिरीमारने मारभी डाला परन्तु रात्रिको वह उसी वृक्षके नीचेरहगया कबूतरनें उसवृक्षको अपनाघर समझ व व्याधाको अपने घरमें आयाजान शीतादिसे उसकी रक्षाकी व अपनामांस उसके खानेको दिया २४ जब पक्षी कबूतरने इसतरह अपने घरमें आयेहुये अपने शत्रुकी रक्षाकी तो हमलोगोंके समान उत्तम कुलमें उत्पन्नलोग कैसे न रक्षाकरें २५ भला वह तो कबूतर जड़जीव है देखो कण्वऋषि के पुत्र महर्षि व सत्यवादी कण्डुजीने एक कथा कहीहै तुमको सुनातेहैं २६ किचाहे शत्रुभीहो पर हाथ जोड़ दीनहो अपने घरमें आय प्रार्थनाकरे तो उसे न मारे २७ व चाहे दुःखितहो वा शत्रुस्वभावसे अहङ्कारयुक्त भी हो पर और शत्रुओंके भयसे व्याकुलहो जो शत्रुभी अपनी शरणमेंआवे तो उत्तमपुरुषको चाहिये कि चाहे अपने प्राणजा रहें पर उसकीरक्षाकरें २८ कदाचित् उसकीरक्षा भयसे मोहसे वा काम से वह अपनी शक्तिभर नहीं करता तो वह पापउसको होता व लोकमें निन्दाहोतीहै २६ व शत्रुकीरक्षा शरणमें आनेपर न हुई वरन उसके देखतेही देखते रिपुमारा गया तो वह अरक्षितशत्रु उसकी पुण्यलेकर चलाजाताहै व अपने बधकापाप उसको देजाताहै ३० इसतरह दुःखितोंकी रक्षा न करनेसे बड़ाभारी दोषहोता है व नरकवास दुर्य्यश व बलवीर्य्यनाशक उसका कर्म्म होजाता ३१ इससे धर्म्मिष्ठ यशःकारक व स्वर्गफल देनेवाला कण्डुजी का वचन हमकरेंगे ३२ क्योंकि हमारीभी तो आजतक यहीप्रतिज्ञा चली आतीहै व चलीजायगी कि जो एकबार भी दुःखितहो हमसे कहे कि मैं तुम्हारा

हूं तोहम सब प्राणियोंसे उसे अभय दानदेते हैं ३३ इससेहे वानरराज सुग्रीव हमने अभयदान दिया इस समय चाहे बिभीषणहों वा रावण आपही हो शीघ्रही हमारे निकट लावो ३४ रामचन्द्रजी के बचन सुन सौहार्दसे पूर्णहो बानरोंके स्वामी सुग्रीवजी श्रीराघवजी से बोले ३५ हे लोकनाथ शिखामणि धर्म्मज्ञ श्रीरामभद्रजी जो आपने ऐसे श्रेष्ठ बचन कहे तो कौन आश्चर्य्यकी बातहुई क्योंकि आपसन्मार्ग्गमें टिके व बड़े सत्ववान्हैं ३६ हमाराभी चित्त यहीकहताहै कि अनुमानसे व भाव से व हनुमान्जीके सबतरह से परीक्षालेनेसे बिभीषण का चित्तशुद्ध है ३७ तिस से हे राघव बिभीषण भी हम लोगों के तुल्य हों व हम लोगों के सखाभीहों ३८ ॥

कुण्डलिका ॥

बानरपति सुग्रीवके सुनिकै बचन पुनीत ।
सकललोकपति रामगुण धामसुकामबिनीत ॥
धाम सुकामबिनीत बिभीषण सङ्गमिलेतिमि ।
गरुड़सङ्गबिधिसहित पुरन्दर आपमिलेजिमि ॥
इमिबिधिसों मिलिभेंटकियो बहुबिधिताआदर ।
राम लषण सुग्रीव बहुरि तहँ के सब बानर ॥ १ । ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टादशस्सर्ग्गः ॥ १८ ॥

जब रामचन्द्रजीने इसतरह अभयदान दिया तो महाप्राज्ञ रावणके छोटेभाई बिभीषण जी पृथ्वीकी ओर निहारते हुये १ आकाशसे अपने चार अनुचरोंकेसाथ भूमिपर उतरे व अपने चारोंराक्षसों सहित श्रीरामचन्द्रजीके चरणोंपर गिरे २ क्योंकि शरण तो ढूंढ़तेहीथे व श्रीरामचन्द्र जीसे बिभीषणजी ३ धर्म्मयुक्त योग्य व उससमय हर्ष करानेके योग्य वचनबोले कि हम रावणके छोटे भाई हैं उन्होंने हमारा बड़ा अपमान किया ४ इससे सब प्राणियोंके रक्षक आपकी शरण में आये हैं हमने लंकापुरीछोड़दी मित्रवर्ग्ग व सबधनभी छोड़दिया ५ अब हमाराराज्य प्राण व सुख सबआपहीके अधीनहैं तिसके ऐसे बचनसुन श्रीरामचन्द्र जी बोले ६ जानों बचन से समझातेहीथे व नेत्रों से जानों पानही किये

लेतेथे विभीषण प्रथम राक्षसोंका बलाबल बतावो ७ जब इसतरह रामचन्द्रजीनेपूछा तो विभीषणजी रावणका सब बलाबल कहनेलगे ८ हे महाराजकुमार ब्रह्माजीके बरदानसे रावण को गन्धर्व्व सर्प्प पक्षी आदिकोई भी प्राणी नहीं मारसक्ता ९ व रावणसे छोटा व हमसे बड़ा भाई महातेजस्वी व महावीर्य्यवान् एककुम्भकर्ण नामकहै यह समरमें इन्द्रकेसमान पराक्रमीहै १० हेरामचन्द्रजी तिसरावणके एकसेनापति का प्रहस्तनामहै सापद आपने इसका नामसुनाहो इसने कैलासपर्व्वत पर समरमें माणिभद्रनाम महादेवके गणको हरादिया ११ प्रत्यञ्चाके घात स्थानके निवारण करनेवाले से अंगुलियों की रक्षाकिये व अभेद्य कवच धारणकिये संग्राममें जब खड़ाहोता तो अदृश्य होजाता ऐसा मेघनादनाम रावणका बड़ापुत्रहै १२ इसने समरमें अग्निको प्रसन्नकर अन्तर्द्धानहो बहुतसे शत्रुओं को मारडाला १३ इनके सिवाय महोदर महापार्श्व व अकम्पन ये भी तिसरावण के सेनापतिहैं ये सब समरमें लोकपालोंके समानही पराक्रमी हैं १४ इनकेसिवाय मांसरुधिर भक्षण करनेवाले व मनमाना रूपधारण करनेवाले एक अर्व्व महाबलवान् राक्षस लंकापुरी में रहतेहैं १५ तिनराक्षसोंके साथ दुष्टात्मा रावणने कई लड़ाइयां इन्द्र वरुण अग्नि यम कुबेरादि लोकपालोंसेकी वे सब देवगण सहित अपना अपना स्थानछोड़ भागगये १६ श्रीरामचन्द्रजी विभीषणके ऐसेबचनसुन मनसे सबबिचार बोले १७ हेविभीषण रणमें रावणके शूरतादि जितने कर्म्म तुमने अच्छीतरह बताये हमसब अच्छी तरह जानते हैं हमारे सामने कुछभी क्रिया कुशलता रावणकी नहीं चलसक्ती १८ इससे सहितपुत्र व सहित प्रहस्त रावणको रणमें मार हमतुमको लंकाकाराजा बनावेंगे यह सत्यही कहतेहैं १९ चाहे रावण रसातलमें पैठजावे व पाताल में प्रवेशकरे वा ब्रह्मा महादेवादि कों के निकट चलाजावे परन्तु अबहमसे जीता न बचेगा २० हम अब अपने तीनों भाइयोंकी सौगन्ध खातेहैं कि सहित परिवार रावण को समर में बिना मारडाले हम अयोध्याको न जावेंगे २१ अमानुष कर्म्मकारी श्रीरामचन्द्रजी के बचनसुन शिरसे तिनके प्रणामकर विभीषणजी कुछ कहनेलगे २२ कि हम जबतक जीतेरहेंगे राक्षसों के बध करने व ल-

कापुरी के बिध्वंस करनेमें आपकी सहायता करेंगे इसी से रावण की सेना जैसेही देखपड़ेगी सबसे पहिले हम उसमें पैठ जावेंगे २३ ऐसा कहते हुये विभीषण को छाती में लगाय व भलीभांति छपटाय श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी से बोले कि समुद्र से जललाओ २४ व इससे इन महाप्राज्ञ विभीषणका राज्याभिषेक करो क्योंकि अब हम इनके ऊपर प्रसन्नहुयेहैं इससे ये राक्षसोंके राजा कियेगये २५ महाराजाधिराज रामचन्द्रजीकी ऐसी आज्ञापाय लक्ष्मणजीने वानरश्रेष्ठोंके सामने विभीषण को राक्षसोंके राज्यपर अभिषेक करदिया २६ विभीषण के ऊपर आतेहीआते रामचन्द्रजीकी ऐसी प्रसन्नतादेख सबवानर हर्षितहो किलकिलानेलगे व महात्मा श्रीरामचन्द्रजी की बड़ाई करनेलगे २७ इसके पीछे हनुमान् व सुग्रीव विभीषणसे बोले कि यह अचल अपार अगाध समुद्र हमलोग कैसेउतरें इसकीभी कोई उपाय बताओगे २८ सो अकेले अपनेलिये नहींपूंछते ऐसीयुक्ति बताओ जिसमें महापराक्रमी सब वानरोंकी सेना भी २९ यत्नपूर्व्वक समुद्रउतरजाय किसीको कुछ कष्ट न पड़े ३० जबऐसा उन दोनोंजनोंने कहा तो धर्म्मात्मा विभीषणजी बोले कि महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी अपने घरकाजान समुद्रकेपासजायँ ३१ तो यह महोदधि अपनी जातिवाले श्रीरामचन्द्रजीका कार्य्य अवश्य करेगा क्योंकि राजासगरके पुत्र पौत्रोंका यह खोदाहुआहै ३२ इसतरह महापण्डित विभीषणजीने जबकहातो सुग्रीवजी जहा रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीथे वहांआये ३३ व बड़ेभारी गलवाले सुग्रीवजी विभीषणकेकहे हुये शुभवचन समुद्रके समीप बैठनेकेलिये कहनेलगे ३४ उन्हें सुनतेही प्रकृतिहीसे धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजीने भी प्रसन्नकिये व वे महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी व सुग्रीवजीसे बोले ३५ क्योंकि इन दोनों जनोंको समुद्रकी सत्क्रिया करनेकेयोग्य समझा हे लक्ष्मण विभीषणकी सलाह हमकोभी अच्छीलगतीहै ३६ व सुग्रीवभी बड़ेपण्डितहैं व आप जानों सलाहदेनेमें बड़ेही चतुर पण्डित हैं इससे दोनोंजन सम्मतिकर जिसबातकेलिये विचारकरो कहो कि वही कियाजावे ३७ जबइसतरह से सुग्रीव व लक्ष्मण दोनोंजनोंसे श्रीरामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो वे दोनों जो उस समयके अनुसार उचित था कहनेलगे ३८ हे नरव्याघ्र इस

समय जो सुखकारक बचन विभीषणने कहा वह हमलोगों को कैसे न रुचेगावहतो करनाही ठहरा३९ क्योंकिइस घोरसमुद्रमें विना सेतुबांधे देवता दैत्यादि कोईभी लङ्कापुरीको नहींजासके ४० शूरबीर विभीषण जीके बचन अवश्यकीजिये अब बिलम्ब करनेका कुछकामनहीं समुद्रसे जो कहनाहै कहाजावे ४१ व जिसतरहसे रावणपालित लङ्कामें सैन्य सहित हमलोग पहुँचें वहीतो कहनाही सुनना व करनाहै यहसुन समुद्र के तीर कुशबिछाय श्रीरामचन्द्रजी वेदीके बीचमें स्थापित अग्निकेसमान स्थितहो शोभितहुये ४२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेएकोनविंशस्सर्गः ॥ १९ ॥

जब रामचन्द्रजी समुद्रकेतीर कुशासन पर बैठे तो दुष्टात्मा राक्षस-राज रावणका दूत अतिबीर्य्यवान् शार्दूलनाम राक्षसने सुग्रीवसे पालित वानरोंकी सेनाके निकटआय सब सैन्य अच्छीतरहसे देखी १ व देख भाल बड़ी जल्दबाजीके साथ वह राक्षस फिर लङ्काको गया २ व वहां पहुँच राजारावणसे बोला कियह वानरों व ऋक्षोंकी सेनाका समूह जो लङ्काके सामने पड़ा है वह अथाह व अपार मानों दूसरा समुद्रहीहै ३ व महाराजाधिराज दशरथजीकेपुत्र राम लक्ष्मण दोनोंभाई ४ बड़े स्वरूप-वान्हैं व सीताजीकेलिये आयेहैं ये दोनों महाबलवान् समुद्रके किनारे पर पड़ेहैं ५ व सेनासब चालीशकोशकी लम्बाई व उतनीही चौड़ाई व उतनीही उँचाईमें पड़ीहै हे महाराज उसकाहाल आप बहुतही जल्दलें ६ हे महाराज आपकेदूत बहुतहीशीघ्र वहांजावें व बिचारें कि कुछदेने लेनेसे कार्य्यचलेगा वा समझाने बुझानेसे व तोड़फोड़कराय भेदडालने से ७ शार्दूल के वचनसुन राक्षसों का स्वामी रावण अच्छीतरह बिचार शीघ्र ८ शुकनाम बड़ेचतुर राक्षससे बोला कि हे शुक जाय हमारीओर से वानरों के राजा सुग्रीव से कहो ९ कहने में दबना नहीं अच्छी मधुर बाणीसे सबसन्देश विधिपूर्व्वक कहना कि हे सुग्रीव तुम महाराजों के कुलमें उत्पन्नहो व महाबलवान्भी हो व बड़ेभारी ऋक्षरजस् नाम वा-नरराजके पुत्रहो तुमसे हमारा न कुछ प्रयोजनही है न अप्रयोजनही तथापि तुम हमारे भाईकेसमानहो १० हे सुग्रीव परम बुद्धिमान् महा-

राजकुमार रामचन्द्रजी की भार्य्या जो हम हरलाये तो उसमें तुम्हारी क्या हानिहुई इससे अपनी किष्किन्धापुरीको चलेजावो ११ व जो तुम्हारा विचार लङ्कामें आनेकाहो तो यहलङ्का विष्णु ब्रह्मा महादेव व अन्य देवता गन्धर्व्वादिकोंके भी प्राप्तहोनेके योग्य किसीभी तरहसे नहीं है फिर मनुष्य व वानरोंकी कौनगणनाहै १२ जबराक्षसेन्द्र रावणनेऐसा कहा तो वह शुक पक्षीकारूप धारणकर आकाशको बड़ी जल्दीके साथ उड़गया १३ व समुद्रके ऊपर ऊपर बड़ीदूरतक चलागया व समुद्रके उत्तरके तीरपर पहुँच आकाशहीमें टिकाहुआ सुग्रीवसेबोला १४ जैसा कुछ दुष्टात्मा रावणने कहाथा वह कहनेलगाहै कि बहुतसे वानरोंने कूदजाय उसे आकाशहीमें पकड़ा १५ व सबकेसब मूकों चटकनोंसे मारने व पङ्ख उखाड़नेलगे जब जबरदस्ती उन वानरों के काबू में वह निशाचर पड़गया १६ तो उनसबोंने आकाशसे भूतलपर उसेउतारा व सबकेसब मिलकर मारने पीटनेलगे जब बहुत ब्याकुलहुआ तो शुकबोला १७ हे महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी लोग दूतोंको नहीं मारते इससे आप इन वानरोंको मनाकीजिये क्योंकि जो दूत अपने स्वामीका मतछोड़ अपने मतसे जो चाहता कहता वही दूत मारने के योग्य होता हमनेतो अपने स्वामीकेबचनकेप्रतिकूलएकअक्षर भी और नहींकहा फिर ये लोग हमको क्यों मारतेहैं १८ शुकके ऐसे रोदनयुक्त बचनसुन मारतेहुये वानरश्रेष्ठोंसे श्रीरामचन्द्रजीने कहा कि जानेदो इसे न मारो १९ जब वानरोंने छोड़दिया तो पङ्खतोजानों उसके उखाड़ही डाले थे इससे और हलका होगया वानरोंके भयसे फिर आकाशको उड़गया व सुग्रीवसेबोला २० हे सुग्रीव हे महाबल पराक्रम हे सत्वसम्पन्न भला यहतो बतलाइये कि लोकों के रोवाने वाले रावण से हम आपका कौन सन्देश कहेंगे २१ वानरोंकेस्वामी व महाबलवान् सुग्रीवजीसे जब उसराक्षसने ऐसाकहा तो राक्षसराजकेदूत शुकनाम राक्षससे उदारमनहो सुग्रीवजीबोले २२ कि हमारा यहसन्देश कहना कि नतो तुमहमारे मित्रहो न हमारे दया करनेके योग्य न उपकार करनेवाले न हमारेप्रियहो किन्तु तुमरामचंद्रजीके शत्रुहो इससे सहितपरिवार बालिकेसमान मारडालनेके योग्यहो २३ इससे हेराक्षसराज हमतुमको पुत्रबन्धु व जाति बिरादरी सहित

मारडालेंगे व बड़ीभारी सेनाले लंकामें आय सबपुरी भस्मकर धूलिमें मिलादेंगे २४ हे रावण चाहे इन्द्रादि देवताभी तुम्हारी रक्षाकरें वा अन्तर्द्धान होजाव वा सूर्य्यमण्डल में जाबैठो वा पातालको चले जावो परन्तु रामचन्द्रजीसे अबतुम न बचोगे व चाहे महादेवजी के चरणार-विन्दोंके निकटभी चलेजावो पर अपनेभाई पुत्रसहित तुम रामचन्द्रजी से मारेहीहुये समझो २५ क्योंकि हम तीनोंलोकोंमें नतो किसीपिशाच को देखते न राक्षसको न गन्धर्व्वको न दैत्यको जो रामचन्द्रजीसे तुमको बचाले २६ तुमनेबेचारे वृद्धजटायु गृध्रराजको माराहै क्या रामचन्द्रजी वा लक्ष्मणजी के सामने तुमने २७ बिशालाक्षी सीताजी को हरा है जिसको ग्रहणकर अब तुम किसीको कुछनहीं समझते २८ व महाबल महात्मा व देवताओंसे भी कभी न हारनेवाले रघुबंशविभूषण श्रीराम-चन्द्रजीको भी नहींजानते जो तुम्हारे प्राणहरलेंगे २९ तब अङ्गदजी बोले कि हेमहाप्राज्ञ सुग्रीवजी यह केवल दूतमात्रही नहींहै वरन हमें यह हमलोगोंके बलकी परीक्षा करनेवाला विदित होताहै ३० क्योंकि तुम्हारे आगेही टिकेहुये इसने सब सेनाकी अन्दाजलेली इस से हमारे बिचारमें आताहै कि इसेपकड़लीजिय जिसमें सबवृत्तान्त बतानेकेलिये फिर लंकाको न जासके ३१ तब सुग्रीवजीकी आज्ञासे अनाथवत् रोते हुये उसराक्षसको वानरोंने कूदकर फिरपकड़ बांधदिया ३२ जब सब वानरोंने शुकको बहुत पीड़ितकिया तो उसने महाराजाधिराज दशरथ-कुमार श्रीरामचन्द्रजीको बहुतजोरसे पुकारा ३३ कि देखिये जबरदस्ती मेरेसबपङ्ख इनलोगोंने उखाड़लिये व मेरेनेत्रभी फोड़डाले इससेजबसे मेराजन्महुआहै व जबतक जीतारहूंगा ३४ इसबीचमें जितनापाप मैंने कियाहै जोमें अब माराजाता हूं तो वह सबपाप आपको प्राप्तहो ३५ उसका ऐसा रोदनसुन रामचन्द्रजीने वानरोंसेकहा कि यहबेचारा दूत है इसेछोड़दो तबसबोंने छोड़दिया ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेविंशस्सर्गः ॥ २० ॥

तिसकेपीछे समुद्रकेतीर कुशबिछाय पूर्व्व को मुखकर हाथजोड़ श्री रामचन्द्रजी बैठे १ फिरसुवर्णके भूषणोंसेभूषित अपनीभुजा शिरकनीचे

धर शत्रुओंके नाशनेवाले राघवजी शयन कररहे २ जो भुजा सुवर्ण के बहूंटों व मोतियोंके बड़ेबड़े भूषणोंसे भूषित व नारीसंसर्ग रहित हनुमानादि मित्रोंसे बारबार मींजी व सुहराईहुई ३ व जिसमें आगेचन्दन अगरुआदि लगायेजातेथे व प्रातःकालके सूर्य्यकेसमान अरुणचन्दनोंसे शोभित ४ व जो शयनके समय आगे सीताजीके शिरकेनीचे धरीजाती थी गङ्गाजलसे सींचेहुये तक्षकके शरीरके समान लम्बायमान ५ व समरमें जुआकेसमान लम्बी इसीसे शत्रुओंको शोकबढ़ानेवाली व सुहृदों को आनन्दित करनेहारी व अतिलम्बी व समुद्रके तीरपर पसारी ६ व बाईभुजा पर प्रत्यञ्चाका दाग बनानेवाली व महापरिघ के समान मोटी ७ जिससे हजारों गोदान प्रतिदिन दियेजाते ऐसी दहिनीभुजा शिरकेनीचेधर श्रीराघवजी शयन करनेलगे व कहने कि यातो तीनदिन तक इसकेतीरपर निरशन व्रतकरनेसे समुद्रही उतरजावेंगे जो सागर न उतरनेदेगा तो उसका मरणही होगा ८ महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी इतसरह अपने मनमें धारणाकर समुद्र उतरनेपर दृढ़ विश्वासकर व मौनव्रत धारणकर वहां तीर्थोपवासकी रीतिसे विन भोजन किये लेटे ९ इसतरह कुशबिछाई पृथ्वीपर लेटेलेटे श्रीरामचन्द्रजीको नियमसे रहते रहते तीनरातें बीतगईं १० इसरीतिसे न्यायजाननेवाले व धर्म्मवत्सल श्रीरामचन्द्रजी नदियोंके पति समुद्रकी तीनदिनतक उपासनाकी ११ यद्यपि रामचन्द्रजीने अतिपवित्ररूपसे समुद्रकी पूजाकीपरन्तु महामन्द समुद्रने तीनदिनतक श्रीराघवजीको दर्शन न दिया १२ तब श्रीरामचंद्रजी समुद्रके ऊपर बड़ा क्रोधकर समीपही बैठेहुये सुन्दर लक्षणवाले लक्ष्मणजीसे बोले १३ कि देखो समुद्र अपनेआप नहीं दिखाई पड़ता यहउसका घमण्डहै देखोशान्ति क्षमा सरलवृत्ति व प्रियवचन बोलना १४ ये जो सज्जनोंके गुणहैं वे अहंकारादि दोषयुक्त दुर्ज्जनोंके सामने करनेसे करनेवालेकी असामर्थ्य को जतातेहैं व जो राजा वा अन्यही पुरुष प्रशंसाकरनेके योग्यभी नहींहोता पर अपनी प्रशंसाकरता व दुष्ट होता व ढीठहोता व अपनागुण सब से कहनेकेलिये इधर उधर दौड़ा करता १५ व जहांदण्डदेनेका प्रयोजनभी नहींहोता पर उग्रदण्ड देदेताहै अहङ्कारीलोग ऐसेराजाका सत्कार करतेहैं हे लक्ष्मण समझाने बुझाने

से दिगन्तमें कीर्तिनहीं मिलसक्ती व यशभीसामसे नहींमिलता न समर में जयही सामसे प्राप्तहोतीहै १६ हे लक्ष्मण इससे आजही हमारे बाणोंसे मरेकटे मत्स्योंसेयुक्त व इधरउधर बहती छटपटाती मछलियोंसे जलरुँकाहुआ समुद्रदेखोगे १७ व हमारेबाणोंसे कटेकुटे नागोंके शरीर मछलियोंकेभी बड़ेबड़े शरीर व हाथियोंकी शूंड़ेंभीदेखो हे लक्ष्मण १८ आजही बड़ाभारी युद्धकर सूंती शङ्खादियुक्त व मगर मछलीसमेत समुद्र हम शोषेलेतेहैं १९ यहसमुद्र हमको क्षमायुक्तदेख असमर्थ समझताहै इससे इसतरहके जनकेऊपर क्षमाकरनेको धिक्कारहै २० देखोभलभल समझाया व कहासुना परन्तुसमुद्र अपनारूप हमको नहींदिखाता २१ इससे हेलक्ष्मण हमाराधनुष व विषधरसर्प्पोंकेसमान विस्तारीबाणलावो अभी समुद्रको शोषलें व वानर ऐसेही पैदर उतरजावें २२ क्रोधयुक्तहो अचलभी समुद्र आजही शोषलेतेहैं जिसमें वानर पैदर चलेजावें २३ अभीतक तो समुद्रकी मर्य्यादा किनारेतकहै व सहस्रोंलहरें क्यामहा-तरङ्गोंसे भयानकहै परन्तु अपनेबाणोंसे इसेमर्य्यादा रहितकरदेंगे यद्यपि इसमें बड़ेबड़े दैत्यादिभरेहैं तथापि समुद्रको शोषहीलेंगे २४ यहकह धनुष हाथमेंले मारेक्रोधके नेत्र इधर उधर फैलातेहुये श्रीरामचन्द्रजी प्रलयके समयके अग्निके समान दुर्द्धर्ष होगये २५ व महाघोर धनुष जोरसेखींच व धीरेसे संसारको कँपाय बड़े उग्रबाणछोड़े जैसे इन्द्रवज्र छोड़ते हैं २६ वे रामचन्द्रजी के छोड़ेहुये बाण मारेतेजके प्रकाशित बड़े वेगसे चले व जाय व्याकुल मत्स्योंसे युक्त समुद्र के जलमेंपैठे २७ उस समय मछली मगरादि जीवोंसेयुक्त समुद्रका बड़ाभारीवेग प्रचण्डपवन के लगनेसे बड़ा भयङ्कर शब्द करनेलगा २८ व सब ओरसे बड़ी बड़ी लहरोंके समूहउठ व ठौर ठौर शङ्खोंके ढेरकेढेर उफलाचले व सब ओरसे धुआं उठनेलगा लहरोंपर लहरें आनेलगीं शीघ्रही समुद्रका ऐसारूप होगया २९ व जितने सर्प्प समुद्र व पातालमें थे सबके सब व्याकुल होगये व सबके नेत्र निकलआये मुखों से विष निकलनेलगा व पातालनिवासी दानवलोग भी बहुतही व्याकुल हुये ३० व नाक मगरादि जलजन्तु युक्त नदियों के राजा समुद्र की लहरें बिन्ध्याचल व मन्दराचलके समान ऊँची हज़ारों लाखों उठनेलगीं ३१ इससे बड़े

बड़े तरङ्गोंके उठने व गिरने से व नागराक्षसादिकों के सम्भ्रान्तहोने से व बड़ेबड़े घड़ियालोंके उफलानेसे समुद्र महाघोरशब्दयुक्त होगया ३२ इसकेपीछे लक्ष्मणजी ने बहुत निकटआय उग्रतेजस्वी शीघ्रशीघ्र सासें लेतेहुये बड़ावेग किये व फिर धनुषकोखींचतेहुये अप्रमेय श्रीरामचन्द्रजीसे ऐसा न कीजिये ऐसा न कीजिये ऐसाकह रामचन्द्रजीका धनुष पकड़लिया जिसमें फिर बाण न चढ़ावें कि कहींसंसा ही न भस्महोजावे ३३ हे महाराज समुद्रका यह विनाश विनाकिये भी बीरतम आपकाकार्य सिद्ध होजावेगा फिर इसका नाश क्योंकरतेहो आपसरी वे पुरुषक्रोधके वशीभूतनहींहोते इससेआप क्रोधादिरहित अपनी स्वदैविकप्रकृतिका स्मरण करें ३४ कुछइसबातको हमहीनहींकहते बरन अन्तरिक्षमें छिपेहुये ब्रह्मर्षिलोग व सुरर्षिलोग भी यह बड़े कष्टकी बातहै ऐसा कहतेहुये हमारी ओर इसाराकर ऐसाशब्द करतेहैं तिससे हमने आपसे कहा अब आप शान्तहों ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकविंशस्सर्गः ॥ २१ ॥

लक्ष्मणजीके रोंकनेपरभी रघुश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी समुद्रसे अतिदारुण बचनबोले कि आजहम सहितपाताल महार्णव शोषलेंगे १ हेसमुद्र हमारे बाणोंसेजलकर तुम्हाराजल सूखजावेगा व सबजीव मरजावेंगे तो बड़ीभारीधूलि तुममेंउड़ेगी २ हे सागर हमारे धनुषसे निकली हुई बाणवृष्टिसे सबवानर पैदलही तुम्हारे उसतीरको चलेजावेंगे ३ बहुत जलादिका संग्रहकरनेसे हमारा पौरुष व बिक्रमतुम नहींजानते इससे हे दानवालय सन्तापको प्राप्तहोवोगे ४ इतनाकह ब्रह्मदण्ड के तुल्य बाण ब्रह्मास्त्रचलानेवाले मंत्रसेसंयुक्तकर व उत्तम धनुषपरचढ़ाय महाबलवान् श्रीरामचन्द्र जी ने खींचा ५ जब श्रीरामचन्द्रजी ने धनुषखींचा तो पृथ्वी व अन्तरिक्ष थरथराउठे व पर्ब्बतकँपउठे ६ व सब लोकोंमें अंधकारछागया इससे दिशाप्रकाशित न रहगईं ताल व नदियाँ चलायमानहोगईं ७ नक्षत्रसहित सूर्य्यचन्द्रमा टेढ़ेचलनेलगे व सूर्य्यकेकिरणों सेयुक्त भी आकाश अन्धकारसे युक्तहोगया ८ व आकाश सैकड़ों उल्कापातोंसे प्रकाशितहोगया व अन्तरिक्षसे बड़ेशब्दयुक्त बज्रपातहोने

लगे ६ व दिव्यप्रचण्ड पवन बहनेलगे कि जिनसे वृक्ष टूट टूट गिड़ने लगे व बादल इधरसे उधर बारबार उड़नेलगे १० व बड़ेबड़ पर्ब्बतों में टक्करदेताहुआ पवन कँगूरोंको गिरानेलगा व आकाशसे गिरतेहुये महावज्रोंने बड़े बड़े शब्दकर बिजुली से उत्पन्न अग्निछोड़दिया ११ उससे जितनेप्राणी दिखाईदेतेथे सबकेसब बज्रके शब्दहीकेसाथ चिघड़ उठे व जो प्राणी दिखाईभी न देतेथे वे भी भयङ्कर शब्दकरउठे १२ व बज्रकेशब्दसे निरादरकियेहुये इसीसेडरे हुये व इसीसे चलायमानचित्त हो सबप्राणी बहुत ब्यथितहुये व गिरपड़े व इसीसे मारेभयके न चल सके जो जहाँगिरे वहींपड़ेरहे १३ तब सबप्राणियों व अपनेजल लहरों सहित समुद्र रामचन्द्रजी के बाणके बेगसे महाबेगवान् होगया १४ इसीसे किनारोंसे अलगबहनेलगा यहांतक कि जहाँतक सदाजलजाता था उससे चारचार कोश दूरतक चलागया १५ परंतु उस उफलातेहुये समुद्रसे डरकर शत्रुओंकेनाशक श्रीरामचन्द्रजी कुछभी न हटे १६ तिसके पीछे जैसे उदयाचल पर्ब्बत से सूर्य्यनारायण निकलतेहैं वैसेही बीच समुद्रसे सागर अपने आप निकला १७ व बड़े बिषधर सर्प्पोंके साथ दिखाईदिया उसकीदीप्ति उससमय वैदूर्य्यमणिके समानथी व सब भूषण सुवर्णहीके धारणकियेथा १८ व सबवस्त्र व माला लालहींधारण किये था नेत्र कमलदल समानथे व जो माला धारण किये था वह सब तरहके पुष्पोंसेबनीथी १९ व सबभूषण उत्तम सुवर्ण के धारण कियेथा उनभूषणोंमें समुद्रसेही उत्पन्न मणिजड़ेथे २० उससमय सबधातुओंसे भूषित हिमवान् पर्ब्बतके समान समुद्र शोभितहुआ व उसके सबलहरों के समूह इधर उधर उठते गिरते व मेघों में लगलग पवन के झँकोरे उसमेंलगते २१ व गंगा सिंधुआदि नदियाँ अपनी अपनी मूर्त्तिसे चारों ओरसे उसेघेरेथीं ऐसा बीर्य्यवान् समुद्र श्रीरामचन्द्रजी के समीपआय हाथजोड़ व बाणहाथमेंलिये श्रीराघवको अपने सम्मुखकर बोला २२ हे रामचन्द्रजी पृथिवी बायु आकाश जल व अग्नि ये सब अपने अपने स्वभावपर टिकेहैं कोई उसके बिपरीत नहींचलते २३ तिससेहमभी जो अगाधरहतेहैं वह हमारा स्वभावहीहै व यहभी हमारा स्वभावहै कि हमको कोई उतर नहींसक्ता बल्कि जो हमथाह होजावें तो यही हममें

बिकारहोजावे २४ परन्तु अबहम अपने थाहहोनेका उपायबतातेहैं सो भी वह उपाय उतरनेकाहोगा परन्तु काम लोभ व भयसे व अनुरागसे हम किसीतरह अपना जल नाक मगरआदि जीवोंसे भरेहोनेके कारण कैसेरोंकसकें २५ हाँ हम वहउपायकरेंगे जिससे आप पारउतर जावोगे व जबतक आपकी सेनाउतरेगी तबतक ग्राहादिजीव सेनाको न भक्षण करेंगे २६ व वानरोंके उतरनेकेलिये उत्तमस्थान करदेंगे यहसुन रामचन्द्रजी ने कहा कि समुद्र हमारा बचनसुनो २७ यह सफलबाण जो तुमको शोषनेकेलिये हमनेचढ़ाया वह किसस्थानपर छोड़ें रामचन्द्रजीके बचनसुन व वह महाबाणदेख महातेजस्वी समुद्र रामचन्द्रजी से बोला २८ हे रामचन्द्रजी जैसे लोकमें आप प्रसिद्धहैं इसी तरह उत्तरदेशमें एक द्रुमकुल्यनाम स्थान बड़ा पुण्यदायकहै २९ वहाँ बड़े कठोर कर्म्म करनेवाले व बड़ेपापी आभीरादिचोर रहतेहैं वे हमारा जलपीतेहैं ३० परंतु उनपापियोंका पापरूपस्पर्शहमनहीं सहसक्ते इससे हे रामचन्द्रजी यह अपना उत्तमबाण वहींछोड़ो अर्थात् इससे उन आभीरादिकोंको मारो ३१ तिसके ऐसे बचनसुन समुद्रके बतायेहुये स्थानपर रामचन्द्र जी ने अपना वहबाणछोड़ा ३२ जहाँ बज्रसमान वहबाण रामचन्द्रजी ने छोड़ा उस स्थानका मरुकान्तारनाम होगया ३३ व वहाँकी पृथ्वी बाणसेपीड़ितहो बहुत चिघड़ी व जहाँ वहबाणगिराथा उसीकेमार्गसे रसातलसे बड़ाजलनिकला ३४ व जिसमार्गहोकर वह जलनिकला वह ब्रणनाम कूपहोगया व उसकूपसे निरन्तर ऐसा जलनिकलनेलगा जिससे वह दूसरे समुद्रही के समान दिखाई देनेलगा ३५ जब बाण लगने से वहाँ की पृथ्वी फटी तो बड़ा भयङ्कर शब्दहुआ व जो जल वे चोरपीते थे रामचन्द्रजी ने उसी बाणसे शोषलिया ३६ व वह स्थान तीनोंलोकों में मरुकान्तार के नाम से प्रसिद्ध होगया जब वहाँका जल सब सूखगया तो महाराज कुमार श्रीरामचन्द्रजीने ३७ उस मरुकान्तार देशको बरदानदिया ३८ इस देशमें पशुओं के चरनेवाली घास बहुतहो व रोग यहाँ बहुतही कमहों फलमूल रसादि बहुतहों तेल व दुग्ध बहुतहो व बिबिध प्रकार की सुगन्धित औषधियाँ हों ३९ इन्हें आदि अन्य बहुत शुभपदार्थों से भरापुरा यह मरुकान्तार देशहो

इसतरह रामचन्द्र जी के बरदान से वह देश कल्याणकारी होगया ४० जब उसबाणसे उन आभीरादि चोरोंके खाने पीनेकेपदार्थ जलगये व वे दुष्टमरगये व मरुकान्तार देश बनगया तो सर्व्वशास्त्र जाननेवाले श्री रामचन्द्रजीसे समुद्रबोला ४१ हे सौम्य श्रीराम विश्वकर्म्मा के पुत्र ये नलजी बड़े श्रीमान् व प्रीतिमान्हैं व इनको विश्वकर्म्माने बरदान दिया है४२ इससे जैसे इनकेपिता विश्वकर्म्मा हैं वैसेही ये नलभीहैं इससे ये हमारे ऊपर सेतु बनावें हम अपने ऊपर सेतुको धारण करेंगे ४३ बस यहीसब वानरोंके उतरनेका उपायहै यहकह समुद्रतो फिरअपने जलमें चलेगये व महाबलवान् नलजी उठकर श्रीरामचन्द्रजीसे बोले ४४ कि हमअपने पिताकी सामर्थ्य अपनामें धारणकर बड़ेचौड़े समुद्रमें सेतुबांध देंगे समुद्र सत्य कहताहै ४५ उपकार न माननेवाले जनों के विषयमें दण्डहीदेना उचितहै इससे उनउपकार न माननेवाले पुरुषोंकेसङ्ग क्षमा करना समझाना वा कुछदेकर प्रसन्न करना अनुचितही है ४६ क्योंकि इससमुद्रको प्रथम रामचन्द्रजीने भलभल समझाया परइस अकृतज्ञने कुछ न माना जब दण्ड देने को तैयारहुये तो उसकी भयसे अपनामें सेतु कर्म्म देखने की इच्छा से उसने रामचन्द्र जी को मार्ग्गदेदिया दुष्टलोग दण्डहीमें प्रसन्नहोतेहैं ४७ व हमतोसेतु बनायहीदेंगे क्योंकि मन्दराचल पर विश्वकर्म्माने हमारी माताको बरदान दियाथा कि हे देवि तुम्हारे हमारेतुल्य पुत्रहोगा ४८ सोहम उन विश्वकर्म्माजी के औरसपुत्र होनेसे उन्हींके तुल्यहैं परन्तु बिना पूंछे हमअपने गुण अपनेमुखसे आपलोगोंसे क्याकहैं ४९ परकहनाही पड़ा हमअवश्य समुद्रमें सेतुकरसक्तेहैं तिस-से हेवानरश्रेष्ठो आजही सेतुबांधो बिलम्ब न करो ५० तिसकेपीछे राम-चन्द्रजीकी आज्ञा से हर्षितहो हजारों लाखों वानरसब दिशाओंके बनों कोदौड़े ५१ व सब पर्व्वतोंपरसे बड़े बड़े वृक्षउखाड़ उखाड़ समुद्रकेतीर परलाये ५२ व साखू अश्वकर्ण धवई बांश कुरैया अर्ज्जुन ताल तिलक व तिमिश ५३ बेल सप्तपर्णा कठचम्पा आम्र अशोक आदिवृक्षोंसे उन वानरोंने समुद्र भरदिया ५४ कोईकोई वानरतो बड़ेहर्षितहो जड़सहित ही वृक्ष उखाड़ लाये कोई कोई ऊपरही से तोड़लाये ५५ ताल अनार नारियल बहेरा करीर बाकुल निम्बादि वृक्ष सब ओर से तोड़ उखड़ा

लाये ५६ व हाथियों के समान पत्थर भी उठालाये व कलों से बहुतसे पर्व्वतसी उठाय आनधरे ५७ जब बड़ेजोरसे पर्व्वतसमुद्रमें गिराये तो समुद्रकाजल बहुतउछला व आकाशतक चलागया फिरनीचेको आगया ५८ व वानरलोग चारोंओरसे ऐसे समुद्रमें कूदे कि वहसब चलायमान होगया व बहुत आनरोंने तो १०० योजनकालम्बा सूत इसपारसे उस पारतक सीधाकर पकड़ा ५९ व नल समुद्रमें सेतुकरनेलगे इसतरह महाभयङ्कर कर्म्मकारी वानरोंने सेतु कियाकराया ६० उनमें कोई तो दण्ड धारणकरते कोई अन्यपदार्त्थ ढूंढ़ते इसतरह रामचन्द्रजीकी आज्ञा के अनुसार सैकरों हज़ारों ६१ पर्व्वताकार व मेघाकार वानरों ने तृण काष्ठ व पर्व्वत पाषाणोंसे सेतुबांधा ६२ कोईकोई तो फले फूलेही वृक्ष उखाड़ उखाड़ सेतु बांधतेथे बहुतसे पत्थरोंसे बहुत पर्व्वतोंके कँगूरों से इसतरह सबपदार्त्थ इधर उधरसे लियेहुये वानर दिखाई देते ६३ जब पर्व्वत व वृक्ष पाषाणोंके ढेरकेढेर सबओरसे समुद्रमें गिरनेलगे तो सागरमें बड़ा भयङ्करशब्द होनेलगा ६४ बनाते बनाते पर्व्वताकार हर्षित वानरोंने पहिलेदिन छप्पनकोशतकका सेतुबनाया ६५ व भयङ्कर कार्य्य करनेवाले महाबलीवानरोंने दूसरेदिन अस्सीकोशतक औरनया बनाया ६६ व तीसरेदिन उन जल्दबाज व पर्व्वताकार वानरोंने चौरासीकोश और अधिक बनाया ६७ व चौथेदिन उन वेगवान्वानरोंने अट्ठासीकोश और अधिक बनाया ६८ व पांचवेंदिन अति शीघ्रकारी वानरोंने बानबे कोश और बनाया बस समुद्रके उसपारतक पूरा चारसै कोशकासेतु बँध गया ६९ इसतरह विश्वकर्म्मा के पुत्र श्रीमान् महाबलवान् वानरश्रेष्ठ नलने समुद्रमें सेतु बांधदिया जैसे उनके पिताजीहैं वैसेही वेभी हैं ७० सागरमें नलका कियाहुआ वह सुन्दरसेभी सुन्दर सेतु आकाशमें स्वाती पथकेसमान शोभित हुआ ७१ तब उस अद्भुत सेतुके देखनेकेलिये देवता गंधर्व्वसिद्ध व ऋषिलोग आये व आकाशमें स्थितहो देखनेलगे ७२ वह सेतु दशयोजन अर्थात् चालीसकोशका तो चौड़ा व सौ योजन अर्थात् चारसै कोशका लम्बाथा उसको देव गन्धर्व्वादि देख कहनेलगे कि नलादिकोंने बड़ा दुष्करकर्म्म किया ७३ समुद्रमें अद्भुत अचिन्त्य व असहनीय सेतुबन्धन बड़ेज़ोरसे कूदतेहुये व धीरेसे कूदतेहुयेभी वानरों ने व

अन्यसब प्राणियोंने भी देखा ७४ सेतु बांधतेहुये किड़ोरों वानर झटपट समुद्रके उसपारको चलेगये ७५ अति विशाल अच्छीतरह कियाहुआ शोभावान् सुन्दर समान भूमियुक्त अच्छा चीकना सेतु समुद्रमें स्त्रियोंके शिरके सुन्दर बँधे चीकनेबालोंके समान शोभितहुआ ७६ इसतरह जब सेतुबँधगया तो शत्रुओंको भयदेनेकेलिये दक्षिणके किनारेपर अपनेचारों मंत्रियोंको सङ्गले विभीषणजी जाखड़ेहुये ७७ तब सुग्रीवजी सत्य पराक्रम श्रीरामचन्द्रजीसे बोले कि आपतो हनुमान्की पीठपर चढ़लें व लक्ष्मण अङ्गदके ऊपर ७८ क्योंकि यह समुद्र बड़ा भारीहै व ये दोनों वानर आप दोनोंभाइयोंको लेकर आकाशमार्ग्गही होकर चलेजावेंगे यद्यपि सेतुबँधगयाहै ७९ इसतरह रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी हनुमान् व अङ्गदके ऊपर चढ़े व उन्हींकेसङ्ग सुग्रीवजी भी आकाशमार्ग्गहो आगे आगे सेतुके ऊपर ऊपर उड़े व चले रामचन्द्रजी धनुषपर बाण चढ़ाये चले ८० व कोईकोई वानरतो इनकी बगलहीबगल चले व बहुतेरे जल में तैरतेहुये व बहुत सेतुके ऊपर होकर ८१ व कोईकोई गरुड़के समान आकाशमार्ग्गही होकरचले ८२ इनवानरोंके बड़ेभारी शब्दसे समुद्रमें और बड़ाभारी शब्दहुआ जिससे वानरोंकी सेना मूंदगई ८३ इसतरह नलके बनायेहुये सेतुको द्वारा सब वानरोंकी सेना उतरगई व जायसमुद्र के दक्षिणके किनारे पर जहां अच्छाजल व फल मूलादि थे उस स्थान पर महाराजाधिराज रामचन्द्रजीके संग पड़ी ८४ रामचन्द्रजीका इस तरहका अद्भुत व दुष्करकर्म्म देख देवता गंधर्व सिद्ध चारणादि समीप आय महर्षिलोगोंको सङ्गले रामचन्द्रजीका अभिषेक अलग अलग जलसे करनेलगे ८५ ॥

दोहा ॥

जीतहु रघुवर रिपुन्ह महि जलधि सहित चिरकाल।
पालहु इमि सुर मुनि कहे जयजय धरणीपाल १ । ८६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेद्वाविंशस्सर्ग्गः ॥ २२ ॥

कारणों के जाननेवाले श्रीरामचन्द्रजी बहुत से खराब कारण देख लक्ष्मणजी को लपटाय उनसे बोले १ हे लक्ष्मण जहां अच्छा जल व

फलयुक्त बनहो वहां ऋक्ष बानरोंकी सेना यथायोग्य स्थानपर टिकाय सेनाकेगिर्द फाटकबन्दी आदि करकराय हमलोग युक्तिपूर्व्वक यहांटिकें २ अब राक्षसादि लोकोंके क्षयकरनेवाला भयङ्कर भयनिकट प्राप्तहोता हुआ दिखाईदेताहै व ऋक्ष वानर व राक्षसबीरोंका युद्धहुआही चाहता है ३ क्योंकि पवन मलिन बहतेहैं व पृथिवी कांपतीहै व पर्व्वतोंमें श्रेष्ठ पर्व्वत कांपते हैं व वृक्ष अकस्मात् टूटटूट गिरते हैं ४ व गीध सियार बाज आदि मांसभक्षीजीवोंके रङ्गके धूसररङ्गवाले बादर बड़ेकठोर शब्द करकर रक्तकेबूंदोंसे मिलेहुये जलकी बर्षाकरते ५ व सन्ध्या लालचन्दन के समान लालहोनेसे परम भयङ्कर होगईहै व सूर्य्यसे अग्नि बरसती है ६ व मृगगण व पक्षिगण बेचारे दुःखितहो सूर्य्यकीओर मुँहकरकर रोदनकरते इससेमहाभय उत्पन्नकरातेहैं ७ व रात्रिमें चन्द्रमाका प्रकाश नहींहोता इससे सन्तापको उत्पन्नकराताहै व उसके सब किरण काले लाल होगयेहैं मानों प्रलय करनेकेलिये उदयहुआहै ८ हे लक्ष्मण सूर्य्यमें छोटा रूखा व अच्छा लालघेरा बनगयाहै व बिमल सूर्य्यमें काला एकचिह्न दिखाईदेताहै ९ हे लक्ष्मण ये नक्षत्र बड़ीधूलि उड़नेसे छिप गयेहैं मानों लोकोंका युगान्त दिखातेहैं देखोतो १० व कौआ बाज व नीच गीध झोंझोंसे अकस्मात् गिरपड़तेहैं व सिआरिनियां अशुभशब्द करतीहैं जिसके सुननेसे लोगोंको भीतिहोतीहै ११ इन सब लक्षणोंसे यही सूचित होताहै कि बानर व राक्षसोंके हाथोंसे छूटेहुये पर्व्वत शूल व खड्गों से युक्त व मांस रुधिरके कीचड़ से भी पृथ्वी युक्त होगी १२ इससे अब तैयारीकरनी चाहिये कि रावणकी पालीहुई औरोंके न जानेकेयोग्य लंकापुरीके सम्मुख सबवानरोंको संगले बड़ी शीघ्रताकेसाथ अभीचलें १३ ऐसाकह धनुष हाथमेंले संग्राममें शत्रुओंका निरादर करनेवाले श्रीरामचन्द्रजी लंकाकी ओर सबसे आगेआगे चले १४ व विभीषण सुग्रीवसहित सबवानरश्रेष्ठ शत्रुओंका वधकरनेकेलिये गर्जते हुयेचले १५ व अपनेस्वामी रामचन्द्रजीके प्रियकेअर्थ निरन्तर वीर्य्य करनेवाले वानरों की कर्त्तव्यता से रामचन्द्रजी बहुत सन्तुष्टहुये १६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रयोविंशस्सर्गः ॥ २३ ॥

राजासुग्रीवकी स्थापितकीहुई वीरवानरोंकी समाज शुभनक्षत्रयुक्त शरदऋतुकी पौर्णमासी जैसे चन्द्रमासे शोभितहोती उसीतरह शोभित हुई १ व समुद्रसमान प्रकाशित सैन्यसमूहसे पीड्यमान व तिसकेवेगसे भयभीत पृथिवी चलउठी २ व तबलंका में बजतेहुये मृदङ्ग नगारादि बाजोंका भयंकर व रोमहर्षण शब्द वानरों को सुनाई देनेलगा ३ वह शब्द सुन वानरोंके यूथप बहुत हर्षितहुये व वहशब्द न सहकर और भी जोरसे शब्द करनेलगे ४ व राक्षसोंनेभी आकाशमें गर्ज्जतेहुये मदान्ध मेघोंकेसमान गर्ज्जतेहुये वानरोंका गर्ज्जनासुना ५ व श्रीरामचंद्र जीने चित्रविचित्र ध्वजापताका युक्त लंकापुरीदेख दुःखित मनसे सीता जीका स्मरणकिया ६ कि इसी लंका में मृगशावकलोचनी सीताको मंगलग्रहसे पीड़ित रोहिणीनक्षत्र के समान रावणने रूंधरक्खाहै ७ इसतरह बड़ीलम्बी व गर्म्मश्वासले व लक्ष्मणजीको देख तिसकालके योग्य व अपनाको हितबचन बोले ८ हे लक्ष्मण इसत्रिकूट पर्व्वत पर जानों विश्वकर्म्माने अपने मनहीसे इस लंकापुरीको बनादियाहै देखो तो मानों आकाशको छुयेहीलेताहै ९ बहुतदिनआगेके बनेहुये विमानों से लंकापुरी भरीपरीहै जैसे यहआकाश उजलेमेघोंसे भरारहताहै १० व चित्ररथ बनकेसमान नानाप्रकारके पुष्पित व नानाप्रकारके पक्षियों के शब्दोंसेशब्दित बनोंसे यहलंका शोभित होरहीहै ११ मतवालेपक्षी युक्त व अतिलीन भ्रमर सहित व कोकिलोंसे आकुल वृक्षोंके झुण्डोंसे विराजमान बनोंको कल्याणदायक पवन बार बार कँपारहाहै, लक्ष्मण देखो तो १२ इसतरह महाराज कुमार श्रीरामचन्द्रजीने लक्ष्मणजी से कहा व शास्त्रके अनुसार सबसेना यथायोग्य स्थानोंमें नियतकिया १३ व सबसेनाको रामचन्द्रजीने सिखलाया कि पुरुषब्यूह के मध्यमें नील सहित अंगद अपनी सेनालेकर टिकें १४ व इसवानर सेनाको दहिनी ओर वानर समूहले ऋषभनाम वानरटिकें १५ व मत्तहाथीके समान दुर्द्धर्ष गन्धमादन नाम वानर इस वानरसेनाकी बाईंओर टिकें १६ व सावधानचित्तहो लक्ष्मणसहित हमसेनाके शिरपर टिकेरहेंगे व जाम्बवान् सुषेण व वेगदर्शी ये तीनवानर १७ सेनाकी कुक्षिरखावें सेनाका जघनदेश सुग्रीवजी रखातेरहें १८ जैसे वरुणजी लोकभरका पीछेका

आधाभाग रखातेहैं वैसेही सुग्रीव रक्षाकरें जब इसतरह सेनाके सब व्यूह अच्छीतरह बांटदियेगये व बड़ेबड़े वानरोंने रक्षाकी तब वहसेना बादरयुक्त आकाशके समान शोभितहुई १६ व पर्व्वतोंके शृङ्गलेले व बड़ेबड़े वृक्षलेले वानरलोग लंकाको चूर्णीभूत करनेके बिचारसे रणमें लड़नेकेलिये प्राप्तहुये २० इसलंकाको कितो पर्व्वतोंके शिखरोंसे तोड़ फोड़डालेंगे वा मूकोंसे सबवानरोंने अपनेअपने मनमें यहीबात ठानली २१ तिसकेपीछे श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीवजीसे बोले कि अबसब सेना तो अच्छीतरह बांटदीगई शुकनाम रावणका दूत जो यहां बँधुआहै उसे छोड़देनाचाहिये २२ रामचन्द्रजीके बचनसुन महाबली सुग्रीवजीने रामचन्द्रजीकी आज्ञाका पालनकर शुकको छोड़दिया २३ रामचन्द्रजी के कहनेसे छूटाहुआ व वानरोंसे पीड़ित शुक अति भयभीतहो रावणके निकटपहुंचा २४ तबरावण हसताहुआ शुकसेबोला कि तुम्हारे इनउजले पङ्खोंकी क्यादशाहुई क्योंकि तुम्हारपङ्ख तो कटेहुये दिखाई देतेहैं २५ क्या तुम तिनसब एकचित्त नर वानरोंके बशमें तो नहींपड़गये २६ तब मारेभयके ब्याकुल शुक राजाके बचनसे प्रेरितहोनेके कारण राजा रावणसे बोला २७ कि हम आपका सन्देशले समुद्रके उत्तरके किनारे पर पहुंचे व बहुत मधुरवाणीसे जैसेही आपका सन्देश कहनेलगेहैं कि २८ तैसेही हमको वानरोंने देखा कूदकर आकाशही में पकड़लिया व पकड़तेही रोम उखाड़ने व मूंकोंसे मारनेलगे २६ हे राक्षसाधिप वे वानर तो स्वभावहीसे क्रोधीहैं नतो उनकेसामने वार्त्ताही कोईकरसक्ता न पूछनापांछना फिर औरबात क्याकहैं हमको यहपूछनेका अवकाशही न मिला कि हमको क्यों मारतेहो ३० हां इतना हम जानआये कि बिराध कवन्ध खर व वालीके मारनेवाले श्रीरामचन्द्रजी सहित सुग्रीव सीताजीके आननेकेलिये आगयेहैं ३१ उन्होंने समुद्रमेंतो सेतुबांधदिया व उसीकी सेना सहित समुद्र उतर आये अब राक्षसों का मान ध्वस्त करनेकेलिये धनुर्व्वाण धारणकिये लंकाके निकट टिके हैं ३२ ऋक्षों व वानरोंकी हजारों सेना उनके साथहैं वे सब पर्व्वताकार व मेघाकार हैं लंकाके किनारेकी सबभूमि मूंदेपड़ेहैं ३३ इससमय राक्षसोंकी व वानरेन्द्रोंकी सेनाके बीचमें तिलडालने की जगह नहींरही दोनोंसेना एकमें

जुटगई हैं जैसे देवासुर संग्राममें देवता व दैत्योंकी सेना एकमें जुटगई थी ३४ सो वहसेना प्राकारके भीतर जबतक आयाचाहे उसकेप्रथमही दोकार्य्यों में से एककरो यातो सीताही उनकोदेदो वा युद्धहीकरो ३५ शुकके बचनसुन रावणबोला बोलने के समय मारेरोषके मानों नेत्रोंसे भस्महीकिये देताथा ३६ कि जो हमसे देवता दानव व गन्धर्व्वभी युद्ध करेंगे तोभी सीता हम न देंगे व चाहे सब लोकोंसे भी हमारे ऊपर भय आवे पर सीता को कहां देसक्ते हैं ३७ अब यह हम नहीं जानते कि जैसे वसन्तऋतु में पुष्पित वृक्षके ऊपर भ्रमर दौड़ते हैं उन्हींके समान हमारे बाण रामचन्द्र के ऊपर कब दौड़ेंगे ३८ व नहीं जानते कि कब अंगों में रुधिर लगेहुये रामचन्द्र को धनुष से छूटे प्रकाशित बाणों से भयभीत करेंगे जैसे उल्काओं से हाथीको भयभीत करतेहैं ३९ तिससे हम बड़ी सेना सङ्ग में ले उन रामचन्द्र की सेना ध्वस्त करदेंगे जैसे उदय होतेहीहोते सूर्य्य अन्य नक्षत्रादिकोंका तेज ध्वस्त करदेतेहैं ४० हमाराबेग सागर कासाहै व हमाराबल पवनकासा इस बातको रामचन्द्र नहींजानते इसीसे हमसे युद्धकरनाचाहतेहैं ४१ व हमारे तरकसमें बिषारी सर्प्पोंकेसमान बैठेहुये बाणोंको समरमें अभीकभी रामचन्द्र ने नहींदेखा इसीसे वे हमसे युद्धकरना चाहते हैं ४२ वे रामचन्द्र हमारा युद्धनहींजानते क्योंकि अभी हमसे उनसे कभीमुलाकात नहींहुई व न हमारी धनुषरूप बीणाहीका शब्द कभी उन्होंने सुनाहै जोकि शरोंके कोणोंसे बजाईजातीहै ४३ सो उसबीणाको हम प्रत्यञ्चा शब्दरूप रण संकुलशब्दयुक्त व दुःखितलोगोंके गानसहित व बाणोंकेशब्दका सन्नाद होतीहुई शत्रुसेनामें स्नानकर समरमें बजावेंगे ४४ ॥

हरिगीतिका ॥

नहिं सहसनयन शचीशहमसन समरमहँ लड़िहैंसही ।
नहिं बरुण करुण स्वभाव सन्मुख आव हमरे तैसही ॥
नहिंयमहु शरहुत अशनसों रणमाहिं हमहिं जलाइहैं ।
नहिंकबहु सम्मुख ममकुबेरहु आयसमर बुलाइहैं १ । ४५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुर्व्विंशस्सर्गः ॥ २४ ॥

जब सैन्यसहित श्रीरामचन्द्रजी समुद्रउतरगये तो शुक व सारणनाम अपने मन्त्रियोंसे रावणबोला १ कि देखो सबदुस्तर समुद्र वानरोंकी सेना उतरआई यहबात नईहुई जो रामचन्द्रजीने समुद्रमें सेतुबाँधदिया २ पर सागरमें सेतुका बाँधना इसबातका विश्वास हमको नहींआता व इसके सिवाय उसवानरोंकी सेनाकी गणना हमको अवश्य करनीहै ३ इससे तुमदोनोंजने गुप्तरूपहो वानरोंकी सैन्यके भीतरजाय अच्छीतरह प्रमाण व वीर्य्यजान व जो वहाँ मुख्य वानरहों ४ व जो मन्त्रीलोगहों चाहे रामचन्द्रजीके वा सुग्रीवकेहों व जो शूरबीर वानरहों व जो उनमें अगुआहों ५ उनकाहाल व महार्णव समुद्रमें जिस तरहपर सेतुबँधाहो व अबजहाँ तिनमहात्मा वानरोंकी सेनापड़ीहो ६ व रामचन्द्रजीका इरादा व उनकावीर्य्य व अस्त्र शस्त्र व लक्ष्मणवीरकी भी सबबातें निश्चय पूर्व्वक वहाँजाय तुमदोनोंजने जाननेकेयोग्यहो ७ व उनमहात्मा वानरोंका सेनापति कौनहै यहसब निश्चय निश्चय जान शीघ्रही चलेआवो ८ इसतरह रावणकी आज्ञापाय बड़ेबीर दोनों शुक व सारणनाम राक्षस वानरोंका बेषबनायजाय वानर सेनामेंपैठे ९ परंतु उनदोनोंने अचिन्त्य व जिसके देखनेही से रोमखड़े होतेथे ऐसी वानरोंकी सेनाको न गिन पाया १० क्योंकि वहसेना कुछ तो पर्ब्बतपर पड़ीथी कुछ झरनोंमें व गुहाओंमें व कुछ समुद्रही उतररहीथी कुछ उतरआईथी व कुछ आकर लङ्कापर चढ़नेको तैयारथी ११ कुछ पैठ भी आईथी कुछ पैठी आतीथी इसतरह महाभयंकर शब्दकरतीहुई वहसेना अक्षोभ्य समुद्र के समान दोनों राक्षसोंनेदेखी १२ ये दोनों राक्षस गुप्तरूप से देखही रहेथे कि बिभीषणजी ने देखलिया इससे दोनोंकोपकड़ रामचन्द्रजीके पासलाये व बोले कि १३ हे शत्रुओंके पुरजीतनेवाले श्रीरामचन्द्रजी ये दोनों शुक सारणनाम राक्षस राक्षसेन्द्र रावणके मन्त्रीहैं लंकासे यहाँ दूतबनकर आयेहैं १४ वे दोनों रामचन्द्रजीको देख बहुत ब्याकुलहुये व जाना कि बस अबहमारप्राण न बचेंगे इससे हाथजोड़ भययुक्तहो रामचन्द्रजीसे बोले १५ हे सौम्यस्वभाव रघुनन्दनजी आपकी सबसेना का हालजाननेकेलिये रावणकेभेजेहुये हमदोनों यहाँआयेहैं १६ उनदोनोंके बचन सुन महाराज दशरथजीकेपुत्र श्रीरामचन्द्रजी सबप्राणियोंके हितमें तो

निरत रहतेहीथे हँसकरबोले १७ कि तुमदोनोंने जो सबसैन्य अच्छीत-रह देखलीहो व हमलोगोंको भी बनाय देख भाल लियाहो व जो जो कार्य्यकरनेकेलिये तुम्हारे स्वामीकी आज्ञाहुईहो सब कुछ करलियाहो तो अबअच्छीतरह चलेजावो कोई कुछभी तुमको न कहेगा १८ व कुछ न देखाहो तो फिरसेदेखलो वा तुमयों न देखसको तो बिभीषण सब रत्ती रत्ती दिखादेंगे १६ व इसबँधोईकोपाय मरणको न डरना क्योंकि एक तो जब तुमपकड़ेगयेहो तो तुम्हारेपास कोईहथियार नथा दूसरे दूतठ-हरे किसीभीतरह मारडालेजानेके योग्यनहींहो इससे निर्भयरहो यहाँ न मारेजावोगे २० दूतोंसे ऐसाकह रामचन्द्रजी बिभीषणजी से बोले कि ये राक्षस दोनों जोदूतहोकर यहाँआये बैरीके भेजेहुयेहोनेसे यद्यपि सुग्रीवादिकोंसे मारपानेकेयोग्यहैं तथापि अबइनबेचारोंको छोड़दीजिये २१यह बिभीषणसेकह दूतोंसेबोले कि लङ्कापुरीमेंजाय कुबेरके छोटेभाई रावणसे हमारीओरसे जैसाकुछ हम कहतेहैं वैसाही तुमदोनों कहना २२ कि जिसबलकोपाय तुमने हमारी सीताहरीहै अबसेना व बंधुस-हित तुम वहीबल हमकोदिखावो २३ व प्रातःकालहोतेही शहरपनाह फाटकादिसहित अपनी लङ्कापुरी व राक्षसोंकी सबसेना हमारेबाणोंसे बिध्वंसित देखोगे २४ हे रावण सेनासहित तुम्हारे ऊपर हम अपना क्रोध प्रातःकाल छोड़ेंगे जैसे बज्रधारी इन्द्रजी दानवोंपर अपना बज्र छोड़तेहैं २५ जब शुकसारणनाम राक्षसोंसे इसतरह श्रीरामचन्द्रजीने कहा तो वे दोनों आपकीजयहो ऐसा राघवजीसेकह २६ लंकानगरीमें आय रावणसेबोले हेराक्षसेश्वर बिभीषणतो हमलोगोंको मरवाडालनेके लिये पकड़लेगयेथे २७ परंतु धर्म्मात्मा व अमिततेजस्वी श्रीरामचन्द्र-जीनेदेख हमलोगोंको छुड़ादिया जहाँ एकही स्थानपर चारपुरुष श्रेष्ठ २८ महाशूरबीर लोकपालोंकेसमान सबअस्त्रशस्त्र चलानेमें कुशल बैठेथे वहींहमको लेगयेथे उनमें एक तो महाशोभायमान श्रीरामचन्द्रजीथे व लक्ष्मण व बिभीषण २६ व महातेजस्वी सुग्रीवजी इन्द्रसमबिक्रमी वहाँ बिद्यमानथे ये चारों शहरपनाह फाटक खाँवाँ आदि सहित इसलंका पुरीको उखाड़कर बहासक्तेहैं ३० और वानर लोग अलगही बैठेरहैं उनकी कुछभी आवश्यकता नहींहै व जिसतरहका रामचन्द्रजीका रूप व

जैसेउनके शस्त्रास्त्रहैं ३१ उनसे यही विदितहोताहै कि वे अकेलेही सब लङ्काभरकोमारडालेंगे वे लक्ष्मणसुग्रीव व विभीषण तीनोंअलगही बैठे रहें३२ राम लक्ष्मण व सुग्रीवसेरक्षित वह वानरोंकी सेना ऐसी दुर्द्धर्ष होगईहै कि देवतादैत्यादि कोईभी उसकासामना नहींकरसक्ता ३३ ॥

कुण्डलिका ॥

हर्षित योधायुत महा वानर सेन अपार ।
सकल महात्मा कपिसमर करनचहत बहुबार ॥
करन चहत बहुबार समितियामहि नहिंशङ्का ।
क्षणमहँ जितिहैं सकलतुम्हारी यह लघुलंका ॥
यासों तजहु विरोध चित्त अब करहु वितर्षित ।
सियाराम कहँदेहु लेहुलङ्का कै हर्षित १ । ३४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपञ्चविंशस्सर्गः ॥ २५ ॥

सत्य व बीरतायुक्त सारणका बचनसुन रावणराजा सारणसे बोला १ जोदेवता गन्धर्व्व व दानवभी हम सेकहैं व सबलोकों का भी भयहो तोभी हम सीता न देंगे २ हेसौम्य तुमतो वानरोंसे अतिपीडित हुयेहो इससे बहुतही डरगयेहो उसीसेअभी सीताकादेना अच्छा समझनेलगे हो ३ भलाऐसा कौनशत्रुहै जोसमरमें हमको जीतसके राक्षसोंकाअधिप रावण इसतरहका कठोरबचन कह ४ हिमगिरि समऊंचे व उजलेधव-रहर परचढ़ा यह धवरहरकई तालके वृक्षोंको तरऊपरखड़े करनेसे भी बहुतऊंचाथा उसपरसे रामचन्द्रजी की सेनादेखनेकी इच्छासे सारण व शुककोसङ्गले चढ़ाथा ५ जबदोनों दूतोंकेसाथ समुद्र व पर्व्वत बनदेखने लगा तो मारेक्रोधके मूर्च्छित होगया ६ क्योंकि पृथिवीका बहुतसाभाग लङ्का व समुद्रकेबीचमें वानरोंसेही भरापरा देखा अपार व असह्यवान-रोंकी महासेना देख ७ राजारावण सारणसे पूंछनेलगा किइन में कौन कौन वानर मुख्यहैं व कौनकौन शूर व कौन कौन महाबली ८ व कौन कौन बड़े उत्साहकेसाथ सबओर सबसेप्रथम सबकार्य्य करनेको तैयार रहतेहैं व सुग्रीव किनकिमकी बातबहुत सुनतेहैं व यूथपोंके यूथप कौन कौनहैं ९ हेसारण हमसे सबकहो किस किस प्रभावके वानर इससेना

मेंहैं जबराक्षसेन्द्र रावणने ऐसापूंछातो सबमुख्य मुख्य वानरों के समाचार अच्छीतरहसे जानताहुआ सारण १० मुख्यमुख्य तहांके वानरोंको वहांहीसे दिखाय दिखाय रावणसे बतानेलगा कियह जोवानर लङ्काकी ओरको मुखकिये गर्ज्जताहुआ बैठाहै ११ व जिसको चारोंओरसे लाष यूथपवानर घेरेहुये बैठेहैं व जिसके बड़ेभारी नादसे शहरपनाह खावां फाटकसहित १२ व बन पर्व्वतयुक्त सबलङ्का प्रतिहत हुईजातीहै व जो सब वानरोंके राजा महात्मा सुग्रीवजी की १३ सेनाकेआगे बैठाहै वह बीरनीलनाम यूथपोंका स्वामीहै व जोयह बड़ा वीर्य्यवान् चरणोंसे अपनी बाहें पकड़पृथ्वीको चलाआताहै १४ व बड़े कोपसे लङ्काकी ओर मुहँकर बारबार जँभुआताहै व पर्व्वतके शृङ्गकेसमान प्रकाशितहोता व कमलकी धूलिकेसमान पीलाजिसका रंगहै १५ व जोमारे क्रोधके बार बार पूंछपटकरहाहै किउसकी पूंछकेशब्दसे दशोदिशा शब्दायमान होरहीहैं १६ व जोतुमको बारबार समरमें लड़नेकेलिये पचकाररहाहै यह वालिकापुत्रहै व सुग्रीवजीको बड़ाप्रियहै १७ व रामचन्द्रजीकेलिये बड़ा भारी पराक्रमकर रहाहै जैसे इन्द्रकेलिये वरुणकरतेहैं इसके वालिहीके समानबलहै व सुग्रीवजी ने इसे युवराजपदवी पर अभिषेचित कियाहै इसकाअङ्गद ऐसा नामहै १८ व इसीकी सलाहसे रामचन्द्रजीका हित करनेवाले हनुमान्ने जानकीजी को यहांआय देखाथा यहबड़ा अगाध बोध वानरहै १९ यह अङ्गद वानरोंके बहुत यूथले व अपनी सब सेना लेकर तुमको मर्द्दन करनेकेलिये सामने चलाआताहै २० व वालिसुतके पीछे जो बड़ीभारी सेनालिये टिकाहै वह समर भयङ्कर अति बीर नल नाम वानरहै समुद्रमें सेतुबांधनेका मुख्यकारण यहीहै २१ व जो वानर अपने अपने अङ्ग थांभथांभ हर्षितहोते व नाद करतेहैं वे सबबीर अङ्गों में चन्दन लगाये इसी नलहीके पीछेपीछे चलतेहैं २२ यह नलभी अपनीही सेनासे लङ्काका मर्द्दनकरना चाहता है व कहता भी है कि मैंहीं लङ्का मर्द्दनकरूंगा व यह चांदीके समान श्वेतरङ्गका श्वेतनाम वानर है प्रकृति इसकी बड़ीही चञ्चलहै व बड़ा भयङ्कर पराक्रमी भी है २३ व यह वानर बड़ा बुद्धिमान् व शूरबीर करके तीनोंलोकोंमें प्रसिद्धहै देखो कैसी शीघ्रताके साथ सुग्रीवकेपास जाता है व फिर लौटआताहै २४

यह आपजाय वानरोंकी सेनाका बिभाग हर्षितहो करता कराता है व गोमतीनदी के किनारे नानाप्रकारके पर्ब्बतों सहित जो संरोचन नाम पर्ब्बतहै तिसरम्य पर्ब्बतपर प्राप्तहो २५ जो बहुतदिनोंसे राज्यकरता है इसका कुमुदनामहै यहभी बड़ाभारी यूथप है २६ व जो यह वानर लाष सेनाओंको हर्षसहित खींचताहै व जिसकेबाल बड़ेलंबेहैं बड़ीभारी पूंछके इधर उधर लटकेहैं २७ उनमें कुछतो तामूके रङ्गकेहैं कुछ पीले कुछ उजले कुछ बहुतही उजले इससे बड़ेभयङ्कर लगतेहैं इस वानरका चण्ड नामहै यहसदा प्रसन्नचित्तही बनारहता व संग्रामही करनेकी इच्छा कियाकरताहै २८ यहभी अपनीही सेनासे लङ्का मर्द्दनकरनेको कहताहै व जो यह सिंहके रङ्गका व कहींकहीं कपिलरङ्गका वानर है जिसकी गर्द्दनपर बड़ेलम्बे बालहैं व बारबार लङ्काकीओर जानों जार-ही डालनेकेलिये निहारताहै २९ वह विन्ध्याचल नीलगिरि सह्य व सुदर्शन पर्ब्बतोंपर निरन्तर रहताहै यह रम्भनाम यूथपहै ३० जबयह चलताहै तो इसके पीछेपीछे दशलाष तीश वानर अति भयङ्कररूप व बड़े प्रचण्ड बिक्रमी ३१ इसको घेरकर चलतेहैं यह भी अपनेही वानरों से लङ्का मर्द्दनकिया चाहताहै ३२ व जो यहवानर कान सिँकोरता व बार बार जँभुआताहै व मृत्युसे भी नहींडरता व न सेनाहीको देख डरता है ३३ व मारे रोषके कँपरहाहै व फिर तिरछा निहारताहै देखोयह महा-बल वानर हर्षकेसाथ कैसे अपनी पूंछ नचाताहै ३४ यह महापराक्रमी निर्भय वानर अतिरम्य सालेयनाम पर्व्वतपर सदा रहता है इसका शरभनामहै यहभी बड़ाभारी यूथपहै ३५ इस शरभके एकलाषचालीश बिहारानाम यूथपहैं ३६ व जो यह देवताओंके बीचमें इन्द्रके समान वानर बीरोंके मध्यमें बिराजमान् आकाशको घेरे मेघके समान टिकाहै ३७ व जिसका नगारोंकासा शब्द बड़ाभारी सुनाईदेताहै व संग्रामकी इच्छा कियेहुये सब वानरोंके बीचमें गर्ज्जरहाहै ३८ यह पारियात्रनाम पर्ब्बतपर सदा रहाकरता व युद्धमें किसीके सहनेके योग्यनहीं इस यू-थपका पनसनामहै ३९ इसकी सेवामें एकलाषपचाशहज़ार यूथपवानर रहतेहैं जिनके यूथ अलग अलगहैं ४० व जो समुद्रके तीरपर दूसरे समुद्रहीके समान पड़ीहुई बड़ीभारी सेनाको शोभित कराताहुआ टिका

है ४१ व मारेबेगसे नदियोंमें उत्तम नदीको पीताहुआ मेघाकार विनत नाम यूथपश्रेष्ठ दिखाईदेताहै ४२ इसके एकलाष साठहज़ार यूथप वानरोंकी सेनाहै ४३ व जो यह तुमको युद्ध करनेकेलिये पुकार रहाहै व जिसके यूथ बड़ेबलवान्हैं व सेनाभी बड़ीभारीहै उसका क्रथन नामहै ४४ व जो यहवानर मारे अहङ्कारके सब वानरोंका निरादरकर गेरूके रङ्गकी अपनीदेह पुष्टकरताहै ४५ इसका गवय नामहै व यह बड़ा तेजस्वी वानरहै इसे देखतेहो मारेक्रोधके बारबार तुम्हारानाम लेले इधर को दौड़ताहै इसकी सेवामें एकलाषसत्तरहज़ार यूथप वानर रहतेहैं यह भी अपनीहीसेनासे लङ्का मर्द्दन कियाचाहताहै ४६ ये बड़े दुष्प्रसहवीर गिनाये व जिनकी संख्याही नहींहै उनके यूथतो बहुत हैं ४७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेषड्विंशस्सर्गः॥ २६ ॥

यूथपोंको देखतेहुये तुमसे अब उन बानरोंके समाचार बतातेहैं जो रामचन्द्रजीकेलिये विक्रान्तकिये अपने प्राणोंकी भी रक्षा नहींकरते १ जिसके बड़ेचीकने व बड़ेलम्बे पूंछपरके बाल लाल पीले उजले व बहुत उजले इधर उधर फैलहुये बालहैं २ व फैलनेके कारण सूर्य्यके किरणों के समान प्रकाशित होतेहैं व भूमिमें लोटते चलतेहैं इस बानरका हर नामहै ३ कि जिसके पोछेपीछे सुग्रीवके सैकरों हज़ारों सेवक वानर वृक्ष उखाड़े ऊपरको उठायेहुये लङ्कापर चढ़नेकी तैयारीकिये चलरहेहैं ४ व जिनको नील मेघोंके समान चलेजातेहुये अंजनके पर्व्वतके आकार के देखतेहो जोकि युद्धमें सत्यसत्य पराक्रम दिखातेहैं ५ ये सब असंख्य व गणना करनेके अयोग्यहैं जैसे समुद्रका दूसरा किनारा किसीकेपार जानेलायक नहींहोता उनमें बहुततो पर्व्वतोंपर व बहुत देशोंमें व बहुत नदियोंमें रहते हैं ६ हे राजन् ये सब दारुण ऋक्ष तुम्हारे साम्मने जो दिखाई देतेहैं इनकेमध्यमें इनकाराजा बड़ेभयंकर नेत्रवाला व बड़ा भयङ्कररूप टिकाहै ७ जो बादरोंके बीचमें बड़ेकाले बादरकेसमान घिराहुआ है यह ऋक्षवान् नामपर्व्वतश्रेष्ठपर रहता व नर्म्मदाका जल पीतारहता है ८ सब ऋक्षोंकाराजा यहीहै इसका धूम्रऐसा नामहै व इसके छोटेभाई का जाम्बवान् नामहै उसे देखोतो पर्व्वताकार खड़ा है यह रूपमें तो

अपनेभाई धूम्रहीके तुल्यहै परन्तु पराक्रममें अपनेभाईसे बहुत अधिक है ९ यह जाम्बवान् महायूथपोंका यूथपहै इसकाचित्त बहुत प्रशान्त रहता व अपने बड़ेभाईकी आज्ञामें बहुत रहताहै परन्तु जहांकहीं युद्ध होताहुआ सुनता तुरन्त वहीं जापहुंचता १० देवासुर संग्राम में इस जाम्बवान्ने इन्द्रकीबड़ीभारी सहायताकी इससेबहुत बरदान पायेहैं ११ व ये ऋक्षलोग बड़े बड़े रूपधारी पर्व्वतोंपर से बड़ीबड़ी शिला नीचेको फेंकतेहैं व मृत्युसेभी कभी नहींडरते १२ इनके रोम ऐसे लम्बेहैं कि जिनसे राक्षसों व पिशाचोंके तुल्य दिखाईदेतेहैं ये सब इसी जाम्बवान् हीकी सेनाकेहैं इनसबके पराक्रमका कुछ प्रमाणनहीं मिलता कितनाहै १३ व इनजाम्बवान्को क्रोधकिये तड़कतेहुये देखोदेखरहेहैं व हेराजन् जिसको ये सबवानर देखरहेहैं १४ इसका दम्भनामहै यहभी बड़ाभारी यूथपहै इसनेअपनी बड़ीभारीसेना इन्द्रकी सहायताकेलिये भेजीथी१५ व जो यहवानर योजनभर परभी विद्यमान पर्व्वतको अपनी बगलकी पसुड़ियोंसे छूलेताहै व ऊपरकोभी जिसकाशरीर योजनभर ऊंचाहै १६ व जिससे अधिकरूप चौपायों में किसीका नहींहै वह यही वानरोंका पितामह सन्नादन नाम यूथपहै १७ जिस बुद्धिमान्ने इन्द्रकेसंग युद्ध किया परन्तु हारानहीं यह वही सन्नादनहै यहभी यूथपोंकाभी यूथपहै १८ व जो यहवानर युद्धकरनेके समय इन्द्रकेसमान पराक्रमी दिखाई देताहै यहगन्धर्व्वकी कन्यामें अग्निसे उत्पन्नहुआहै १९ व इसकेउत्पन्न होनेका प्रयोजन देवासुर संग्राममें सहायता करनाथा व जहांराजाकुवेर जामुन के वृक्षकेनीचे बैठतेहैं २० व उनकी सेवा बहुत से किन्नर लोग करतेहैं वहपर्व्वत हेराक्षसाधिप तुम्हारे भाई कुवेरजीके विहार करनेमें बड़ासुखदेताहै २१ उसीपर्व्वतपर यहपरम बलवान् बानरोत्तम विहार करताहै युद्धमेंकभी भी यहअपनी बड़ाई नहींकरता इसका क्रोधननाम है यहभी बड़ाभारी यूथपहै २२ व यहीक्रोधन यूथप अर्व्ववानर अपने संगलिये अपनीहो सेनासे लंकामर्द्दन करनेको कहताहै २३ जो वानर हाथियों व वानरोंका पूर्व्व समयका वैरस्मरणकर हाथियों के झुण्डोंको भयभीत करताहुआ गंगानदीके किनारे किनारे घूमाकरताहै वानरों व हाथियोंका बैर तभीसे चलाआताहै जबसे कि हनुमान् वानरके पित

केसरीनाम वानरने हाथीकारूप धारणकिये शम्बसादन नाम असुरको माराहै २४ सोयह यूथपति सब वानरोंका प्रेरकहै इससे पर्व्वतोंकी गुहाओंमें गर्ज्जा करता व बनके हाथियोंको वृक्षतोड़ तोड़ रूंधलिया करताहै २५ व यह वानर बहुतसी वानरोंकी सेनाका मुख्यहै इससे गंगाजीके किनारे किनारे उर्शीरोबीजनाम पर्व्वतपर व पर्व्वतोंमें उत्तम मन्दराचलपर टिककर २६ स्वर्ग्गमें इन्द्रकेसमान आप विहारकरताहै इसकेसंग वीर्य्य विक्रमसे अहङ्कारित व बड़ी बड़ी बांहेंलिये गर्ज्जतेहुये २७ अर्व्ववानर रहते हैं यही इनसब महात्मा वानरोंका प्रेरकहै २८ हेराजन् इसयूथपका प्रमाथी नामहै व बड़ाही दुर्द्धर्ष वानरहै जिसको कि पवनसे उद्धत मेघके समान वेगसे चलते देखतेहो २९ व जिसके वानरोंकी सेना कोपकीहुई व वेगसे चलतीहुई व पवनसे कँपातीहुई अरुणरङ्गकी देखतेहो ३० व चारोंओरसे जिससेनाके वानरोंकी उड़ाई लालधूलिभी देखतेहो ३१ व हे महाराज इन उजले मुखके महाबली गोपुच्छनाम वानरोंको देखतेहो जो अर्व्वों सेतुबन्धके स्थानपर दिखाई देतेहैं ३२ इनगोपुच्छोंका स्वामी गवाक्षनाम यूथपहै देखो उसीकोघेरे हुये ये गोपुच्छवानर अपने पराक्रमसे लंकामर्द्दन किया चाहतेहैं ३३ व जिसपर्व्वतपर सब समयोंपर फलनेवाले वृक्षोंकेहोनेसे भ्रमर सदा जायाकरते व अपनेसमान अरुणरंग होनेकेकारण जिस पर्व्वतपर सूर्य सदाकहीं न कहीं टिकेरहते ३४ व जिसपर्व्वतकी अरुणदीप्तिसे तिस पर्व्वतपरके सब मृगपक्षी अरुणही रंगके दिखाईदेते व जिसकेशृङ्गको महात्मा महर्षिलोग कभीनहीं त्यागते ३५ व जिसपरके वृक्षसबसमय में अभीष्टफल दियाकरते व सदासबोंमें फललगेहीरहते व जिसपर्व्वत सत्तमपर बड़ेबड़े मोलकी मधुआदि मीठीचीजें होती हैं ३६ हे राजन् तिसरम्य सुवर्णके पर्व्वतपर वानरोंमें मुख्य यहकेसरी नाम यूथपोंका यूथप रमाकरताहै ३७ वहांपर साठसुवर्णके पर्व्वतहैं उनमें यहसबसे श्रेष्ठहै जैसे आप सबराक्षसोंमें श्रेष्ठहैं ३८ तिसपर्व्वत पर बहुत वानर तो कपिलरंगके व बहुतश्वेत व बहुत ताम्रवत् अरुणमुखके बहुत मधुके रंगके बसतेहैं उनसबके बड़े तीक्ष्णदांत व नख आयुध हैं ३९ व सब चौदन्ते सिंहोंकेसमान व सब व्याघ्रों के समान कठिन स्वभाव व सब

अग्निसमान देदीप्यमान व सब विषधर सर्प्पों के समान भयंकर ४० सबकी बड़ीलम्बी चौड़ीपूंछें व सब मतवाले हाथियों के समान व सब महापर्व्वताकार व सब बड़ेभारी कालेबादलों के आकार ४१ व सबके गोलपीलनेत्र व सबकीचाल व शब्दभयंकर रहते वे सबयहांआय देखो जानों लंकाका मर्द्दनही करनेको टिकेहैं ४२ व इनमें जो बड़ावीर्य्यवान् बीचमेंटिकाहै वह राज्यकेलिये सूर्य्यका उपस्थान करताहै इसका शत-बलिनामहै ४३ यह महावीर्य्यवान् इनपूर्व्वोक्त वानरोंका स्वामीहै यह भी अपनीही सेनासे लंकामर्द्दन कियाचाहताहै य बड़ा बलवान् शूर व पौरुषीहै ४४ व गजगवाक्ष गवय नल नील ये वानर रामचन्द्रजीका प्रिय करनेकेलिये प्राणियोंके ऊपर दया नहींकरते ४५ इनमें एक एक वानर दशदश किरोड़ वानरोंके संग रहताहै इनकोछोड़ और भी बहुत वानर विन्ध्याचल पर्व्वतपरके रहनेवालेहैं बहुत होनेके कारण इनसबों की गिनती नहींहोसक्ती ४६ ॥

कुण्डलिका ॥

महा प्रभावी सकल कपि महा शैल समदेह ।
सब समर्थ सबकरणमें यामहिं नहिं सन्देह ॥
यामहिं नहिंसन्देह देहनहिं समझहिं आपन ।
युद्ध करत सब धाय तनिक मनमें कछुदापन ॥
गिरिकानन युतभूमि क्षणहिमहँ ध्वंसकरावी ।
सकत भलीविधि भूप सकल कपि महाप्रभावी १ । ४७

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेसप्तविंशस्सर्ग्गः ॥ २७ ॥

सारणके वचनसुन शुकनाम राक्षस राक्षसोंके स्वामी रावणसे सेना का हाल कहनेलगा १ हेराजन् जिनको मदान्ध महागजोंके समान व गंगाकेतीरके बरगदके वृक्षोंके समान व हिमवान् पर्व्वतपर के साँखूके वृक्षोंकेसमान टिकेदेखतेहो २ हेराजन् ये बड़ेदुःखसे सहनेकेयोग्यहैं व बड़ेबली व यथेच्छरूपधारीहैं युद्धमेंदेवता दैत्य व दानवोंकेसमान परा-क्रम रखतेहैं ३ इनसब वानरोंकीसंख्या पचाशसंख्य नर्व्वअर्व्व सातलाष हैं ४ व ये किष्किन्धानिवासी सुग्रीवकेमन्त्री वानरलोग देवता व गन्धर्व्वों

से वानरोंकी जातिमें उत्पन्नहुये हैं इससे सब यथेच्छ रूपधारीहैं ५ व जो ये दोवानर देवरूपी एकहीसे दिखाई देतेहैं इनमें एकका द्विविद नामहै व एकका मैन्द इनकेसंग लड़नेवाले युद्धमें कोईनहींहै ६ क्योंकि ब्रह्माजीकी आज्ञासे इनदोनोंने अमृत पानकियाहै इससे यभी अपने प्रतापसे लंकामर्दन करनेको कहतेहैं ७ व जो यह वानर क्रोधकरने पर जबरदस्ती समुद्रको भी चलायमान करसक्ताहै जिसकोकि मदान्धबड़े हाथीकेसमान देखतेहो ८ यह लंकामें जानकीजी के समीप आयाथा व तुम्हारेभी इसको तुमने आगे देखरक्खाहै परंतुअब फिर आयाहै देखोतो ९ यह केसरीमात्र वानरका ज्येष्ठपुत्रहै व वातात्मजकरके प्रसिद्धहै व नाम तो हनुमान् ऐसाविख्यातहै यही सागरनाँघकर यहाँआयाथा १० यह वानर श्रेष्ठ यथेच्छरूपधारी व बलरूपयुक्तहै व जैसे पवनकीगति कोई नहींरोंकसक्ता इसीतरह इसकीभीगति कोईनहीं रोंकसक्ता इससे जहाँ चाहता चलाजाताहै ११ यह जबबालहीथा तो इसने बिचारा कि फलादिकोंसे हमारीभूंख न मिटेगी इससे सूर्य्यकोखींचलावेंगे मनसे यह निश्चयकर भारेबलके अहंकारसे उछला भूंखातोथाही प्रातःकाल उदित सूर्य्यकोदेख तीनहज़ार योजन ऊपरको कूदगया १२ । १३ परंतु सूर्य्यको तो देवता गन्धर्ब्ब ऋषि राक्षसादि कोई भी धर्षितनहीं कर सक्ता इससे उनको तो न पकड़पाया वरन इंद्रने बज्रमारा जिसकेलगनेपर जिसपर्ब्बतपरसे सूर्य्योदय होता उसीपर यह गिरपड़ा १४ तब शिलातलपर गिरेहुये इन हनुमान्की एकदाढ़ बज्रलगने से कुछटूटगई तिससे इनकी यहदाढ़ औरपुष्टहोगई व इसीसे उनका हनुमान्नाम भी होगया १५ जितने वानरोंका सङ्ग हमकोहुआहै इनमें सत्य सत्य इसी वानरकाहाल हमको बिदितहुआहै परंतु इस हनुमान्का बल रूप व प्रभाव हमकह नहींसक्के १६ यहअकेलाही लंकाको उन्मथित करनेको कहताहै सो जानोएकबार करभीचुकाहै क्योंकि आपके तेजकेमारे निस्तेजभी अग्निहोगईथी परंतु लंकामें इसके तेजसे ऐसीबरी कि जिससे चारअंगुल भी पदार्थ जलनेको न बाकीरहा तिस हनुमान्को तुम कैसे भूलेजातेहो १७ व जो इन हनुमान् के समीपही बैठे हैं जोकि बड़ेशूर श्यामस्वरूप कमलसरिसनेत्र इक्ष्वाकुबंशियोंमें महायोधा हैं व जिनका

पौरुष चौदहो भुवनोंमें प्रसिद्धहै १८ व जिसमेंसे धर्म्म कभी नहींच-
लता बरन सदा उन्हींमें टिकाही रहता व जो धर्म्मका उल्लंघन कभी
नहींकरते बरनसदा धर्म्महीको शिक्षाकिया करते व जो ब्रह्मास्त्र वेद व
वेदाङ्गोंको अच्छीतरह जानते व वेदबादियोंके शिरोमणिहैं १९ व जो
अपने बाणोंसे चाहें तो पवनादि सबकीगति बन्दकरदें व पृथ्वीको भी
विदीर्णकरदें व जिसकाक्रोध मृत्युहीके समानहै व जिसके पराक्रमके
समान इन्द्रके पराक्रमहै २० व जिसकी सीतानामभार्य्या तुमजनस्थान
से हरलाये हे राजन् य वही रामचन्द्रजी तुमसे युद्धकरनेकेलियेआयेहैं
२१ व जो इन रामचन्द्रकी दहिनीओर तपायेहुये पक्के सुवर्णके रङ्गके व
बड़ीचौड़ी छातीके व लालनेत्रकेहैं व जिनके काले व घुंघुआरे बालहैं २२
इनका लक्ष्मण नामहै ये अपने भाईका हितकरनेमें सदानिरत रहते हैं
न्यायशास्त्र व युद्धकरनेमें बड़ेही कुशलहैं व सब शस्त्रास्त्र धारियों में बड़े
श्रेष्ठहैं २३ व रामचन्द्रजीका अपराध करनेवाले के ऊपर क्षमारहितहैं
व कोई भी उनको नहींजीतसक्ता व वे सबकोजीतसक्ते हैं व महाबिक्रमीहैं
बिजयीजानों समरमें वहीहोतेहीहैं बलीबड़े हीहैं व रामचन्द्रजी के द-
हिनेहाथहैं इसीसे रामचन्द्रजीके बाहरकेप्राणहैं २४ ये रामचन्द्रजी के
कार्य्यकेलिये अपने प्राणोंकी भी रक्षानहींकरते व युद्धमें अकेलेही सब
राक्षसोंको मारडालनेको कहते हैं २५ व जो रामचन्द्रजी की बाईंओर
बैठेहैं जिनको कि राक्षसों ने यहाँसे निकालदियाहै वे राजाबिभीषणहैं
२६ जो कहियेकि ये कबसेराजाहुये तो श्रीमान् महाराजाधिराज श्री-
रामचन्द्रजीने इनको लङ्काकाराजा बनायाहै इसीसे राज्यलेनेकी इच्छा
से युद्धमें ये तुमको मारडालनेको कहतेहैं २७ व सब वानरों के स्वामी
महापराक्रमी सबके बीचमें जिनको बैठे देखतेहो मानों पर्ब्बत हैं कहीं
डोलते हिलतेनहीं २८ व जो तेजसे यशसे बुद्धिसे बलसे व परिवारसे
सब वानरोंसे अधिक शोभितहोतेहैं जैसे सबपर्ब्बतोंमें हिमवान्शोभित
होते २९ व जो बहुतवृक्षोंसे घिरने व दुर्ग्गम पर्ब्बतोंके बीचमें बचनेके
कारण अतिदुस्सह किष्किन्धानगरीमें वानरोंके यूथपोंकेसङ्ग सदाबसे
रहते हैं ३० व जो शतपुष्पी के पुष्पों से व सुवर्णसे बनीमाला धारण
कियेहैं जिस मालामें देवता व मनुष्यों को परमप्रिय लक्ष्मी सदाटिकी

रहतीहै ३१ यहमाला व तारा व निरन्तर वानरोंका राज्य बालीकोमार रामचन्द्रजी ने सुग्रीवको दियाहै ३२ सौलाक्षकी एक किड़ोरहोतीहै व किरोड़ हज़ारको सौसे गुणाकरनेसे एकशंकुहोताहै ३३ व हज़ारशंकुको सौसे गुणाकरनेसे महाशंकुहोताहै व हज़ार महाशकुको सौसे गुणाकरनेसे वृन्दकहाताहै ३४ व हज़ारवृन्दको सौसेगुणनेसे महावृन्दहोता व हज़ार महावृन्दको सौसेगुणनेसे पद्मकहाताहै ३५ व हज़ार पद्मकोसौसेगुणनेसे महापद्महोताहै व हज़ार महापद्मोंको सौसेगुणनेसे खर्ब्बहोता है ३६ व हज़ार खर्ब्बको सौसेगुणनेसे समुद्रहोताहै व हज़ार समुद्रको सौसेगुणनेसे महौघकहाताहै ३७ सो इसहिसाबसे हज़ार महापद्म व सौखर्ब्ब व सौसमुद्र व सौमहौघ ३८ व हज़ार किड़ोर व सौशङ्कु व हज़ार महाशङ्कु व सौवृन्द ३९ व हज़ारमहावृन्द व सौवृन्द व हज़ार महापद्म व सौखर्ब्ब ४० व सौसमुद्र व सौमहौघ व किड़ोर महौघ व किड़ोर समुद्र ४१ इतनीतो सेना व बिभीषणवीरको सङ्गलिये व अपने मन्त्रीसाथलिये वानरोंकेइंद्र सुग्रीवजी तुमको युद्धकरनेके लिये बुलातेहैं ४२ इनकेबड़ीभारीशक्ति व महाबल व पराक्रम है४३ इससे हे महाराज जलतीहुई अग्निकेसमान समीप टिकीहुई सेनादेख आपबड़ाभारी यत्न करें जिससेजयहो व पराजय नहो ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टाविंशस्सर्ग्गः ॥ २८ ॥

शुककेदिखायेहुये उनवानर यूथपों व रामचन्द्रजीके दहिनेभुज महापराक्रमी लक्ष्मणजीको १ रामचन्द्रजीके समीपबैठे व बिभीषणजीको व सबवानरोंके राजा भयङ्कर पराक्रमी सुग्रीवजी को २ व इंद्र के पुत्रके पुत्र महाबली अङ्गद को व महाबिक्रांत हनुमान्जी को व महादुर्ज्जय जाम्ब्वान् को ३ व सुषेण कुमुद नील नल वानर श्रेष्ठ गज गवाक्ष शरभ मैन्द व द्विविद को ४ देख कुछ उदासमनहो क्रोध युक्त रावणने वृत्तान्त वर्णनके पीछे शुकसारण दोनोंदूतों का बड़ा अपकार किया ५ व नीचेको मुखकिये प्रणाम करतेहुये शुकसारणसे मारेरोषके गद्गद बाणीसे अतिकठोर बचनबोला ६ किस्वामीकी बँधोई व जबरदस्ती मारमें व अनुग्रहमें भी उपजीवी मन्त्रियोंको चाहिये किजोबात राजाको अप्रिय

लगे यहकभी नकहें ७ सोतुम दोनोंजनोंने संग्रामकेअर्त्थ आयेहुये हमारे प्रतिकूल बैरियोंकी प्रशंसा बिनाकिसी प्रसङ्गके केवल हमको डरवानेके लिये की यहबात तुमकोउचित नथी ८ जिससे किराजनीति के सारांश कीरीतिपर तुमलोगोंको जीविनोपाय नहींआती इससे आचार्य्य गुरू व वृद्धोंकीसेवा तुमलोगोंने वृथाकी ६ अथवा तुमलोगोंने राजनीति पढ़ी भीहै परन्तु अबबिलकुल भूलगयेहो इसीसे अज्ञानका भार अपनेऊपर लादेहो पर बड़ेभाग्यकी बातहै किऐसेमूर्ख मन्त्रियोंसे युक्तहोकरभी हम राज्यकाभार बराबरउठाये चलेजातेहैं १० भला जिसहमारी आज्ञाको पायजीभ शुभ अशुभ कहनेलगतीहै तिसको कठोरबचन कहतेहुये तुम दोनोंको क्यामृत्युसे भयनहींहै जोऐसे निर्भयबचन कहे ११ तुमनहीं जानतेकि बनमें अग्निलगनेपर भी चाहे किसीतरह वृक्षबचभी जातेहैं परन्तु जोअपराधी राजदण्डकेयोग्य काम करतेहैं वे किसीतरह नहींबच-सक्ते १२ जो तुमलोगोंके कियेहुये पूर्व्वसमयके उपकार हमारेक्रोधको कोमल न करदेते तो अभी शत्रुके पक्षकी प्रशंसा करनेवाले तुमदोनों पापियोंको हम मारडालते १३ अच्छा अब जोकिया सोकिया हमारेनिकट से तुम दोनोंभागो व फिर मुह न दिखावो क्योंकि तुम्हारे उपकारोंका स्मरणकर हम तुमलोगोंको मारडालना नहींचाहते इससे परित्यागही करतेहैं १४ हमसे अलग रहनेपर तुमदोनों कृतघ्न मरेहुये जनोंकेहो तुल्यहो कुछजीते न रहोगे परहम क्यामारें १५ जबरावणने ऐसाकहा तो शुक व सारणदोनों लज्जितहो रावणकीओर निहार व आपकीजय हो ऐसाकह वहांसेनिकल खड़ेहुये १६ व रावणसमीपही बैठेहुये महोदरनाम राक्षससेबोला कि हमारेदूतोंको शीघ्रही हमारेसमीप बुलावो १७ इस राजाज्ञाकोपाय सबदूत वहांप्राप्तहो हाथजोड़ जयकह आशीर्व्वाददे खड़ेहुये १८ तब राक्षसोंका स्वामी रावण उन विश्वास पात्र शूर धीर व भयरहित दूतोंसेबोला १९ कि रामचन्द्रके मनमेंजोहै व जो उनके अभ्यन्तरकी बात जानतेहों व अन्यभी जोउनके सङ्गआयेहों उन सबका अभिप्राय जाननेकेलिये तुमलोग यहांसेजावो २० व किसतरह वेसोतेहैं व किसतरह जागतेहैं व क्याअब करेंगे इत्यादि सबजानबूझ तुमलोग वहांसे शीघ्रही चलेआवो २१ क्योंकिजब दूतोंकीद्वारा शत्रुके

आचरण विदित होजातेहैं तोपण्डित राजालोग युद्धमें थोड़ेहीसे यत्नसे शत्रुको भगादेतेहैं २२ यहसुन वे सबदूत बहुतअच्छा ऐसाकह हर्षितहो शार्दूलनाम मुख्यदूत को आगेकर रावणके प्रदक्षिणा करनेलगे २३ व तिस राक्षसाधिपके प्रदक्षिणाकर वे सबदूत जहां लक्ष्मणसहित श्रीरामचन्द्रजीथे वहांगये २४ व उन्होंने सुवेलनाम पर्व्वतकेसमीप टिकेहुये सुग्रीव व विभीषण युक्त श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी को गुप्तहोकर देखा २५ व उस बड़ीभारी वानरी सेनाकोदेख मारेभयके बहुत व्याकुलहुये २६ परन्तु उनराक्षसोंको धर्म्मात्मा विभीषणजीने देखकर पकड़लिया २७ उनमेंसे शार्दूल अकेलेहीको पकड़ विभीषणजीने वानरोंसे कहाकि यहबड़ा पापीहै इसे पकड़ो तब वानर उसको बांध पीटनेलगे पर रामचन्द्रजीने उसेभी छुड़ादिया २८ व उसके सिवाय और भी सबराक्षस सौम्यस्वभाव श्रीरामचन्द्रजी की ओरसे छुड़ादियेगये परन्तु अति शीघ्र विक्रमी वानरोंने छोड़ते छोड़ते उनको खूबकूटा यहांतककि वे बेचारे रोते पीटते झंखते फिर लङ्का को गये २९ व नित्यही बाहर घूमनेवाले वे निशाचर दूत रावणके समीपजाय सुवेलनाम पर्व्वतके समीप टिकीहुई रामचन्द्रजीकी सेनाके समाचार कहनेलगे ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकोनत्रिंशस्सर्गः ॥ २९ ॥

तिसके पीछे दूतोंने अचल सेनावाले सुवेलनाम पर्व्वत पर टिकेहुये श्रीरामचन्द्रजी को रावणसे बताया १ दूतोंसे महाबली रामचन्द्रजी को आयेसुन रावणकुछ व्याकुल हो शार्दूलनाम दूतसेबोला २ हे निशाचर तुम्हारे मुखका रङ्ग पूर्व्वकाल कासा नहींहै इससे दुःखी विदित होतेहो क्या शत्रुओं के वश में तो नहीं पड़गये ३ जब रावणने ऐसा पूंछा तो शार्दूल भयकेमारे विकलहो धीरेसेबोला ४ हेराजन् उन वानर श्रेष्ठोंके समाचार दूतोंसेनहीं मिलसक्ते क्योंकि एकतो वे आपही बड़े विक्रमीहैं पर रामचन्द्रजी उनकी रक्षाभीकरते ५ इससे उनसे कोई बोलही नहीं सक्ते फिरयह कौन पूंछसके किआप कौनहैं व कहां आये हैं फिर पूंछने पांछनेको कौनकहै वहांतो जानाही दुर्घटहै क्योंकि पर्व्वताकार वानर लोग सबओरसे मार्ग्गरोंके पड़ेहुयेहैं ६ जैसेही अति बिचारी सैन्यमेंहम पहुंचे हैं कि वैसेही हमको विभीषण के सङ्गवाले राक्षसोंने जानलिया

क्योंकि प्रसिद्ध होनेके कारण वे प्रथमहीसे हमको पहिचानते थे इससे सबोंने पकड़लिया व इधर उधर घुमायाभी ७ व बलवान् वानरोंने जांघ मूका दबडलात आदिकोंसे हमको खूब कूटापीटाभी ८ व सबकहीं घुमाय हमको फिर रामचन्द्रजीके निकट लेगये उससमय हमारे अङ्गोंसे रुधिर बहताथा इससे दुःखिताङ्ग होगयेथे व विह्वलहोने के कारण सबइन्द्रिय चलायमान होरहीथीं ९ व वे वानर बराबर पीटतेही चलेजातेथे इससे हमने हाथजोड़ रामचन्द्रजीके प्रार्त्थनाकी तब उन्होंने अरे न अरे न कह कर हमको बचालिया १० ये रामचन्द्रजी पर्ब्बत व वृक्षादिकोंसे समुद्र में सेतुबांध इसपारआय लङ्काके द्वारपर टिकेहैं ११ व गरुडब्यूह अर्थात् गरुडाकार किलाबनाये वानरोंको सङ्गलिये महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी हमको छुड़ाय लङ्काको घेररहेहैं १२ शहरपनाहके किनारेपर आयजाया चाहतेहैं इससे दोबातोंमें एककरो यातो उनकीसीता उनकोदेदो या युद्धकरो १३ दूतका बचनसुन व मनसेबिचार राक्षसोंका स्वामी रावण शार्दूलनाम दूतसेबोला १४ कि यदिदेव गन्धर्ब्ब दानव सबहमसे युद्ध करें व सब संसारभरसे भी हमको भयहो परन्तु तोभी हम सीता न देंगे १५ यहकह महातेजस्वी रावण फिर दूतसे बोला किआपने सेनाको अच्छी तरहसे देखहीलीहै बताइये तो कौनकौन वानर महाशूर बीरहैं १६ जो वानर बड़ेकष्टसे सहनेकेयोग्यहैं वे कैसेहैं व कितने कितनेहैं व किसकेपुत्र किसके पोताहैं सोतुम बतावो १७ उनलोगों का बलाबल जानतैसा हम उनकेपास पहुंचें क्योंकि जो युद्धकिया चाहताहो उसको अवश्य शत्रुका बलाबल जानलेना चाहिये १८ जब रावणने ऐसाकहा तो दूतोंमेंउत्तम शार्दूलनाम राक्षस रावणकेनिकट यहबचन कहनेलगा १९ हेराजन् ऋक्षरजस् वानरका औरसपुत्र व गदगदका क्षेत्रजपुत्र जाम्ववान् नामवानर समरमें अति दुर्ज्जयहै २० व गदगदका द्वितीय पुत्रकेसरी नामवानर भी यहांहै व इन्द्रकेगुरू वृहस्पतिजी का पुत्र धूम्र नामभीहै जिस केसरीकेपुत्र हनुमान्नाम अकेलेही वानरने सबराक्षसों का अनादर करडालाथा २१ व धर्म्मकापुत्र महाबीर्य्यवान् व धर्म्मात्मा सुषेण नाम वानर भी यहां आया है व चन्द्रमा का पुत्र सौम्यस्वभाव दधि मुख नाम वानर भी आया है २२ अपना अपना वेग देखने वाले

सुमुख व दुर्म्मुख नाम वानर वानर के रूप से मानो ब्रह्माने मृत्युही को उत्पन्न किया है २३ व अग्निका पुत्र नीलनाम वानर इस सैन्यका सेनापति है व केसरी का क्षेत्रज व पवन का औरसपुत्र हनुमान् नाम महापराक्रमी भी यहां है २४ इन्द्रका नाती व वालीका पुत्र अंगद भी है व अश्विनीकुमार के महाबली पुत्र मैन्द व द्विविद नाम वानर भी हैं २५ व गजगवाक्ष गवय शरभ व गन्धमादन ये पांच कालान्तकके समानपुत्र वैवस्वतके हैं २६ दशकिरोर वानर तो श्रीमान् देवोंके पुत्र महाशूरवीर यहां आये हैं बाकी वानर तो असंख्य हैं उनकी गिनतीही हमसे नहीं होसक्ती २७ जिन्होंने दूषण खर व त्रिशिराको माराहै वे सिंहतुल्यपराक्रमी व युवावस्थाकोप्राप्त श्रीरामचन्द्रजी दशरथमहाराजाधिराजके पुत्रहैं २८ जिन्होंने यमराजकेतुल्य विराध व कबन्धकोमारा उन रामचन्द्र के समान विक्रममें भूतलमें कोईभी देवता दैत्य मनुष्य राक्षसादिकोंमें नहींहै २९ इससे ऐसाकोई पुरुष भूतलमें नहीं जो रामचन्द्रजीके गुणकहसके जिन्होंने कि जनस्थान निवासी चौदह हजार राक्षस एकडेढ़ही मुहूर्तमें मारडाले ३० व परम धर्म्मात्मा लक्ष्मणजी भी महागजेन्द्र समश्रेष्ठ यहां हैं जिनके बाणकेसामने आजानेपर इन्द्रभी नहींजीसके फिर औरोंकी क्या गणनाहै ३१ व सूर्य्यके पुत्र श्वेत व ज्योतिर्म्मुख नामयहांहैं व वरुणकापुत्र हेमकूट नाम वानर यहांहै ३२ व विश्वकर्म्माका पुत्र अतिवीर वानरोंमें श्रेष्ठ नलनाम वानरहै व बड़ा विख्यात व वेगवान् दुर्द्धरनाम वसुओंका पुत्रहै ३३ व राक्षसोंमें श्रेष्ठ तुम्हारेभाई विभीषणजीभी रामचन्द्रजीकी ओरसे लङ्काकाराज्य पाय अब रामचन्द्रहीके हितमें लगेहुये यहींहैं ३४ इसतरहसे तुमसे हमने वानरोंकी सेनाके समाचारकहे यहसेना सुवेल पर्व्वत पर पड़ीहै अब बाकी कृत्यकरनेके आप अधिकारीहैं चाहें जो करें ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रिंशस्सर्गः ॥ ३० ॥

इसतरह सुवेलपर्व्वतपर टिकेहुये रामचन्द्रजीको व उनकी सेनाको रावणसे रावणके दूतोंनेबताया १ दूतोंसे महाबलवान् रामचन्द्रजी को लंकाके निकट आयेहुयेसुन रावण कुछ ब्याकुलहो मन्त्रियोंसे बोला २

कि हेराक्षसो यहहमारा सलाहकरनेका समयआयाहै इससे मंत्रीलोगो शीघ्रही यहांआवो ३ रावणकी ऐसी आज्ञापाय मन्त्री लोग शीघ्रही वहांआये तबवह राक्षस मन्त्रियोंकेसाथ सलाह करनेलगा ४ जो कुछ राक्षसोंके योग्यथा उसका बिचारकर व मन्त्रियों को बिदाकर रावण अपनेस्थानको चलागया ५ तिसकेपीछे महाबली महाकाय मायावी व महादुष्ट विद्युज्जिह्वनाम राक्षसकोसंगले रावण जानकीजीके निकटको चला ६ व माया जाननेवाले विद्युज्जिह्वसे मार्गमें बोला कि मायासे जनकपुत्री जानकीजीको आवो हमदोनों मोहितकरें ७ हेराक्षस तुमको केवल इतनाकार्य्य करनाहै कि मायासे रामचन्द्रजीका शिर बनालावो व उनकासा बड़ासुन्दर बाणसहित धनुषभी बनालावो ८ रावणकेवचन सुन विद्युज्जिह्वने रावणको मायासे अच्छीतरह शिर आदि बनाय दि. खाया ९ रावण उसके ऊपर बहुत प्रसन्नहुआ इससे उसेअपना कुछ विभूषणदिया व सीताके देखनेकी लालसासे अशोकवनिकाको गया १० व जाय उसमेंपैठा व दुःख सहनेके अयोग्य परदुःखित जानकीजी को उसने जायदेखा ११ उससमय सीताजी नीचेको मुखकिये शोक युक्त पृथ्वीपरबैठी अशोकवनिकामें अपनेस्वामी श्रीरामचन्द्रजीका ध्यानकर रहीथीं १२ व उनकेनिकट चारोओरसे भयंकर राक्षसियां बैठीथीं उस समय रावणने जाय हर्षसहित अपना नामकह बड़ीढिठाईसे ऐसावचन बोला १३ हेसीते जिसअपने पतिकेभरोसे हमारी प्रार्थनाको अंगीकार नहींकरतीथी वे खरके मारडालनेवाले तुम्हारे भर्त्ता रामचन्द्र समरमें मारडाले गये १४ इससे तुम्हारी जड़ हमने सब तरहसे काटडाली व अहंकारभी तोड़डाला १५ अब मारेदुःखके आप तुम हमारी भार्य्याहो- वोगी अब इसमतिकोछोड़ो मरेहुये रामचन्द्रको क्याकरोगी १६ हेभद्रे अबहमारी सबस्त्रियोंकी स्वामिनिहोवो हेथोड़े पुण्यवाली हेमूढ़े हेअप- नाको पण्डित माननेवाली १७ अपने भर्त्ताका घोरवध वृत्रासुरके वध के तुल्यसुनो तुम्हारे रामचन्द्र हमको मारडालनेकेलिये समुद्र के उत्तर तटआये व उनकेसंग वानरोंकेराजा सुग्रीवकी बड़ीभारी सेनाभी आई १८ व समुद्रके उत्तरके किनारेपर सेनासहित रामचन्द्र बड़ीधूमधामसे उतरे वहां पहुंचेहैं कि सूर्य्यअस्ताचल को प्राप्तहुये १९ वहां मार्गकी

थकीथकाई सेना आतेही आते खापीकर सोगई उससमय हमारे दूत जाकर देखआये २० तबहमारे सेनापति प्रहस्तने बड़ीभारी सेनाभेजी उसनेजाय सोतेही समय रामचन्द्रकी सेनाको मारडाला २१ वहसेना यों मारीगई कि पट्टा परिघ चक्र दुधारा दण्ड बाण शूल व बड़ेबड़े मुद्गर २२ लट्ठ तोमर प्रास मूसर आदि बड़ेबड़े आयुध उठाउठा राक्षसोंने वानरों के ऊपर छोड़दिये कि सबवानर मरगये २३ तिसकेपीछे सोते-हुये रामचन्द्रका शिर प्रहस्तने तलवारसे काटडाला २४ व झटपट विभीषणको राक्षसों ने पकड़लिया व सब राक्षसों ने लक्ष्मणको मार वहांसे खेददिया २५ सुग्रीवभी अपना गलकटाय वानरोंकेसंग समाप्त हुये व हनुमान्की दाढ़ीतोड़ राक्षसोंने मारडाला वे वहींपड़े हैं २६ व जाम्बवान् कुछजाँघोंसे उठनेलगेथे कि मारडालेगये उन्होंने कुछ युद्ध भी किया परन्तु वृक्षके समान काटडालेगये २७ मैन्द व द्विविद येभी दोनों वानरश्रेष्ठ मारडालेगये इससे रुधिरमें डूबेहुये बड़ी देरतक ऊधी सांसें लेतेरहे फिर मरगये २८ यद्यपि ये दोनों बैरियोंके कालरूपहीथे पर खड्गसे काटडालेगये व पनसभी मारेगये पर अभीसांसें लेतेहैं २९ व बाणोंसे कटाहुआ दरीमुखवानर पर्ब्बतकी कन्दरामें सोताहै व महा-तेजस्वी कुमुदनाम वानरशब्द करतेहुये बाणोंसे मारडाला गया ३० व राक्षसोंने बहुतसे बाणोंसे अङ्गदको भी छिन्नभिन्न करडाला इससे वह भी रुधिरमें डूबा हुआ अपनेअङ्ग पृथ्वीमें दियेहुआ पड़ाहै ३१ बहुतसे वानरतो हाथियोंसे पिसगये व बहुतसे रथोंकेनीचे पड़कर मींजगये इस तरहसब इधरउधर पड़कर समाप्तहोगये जैसे वायुकेवेगसे बादर इधर उधर उड़जातेहैं ३२ व बहुतसे मरे अधमरे राक्षसोंकी भयसे भागगये जैसे सिंहकी भयसे हाथी भागतेहैं ३३ कोई कोई तो समुद्रमें गिरपड़े कोईकोई आकाशको उड़गये व बहुतसे ऋक्षवानर वृक्षोंपर चढ़गये ३४ इसतरह समुद्रके किनारे पर्ब्बतों व वृक्षोंपर भी जोजहांमिले राक्षसोंसे मारेगये ३५ इसतरह सेनासहित तुम्हारेभर्त्ता हमारी सेनासे मारेगये व जोतुमको प्रतीति नहो तोदेखो रुधिर लगाहुआ उनकाशिर भी आया है ३६ यहकह जानकीजीके सुनतेही सुनते रावण राक्षसियोंसे बोला ३७ कि क्रूरकर्म्म करने वाले विद्युज्जिह्व नाम राक्षसको बुलातो लावो

क्योंकि संग्रामसे रामचन्द्रका शिर वहीलायाहै ३८ इतना कहतेही वि-
द्युज्जिह्व रामचन्द्रजीका कृत्रिमशिर व धनुषबाणले आयरावणके आगे
प्रणामकर खड़ाहुआ ३९ समीपही प्राप्तबड़ी जिह्वावाले विद्युज्जिह्व रा-
क्षससे रावणबोला ४० कि रामचन्द्रका शिरसीताके आगेकरो जिसमें
ये अपने भर्त्ताकी पिछली अवस्था अच्छीतरह देखें ४१ जब रावणने
ऐसाकहातो सीताजीके आगेवह शिरधर विद्युज्जिह्व आपशीघ्रही अन्त-
र्द्धानहोगया क्योंकि उसे सीताजी को देखदया आगई ४२ व रावणने
तीनोंलोकोंमें विख्यात श्रीरामचन्द्र जी का सुवर्णका धनुष सीताजी के
आगेफेंक कहालो यह रामचन्द्रका धनुषहै चीन्हतीहो या नहीं ४३ यह
तुम्हारे रामचन्द्रही का धनुषहै प्रहस्त उनको रात्रिमें मारकर लायाहै
४४ विद्युज्जिह्वका लाया हुआ वह शिर व धनुष भूमिमेंधर रावण परम-
यशस्विनी सीताजीसे बोला कि अबहमारी वशमेंहोवो ४५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकत्रिंशस्सर्ग्गः ॥ ३१ ॥

सीताजी वहशिर व धनुषदेख व हनुमान्‌जीके कहनेसे सुग्रीवके स-
म्बन्धकी भी सुधकर १ व अपने पतिहीकेसे नयन मुखकारङ्ग व मुख बार
व दाढ़ी चूडामणि आदिदेख २ इनसब पतोंसे बनाय रामचन्द्रजी काही
शिरजान बड़ी दुःखितहुई व रोदनकर कैकेयीकी निन्दाकरनेलगीं ३ कि
हेकैकेयि अबसकामहोवो ये कुलभरको आनन्द देनेवाले रामचन्द्रजी मार
गये तुम कलहकारिणीने सबकुल नाशा ४ नहीं जानती कि श्रीरामचन्द्र
जीने कैकेयीका कौनसा अप्रियकिया जिससे चीर धारणकराय हमसहित
श्रीराघवको बनवासदिया ५ ऐसाकह थरथराकांप जानकीजी कटेहुये
केलाके समान पृथ्वीपर गिरपड़ीं ६ एक मुहूर्त्त भरतक तो मूर्च्छित पड़ी
रहीं तिसकेपीछे मूर्च्छाजागी तो वह शिरहाथमें उठाय सीताजी बिलाप
करनेलगीं ७ हा महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी हम मारीगईं अबयह तुम्हारी
सबसे पिछली अवस्था देखती हैं भाग्यने हमको बिधवा करडाला ८
स्त्रीके मरनेसे प्रथम पतिका मरना स्त्रीकेवास्ते अनर्थ है इससे सुन्दर
आचारकरनेवाली हमारेआगे आपमृतकहोगये यहबड़ा अनर्त्थहुआ ९
बड़े दुःखको प्राप्त शोकसागरमें डूबतीहुई हमकोदेख एक आपही रक्षा

करनेको तैयारहुयेथे सोभी मारगये १० हेराघव हमारीसासु कौशल्या जी तुमको पुत्रपाय तुम्हारे ऊपर बहुत कृपाकरतीथीं वे अब कृपावती धेनुकेसमान बछड़ा न होनेपर दुःखितहोंगी ११ हे राघव ज्योतिर्विद्पण्डितोंनेभी तुम्हारी आयु बड़ीभारी बताईथी पर तुमतो अल्पायु ठहरे इससे उनलोगोंके बचनझूंठेठहरे १२ अथवा ज्योतिर्विद्पण्डितों के बचन मिथ्या न होंगे तो आपअभी विद्यमानही होंगे केवल चैतन्य जातीरहीहोगी क्योंकि काल इसीतरह तो प्राणियोंकी चैतन्यशक्ति दूर करदेताहै १३ आप तो नीतिशास्त्र अच्छीतरह जानतेथे इससे दुःखोंके निवारण करनेका उपाय जानतेथे व सबबातों में कुशलथे फिर अदृष्ट मृत्युको एकाएको कैसे प्राप्तहोगये इससे बचनेकाउपाय क्यों न किया १४ हाय भयङ्कर व क्रूर कालरात्रिरूप हमनेही तुमको छपटाय मार डाला अर्थात् हमारेही पापोंसे तुम मृतकहुये १५ हे महाबाहो हम तपस्विनीको छोड़ इसपृथ्वीको छपटेहुये सोतेहो जैसेकोई अपनी अति प्रियस्त्रीको छपटकर सोताहै १६ हेवीर यहतुम्हारा धनुषहमको बहुत प्रियथा इससे चन्दन मालादिकोंसे हम बारबार इसकी पूजा करतीथीं १७हमने जानलिया कि अपने पिता व हमारे श्वशुर दशरथजीके व सब पितरोंके साथ तुमभी जाय मिलगये १८ जिन आपने आकाशमें नक्षत्रवत्प्रकाशितहो बड़ाअद्भुत कामकिया वे आप राजर्षियों के इस वंशको क्यों उपेक्षाकरतेहैं १९ हेमहाराज क्याहमको नहींदेखते भला हमसे बोलते क्यों नहीं हम तुम्हारी सहचारिणी भार्य्याहैं क्या अब अज्ञानसे नहींपहिचानते २० पाणिग्रहणकेसमय आपने प्रतिज्ञाकीथी कि हमतुम्हारे साथहीसाथ धर्म्मादिकरेंगे उसका स्मरण कीजिये अब अकेलेकहां चलेजातेहो अति दुःखित हमकोभी लेचलो २१ हमारीही तरह दुःखित इसलोकको व हमकोभी छोड़ यहांसे कहां चलेगये २२ हाय जिसआपके शरीरमें हम चन्दनादि सुगन्धित वस्तु अपनेहाथोंसे लगातीथीं अब उस शरीरको गीध सियार आदि मांसभक्षी जीव इधर उधर खींचतेहोंगे २३ हाय जिनआपने बहुत बहुत दक्षिणादे अग्निष्टोमादि यज्ञकिये मरणावस्थामें संस्कारयुक्त अग्नितुमको क्यों न मिली २४ भला तीनजने हम बनकोआयेथे उनमेंसेअकेले लक्ष्मणकोही आये

हुये कौशल्याजी कैसेदेखेंगी २५ जब लक्ष्मणसे कौशल्याजी पूंछेंगी तो वे बतादेंगे कि रात्रिको राक्षसोंने तुम्हारे मित्र सुग्रीवकी सेनाको व तुमको मारडाला २६ हेराघव वे कौशल्याजी जब तुमको मारगयेहुये व हमकोराक्षसके घरमेंपरीसुनेंगी तो किसीतरह न जीवेंगी २७ हाय हम अनारीकेलिये महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी समुद्रउतर इसगाय के खुरभर जलमें डूबगये २८ हाय श्रीरामचन्द्रजीने अज्ञानसे अपने कुलके नाशकरनेवाली हमारेसंग विवाह किया क्योंकि आर्य्यपुत्र श्री रामचन्द्रजी को भार्य्याही मृत्यु उत्पन्नहुई २६ हम जानतीहैं कि पूर्व्व जन्ममें हमनेकुछदान नहींकिया इससे अबसबको अतिथिमान पूजने वाले रामचन्द्रजीकी भी भार्य्याहोकर आजहम शोक करतीहैं ३० हे रावण अबहमकोभी रामचन्द्रजीके पीछे मारडालो जिसमेंपति पत्नीका मेलहोजावे ऐसाकरनेसे तुम्हारा कल्याणहोगा ३१ हेरावण इनकेशिर में तो हमारा शिरमिलादो व अन्य सबअङ्गों में हमारे सबअंग जिसमें हम अपने महात्मा पतिकी गतिको चलीजावें ३२ इसतरह दुःखकेमारे सन्तप्त विलाप करती हुई जानकीजीने अपने स्वामी का शिर व धनुष देखा ३३ इसतरह सीताजी रोदन करतीही थीं कि उसी समय अनीक स्थनाम एक राक्षस रावण के पास आया व हाथजोड़ बोला ३४ कि हे आर्यपुत्र तुम्हारी विजयहो प्रहस्तनाम सेनापति आयाहै ३५ वह सब मंत्रियोंको संगलेकर आयाहै दर्शन करनेकेलिये आपको बुलाताहै इसी लिये हमको यहांभेजाहै ३६ हेक्षमायुक्त राज्यके कारण कुछ आवश्यक कार्य्यहै इससे आप तिनलोगोंको दर्शनदें ३७ उसराक्षससे ऐसा सन्देश सुनरावण अशोकवनिकाको छोड़ उनलोगों को देखनेगया ३८ व जिस कार्य्यकेलिये जिसको नियतकरनाथा सबको नियत करदिया व दूतोंके मुखोंसे रामचन्द्रजीका विक्रमजान सभामेंबैठ सबके संग बिचार करने लगा ३६ व जैसेहीरावण अशोकवनिकासे गया कि वह मायाकाशिर व धनुष अन्तर्द्धान होगया ४० व रावण अपनीसभामें बैठ मन्त्रियोंकी सम्मतिसे रामचन्द्रजीके संग जो जो कार्य्य उसको कर्त्तव्य विदितहुये करनेलगा ४१ प्रथम अपनेसब हितचाहनेवाले सेनापतियोंको बुलाय समयके अनुसार उनसेबोला ४२ कि बहुतही शीघ्र तुरुही बजवाकर

हमारीसेना यहांबुलावो परन्तु बुलवानेका कारण किसीसेभी न कहना ४३ रावण के वचन अंगीकारकर सब दूत सैन्योंको बुलालाये व युद्ध करनेको तैयार अपनेस्वामीसे कहा कि सबसेना इकट्ठीहै ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेद्वात्रिंशस्सर्गः ॥ ३२ ॥

व सीताजीको मोहितदेख बड़ी हितकारिणी सीताजीकी सरमानाम राक्षसीसखी जानकीजीके निकट आई १ व रावणसे मोहित परमदुःखित सीताजीको मधु भाषिणी सरमा समझानेलगी २ इस सरमाको रावणने राक्षसियोंसे सीताजीकी रक्षाकरनेकेलिये नियतकिया था कि कोई राक्षसी बहुतदिक न करनेपावे इसीसे सीताजी से उससे मित्रता होगईथी यह दयापूर्व्वक जानकीजीकी रक्षाकरतीथी ३ उस सरमाने भारसे थकनेके कारण छोड़देनेपर धूलिमें लोटीहुई घोड़ीकेसमान मारे दुःखके भूमिमेंलोटी धूलिलगायेहुई सीताजीकोदेखा ४ व सखीके स्नेह से उनसीताजीको समझानेलगी कि रावणने जो तुमसेकहा व जोतुमने फिर रावणसे कहा ५ हेसीते सखीकेस्नेहसे हमने सब घनेबनमें खड़ी होकर व रावणसे भयछोड़ सुनलिया हे विशालाक्षि तुम्हारे हेतुहमको रावणसे कुछभी भयनहींहै ६ इसीहेतु रावण जिसलिये यहां आया व जोजो समाचार रावणकेहैं हमने बाहरजाय सबजानलियेहैं ७ राक्षसों का स्वभाव जाननेवाले श्रीरामचन्द्रजीके संग सोनेपरभी कोईयुद्धनहीं करसक्ता इससे उनपुरुषव्याघ्र श्रीरामचन्द्रजीका वधभी किसीतरहसे नहींहोसक्ता ८ व वृक्ष पर्व्वत आदि हाथोंमेंलेले युद्धकरनेवाले वानरों कोभी इसतरह कोई नहींमारसक्ता क्योंकि जैसे देवताओंकी रक्षाइन्द्र करतेहैं उसीतरह रामचन्द्रजी उनवानरोंकी करतेहैं ९ व लम्बी व गोल भुजावाले शोभावान् बड़ी चौड़ीछातीवाले महाप्रतापी धनुर्द्धारण किये अति पुष्टाङ्गशरीर व धर्म्मात्मा त्रिलोकीमें विख्यात १० महाविक्रमी अपनी व अन्यकी भी रक्षा करनेवाले नीतिशास्त्र जाननेवाले व परम कुलीन ११ व असंख्य शत्रुओंकी सेनाओं के नाशक व अचिन्त्य बल पौरुष व शत्रुओंके विध्वंसक अपनेभाई लक्ष्मणसहित रामचन्द्रजी नहीं मारेगये १२ जोकहो कि फिर यहशिर व धनुष जो दिखाईदेताथा तो

यहतो अयोग्यबुद्धिसे कार्यकरनेवाले व सबप्राणियोंसे विरोधकरनेवाले व दुष्टस्वभाव रावणने तुम्हारेबिषयमें मायाकीहै १३ अबतुम्हारा सब शोकगया व तुमको कल्याण प्राप्तहुआ व निश्चय अब तुमको लक्ष्मी भजतीहै व तुम्हारा प्रियहुआ १४ क्योंकि रामचन्द्रजी वानरोंकीसेना संगले समुद्र उतरआये व दक्षिणके किनारेपर टिकेहैं १५ हमने खुद वहांजाकर परिपूर्णार्त्थ श्रीरामचन्द्रजीको लक्ष्मणसहित देखाहै समुद्र के किनारेसे व लंकाके किनारेतक वानरोंकी बड़ीभारी सेनालिये पड़ेहैं १६ इस रावणनेभी बहुतसे दूत वहांभेजेथे वे लोगभी यहीखबरलायेहैं कि रामचन्द्र समुद्र उतरआये १७ हेविशालाक्षि यहखबर सुन रावण मन्त्रियोंसे सलाह कररहाहै कि अब क्या करनाहोगा १८ इसतरह सरमानामराक्षसी सीताजीसे बतलातीहोथी कि रावणकी सेनाकाशब्द सुनाईदिया १९ व उसीबीचमें सेनाकी तैयारीवाला नगाराबजा उसे सुन मधुरभाषिणी सरमा जानकीजीसे बोली २० कि सुनो यहतैयारी का नगारा बाजताहै व तुरुहीभी मेघके समान गर्ज्जतीहै सुनोतो २१ अब हाथी तैयारहोरहेहैं व रथोंमें घोड़े नहेजातेहैं देखो हजारों सवार हाथोंमें भालालिये चलेजातेहैं २२ व सब सड़कोंपर सेनाचली जातीहै कहींगली नहींमिलती २३ सुनोवेगवान् व शब्दकरतेहुये जलसमूहसे जैसे सागर भयानक लगता उसीतरह सिपाहियोंके शस्त्र व कवच ब-खतरों व २४ रथघोड़े हाथियों व रावण के अनुयायी राक्षसोंका शब्द व घोड़ोंका हिनहिनाना व हाथियोंका चिघड़ना सुनाई देताहै २५ व शस्त्रोंकी चमक बड़ेघाममें बनमें अग्निलगनेकी प्रभाके समान दिखाई देतीहै देखतीहो २६ हाथियोंकी घण्टाओंकाशब्द व रथोंकी पहियाओं का सुनो २७ व घोड़ोंका हिनहिनाना व नगारोंका शब्दसुनो व आयुध हाथोंमेंलिये रावणके अनुयायीलोग चलेजातेहैं देखोतो २८ व राक्षसों की भीड़ इतनीभारीहै कि उसको देखतेही रोम खड़ेहोतेहैं परन्तु शोक नाशनेवाली शोभा तुम्हारे ऊपर आई व राक्षसोंको भय प्राप्तहुई २९ क्योंकि कमलदलनयन श्रीरामचन्द्रजी जैसे दैत्योंका पराक्रम इन्द्र बि ध्वंसकरते उसीतरह अचिन्त्य पराक्रम क्रोधजीतेहुये वे ३० समरमें रावणकोमार तुमको बहुतही जल्दमिलेंगे व सहित लक्ष्मण तुम्हारे

स्वामी राक्षसोंके ऊपर विक्रम करेंगे जैसे वामनजीके साथ इन्द्रजीने दैत्यों के ऊपर विक्रम कियाथा ३१ बड़ी खुशीकी बातहै कि शीघ्रही रावणके मारजाने पर आयेहुये रामचन्द्रजीकी गोदमें बैठीहुई तुमकोहम देखेंगी ३२ हे जानकि उन बड़ी चोड़ी छाती वाले श्रीरामचन्द्रजी को छपट तुम आनन्द के आँशु छोड़ोगी ३३ व बहुत महीनों से तैलादि न लगने से तुम्हारे बाल एकमें जुटगये हैं व करिहावँतक हिलगे हैं रामचन्द्रजी बहुतही जल्द अपने करकमलों से छुड़ावेंगे ३४ हे देवि उन रामचन्द्रजीका पूर्णमासी के चन्द्रके समान उदित मुख देख शोक से उत्पन्न जल छोड़दोगी जैसे सर्प्पिणी पुरानी केंचुल छोड़देती है ३५ रावणको समरमेंमार तुम अपनी प्राणप्यारीकेसाथ प्रसन्नचित्तहो सुखहीकेयोग्य श्रीरामचन्द्रजी सुखपावेंगे ३६ व महात्मा रामचन्द्रजी से सभाजितहो तुम आनन्दित होवोगी जैसे सुंदरी वृष्टि होनेसे पृथ्वी सकलअन्न युक्तहोतीहै ३७ हे देविसीते जो सूर्य्यनारायण सुमेरु पर्व्वत की चारोंओर घोड़ेकेसमान मण्डलाकार चलते हैं तिनके शरण को प्राप्त होवो क्योंकि ये प्रजाओंके सुखदुःखके कारणहैं ३८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रयःत्रिंशस्सर्गः ॥ ३३ ॥

सन्ताप उत्पन्न होनेके कारण मोहित सीताजी को सरमाने अपने मीठे वचनसे प्रसन्नकिया जैसे जेष्ठकेघाम व दावाग्निसे जरीपृथ्वीजल के पड़नेसे प्रसन्नहोतीहै १ तिन अपनी सखी सीताजीका हितचाहती हुई सरमासखी हँसकर मधुरवचन श्रीजानकीजीसेबोली २ कि हेसखि सीते हमअनुलरूपहो रामचन्द्रजी के निकटजाय रावण ने जो जो तुमको कहाहै व तुम्हारा कुशलमङ्गल उनसेकहकर लौटआसक्तीहैं ३ क्योंकि जब हमनिरालम्ब आकाशमें उड़ती हैं तो हमारे पीछे पक्षि गरुड़ व पवनभी नहीं जासक्ते ४ ऐसा कहतीहुई सरमासे पूर्व्वकालमें शोकयुक्त व उससमय मधुर व सात्त्ववचनसे सीताजीबोलीं ५ कि हमजानतीहैं कि तुम आकाशव पातालको जासक्तीहो व यहभी जानतीहैं कि हमारे विषय में जो कार्य्य कोईभी न करसके वहतुम करसक्तीहो ६ इससे जोहमारा प्रियकरना चाहतीहो व तुम्हारी बुद्धि स्थिरहो तो रावणके पास चली

जावो व जानआवो कि वह हमारे बिषयमें ठीक ठीक क्याकिया चाहता है हमें यहीबात जाननेकी इच्छाहै ७ क्योंकि वह मायावी क्रूरस्वभाव व शत्रुओं को रोदनकराने वाला दुष्टात्मा रावण हम को मोहित किया करताहै जैसे बारुणी मदिरा केवल पानकरनेही से पुरुषोंको मोहित करतीहै ८ क्योंकिहमको घोरराक्षसियों से डरवाया करता व अपकार बचन कहवायाकरता व सदाहमको रखवाताहै ९ इसीसे हम अशोक-बनिकामें बैठीहीबैठी ऊबतीहैं इससे हमारामन स्वस्थनहीं रहता १० इससे हमारे छोड़ने व न छोड़नेके बिषयमें व और बिषयोंमें भीरावणके मनका जो बिचारहो सब जानकर हमसेकहो बस यही तुम्हारा हमारे ऊपर अनुग्रह है व यह बरदान माँगतीहैं ११ ऐसा कहतीहुई कोमल-भाषिणी सीताजीकामुहँ आँशुओंसे भीगाहुआ अपनेहाथसेपोंछ सरमा बोली १२ हे जानकि जो तुमको यही अभीष्टहै तो हम अभी जातीहैं व शत्रुका अभिप्रायजान शीघ्रलौटी आतीहैं १३ यहकह सरमा रावण के निकटगई व मन्त्रियोंसे बतलातेहुये रावणकी बातेंसुन आई १४ व अच्छीतरह उसदुष्टात्मा रावण के मनका अभिप्रायजान फिर अशोक-बनिकामें आई १५ उसने अशोकबनिकामें आय जानकीजीको अपनी राह परखतीहुईदेखा जैसे कमलोंके भ्रष्टहोनेसे शोभानहीं रहती वैसेही जानकीकोदेखा १६ जब प्रियभाषिणी सरमा फिरआई तो जानकीजी उठकरमिलीं व अपनेबूते उठाय उसको आसनदिया १७ व कहा कि इसपरबैठ दुष्टात्मारावणका अभिप्राय निश्चयनिश्चय हमसेकहो १८ जबकाँपतीहुई सीताजीने इसतरह सरमासेकहा तो मन्त्रीसहित रावण जो बिचार कररहाथा सबसीताजीसे कहनेलगी १९ कि रावणकी माताने व अति सौम्यस्वभाव मन्त्रीने रावणके हितकेलिये तुमको छोड़देने केलिये बहुत तरहसे समझाय बुझाय रावणसे कहा २० कि रामचन्द्र का पराक्रम तुम जनस्थानमें जानचुकेहो इस से सत्कार पूर्ब्बक सीता जीकोले जाय रामचन्द्रजी को देआवो २१ क्योंकि समुद्र का नाँघना व हनुमानका दर्शनभी तुमनेकिया व जिसतरह उन्होंने राक्षसोंका बि-ध्वंसकिया सब तुमनेदेखा भला मनुष्य कौनसङ्ग्राममें ऐसाकर्म्मकरेगा २२ इसतरह उसकी माताने व मन्त्रियोंनेभी बहुत तरहसे कहा परंतु

वह तुमको छोड़ानहीं चाहता जैसे अर्थीपुरुष अर्थको नहींछोड़ता २३ हे मैथिलि जबतक वह युद्धमें मरनहीं जाता तबतक तुमको छोड़ानहीं चाहता उसदुष्ट व क्रूर रावणका यहीबिचार है २४ सो कुछनहीं रावण व उसके मन्त्रियोंकी भी बुद्धि जो तुम्हारे छोड़नेके बिषयमें नहीं है तो वे मृत्युके लोभहीसे क्योंकि रामचन्द्रजीके भयसे तुमकोनहीं छोड़ना चाहते यही चाहतेहैं कि जो इनको छोड़देंगे तो समरमें न मारेजावेंगे २५ इससे रावण व सबराक्षसोंका बधहोगा इससे रामचन्द्रजी तीषे बाणोंसे समरमें रावणकोमार तुमको अयोध्याजीको लेजावेंगे २६ इतनी बात सरमा कहतीहीथी कि तुरुही व शङ्खादिकोंका शब्द सेनाके चलनेके समयहुआ व सबधरणीतल कँपातीहुई सेनाकाभी शब्द सुनाईदिया २७ व उधर बड़ाभारी शब्द बानरोंकी सेनाकाहुआ जिसे सुनतेही राक्षसों का पराक्रम हतहोगया व बिचारोंमे जानलिया कि इसदुष्ट राजाके दोष से हमलोगभी मारेगये अब किसीतरह नहीं बचसके २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुस्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३४ ॥

उमनगारों व शंखोंके शब्दोंके साथ शत्रुओंके पुर नाशने व जीतने-वाले श्रीरामचन्द्रजी युद्धकरनेकेलिये तैयारहुये १ वह बड़भारी शब्द सुन राक्षसोंका स्वामी रावण मुहूर्त्त भरतक अपने मनमें बिचारकर मन्त्रियों की ओर देखनेलगा २ व सब मन्त्रियोंको अपने सम्मुखकर व सभा भरको शब्दसे पूरित कराता हुआ सब मन्त्रियों से बोला ३ व जगत्को सन्ताप करनेवाला क्रूरस्वभाव रावण समुद्रके उतरने व रामचन्द्रके पराक्रमकी निन्दाकरनेलगा ४ कि आपलोगोंने जो राम-चन्द्रका विक्रम कहा हमने सुना बस अब बहुत कहने की आवश्यकता नहीं व युद्ध में सत्य पराक्रम भी आपलोगों के समाचार भी हमने जाने जो कि रामचन्द्रका बिक्रमदेख अब कुछ बोलतेही नहीं ५ इस तरह रावणके व्यंग्य बचनसुन रावणका नाना माल्यवान् उत्तम राक्षस रावणसे बोला ६ हेराजन् जोराजा सब बिद्याओंमें अच्छीतरह निपुण होता वहबहुत दिनों तक ऐश्वर्य्य भोगता है व शत्रुओं को सदा अपनी बशमें रखताहै ७ व उचितसमय पर शत्रुओं के साथमेल करताहुआ व

अपने पक्षकी बढ़तीका उपाय करताहुआ राजा बड़े ऐश्वर्य्यको भोगता है ८ राजाको चाहिये किजोअपनी बराबरवाले शत्रुहैं वा अपनासे अधिकहैं तोउनसे मिलापरक्खे व जो अपनासे छोटेहैं उनकेसङ्ग विग्रह रक्खे परन्तु शत्रुको छोटाजान तुच्छसमझ छोड़ न दे कियह हमारा क्या करेगा ६ तिससे हेरावण हमारे बिचारमें आताहै कि रामचन्द्रके साथ तुममिलाप करलो व सीतामें तुम्हाराचित्त बहुतलगाहै परन्तु रामचन्द्र जीको देदो १० क्योंकि देवता ऋषि गन्धर्व्वादि सब रामचन्द्रजी की बिजय चाहतेहैं इससे उनकेसाथ बिरोध न करो मिलापही करना अच्छा है ११ देखो ब्रह्माजीने दोपक्ष उत्पन्नकियेहैं एक देवताओंका पक्षदूसरा दैत्य राक्षसादिकोंका उनमें देवताओं का पक्ष धर्म्मके आश्रयीभूत है व दैत्यादिकों का अधर्म्मके १२ इसीसे महात्मा देवताओंके पक्षमें धर्म्म सुनाईदेताहै व राक्षसों व दैत्योंके पक्षमें अधर्म्म सुनाई देताहै १३ सो जबसत्ययुग लगताहै तोधर्म्म अधर्म्मको लीललेताहै व जब कलियुग लगतातो अधर्म्म धर्म्मको लीलताहै १४ सो संसारमें घूमतेहुये तुमने धर्म्म का नाश करदिया व बड़ाभारी अधर्म्म ग्रहण किया इसी से हम लोगोंके शत्रुप्रबल होगये १५ सो तुम्हारे प्रमादसे बढ़ाहुआ अधर्म्म रूप सर्प्प हमलोगोंको लीलेजाताहै व देवताओंके पक्षको बढ़ाताहै १६ देखो देशोंमें घूमतेहुये जोकुछ करतेहुये तुमने अग्नितुल्य ऋषिलोगोंको बहुत कष्टदिये यहबड़ा अनर्थहुआ १७ क्योंकिउन लोगोंका प्रभाव बरतेहुये पावकके समान दुर्द्धर्षहै ये लोग तपस्याही से अपना काल बितातेहैं व सदा धर्म्महीके अनुग्रहमें तत्पररहतेहैं १८ व मुख्य मुख्योंसे वे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यसदा परमेश्वरकी पूजाकिया करतेहैं व बिधिपूर्व्वक नित्य नित्य अग्निमें आहुतिदेतेहैं व वेद पढ़तेहैं १६ सो राक्षसोंने जायजाय वेदोच्चारण करनेहारोंके समय उनलोगोंका अनादर करडाला इससे सब जहांतहां भागगये जैसे ग्रीष्मऋतुमें बादर नहीं रहजाते मारेगरमीके जहांतहां उड़जातेहैं २० सो अग्नितुल्य तेजस्वी ऋषियोंके अग्निहोत्र से उठाहुआ धुआं राक्षसोंके तेजकोघेर दशोंदिशाओंमें टिकाहै २१ जो कहोकि ऋषियों को तो राक्षसोंने खेददिया वे अबकैसे यज्ञकरते जो धुआंउठता इसका यहहेतुहै किजहांकहीं पुण्यस्थानोंमें वे लोगहैं वहां

अबभी तीव्रतपस्या करतेहैं किजिससे राक्षसलोग जरेजातेहैं २२ व जोतुमको यह अभिमानहो किहमको बरदानके कारण कोईमारही नहीं सक्ता तोतुमने यहीतो बरदान पायाहै किदेवता दानव व यक्षोंसे हम न मरें व येमनुष्य वानरऋक्ष व महाबली गोपुच्छ कहां जावेंगे २३ जो महाबलवान् व दृढ़बिक्रमी यहांआय सुनो गर्ज्जतेहैं व बिबिधप्रकारके घोरउत्पात बहुतदिखाई देतेहैं २४ उनसे हमसब राक्षसोंका बिनाशही देखतेहैं देखोभयङ्कर व कठोरशब्द व बिजुलीके साथ बादर २५ गरम रुधिर की बर्षालङ्काकी चारोंओर करतेहैं २६ व सबघोड़े हाथी आदि बाहनरोतेहैं इससेउनके आंशु पृथ्वीपर गिरतेहैं व सबओरसे धूलिउड़ा करतीहै जिसतरह आगेलङ्का प्रकाशित रहतीथी वैसीअब नहींरहती २७ सर्प शृगाल गृध्र लंकाकी चारोंओर भयंकर शब्द करते हैं व लङ्काकी फुलवाड़ियोंमें आय आय सबके सब इकट्ठे होतेहैं २८ देखोस्वप्नोंमें पीले दांतवाली कालीस्त्रियां घरोंमेंधरीहुई बस्तुओंसे हँसहँस बतलातीहैं २६ व काकोंकेवास्ते जो बलिसामग्री कीजातीहै उसेकुत्ते खाजातेहैं व गायों से गदहे उत्पन्नहोतेहैं व म्योरोंसेमूष उत्पन्नहोतेहैं ३० देखोव्याघ्रोंके साथ बिलार मैथुनकरते व शूकर कुत्तोंकेसाथ व किन्नरलोग राक्षसों व मनुष्योंकेसंग मैथुनकरतेहैं ३१ व लालचरणवाले पीले कबूतर कालकी प्रेरणासे राक्षसोंके विनाशकेलिये घूमतेघूमते घरोंमें घुसआते हैं ३२ व घरोंकेभीतर रहनेवाली शारिका चींचीं कूंकूं कियाकरतीहैं व लड़नेके लिये अन्य जंगलीपक्षी उनकेपास चलेआते उनसे लड़ते लड़ते एकहीमें लपटीहुई अपने बैठकोंपरसे नीचे गिरपड़तीहैं ३३ व सब मृगगण व पक्षी सूर्य्यकीओर मुख करकर रोदन करतेहैं व महाकरालरूप नकटा मूंड़मुंड़ाये कालापीला मिलाहुआ पुरुष ३४ समय समयपर सबकेघरोंमें घूमताहै व सबोंको दिखाई देताहै इसीतरह के औरभी दुष्ट निमित्त दिखाई देतेहैं ३५ व मनुष्यकारूप धारणकिये रामचन्द्रजी को हमलोग पुराण पुरुषोत्तम विष्णुहीमानतेहैं क्योंकि अतिदृढ़विक्रम श्रीरामचंद्रजी केवल मनुष्यही नहींहैं ३६ जो मनुष्यहीहोते तो समुद्र में सेतु किसी तरह न बांधसक्ते इससे अवश्य पुराण पुरुष विष्णुही हैं हेरावण इस कारण नरराज महाराजाधिराज रामचन्द्रजी से मिलापकरलो ३७ व

रामचन्द्रजी की सब कृत्यजान जो उत्तरकाल में सुखदायी समझो वही करो ३८ ऐसाबचनकह व रावणकेमनकी परीक्षाले नीचराक्षसों में उत्तम पौरुष व बली माल्यवान् रावणको देख मौनहोरहा ३९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपञ्चत्रिंशस्सर्गः ॥ ३५ ॥

तिस माल्यवान् जो रावणके हितकेलिये वचनकहा कालके वशीभूत दुष्टात्मारावण न सहसका १ व भौंहें टेढ़ीकर क्रोधके वशमें पर असहनशीलहोनेसे नेत्रघुमाय वहदुष्ट माल्यवान्से बोला २ कि तुमने अपना को हमारा हितकारीजान शत्रुकेपक्षकी ओरहो जो हमारा अहितवचन कहा उसेहमने नहीं ग्रहणकिया ३ भला मानुषरूप कृपण व पिताके निकालदेनेपर बनकोआय वानरोंके शरणमें पहुचेहुये अकेले रामचन्द्र को किसहेतुसे तुमने समर्थ समझा ४ व राक्षसों के ईश्वर देवताओंके भयंकर व सब विक्रम संयुक्त हमको तुमने हीन किसहेतु समझा ५ तुमने जो हमको कठोर वचनकहे वे वैरसे व शत्रुकेपक्षपातसे व हमको पचकारनेकेलिये कहे इसविषयमें हमकोशंकाहै ६ परन्तु हमजानतेहैं कि हमको पचकारनेही केलिये तुमनेकहाहै कि जिसमेंशत्रुकी उत्कर्षता सुन ये युद्धकरनेमें प्रवृत्तहों नहीं तो पचकारनेकेसिवाय ऐसाकौन पण्डितहै जो अतिप्रभावयुक्त व राज्यपर टिकेहुये पुरुषको कठोर बचनकहे कोई भी नहींकहसक्ता ७ भला कमलहीन श्रीकेसमान सीताको बनसेलाय रामचन्द्रके भयसे अबहम कैसेदेदें ८ इनकिड़ोरों वानरोंसहित सुग्रीव व लक्ष्मणसमेत रामचन्द्रको कुछदिनोंमें हमारे मारेहुये देखोगे ९ भला जिसके द्वन्दयुद्धमें समरमें देवताभी नहीं खड़ेहोसके वही हम रावण बनेहैं तो किससे हमकोभयहोगी १० चाहे हमारे दोखण्ड होजावें परंतु हम किसीसे झुककर न चलें यहदोष हमारे जन्मके साथ उत्पन्न हुआहै वह अब छोड़े नहींछूटता क्योंकि जिसका जोस्वभाव परजाता वहकभी नहींछूटता ११ जिसके देखनेसे तुमलोग डरगये वहसेतु जो रामचन्द्रही ने पहिले बाँधा तो कौन आश्चर्य्य हुआ हमको कहो हजारों ठिकाने समुद्रमें सेतुबँधादे १२ व बानरों की सेनासहित रामचन्द्र समुद्रको उतरआये तो क्याहुआ अबयहांसे जीतेहुये लौटजावेंगे तो उनको मर्द

जानेंगे १३ ऐसा कहतेहुये रावणको क्रुद्धजान माल्यवान् बहुत लज्जित हुआ इससे कुछजवाब न देसका १४ बरन आपकी जयहो ऐसा आशीर्व्वाद कह बढ़तीमनाय रावणकी आज्ञापाय अपनेघरको चलागया १५ व रावण अपने मन्त्रियोंसे सलाहले लंकाकीरक्षा सबओरसे करनेलगा १६ पूर्व्वकेफाटकपर तो रहनेकेलिये प्रहस्तनाम सेनापतिको आज्ञादी व दक्षिणके फाटकपर महापराक्रमी महापार्श्व व महोदरको रहनेको आज्ञादी १७ व पश्चिमवाले फाटकपर रहनेकेलिये बहुत राक्षसोंसहित अपने महापराक्रमी पुत्र मेघनादको आज्ञादी १८ व उत्तरके फाटकपर जिधर कि रामचन्द्रजीकी सबसेना घेरे पड़ीहुईथी शुक व सारणनाम मन्त्रियोंको आज्ञादी व उनसेकहा कि इसीओर हमभी आवेंगे १९ व महावीर्य्य पराक्रमी विरुपाक्षनाम राक्षसको बहुत राक्षसों सहित बीच लंकामें जहां सबसेना रहतीथी स्थापितकिया २० इसतरह लंकाकी रक्षा सबओरसे कर रावणने अपनाको कृतार्त्थमाना कि बस अबकोई कुछ नहीं करसक्ता ऐसा समझनेका हेतु उसकाकालके वशीभूत होनाथा २१ इसकेपीछे रावणने सबमन्त्रियोंको विदाकिया व सबसे पुरकीरक्षा का बड़ाभारी विधान बतादिया व मंत्रियोंने जयमनाय आशीर्व्वाद दिया तबवह अपनेसकल सम्पत्तियुक्त बड़ेभारी जनानेमन्दिरकोगया २२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेषट्त्रिंशस्सर्गः ॥ ३६ ॥

नरोंके महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी व वानरोंके राजा सुग्रीवजी व वायुकेपुत्र हनुमान्जी व ऋक्षोंके राजा जाम्बवान् व राक्षसोंकेराजा विभीषणजी १ व बालिकेपुत्र अंगदजी व लक्ष्मणजी व शरभनाम वानर व अपने परिवारसहित सुषेणवमैन्द व द्विविद २ गज गवाक्ष कुमुद नल पनस ये सब शत्रुकेदेशमें पहुंच एकत्रहो सलाह करनेलगे ३ कि रावणकी पालित लंकापुरी यहीहै जिसे देवता दैत्य नाग गन्धर्व्वादि सब लोग बड़े भी दुःखसे नहीं जीतसक्ते ४ व राक्षसोंका अधिप रावण यहांबड़ी सावधानीसे नित्यहीरहताहै इससे कार्य्यसिद्धि आगेकर सब लोग सम्मतकरो ५ श्रीरामचन्द्रादि इसतरह कहतेहीथे कि रावणके छोटेभाई विभीषणजी बहुत अर्त्थयुक्त व व्याकरणकी रीतिसे शुद्धवचन

बोले ६ कि अनल पनस सम्पाति व प्रभति ये चारो हमारे मन्त्री इस समय लंकामेंहोकर फिर यहांआयेहैं ७ ये यहांसे पक्षियोंकारूप धारण कर शत्रुकीसेना में गयेथे व रावणने युद्धकेलिये जो विधान बनायाहै सबदेख फिरयहां आयेहैं ८ रावण दुष्टात्माका कियाहुआ विधान जिस तरह इनलोगोंने हमसे आय बतायाहै हम आपसे कहतेहैं सुनिये ६ बड़ीभारी सेनालिये पूर्व्वके फाटक के सामने प्रहस्तनाम सेनापति टिकाहै व दक्षिणके फाटकपर महावीर्य्यवाले महापार्श्व व महोदरनाम राक्षस टिकेहैं १० व बहुत राक्षसों को सङ्गलिये इंद्रजित् अर्थात् मेघनाद पश्चिमके फाटकपरहै इसके सङ्ग नानाप्रकार के शूलपट्टिश ढाल तलवार धनुष मुद्गर हाथोंमें लिये ११ नानाप्रकार के और भी शस्त्रास्त्र धारणकिये शूररावणके पुत्र सङ्गहैं व हज़ारों लाषों शस्त्रास्त्रधारी राक्षसोंको सङ्गलिये १२ बहुत उद्विग्नचित्त रावण आप उत्तरके फाटक पर मुस्तैदहैं १३ व शूल मुद्गरादि धारणकिये बड़ीभारी सेना लिये विरूपाक्ष बीचकी सब सेनाओंका मालिकहो तैयारखड़ाहै १४ इसतरह के विधान लंकापुरीमें देख हमारेमंत्री फिरयहां आयेहैं १५ व दशहज़ार हाथी व दशही हज़ार रथ व बीशहज़ार घोड़े व एक किड़ोर सवालाष राक्षस १६ जोकि बड़े बिक्रान्त व बलवान् व समरमें बड़ेही आततायी हैं इतने निशाचर रावणके सङ्ग नित्य बनेरहतेहैं १७ हे राजन् इन एक किड़ोर सवालाष राक्षसोंका परिवार युद्धकेसमय लाषों किड़ोरों राक्षसों का है वह इकट्ठा होजाताहै १८ यह खबर अपने मंत्रियोंसे सुन विभीषण जीने रामचन्द्रादिकोंसे बताया व अनलादि मंत्रियोंको रामचन्द्रजी से बतादिया कि इन्हीं लोगोंने वहांकी खबर कही है १९ लङ्कामें जो समाचारहैं वे सबदूतोंकी द्वारा जान आपसेबताया विभीषणजीने कमल-पत्राक्ष श्रीरामचन्द्रजीसे यह हालकहा २० ये सब समाचार विभीषण जीने रामचन्द्रजीकी प्रसन्नताके लिये अपनेआप मंगाकर कहे हे राम जब रावण कुवेरसे लड़ाथा २१ तब साठलाष राक्षस वहांसे इसदुष्टात्मा रावणकेसङ्ग आयेहैं ये सब पराक्रम वीर्य्य तेज व सत्वके गौरवसे २२ व अहङ्कार करनेमें रावणहीके तुल्यहैं कुछभी न्यून नहीं इसबातको सुन आप क्रोध न कीजियेगा क्योंकि न हम आपको संकुपित करातेहैं न डर-

चातेहैं क्योंकि आपतो अपने वीर्य्यसे देवताओंको भी दण्डदेनेमें समर्थ हैं २३ तिससे आप वानरोंकी चतुरङ्गिनी बड़ीभारी सेना सङ्गले व इस की क़िलाबन्दीकर रावणको अच्छीतरह मन्थन करेंगे २४ विभीषणजी ने जब ऐसाकहा तो रामचन्द्रजी शत्रुओंको मारनेकेलिये ऐसाबोले कि २५ बहुतसे वानर अपनेसङ्गले वानरश्रेष्ठ नल लङ्काके पूर्ब्बवाले फाटक पर जावें व वहां प्रहस्तसे युद्धकरें २६ व बालिकेपुत्र अङ्गद बड़ीभारी सेना सङ्गले दक्षिणवाले फाटकपर जावें व वहां महापार्श्व व महोदर का बिध्वंस करें २७ व पवनके कुमार अप्रमाण वीर्य्य बल पराक्रमी महात्मा हनुमान् पश्चिमके फाटकको दबाय वहां अच्छीतरह प्रवेशकरें व मेघनादसे युद्धकरें २८ व दैत्य दानवोंके समूहों व महात्माऋषियों का अपकार करनेवाला महानीच स्वभाव बरदानके मदसे मदान्ध २९ रावण जोकि सबलोकोंकी प्रजाओंको पीड़ित करताहै उस दुष्टकेसामने उसका बधकरनेकेलिये उत्तरके फाटकपर हमआपजावेंगे ३० व लक्ष्मण को भी संगलेजावेंगे उसीके सामने ठीक दबायेहुये चलेजावेंगे जहां सेना सहित रावण खड़ाहोगा ३१ व महाबलवान् वानरेन्द्र सुग्रीवजी व अति वीर्य्यवान् ऋक्षराज जाम्बवान्जी व राक्षसेन्द्रके छोटेभाई बिभीषणजी ये तीनों बड़ीभारी सेनालिये बीचके गुल्म अर्थात् सेना समूहकी रक्षाकरें ३२ व समरमें कभी कोई वानर मनुष्यका रूप न धारणकरे क्योंकि इसयुद्धमें मनुष्यका चिह्न हमीलोग धारण कियेरहेंगे ३३ हे वानरो तुमलोगोंका चिह्न वानरहीहै इससे यही रूप धारण किये रहना व हम सातजन मनुष्यका रूप धारणकिये शत्रुओंसे युद्ध करेंगे ३४ उनमें हम व हमारेभाई लक्ष्मण व हमारे सखा विभीषणजी अपने चारोंमंत्रियोंको सङ्गलिये बस ये सातजने मनुष्यरूप धारणकिये युद्ध करेंगे ३५ कृत्य सिद्ध होनेकेलिये रामचन्द्रजी विभीषणजीसे ऐसाकह सुवेलपर्व्वत परसे उतरनेका बिचार करनेलगे ३६ उतरनेके समय सुवेलका तट बहुत रमणीय उनको दिखाईदिया ३७ महात्मा रामचन्द्र जी बड़ीभारी सेनासे वहांकी सब पृथ्वीको मूंद व शत्रुओंको मारडालने का बिचारकर लङ्काको चले ३८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेसप्तत्रिंशस्सर्गः ॥ ३७ ॥

सुवेलपर्ब्बतके ऊपर चढ़नेका बिचारकर लक्ष्मणजीको पीछेकियेहुये रामचन्द्रजी सुग्रीवसे बोले १ व धर्म्मज्ञ अनुरक्तचित्त व मंत्र जाननेवाले व सब बिधान समझनेवाले विभीषणजीसे भी बोले २ कि नानाप्रकार के धातुओंसे मण्डित इस सुवेलनाम पर्ब्बतके ऊपर चढ़कर आवो आज रात्रिभर रहैं ३ व जिस दुष्टात्मा रावणने हमको मरजानेकेलिये हमारी भार्य्या हरलायाहै उसकास्थान भी इसपर चढ़कर देखेंगे ४ जिस रावण ने धर्म्म नहींजाना न कुछ आचार न कुल जाना केवल अपनी नीच राक्षसी बुद्धिसेही ऐसा निन्दितकर्म्म किया ५ इसतरह रावणके ऊपर क्रोधयुक्त श्रीरामचन्द्रजी सुवेलपर्व्वतपर चढ़ अति चित्र विचित्र एक उसकेशिखर पर जाचढ़े ६ व उनके पीछेपीछे एकाग्रचित्त धनुर्व्वाण हाथमेंलिये बड़े भारी बिक्रममें निरत लक्ष्मणजी भी चले ७ तिसकेपीछे अपने मंत्रियोंके साथ सुग्रीवजी चले व तिसके पीछे बिभीषणजी फिर हनुमान् अंगद नील मैन्द द्विविद ८ गज गवाक्ष गवय शरभ गन्धमादन पनस कुमुद हार रम्भ आदि यूथप ९ व जाम्बवान सुषेण शरभ महाकपि महातेजस्वी दुर्मुख व शतबलि नाम बानर १० इतने ये व और बहुत प्रसिद्ध प्रसिद्ध बानर जो बड़े शीघ्रगामीथे व वायुबेग जल्दचल पर्ब्बतके निवासी तो थेही ११ सुवेलपर्ब्बत पर जहां रामचन्द्रजी थे सबके सब चढ़गये चढ़नेमें कुछभी समय उनलोगोंको न लगा १२ जबबनाय ऊपर चढ़गये तो त्रिकूटपर्ब्बतके शिखरपर बसीहुई सुन्दर द्वारफाटक शहरपनाहादि युक्तमानों आकाशहीमें शोभित लंकापुरी सबोंने देखी १३ शहरपनाह व खावों पर चढ़हुये राक्षसोंसे घेरीहुई लंकापुरी सबबानरों ने दूर से देखी १४ वह राक्षसोंकी सेना मानों दूसरी शहरपनाहही के समान दिखाईदी व वहां सब राक्षसोंको बानरोंने युद्धकरनेकी इच्छा कियेहुये देखा १५ व रामचन्द्रजीके देखतेहीदेखते सूर्य्य अस्तहुये सन्ध्या होआई १६ व पूर्ण चन्द्रयुक्त रात्रिहोगई १७ वानरोंकी सेनाके पति श्री रामचन्द्रजी विभीषणजी सहित यूथपोंके यूथप लक्ष्मणजीके भी सङ्ग सुवेलनाम पर्ब्बतपर सुखसेनिवसे ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेअष्टत्रिंशस्सर्गः ॥ ३८ ॥

उसरात्रिमें वानरोंकेयूथप सुवेल पर्ब्बतपररहे व उसीपरसे लङ्का के वन उपवन उन्होंनेदेखे १ वहाँके सबबन उपबन बराबर सुखदायी व सबरम्य व सब बड़ेलम्बेचौड़े व सब देखनेमें सुहावने उन सबको देख वानर बड़ेबिस्मितहुये २ व चम्पा अशोक वकुल ताल तमाल कटहर व नागबेलियुक्त ३ व हिन्ताल अर्ज्जुन कदम्ब सप्तपर्णी तिलक कर्णिकार पाटल आदिपुष्पित वृक्षोंसेशोभित ४ व सबफूलेफले वृक्षोंसेयुक्त लङ्का-पुरी इन्द्रकी अमरावतीके समान शोभितहोतीथी ५ व विचित्र पुष्पयुक्त कोमलपल्लवोंसे बनी हरीघासों व चित्रविचित्र बनेकी पंक्तियों से ठीक ठीक इन्द्रपुरीहीके समान शोभित होतीथी ६ उसलङ्कामें सुगन्धित व रम्यपुष्प सबवृक्ष धारणकियेथे जैसे मनुष्यलोग भूषण धारणकरतेहैं ७ वह चैत्ररथ व नन्दन बनोंकेतुल्य मनोहर व सबऋतुओंमें सुखदायक लङ्काकाबन भ्रमर युक्तहोने से शोभित होताथा ८ व बनके झरनों के किनारे किनारे चकई चकवा जलकुक्कुट बगुला मयूर व कोकिल आदि पक्षियोंका शब्द सुनाईदेता ९ व नित्यहीमतवाले पक्षियोंसेयुक्त व भ्रमरों सेपूर्ण व कोकिलों से वृक्ष समूल सेवित व पक्षियोंके शब्द से शब्दाय-मान १० भ्रमरोंकी गुञ्जारसेभरे व क्रौञ्चोंकीबोलीसे सुहावने व जल-कुक्कुटोंके शब्दसेपूर्ण व सारसोंके शब्दसेशब्दित ११ बनों व उपबनोंमें हर्षित व आनन्दित यथेच्छरूपधारी वानरलोग पैठे व तिन महापरा-क्रमी वानरोंके पैठनेसे १२ पुष्पोंका संसर्ग होने से सुगन्धित पवन प्राण पवनके समान प्रिय बहनेलगा व और यूथपलोग वानरवीरोंके झुण्डोंसे निकल सुग्रीवजीकी आज्ञाले पताकायुक्त लंकाको गये १३ जानेके समय पक्षियोंको भयाकुल करते चलेजाते व मृग हाथियोंको डरवाते व लंकाकोकँपाते व नादकरते १४ व पृथ्वीको चरणोंसे पीड़ित करतेहुये जाते इससे जो धूलिउड़ी बड़ीदूरतक ऊपरको चलीगई १५ व वानरोंके उस बड़ेभारी शब्दसे डरकर यहांके रहनेवाले ऋक्ष सिंह भैंसा हाथी मृगगण व पक्षी दशोदिशाओं को भागगये १६ व बनाय निकटपहुंच बड़ाऊंचा सबओरसे पुष्पोंसे संयुक्त व चांदीके समान चम-कताहुआ त्रिकूटाचलका शिखरदेखा १७ वह सौयोजनके विस्तारमेंथा व ऐसाचिकना व ऊंचाथा कि उसके ऊपर पक्षीभी बड़ेदुःखसे जासक्ते

थे १८ व अन्य मनुष्यादिकोंकी तो वहांतक मनसेभी पहुंच न थी फिर करचरणादिकोंसे चलकर जाना तो असम्भवहीथा सो उसीशिखरपर रावण पालितलङ्का स्थितथी १६ वहपुरी चालिश कोशकी तो चौड़ी व अश्शीकोशकी लम्बीबसीथी व बाहरकी छहरदीवारी बड़ेऊँचे बादलोंके समान उजलीवऊँचीथी व सोनेचांदीके प्राकार से शोभितहोरहीथी २० व प्रासादों व बिमानोंसे लङ्का अतिभूषितथी जैसे ग्रीष्मऋतु बीतते बीतते बादरोंसे आकाश भूषितहोताहै २१ जिसलंकामें हज़ारों खम्भोंका राजमन्दिर कैलास पर्व्वतके समान ऊँचा व उजला व सबतरहसे भूषित शोभितहोताथा २२ एकस्थान तो रावण के पुरका भूषण रूपथा जिसकीरक्षा हज़ारों राक्षस नित्य किया करतेथे २३ इनसब मन्दिरादिकोंके होनेसे मनोहर सोनेसे बनीहुई पर्व्वतोंसे उपशोभित व नानाप्रकारके धातुओंसे चित्रबिचित्र व पुष्पबाढिकाओंसे शोभित २४ व नाना प्रकार के पक्षियों के शब्दसे शब्दित व नानाप्रकारके पक्षियों से सेवित व नानाप्रकारके पुष्पोंसे सम्पन्न व नानाप्रकारके राक्षसोंसेसेवित २५ सबतरहसे सबपदार्थोंसे सम्पन्न इससे स्वर्गके समान भरीपुरी लङ्का देख लक्ष्मीवान् श्रीरामचन्द्रजी बहुत बिस्मितहुये २६ ॥

कुण्डलिका ॥

मन्दिर गणसों रत्नसों बहुबिधान सों पूर्ण ।
महाकपाटनसों जटित प्रबिशतनहिं कोइ तूर्ण ॥
प्रबिशत नहिं कोइ तूर्णपूर्ण सारी शोभासों ।
देखतही सबकेर होतमन अति लोभासों ॥
महासैन्य युत रामलख्यो लङ्का सुखचन्दिर ।
नहिं बर्णनकेयोग्य जहांके सारे मन्दिर १ । २७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुद्धकाण्डेएकोनचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ३९ ॥

दोयोजनके मण्डलके सुबेल पर्व्वताग्रपर सुग्रीव अन्यबहुतसे वानरोंको सङ्गले श्रीरामचन्द्रजी चढ़े १ व उसी सुबेलाग्रपर मुहूर्त्तभरतक खड़ेहो दशोदिशाओं को देखतेहुये त्रिकूटपर्व्वत के शिखरपर विश्वकर्म्मा की बनाईहुई लङ्कापुरीदेखी २ लङ्का नानाप्रकारके बनोंसे रमणीयथी

तिसलङ्का के गोपुरके ऊपर खड़ेहुये अतिदुर्द्धर्ष रावण को ३ श्वेतचामर ढुरते व विजयछत्र शिरपर लगाये व रक्तचन्दन लगाये व रक्तहीसब आभरणधारणकिये ४ कालेबादरकेरङ्गका व सुवर्णजटित बस्त्रधारणकिये व छातीमें ऐरावतहाथीके दांतोंकेघावसेयुक्त ५ व खरगोशके रक्तकेसमान लालरङ्गका बस्त्रओढ़े सन्ध्याके घामसे ढकेहुये बादरकी राशिके समान आकाश में विराजमान ६ रामचन्द्रजीने देखा रामचन्द्रजीभी देखहीरहे थे व सबवानरभी रावणहीको देखरहेथे किइतनेमें सुग्रीवजी उठखड़ेहुये ७ व मारेक्रोध के बेगसेसंयुक्त अपने पराक्रम व बलसे भरे हुये उस पर्ब्बताग्रपरसेउठ उसी गोपुरके स्थानपरको कूदे जहांरावण खड़ाथा ८ व वहांपहुंच एकमुहूर्तभर इधरउधर खूबदेख रावणकोतृणवत् समुझ उससेकठोर बचनबोले ९ हेराक्षस चतुर्दश भुवनोंकेनाथ श्रीरामचन्द्र जीकेहमसखा व दासहैं अबइस समयउन्हीं महाराजाधिराज श्रीराम-चन्द्रजीके तेजसे हमारे मारे तुम जीतेहुये नहींबचसक्ते १० इतना कह बड़ी शीघ्रताकेसाथ रावणके ऊपर कूद उसके शिरपरसे मुकुट उतार भूमिमें फेंकदिया ११ सुग्रीवको ऐसाकर्म्मकरतेदेख रावणबोला हेसुग्रीव तुमहमारे परोक्षहीमें ग्रीवारहित होजावोगे १२ यहकह रावणने उठकर दोनोंहाथोंसेपकड़ अपनेऊपरसे सुग्रीवको भूमिमें पटकदिया परन्तु झटपट उठकर सुग्रीवजीने भी अपनेदोनों हाथोंसे रावणकोउठाय भूमिमें पटकडाला १३ व फिरदोनों उठकर लपटगये इससेपरस्पर दोनों के अङ्गोंसे पसीना बहनेलगा व परस्पर दोनोंके गात्ररुधिरसे लालहोगये व परस्पर दोनोंके कायव्यापार बन्दहोगये व परस्परदोनोंसे मर घ ढाकके वृक्षोंके समान टेढ़ेसे होगये १४ इसतरह राक्षसेन्द्र व बानरेन्द्रदोनों मुकालात जांघ चटकना आदिके प्रहारोंसे एकदूसरेको मारते हुये युद्धकरनेलगे १५ इसतरह बड़ीदेरतक लङ्काके फाटकके सामनेकी वेदीपर दोनोंजनोंसे कुस्ती होतीरही यहांतक कि अपनेपावोंसे उन्होंने उसको व उसने उनको ऐसा बझाया कि दोनों लपटेहुये उसी वेदी पर गिरपड़े १६ व फिर एक दूसरेको बड़ेज़ोरसे भूमिमें दबाय बताय एकमें छपट लपटगये व उसीतरह लपटेहुये लड़तेलड़ते दोनों बड़ेभारी गहिरे खावांमें गिरपड़े वहांसे फिर भूमि पकड़ उसीतरह फिर बाहर

आये व एक मुहूर्त भरतक दोनों ऊधीसांसें लेतेरहे १७ फिरदोनों झपटे व लपटगये व फिर युद्धकरनेलगे युद्धकरनेकी विद्या जो जिसको आती थीसब दावँपेंच दोनोंनेभरे व महायुद्धकरनेलगे १८ उससमय दोनोंबाल शार्दूल व सिंहके समान व गजेन्द्र के पानेके समानभिड़ेथे इसतरहदोनों नेपरस्पर मारा व दोनोंने सहा व साथही फिरदोनों पृथ्वीपरगिरे १९ व फिर झटपटउठे एक दूसरेको पचकारने व धिक्कारनेलगे व फिरदण्डकर अनेकप्रकारकीकुस्ती करनेलगे इसतरह बड़ीदेरतक लड़ेपर दोमेंसे कोई भीन थका २० व हाथियोंकी शूंड़के आकारचढ़ाउतार उत्तमबाहोंसे बचाते व एक दूसरेको झोकादेते मदान्ध गजराजोंके समान बहुत देरतक युद्ध करतेरहे फिर मण्डलखींच इसकेबाहर न जावेंगे यह प्रतिज्ञा कर युद्ध करनेलगे २१ इसतरह बारबार एक दूसरेको मारही डालनेके बिचार से उद्यत खानेकी वस्तुकेलिये लड़तेहुये बिलारोंके समान फिरफिर लपट झपट करते २२ फिर बिचित्र प्रकारके चारि करण खण्ड महाखण्डके नामसे प्रसिद्ध करनेलगे उनमें जिस मण्डलमें एक चरणके चलाने का काम लगता उसे चारि कहते व जिसमें दोनोंपाद चलायेजाते उसे करण मण्डल कहते व जहां बराबर कई करणमण्डलोंका एकही संग संयोग होता उसे खण्डमण्डल कहते व जहां तीन वा चार खण्डमण्डल होते उसे महामण्डल कहतेहैं व बिबिधप्रकारके वैष्णवादि पांच स्थान करने लगे व गोमूत्राकार टेढ़ेमेढ़े अनेक चित्र व गत प्रत्यागत २३ व तिरछा चलना व परस्पर प्रहार बचाय बचाय कुटिल चलना व घातको व प्रहार को युक्तिसे बचाना व यत्नसे मूका आदिसे बचना व मारनेपर आगेको कूदकर बचाना २४ व शीघ्रही सम्मुख दौड़ना व ऊपरको कूदजाना व बिग्रह दिखाय एक स्थानमें टिकरहना व प्रहार लगतेदेख युद्धकी चतुरता से पीछेमुख करलेना व पीछेको हटना झटपट कूदजाना व बगल हो पीछे होरहना व मारनेकेलिये पावँ उठाकर दौड़ना २५ व शत्रुसे बचानेकेलिये ऊँचे होरहना व शत्रुओंको पकड़नेकेलिये बाहु फैलाना इत्यादि अनेकयुद्धके कर्म्मयुद्धकरनेमें बड़ेचतुर दोनोंबराबर करतेरहेजब एक दूसरेसे जीतता न दिखाईदिया २६ तो रावण अपनी मायाका बल दिखानेपर उतारू हुआ उसेजान वानरराज सुग्रीव २७ रावणकोछोड़

वहांसे उचके व आकाशको चलेगये इसतरह सुग्रीवके धोखेमेंपर रावण वहीं खड़ारहा २८ व वानरराज संग्राम की कीर्त्ति पाय व रावण को समर में अच्छीतरह लड़ाय बड़ेभारी आकाशको नांघ वानरों की सेना के बीचमें खड़े हुये श्रीरामचन्द्रजीके निकट को चले २९ ऐसा कर्म्मकर सूर्य्यके पुत्र सुग्रीव पवनके समान बेग धारण कर रामचन्द्रजी को युद्ध का हर्ष बढ़ाते हुये वानरों से पूजित व हर्षित हो सेना के बीच में आगये ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४० ॥

तिस समय कारण देख श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीवजीको भलीभांतिभेंट बोले १ कि बिना हमारे साथ सलाह किये जो लङ्काको चलेगये यह बड़ा साहस तुमने किया इस तरह के अविचारकी बात राजालोगनहीं करते २ देखो हमको व इस सेनाको व विभीषण को इस शंसयमेंडाल कि इतने बड़े प्रबल शत्रुके निकट अकेलेही चलेगये देखैं कैसे लौटतेहैं आपने बड़ा कष्टकिया यह महा साहस हुआ हे साहस प्रियबीर ३ हे शत्रुओं के दमन करने वाले अब इसतरह का अविचार एका एकी कभी न करना क्योंकि जो तुम्हारा कुछ अपमानादि होगया तो हम सीताही को लेकर क्या करेंगे ४ व भरतही से क्याहोगा व छोटे भाई लक्ष्मणही को क्या करेंगे व शत्रुघ्नही को क्या करेंगे बरन अपना शरी-रही क्या करेंगे ५ यद्यपि हम इन्द्रवरुणके वीर्य्य के समान तुम्हारा वीर्य्य जानते भीथे परन्तु जब तुमनहीं आयेथे तिसके प्रथमहीं हमने अपने मनमें यह विचार किया था ६ कि समर में पुत्रबान्धव सेनास-हित रावण को मार व लङ्कामें विभीषण का राज तिलक कर ७ भरत को अयोध्या का राज्यदे हमभी तुम्हारे वियोगसे अपना शरीर छोड़देंगे ऐसा कहते हुये रामचन्द्रजी से सुग्रीवजी बोले ८ हे राघव आपकी भार्य्या हरने वाले रावण को देख व अपने बिक्रम को जान हम कैसे-सहसके क्याकरें हमसे न रहा गया इससे चलेगये कि दुष्टको मारही डालें परन्तु जब वह माया करने पर उद्यत हुआतो चलेआये ९ ऐसा कहते हुये सुग्रीव को बड़ाई कर शोभा युक्त लक्ष्मणजी से श्रीरामचन्द्र

जी बोले १० हे लक्ष्मण जहां शीतल जल व फरे बनहों वहां इससेना को टिकाना चाहिये ११ क्योंकि लोक नाशक अति भयङ्कर भय समीपही आई दिखाई देतीहै जिसमें ऋक्ष बानर व राक्षस सबबीरोंकानाश होगा १२ क्योंकि पवन अति प्रचंड बहताहै व पृथ्वी कांपतीहै व पर्ब्बतोंके शिखर थरथरा रहे हैं इससे पहाड़ शब्द करतेहैं १३ व बादर ब्याग्घ्र सिंहादि मांस भक्षी जीवोंके समान कठोर शब्द करते व रुधिर युक्त जल बरसते हैं १४ व सन्ध्या समय बादरलाल चन्दन के समान लाल होजाते हैं यहभी बड़ा अनर्त्थ है व सूर्य्य के मण्डल से बलतीहुई ज्वाला निकलती है १५ व अशुभ मृग व पक्षी लोग सूर्य्य की ओर मुख उठाय उठाय रोतेहैं व अति दुःखित शब्द करते हैं येबड़ीभय उत्पन्न कराते हैं १६ रात्रिको चन्द्रमा से अंधेरा नहीं जाता व गर्मी लगती है व उसके किनारे कृष्ण व लालहोगये हैं जैसेकि प्रलय के समय हो जातेहैं १७ व हे लक्ष्मण सूर्य्यके मण्डल के गिर्द छोटारूखा व अशुभ लाल मण्डल पर जाताहै व मण्डलके बीचमें काले दाग दिखाई देतेहैं १८ व जिसतरह के नक्षत्रसदा दिखाई देतेथे वैसे अबनहीं दिखाईदेते इन कारणों से विदित होताहै जानों युगान्त का समय आगया है १६ व काक बाज गृध्र अपनी झोझोंसे नीचे गिरगिर पड़तेहैं व शृगालियां बार बार फ्यकरा करती हैं २० इनसब अशुभोंसे यही बात ठीकजान पड़तीहै कि वानर व राक्षसोंके छोड़ेहुये वृक्षशूल व खड्गादिकों से मारे हुये लोगोंके मांस व रुधिर से यहां की धरती भर उठेगी २१ इससे शीघ्रही रावण पालित लंका पुरीको वानरों की सेना ले चारों ओरसे घेरे व चढ़ाई करें २२ इसतरह लक्ष्मण बीर से कहते हुये श्रीरामचन्द्र जी तिस पर्ब्बत परसे नीचे उतरे २३ धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी तिसपर्ब्बत परसे उतर शत्रुओंसे बड़े दुःखसे भयभीत होनेवाली अपनीसेना को देखा २४ सुग्रीव सहित श्रीरामचन्द्रजी ने कवच बखतरादि युद्ध सामग्री धारण कर युद्ध करने केलिये वानरों को आज्ञादी २५ जब सुन्दर बिजय मुहूर्त्त आयातो धनुर्व्वाण धारण कर श्रीरामचन्द्रजी बड़ी सेना संग्राम ले लंकाकी ओर मुखकर आगे आगे चले २६ व विभीषण सुग्रीव हनुमान् जाम्बवान् नल नील व लक्ष्मण ये सब उनके पीछेपीछे

चले २७ व फिर तिन सब जनोंके पीछे पीछे वानरों व ऋक्षों की बड़ी भारी सेना बड़ी दूरकी भूमिको ढांकेहुई चली २८ व गजाकार वानर ऋक्षसैकरों पर्ब्बतों के शिखर व बड़े बड़े वृक्ष हाथोंमें लेलंका की ओर चले २६ ऐसी शीघ्रता के साथ सेनाचली कि राम लक्ष्मण दोनोंभाई बहुतही शीघ्र रावण की लंकापुरी के बनाय किनारे पहुंच गये ३० वह लंका पताकाओं के मारे शोभित होरही थी व रम्य फुलवाड़ियोंसे शोभित होरही थी शहर पनाह उसकी बड़ी चित्र बिमित्रथी व खांवां फाटक परके मकान बड़े बड़े बनेथे इससे बड़े दुःखसे भी किसीके जाने के योग्य न थी ३१ देवताओं के भी बड़े दुःख से प्रवेश करने के योग्य लंकामें रामचन्द्रजीके बचनोंसे प्रेरित वानर लोग यथा योग्य स्थान में दबाय दबाय जा बैठे ३२ इस तरह पर्ब्बतके शिखर से भी ऊंचेभार के फाटक पर धनुर्व्वाण धारण किये श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजी को संग लिये तिसद्वार की रक्षाभी करने लगे व सब तरहसे उसे रूंधभीलिया ३३ महाराजाधिराज चक्रवर्त्ती शिरोमणि दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण अपने भाईको संगलिये रावण पालित लंकापुरीमें जाय पैठे ३४ जिस उत्तर वाले फाटक पर रावण था उसपर रामचन्द्र जी आपगये क्योंकि रामचन्द्रजीके सिवाय कोई भी उसकी रक्षा करने को सामर्थ नहीं था ३५ वह फाटक रावण से रक्षित होनेके कारण ऐसा भयंकर था जैसे वरुणजी की रक्षा से समुद्र भयंकर है अस्त्रशस्त्र धारण किये भयंकर राक्षस सब ओर से उसकी रक्षाकर इससे जो थोड़ीशक्ति के जन्तुथे उनको भयकरने वाला था जैसे दानवों की रक्षासे पाताल सब को भय करता है व इसके ऊपर योधों के विविध प्रकार के व बहुत ३६-३७ अस्त्रसमूह व कबचदेखे व नीलनामसेनापति पूर्ब्बकेद्वार पर ३८ वीर्य्यवान् मैन्द व द्विबिद को संगले व बड़ी सेना साथलिये जापहुँचा व दक्षिणके फाटकपर अङ्गदजी ३६ ऋषभ गवाक्ष गज व गवयनामवानरोंको लेकरगये व महाबलवान् वानर हनुमानूजी पश्चिम के फाटकपर ४० प्रजङ्घ व तरसनाम सेनापतियोंको व और भी बहुत बीर वानरोंको सङ्गले जाजुटे व उस फाटककी रक्षाकरनेलगे व मध्यके गुल्मपर सुग्रीवजी ४१ गरुड़ व पवनके बेगवाले वानरोंको सङ्गले टिके

इस सेना में छत्तीशकिड़ोर बड़ेप्रसिद्ध यूथपथे जहां कि सुग्रीवजी बड़ी सावधानीसे टिकेथे ४२ व रामचन्द्रजीकी आज्ञासे लक्ष्मणजी व विभीषणजी जहां जैसी आवश्यकता थी द्वार द्वारपर किड़ोरों वानर जाय आयपहुंचातेथे ४३ व सुषेण जाम्बवान् बहुतसी सेनालिये रामचन्द्रजीके पीछे बहुतही निकट मध्यवाली सेनाके स्थानपर टिके ४४ ये सब वानर लोग सिंहहीके समान बड़ेबड़े दांतनिकाले पर्व्वतोंकी शिला व वृक्षहाथोंमें लिये बड़ेहर्षितहो युद्धकरनेकेलिये जायटिके ४५ सब वानर मारे क्रोधके अपनी अपनी पूंछ नचाते व पटकते व सब दांत नख आयुधवाले थे व सबके अङ्ग नानाप्रकारके थे व सबकेसब दांत पीसतेथे इससे सबोंके मुखमें कुछ टेढ़ाई आदि विकार पायाजाताथा ४६ किसी किसी वानरके तो दश हाथियोंका बलथा व किसीकिसीके सौहाथियोंका बल व किसी किसीके हज़ार हाथियोंका बल ४७ कोई कोई वानर असंख्य हाथियों का बल रखतेथे कोई इस संख्यासेभी दशगुण अधिकबल रखतेथे बहुतों का बल किसीके प्रमाणही करनेके नामका न था ऐसाबल सब यूथपोंका था ४८ तिनवानरोंकी सेनाका आगमन ऐसा अद्भुत व बिचित्रहुआ जैसा टीड़ियोंका झुण्ड निकलता उसकी कोई गिनती नहींकरसक्ता ४९ लङ्का के समीप पहुंचेहुये व कूदते फांदतेहुये वानरोंसे आकाश व पृथ्वी जानों दोनों सम्पूर्ण बिदित होतेथे ५० लाखलाख वानरोंकी सौ सेनातो लङ्का के चारोंफाटकोंपर युद्धकरनेकेलिये जुटीथी व और बहुतसी सेनायें लङ्का के चारोंओर दूरदूर घूमतीथीं जिसमें बाहरसे कुछ कुमक न आनेपावे व न भीतरसे कोई भागजानेपावे ५१ तिन महाबलवान् वानरोंसे सुवेल पर्व्वत घिरगया व किड़ोर वानर पुरीकी चारोंओर और घूमनेलगे ५२ बड़ेबड़े बली वानर वृक्ष हाथोंमेंले लङ्काके चारोंओर ऐसी चौकसीकेसाथ घूमनेलगे कि उससमय लङ्कामें और जन्तुको कौन कहै पवन भी नहीं जासक्ताथा ५३ इसतरह इन्द्रतुल्य पराक्रमी व मेघाकार वानरोंसे एकाएकी पीड़ितहो राक्षसलोग बहुत बिस्मित हुये ५४ व सबओर घूमती हुई सेनाके समूहका बड़ाभारी शब्दहुआ जैसे समुद्रमें जलका शब्द होताहै ५५ तिस बड़ेभारी शब्दसे खावाँ फाटक पर्व्वत वनसहित लङ्का चलउठी ५६ रामचन्द्र लक्ष्मण व सुग्रीवजीसे रक्षित वह सेना देवता

दैत्योंसेभी तिरस्कार पानेकेयोग्य न रही ५७ इसतरह श्रीरामचन्द्रजी राक्षसोंके बधकेलिये अपनी सेना नियतकर व मंत्रियोंकेसाथ सम्मतकर व अच्छीतरह कर्त्तव्याकर्त्तव्यके विषयमें निश्चयकर ५८ इसके पीछे विभीषणकी सलाहले व राजनीतिका स्मरणकर सब विषयोंका अच्छे विचारकर ५९ बालिके पुत्र अङ्गद को बुलाय बोले हे सौम्य रावणके निकटजाय हमारी ज़बानी कहना ६० सब लङ्कापुरी नाँघते चलेजाना व राक्षसादिकोंका भयछोड़ बनाय निर्भयहो उससेकहना कि हे लक्ष्मी रहित ऐश्वर्य्यहीन मरनेकी इच्छा कियेहुये व अज्ञानी राक्षस ६१ ऋषि देवता गन्धर्व्व अप्सरा सर्प्प यक्ष व राजाओंका भी ६२ जो पाप अविवेक व घमण्डसे तुमने किया उस पापके फल भोगनेका समय आगया इससे ब्रह्माके बरदानसे उत्पन्न जो तुमको घमण्डथा वह अब विध्वस्त हुआ ६३ क्योंकि अपराधकारियोंको दण्डदेनेवाले स्त्री हरजानेके हेतु अति दुर्ब्बल हमअपराध करनेवाले तुम्हारे लिये दण्डधारणकिये लङ्का के फाटकपर खड़ेहैं ६४ जो तुम संग्राममें हमारे सामने खड़ेहोगे तो देवता महर्षि राजर्षि व मनुष्यादिकों को मार जिस पदवी को तुमने पहुँचायाहै उस पदवीको तुमभी प्राप्तहोगे ६५ हे राक्षसाधम जिसबल से हमारा अनादरकर सीताको चोरीसे हरलायाहै अब वहबल हमको दिखाव ६६ यदि तुम सीताको सङ्गले हमारीशरणमें नहीं हाज़िरहोते तो पैनेबाणोंसे सबलोक राक्षसहीन करदेंगे ६७ व धर्म्मात्मा राक्षसों में श्रेष्ठ विभीषणजी जोकि यहां प्राप्तहुयेहैं लङ्काका अकण्टकराज्यपावेंगे ६८ व मूर्खोंकी सहाय से पापी व अविचारी तुम अधर्म्म से क्षणभरभी अब राज्य न भोग करनेपावोगे ६९ हे राक्षस नहींतो तुम सीताकाहेको दोगे अब चित्त मज़बूतकर युद्धकरो व अपनी शूरता दिखावो जिससे हमारे बाणोंसे समरमें शान्तहो यमपुरको जाओ ७० हे निशाचर जो पक्षी भी होकर तीनोंलोकोंमें कहींभी जाकर लुकोगे पर जैसेही हमारी दृष्टिके सामने पड़ोगे जीतेहुये न जानेपाओगे ७१ तुम्हारे प्राण अब हमारेही अधीनहैं इससे परलोकके निमित्त जो कुछ दान पुण्य करनाहो करलो व लङ्का अच्छीतरह देखलो फिर न देखनेको मिलेगी यह बात हम तुम्हारे हितकी कहतेहैं ७२ रामचन्द्रजीका यह सन्देशले अङ्गदजी

आकाशमार्ग्ग होकर मूर्त्तिधारणकिये अग्निके समान चले ७३ व एक मुहूर्त्तभरमें रावणके मन्दिरमें पहुँचे व देखा तो मंत्रियों सहित रावण बैठाथा ७४ व आकाशसे उतर रावणके समीपजाय अग्निसमान प्रकाशित अङ्गद सुवर्णका बहूँटा बांधे जाय बैठगये ७५ व रामचन्द्रजीका वचन ज्योंकात्यों न न्यून न अधिक सब मंत्रियों सहित रावणको सुनाय प्रथम अपना नाम ग्रामादि बताया ७६ कि हम कोशलेन्द्र श्रीरामचन्द्र जीके दूतहैं व बालिकेपुत्र अङ्गद हमारा नाम जो कभी तुमने सुनाहो तो जानतेही होगे नहींतो अबजानो ७७ कौशल्याजीके आनन्द बढ़ाने वाले श्रीरामचन्द्रजीने तुमसे कहाहै कि अपनी पुरीसे निकल युद्धकरो हे निर्लज्ज अब पुरुषहोओ ७८ हम तुमको मंत्री पुत्र जाति भाई व बंधु सहित मारडालेंगे क्योंकि जब तुम मारडालेजाओगे तभी तीनों लोक निर्भयहोंगे ७९ आज देवता दानव यक्ष गंधर्व नाग राक्षस व ऋषियों के शत्रु तुमको हम ज़रूर मारडालेंगे ८० व तुम्हारे मारजानेपर यहसब लङ्का ऐश्वर्य्य विभीषणको मिलेगा ये सब बातें तबहोंगी जो सत्कार पूर्व्वक सीताको हमें न दोगे ८१ जब इसतरह कठोरवचन अङ्गदनेकहा तो निशाचरराज सुनतेही जरबर गया ८२ व मन्त्रियों से बार बार कहने लगा कि इस दुष्टको पकड़ो बाँधो जाने न पावे ८३ तेजके मारे अग्नि सम प्रज्वलित रावणके वचन सुन चार महाघोर राक्षस उठे व अंगदजी को पकड़लिया ८४ पकड़ क्यालिया राक्षसोंके बीचमें अपना बलदिखाने के लिये अंगदजीने अपने आप अपनाको पकड़ालिया ८५ उनमें दोरावण के मंत्री अंगद के एक बाहुमें लपट गये थे व दो एकमें उनचारों सहित अंगदजी उछले व एक बड़े भारी पर्वताकार राज मन्दिरके ऊपर चढ़गये ८६ ऐसे वेगसे उछले कि वे चारों राक्षस कुछ कुछ ऊपरजाय एकही झटके में रावणके आगे आयगिरे व कुछ अंग भंग होगये ८७ तब पर्वत के शिखर के समान ऊँचे उस रावण के राजमन्दिर पर महाप्रतापी अंगदजीने जोरसे एक लातमारी ८८ कि रावणके देखतेही देखते वह राजमन्दिर फटकर भहरापड़ा जैसे आगे वज्रलगने से हिमवान् पर्वतका एक शृङ्ग गिरपड़ा था ८९ उस राजमन्दिर को गिराय व अपना नाम बड़े जोरसे सबको सुनाय व बड़े जोरसे शब्दकर

अंगद आकाश को उछल गये ६० राक्षसों को व्यथित करतेहुये व वानरों को हर्षित करातेहुये आय झटपट श्रीरामचन्द्रजीके निकट खड़े हुये ६१ वहां राजमन्दिर के गिरनेसे रावणने बड़ाही क्रोधकिया फिर अपना बिनाश देखता हुआ बड़ीऊंधी सांसें लेनेलगा ६२ व रामचन्द्रजी हर्षित व किलकारी मारतेहुये बहुत वानरोंके साथ शत्रुके मारनेकी इच्छा किये युद्धकरने के निमित्त खड़े रहे ६३ व महावीर्य्य व पर्ब्बताकार सुषेण नाम वानर कामरूपी बहुत वानरोंके संग शोभित हुआ ६४ वह परम दुर्द्धर्ष वानर सुग्रीवजी के बचनसे लंकाके चारों फाटकों पर अपनी सेना लिये घूमनेलगा जैसे नक्षत्रों के संग चन्द्रमा घूमताहै ६५ समुद्र उतर लंकाके समीप टिके व चारों ओरसे घेरेहुये वानरोंकी सैकरों सेना देख ६६ कोई कोई राक्षस तो बहुत बिस्मित हुये व कोई कोई बड़े भय-भीतहुये व बहुतसे समरमें वानरों को हर्षित देख आपभी हर्षित हुये ६७ शहर पनाह व खावांके बीचमें व समुद्र पर्य्यन्त सब वानरही वानर राक्षसों को दिखाई देनेलगे व सब ओरसे शहरपनाह के ऊपर चढ़आये ६८ ऐसी धूमधामी सेनादेख सबराक्षस हाहाकार कर पुकारनेलगे ६९॥

कुण्डलिका ॥

लंका में भीषण महा कोलाहल त्यहि काल ।
भयहु सकल ब्याकुल भये रोवत बहुत बिहाल ॥
रोवत बहुत बिहाल हाल लषि कपिदल केरी ।
महा अखलै सकल निशाचर गणकी ढेरी ॥
घूमत इत उत समर योग्य बाजत बहुडंका ।
मनहु युगान्तक वायु चल्यहु त्यहि अवसर लंका॥१।१००॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेएकचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४१ ॥

तिसके पीछे पुरीरक्षक राक्षसोंने रावणसे जाय जनाया कि बानरों को संगलिये रामचन्द्रजीने लंकापुरी घेरीहै १ रावण ने लंकापुरी घेरी सुन बड़ा क्रोधकर पुरकी रक्षाके लिये दूनी सेना को आज्ञादी व आप बड़े ऊंचे धवरहर पर चढ़ा २ देखा तो बन उपबन व पर्ब्बत सहितलंका

असंख्य वानरों से घेरीहुई थी ३ सब वानरोंसे आच्छादित लंका के गिर्दकी भूमिदेख रावण चिन्ता करनेलगा कि इतनी बड़ीभारी सेना कैसे नाश की जाय ४ इसतरह बड़ी देर तक चिन्तनाकर फिर धैर्य्य धारणकर रावणने श्रीरामचन्द्रजी व सब वानर यूथपों को अच्छी तरह नेत्र फैलाय देखा ५ व यहां रामचन्द्रजीने भी जिन वानरोंके ऊपर सवार थे उनको ऊपर को उछलाय राक्षस युक्त लंकापुरी अच्छी तरह देखी६ व चित्र विचित्र ध्वजा पताका युक्त लंकापुरी देख श्रीरामचन्द्रजी कांपते हुये मनसे सीताजी के पास पहुंच ७ व विचारने लगे कि इसी लंका में हमारे निमित्त मृग शावक नयनी सीता शोकके मारे सन्तप्त हो बिना बिछी भूमिपर बैठी पीड़ित होतीहैं ८ इस तरह परम पीड़ित बैदेहीजी का स्मरण करते हुये श्रीराघवजीने शत्रुओं को मारने के लिये वानरों को आज्ञादी ६ बड़े सरल कर्म्म करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीके वचनसुन सब वानरों ने क्रोधकर बड़ाभारी शब्दकिया जिससे लंकापूर्ण होगई १० व सब वानरों के यूथपोंने अपने मनमें यहीबात ठानली कितो इस लंकाको पर्ब्बतोंसे चूर्ण करदें अथवा मूकोंसे मार टुकड़े टुकड़े उड़ादें ११ इसलिये सब वानर यूथप पर्ब्बतोंके बड़बड़े शिखर व शृंग व वृक्षउखाड़ हाथोंमें ले लड़ने को तैयार हो खड़ेहुये १२ व रावण के देखतेही देखते वानरों की सेना रामचन्द्रजीका प्रियकरने के लिये लंकाके प्राकार पर चढ़ीं १३ व वेताम्रसम अरुण मुखवाले व सुवर्ण समपीले व रामचन्द्र जीकेलिये प्राणछोड़ने पर तैयार साखू व पर्ब्बतोंसे युद्धकरने में निपुण वानर लोग लंकाकी शहरपनाह पर सब ओरसे चढ़े १४ वे वानर वृक्षों पर्ब्बतों के टुकड़ों व मुकाओंसे लंकाकी शहरपनाह तोड़ने फोड़ने लगे १५ व पर्ब्बतके खण्डों धूलियों तृणों व काष्ठोंसे वानरलोग निर्म्मल जलसे पूर्ण खावां पाटने लगे १६ व हजार यूथ किड़ोर यूथ व अर्ब्ब यूथ वानर लंकाके प्राकार पर चढ़े १७ कैलास पर्ब्बतके शृंगके समान ऊंचे फाटकों के ऊपरके मकान तोड़ फोड़ सब वानर सुबर्ण के और मन्दिर फोड़नेलगे १८ व महा गजेन्द्र समान वानर बड़ी दूर ऊंचे तक कूदते हुये व थोड़ी दूर ऊंचेतक भी तड़कते वानर लंकाकी चारों ओर दौड़ने लगे १६ व यह कह कह कर पुकारने कि ॥

दोहा ॥

जय उरुबल राघव महा बली लषन रणधीर ।

राघव पालित सुगलजय सकल कपिन के हीर ॥ १ । २० ॥

इसतरह पुकारते व गर्ज्जते हुये बानर लंका के प्राकार पर दौड़ने लगे २१ उनमें बीरबाहु सुबाहु नल व पनसनाम यूथप लंकाके प्राकार को खूब दबाय खड़ेहुये २२ इसी अवसर में इनबीर वानरोंने रावणके सेनाके पड़ाव को पीड़ित किया व पूर्ब्ब दक्षिणके कोने पर कुमुद नाम बानर दशकिड़ोर वानर संगलेकर टिक जो वानर जीत होनेके कारण प्रकाशित थे २३ व उसीके सहायके अर्थ प्रसभ नाम वानर खड़ाहुआ व महा बाहु पनस नाम यूथप भी २४ व दक्षिण पश्चिम के कोणपर शतबलि नाम वानरों का यूथप बीश किड़ोर वानर संगले युद्धकरनेको उपस्थित हुआ २५ व पश्चिम उत्तरके कोणपर ताराका पिता शतबलि नाम सेनापति किड़ोर वानर संगले युद्ध करने को उपस्थित हुआ २६ व उत्तर पूर्ब्बके फाटक पर भी रामचन्द्र व बलवान् लक्ष्मणजी सुग्रीव सहित युद्ध करने के लिये उपस्थित हुये २७ व महा काय भयंकररूप धारी गोपुच्छ गवाक्षनाम सेनापति किड़ोर वानर संगलिये श्रीरामचन्द्र जीकी बगल में खड़ाहुआ २८ व भयंकर को पकरनेवाले ऋक्षों का स्वामी शत्रुओं के नाशनेवाला धूम्र किड़ोर ऋक्ष अपने संगले श्रीराघव की दूसरी ओर खड़ा हुआ २९ व श्रीरामचन्द्रजीही के सन्निकट सब तरह युद्ध करने को तैयार महा पराक्रमी बिभीषणजी सब आयुधलिये अपने चार मन्त्रियों को संगलिये खड़े हुये ३० व गज गवाक्ष गवय शरभ गन्धमादन ये सब वानर बीर सब ओर दौड़ दौड़ वानरी सेना की रक्षा करते थे ३१ तिसके पीछे बड़ाकोपकर राक्षसों के राजारावण ने अपनी सब सेना को आज्ञादी कि जल्द युद्ध करने को जाओ ३२ रावण के मुखसे इतनी बात सुनतेही सब राक्षसों ने बड़ा घोर शब्द किया ३३ व तैयारीके लिये बड़े बड़े नगारे तुरुही आदि बाजे बाजे ३४ व सैकरों हजारों शंख भी राक्षसों ने बजाये ३५ शंख मुखोंमें लगाये श्वेतनील अंग होजाने के कारण राक्षस लोग बगुलों की पंक्ति युक्त बिजुली सहित बादरों के समान शोभित हुये ३६ रावणकी आज्ञापाय

राक्षस लोग बड़ा शब्द करते कराते समुद्रके वेग के समान हर्षित हो चले ३७ व तिसके पीछे चारों ओर से वानरों की सेना ने बड़ा भारी किलकिला शब्द किया जिससे मलय नाम पर्ब्बत कन्दरा शिखर सहित पूर्ण होगया ३८ व शंख नगारादिकों का भी बड़ाभारी शब्दहुआ व वानरों का भी बड़ा किलकिला सिंहवत् नाद हुआ जिससे पृथिवी आकाश व समुद्र पूर्ण होगया ३९ व इन शब्दों के सिवाय हाथियों के चिघड़ने व घोड़ों के हिनहिनाने व रथों के खनखनाने व राक्षसों के पैर चलाने का भी शब्द हुआ उससे भी पृथिव्यादि पूर्ण होगये ४० व आय वानरों व राक्षसों का ऐसा बड़ाभारी युद्धहुआ जैसा कि पूर्ब्ब-काल में देवासुर नाम संग्राम हुआ था ४१ प्रथम राक्षसों ने गदा शक्ति शूल फरसा आदि आयुधों से अपना अपना विक्रम कह कह बानरों के ऊपर चलाया ४२ व तिसी तरह महाबली पर्ब्बताकार वानरों ने भी वृक्ष व पर्ब्बतों के टुकड़ों की वृष्टि राक्षसों के ऊपर की व नखों दांतोंसे दौड़ दौड़ राक्षसों को काटा ४३ सुग्रीव राजाकी जयहो यह बड़ाभारी शब्द हुआ हेराजन् सुग्रीव जीतो यह कह कह अपना अपना नाम भी कहने लगे ४४ व और बड़भारी भयकारी राक्षसलोग लंकाकी शहर-पनाह पर खड़ेभूमि में खड़े हुये वानरों का धनवासी शूलादि अस्त्रों से मारने लगे ४५ व पृथ्वी में टिकेहुये वानरलोगभी शहरपनाहपर चढ़ मारतेहुये राक्षसोंको कूद पकड़ पृथ्वीमें गिराने व लातों मूकोंसे मारने लगे ४६ इसतरह मांस व रुधिर का कीचड़ होगया राक्षसों व वानरों का बड़ाभारी समर होगया ४७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकियेलङ्काकाण्डेद्विचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४२ ॥

उस समय युद्ध करतेहुये महात्मा वानरों व राक्षसोंका अति दारुण क्रोध हुआ १ व सबके सब राक्षस वीर सुवर्णके भूषण पहिने घोड़ों व अग्निकी शिखाके आकार चमकते हुये हाथियों पर व सूर्य्यसम प्रका-शित रथोंपर चढ़ चढ़ मनोहर कवच धारणकर २ दशो दिशा देखते हुये भयंकर कर्म्मकारी राक्षसलोग रावण के जयकी इच्छा किये हुये समर करने को आये ३ व इधर से वानरोंकीभी बड़ीभारी सेना राम-

चन्द्रजीकी बिजय चाहती हुई भयंकर कर्म्मकारी राक्षसों की सेना के सामने दौड़ी ४ उस समय इधर से दौड़ते हुये वानरों व उधरसे इधर को दौड़ते हुये राक्षसों का द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा ५ उसमें रावणका पुत्र मेघनाद वालिके पुत्र अंगद के संग युद्ध करनेलगा जैसे अन्धकासुर महादेव जी से लड़ा था ६ व समर में अति दुर्द्धर्ष सम्पाति नाम सेनापति प्रजंघ नाम राक्षस से लड़नेलगा व हनुमान्जी जम्बुमाली नाम राक्षस से लड़नेलगे ७ व महा क्रोधयुक्त रावण के छोटे भाई बिभीषणजी अति तीक्ष्ण वेगवाले शत्रुघ्न नाम राक्षस से लड़नेलगे ८ व महाबली गजनाम वानर तपन नाम राक्षस के संग बड़े पराक्रम के साथ युद्ध करनेलगा व निकुम्भ नाम राक्षस से महा तेजस्वी नील नाम सेनापति युद्ध करनेलगा ६ व वानरों के राजा सुग्रीवजी प्रघस नाम राक्षस के संग भिरे व श्रीमान् लक्ष्मणजी विरूपाक्ष नाम राक्षस से लड़नेलगे १० अग्निकेतु व अति दुर्द्धर्ष रश्मिकेतु मित्रघ्न व यज्ञकोप नाम राक्षस ये चारों श्रीरामचन्द्रजीसे लड़ने लगे ११ व बज्रमुष्टिनाम राक्षस मैन्द नाम वानरसे व अशनिप्रभ राक्षस द्विविद से ये दोनों राक्षस इनदोनों महाबली वानरों से लड़ने लगे १२ व अतिघोर प्रतपन नाम घोर राक्षस अतिवेग नलनाम वानरसे युद्ध करनेलगा १३ व धर्म्म का पुत्र महा बलवान् सुषेणनाम वानर बिद्युन्मालीनाम राक्षससे लड़ने लगा १४ व घोरराक्षस अन्यअन्य वानरों से जुटे इससे बड़ाभारी द्वन्द्व युद्ध हुआ १५ वह वानरों व राक्षसों का ऐसा रणहुआ जिसे देखलोगों के रोम खड़े होते थे व सब वानर राक्षस जयकी इच्छा करते थे १६ वानरों व राक्षसों के देहों से हजारों रक्तकी नदियां बहचलीं जिनमें वीरोंके बाल घास के समान दिखाई देते व उनके देह घाट व करारों के समान थे १७ मेघनाद ने बड़ा क्रोधकर अंगद बीरको गदासे मारा जैसे इन्द्र दैत्यों को बज्रसे मारते हैं १८ फिर महा वेगवान् वानरश्रेष्ठ अंगदजीने भी गदासे मेघनाद का घोड़े सहित सुवर्ण का रथ सारथि सहित बिध्वंस करडाला १६ व प्रजंघ नाम राक्षसने तीनबाण संपाति नाम वानर को मारा फिर सम्पातिने समर में गदा से प्रजंघ को भी मारा २० व जम्बुमाली नाम राक्षसने क्रोधकर रथ पर चढ़ हनुमान्

जी की छाती में चक्रमारा २१ परन्तु पवनके पुत्र हनुमानूजी ने तिसके रथपर चढ़ लातसे रथसहित उस राक्षसको ध्वंस करदिया २२ व प्रतपन नाम राक्षस नलकी ओर दौड़ा नल ने प्रतपनके नेत्रनिकाल लिये २३ यद्यपि प्रतपनने पहिले नलके ऊपर ऐसी बाणावरीकी कि नलके अंगों से रुधिर बहता था व प्रघस नाम राक्षस ने सब सेना को लीललेना चाहा परन्तु बानरों के स्वामी २४ सुग्रीवजीने छतवनका वृक्ष उखाड़ प्रघसको मारा व अतिघोर दर्शन अपने शत्रु बिरूपाक्ष को लक्ष्मणजी ने एकही बाणसे मारडाला २५ अग्निकेतु रश्मिकेतु मित्रघ्न व यज्ञकोप नाम राक्षसोंने बाणोंसे श्रीरामचन्द्रजीको मारा २६ तिन चारोंके शिर क्रोधयुक्त हो श्रीरामचन्द्रजी ने तीक्ष्णबाणों से काटडाले २७ व मैन्द नाम बानरने बज्रमुष्टि नाम राक्षस को मूकासे मारा कि जिससे वह रथ घोड़े सहित विमानके समान भूतलमें गिरपड़ा २८ व काले अंजन की राशिके समान कान्तिवाले नील नाम सेनापतिको निकुम्भ नाम राक्षसने तीक्ष्ण बाणोंसे मारा जैसे सूर्य्य अपने किरणों से मेघ को ताड़ित करते हैं २९ व फिर बड़ी जल्दबाजीके साथ निकुम्भ ने सौ बाणनीलके मार करके बड़े जोर से हँसा ३० तब नीलने बड़ा क्रोधकर रथके पहिया से निकुम्भ व उसके सारथि दोनोंका शिर साथही काटलिया जैसे श्री विष्णु चक्रसे दैत्योंका शिर काटते हैं ३१ व बज्रकेसमान स्पर्शवाले द्विविद नाम बानरने सब राक्षसों के देखतेही देखते पर्ब्बत के शृंगसे अशनि-प्रभ नाम राक्षसको मारा ३२ व फिर वृक्षोंसे लड़ते हुये द्विविद को अशनिप्रभ ने भी बज्र तुल्य बाणों से मारा ३३ व बाण लगेही हुये द्विविदने बड़ाक्रोधकर एक सांखूके वृक्षसे रथ घोड़े सहित अशनिप्रभ को मारडाला ३४ रथपर चढ़ाहुआ बिद्युन्माली राक्षस सुवर्ण भूषित बाणोंसे सुषेणको मार बारबार हँसा ३५ तिसको रथपर चढ़ादेख सुषेण ने पर्ब्बतके शृङ्गसे उसका रथ चूर्ण करदिया ३६ परन्तु वह बड़ाजल्दबाज बिद्युन्माली हाथमें गदालिये झटपट रथसेकूद पृथ्वीपर दूरखड़ाहोगया ३७ तबबानरोंमें श्रेष्ठसुषेण बड़ीभारी पर्ब्बतकी शिलाले व बड़ाक्रोधकर बिद्युन्मालीकी ओरदौड़ा ३८ दौड़े आते हुये बानर श्रेष्ठ सुषेणको बिद्यु-न्मालीने बड़ीभारी गदासे छातीमें मारा ३९ पर उस गदा का प्रहार

सह बानरोत्तम सुषेणने वह बड़ी भारी शिला बिद्युन्मालीकी छाती में मारी ४० कि जिसके लगने से बिद्युन्माली राक्षसका हृदय चूर्णहोगया व निर्ज्जीव होकर वह भूमि में गिरपड़ा ४१ इस तरह उन बड़े शूर बानरोंने उन बड़ेशूर राक्षसोंको द्वन्द्वयुद्धमें मारडाला जैसे देवोंने दैत्यों को मारडाला था ४२ बड़ेबड़े बाणों गदाओं शक्तियों तोमरों व भालोंसे टूटे कटे रथों समर के घोड़ों से ४३ व मरेहुये हाथियों से तथा राक्षसों व वानरों से रथोंकी पहिया जुआ बकौरा आदिकों से ४४ वह संग्राम भूमि भयंकर होगई इसीसे सबओरसे हजारों शृगालघूमने व मांसादि खानेलगे ४५ व देवासुर संग्राम के समान वानर व राक्षसों के उस संग्राम में किरोड़ों कबन्ध उठ उठ मारो मारो पीटो पीटो दौड़ो दौड़ो इत्यादि शब्दकरनेलगे ४६ ॥

॥ कुण्डलिका ॥

वानर पुङ्गवनिहत सब राक्षस गण बल क्षीन ।
भये रुधिर रस बिकल अति रोवत बहु बिधि दीन ॥
रोवत बहुबिधि दीन युद्ध पुन चहत तरणि कर ।
अस्त होन सब भांति बहुन हित निजबल निशिचर ॥
सोचत इमि सब समर सूर्य्य निष्प्रभ त्यहि अवसर ।
लड़न हेतु सब करत यत्न राक्षस अरु वानर ॥ १ । ४७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेत्रिचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४३ ॥

इस तरह राक्षसों व वानरों के युद्ध करतेही करते सूर्य्य अस्त हुये व वानरों के प्राण हरनेवाली रात्रि प्राप्त हुई १ व परस्पर बैर बांधे हुये व जयकी इच्छा किये हुये वानरों व राक्षसों का अति घोर निशा युद्ध होनेलगा २ उसमें बानर तो तुम राक्षस हो व राक्षस तो तुमवानर हो ऐसा कह कह महा दारुण अन्धकार में एक दूसरे को मारनेलगे ३ व तुममरो तुम मारो तुम यहां आवो तुम क्यों भगेजातेहो तिस सैन्य में ऐसा रणसंकट शब्द सुनाई देनेलगा ४ कालरूप व सुवर्णके कवच बख़-तर धारण किये राक्षस लोग तिस अँधियारी रात्रि में ओषधियोंसे प्र-काशित बनयुक्त पर्व्वतोंके समान अग्निसेहो दिखाई देनेलगे ५ तिस

महा दुष्पार अन्धकार में मारे क्रोधके मूर्च्छितहो राक्षस लोग बड़े बेग से वानरों की सेनामें कूदे व बड़े बड़े कपियोंको पकड़पकड़ खानेलगे ६ व वे वानरलोग सुवर्णके भूषण पहिने इससे चमकतेहुये घोड़ों व सुवर्ण की पताकालगे पर्ब्बत के शिखर के आकार रथोंपर कूदकूद चढ़ उनपर सवार राक्षसोंको व उनको भी चीड़ने फाड़नेलगे ७ इसतरह महाबली वानरों ने राक्षसी सेनाको चलायमान करदिया क्योंकि हाथियों व हाथियोंके सवारोंको व ध्वजा पताका सहित रथोंको ८ इधर उधर खींच कर बहादिया व मारेक्रोधसे मूर्च्छितहो दांतोंसे काट काट खण्ड खण्ड करदिये व रामचन्द्र जी तथा लक्ष्मण जी भी विषधर सर्प्पाकार बाणों से ६ दिखाई देतेहुये व गुप्तभी राक्षसोंको मारनेलगे व घोड़ोंके खुरोंसे व रथकी पहियोंसे उड़ीहुई धूलि १० युद्ध करनेवाले राक्षसों व वानरों के कानों व नेत्रोंमें भरहुई जब इस तरहका महाघोरयुद्ध हुआ जिसके देखने से रोम खड़े होतेथे तब रुधिरकी बड़ी भयङ्कर नदियां बहनेलगीं ११ तिसके पीछे नगारे तुरुही शङ्ख नरसिंहा आदि जुझाऊ बाजों का बड़ा अद्भुतशब्द हुआ १२ फिर हिनहिनातेहुये घोड़ों व मारमार करतेहुये राक्षसों व चटाचट चलतेहुये अस्त्रशस्त्रों का व वानरोंका बड़ाभारी शब्द हुआ १३ शक्ति शूल फरसाआदि शस्त्रास्त्रोंसे मारेहुये वानरों व दांतोंमुक्कों पर्ब्बतों वृक्षोंसे मारेहुये कामरूपी राक्षसोंसे १४ पूर्णहोनेसे व शस्त्रोंके पुष्पसमान पतित होनेसे व रुधिरयुक्त होनेसे समरकी पृथ्वी बड़े दुःख से बिदित होतीथी १५ यहांतक कि वह वानरों व राक्षसोंके प्राण हरनेवाली रात्रि सब प्राणियोंका नाशकरनेवाली कालरात्रिके समान भयङ्कर हुई १६ उस महादारुण अन्धकारमें सब राक्षस केवल श्रीरामचंद्र जीहीके ऊपर बाणोंकी वर्षा करनेलगे १७ क्रोधसे गर्ज्जतेहुये व रामचन्द्रजीके ऊपरको दौड़ते व बाण चलातेहुये राक्षसोंकाशब्द प्रलयकाल के सातो समुद्रोंके समानहुआ १८ उन राक्षसोंमेंसे महाप्रतापी छः राक्षसोंको श्रीरामचन्द्रजीने अग्निकी शिखाके समान लपलपाते हुये छः बाणोंसे एक निमिषमात्रमें मारा १६ उनमें अति दुर्द्धर्ष यज्ञशत्रु महापार्श्व महोदर व बड़ाभारी वज्रदंष्ट्र व शुक सारण ये छः राक्षस २० रामचन्द्रजीके बाणोंसे सब सुकुमाराङ्गोंमें मारेजानेके कारण युद्धभूमिसे

भगादियेगये क्योंकि उनके प्राण केवल निकलनेकोही बाकीरहे और मरणमें कुछ सन्देह नहींरहा २१ फिर महारथ श्रीरामचन्द्रजी ने अपने अग्निशिखाके समान प्रकाशित बाणोंसे सबदिशोंको बिमल व प्रकाशित करदिया २२ इन छवोंके सिवाय और भी जो कोई राक्षस श्रीरामचन्द्र जीके सामने दौड़ेथे वेभी नष्ट भ्रष्ट होगये जैसे अग्निके सामनेजाय पांखियां जलजातीहैं २३ चारों ओरसे सुवर्णकी फोंकलगेहुये बाणोंकेचलने से वह रात्रिजुगुनू उड़तीहुई शरदऋतुकी रात्रिके समान शोभितहुई २४ राक्षसोंके घोरशब्दसे व तुरुही नगारोंके बाजनेके शब्दसेवहरात्रि और भी भयङ्कर होगई २५ चारोंओरसे उस बड़ेभारी शब्दके होनेसे त्रिकूट पर्ब्बतकी कन्दरा ऐसीभरहुई मानोंवहभी प्रतिशब्द करनेलगी २६ कालेरंगके ऋक्ष व गोपुच्छनाम काले वानर उस अन्धकारहीके रंगके होने के कारण राक्षसोंको बाहोंसे पकड़ छातीमें मिलाय फिर भक्षण करलेने लगे २७ उसीसमय अंगदने अपने शत्रु मेघनादके मारडालनेका बिचार किया इससे रथ सारथि सहित मेघनाद को मारा २८ परन्तु उसका रथ टूटगया घोड़ व सारथि भी मारेगये व आपरथ छोड़ झटपट अन्तर्द्धान होगया २९ बालि पुत्र अंगदका ऐसा अद्भुत कर्म्म देख सबदेवता व रामचन्द्र व लक्ष्मणजी भी व सब ऋषि गण बड़ाई करनेलगे ३० क्योंकि इन्द्रादि देवों के जीतनेवाले मेघनाद का प्रभाव सब लोग जानतेथे कि किसीके जीतने के मानका नहींथा इससे अंगदसे उसकीपराजयदेख सब हर्षित हुये ३१ व महाशत्रु मेघनादको पराजित देख सब वानर सुग्रीव व बिभीषण सबके सब वाहवाह कहकह अंगदकी बड़ाई करनेलगे ३२ जब भयंकर कर्म्म करनेवाले अंगदजी से मेघनाद पराजित हुआ तो उसने लज्जित हो अति दारुण कोप किया ३३ व वह दुष्ट ब्रह्माके बरदान से गर्व्वितहो मारे क्रोधसे मूच्छित अन्तर्द्धानही हो ३४ किसीको दिखाई नहीं देताथा कि आकाशमें जाय नागमय बाणोंकी वर्षा श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी के ऊपर करनेलगा ३५ यहां तककि आपतो माया से गुप्तरहा व रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मणजी के सब अङ्गों में सर्प्पमय बाण उसने मारे व अपनी माया से समर में दोनों भाइयों को मोहित करदिया ३६ वह जालसे तो युद्ध करताही था इससे बाण

फांस से रामचन्द्र व लक्ष्मण दोनों जनों को बांधदिया ३७ व बिषधर सर्प्परूप बाणोंसे पुरुषसिंह दोनों भाई बँधगये हाथ पैरका चलना बन्द होगया व सब वानर निहारने लगे ३८ ॥

कुण्डलिका ॥

रावण सुत जब प्रकट महँ पुरुष सिंह द्वौबीर ।
बांधि सक्योंनहिं तब लग्यो मायाकरन सुधीर ॥
माया करन सुधीर दुष्ट अति दारुण रावणि ।
छलसों बांध्यो शरन तबहि रघुबंश शिरोमणि ॥
नाग फांस महँ बँधे अधीरन भये शक्तियुत ।
अम्बर महँ छिपि गयो तबहि निश्चर रावण सुत ॥ १ । ३९ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुश्चत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४४ ॥

महाप्रतापी महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी ने दुष्टात्मा मेघनाद को ढूंढ़ने के लिये दश यूथप बानरों को आज्ञा दी १ उनमें दोतो सुषेण के पुत्र थे व तीसरे वानरों के अधिप नील चौथे बालिके पुत्र अङ्गद व पांचयें अतिबेगवान् शरभ २ छठें द्विविद सातयेंहनुमान् आठयें महाबली सानुप्रस्थ नवें ऋषभ व दशयेंऋषभस्कन्ध उन्हींसबों शत्रुओंकोसन्तप्त करनेवाले रामचन्द्र जी ने आज्ञा दी ३ वे सब वानर हर्षित हो बड़ेबड़े वृक्ष हाथों में लेले दशो दिशाओं में ढूंढ़ते हुये आकाश में पैठे ४ तिन महा वेगवान् वानरों का वेग अति वेगवान् वाणोंसे मेघनाद ने रोंक दिया ५ व सबोंके बाणमारे बाणलगेहुये वेदशो वानर यद्यपि बड़ेभयंकर बेगवाले थे तथापि अन्धकारके मारे मेघनादको न देखसके जैसे बादरोंसे घिरेहुये सूर्य्यनहीं दिखाईदेते ६ समरबिजयी मेघनादने जिन बाणों से सब देवता दैत्योंको पराजितकिया वेहीबाण रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके ऊपरचलाये ७ व क्रोधकर मेघनाद के चलायेहुये बाणोंसे रामचन्द्र व लक्ष्मणजी के शरीरमें कहीं अंगुल मात्रका भी अन्तर नहीं रहगया वे बाण सर्प्परूपथे इससे जहाँलगतेथे काटतेचलेजातेथे ८ उन दोनोंभाइयोंके घावोंसे रुधिर बहनेसे वे दोनोंजन फूलेहुये टेसूकेवृक्षोंके समान प्रकाशित होतेथे ९ तिसके पीछे लाललाल नेत्रकिये अञ्जनके पर्वतकेसमान काला मेघनाद अदृश्यहीहो दोनोंभाइयों से बोला १०

कि अन्तर्द्धान होकर युद्ध करते हुये हमको देवतावों के स्वामी इन्द्र भी न देखही सके न मारहीसके तो तुमदोनों जनों की कौन गणना है ११ इससे अब बाण जालसे घिरेहुये तुम दोनों भाइयों को मारे क्रोध के व्याकुल हम यमपुर को अभी भेजे देतेहैं १२ परम धर्म्मज्ञ राम लक्ष्मणदोनों भाइयों से ऐसा कह बड़े तीक्ष्णबाणों से मारा व बहुत हर्षित हुआ १३ अंजनकी राशिके समान काला मेघनाद धनुष पर टंकोर दे फिर अतिघोर बाण छोड़नेलगा १४ व सब सुकुमार स्थल जाननेवाला मेघनाद बीर रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी के सब सुकुमार अंगोंमें तीक्ष्ण बाण मार बार बार शब्द करनेलगा १५ बाणों के जालसे बँधेहुये राम लक्ष्मण दोनों भाई एक निमेष मात्रमें फिर मेघनादको न देखसके १६ बाण जालमें बँधे हुये दोनों भाई रस्सीरहित कांपते हुये इन्द्रकी ध्वजा के समान कांपनेलगे १७ सुकुमार स्थानों में घाव लगने के कारण व्याकुल व चलायमान दोनोंबीर पृथ्वी पर गिरपड़े १८ अंगोंमें रुधिर लगा था बीर भूमिमें शयन करते थे सब अंगोंमें बाण लगे थे इससे परम पीड़ित होगये थे १९ व दोनों जनोंके अंगोंमें ऐसाकोई स्थान नहींबाकी रहा जहांघाव न लगाहो व न कोईअंग ऐसाथा जोअतिपीड़ित व व्याकुल न हुआ हो २० व महाक्रूर मेघनाद ने ऐसा मारा कि दोनों भाइयों के अंगोंसे रुधिर बहनेलगा जैसे झरनोंसे जल बहताहै २१ जिस मेघनाद ने अगाड़ी इन्द्रको जीतलिया था उसके बाणोंके लगनेसे श्रीरामचन्द्र जी भूमिमें पतितहोगये २२ फिरभी उसदुष्टने सुवर्णकीफोंकेंलगे हुयेधूलिके समान सर्व्वत्रपहुंच जानेवाले बाणोंसे व नानाप्रकारके भालोंसे व बछड़े के दांतोंकेसमान बाणोंसे सिंहकेदांतों के आकारवाले शरोंसे मारा २३ जिससे श्रीराम बीरशय्या पर सोगये सब कवच बखतर आदि रत्तीरत्ती टूटगये २४ इसतरह बाणोंकीवर्षा के भीतर गिरायेहुये रामचन्द्रजीको देख लक्ष्मणजी ने जानाकि बस अब ये न जीवेंगे इससे बनाय निराश होगये २५ कमलदलनयन शरण्य बरणमें शत्रुओंके बिदारनेवाले अपने भाई रामचन्द्रजी को पृथ्वीपर पतितदेख लक्ष्मणजी बड़ा शोच करने लगे २६ व वानरलोगभी उनको ऐसीदशाको प्राप्तदेख अतिसन्तप्तहुये व मारे शोकके पीड़ितहो बड़ेजोरसे रोदन करनेलगे २७ ॥

दोहा ॥

बीर शयन सोवत बँधे शरसमूह सों राम ।
पवन तनय आदिक लषत परम दुखित गतसाम ॥ १ । २८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुलङ्काण्डेपंचचत्वारिंशस्सर्ग्गः ॥ ४५ ॥

तिसके पीछे अन्तरिक्ष व पृथ्वीमें निहारते हुये वानरोंने बाणसमूह में बँधेहुये रामलक्ष्मण दोनों भाइयोंको देखा १ जब मेघनाद बाणबलाय चुपारहातो रामचन्द्रजीको देख सुग्रीव सहित बिभीषणजी आये २ व नीलद्विविद मैन्द सुषेणकुमुद अंगद व हनुमान् येसबदोनोंभाइयोंकेलिये शोच करनेलगे ३ क्योंकि वे दोनोंजने चेष्टारहित मन्दश्वास युक्त रुधिर से डूबेहुये बाणसमूहसेबँधे शरशय्यापर सोतेहुये ४ सर्प्पसमान निश्वास लेतेहुये हाथपैर आदि न डोलातेहुये अतिदीन बिक्रम बहताहुआ रुधिर व मिट्टीअंगोंमें लगाये सुवर्णकी ध्वजाके समान भूमिमेंपड़े ५ व बीरशय्या पर शयन करतेहुये इससे कर चरणादि न चलातेहुये व रोवदन करते हुये अपने यूथपों के बीचमें लेटेहुये ६ बाणसमूह से युक्त राम लक्ष्मण को देखविभीषण सहित सबबानर बहुत व्यथितहुये ७ व सबके सब आकाशकी ओर निहारनेलगे परन्तुमायासे छिपेहुये मेघनादको किसी वानरने न देखा ८ केवल विभीषणजीने जबराक्षसी माया केवल देखा तो अपने भाईके पुत्रमेघनादको आकाश में रामचन्द्रजीके थोड़ीही दूर पर खड़ादेखा ९ व जानाकि समरमें इसकेसमान कर्म्म करनेवाला और कोई राक्षसादि नहींहै व अपने बरदानके प्रभावसे अन्तर्द्धानहै ऐसेमेघनादको तेज यश बिक्रम संयुक्त विभीषण ने देखा १० यहां वानरोंकी तो यह दशाहुई व मेघनाद इनदोनों भाइयोंको शरशय्यापर सोतेदेखअपना कर्म्म कहताहुआ व राक्षसोंको हर्षित कराताहुआ बोला ११ कि दूषण व खरके मारडालने वाले महाबली रामचन्द्र व लक्ष्मण हमारे बाणोंसे मारेगये १२ अबचाहे सब देवतागण ऋषिगण व दैत्य गणछुड़ावें परन्तु येदोनोंभाई इसबन्धनसे नहींछूटसक्ते १३ इन्हींके लिये चिन्तना करते हुये शोकसे पीड़ित हमारे पिताजीको शय्यापर बिनाअंग लगायेहीतीन पहरकी रात्रि बीतजाती है १४ जिसके अर्थयह सम्पूर्ण लंकापुरी बर्षा

कालकी नदीके समान व्याकुलथी वह सबकीजड़ उखाड़नेवाला अनर्थ हमने नाशकरदिया १५ अब राम लक्ष्मण व सब वानरोंका विक्रम निष्फलहोगया जैसे शरदऋतुमें बादर निष्फल होते हैं १६ सब राक्षसों से ऐसाकह मेघनादने वानरोंके सब यूथपोंको भी मारा १७ नीलनाम महायूथपके नवबाण मारे मैन्द व द्विविदके भी तीन तीन बाणमारे १८ व जाम्बवान्के एकबाण मारफिर हनुमान्जीके दशबाणमारे १९ गवाक्ष व शरभके महापराक्रमी मेघनादने दो दो बाणमारे २० व बड़ीजल्दबाजीके साथ ऋक्षराज व अंगदजीके उसने बहुत बहुत बाणमारे २१ तिन वानरों को अग्निकी शिखाके समान लपलपाते बाणोंसेमार मेघनाद बहुत गर्ज्जा २२ बाण समूहों से उन सबको पीड़ित कर व अन्य वानरोंको भयभीत कर वहबहुत हँसा व बोला २३ हेराक्षसो अतिघोर शरबन्धन से हमने दोनोंभाइयों को बँधुआ करलिया इसबातको तुम लोग अच्छीतरह समझो २४ यहसुन तिसके ऐसे कर्म्म से हर्षित हो व राक्षस बहुत बिस्मितहुये २५ व सबकेसब मेघोंके समानगर्ज्जे व रामचन्द्रजीको मारेहुये समझ मेघनादकी बड़ाई करनेलगे २६ रामलक्ष्मण दोनोंभाइयों को हाथपैर न डुलातेहुये पृथ्वीमें पड़ेहुयेदेख सबोंने जाना कि वसअबये मृतक होगये २७ इससे समरमें बिजयीहो मेघनाद अति हर्षितहो सबराक्षसों को हर्षित करातहुआ लंकापुरीमें पैठा २८ व यहां श्रीरामचन्द्रजीके सर्व्वांगमें बाणलगे देख सुग्रीवजी बहुत डरे २९ तब भयके मारे रोदनकरते हुये व मारेक्रोधके व्याकुलनयन व डरेहुये सुग्रीव से विभीषणजी बोले हे सुग्रीव डरनेका कुछकामनहीं अब आंशुओं का बेगबन्दकरो ३० ऐसे मायायुक्त युद्धोंका बिजयका कुछठीकनहीं क्योंकि कभी कभी मायासे भी ऐसा दिखाईदेताहै हेबीर जोहम लोगोंकेभाग्यमें कुछ और सुखभोगना बाकी रहाहोगा ३१ तो ये महात्मा व महाबली दोनोंजने इस मोहको छोड़देंगे क्योंकि सत्यधर्म्ममें टिकेहुये रामचन्द्रादिकोंके समान लोगों को मृत्युका भयनहीं होता इससे अब अपना को व अनाथ हमको प्रसन्नचित्तहो प्रसन्नकरो अर्थात् तुम्हारीही स्वास्थसे हमको भी स्वास्थ्यहै ३२ यहकह तिनसुग्रीवके शुभनेत्र विभीषणजीने अपनेहाथमें जललेकरधोये ३३ व फिर और जलहाथमें ले शोकनिवारण

मंत्रसे अभिमन्त्रित करसुग्रीवके नेत्रफिरधोये ३४ तिनबुद्धिमान् बानरराजके नेत्रजलसेपोंछ व्याकुलता निवारक समयके अनुसार बचन विभीषणजी बोले ३५ हे वानरराज यहसमय बिकलता अंगीकार करने का नहींहै क्योंकि इसकुसमय में अति स्नेहकरना मरण प्रदहो है ३६ तिससे सबकार्य्य बिनाशक बिकलता छोड़ रामचन्द्रजीके अगुआ व अपनी सेनाके हितकी बात शोचिये ३७ अथवा जबतक मूर्च्छा जागाचाहे तबतक रामचन्द्रजीकी रक्षा करते रहिये जब इन दोनोंजनोंकी मूर्च्छा जागेगी तो यही हमलोगोंका भय दूरकरेंगे ३८ यह कुछभी रामचंद्रजी को बिकार नहींहुआ व वे अभी मरनेकी इच्छा कभीनहीं करते क्योंकि जो लक्ष्मी आयुर्बलहीन पुरुषोंको दुर्लभहै वह इनके मुखको नहीं छोड़ती ३९ तिससे अपनाको व अपनी सेनाको समझाइये जबतक हम और सैन्योंको समझावें तबतक तुमभी समझाते रहो ४० मारे भयके ये वानरलोग बहुत व्याकुल हैं इसीसे इनके नेत्र घूमते हैं ४१ हमको इधर उधर दौड़तदेख सब वानरलोग सेनाको भी हर्षितदेख पहिरनेसे मर्दित कुँभिलानीहुई मालाके समान उद्वेग छोड़ेंगे ४२ राक्षसोंके इन्द्र विभीषणजी इसतरह सुग्रीवजीको समझाय फिर वानरोंको समझाने लगे ४३ व महामायावी मेघनाद अपनी सब सेना लेकर लङ्कापुरी में जाय अपने पिताके समीप पहुँचा ४४ व रावणको पाय हाथजोड़ प्रणाम कर अपने पितासे प्रियबचन बोला कि हमने रामचन्द्र व लक्ष्मणको मारडाला ४५ अपने शत्रुओंको मारेहुये सुन राक्षसोंके बीचमें बैठाहुआ रावण झट उठकर अपने पुत्रको बड़ेप्रेमसे मिला ४६ व पुत्रका शिरसूंघ प्रसन्नहो युद्धके वृत्तान्त पूंछनेलगा तब पूंछतेहुये अपने पितासे सब वृत्तान्त कहे ४७ जिसतरह रामचन्द्रजी वाणजालमें फँसकर निश्चेष्ट व प्रभारहित करदियेगये ४८ सब रावणसे बताया ॥

कुण्डलिका ॥

रणबिजयी निज तनयकी बाणीसुन दशशीश ।
हर्षित भयहु महारथी त्यहि गुनि बिश्वाबीश ॥
त्यहिगुनि बिश्वाबीश रामकृत भयसों जोज्वर ।
उपज्योरहै शरीर तज्यो सो भयहु बिगतदर ॥

अतिप्रहृष्ट बरबचन रचन युत निजसुतसोंभण ।
पुत्रसफल तवजन्म जित्योतुमरघुपति सोरण ॥ १ । ५१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेषट्चत्वारिंशस्सर्गः ॥ ३७॥

जब अपनीजान बिजयीहो मेघनाद लङ्काको चलागया तो सब वानर चारोंओरसे घेर श्रीरामचन्द्रजीकी रक्षा करनेलगे १ ॥

चौ० हनूमान अङ्गद नलनीला । कुमुद सुषेण पनस शुभशीला ॥ गज गवाक्ष कपिबर रणधीरा । सानुप्रस्थ समर अतिबीरा १ । २ जाम्बवान शतबलि पृथुरम्भा । सुन्द ऋषभ सब बिगत अचम्भा ॥ तरुवर लैलै निजकर माहीं । इतउत लषत झखत कछुनाहीं २ । ३ सकलदिशा अध ऊरध देखत । जहँ देखहु तहँ राक्षस पेखत ॥ तृणहु हिलतजहँ देखत काऊ । तहँ मानत राक्षस कर भाऊ ३ । ४ ॥

यहां वानरलोग तो रामचन्द्रजीकी ऐसी रक्षा करनेलगे वहां रावणने प्रसन्नहो अपने पुत्र मेघनादको बिदाकर सीताजीकी रक्षा करनेवाली राक्षसियों को बुलाया ५ तिसकी आज्ञासे वे सबराक्षसियां व त्रिजटानाम राक्षसी रावण के निकट आईं व अति हर्षितहो रावण उनसे बोला ६ कि तुमलोग जानकीजीसे जाय बताओ कि मेघनादने राम लक्ष्मणदोनों भाइयोंको मारडाला व पुष्पकबिमान पर चढ़ाय उनको रणमें लेजाय मारे हुये दोनों भाइयोंको दिखा भी दो ७ जिन रामचन्द्रकी आश्रय से गर्व्वित सीता हमको कुछनहीं समझतीथीं वे रामचन्द्र अपने भाईसहित संग्राममें मारडालेगये ८ अब निश्शङ्क निश्चल व और किसीकी ओरसे निरपेक्षहो सब भूषणोंसे भूषित सीता हमारे निकट अवश्य आवेंगी ९ क्योंकि आज समरमें मारेपड़ेहुये राम लक्ष्मणको देख निराश हो अब और किसकी शरणमें जावेंगी ज़रूर हमारेही बशमें रहेंगी १० तिस दुष्टात्मा रावणके ऐसे वचनसुन राक्षसियां बहुत अच्छा ऐसाही करेंगी यहकह जहां पुष्पकबिमान धराथा वहांगईं ११ व रावणकी आज्ञासे पुष्पकले अशोकबनिकामें जाय जानकीजीको चढ़ायलाईं १२ व पतिके शोकसे दुर्व्बल सीताजीको राक्षसियोंने अपने आप उठाय पुष्पक पर चढ़ाया उनको उसपर चढ़नेकी कहां शक्ति थी १३ सीताजी व त्रिजटा

को पुष्पकपर चढ़ाय दुष्टात्मा रावणने लङ्काभरमें घुमवाया १४ व लङ्का भरमें पुकरवाया कि मेघनादने समरमें रामचन्द्र व लक्ष्मणको मारडाला १५ फिर विमानपर चढ़ीहुई सीताजी ने समरभूमि में जाकर देखा तो वानरोंकी बहुतसी सेना मारीहुई पड़ी थी १६ व राक्षसोंको सब कहीं हर्षितही देखा व रामचन्द्रजीके निकट खड़ेहुये सब वानरोंको मारेदुःख के पीड़ित देखा १७ व तिसकेपीछे शरशय्या पर सोतेहुये मूर्च्छित श्री रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको देखा १८ जिनके कवच बख़्तर आदि टूट गयेथे धनुष रुधिर व मिट्टी लगाहुआ भूमिमें पड़ाथा बाणोंसे सब अङ्ग कटगयेथे ऐसा विदित होताथा कि जानों वे बाणोंकेही खम्भाहैं पृथ्वी पर पड़ेहैं १६ महाप्रतापी व महावीर दोनों भाइयों को वहां अग्निके पुत्रोंके समान देदीप्यमान सोतेहुये देखा २० ऐसे दोनोंभाइयोंको बाण शय्यापर शयन करतेहुये देख दुःखकेमारे पीड़ित सीताजी अति करुणा पूर्व्वक बिलाप करनेलगीं २१ पतिको व लक्ष्मणजीको धूलिमें पड़ेहुये सब शोभन अङ्गवाली सीताजी देख बड़ेस्वरसे रोदन करनेलगीं २२ ॥

कुण्डलिका ॥

आँशु शोक परायणा जनकसुता अति दीन ।
देव देवसुत सम महा बरप्रभाव भयहीन ॥
बरप्रभावभयहीन देखि द्वौ दुखित सहोदर ।
तिनहूंकरलषिमरण विचारनलगीं मनोवर ॥
अतिदुःखित पुनिभई चित्तबहु भयहुउदासू ।
बोलींफिर इमि बचन नयनमहँ भरि बहुआंशू ॥ १ । २३ ॥

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेसप्तचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४७ ॥

जब जानकीजीने महाबलवान् अपनेपति व लक्ष्मणजीको रणमें मूर्च्छित पड़े देखा तो मारेशोकके दुर्ब्बल सीताजी बड़े करुणाशब्दसे रोदन करनेलगीं १ कि जो सामुद्रिक पढ़नेवाले पण्डित हमको कहतेथे कि ये पुत्रवती होंगी व सदा सुभगा बनीरहेंगी वे सब ज्ञानीलोग इस समय रामचन्द्रजी के मारजाने पर झूंठे होगये २ व जो लोग बीरराजाओं की स्त्रियोंमें हमको सुमङ्गली कहतेथे वे सब ज्ञानीलोग इससमय

रामचन्द्रजीकेमारजानेपर झूंठेहोगये ३ व जोलोग अश्वमेधादियज्ञकरने-वाले व बहुत लोगोंकी सहायतासे बहुत दिनोंमें पूर्ण होनेवाले यज्ञोंके करनेवाले श्रीरामचन्द्रजीकी पट्टरानी हमको कहतेथे वे सब ज्ञानीलोग इससमय रामचन्द्रजीके मारजानेपर झूंठेहोगये ४ व जो ज्योतिषशास्त्र सिद्धान्तके जाननेवाले लोग हमारे निकट आय हमसे कहतेथे कि तुम जबतक जीवोगी अहिवातीहीरहोगी वे सब ज्ञानीलोग इससमय राम-चन्द्रजीके मारजानेपर झूंठेहोगये ५ जिन चिह्नोंसे कुलकीस्त्रियां नरेंद्र पतियोंके साथ अधिराज्यस्थान पर अभिषेचित होतीहैं वे पद्माकाररेखा रूप चिह्न हमारे चरणोंमें हैं ६ व जिन लक्षणोंसे स्त्रियां बिधवाहो दु-र्भाग्य होजातीहैं वे लक्षण कोई भी हम अपनामें नहींदेखतीं क्या जो लक्षण हममें सुभगा होनेकेहैं वे हतहोगये जो ऐसा बिदित होताहै ७ व लक्षण जाननेवाले पण्डितलोग जिन पद्मादि चिह्नोंको स्त्रियोंके अङ्गों में होनेसे सफल कहतेहैं वे सब अब हमारे अङ्गोंमें रामचन्द्रजीके मार-जानेसे निष्फल हुयेजातेहैं ८ देखो स्त्रियोंमें जो सुलक्षण चाहियें हममें सबहैं जैसे पतले बराबर व नील तो हमारे केशहैं व भौंहें हमारी एकमें जुटी नहींहैं गोल व रोमरहित जाघेंहैं व दांत बिरल हैं ९ नेत्रोंके अन्त नेत्र हाथ पाद घुटना व ऊरू ये सबतो हमारे मोटेहैं व नख चिकने व चढ़ा उतार व लालहैं व अंगुलियां सब बराबरहैं १० व एकमें जुटे मोटे व मुखपर खाली हमारे स्तनहैं गहिरी व किनारे किनारे ऊँची हमारी नाभीहै व पांजर व छाती मोटीहै ११ व हमारे देहकी कान्ति शानपर चढ़ायेहुये मणिके समान चमकती है व रोम सब हमारे कोमल हैं इस तरह दशइन्द्रियों व मन बुद्धिसे हमको सब शुभलक्षण युक्तही कहते हैं १२ व अंगुलियोंके पोढ़ोंपर सब यव पूरेहैं कोई रेखासे खण्डितनहीं व हाथ पैरकी सब अंगुलियां घनीहैं व सबअङ्गोंकी शोभा बनीहै इन सब लक्षणोंसे लक्षण जाननेवाले लोग हमको मन्दस्मिता कहतेथे १३ व ब्राह्मणलोग कहतेथे कि पतिकेसाथ अधिराज्य पदवीपर तुम्हाराअभि-षेक होगा वह सब आज मिथ्या होगया बिदित होता है १४ हा राम जनस्थानादि सबस्थानोंमें ढूंढ़तेढूंढ़ते हनुमान्से हमारी खबरपाय समुद्र नांघ यहांआय गाईके खुरके गढ़ेमेंभरे जलमें तुम दोनोंभाई डूबगये १५

हा बरुण अग्नि इन्द्र बायु व ब्रह्मा इन किसीका अस्त्र श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके ऊपर नहीं चलसक्ताथा बड़े आश्चर्य्यकी बातहै जो इस समय ये मृतक पड़ेहैं १६ हम जानतीहैं कि इन्द्रसेभी अधिक पराक्रमी इन दोनों भाइयोंको हमारे नाथोंके अदृश्यमान शत्रुने रणमें मायासेही मारडालाहै १७ क्योंकि समरमें रामचन्द्रजीके सामने पड़ने पर चाहे मनका इतना बेगहो पर जीतानहीं लौटसक्ताथा १८ भाई कालको किसी की भयनहींहै व यमराज बड़ा दुर्ज्जयहै जो भाईसहित श्रीरामचन्द्रजी मारेहुये समरमें सोतेहैं १६ ॥

चौ० तिमि राघव लक्ष्मणकहँ नाहीं। शोचत हम अपने मनमाहीं॥ आत्मा अरु जननिहि तिमि नाहीं। जिमि तपसिनि निज सासुहि काहीं १। २० जो नित शोचत ह्वैहहिं रोजू। बन ब्रतकरि सर्वबिधि युत ओजू॥ सीतालषणसहित रघुनाथा। कबलषिकै हमहोबसनाथा २।२१॥

इसतरह रोदन करतीहुई जानकीजीको समझातीहुई त्रिजटानाम राक्षसी बोली हे देवि बिषाद न करो ये तुम्हारे स्वामी जीतेहैं २२ जिस तरह ये दोनोंभाई राम लक्ष्मण जीतेहैं उसके कारण तुमसे कहतीहैं२३ हे बैदेहि जब सेनाका स्वामी मारजाताहै तो योधोंके मुख कोपयुक्त व हर्षसहित नहींरहते वहबात यहांनहीं दिखाई देती इससे ये दोनोंभाई मूर्च्छित होगयेहैं मरेनहीं २४ फिर जो ये दोनों मृतकहोते तो यहदिव्य पुष्पकनाम बिमान तुमको न धारण करता क्योंकि यह बिधवा स्त्रीको अपने ऊपर नहींचढाता २५ व जो मुख्य स्वामी मारजाता है तो सेना बिना उत्साहकीहो कुछ कार्य्यही नहींकरती बरन संग्राममें योंही बिललाती फिरतीहै जैसे मल्लाह न होनेसे जलमें नाव इधर उधर डगमगाती बही चलीजाती है २६ परन्तु यहसेना बड़ी सावधानता व बिना उद्वेग की हो दोनोंभाइयोंकी रक्षाकरतीहै इससेभी बिदित होताहै कि ये दोनों भाई मृतक नहींहुये किन्तु मूर्च्छितही होगयेहैं २७ तिससे इन सुखकारक अनुमानोंसे बिश्वासमें आय इन दोनोंभाइयों को जीतेही समझो हम तुम्हारे स्नेहसे यहबात कहतीहैं २८ हे मैथिलि आजतक हमनेकभी झूंठनहीं कहा व न कहेंगी क्योंकि तुम अपने शुभ आचरणोंसे हमारे मनमें पैठगईहो २६ व ये दोनोंभाई तो रणमें इन्द्रादि देवताओंके भी

मारनेके योग्यनहीं फिर राक्षस बेचारे क्यामारसकेंगे इसबातको अच्छी तरह बिचार हमने तुमसे यह कहाहै ३० फिर हे बैदेहि देखतीहो यह भी तो बड़ा आश्चर्य्यहै कि ये दोनोंभाई अस्त्रोंके लगनेसे मूर्च्छितहैं पर लक्ष्मी इनके मुखोंको नहीं छोड़ती जो मृतकहोते तो जरूर छोड़दियेहोती ३१ क्योंकि बहुधा शक्तिरहित व म्रियमाण पुरुषोंके मुखोंमें कुछ बिकार हो जाताहै जिससे कुछ भयावनी सूरत होजाती है ३२ इससे हे जनककुमारिशोक व दुःख व मोहछोड़ो क्योंकि इससमय मरणमें इतनीशक्तिनहीं जो रामचन्द्र व लक्ष्मणको प्राप्त होसके ३३ देवकन्याओं से भीअधिक रूपवती व गुणवती सीताजी त्रिजटाके ऐसे बचनसुन हाथजोर उससे बोलींकि बहुतअच्छा तुम्हारे बचनसत्यहों ३४ इसकेपीछे बिमान लौटाय दुःखित सीताजीको त्रिजटा लङ्कामें लाई ३५ व त्रिजटाके साथ पुष्पक बिमानसे उतरराक्षसियों केसाथ सीताजी अशोकबनिकामें आईं ३६ ॥

हरिगीतिका ॥

बहु वृक्ष षण्ड बिशोभि राक्षस अधिप बिहरण भूमिमें ।
युतशोक सीता पहुँचि शोचन लगीं निजमन हूमिमें ॥
बहु कीनजाय बिषाद तिनतहँ चिन्त्य लक्ष्मण रामको ।
सबभांति गुणगण पूर्ण अरु मृतिरहित पूरणकामको १ । ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेअष्टचत्वारिंशस्सर्गः ॥ ४८ ॥

भयङ्कर बाणजालमें बँधेहुये ऊर्ध्वसांसें लेते व अङ्गोंमें रुधिर लगेहुये हाथियोंके समान विद्यमान रामचन्द्र व लक्ष्मणजीको १ सबओरसे घेर सुग्रीवादि महाबली सब वानर मारेशोकके ब्याकुलहो खड़ेहुये २ यद्यपि रामचन्द्रजी बाणोंसे बँधेहुयेथे परन्तु बड़ेवीर्य्यवान व पराक्रमी तो थेही उसीसमय सोतेहुये से जागउठे ३ व उठतेही दीनबदन रुधिर लगे व बहुत बिषण्ण भाई लक्ष्मणको देख आतुरहो रोदन करनेलगे ४ कि जो हम निर्जितहो समरमें शयनकरतेहुये अपनेभाईको देखरहेहैं तो सीता के मिलने व अपने जीने से क्या है ५ जो मर्त्यलोक में ढूंढ़ें तो सीता के समान स्त्री चाहे मिलजाय परन्तु अन्तावस्थामें भी सब कार्य्य करनेवाला लक्ष्मण समान भाई व मंत्री कहीं न मिलेगा ६ सुमित्राजी के

आनन्दबढ़ानेवाले लक्ष्मणजी जो कहीं मृतकहोगयेतो वानरोंके देखतेही देखते हमभी प्राण त्यागकरेंगे ७ क्योंकि हम अपनीमाता कौशल्याजी से व केकयीसे क्याकहेंगे व पुत्रके देखनेकीलालसाकियेहुई सुमित्राजीसे क्याकहेंगे ८ जो हम बिना लक्ष्मण अयोध्या को जावेंगे तो पुत्ररहित कांपतीहुई कुररीकेसमान कांपतीहुईकौशल्यादिकोंको कैसे समझावेंगे ९ व जोकिहमारेसाथलक्ष्मणजीबनकोआये हम बिनाउनके वहांजायशत्रुघ्न जी व परम यशस्वी भरतजीसे क्याकहेंगे १० कौशल्या केकयी सहित सुमित्राजीका कियाहुआ छाती आदिका पीटना हम न सहसकेंगे इससे अब न जीसकेंगे वरन यहींशरीरछोड़देंगे ११ पापकारी हमकोधिक्कारहै जिसके अर्थ ये लक्ष्मणजी मृतक समान शरशय्यापर शयनकरतेहैं १२ हेलक्ष्मण जब कभी हमव्याकुलहोतेथे तबतुम हमकोसमझातेरहे अबहम अतिदुःखितहैं तुम ऐसेनिर्जीव होगयेहो कि हमसेबोलभीनहींसक्ते १३ हेबीर लक्ष्मण जिसपृथ्वीमें तुम्हारे मारेहुये बहुतसे राक्षस पड़ेहैं तिसी पृथ्वीमें बाणोंसे मारेहुये तुमभी आजशयन करतेहो १४ रुधिर अंगोंमें लगायेहुये व बाणोंसे छेदेहुये तुमभूमिमें सोते हो इससे अस्ताचल को जातेहुये सूर्य्यके समान बिदितहोते हो १५ यद्यपि सुकुमार स्थलों में बाणोंके लगनेसे तुमबोलनहींसक्ते परन्तु तुम्हारे नेत्रोंकी ललाईसे बड़ी भारीपीड़ा बिदित होतीहै १६ जिसतरह बनको आतेहुये हमारे पीछे पीछे महातेजस्वी लक्ष्मणजी चलेआये तिसीतरह इनके पीछे पीछे हम भी मृतकहोकर चलेजावेंगे १७ ऐसे इष्टबन्धु व नित्य हमारे सेवक व आज्ञापालक लक्ष्मण आजतुम इसदशाको प्राप्तहुये यहहम अनारीकोही अनीतिसे हुआ १८ हमने कभी बहुत रिसायेहुये भी लक्ष्मणके मुखसे कठोर व अप्रिय बचन नहींसुने व न कोई दुराचार कभी इनमें देखा सुना १९ देखो जो सहस्त्रबाहु राजाएकही समयमें पांचसौ बाणचलाता थाउससे भी येलक्ष्मणजी धनुर्व्बिद्यामें अधिकथे २० जो अपने अस्त्रोंसे महात्मा इन्द्रके भी बज्रादि अस्त्रों को भंजन करसक्तेथे व आज पृथ्वीपर सोतेहैं यद्यपि बड़ेमोलकी शय्यापर शयन करने के योग्यथे २१ इसका कारण यहहै कि हमने प्रतिज्ञाकीथी कि बिभीषणको राक्षसों का राजा बनावेंगे परन्तुनहीं बनाया वही मिथ्याबचन हमको जारडालता व नाना

प्रकारके दुःखदेताहै २२ हेसुग्रीव अबहम सत्वहीन होगयेहैं इससे हमारे संगरावण तुम्हाराभी निरादरकरेगा इसलिये अबतुम यहांसे किष्किन्धा को चलेजावो २३ अंगदको आगेकर व सबसे नाभी आगेही करके नील नलादिकों को संगले शीघ्रही समुद्रउतरो देर न करो २४ हनुमान् व गोलांगूलोंके स्वामी जाम्बवान्ने जो कर्म्मकिया वहकोई नहीं करसक्ता इससेहम बहुत सन्तुष्टहुये २५ व अंगद मैन्द द्विविद केसरी व संपातिने भी समरमें बड़ादुष्कर कर्म्म युद्धकिया २६ गवय गवाक्ष शरभ गज व अन्य वानरों ने भी बड़ाभारी युद्धकिया व सब हमारेलिये अपने अपने प्राणछोड़ने पर उद्यतरहे २७ परन्तु सुग्रीव मनुष्यभाग्य का उल्लंघन नहीं करसक्ता कोई क्याकरै जो मित्रको मित्रके संग व सुहृदको सुहृद के संग करना चाहिये २८ आपने सबहमारे संगकिया हे वानरों आप लोगोंने भी मित्रकार्य्य अच्छीतरह सेकिया अबहम अपनी ओरसे सब को बिदाकरतेहैं इससे अपने अपने स्थानको चलेजावो २९ रामचन्द्रजी का ऐसारोदन सुनसब वानरलोग भी जोरसे पुकार पुकार रोदन करने लगे ३० तिसके पीछेसब सैन्योंको यथा स्थानपर स्थापितकर विभीषण जी रामचन्द्रजीके निकट आये ३१ विभीषणको अंजनकी राशिकेसमान काले आतेहुयेदेख सबवानरोंने जाना कि यह मेघनादहै फिरचलाआता है इससे सबकेसब वहांसेभगे केवल यूथपही लोग वहां रहगये ३२॥

इत्यार्षरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डएकोनपंचाशत्तमस्सर्गः॥४९॥

इसी बीचमें वानरराज सुग्रीवजी बोले कियहसेना प्रचंडपवनकेल-गनेसे जलमें नावके समान क्योंकांपरहीहै व इधरउधर भागीजातीहै १ सुग्रीवके बचनसुन बालिकेपुत्र अंगदजी बोलेकि आपनहीं देखतेकि महा-रथ श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी २ यद्यपि बड़ेबीर हैं तथापि बाणसमूह सेबँधेहुये हैं व रुधिरमें डूबेहुये शरशय्यापर सोतेहैं ३ यह सुन सुग्रीव जी अपने भतीजे अंगदजीसे बोलेकि यह हेतुही वानरोंके भागनेकानहीं विदितहोता किन्तुकुछ और भीहै ४ देखो ब्याकुलमुख अस्त्रशस्त्र हाथों से अलगबहाये मारेभयके लाल व चंचलनेत्रकिये सबवानर सब ओरको भागते चलेजाते हैं ५ एकदूसरेकी लाजनहीं करते व पीछे फिरकरकोई

भी नहीं देखते व एकदूसरे को खींच खींच पीछेडालते चलेजाते जोगिर-
पड़ते उनको नांघतेजाते हैं ६ सुग्रीव ऐसा अंगदसे कहतेहीथे कि गदा
हाथमेंलियेबीर शिरोमणि विभीषणजी वहांआयपहुंचे सुग्रीव व श्रीराम-
चन्द्रजीको जयपूर्व्वक आशीर्व्वाद देनेलगे ७ तब वानरोंके भयके हेतु
विभीषणजीको देख सुग्रीवजी समीपही बैठेहुये जाम्बवान् जीसे बोले८
कि ये विभीषणजी आयेहैं जिनकोदेख सब वानरलोग मेघनाद समझ
अगाड़ी आनेवाली भयकी शङ्कासे भगेजातेहैं ६ इससे आपबड़ी शीघ्रता
के साथ जावें व मारेभयके ब्याकुल बहुधा भगेजातेहुये इनवानरोंसे कहें
कि ये विभीषणहैं मेघनादनहीं हैं १०जब सुग्रीवजीने ऐसाकहा तोऋक्षों
के राजा जाम्बवान्जीने दौड़ेजाते हुये वानरोंको वही समाचार कहकर
लौटारा ११ व वानर लोगभी निर्भयहोकर जाम्बवान्के बचनसुन व
विभीषणजीको देख लौटखड़े हुये १२ व धर्म्मात्मा विभीषणजीभी राम-
चन्द्रजी व लक्ष्मणजीके सबअंग बाणोंसे छिन्नभिन्न देख बहुत ब्याकुल
हुये १३ व जलसे ओद कर अपने हाथसे उनदोनों भाइयोंके नेत्रधोय
मारेशोकके पीड़ितहो रोदन व बिलाप करनेलगे १४ कि सत्वसम्पन्न
महाविक्रमी व समरप्रिय येदोनों बीरशिरोमणि माया से युद्धकरनेवाले
राक्षसोंसे इसअवस्थाको पहुंचायेगये १५ हाय ये सरलविक्रमी व सरल
स्वभाव दोनों भाई हमारे भाई के दुष्टात्मा कुपुत्र इस पुत्र मेघनाद स
राक्षसोंकी कुटिलबुद्धिसे छलेगये १६बाणोंके लगनेसे रुधिरसे भीजे हुये
दोनोंभाई पृथ्वीपर सोतेहुये लोहके बाणोंके ढेरकेसमान दिखाई देते हैं
१७ जिनइनदोनों जनोंके वीर्य्यके आश्रयीहोकर हमने अपनी प्रतिष्ठा
चाही थी वे दोनों ये पुरुषोत्तम अपनादेह नाशने के लिये पृथ्वीपर सो-
रहेहैं १८ अबराज्य पानेका मनोरथ हमारा नष्टहोगया इससे जीतेही
जीते हम मरगये व रावणहमारे शत्रुकी प्रतिज्ञा पूर्णहुई इससे उसकेसब
मनोरथ पूरेहोंगे १६ इसतरह रोदन व बिलाप करतेहुये विभीषणजी
को अपनी छातीमें लगाय भलीविधिभेंट सत्वसंयुक्त सुग्रीवजीबोले २०
हेधर्म्मज्ञ विभीषण आपलंकामें राज्यपावेंगे इसमें कुछ भी सन्देहनहींहै
व पुत्रादि सहित रावण अब इस संसारमें अपने मनोरथ न पूर्णकरने
पावेगा२१क्योंकि थोड़ीही देरमें रामचन्द्र व लक्ष्मणदोनों भाई गरुड़को

पाय मोहछोड़ सहित परिवार रावणको समरमें मारडालेंगे २२ विभी-
षणराक्षसको इसतरह समझाय व उनका तापदूरकर सुग्रीवजी समी-
पही खड़ेहुये अपने श्वसुर सुषेणजीसे बोले २३ कि जैसेही कुछचेतहो
मूर्च्छाजागे वैसेही रामलक्ष्मण दोनोंभाइयों को ले व बहुतसे वानरोंको
भी संगले आपकिष्किन्धा पुरीको चलेजावें २४ हम अकेलेही परिवार
सहित रावणको समरमेंमार जानकीजीको लावेंगे जैसे नष्टहुई राज्य
लक्ष्मीको इन्द्रजी लायेथे २५ सुग्रीवजीके ऐसे बचनसुन सुषेणजी बोले
कि जब पूर्ब्ब समय में देवासुर नाम बड़ा भारी संग्राम हुआ था २६
तब दैत्योंने बाणचलानेमें बड़ेचतुर व शस्त्रास्त्रकेकर्म्ममें अतिकुशल देव-
ताओंको बाणोंसे बार बार मारा व मूंदलिया २७ जब वे लोग बहुत पी-
ड़ितहुये बरन लाखों किड़ोरों मरभीगये तो बृहस्पतिजी ने मन्त्रयुक्त
बिद्याओंसे व औषधियोंसे उन देवताओंको फिर जिलादिया २८ तिन
औषधोंके लानेकेलिये सम्पाति पनसादि वानर शीघ्रही क्षीरसमुद्रके
निकटजावें २९ क्योंकि येवानरलोग पर्ब्बतकी उनदोनों औषधियोंको
अच्छीतरह जानतेहैं उनमें एकतो सञ्जीवनीहै व एकबिशल्या अर्थात्
घावकीपीड़ा व घाव मिटानेवाली ३० जहाँ समुद्र मथागया था वहाँ
चन्द्रनाम व द्रोणनाम दोपर्ब्बतहैं उन्हींपर वे दोनों औषधियाँ हैं ३१
इनदोनों पर्ब्बतोंको देवताओंने क्षीरसागरके बीचमें स्थापितकर दियाहै
सो उनके लानेकेलिये सम्पात्यादि वानरोंमें केवल बायुके पुत्र हनुमान्
चलेजावें तो अकेलेही कार्य्यसिद्धहोजावे औरोंके जानेकी कुछ आवश्य-
कतानहीं क्योंकि इनकेसमान बेगवान् औरकोईनहीं ३२ सुषेणजी ऐसा
कहतेहीथे कि उसीसमय प्रचण्डपवनचला व मेघोंमें बिजुली चमकनेलगी
समुद्रकाजल फैलउठा जानों पर्ब्बतोंकोभय कँपानेलगा ३३ व जिस के
प्रचण्ड पवन के लगने से द्वीपोंके बीचमें जो बड़ेभारी भी वृक्षथे उनकी
डालेंटूटगईं व सबकेसब समुद्रके जलमें जायगिरे ३४ व समुद्रके भीतर
रहनेवाले सबसर्प्प मारेभयके ब्याकुलहोगये व सब जलजन्तु जो जलके
किनारेपरथे वे जलमें कूदपड़े ३५ उसकेपीछे एक दोघड़ीपर सबवानरों
ने महाबली बिनताके पुत्र गरुड़जीको आतेहुये देखा ३६ व जिनबाण
रूपी सर्प्पोंसे वे दोनोंभाई महापुरुष बँधेहुयेथे वे सब गरुड़जीको आते

देख भागखड़ेहुये ३७ तब गरुड़जी ने आय अपने हाथोंसे रामचन्द्र व
लक्ष्मणजीको सहराय व आनन्दित कर उनके चन्द्रसम मुखों पर भी
हाथफेरदिया ३८ गरुड़जीके छूतेही दोनोंभाइयोंके सबघाव पूरआये व
दोनों जनोंका शरीर प्रहिलेहीकासा सुन्दर होगया ३९ व तेज बीर्य्य
बल ओजस उत्साह अन्यभी महागुण दिब्यदृष्टि बुद्धि व स्मरण दोनों
भाइयोंके प्रथमसे दूनाहोगया ४० तब महातेजस्वी गरुड़जी इंद्रसेभी
अधिकप्रतापी दोनों भाइयों कोउठाय अच्छीतरहछपटायमिले व श्रीराम
चन्द्रजी गरुड़जीसे बोले ४१ कि आपकेप्रसादसे मेघनादका कियाहुआ
दुःखहमलोगोंसे दूरचलागया व आपने हमको फिर बलीकरदिया ४२
जिसतरह अपनेपिता दशरथजीको व पितामह अजजीकोपाय हमारा
चित्त प्रसन्नहोताथा उसीतरह आपकोपाय आजप्रसन्न होताहै ४३ अब
यहबताइये कि अतिरूप सम्पन्न दिब्य पुष्पोंकीमाला पहिरे व दिब्य
चन्दनाद्यनु लेपनलगाये व बिमलवस्त्र धारणकिये व दिब्यही भूषणोंसे
भूषित आपकौनहैं ४४ यहसुन महातेजस्वी गरुड़जी प्रसन्नहो अति
हर्षित श्रीरामचन्द्रजी से बोले ४५ हे श्रीरामभद्र हम आपके प्राणके
समानप्रिय बाहर घूमनेवाले सखाहैं गरुड़ हमारानामहै व आपकी स-
हाय करनेकेलिये यहाँआयेहैं ४६ क्योंकि महापराक्रमी दैत्य वा महा-
बली वानरलोग व गन्धर्ब्बादि सहित देवतागण व इन्द्र आपभी ४७
मायाबलसे क्रूर कर्म्मकारी मेघनादका कियाहुआ यह अतिदारुण शर
बन्धन नहींछुड़ासक्तेथे इसीसे हमआये ४८ कद्रूकेपुत्र तीक्ष्णदाँतवाले
महाबिषधर ये सर्प्प राक्षस की मायासे बाणरूप होकर आय आपको
काटतेथे ४९ परंतु हे सत्य पराक्रम श्रीरामचन्द्रजी तुम अपनेभाई स-
हित बड़ेभाग्य वालेहो ५० क्योंकि समरमें शत्रुओंके नाशनेवाले मेघ-
नादके कियेहुये इस शरबन्धनमें पड़नेका वृत्तान्त सुनकर बड़ीशीघ्रता
केसाथ यहाँआय आपलोगोंके सखित्वका पालनकरतेहुये व आपलोगों
के स्नेहसे ५१ इस महाघोर बाण बन्धन से हमने छुड़ादिया आपका
कार्य्य अनायासहीमें होगया परंतु अबआपलोग नित्यहीप्रमाद न करें
बरन बड़ीहोशियारी सेरहें ५२ क्योंकि राक्षसलोग अपने स्वभावहीसे
संग्राममें छलहीसे युद्धकरतेहैं व आपलोग तो शूरबीरठहरे इससेकेवल

सरलताही बल है छलकी बातें क्याजानें ५३ तिससे अब जो हुआ सो हुआ समरमें इनदुष्ट राक्षसोंका आपलोग कभी न विश्वास करें कि ये हमारे संग अधर्म्म युद्ध न करेंगे इस विषयमें यह मेघनादही उपमानहै कि राक्षसलोग बड़े कपटीहोतेहैं क्योंकि इसने कैसाछल आपलोगोंके संगकिया ५४ महाबली गरुड़जी इसतरह रामचन्द्रजीसे कह व उनको अच्छीतरहभेंट मधुर बाणीसेबोले ५५ हे सर्व धर्म्मज्ञ व शत्रुओंके ऊपर भी दयाकरनेवाले श्रीरामचन्द्रजी अब हम आपकी आज्ञापाय सुख पूर्व्वक अपने स्थानपर जायाचाहतेहैं ५६ हे राघववीर जबराके सब कर्म्म करचुकोगे तो हमारे सखित्व को जानोगे अभी सखित्व जानने के लिये कौतूहल न कीजिये ५७ बालक व वृद्धोंकोछोड़ बाणोंकी लहरों से लंकाका बिध्वंसकर व रावण शत्रुकोमार आपबहुत शीघ्र सीताजी को पावोगे ५८ शीघ्र बिक्रमी गरुड़जी रामचन्द्रजीसे ऐसाकह व उनदोनों भाइयोंको नीरोगकर तिन वानरोंके बीचमें ५९ बैठेहुये रामचन्द्रजी के प्रदक्षिणाकर व अच्छीतरह लपटकर मिल महाबीर्य्यवान् गरुड़जीआकाशमार्गहो पवनके समानबड़े बेगसे चलेगये ६० व रामचन्द्र लक्ष्मण दोनों भाइयोंको रोगरहित प्रसन्नचित्तदेख सबवानरयूथप सिंहवत्नाद करनेलगे व अपनी अपनी पूंछ कँपानेलगे ६१ व सबोंने तुरुही नगारे मृदंगबजाये व बहुत हर्षितहो शङ्खनाद भीकिया व जिसतरह पहिले इधरउधर कूंदते फाँदतेथे वैसेही फिर कूदनेफाँदनेलगे ६२ व और बहुत सैकरो हज़ारों वानर जो पर्व्वतके टुकड़े व वृक्षोंसे युद्धकरते थे बिबिध प्रकारके वृक्ष उखाड़ उखाड़ हाथोंमें ले ले खड़ेहोगये ६३ व महानाद करतेहुये व निशाचरोंको डरवातेहुये युद्धकरनेकी इच्छा कियेहुये वानर जाय फिर लंकाके चारोफाटकों परजुटे ६४ ॥

कुण्डलिका ॥

शाखामृग गण कृत महा नाद तुमुल अरुभीम ॥
भयहु निशाचर गणदुखद वानर नरसुखसीम ॥
वानर नर सुख सीमयथा वर्षाऋतु माहीं ॥
भीमनदत घनशब्द निशीथहि होत सुनाहीं ॥
सोसुनिके सब रजनिचरन के बाढ़ी मारवा ॥

गर्ज्जंत इत उत सकल बीररण प्रिय मृगशाखा ॥ १ । ६५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपंचाशत्तमस्सर्ग्गः ॥ ५० ॥

महा पराक्रमी तिन वानरोंका तुमुल शब्द राक्षसों सहित रावणने सुना १ व साफ गम्भीर वहशब्द बारबार सुनमन्त्रियोंके बीचमें बैठेहुये रावणने कहा २ कि देखो गर्ज्जतेहुये मेघोंके समान हर्षित बहुत वानरों का नाद सुनाई देता है ३ इसमें कुछभी सन्देह नहीं इनवानरोंकी बड़ी भारी प्रीति बिदितहोती है व उनलोगोंके बड़ेनादोंसे खारसमुद्र खल भलाताहै ४ दोनों भाई रामचन्द्र लक्ष्मणजी तो तीक्ष्णबाणों से बँधेहुये पड़ेहैं व वानर लोग इतना भारी शब्दकरतेहैं इससे हमको शंकाउत्पन्न होतीहै कि कोई औरही कारण है ५ राक्षसोंका ईश्वर रावण इसतरह मन्त्रियोंसे कह समीपके बैठनेवाले लोगोंसे बोला ६ कि इनसबवानरों का शोकके समयमें हर्षका कारण वहां जाकर शीघ्रही जानआवो ७ रावणकी ऐसी आज्ञापाय मन्त्रीलोग शहरपनाहके ऊपरचढ़ देखनेलगे सो महात्मासुग्रीवसेपालित वानरोंकी बड़ीभारी सेनादिखाईदी ८ व राम लक्ष्मण दोनोंभाई घोर बाणबन्धनसे छूटगयेथे व महाभाग्यवाले दोनों जने सुन्दर उठेखड़ेथे जिनको देख राक्षसों को बड़ाभारी बिषाद हुआ ६ इससे अति भयभीतहो शहरपनाह परसे उतर उदासीन मुखकर सब रावणके निकटआये १० बचन कहनें में बड़ेचतुर राक्षसों ने रावण का अप्रिय बचन यथावार कहा ११ कि जिनदोनों राम लक्ष्मणनाम भाइयों को मेघनादने बाणोंसे बांधाथाकि जिससे उनके भुजाहिलभीनहीं सक्ते थे १२ वे दोनोंजने समरभूमि में इससमय शरबन्धन से छूटेहुये दिखाईदेते हैं जैसेफांसीको काटहाथी मत्तहो खड़ेहोजाते हैं सो क्यों न हो वे तो गजेन्द्रसम बिक्रमी हैं १३ तिन राक्षसोंका ऐसा बचनसुन महाबली राक्षसेन्द्र चिन्ता व रोषके मारे बनाय बिबर्ण मुख होगया १४ व कहनेलगा कि मेघनादने समरमें अच्छीतरह मानमर्दनकर अतिघोर बरदान पायेहुये विषधर सर्पों के समान सफल व सूर्य्यवत्प्रकाशित बाणों से बांधा था १५ यदि ऐसे शरबन्धन से भी हमारे शत्रु छूटगये तो हम अब उनके बलमें सन्देह मानते हैं नहीं जानते कि ठीक ठीक

उनमें कितना बलहै १६ देखो बासुकिनाग के तेजसे युक्तबाण निष्फल होगये जोकि हमारे शत्रुओंको फिर उन्होंने प्राणदेदिये १७ यह कह अति क्रुद्ध हो सर्पके समान श्वास लेताहुआ रावण राक्षसों के बीच में धूम्राक्ष नाम राक्षससे बोला १८ किहे सब राक्षसोंमें भीमविक्रम धूम्राक्ष तुम बड़ीभारी सेना अपनेसङ्गले वानरों सहित रामचन्द्रको मारडालने के लिये शीघ्रही जाओ १६ बुद्धिमान् राक्षसेन्द्र की ऐसी आज्ञा पाय उसकी प्रदक्षिणाकर धूम्राक्ष राजमन्दिरसे चला २० व जाय सेनाध्यक्ष से बोला कि अबसेना शीघ्र तैयारकरो जो युद्धकरनेपर तैयारहै उसको देर करनेसे क्याहै २१ धूम्राक्षके बचनसुन सेनाध्यक्ष ने रावणकी भी आज्ञाले अपनी सब सेनाको जानेकेलिये आज्ञादी २२ तो वे घोररूप राक्षसलोग घण्टाबांध व हर्षितहो बड़ा नादकर धूम्राक्ष की चारोंओर आय खड़ेहुये २३ व विविधप्रकारके आयुध हाथोंमेंलिये शूल मुद्गर भी हाथोंमें ग्रहणकिये गदा पटा दण्ड व लोहदण्ड मूसर आदि लिये २४ व बड़े मुद्गर धनवांसी भाला फांसी फरसा आदि हथियार लिये सब राक्षस बादरोंके समान गर्ज्जतेहुये चले २५ और बहुतसे राक्षसव्याघ्र व्याघ्रोंके समान दुःखसेसहनेके योग्य कवच बखतर धारणकिये ध्वजा पताकाओंसे भूषित व सुवर्णके भूषण पहिनेहुये गदहों को रथोंमें नहे २६ व परमशीघ्रगामी घोड़ेभी कोईकोई रथोंमें नहे व मतवाले हाथी भी रथोंमें नहे चले २७ भेड़िया व सिंहकेसे मुखवाले सुवर्णभूषित गदहे नहे दिव्य रथपर गदहाकासा तीक्ष्णशब्द करताहुआ धूम्राक्ष चढ़ा २८ महावीर्य्य धूम्राक्ष हँसताहुआ बहुतसे राक्षसोंको सङ्गलिये पश्चिमवाले फाटककी निकला जिसपर कि हनुमान्‌जी जुटेथे २६ कठोर शब्दवाले व गदहे जुतेहुये उत्तम रथपर सवारहो महाघोर व भयङ्कररूप राक्षस को जातेहुयेदेख ३० आकाशमें प्राप्त क्रूरशकुन रोंकनेलगे जैसेकि प्रथम तो रथके ऊपर एक बड़ाभयङ्कर गृध्र ऊपरसे गिरा ३१ व पताका के ऊपर मालाकार पांति बांधेहुये गृध्रकूदे व तिसके आगे भूमिपर रुधिर से भीगाहुआ श्वेतरङ्गका कवन्धगिरा ३२ व बड़ेज़ोरसे शब्दकरताहुआ कवन्ध धूम्राक्षके सामने गिरायागया व रुधिरकी वर्षा होनेलगी पृथ्वी चलउठी ३३ व बज्रकेसमान शब्दकरताहुआ वायु सम्मुखसे बहनेलगा

व सबदिशाओंमें अन्धकार छायगया इससे कुछभी प्रकाश न रहा ३४ राक्षसोंको भयकारी अतिघोर उत्पात उत्पन्नदेख धूम्राक्ष बहुत व्यथित हुआ व धूम्राक्षके आगे चलनेवाले सब राक्षस मूर्च्छित होगये ३५ ॥
चौ० महाभयङ्कर रूप निशाचर। बहुराक्षस सँगलिये न कछुडर॥
चल्यहुरामपालित वानरदल। लख्यहु भलीबिधिसोंनिश्चरखल १।३६॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेएकपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५१ ॥

भीम पराक्रमी धूम्राक्ष को आतेहुये देख युद्ध की इच्छा किये अति हर्षित सब वानर नादकरनेलगे १ घोरवृक्षोंसे लड़तेहुये वानरों व शूल मुद्गरादि अस्त्र शस्त्रोंसे युद्ध करतेहुये राक्षसोंका बड़ाभारी तुमुलयुद्ध होने लगा २ राक्षसोंने बहुतसे वानरोंको काटडाला व वानरोंने वृक्षोंसे बहुत से राक्षसोंको चूर्णकर भूमिके बराबर करदिया ३ फिर क्रोधयुक्तहो राक्षसोंने पैने घोर कङ्कपत्र लगेहुये व सीधे चलनेवाले बाणोंसे वानरोंको मारा ४ व वे वानरलोग भयङ्कर गदाओं व शूल पटा मुद्गरों व घोरपरिघों व चित्र बिचित्र त्रिशूलोंसे ५ राक्षसोंके विदारित महाबली वानर न सह सकनेके कारण हर्षितहो निर्भय सबयुद्धके कर्म्म करनेलगे ६ जबशरों से उनकेअङ्ग कटनेलगे व शूलोंसे देह निर्भिन्नहुई तो सब वानरयूथपों ने झपट झपट बड़े बड़े वृक्ष व पर्ब्बतकी शिला लेलीं ७ व वे वानर बीर अपना अपना नाम कहकह व बार बार गर्ज्जतेहुये राक्षसबीरोंको मथने लगे ८ इसतरह शिलाओं व वृक्षोंसे वानरों व राक्षसोंका बड़ाही भारी युद्धहुआ ९ कोईकोई राक्षस जीतजाने से प्रसन्न वानरोंसे मथितहुये व कोईकोई राक्षस मुखोंसे रुधिर डाकनेलगे १० किसी किसी राक्षसकी पसुलियां टूटगईं व कोई कोई वृक्षोंकी मारखानेसे टूटफूट एकठिकाने जापड़े व कोईकोई शिलाओंसे चूर्णहीहोगये व कोईकोई वानरोंके दांतों से चीड़फाड़ डालेगये ११ किसीकिसी राक्षसकी ध्वजा तोड़डालीगई व किसी किसीके खड्ग तोड़डालेगये व किसी किसीके रथ बिध्वंस कियेगये इससे सबराक्षस बहुत व्यथितहुये १२ वानरों की चलाई हुई शिलाओं से मरे हुये पर्ब्बताकार गजेन्द्रों से व मथित कियेहुये घोड़ों से व उनके सवारोंसे समरभूमि पूर्णहोगई १३ भीम विक्रान्त वानरों ने शीघ्रता

के साथ टहल उछल अपने नखों से राक्षसों के मुख नोचफोंच डाले १४ व सबों के शिरके बाल भी उखाड़डाले इससे बहुत व्याकुलहो रुधिर बहते हुये पृथ्वी पर गिरपड़े १५ इस दुर्दशा से व जो बचे बचाये राक्षस बड़े भीम विक्रमथे वे वजरस्पर्श के समान लातोंसेही वानरों को प्राप्तहुये १६ व बहुत से बेगवान् राक्षस अति बेगवान् वानरों की लात मुका दांतों से व वृक्षोंसे मारेहुये मृतक होगये १७ व बाकी सब भाग खड़े हुये तब अपनी सेना भागी हुई देख राक्षसों में श्रेष्ठ धूम्राक्ष मारे क्रोधके वानरोंकोभी भगानेलगा १८ व कोईकोई वानरतो बाणोंके लगने से गिरे व उनकेअङ्गोंसे रुधिर बहनेगला व कोईकोई मुद्गरोंसे मारेगये इससे धरणीपर गिरपड़े १९ कोईकोई परिघोंसे मारेगये कोई कोई धनवासियोंसे व कोईकोई पटासे इससे बिकलहो निर्जीव होकर गिरपड़े २० व कोई कोई वानर रुधिर से भीगेहुये पृथ्वीपर मरकर गिरपड़े व कोईकोई क्रोधयुक्त राक्षसों से मारेजानेके कारण भाग खड़ेहुये २१ व किसी किसीके हृदय नोच लियेगयेथे व एक करवँट लेटा दियेगयेथे व किसीकिसीके पेटमें त्रिशूल लगेथे इससे उनकी आँतें निकलपड़ीथीं २२ इसतरह शिला वृक्ष व बहुत शस्त्रास्त्र भराहुआ राक्षसों व वानरों का बड़ाभारी घोरयुद्ध हुआ २३ धनुषकी रोदाका शब्द वीणाके शब्दकेसमान व मारेगयेहुये योधोंकी हुचकी तालकेसमान व मन्दमन्द वीरोंका गर्ज्जना गीतकेसमान इसतरह वहयुद्ध गन्धर्व्वविद्याके समान शोभित हुआ २४ हाथमें धनुष लिये धूम्राक्ष ने हँसकर समरमें सब वानरों को बाणोंकोवर्षा करनेसे दशोदिशाओंको भगादिया २५ धूम्राक्ष राक्षस से भगाई व व्यथित वानरोंकी सेनादेख बड़ाक्रोधकर हनुमान्जी बड़ीभारी शिला हाथमेंले उसकेसामने दौड़े २६ मारेक्रोधके दूने अरुणनेत्र किये अपनेपिता पवनके तुल्य पराक्रमी हनुमान्जीने वहशिला धूम्राक्षकेरथ के ऊपर ज़ोरसे मारी २७ आतीहुई व रथपर गिरतीहुई शिला देख गदा हाथमेंलिये धूम्राक्ष अपने रथसे झट उतर जाय भूमिमें खड़ाहुआ २८ व वहशिला चक्र कूवर ध्वजा धनुष बाण सहित धूम्राक्षके रथको चूर्णकर जायपृथ्वीमें गिरी २९ तब हनुमान्जी उसके रथको छोड़ डार पल्लवसहित वृक्षोंसे राक्षसोंका बिध्वंस करने व उनको भगानेलगे ३०

वृक्षोंके लगनेसे राक्षसोंके शिरफूटगये इससे रुधिरसे भीजेहुये वे पृथ्वी पर गिरपड़े ३१ व बहुतसे भागगये इसतरह राक्षसोंको मारमारकेभगाय हनुमान्जी पर्व्वतका बड़ाभारी शिखरले धूम्राक्षके सामनेदौड़े ३२ तिन हनुमान्जीको सामने दौड़े आतेहुये देख अति वीर्य्यवान् धूम्राक्ष गदा उठाय हनुमान्जीके सामनेदौड़ा ३३ व अतिक्रुद्ध हनुमान्जीके मस्तक में बहुत कांटोंसे बँधीहुई गदा धूम्राक्षने मारी ३४ व वहभीम वेगवाली गदा हनुमान्जीके मस्तकमें लगी परन्तु पवनसमान बलवान् हनुमान् जीने उस प्रहारकी ओर कुछभी न ध्यानकिया ३५ व जो पर्व्वत का बड़ाभारी शृङ्ग उन्होंने उठायाथा धूम्राक्षके शिरपर मारा कि पर्व्वतशृङ्ग से ताड़ित होनेके कारण उसके सबअङ्ग विदीर्णहोगये व फटेहुये पर्व्वत के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा प्राण निकलगये ३६ धूम्राक्षको माराहुआ देख मरनेसे बचेहुये राक्षस वानरोंकी मारसे ऊबेहुये लङ्काको भागगये ३७ व पवनतनयजी शत्रुओंकोमार रुधिरकी नदियांबहाय शत्रुकेमारने का श्रम वानरोंसे पूजित होनेके कारण मिटायफिरबहुत हर्षितहुये ३८॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेद्विपञ्चाशत्तमस्सर्गः ॥ ५२ ॥

धूम्राक्षको माराहुआसुन राक्षसोंका राजा रावण बड़ाक्रोधकर सर्प के समान श्वासलेनेलगा १ बड़ीदेरतक लम्बीसांसलेले मारेक्रोधके व्याकुलचित्तहो महाबली व क्रूरस्वभाव वज्रदंष्ट्रनाम राक्षससे बोला २ हे वीर सबराक्षसोंको सङ्गले तुम शीघ्रही जाओ व दशरथके पुत्र रामचंद्र को व वानरोंसहित सुग्रीवको मारडालो ३ बहुत अच्छा ऐसाही करेंगे ऐसाकह बड़ा मायावी राक्षसोंका ईश्वर वज्रदंष्ट्र बहुतसे राक्षस सङ्गले चला ४ उसकेसङ्ग औरभी बहुत हाथी घोड़े गदहे ऊँट आदि जीवथे व पताका ध्वजादिक चिह्नों से युक्त बहुत रथोंसे भी भूषितथा ५ व वह आपतो बिचित्र बजुल्लाबांधे बड़ासुन्दर मुकुट शिरपर धरे कवच धारण किये धनुर्व्वाणलिये बड़ी शीघ्रताकेसाथ युद्धकरनेकोचला ६ व पताका से भूषित चमकतेहुये तपाये सुवर्णसे भूषित ऋष्टि तोमर चित्रबिचित्र व चिकने मूसर ७ धनवासी धनुष सांग पटा खड्ग गदा व पैने परसाआदि से युक्त रथकी प्रदक्षिणाकर व उसपर चढ़ सेनापति वज्रदंष्ट्र चला ८ व

बहुत राक्षसश्रेष्ठ सुवर्णके भूषण धारण करनेसे प्रकाशित हाथोंमें शस्त्र धारणकिये व बिचित्रवस्त्र धारणकिये पैदरही उसकेसङ्ग चले ६ व बड़े मतवाले व शूरहाथीभी चले देखनेमें पर्ब्बताकारथे सबकेसब युद्धमें बड़े कुशलथे उनपर भाला अंकुशादि धारणकिये लोगचढ़ेथे १० व औरभी सबलक्षणयुक्त महाबली शूरबीर चढ़ेथे ११ यह राक्षसोंकी बड़ी भारी सेना चलनेकेसमय बर्षाकालके बिजुलीसहित मेघोंकेसमान शोभितहुई १२ व जिसदक्षिणके फाटकपर अङ्गदजी जुटेथे उसीओर निकली १३ निकलीहुई उससेनाको बहुतसे अशकुन दिखाईदिये जैसेकि बिना बादरके आकाशसे लूक गिरनेलगे १४ व शृगाललोग मुखोंसे अग्निकी ज्वाला निकालने व अपनी जातिका शब्द करनेलगे व सब मृगगण राक्षसोंका मरणही बतानेलगे व चलतेहुये योधा अकस्मात् गिरगिर पड़नेलगे १५ इतनेभी उत्पातहुये पर उनकोभी देख महातेजस्वी बज्रदंष्ट्र संग्राम करनेकी इच्छा किये धैर्य्य धारणकर चलाहीगया १६ राक्षसोंको दौड़तेहुये आते देख सबवानर बहुत हर्षितहो बड़ा भारी नाद करनेलगे जिससे सब दिशा पूर्णहोगईं १७ तिसकेपीछे परस्पर मार डालनेकी इच्छाकियेहुये वानरों व राक्षसोंका बड़ाभारी भयङ्करयुद्धहुआ १८ दोनोंओरके लोग ऐसे उत्साहीथे कि कर चरण शिरआदि अङ्गकट भी जातेथे पर फिरभी दौड़तेथे व रुधिर सबअङ्गोंमें लगायेहुये पृथ्वीपर गिरगिर पड़तेथे १९ कोई कोई शूर परिघाकार लम्बीबाहें धारणकिये एक दूसरेको लड़तेलड़ते लपटजाते फिर बिबिधप्रकारके शस्त्रास्त्रचलाने लगते समरसे कभीनहीं लौटते २० वृक्षों व शिलाओं व शस्त्रोंकामहाघोर शब्द सुनाई देताथा जिसके सुननेहीसे कातरोंकी छाती फटजाती थी २१ व रथोंकी पहियोंका शब्द समुद्रके शब्दके समान होताथा व शङ्ख तुरुही मृदङ्गादिकोंका बड़ा तुमुलशब्द हुआ २२ कोईकोई राक्षस व वानर अस्त्रफेंक बाहां जोटी करनेलगे तब लातों मूकों वृक्षोंसे कूटने लगे ऐसाहोनेसे बहुतसे राक्षस लातों जांघोंसे मारेगये कि उनके देह अङ्गभङ्ग होगये २३ व युद्धमें महादुर्म्मद वानरोंने बहुत राक्षसों को शिलाओं से चूर्णकरदिया इसदशा को देख बज्रदंष्ट्र वानरों को डरवाने लगा २४ व प्रलय समय के यमराज के समान सब वानरों को पकड़

पकड़ खानेलगा तब बड़ेबड़े बलवान् व नानाप्रकार के आयुध धारण
किये राक्षस लोग २५ मारे क्रोधके मूर्च्छित हो वानरों को मारनेलगे
तब रणमें महाधृष्ट अङ्गदजी उन राक्षसोंको मारनेलगे २६ उससमय
अङ्गदजीने दूना क्रोध किया जैसे प्रलयकाल का सम्वर्त्तका नामपवन
बड़ा क्रोधकर बहने लगता है इससे बड़े बड़े वृक्ष उखाड़ बड़े ज़ोर से
राक्षसोंके ऊपर फेंकनेलगे २७ क्रोधकेमारे लालनेत्रकर इन्द्रतुल्य परा
क्रमी अङ्गदने राक्षसोंको ऐसा बिध्वंसकिया जैसे सिंह छोटेछोटे मृगोंका
करताहै २८ यद्यपि राक्षसलोग बड़ेभयंकर बिक्रमीथे परंतु महाप्रचण्ड
अङ्गदजीके मारनेसे शिरभिन्न होजानेके कारण कटेहुये वृक्षोंके समान
भूमिमें भहरापड़े २९ वानरों व राक्षसोंके रथों ध्वजों घोड़ों व शरीरोंसे
रुधिरसे पूर्णहोनेके कारण वह रणभूमि अतिभय कारिणी होगई ३०
हार बजुल्ला वस्त्र व कटेहुये देहोंसे भूषित रणभूमि साफ नक्षत्रादि युक्त
शरदऋतुकी रात्रिकेसमान शोभितहुई ३१ अङ्गदजीके बेगसे वहराक्षसी
बड़ी भारीसेना पवनकेबेगसे कँपतेहुये बादरोंके समानकँपनेलगी ३२॥
इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रिपञ्चाशत्तमस्सर्गः॥ ५३॥
अङ्गदके बलसे अपनी सेनाका नाशहोनेसे महाबली बज्रदंष्ट्र राक्षसने
बड़ाही क्रोधकिया १ व अतिघोर इन्द्रके बज्रके समान शब्दित धनुष
चढ़ाय वानरोंकी सेनापर बाणोंकीबर्षा करनेलगा २ व नानाप्रकारके
आयुध धारणकिये बड़े बड़े राक्षसलोग भी रथोंपर चढ़चढ़ समरमें युद्ध
करनेलगे ३ व वानरोंके शूरभी शिला हाथोंमें ले ले इकट्ठे होकर चारों
ओरसे युद्धकरनेलगे ४ तिससमरमें मुख्य मुख्य वानरोंके ऊपर राक्षस
लोगोंने हज़ारों आयुध चलाये ५ व मत्त हाथियोंके आकारके महाशूर
बीर वानरोंनेभी राक्षसोंके ऊपर बड़े बड़े वृक्ष व शिलाफेंकीं ६ इसतरह
समरमें सेनलौटनेवाले युद्धकरतेहुये शूर राक्षसोंका बड़ाभारी युद्धहुआ
७ जिसमें किसी किसी के तो शिरहीकटगये किसीके हाथपैर व शस्त्रोंसे
अङ्गकटनेके कारण रुधिर बहनेलगा ८ वानर व राक्षसलोग बाणोंके
लगनेसे इतनेमरे कि हज़ारों कङ्क गृध्र व शृगाल उनकेऊपर खड़े हो हो
व बैठ बैठ खानेलगे ९ व डरपोंकों को डरवानेवाले कवन्ध भी आकाश
सेगिरने लगे व भुज हाथ शिरकटेहुये व सब शरीर कटे हुये वानर व

राक्षस भी पृथ्वी पर गिरे १० इसतरह बड़ी देरतक युद्ध होता रहा वानरोंकी सेनाने राक्षसोंकी सेनाको ऐसामारा कि वज्रदंष्ट्रके देखतेही देखते सब राक्षसोंकी सेना भाग खड़ीहुई ११ वानरोंसे मारेहुये अति व्याकुल राक्षसोंकोदेख प्रतापवान् वज्रदंष्ट्र मारेक्रोधके लालनेत्रकर १२ धनुर्बाण हाथमेंले वानरयूथपोंको भयभीत कराताहुआ पैठा व कङ्कपत्र लगेहुये सीधे चलनेवाले बाणोंसे वानरोंको विदीर्ण करनेलगा एकही बाणके मारने से उन्तीस वानर मरने लगे १३ महा प्रतापवान् वज्रदंष्ट्रने जब इसतरह वानरों को मारा तो शरोंसे सर्व्वाङ्ग कटने के कारण वानर लोग बहुत घबड़ाये १४ व सबके सब अंगदकी शरणमें गये जैसे प्रजालोग व्याकुल होने से ब्रह्माके शरण में जाते हैं १५ वानरों को भागतेहुये देख अंगदजी ने बड़े क्रोध से निहारते हुये वज्रदंष्ट्र को घोर निहारा १६ वज्रदंष्ट्र व अंगद दोनों परस्पर लड़नेलगे यहांतक कि परमक्रुद्धहो सिंह व मदान्ध हाथी के समान इधर उधर कूदने फांदने व भिड़ने लगे १७ तब महाबलवान् अंगदजीके वज्रदंष्ट्रने सुकुमार स्थलोंमें अग्नि शिखा के समान चमकते हुये लाखबाण मारे १८ जिससे अंगद के सर्व्वाङ्गसे रुधिर बहने लगा परन्तु महाबलवान् बालितनय ने बड़ा भारी एकवृक्ष उखाड़ बड़ेजोर से अजमाय भीमपराक्रमी वज्रदंष्ट्र के ऊपर चलाया १९ तिस वृक्षको अपने ऊपर आतादेख वज्रदंष्ट्र ने बड़ी फुरती व सावधानीके साथ बाणोंसे सैकरों खण्ड करडाला इस से छिन्न भिन्नहोकर वह वृक्ष भूमिमें गिरपड़ा २० तब वज्रदंष्ट्रका इतना बड़ा विक्रम देख वानरों में श्रेष्ठ अङ्गद जी ने बड़ाभारी पर्व्वत उठाय उसके ऊपर फेंक बहुत ज़ोरसे नाद किया २१ तिसको आता हुआ देख महा वीर्य्यवान् वज्रदंष्ट्र झट पट रथसे उतर हाथमें गदालिये बड़ीसावधानी से पृथ्वी पर अलग खड़ाहोगया २२ व अङ्गद का फेंका हुआ पर्व्वत समर भूमिमें जायरथके ऊपर गिरा जिससे पहिया बकौरा गुम्मजघोड़े सहित रथचूर्ण होगया २३ तब शीघ्रही बहुत वृक्षोंसे भूषित और शिखरलै अङ्गदजीने वज्रदंष्ट्रके शिरपरगिराया २४ उसके लगनेसे वज्रदंष्ट्र के मुखसे रुधिर बहनेलगा इससे मूच्छित हो दोघड़ी तकगदा को छातीमें लगाये वह ऊधी सांसे लेतारहा हाथपैरों का चलानाबन्द

होगया २५ जबउसकी मूर्च्छाजागी तोआगे खड़ेहुये अंगदजीकी छती में बड़ा क्रोधकर गदा उठाय उसने मारी २६ तिसकेपीछे गदा को तो अंगदने पकड़ अलग फेंकदिया व मूकों से लड़नेलगे उसनेभी गदादि अस्त्र अलग धरदिये वानर व राक्षसदोनों परस्परलड़नेलगे २७मारे प्रहारोंके श्रमसे दोनोंजनोंके अंगोंसे रुधिर बहनेलगा ऐसा विक्रम कर दोनोंलड़े कि लड़तेहुये मङ्गल व बुधके समान शोभितहुये २८ तिसके पीछे फिर परमतेजस्वी वानरोंमेंश्रेष्ठ अङ्गदजी एकवृक्षलेकर खड़ेहोगये जोकि पुष्प फलोंसे युक्तहोगये २९ व बज्रदंष्ट्र ने भी ऋषभके चर्म्म से बनीढाल व किङ्किणी लगीहुई नङ्गीतलवार हाथमेंली ३० तबवानर व राक्षस दोनों नानाप्रकारके पैंतड़े इधर उधर बदलनेलगे व शब्द करकर एकदूसरेको मारनेलगे क्योंकि दोनों अपनी अपनी जयचाहतेथे ३१ बड़ी देरतक इसतरह युद्ध करतेकरते थककर टिहुनीके बलदोनों पृथ्वी पर बैठगये उससमय घावोंके बहनेसे फूलेहुये टेसूके वृक्षकेसमान शोभितहोते ३२ एक निमेषान्तरहीभरमें वानरोंमें हाथीरूप अङ्गदजीमारे क्रोधके लालनेत्रकिये दण्डासे मारेहुये सर्पकेसमान उठखड़ेहुये ३३ व मलीमलाई बाढ़धराईहुई सुन्दर तलवार हाथमेंले महाबलवान् बालितनयने बज्रदंष्ट्रका बड़ाभारी शिर काटडाला ३४ रुधिरसे डूबेहुये उस बज्रदंष्ट्रके शरीरके दोखण्डहोगये एक खड्ग से कटाहुआ उलटे नेत्रयुक्त सुन्दरशिर व एकलुण्ड ३५ व वानरोंकी मारसे डरेहुये राक्षस बज्रदंष्ट्र को माराहुआदेख मोहितहो सबकेसब लङ्काकी ओरको भागे ३६ सबके मुखबनायबिषण्णहोगये व लज्जाकेमारेसबोंने नीचेकोमुखकर लिया ३७॥

कुण्डलिका ॥

महाप्रतापी बालिसुत समरमध्य ललकारि ।
बज्रदंष्ट्र कहँहनिभल कपिगण कीन सुखारि ॥
कपिगण कीन सुखारि कोशगण मध्यविरामा ।
पूजितहे सबभाँति कियोसुत हर्ष समाजा ॥
आपहु हर्षित भयहु यथासुरपति गतकापी ।
देवनसँग हरषात सबनमहँ महाप्रतापी १ । ३८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुःपञ्चाशस्सर्गः ॥ ५४ ॥

अङ्गद द्वारा वज्रदंष्ट्र को मारा सुन रावण अपने समीपही बैठेहुये सेनाध्यक्षसे बोला १ कि सबशस्त्रास्त्र चलानेमें निपुण अकम्पनको आगे कर शीघ्रही सबराक्षस युद्धकरनेको जावें २ क्योंकि यह अकम्पन समरमें सबका निरीक्षक रक्षक प्रेरक होनेसे अतिसत्तमहै व नित्य हमारा ऐश्वर्य्यचाहता व इसको समर सदाप्रियहै ३ व यह राम लक्ष्मण दोनों भाइयों व महाबली सुग्रीवकोभी जीतलेगा व महाघोर अन्यवानरोंकोभी मारेगा ४ रावणकी आज्ञा को अङ्गीकार कर महाबली व शीघ्रपराक्रमी बलाध्यक्ष ने सेनाभेजी ५ सबनानाप्रकारके आयुधलिये भयङ्करनेत्रवाले व भीमदर्शन राक्षसलोग सेनाध्यक्षकी प्रेरणासे अकम्पनके सङ्ग चले ६ व मेघाकार मेघ वर्ण मेघों के समान महाशब्द करता हुआ अकम्पन तप्त सुवर्ण से भूषित रथ पर सवारहो ७ घोर राक्षसों के मध्यमें अकम्पन चला यह बड़े भारी भी समरमें देवताओं के भी कँपाने के योग्य नहीं था ८ इसीसे इसका अकम्पन नाम था वह तिन राक्षसों के बीच में भारे तेजके सूर्य समान प्रकाशित होकर चला युद्ध करने की इच्छा से क्रोधकर दौड़ते हुये अकम्पनके ६ रथमें जुतेहुये घोड़ोंको अकस्मात् दीनता हो आई व युद्ध करनेको प्रसन्न चलाजाता था अकम्पनका भी बावाँनेत्र फरकने लगा १० व मुखकावर्ण विवर्ण होगया स्वर गद्गद होउठा सुन्दर समय था परन्तु बदरी हो आई प्रचण्ड पवन बहने लगा ११ व सब खग मृग भयंकर शब्द बोलनेलगे परन्तु वह तो बड़ा मनस्वी था सिंहसमान तो कन्धे थे व शार्दूल समान विक्रमी था १२ इससे उन उत्पातोंकी ओर कुछभी न ख्यालकर समरभूमिको चलाही गया इसतरह राक्षसों सहित जाते हुये अकम्पन के साथ १३ बड़ा भारी शब्द हुआ जिससे जानों समुद्र भी चलायमान होगया व उसी शब्द से वानरों की बड़ी भारीसेना डरकर गड़बड़ा उठी १४ वृक्ष व पर्वतों कोही अस्त्र बनाये युद्ध करनेको तैयार तिन राक्षसों व वानरों का महारौद्र युद्ध होनेलगा १५ वानर तो रामचन्द्रजी के अर्थ व राक्षस रावणके अर्थ अपने अपने प्राण त्यागा चाहते थे उस समरमें सब अतिबलु व सब शूर पर्वताकार थे १६ वानर व राक्षस दोनों परस्पर मारही डालनेकी इच्छा करतेथे अतिवेगवाले तिनलोगोंका शब्द समर

में १७ सुनाई देनेलगा क्योंकि इधर वानर उधर राक्षस बड़ा कोपकर गर्ज्जतेथे व दोनों सेनाओंकी धूमसे लाललाल बड़ीभारी धूलिउड़ी १८ जिससे कि दशोदिशा पूरितहोगईं व धूलि कुछ ललाई लियेहुईथी १९ ऐसी सघन रज उड़ी कि राक्षस वा वानर कोईभी प्राणी नहीं दिखाईदेते थे न ध्वजा दिखाईदेती न पताका न ढाल न घोड़ा २० न आयुध न रथ कुछभी नहीं दिखाईदेताथा समरमें गर्ज्जतेहुये वानरों व राक्षसोंका बड़ा भारी शब्द २१ युद्धमें सुनाई देताथा परन्तु रूपकिसीके नहीं दिखाईदेते थे यहांतक कि न देख पड़नेके कारण क्रुद्धहो वानरलोग वानरोंकोही मारनेलगे २२ व उस अन्धकारमें राक्षसलोग राक्षसोंकोही मारनेलगे वानर व राक्षस दोनों अपनी अपनी जातिवालोंको व अपनेअपने शत्रुओं कोभी मारतेथे २३ यहांतक लड़े कि सब पृथ्वी रुधिरसे ओदीहोगई कि जिसमें अनाय कीचड़ होगया जब रुधिरसे सींचउठी तो धूलि जातीरही २४ लोथोंकेमारे वहांकी सबपृथ्वी पूर्णहोगई २५ व वृक्ष गदा प्रास शिला परिघ तोमरों से राक्षस व वानर बड़ा जोर करकर परस्पर युद्ध करतेथे २६ परिघाकार लम्बीबाहोंसे युद्धकरतेहुये वानरलोग पर्व्वताकार राक्षसोंको बड़ेपराक्रमसे मारनेलगे २७ व राक्षसलोगभी बड़े क्रुद्ध होकर प्रास तोमरादि हाथोंमेंलिये परम दारुण शस्त्रास्त्रों से वानरों को मारनेलगे २८ तब राक्षसोंका सेनापति अकम्पन बड़ा क्रोधकर भीम विक्रमी सबराक्षसोंको हर्षानेलगा २९ व वानरलोग भी बड़ेबड़े वृक्ष व शिलाओंसे राक्षसोंको मारमार उनके अस्त्र शस्त्रादि छीन लेनेलगे ३० इसतरह युद्ध होताहीथा कि कुमुद नल मैन्दादि वानरलोग क्रोधकर बड़ावेग करनेलगे ३१ ये वीर बड़ेबड़े वृक्षलेले राक्षसों की सेनाओंको मारनेलगे लीलापूर्व्वक यहांतक वृक्षादिचलाये कि बहुतसे राक्षस मृतक होगये औरभी नानाप्रकारकेअस्त्रोंसे राक्षसोंकामान मर्द्दनकरडाला ३२॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेपंचपंचाशस्सर्गः॥ ५५॥

वानरोंका किया बड़ाभारी कर्म्मदेख अकम्पनने समरमें बड़ा क्रोध किया १ यहांतक कि मारेक्रोधके मूर्च्छितसा होगया फिर अपना धनुष कँपाता व शत्रुओंका ऐसा कर्म्मदेख अपने सारथिसे बोला २ हे सारथे

जहां ये बड़ेभारी बलवान् वानरलोग राक्षसोंको मारेडालते हैं उसी स्थानपर हमारारथ खड़ाकरो ३ जिसमें बड़ेबलवान् व भीम कोपकारी वृक्ष पर्व्वतोंको अस्त्रबनाये ये वानरलोग हमारेसामने खड़ेरहैं तो भला इनकोभी कुछ मालूमहो ४ हम समरमें बड़ाई चाहनेवाले इन बलवान् वानरोंको माराचाहतेहैं क्योंकि इन्हींलोगोंकी मारीहुई सब राक्षसीसेना दिखाई देतीहैं ५ इतनाकह अकम्पनने दूरहीसे रथपर चढ़ेहीचढ़े वानरों के ऊपर बाणोंकी बर्षा करनेलगा ६ अकम्पनने ऐसी बाणवृष्टि की कि कोई वानर वहां खड़ेही न होसके फिर समरमें उसके सम्मुख युद्धकरने को कौनकहै अकम्पनके बाणोंसे छिन्नभिन्नहो सब वानर भागखड़ेहुये ७ भागनेपरभी उनकेपीछे अकम्पनके बाण चलेजाते व मृत्युको प्राप्तहोते-हुये अपनी जातिवालोंको देख महाबलवान् हनुमान्जी अपने मुरचापर से दौड़े व जाय वहां प्राप्तहुये ८ तिन महावानरको देख सब वानर इकट्ठेहो समरमेंजाय हनुमान्जीको घेरकर खड़ेहोगये ९ व हनुमान्जी को निकट खड़ेदेख सब वानर फिर बड़े बलवान् होगये क्योंक महा-बलवान् हनुमान्जीके आश्रयी हुये १० अकम्पन ने भी हनुमान्जीको आये व बड़ाडाटसे सामने खड़ेदेख उनकेऊपर बाणोंकीवर्षा करनेलगा जैसे इन्द्रजीकी आज्ञासे बर्षाकालमें मेघलोग जलकीधारा छोड़तेहैं ११ परन्तु महाबली हनुमान्जी अकम्पनके मारेहुये बाणोंका कुछभी न ख्यालकर केवल अकम्पनके बधका बिचार करनेलगे १२ व महातेज-स्वी हनुमान्जी बड़ेज़ोरसे हँसकर पृथ्वीको कँपातेहुये तिस राक्षसके ऊपरका दौड़े १३ जैसेही गर्ज्जकर तेजसे देदीप्यमान हनुमान्जी उ-सकी ओर दौड़ेहैं कि अग्निके समान उनका रूप दुर्द्धर्ष होगया १४ बड़ाक्रोध कर हनुमान्जीने जाना कि हमकुछ शस्त्रास्त्र हाथमें नहीं लिये हैं इससे झपटकर एकपर्ब्बत उखाड़लिया १५ एकहीहाथसे बड़ाभारी पर्व्वत उखाड़ व महानादकर अतिवीर्य्यवान् पवनतनय ने उसपर्व्वत को घुमाया १६ व अकम्पन राक्षसके सामनेदौड़े जैसाकि पूर्व्वसमयमें इन्द्रजी नमुचिनाम दैत्यकेसामने बज्रलेकरदौड़ेथे १७ अकम्पनने देखा कि ये बड़ाभारी पर्व्वतलिये चलेआतेहैं इससे उसने अर्द्ध चन्द्राकार बाणोंसे दूरहीसे खण्डखण्ड करडाला १८ उसपर्व्वतको राक्षसके बाणों

से विदीर्ण आकाशमें बिथरकर इधरउधर गिरतादेख हनुमान्जी मारे क्रोधके मूच्छित होगये १६ व बड़ाभारी रोष व अहङ्कार कर पर्वत समान ऊँचे अश्वकर्णनाम वृक्षकेनीचेजाय बड़ी शीघ्रताके साथ उखाड़ लिया २० शाखा स्कन्ध सहित उसअश्वकर्ण को अच्छीतरहले हँसकर हनुमान्जीनेघुमाय एकबारभूमिमें पटकदिया २१ व उसको बड़ेजोरसे भूतल में घसीटतेहुये ऐसेदौड़े कि अन्य बहुतवृक्ष उखड़ पखड़गये व बड़ाक्रोधकर चरणोंसे पृथ्वीहीको विदीर्ण करनेलगे २२ व उसीवृक्षके घसीटनेसे सवार सहित हाथियों को व रथपर चढ़नेवालों सहित रथों को व अन्यपैदर राक्षसोंकोभी हनुमान्वीरने मारडाला २३ बड़ाभारी वृक्षलिये क्रोधकिये यमराज के समान प्राण हरनेवाले हनुमान्जीको देख सबराक्षस भाग खड़ेहुये २४ राक्षसोंको भय करनेवाले तिन हनुमान्जीको आगे दौड़ेआतेहुये देख अकम्पनवीर ने बड़ा नादकिया व वह चलायमानभीहुआ २५ फिर देह विदारण करनेवाले बड़े तीक्ष्ण चौदहबाण हनुमान्जी के अङ्गोंमें उसने मारे २६ पैने शक्तिवाले उन बाणोंके गड़जानेसे हनुमान्वीर नानाप्रकार के वृक्षलगेहुये पर्वतके समान दिखाईदिये २७ महाकाय व महावीर्य्यवान् हनुमान्जी पुष्पित अशोकके वृक्षकेसमान व निर्धूम अग्निकेसमान शोभितहुये २८ तिसके पीछे बड़ेवेगसे और एकवृक्षउखाड़ राक्षसेन्द्र अकम्पनके शिरपरमारा कि जिससे अकम्पन के प्राणजातेरहे २९ इसदशाकोदेख सब राक्षस बहुत व्याकुलहुये व कँपे जैसे भूकम्प होनेपर सबवृक्ष कँपनेलगतेहैं व सबराक्षसोंने अपनेअपने हथियार फेंकदिये व भागखड़ेहुये ३० उनके पीछे पीछे सब वानरोंने खेदा पर मारडरके वे झटपट लङ्कामें घुसगये उनसबके शिरोंकेबारछूटगये व सबकामान टूटगया अबबनाय हारगये ३१ ऊर्ध्वसाँसें लेतेहुये दौड़ेजाते इससेपसीना बहता चलाजाता सबसे आगे चलनेकेलिये एकदूसरेको मारतेहुये जैसेतैसेजाय लङ्कामेंघुसे ३२ वे मूर्ख बारबार पीछे फिरफिर देखते चलेजातेथे जब सबराक्षस लङ्का को भागगये तो ३३ सबवानर इकट्ठे हो हनुमान्जीकी बड़ाईकरनेलगे व हनुमान्जी ने भी उनसब अपना से वृद्ध वानरों की बड़ाई की ३४ इसतरह महापराक्रमी हनुमान्जी ने उनकी बड़ाईकी फिर सबवानर

बड़ेजोर से गर्ज्जनेलगे व फिर जीतेहुये राक्षसोंको पुकारनेलगे ३५ ॥

दोहा ॥

पवन तनयहति राक्षसन बीरन शोभापाइ ।
महाअसुरहति समरमहँ जिमिहरिलही बड़ाइ १ । ३६
देवनिकर रघुपति लषन सुगलकीश समुदाय ।
सहित बिभीषण पवनसुत गुणगाये हरषाय २ । ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेषट्पञ्चाशस्सर्गः ॥५६ ॥

अकम्पनका बधसुन क्रुधहोरावण कुछउदासीन मुखहो मन्त्रियोंकी ओर निहारनेलगा १ व एक मुहूर्त्तभरतक बिचार फिर मन्त्रियोंका भी सम्मत तो पूर्ब्बदिनमेंही लेचुकाथा पर फिर सम्मतकर २ लंकापुरीके सबमुरचे देखनेकेलिये लंकाके किनारेकिनारे घूमनेकोचला ३ तो बहुत राक्षसों से रक्षित व बहुत सेना निवासों से सँयुक्त व पताका ध्वजों की पंक्तियोंसे युक्त लङ्कापुरी राजाने देखी ४ व चारोंओरसे रूँधीहुई पुरी देख राक्षसोंकाराजा रावण आपत्कालमें भी अपनाहित करनेवालाजान प्रहस्तनाम सेनापतिसे जो कि युद्धकरनेमें अतिचतुरथा बोला ५ हे युद्ध बिशारद इसलङ्कापुरीके समीप अब शत्रुपैठआये इससे बनभयपीड़ित होगईहै इससे युद्धकरनेके सिवाय और कुछउपाय इसके बचनेका नहीं दिखाईदेता ६ सो युद्धभी अबसबके मानकानहींहै हम वा कुम्भकर्ण वा तुमहमारे सेनापति वा मेघनाद वा निकुम्भ बसइतनेहीजने इसतरहका भारउठासकेंगे ७ इससे तुम यहाँसे बड़ीभारीसेना अपनेसङ्गले शीघ्रही बिजय पानेकेलिये वहाँजावो जहाँ सबवानर लोगहैं ८ केवल तुम्हारे जातेहीजाते सबवानरोंकी सेना चलायमान होजावेगी व शब्दकरतेहुये राक्षसेन्द्रोंका शब्दसुनकर तो भागहीजावेगी ६ वानरलोग चपल अशिक्षित व चलचित्त तो होतेहीहैं तुम्हारानाद न सहसकेंगे जैसे सिंह कानाद हाथीनहीं सहसक्ते १० जब सबवानरोंकी सेनाभाग जावेगी तो रामचन्द्र व लक्ष्मण निरालम्ब होजानेके कारण अवशहो ज़रूर प्रहस्त तुम्हारे बशीभूत होजावेंगे ११ यद्यपि आपत् अर्थात् युद्ध में मरण संशययुक्तहै क्योंकि यहनहींजानते कि कौन माराजावेगा व कौन

बचेगा परंतु श्रेय अर्थात् तुम्हारी बिजय तो निस्सन्देह होहीगी अब आप इसकेप्रतिकूल समझतेहो वा अनुकूल जिसमेंहमाराहित मानतेहो वहीकरो १२ जब रावणने ऐसाकहा तो प्रहस्तनाम सेनापति रावणसे बोला जैसे दैत्येन्द्रसे शुक्राचार्य्य बोलते हैं १३ हे राजन् इस बिषयमें तो माल्यवान् आदि कुशलमन्त्रियोंसे हमलोगोंने प्रथमही बिचार कियाथा परंतु सबलोगोंकी सम्मति परस्पर बिरुद्धरही इससे बिवादभीहुआ बातयह कि प्रशस्तमन्त्रियोंका सम्मत युद्धकरनेकेलिये नहींहुआथा १४ हमने तो सीताजीके देनेहीमें कल्याण बिचाराथा व न देनेमें तो फिर युद्धकरनेके सिवाय और क्याहै यहीबिचाराभी गयाथा यही अब देखते भीहैं १५ तुमने समय समयपर दानमानादिकोंसे हमारीपूजा निरंतर कीहै व समयपाय समझायाभीहै इससे हमआपका प्रियकैसे न करेंगे १६ हमअपने प्राणोंकीरक्षा नहींचाहते न पुत्र स्त्री व धनकी तुमइसबात को अच्छीतरह जानलोकि तुम्हारेलिये युद्धमें हम अपने प्राणहुननेको तैयारहैं १७ इसतरह अपनेस्वामी रावणसेकह सेनापति प्रहस्त फिर आगे खड़ेहुये सेनाध्यक्षोंसे बोला १८ कि शीघ्र राक्षसोंकी बड़ीभारी सेना हमारेसंग जानेकेलियेलावो हमारे बाणोंकेवेगसे मरेहुयेवानरोंके मांससे समरमेंआज १९ बनकेरहनेवाले शृगालादि व मांसभक्षी पक्षी अच्छीतरह तृप्तहोंगे तिसके ऐसेबचनसुन महाबली सेनाध्यक्ष लोगोंने २० तिसराक्षस मन्दिरमें सेनालाय इकट्ठीकरदी नानाप्रकारके आयुध धारणकियेहुये राक्षसों से एक मुहूर्त्तभरमें २१ लंकापुरी भरहुई मानों हाथियोंसे भरहुई केवल राक्षसवीरोंसेही नहींभरहुई व अग्निको तृप्त करतेहुये व ब्राह्मणोंके नमस्कार करतेहुये राक्षसोंके २२ घृतकी सुगंध से युक्त सुगन्धित पवन बहनेलगा व बिविधप्रकार की अभिमन्त्रित माला राक्षसोंने ग्रहणकी संग्रामकेलिये तैयार राक्षसोंकेलिये यह सामग्री इकट्ठाकी गईथी २३ धनुष धारणकिये कवच बखतर पहिरे राक्षसलोगोंने बड़े वेगसे उठ रावणराजाको देख प्रहस्तनाम सेनापति को घेरकर खड़ेहुये २४ व फिर राजाकी आज्ञाले व अतिघोर तुरुही बजवाय सब अस्त्रशस्त्रोंसेपूर्ण तैयार रथपर प्रहस्तचढ़ा २५ उसमें बड़े वेगवाले घोड़े जुतेथे व अच्छा सारथि भलीविधि से चढ़ा व बड़े भारी

मेघकासा शब्द व चन्द्र सूर्य्यके समान प्रकाशित सर्प्पयुक्त पताकायुक्त सुन्दर गुम्मजदार २६ सुवर्णकी झालर लगाहुआ शोभासे मानों हँसता हुआ रावणकी आज्ञापाय तिस रथपर सवारहो २७ बड़ीभारी सेनासङ्ग ले लङ्कासे बहुत शीघ्र चला तब मेघोंके गर्ज्जनेके समान नगारा बाजा २८ व अन्यबाजोंकाभी शब्द पृथ्वीको पूरण करताहुआ जब वह सेना- [illegible] निकला तो समुद्रभी क्षुब्धहुआ २९ व बड़े ऊँचेस्वरसे घोरशब्द करते हुये राक्षसलोग चारोंओरसे चले ये बड़े भयङ्कर रूपवाले व बड़े शरीरवाले प्रहस्तके अगुआथे ३० नरान्तक कुम्भहनु महानाद समुन्नत ये चार प्रहस्तके सचिवथे इससे येभी आगेआगे चले ३१ हाथीके यूथकेसमान प्रकाशित बड़ीभारी सेना सङ्गले किलाबांध पूर्व्वके फाटकसे होकर प्र- हस्त निकला ३२ समुद्रके बेगके समान चलतीहुई सेनाके सङ्ग प्रहस्त क्रोधकर कालान्तक यमराजके समान चला ३३ तिसकी यात्राके शब्द से व राक्षसोंके गर्ज्जनेसे लङ्कामें सबप्राणी भयानक शब्द करउठे ३४ मांस व रुधिर भोजन करनेवाले पक्षी बिना बादरके आकाशमें मण्डला- कार रथके ऊपर घूमनेलगे ३५ व घोर शृगालियां मुखसे ज्वाला उगि- लने लगीं व अपनी जातिका शब्द करनेलगीं अन्तरिक्षसे उल्कापात हुआ पवनतीक्ष्ण बहनेलगा ३६ सबग्रह परस्पर युद्ध करने के कारण प्रकाशित नहींहोतेथे व राक्षसके रथके ऊपर कठोरशब्द करतेहुये बादर घूमनेलगे ३७ व उसके आगे चलनेवालों के ऊपर रुधिरकीबर्षा करने लगे ३८ व पताकाके ऊपर दक्षिण को मुखकर गृध्र बैठगया व शब्द करनेलगा जिससे सब ओरकी दीप्ति जातीरही ३९ व सारथिके हाथसे बारबार चाबुक गिर पड़नेलगा ४० व जो यात्राके समय की प्रकाशित शोभाथी वह दुर्लभ होगई बरन मुहूर्त्तही भरमें सब नाशहोगई व पट- परी भूमिमें घोड़े गिरगिर पड़नेलगे ४१ प्रहस्तको आतादेख नाना- प्रकारके शस्त्रास्त्रलिये वानरोंकी सेना सामने खड़ीहोगई ४२ व इधर बड़ेबड़े वृक्ष उखाड़तेहुये व गरूशिला उखाड़तेहुये वानरोंका बड़ाभारी शब्दहुआ ४३ राक्षसोंके नादकरने व वानरोंके गर्ज्जनेसे राक्षसों व वा- नरोंकी दोनोंसेना आनन्दित हुईं ४४ परस्पर बध चाहनेवाले बेगयुक्त व समर्त्थ वानरों व राक्षसोंका शब्द सुनाई देनेलगा ४५ ॥

दोहा ॥

वानरसेना विजय हित चल्यो प्रहस्त हँकारि ।
मरणहेतु जिमि शलभगण पावक गिरत अगारि ॥ १४८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेसप्तपंचाशस्सर्गः ॥ ५७ ॥

समर करनेके उद्योगसे आतेहुये प्रहस्तको देख श्रीरामचन्द्रजी मंद मुसुकाय विभीषणजीसे बोले १ कि यह बड़ाभारी डीलवाला कौनहै जो बड़ीभारी सेनालिये आताहै यहतो बड़ा बेगवान् दिखाई देताहै बताओ तो इसके कितना बल व पौरुषहै २ हे विभीषण इस वीर्य्यवान् निशाचर का हाल हमसेकहो रामचन्द्रजीके बचन सुन बिभीषणजी बोले ३ कि यह रावणका प्रहस्तनाम सेनापतिहै लङ्कामें जितनी सेनाहै उसके तृतीयांशका यह सेनापतिहै व बड़ा वीर्य्यवान् अस्त्रविद्यामें निपुण शूर व अति प्रख्यात पराक्रमीहै ४ तिसकेपीछे भीमपराक्रमी प्रहस्तको आते व गर्ज्जतेहुये व राक्षसोंसे घिरेहुये ५ बलवान् वानरों की सेनाने देखा व सबकेसब प्रहस्तको देख गर्ज्जनेलगे ६ खड्ग शक्ति ऋष्टि शूल बाण मुशल गदा परिघादि बिबिधप्रकारके फरसा ७ धनुष आदिलिये जीतने की इच्छाकियेहुये वानरोंके ऊपर दौड़तेहुये राक्षसोंके अस्त्रशस्त्र शोभित होतेथे ८ तब युद्धकरनेकी इच्छाकिये वानरोंने भी फूले फले वृक्ष व बड़े बड़े पर्व्वत व पर्व्वतोंके शिखरलिये ९ शिला व अस्त्रोंकी वर्षा करतेहुये वानरों व राक्षसों का परस्पर बड़ाभारी युद्धहुआ १० इससे युद्धमें बहुत राक्षसोंने बहुत वानरोंको व बहुत वानरोंने बहुत राक्षसोंकोमारा ११ इससे कोईकोई वानर तो शूलोंस मारेगये कोई अन्य परमायुधोंसे कोई परिघोंसे कोई फरसोंसे छिन्नभिन्नहुये १२ व कोईकोई श्वासरहित हो पृथ्वीमें गिरपड़े कोई बाणलगनेसे हृदय फटजाने के कारण मृतक होगये १३ कोईकोई खड्गोंसे कटजानेके कारण दोखण्डहोकर धरणीपर गिरपड़े व किसी वानरकी बगल नोचलीगईथी इससे वेभी पड़ेथे १४ व इसीतरह बड़ा क्रोधकिये वानरोंने वृक्षों व पर्व्वतोंसे राक्षसोंको मारा कि वे पिसकर पृथ्वीपर गिरगये १५ किसीकिसी राक्षसको तो बज्रसम रूपर्शवाले मुक्कोंसेमारा किसीकिसीको चपेटोंसे इससे राक्षसोंके मुखसे

रुधिर बहताथा व सर्व्वाङ्ग विशीर्ण होगयेथे १६ इसतरह दुःखित शब्द करतेहुये व सिंहवद्वीरशब्द करतेहुये राक्षसों व वानरोंका बड़ा भयङ्कर युद्धहुआ १७ वानर व राक्षसलोग क्रुद्धहोकर वीर मार्गानुयायी हो मुख बायबाय दौड़ते व निर्भय होकर अद्भुत अद्भुत कर्म्मकरते १८ नरान्तक कुम्भहनु महानाद समुन्नत ये चार प्रहस्तके सचिवथे सबकेसब वानरोंको मारतेथे १९ ये चारो कूदकूद वानरोंको मारतेथे कि इतनेमें द्विविदनाम वानरसिंहने नरान्तकको पर्व्वतके शृङ्गसे मारडाला २० व दुर्म्मुखनाम वानर शार्दूलने बड़ाभारी वृक्ष हाथमेंले बहुत जल्द कामकरनेवाले समुन्नतको मारडाला २१ व महातेजस्वी जाम्बवान्‌जीने बड़ीभारी शिला उठाय महानादकी छातीमें मारी २२ इसपीछे तारनाम महाप्रतापी वानरने बड़े भारी वृक्षसे अति वीर्य्यवान् कुम्भहनुनाम राक्षसकोमारा कि जिससे उसकेभी प्राण निकलगये २३ इसबातको न सहकर प्रहस्त रथपर आरूढ़हो धनुष हाथमेंले वानरोंको नाशनेलगा २४ इसतरह दोनों सैन्योंके इधर उधर दौड़ दौड़ मारनेसे चलायमान महासागर के शब्दके समान शब्दहुआ २५ व रणमें महादुर्म्मद प्रहस्त ने क्रोधकर बाणोंस हज़ारों वानरोंको मारा २६ वानरों व राक्षसों के शरीरोंसे पूर्ण होनेके कारण समरभूमि मानों पर्व्वतोंसे पूर्णहोगई २७ वह समरभूमि रुधिरकी धारासे संछन्न होनेसे ऐसी देखपड़नेलगी जैसे बैशाखमासमें फुलाने पलाशों से सछन्नहोने से दिखाईदेती है २८ ॥

चौ० निहत बीर द्वय तीर समाना। टूटे शस्त्र महातरु जाना॥ रुधिर समूह बारिसम जासू। यमसागर गामिनियुत हासू १। २९ बरबर पिलुही पंकसमाना। शव अाँतें शैवाल बखाना॥ देहखण्ड जहँ मीन समाना। अंगावयवघास सम जाना २। ३० गृध्र हंससम जहां बिराजत। कंकसार सन सम अति गाजत॥ चरबी फेनसमान बखाना। दुःखित स्वनस्वन सम बलवाना ३। ३१ कातर पुरुष पारनहिं जासू। युद्धभूमि मय नदी खुलासू॥ शरदकाल महँ जिमि बरसरिता। सेवित हंस निकर अति भरिता ४। ३२ राक्षस निकर और कपि वृन्दा। सो दुस्तर नदि उतरि अनन्दा॥ जिमि पंकज रजयुत नलिनी कहँ। गज यूथप उतरत न डरत तहँ ५। ३३ ॥

इसतरह का युद्ध होतारहा कि रथपर सवार वानरों को मारतेहुये प्रहस्तको नीलनाम वानरोंके महासेनापतिने देखा ३४ व प्रहस्तनेभी नीलकोदेख पवनके लगनेसे उड़तेहुये बादरोंके समान अपनी सेनाको उड़ीजाती देख ३५ सूर्य्यसम चमकतेहुये रथपर चढ़ नीलहीके सामने दौड़ा धनुर्द्धरोंमें श्रेष्ठ प्रहस्त समरमें धनुष चढ़ाय नील के ऊपर बाण बर्षाने लगा ३६ प्रहस्तके मारेहुयेबाण नीलके देहको फोड़ क्रुद्धसर्पोंके समानजाय पृथ्वीमें गड़े ३७ व अग्निसम चमकते हुये बाणों के लगने परभी उसपरम दुर्द्धर्ष प्रहस्तको सामने दौड़े आतेदेख ३८ बड़ाभारी वृक्षउखाड़ नीलनेमारा तिसवृक्ष के लगनेसे बड़ा क्रोधकर उसराक्षस श्रेष्ठने ३९ वानरोंके सेनापति नीलके ऊपर बाणोंकीवर्षाकी ४० तिस दुष्टात्मा प्रहस्तके बाणसमूहोंको नीलने नेत्रमूंद सहलिया ४१ जैसे कि शरदऋतुकी वर्षाको वृषभ सहलेताहै इसीतरह बड़ेदुःखसे सहनेके योग्यभी प्रहस्तकेबाण नीलने सहलिये ४२ परन्तु बड़ा कोपकर एक बड़ाहीभारी साँखूकावृक्ष उखाड़ महाबली नीलने प्रहस्तकेघोड़े मार-डाले ४३ व फिर बड़ारोषकर उसदुष्टात्मा प्रहस्तका धनुषभी तोड़डाला व पीछेबड़ाभारी शब्दकिया ४४ जब धनुष टूटगया तो सेनापति प्रहस्त बड़ाभयंकर मूशलले रथसे उतरपड़ा ४५ व नील व प्रहस्त दोनोंसेना-पति बड़े वेगवान् तोथेही व एक दूसरेसे बैरतो होहीगयाथा युद्धकरने पर तैयार अंगोंमें रुधिरलगाये मदान्ध हाथियोंकेसमान खड़े हुये ४६ दोनों अपने अपने तीक्ष्णदांतोंसे ओष्ठचबाते सिंह शार्दूल सम चेष्टाकरते क्योंकि सिंह व शार्दूलहीके समानथे ४७ व दोनों अपने अपने विक्रान्त से विजयपानेके योग्यथे व दोनों समरसे विनाशत्रुको जीतेहुये वा मर-गये पर लौटनेवाले नहींथे इससे दोनों अपना अपना विजयरूप यश चाहतेथे जैसे वृत्रासुर व इन्द्र दोनों अपना अपना यश चाहतेथे ४८ प्रथम बड़े जोरसे प्रहस्तने नीलकेमाथेमें मूसरमारा जिससे उनकेशिर से रुधिरकी धाराचली ४९ एकओर तो नीलकेशिरसे रुधिरबहा चला जाताथा पर उसकी ओर कुछभी न खयालकर बड़ाभारी वृक्ष उखाड़ क्रोधकर नीलने प्रहस्तको छातीमेंमारा ५० परन्तु वहभी उसवृक्षके प्रहारको कुछभी न समझकर मूसरले महाबली नीलवानर के सामने

दौड़ा ५१ तिस उग्रवेगवाले राक्षस को सामने दौड़ा आता देख महा वेगवान् व बलवान् नीलने एक बड़ीभारी शिला अपने हाथमेंली ५२ व मूसरसे लड़नेवाले व समरमें युद्धकरनेकी इच्छाकियेहुये प्रहस्तके शिरपर बड़ी जल्दबाजीके साथ वह शिलामारी ५३ व वानरोंमें मुख्य नीलकी चलाईहुई वह बड़ीभारी व घोरशिला प्रहस्त के शिरपरलगी कि जिससे उसकेशिरके बहुत टुकड़े होगये ५४ इससे प्रहस्तनिर्ज्जीव निश्शोक सत्वरहित व इन्द्रिय हीन हो पृथ्वी पर भहरापड़ा जैसे जड़ें कटजानेपर वृक्ष अरराय गिरता है ५५ तब भिन्न शिरवाले प्रहस्त के शिरसे व अन्य सब अंगोसे भी रुधिर बहनेलगा जैसे पर्ब्बत से झरने झरतेहैं ५६ जबनीलने प्रहस्तको मारडाला तो यद्यपि किसीकेकँपाने के योग्य राक्षसोंकी सेना न थी तथापि उदासीन हो नीचे मुखकर सब सेना लंकाको चलीगई ५७ जब सेनापति प्रहस्त मारगया तो राक्षसों की सेना फिर क्षणमात्रभी समर में न खड़ी रहसकी जैसे पुलटूट फूट जानेपर फिर पानी नहींठहरसक्ता ५८ जब सेनापति प्रहस्त मारगया तो सबराक्षस निरुद्यमहोकर रावणके मन्दिरमेंजाय मौनहो एकान्तमें बैठे ५६ व शोक समुद्रमेंडूब सबकेसब मूर्च्छितसे होगये ६० ॥

दोहा ॥

महाबली विजयी गुणी नील सुकृत लहिढेर ।
लहीप्रशंसा रामकपि लषनहुसों सुखघेर १ । ६१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंककाण्डेऽष्टपञ्चाशस्सर्गः ॥ ५८ ॥

जबवानरोंके श्रेष्ठ नीलने रावणके सेनापति प्रहस्तकोभी मारडाला तो भयंकर आयुध धारण किये व सागर के वेगके तुल्य राक्षसराज की सेना भाग खड़ीहुई १ व राक्षसोंके स्वामी रावणके समीप जाय सब राक्षसोंने नीलकेमारेहुये प्रहस्तकोबताया उनलोगों के बचनसुन रावण ने बड़ा क्रोधकिया २ व समरमें प्रहस्त को माराहुआ सुन क्रोधके मारे पीड़ित व शोकयुक्त हो अन्य राक्षसोंके सेनापतियों से बोला जैसे इन्द्र देवताओंमें मुख्योंसे बोलते हैं ३ जिनशत्रुओंने इन्द्रका बल नाशनेवाले हमारे प्रहस्तनाम सेनापति को अनुयायि वर्गसहित व हाथी घोड़े

सहित मारडाला उनको अब तुच्छ न समझना चाहिये ४ तिससे अ
हम खुद उन शत्रुओंके मारनेकेलिये व अपनी विजयकेलिये अतुल सम
भूमिको जावेंगे ५ व आजवाणोंसे सब वानरोंकी सेना व रामलक्ष्मण
को भस्मकरदेंगे जैसेबरतेहुये दावानलसे बनभस्म होजाताहै ६ इतना
कह देवराजका शत्रु रावण अग्निसमान प्रकाशित उत्तम तुरंगयुक्त
अपने आपभी प्रकाशमान व शरीरसेभी दीप्तिमान रथपर चढ़ा ७
शङ्ख तुरुही नरसिंहा आदि बाजनों सहित व बीरोंके सिंहनाद सहित
पुण्यरूप स्तुतियोंसे स्तुतिकियागया व पूजित राक्षसोंकाराजा चला ८
पर्व्वताकार व मेघाकार रूप व अग्नि समान प्रकाशित नेत्रवाले राक्ष-
सोंकेसङ्ग रावण शोभितहुआ जैसे भूतप्रेत पिशाचादिकोंके साथ महादेव
जी शोभित होते हैं ९ तिसकेपीछे लङ्कासे बाहर निकल महापराक्रमी
रावणने अतिभयङ्कर व महार्णव व मेघोंकेसमान गर्ज्जतीहुई व हाथोंमें
वृक्ष पर्व्वतलिये वानरोंकी सेनादेखी १० व वहअति प्रचण्ड राक्षसोंकी
सेनादेख भुजगेन्द्र सम आजानुबाहु श्रीरामचन्द्रजी अपनी सेनामेंसब
शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ विभीषणजी से बोले ११ कि नानाप्रकारकी ध्वजा
पताकायुक्त व प्रास शूल खड्गादि आयुध शस्त्रयुक्त व निर्भय राक्षसोंसे
युक्त व ऐरावत हाथीके समान हाथियोंसे सेवित व अचल यह किसकी
सेनाहै १२ श्रीरामचन्द्रजीका बचनसुन इन्द्रसमान वीर्य्यवान् विभीषण
जी महात्मा राक्षसश्रेष्ठोंकी सेनाका बर्णन करनेलगे १३ कि जो यह
उदित सूर्य्यकेसमान अरुण नेत्रवाला महात्मा हाथीकेऊपर चढ़ा गजका
शिर कँपाताहुआ आताहै वह दूसरा अकम्पनहै १४ व जो सिंहलिखित
पताकायुक्त रथपर चढ़ा व इन्द्रके धनुष के समान धनुष कँपाता हुआ
बड़ेबड़े दांतनिकाले हाथीके समान शोभित चला आताहै वह बरदान
पायाहुआ इन्द्रजीत है १५ व जो विन्ध्याचल अस्ताचल महेन्द्राचलके
समान शरीरधारी धनुर्बाण धारणकिये अतिबीर व अतिरथ व रथपर
सवार धनुषपर टङ्कोरदेता चलाआता है यह बड़े शरीरवाला अतिकाय
नामराक्षसहै १६ व जो यह प्रातःकालके सूर्य्यकेसमान लाल नेत्रकिये
व घण्टा बाजतेहुये हाथीके ऊपर सवार बड़ाकठोर शब्द करताहुआ
आताहै यह महोदरनाम महात्मा बीरहै १७ व जो यह सुवर्णकी चित्र-

सारी उरहे बड़ेभारी घोड़ेपर सवार सन्ध्यासमय के बादर व पर्वतके आकार व अच्छीतरह प्रकाशितहै व मरीच्याकार झालरलगा प्रास हाथमेंलिये चलाआताहै यह वज्रसम वेगवान् पिशाचनाम राक्षसहै १८ व जो यह बिजुलीसम प्रकाशित बड़ेवेगवाले वज्रकेसमान वेगवान् ती-क्ष्ण शूललिये व चन्द्रसमान उजले बैलपर चढ़ाहुआ आता है यह बड़ा यशस्वी त्रिशिरा राक्षसहै १६ व जोयह मेघाकार प्रकाशितरूप व बड़ी चौड़ीछाती वालाहै जिसके पताकामें शेषलिखाहै व धनुषपर टङ्कोर देता चला आताहै यह कुम्भनाम प्रसिद्ध राक्षसहै २० व जो यह सुवर्ण व हीराजटित धूमसहित परिघलिये राक्षसोंकी सेनाका पताका रूप चला आताहै यहबड़े अद्भुतकर्म्म करनेवाला निकुम्भनाम राक्षसहै २१व जो यह धनुषखड्ग बाण समूहयुक्त व पताका सहित व अग्निसम प्रकाशित रथपर चढ़ा अति ऊंचा दिखाईदेताहै यह नरान्तक नामराक्षसहै इसको अपने समान योधा मिलताहीनहीं इससे पर्व्वतोंसेही लड़ाकरताहै २२ व जो यह नानाप्रकारके घोररूप व्याघ्र ऊँट हाथी मृग घोड़ोंके समान मुखवाले भूतोंकेसङ्ग शोभितहोताहै व जो देवताओंके भी अहङ्कारका नाशकहै २३ व जिसके ऊपर चन्द्रसम उज्ज्वल व सोकामियोंका छत्र लगाहै वह राक्षसोंकाराजा रावणहै जैसे महादेवजी भूतोंकेसङ्ग शोभित होतेहैं वैसेही यहभी भूतोंकेसाथ शोभितहै २४ व यह मुकुटधरे कुण्डल पहिरे व पर्व्वतश्रेष्ठ बिन्ध्याचलके समान भयङ्करशरीर व इंद्र यमराजका भी अहङ्कार तोड़नेवाला राक्षसेन्द्र सूर्य्यके समान शोभितहोरहाहै २५ यहसुन श्रीरामचन्द्रजी बिभीषणजीसे बोले कि राक्षसेश्वर तो बड़ादी-प्तिमान् व महातेजस्वीहै २६ यह रावण तो जैसे किरणोंके कारण सूर्य्य दुष्प्रेक्ष्यहैं वैसाही दुष्प्रेक्ष्यहै ऐसा इसका तेजहै कि रूपजानही नहीं पड़ता कि कैसाहै २७ जिसतरहका शरीर इस रावणका बिराजमानहै वैसा तो देवदान व बीरोंका तो अलबत्ता होताहै औरोंकानहीं २८ व इस महात्माके सबयोधा पर्व्वताकारहैं व सब पर्व्वतोंसे लड़ने लायकहैं व सब साफआयुध धारणकियेहैं २६ व यह राक्षसोंका राजाभी भयङ्कर सेवकोंसे सेवितहोनेसे अतिशोभित होताहै जैसे जीवोंसे सेवित होनेसे यमराज शोभितहोतेहैं ३० बड़ेभाग्यकी बातहै जो यहपापी आज हमारे

सामनेआयाहै क्योंकि [illegible] सीता[illegible] उत्पन्न [illegible] क्रोध इस
ऊपर छोड़ेंगे ३१ यह कह महावीर्य्यवान् श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण
पोछेकर आपधनुषपर रोदाचढ़ाय उत्तमबाण हाथमें ले खड़ेहोगये ३
व तिसकेपीछे वहाँ महात्मा रावण अपने बड़ेबलवान् राक्षसों से बो
कि तुमलोग सेना [illegible]स्थान व [illegible] निःशङ्क होकर सं
रहो ३३ क्योंकि आपलोगों सहित हमको यहाँ आयेहुयेजान यहकि
पाय वानरलोग शून्यपुरीमें चलेआवेंगे व सबका प्रध्वंसकर डालेंगे ३
यहकह सबसचिवोंको लौटारदिया जब सबराक्षस आज्ञानुसार चलेग
तो वानरोंके सागररूप जलसमूहको बिदारनेलगा जैसे तिमिङ्गिलादि
महामत्स्य समुद्रके जलौघ को बिदारते हैं ३५ चमाचम धनुष व बाण
लिये रावणको सामने झपटे आतेदेख एकपर्ब्बतका बड़ाभारी शिखर
उखाड़ हाथमें उठाय सुग्रीवजी उसके ऊपरको दौड़े ३६ व बहुत वृक्ष
लगेहुये व बहुत कँगूरोंसहित उसपर्ब्बत शृङ्गको रावण के ऊपरफेंका
परन्तु उसे अपनेऊपर आतादेख बड़ी जल्दबाजीकेसाथ रावण ने सुव
र्णकी फोंक लगेहुये बाणोंसे काटडाला ३७ जब वह बड़े बड़े वृक्षों व
कँगूरोंसहित शिखर बिदीर्णहो पृथ्वीपर गिरपड़ा सर्प्पसम बिषधर व
यमराज सम मारक बड़ाभारी बाण रावण ने लिया ३८ व पवनतुल्य
बेगयुक्त व चिनगारी उड़तेहुये अग्निकेसमान प्रकाशित व इन्द्रकेबज्रके
तुल्य बेगकाबाण रिसाकर सुग्रीवके मारडालनेके बिचार से छोड़ा ३९
रावणके हाथसे छूटाहुआ वहबाण इन्द्रके बज्रकेसमान पुष्ट व प्रकाशित
शरीरवाले सुग्रीवजीकोपाय भेदनकरगया जैसे षड़ाननकी शक्तिने क्रौंच
पर्ब्बतका भेदनकिया ४० व बाणके लगनेसे पीडितहोनेसे मूर्च्छितहो
शब्दकरतेहुये सुग्रीववीर पृथ्वीपर गिरपड़े मूर्च्छितहोकर भूमिमेंपड़े
हुये सुग्रीवकोदेख सबराक्षसों ने हर्षितहो बड़ाभारी नादकिया ४१ तब
गवाक्ष गवय सुषेण ऋषभ ज्योतिमुख व नल ये सब महाप्रतापी वानर
पर्ब्बत शिखर उठाय उठाय बड़ीउन्नतकाय कर कर रावणके ऊपरदौड़े
४२ परंतु रावणने तिनलोगोंके प्रहार अपनेपैने सैकरों बाणों से काट
कर निष्फल करदिये व तिन वानरेन्द्रोंको भी सुवर्ण की फोंकेंलगेहुये
बाणों से मारा ४३ व वे सब बड़ी बड़ी देहैं लिये वानरलोग रावण के

बाणोंके लगनेसे छिन्नभिन्नहो पृथ्वीपर गिरपड़े तब रावणने बाणसमूहों से सब वानरोंकी सेनाको आच्छादित करदिया ४४ वे वानरबीर रावण के बाणोंकी चोटखाय पृथ्वीपर गिरतेपड़ते व नादकरतेहुये सबकेरक्षक श्रीरामचंद्रजीकी शरणकोगये ४५ तब महात्मा श्रीरामचंद्रजी बहुतही शीघ्र धनुष उठाय रावण को पराजित करनेको चले परंतु लक्ष्मण जी उनके समीपआय हाथजोड़ परमार्त्थयुक्त बचनबोले ४६ हे आर्य्य इस दुष्टात्माका बधकरनेमें हम अच्छीतरह समत्थहैं इससे इसकामीको मार-डालेंगे इसलिये हमीको आज्ञाहो ४७ तिनसे रामचन्द्रजी बोले कि हे लक्ष्मण अच्छा तुम्हीं जावो परंतु समर में यत्नपूर्ब्बक कार्य्य करना ४८ क्योंकियह रावणमहावीर्य्यवानहै व रणमेंअद्भुत पराक्रमीहै इससे जोयह क्रुद्धहो तो चाहेतीनोंलोकोंके सबदेवता दैत्यादिभी लगें तोभी बड़ेदुःखसे इसकेसामने अपनाबल दिखासकें इसमें कुछभी सदेहनहीं ४९ व तिस रावणके प्रहार समय दृढ़तेरहो व सावधानहो अपनीरक्षा करतेरहो व अपने प्रहारके समय नेत्रसे देखतेरहो व धनुषपर बाणचढ़ाय खूबसँभर कर शत्रुकोमारो ५० रामचन्द्रजीके बचनसुन रामचन्द्रजीको लपटकर मिल व बड़ाईकर व रामचन्द्रजीके प्रणामकर लक्ष्मणजी समरकोचले ५१ व हाथीकी शूंड़केसमान चढ़ाउतार बाहँवाले भीम धनुषउठाये व कटेकुटे पड़ेवानरोंके ऊपर बाणोंकी बर्षा करतेहुये रावण को देखा ५२ व इसीबीचमें पवनकेपुत्र महातेजस्वी हनुमान्जी तिस रावणके चलाये बाण समूह वृक्षादिकोंसे बिदीर्णकर उसके सामनेदौड़े ५३ व कूदकर रावणके रथपर चढ़गये व दहिनाहाथ उठाय उसको डरवातेहुये धीमान् हनुमानजी उससेबोले ५४ कि देवता दानव गन्धर्ब्ब यक्ष व राक्षसोंसेही तुम अबध्य हो परंतु वानरोंसे तो तुमको भय अवश्य है ५५ इससे पाँच अँगुलियों सहित यहहमारा दहिनाहाथ देखो उठाहै वह बहुतदिनोंसे तुम्हारीइसदेहमें बसेहुये प्राणोंको बाहर निकालदेगा ५६ हनुमानजीके बचन सुन मारेक्रोधके लालनेत्र कर भीमबिक्रम रावण क्रोधसे यहबचन बोला ५७ कि अच्छा अब उठायाहै तो शीघ्रही हाथचलावो व स्थिरकीर्त्ति को प्राप्तहोवो फिरहमतुमको मारेंगे क्योंकि तुम्हारेवृत्त हम जानतेहैं ५८ रावणका बचनसुन हनुमानजी बोले कि हमने पूर्ब्बसमयमें तुम्हारेपुत्र

अक्षको माराहै उसका स्मरणकरो उसीतरह तुमको भी मारडालेंगे तुम बेचारे फिर हमको क्यामारोगे ५९ यहसुन महातेजस्वी राक्षसोंके ईश्वर रावणने एकलात पवनतनयकी छातीमें मारी ६० उस लातके लगनेसे हनुमान्जी बारबार चलायमान हुये परंतु महातेजस्वी तो थेही स्थिरता कर मुहूर्त्त भर खड़े रहे फिर क्रोधकर लातहीसे उन्होंने भी रावणको मारा ६१ तिन महात्मा वानरके प्रहारसे ताड़ित होने से रावण ऐसा कांपा जैसे भूकम्प होनेपर पर्ब्बत कांपताहै ६२ संग्राममें रावणको लात लगनेसे ब्याकुल देख सब ऋषि देवता वानर सिद्ध दैत्य सबकेसब हर्षितहो नादकरनेलगे ६३ फिर कुछ देरमें सुस्ताकर रावण बोला हे वानर बहुत अच्छाकिया यद्यपि हमारे शत्रुहो तथापि वीर्य्यके कारण बड़ाईही करनेके योग्यहो ६४ जब रावणने ऐसाकहा तो हनुमानजी बोले कि रावण जो तुम फिर जीतेही बनेहो तो हमारे वीर्य्यको धिक्कार है ६५ हे मूर्ख भला एकबार तो हमारेऊपर कुछ प्रहार कर क्यों बकता है तिसकेपीछे तो हमारामूका तुझको यमपुरको पहुंचावेहीगा ६६ पवन-तनयके बचनसे रावणका कोप बढ़उठा इससे लालनेत्र कर बड़े यत्नसे दहिनामूका उठाय ६७ महावीर्य्यवान् रावणने बड़े बेगसे हनुमान्जी की छातीमें मारा व छातीमें लगनेसे हनुमान्जी बारबार चलायमान हुये ६८ महाबली हनुमान्जीको बिकल देख अति रथ रावण रथपर चढ़ाहुआ बड़ी शीघ्रताकेसाथ नीलके पास पहुँचा ६९ व राक्षसोंके अधिपति प्रतापी रावणने शत्रुके मर्म्मस्थल भेदन करनेवाले सर्प्पाकार बाणोंसे वानरोंकी सेनाके अधिप नीलको मारा ७० परन्तु बाणसमूहों के लगनेपर भी वानर सेनापति नीलने एकहीहाथसे पर्ब्बतका एकशिखर उठाय रावणकेऊपर चलाया ७१ उसी बीचमें महातेजस्वी हनुमानजीभी सुचित्तहुये व प्रसन्नचित्तहो युद्धकरनेकीइच्छासे निहारा परन्तु रोष कियेहुये ७२रावणको नीलकेसंग युद्धकरतेदेख राक्षसोंके अधिप रावण से बोले कि औरकेसंग युद्धकरतेहुये तुम्हारे ऊपर दौड़नाअयोग्यहै इससे अब हम लाचारहैं नहींतो तुमकोठीककरते ७३ व महातेजस्वीरावणनेभी तीक्ष्णसात बाणोंसे तिसनीलके चलायेहुये शृङ्गको काटडाला इससेयह फूटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ७४ उस अपनेचलायेहुये शृङ्गको विशीर्ण देख

वानरोंके सेनापति नीलने कालाग्नि के समान बड़ा कोपकिया ७५ व अश्वकर्ण सांखू आम्रादि फूलेहुले बड़ेबड़े वृक्षउखाड़ समरमें फेंकनेलगे ७६ उन वृक्षोंको बाणोंसे काट रावण नीलके ऊपर बाणोंकी अतिघोर बर्षा करनेलगा ७७ जब महाबली नीलकेऊपर बाणोंकी बर्षाहुई तो वे अपनारूप छोटाकर रावणके ध्वजकेऊपर जायकूदे ७८ नीलको ध्वजके आगेस्थित देख रावणक्रोध से बहुतजला व नीलने भी बड़ाभारी नाद किया ७९ फिर नीलको कभी ध्वजाके आगे कभी धनुषके आगे कभी किरीटकेआगे कभी एकही समयमें सबकहीं टिकेदेख लक्ष्मण हनुमान् व रामचन्द्र सबजने बहुत बिस्मित हुये ८० व महातेजस्वी रावण भी नीलकी जल्दबाजी देख बहुत बिस्मितहुआ व आग्नेय अस्त्रका स्मरण किया ८१ व नीलकी जल्दबाजी देख रावणको सम्भ्रान्त चित्तदेख वानरलोग बहुत हर्षितहो शब्द करनेलगे ८२ वानरों के नादसे रावण बहुत क्रुद्धहुआ परन्तु मारेभयके उसका हृदय डरगयाथा इससे कुछभी बिचार न करसका कियह क्याबातहै ८३ फिर अग्निमन्त्र से बाणको संयोजित भी रावण कर ध्वजके शिरपर बैठेहुये नील को निहारा ८४ व महातेजस्वी रावण नीलसे बोला कि हेवानर तुम बड़ीभारी मायासे छोटारूप बनालेतेहो ८५ परन्तु अबजो समर्त्थहोवो तो अपने प्राणोंकी रक्षाकरो यद्यपि तुम अनेकरूप धारण करतेहो तथापि हमारा छोड़ा व अग्निमन्त्र से संयोजित बाण ८६ प्राणरक्षा करतेहुये तुम्हारे प्राणोंका नाश करदेगा ८७ यह कह महाबाहु रावण ने आग्नेयास्त्र से बाण संयोजितकर उसी शस्त्रसे नीलको मारा ८८ उस अस्त्रयुक्त बाणसे नील छाती में ताड़ित हुये इससे जलतेहुये एकाएकी पृथ्वीपर गिरपड़े ८९ परन्तु अपने पिता अग्निके माहात्म्यके संयोगसे व अपने तेजसे केवल जांघोंके बल भूमिपर गिरपड़े परन्तु मरनेसे बचगये ९० नीलको मूर्च्छितदेख रणकरनेकी इच्छाकिये रावण मेघसम शब्दयुक्त रथपर सवारहो लक्ष्मणकी ओरदौड़ा ९१ व लक्ष्मणजी के निकट जाय उनको उत्तरओर जानेसे निवारण कर प्रतापवान् रावणने धनुषपर टङ्कोर दी ९२ धनुषपर टङ्कोर देतेहुये रावणसे उदारसत्व लक्ष्मणजी बोले कि हे निशाचरेन्द्र अब हमको आज जानो वानरोंसे युद्ध न करो ९३ लक्ष्मणजी

का बचन व परिपूर्ण घोष प्रत्यञ्चा का शब्द सुन रावण राजा समीप खड़े हुये लक्ष्मणजीसे रोषयुक्त बचनबोला ९४ हेलक्ष्मण बड़ेभाग्य की बातहै कि जो अब मरणके समय बिपरीत बुद्धिहोजानेके कारण हमारे सामनेआयेहो सोहमारे बाणजालोंकोपाय मृत्युकेलोकको जावोगे ९५ यहसुन विस्मयरहित लक्ष्मणजी गर्ज्जतेहुये व उजले दाँतघाले रावण से बोले कि रावण महाप्रभावलोग गर्ज्जतनहीं पर तुमजो बकतेहो तो पापियोंमें श्रेष्ठहो इसीसे ९६ हेराक्षसेन्द्र हमतुम्हारा वीर्य्यबल प्रताप व पराक्रम सबकुछ जानतेहैं इससे धनुषबाण हाथमें लियेखड़ेहैं व्यर्थ झूंठ बकनेसे क्या है ९७ यहसुन रावण ने क्रोधकर सातबाण चलाये तिनको लक्ष्मणजीने अपने तीखे बाणोंसे काटडाला ९८ तिन बाणोंको एकाएकी कटेहुये सर्प्पोंकेसमान देख रावणने बड़ा क्रोधकिया व और तीक्ष्णबाणमारे ९९ रावणके मारेहुये बाणोंको लक्ष्मणजीने अपनेबाणों से काटडाले व आपकुछभी न चलायमानहुये १०० तिनसब बाणोंको निष्फलदेख व लक्ष्मणजी को जल्दबाजी से विस्मित हो रावणने फिर तीक्ष्ण बाण चलाये १०१ व लक्ष्मणजीनेभी रावण के मारडालने के बिचारसे अग्निसमान प्रकाशित तीक्ष्ण व इन्द्रके वज्रके तुल्य भीमवेग वाले बाण धनुषपर चढ़ायछोड़े १०२ परन्तु रावणने लक्ष्मणके चलाये हुये बाणोंको काट फिर कालाग्नि के समान देदीप्यमान ब्रह्माजी का दियाहुआ बाण लक्ष्मणजीके ललाटमें मारा १०३ जिससे लक्ष्मण जी धनुषलिये शिथिल हो कुछ चलायमान होगये व बड़े कष्टसे मूर्च्छाको मिटाय देवोंके शत्रु रावणका धनुष अपने शरसे काटडाला १०४ फिर धनुष कटेहुये रावणको बड़े पैने तीनबाणों से मारा कि जिससे रावण मूर्च्छित होगया व बड़े कष्टसे फिर चैतन्यहुआ १०५ व धनुषकटाहुआ बाणसे ताड़ित चरबी से ओदगात्र व रुधिर से बनाय भीगेहुये रावणने ब्रह्माकीदीहुई शक्ति हाथमेंली १०६ व सहित धूम अग्नि के समान प्रकाशित बड़े वेगसे प्रज्वलित व संग्राममें वानरों को भयाकुल करानेवाली शक्ति राक्षसोंकेराजाने लक्ष्मणजीके ऊपर चलाई १०७ तिसको अपने ऊपर गिरतीदेख लक्ष्मणजीने अग्नि समान प्रकाशित बाणोंसे काटा तथापि वह शक्ति महाराजाधिराज दशरथजी के पुत्रकी छातीमें

आयलगीगई १०८ यद्यपि लक्ष्मणजी बड़े शक्तिमान्थे चाहते तो उस शक्तिकेलगनेसे व्याकुल न होते पर ब्रह्माका वरदान निष्फल न करना यहकर शक्तिकेलगनेसे प्रकाशितहो भूमिमेंगिरपड़े तिनको विकलदेख रावण बनाय निकटआय अपने दोनोंहाथों से पकड़ उठानेलगा १०९ परन्तु यद्यपि सब देवगण सहित हिमवान् मन्दराचल व सुमेरुपर्व्वत व तीनोंलोकभी रावण अपने भुजोंसे उठालेताथा परन्तु लक्ष्मणजीको न उठासका ११० यद्यपि ब्रह्माकी शक्ति लक्ष्मणजीकी छाती में लगी उससे ताड़ितभीहुये तथापि विष्णुभी जिस श्रीरामचन्द्रजीको ठीक ठीक नहींजानते कि इनमें कितनीशक्तिहै ऐसे ऐश्वर्य्यवान् सबके प्रेरक श्रीरामचन्द्रजीका स्मरणकिया इससे चतुर्द्दश भुवनोंसे भी किरोड़ोंगुण अधिक गरुआई आगई रावण उनको न उठासका १११ तब दानवादिकोंके अहंकार नाशनेवाले लक्ष्मणजीको देवताओं के शत्रु रावण ने अपने भुजोंसे पीड़ित किया परंतु उनका पराभव न करसका कि कुछ मारेपीटे या उठालेजाकर लंकामें कुछबिशेष दण्डदे ११२ तब हनुमानूजी क्रोधकर रावणके सामनेदौड़े व अति क्रुद्धहोकर वज्रसमान एक मूकाज़ोरसे रावणकी छातीमेंमारा ११३ तिस मूकाके लगनेसे राक्षसों का राजा रावण पहिले तो जाँघोंकेबलसे बैठगया फिर थरथरायकाँपा व मूर्च्छितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ११४ मुखों नेत्रों व कानोंसे बहुत रुधिर बहनेलगा इससे निश्चेष्टहो घूमकरजाय फिर रथपरगिर बिह्वल पड़रहा ११५ ऐसा मूर्च्छितहोगया कि करचरणादि कुछभी नहीं चला सकाथा बिलकुल मृतप्राय होगया ११६ व भीमबिक्रमी रावणको अति मूर्च्छितदेख सब ऋषिगण वानर देवता व असुरगण हर्षित हो नादकरनेलगे ११७ व महातेजस्वी हनुमानूजी रावणसे पीड़ित लक्ष्मणजीको अपनी दोनोंबाहोंसे उठाय श्रीरामचन्द्रजीके निकटलाये ११८ यद्यपि लक्ष्मणजी शत्रुओंसे कम्पितहोनेके योग्य न थे इसीसे रावणके उठाये न उठे परन्तु हनुमानूजी के सौहार्द्दसे व उनकी परमभक्तिसे प्रसन्नहो हनुमानूजी केलिये हलुके होगये ११९ व समरमें निर्जित लक्ष्मणजीको छोड़ वहशक्ति रावण के रथपरजाय फिर अपने स्थानपर स्थित होगई १२० इतनेमें महातेजस्वी रावणकी भी महासंग्राममें मूर्च्छाजागी व

कर उसने पैनेबाण व बड़ाभारी धनुष हाथमेंलिया १२१ व यहाँ श
त्रोंके नाशक लक्ष्मणजी भी बनसम स्वस्थचित्तहुये व सबव्यथा जातीर
क्योंकि विष्णुभी जिसको ठीक ठीक नहींजानसक्ते तिन रामचन्द्रजी
ऐश्वर्य्यका स्मरणकिया क्योंकिउनके तो अंशहीठहरे १२२ तबमहाब
निपातित वानरोंकी बड़ीभारी सेनादेख श्रीरामचन्द्रजी समरमें राव
के सङ्ग युद्धकरनेको चले १२३ तब हनुमान्जी श्रीरामचन्द्रजीके बन
निकटआयबोले कि आप हमारी पीठपरसवारहो रावणको मारिये१२
जैसेकि विष्णुजी गरुड़के ऊपर सवारहो दैत्योंको मारते हैं पवनकु
के कहे बचनसुन श्रीरामचन्द्रजी १२५ महावानर हनुमान्जी के ऊप
चढ़े व रावणकोभी श्रीमहाराजाधिराज ने रथपर चढ़ देखा १२६
महातेजस्वी श्रीरामजी तिसरावण को देख उसके सामने क्रोधकर च
जैसे बाणासुरके ऊपर क्रोधकर आयुधउठाये श्रीविष्णुजीदौड़े थे १२
पहिले पहुंचतेही पहुंचते तो बज्रके चलनेकेभी शब्दसेकठोर प्रत्यञ्चाका
शब्दकिया फिर गम्भीर बाणीसे श्रीरामचन्द्रजी रावणसे बोले १२
हे राक्षसशार्दूल खड़ेहो खड़े हो इसतरह का हमारा अप्रिय कर कहां
जाकर न बचोगे १२९ ॥

दोहा ॥

इन्द्र वरुण यम रवि अनल विधि हरि हरके पास ।
दशहुदिशन वरुजाहुगे बचिहहु नहिं ममत्रास १ । १३० ॥

हेरावण जिसइन लक्ष्मणको तुमने शक्तिसे मारा व विषाद युक्तहो
शीघ्रही फिर उठआये ये युद्धमें पुत्रपौत्रादियुक्त तुम्हारी मृत्युकेकारण
हैं १३१ व हमनेभी अत्यद्भुतरूप आयुध हाथोंमेंलिये जनस्थान नि-
वासी चौदह हजार राक्षस डेढ़ मुहूर्त्तमें मारडालेहैं तुमभी जानतेहोगे
उसीतरह तुमकोभी मारेंगे १३२ महाबली रावणने श्रीरामचन्द्रजी के
बचनसुन महावेगवान् बलवान् हनुमान्जीके ऊपरसवार रामचन्द्रजी
के ऊपर रणमें १३३ बड़ा रोषकर पूर्व्वसमय के वैरका स्मरणकर
कालाग्नि समान प्रकाशित बाण चलाये १३४ व वे बाणलगे परन्तु
समरमें रावणके बाणोंसे ताड़ितहुयेभी स्वभावहीसे महातेजस्वी श्री-
रामचन्द्रजीका तेज औरभी अधिक बढ़ा १३५ व फिर महातेजस्वी

श्रीरामचन्द्रजीने वानरशार्दूल हनुमान्जी की पीठमें रावणके मारने से घावबनादेख औरभी क्रोधकिया १३६ व अपने तीक्ष्णवाणोंसे पहिया घोड़े ध्वजा छत्र महापताका सारथि वज्रशूल खड्गादि सहित रावणका रथ रत्तीरत्ती काटडाला १३७ व फिर वज्र सम प्रकाशित एकवाण से बड़ी जल्दबाजीके साथ बड़ीचौड़ी रावणकी छातीमें मारा जैसे इन्द्रने वज्रसे सुमेरुपर्व्वत को माराथा १३८ जो रावण राजाइन्द्र के मारेहुये वज्रके लगनेसे न क्षोभही को प्राप्तहुआ न चलायमानही हुआथा वह रावण श्रीरामचन्द्र जी के वाण के लगने से अत्यन्त पीड़ित हुआ व चलायमान भी बहुतहुआ व धनुषभी हाथसे छोड़दिया १३६ तिसको विह्वल देख श्रीरामचन्द्रजी ने अतिदीप्त अर्द्धचन्द्राकार मुखवाला एक वाणलिया व तिससे सूर्य्यवत्प्रकाशित रावणका मुकुट काटडाला १४० व फिर रामचंद्रजी बिषरहित महा विषधर सर्प्पके समान प्रकाशित व मन्ददीप्तिवाले सूर्य्यकेसमान अप्रकाशित श्रीरहित व मुकुट कटेहुये रावणसे बोले १४१ हेरावण तुमने बड़ाभयङ्कर कर्म्मकिया व तुमने हमारे वीरोंको भी बड़े श्रमसे मारा जिससे हम जाना कि अब बहुत थकगये हो इससे इससमय युद्धनहीं करसके हो इसी कारण अब हम तुमको मृत्युकेवश नहींकरते १४२ हमने जानलिया कितुम इसरणमें बहुतही थकित होगयेहो इससे यहांसे चलेजावो व लङ्कामेंजाय बनाय सुस्ताय व युद्धकी ग्लानि मिटाय रथपर सवार हो धनुषवाणादि धारणकर यहां आवो तो फिर रथपर चढ़हुये तुम हमारा बल देखोगे १४३ रामचन्द्र जीके ऐसेबचन सुन रावण दर्पहत होजाने व हर्षहतहोने व धनुषकट जाने व घोड़े सारथि मारजाने व वाणकेघाव लगने व मुकुट कटजाने से अति लज्जितहो व मारेभयके झटपट लङ्काको चलागया १४४ दानवों व देवताओंके शत्रु राक्षसेन्द्रके लङ्काको चलेजानेपर लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजीने सब वानरोंके अङ्गोंमें जोवाण गड़े थे निकलवाडाले व दयादृष्टिसे देखदिया कि सबकी व्यथाजाती रही १४५ ॥

कुण्डलिका ॥

भानुवर वाल्मीकि को सुर दानव नर भूत ।
सकलदिशा सब जलधि सब नाग भूमिजी भूत ॥

नागभूमि जो भूप सकल जल थल नभ वासी ।
भूधर किन्नर यक्ष मनुज मुनि वृन्द उदासी ॥
अतिहर्षितभे सकल भली विधिसों अनुरागे ।
निहतशेष यतुधान सबहि लङ्कातन भागे १ । १५६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकोनषष्ठितमस्सर्गः ॥ ५६ ॥

रामचन्द्रजीके बाणोंकी भयसे अर्हित इसीसे अहङ्कार टूटाहुआ रावण लङ्कामेंजाय सब इन्द्रियोंसे व्यथितहोगया १ जैसे सिंहसे पीड़ित हाथी व गरुड़से पीड़ित सर्प्प ब्याकुलहोता उसीतरह महात्मा श्रीरामचन्द्रजीसे पराजितहो रावण ब्याकुलहुआ २ व ब्रह्मदण्ड के समान सफल व बिजुलीके समान चलायमान व प्रकाशित श्री रामचन्द्रजीके बाणों का स्मरण करताहुआ रावण बहुत ब्यथित हुआ ३ व सुवर्णमय सिंहासनपर बैठकर राक्षसोंकी ओर निहार बोला ४ कि हमने जो तप किया वहसब निष्फलहोगया क्योंकि इन्द्रके समानहो मनुष्यसे बनाय हारगये ५ आज ब्रह्माजीने जो कहाथा कि मनुष्योंसे तुमको भयहोगी वह बात ठीकहुई सत्यसत्य मनुष्यसे ऐसी घोरभय हुई जिसका वारापार नहीं ६ हमने देवता दानव गन्धर्व्व यक्ष राक्षस नाग इन्हींसे अपना अवध्यत्व मांगा क्याकहैं मनुष्योंसे भी अवध्यत्व न मांगा ७ जो इक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न अनरण्यने पूर्व्वकालमें हमको शापदियाथा दशरथ के पुत्र रामचन्द्रजीको हम अपने मरनेका कारण समझतेहैं ८ क्योंकि अनरण्यने हमसे कहाथा हे राक्षसाधम हमारे वंशमें एक इसतरहका पुरुष उत्पन्नहोगा जो समरमें पुत्र मंत्री सैन्य हाथी घोड़े रथ सारथि सहित तुमको मारडालेगा ९ इसके सिवाय हमने पूर्व्वकालमें वेदवती को जबरदस्ती धर्षित कियाथा तब उन्होंने शापदियाथा कि हमारेही कारण तुम्हारा नाशहोगा व उन्हींकी प्रार्थनासे ये बड़े भाग्यवाली जनकनन्दिनी सीताजी उत्पन्न हुईहैं इससे इनसेही हमारा नाशहोगा १० इसके सिवाय पार्व्वती नन्दीश्वर रम्भा व वरुणकी कन्यानेभी हमको शापदियाथा वह हमको प्राप्तहुआ व ऋषियोंके वचन मिथ्या नहीं होते उन्होंने भी तो शापदियाथा ११ अब आप सबलोग इकट्ठे होकर

बाजाभी बड़ेजोरसे बजानेलगे ४५ व बड़ेबड़े भारीभारी काठास उसके अंग पीटने लगे मुद्गर व मुशलोंसे भी बड़ेजोरसे पीटनेलगे ४६ तिस नादसे पर्व्वत बन सहित सबलंकापूर्णहोगईपरन्तुकुम्भकर्णनजागा ४७ तिसकेपीछे सुवर्णके बनेहुये हज़ारों नगारे एकहीसङ्ग जोरसे बजायेगये ४८ जब शापके बशीभूत होनेके कारण ऐसाकरने परभी वह न जागा तो निशाचरलोग बड़े क्रुद्धहुये ४६ व सब भीमपराक्रमी राक्षस कोप युक्तहो उसराक्षस को जगाने लगे व बहुत अपना अपना पराक्रमदिखा दिखा जगानेलगे ५० कोईकोई तो नगारे तुरुही बजानेलगे कोई कोई बड़ा शब्दही करनेलगे कोईकोई उसके शिरके बारही उखाड़नेलगे कोई कोई कान काटनेलगे ५१ कोइकोई सैकरों घड़ोंमें जल भरभर उसके कानोंमें डालनेलगे परन्तु महानिद्राके बशीभूत कुम्भकर्ण कुछभी चलाय मान न हुआ ५२ तब और जो बड़ेबड़े बली राक्षसथे वे शूल मुद्गरादि हाथोंमें लले उसके शिर छाती व अन्य सबअङ्गोंमें कूट मुद्गर शूलादि प्रहार करनेलगे ५३ फिर रस्सियोंस बँधीहुई शतघ्नीनाम मुद्गर विशेष से सबओरसे उसेबांधा परन्तु वह किसीतरह न जागा ५४ तब उसके शरीरपर हज़ारोंहाथी दौड़ायेगये तब जाय कुम्भकर्ण जागा व उसका बड़ाभारी भार बिदितहुआ ५५ पर्व्वत शृङ्ग वृक्षादि बिबिधप्रकारके प्रहारोंको तो कुम्भकर्णने कुछभी न समझा परन्तु जब निद्रा मिटी तो भूखके मारे पीड़ितहो एकाएकी उठखड़ाहुआ ५६ व नागके शरीरके व पर्व्वतके शृङ्गके समान व बज्रवत् अपने दोनोंहाथ उठाय व घोड़ीके मुखके तुल्य अपनामुख पसार वह निशाचर बड़ी बिकरालतासे जँभु-आने लगा ५७ जँभुआतेहुये तिसका पाताल तुल्य मुख पर्व्वतके शृङ्गके आगे उदित सूर्य्यके समान दिखाई देनेलगा ५८ व जँभुआताहुआ वह निशाचर जागा जागनेपर उसके मुखसे पर्व्वतसे निकलतेहुये पवनके समान निश्वास निकलनेलगा ५६ व उठतेहुये कुम्भकर्णकारूप युगांत में सबप्राणियोंको भस्मकरतेहुये कालकासा शोभित हुआ ६० व अग्नि की दीप्तिके समान प्रकाशित व बिजुली समान तेजस्वी उसके नेत्र प्र-काशित ग्रहोंके समान दिखाई देनेलगे ६१ तिसकेपीछे उसके खाने के लिये महिष शूकरादि भी बिबिधप्रकारके भोजन इकट्ठे किये थे वे दिये

व उसने अच्छीतरह भोजनकिया ६२ जहांतक भूखाथा मांसखातारह जब प्यासाहुआ तब रुधिर पीनेलगा फिर चरबी व मदिराके कुम्भपा करनेलगा ६३ जब उसकोबनाय खा पीकर तृप्तहुआजाना तो सबराक्षस सामनेआय प्रणामकर सबओरसे घेरखड़ेहुये ६४ निद्राके वशीभूतहों से उसके नेत्रबनाय लालहोगयेथे उन्हीं नेत्रोंसे चारोंओर निहार स राक्षसोंकीओर निहारनेलगा ६५ व राक्षसोंमें श्रेष्ठ कुम्भकर्ण प्रथमसब राक्षसोंको समझाय फिर अकालमें जगायदेनेके कारण विस्मितहोकर सब राक्षसोंसेबोला ६६ कि तुमलोगोंने बड़ेआदरसे हमको क्योंजगा दिया भलाकुशलतोहै राजाको किसीसे कुछभयतो नहींहै ६७ हमनेतो यहीजानाकि जरूर औरोंसे कुछभय प्राप्तहुईहै उसीकेलिये तुमलोगोंने हमको जगायाहै ६८ सोआज राक्षसराजकीभयहम उखाड़कर फेंकदेंगे व इन्द्रकोभी मारडालेंगे व अग्निकोभी शीतलकरदेंगे ६९ अल्पकारण केलिये हमको कोई न जगायसक्ता इससेहमारे जगानेका कारण बहुत जल्द बताओ ७० क्रोधकिये ऐसा कहतेहुये कुम्भकर्ण से यूपाक्ष नाम रावणकामन्त्री हाथजोरबोला ७१ कि हमलोगोंको तो देवता दानवोंसे कुछभी भयनहीं परन्तु मनुष्यसेही बड़ीभारी भय उत्पन्नहुईहै जिसका कुछ वारापारा नहींहै ७२ हेराजन् जिसतरहकी भय मनुष्यसे आज कल हमलोगोंको हुईहै उसतरहकी तो कभी देव दैत्य दानव राक्षसा दिकोंसेभीनहींहुई ७३ वह यहहै कि पर्व्वताकार वानरोंसे यह लंकाचारों ओरसे घिरीपरीहै यहभय सीताकेहरणसे दुःखित रामचन्द्रजीकी ओर से हमलोगोंको हुईहै ७४ प्रथम यहां समुद्रनांघ एकवानरआया उसने सबलंकापुरी फूंकदी व अक्षकुमारादि बहुत योधोंकोभी मारडाला ७५ बहुत कौन कहै अतिकाय महोदर अकम्पनादि योधा तो जानो मारेही डालेगये आपखुद देवताओंकेवैरी राक्षसोंकेराजा रावणभी महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीकी ओर से यह कहकर कि अब यहांसे भागजावो समर से बचादियेगये ७६ जो बात आजतक महाराजा रावण के साथ न कोई देवताकरसका न कोई दैत्य वह यहांआय रामचन्द्रनेकिया जोकि रावणको अपनीओरसे छोड़दिया नहीं तो प्राणजानेमें कुछ सन्देह न रहगयाथा ७७ यूपाक्षकी जबाती समरमें अपने भाईका निरादरसुन

इसकाही यत्नकरें १२ व राजमार्ग्ग में व शहरपनाहके किनारे किनारे राक्षसलोग टिकें व अति गम्भीरतायुक्त देवता दानवोंके दर्पनाशनेवाले व ब्रह्माके शापसे सोतेहुये कुम्भकर्णको भी जगावो १३ क्याकरें जब रावणने अपनाको तो रामचन्द्रजीसे हाराहुआ जाना व प्रहस्तको भी माराहुआ सुना व कुम्भकर्णको भीमबलवान् जाना तो महाबली रावण ने आज्ञादी कि १४ प्रथम तो सब फाटकोंपर यत्नकरो व प्राकार पर चढ़ कर रक्षाकरो व सोतेहुये कुम्भकर्णको जगावो क्योंकि वह कामके मारे उपहत चित्त निश्चिन्तिहो सोरहाहै १५ जो कहो कि वह आप जगेगा जगाने की कौनजरूरतहै तो वह एकहज़ारदोसौअस्सी महीनोंसे सोरहा है अब आजके नवयेंदिन जागेगा अभी न जागेगा व आवश्यक आजहै इससे अभीजाय जगावो १६ क्योंकि वह महाबाहु समरमें सब वानरों व उनदोनों राजपुत्रोंको शीघ्रही मारडालेगा १७ सो वह सबराक्षसों में मुख्य व सबका पताकारूप मूढ़ कुम्भकर्ण ग्राम्यपदार्त्थ स्त्री पुत्रादिकों के सुखमें निरत नित्य सोताही रहताहै १८ जब कुम्भकर्ण जागेगा तो महादारुण संग्राम में रामचन्द्र से हारेहुये हमको शोक न होगा १९ जो इन्द्रतुल्य पराक्रमी कुम्भकर्ण इसतरहके भी दुःखमें हमारी सहायता न करेगा तो फिर उसका लेकर क्याकरेंगे २० रावणके ऐसे बचनसुन वे राक्षसलोग बड़ीजल्दीके साथ कुम्भकर्णके स्थानको गये २१ मांस रुधिर भोजन करनेवाले वे राक्षसलोग रावणकी प्रेरणासे चन्दनादि सुगंधित वस्तु व माला व विविधप्रकारके भोजनले बड़ीजल्दीसे गये २२ पुष्पकी सुगन्धसे महकतीहुई चारकोशकी लम्बी व उतनीही चौड़ी बड़े भारी मुखवाली अतिरमणीय कुम्भकर्णकी गुहामें पैठे २३ परन्तु वे महा-बली राक्षस पैठनेके समय कुम्भकर्णकी सांसोंसे ऐसेकम्पित हुयेकि उस गुहामें बड़ेकष्टसेपैठे २४ व रत्न काञ्चनकी दीवारेंबनी उस रमणीय गुहामें जाय राक्षसश्रेष्ठोंने भीमबिक्रमी कुम्भकर्णको सोतेहुयेदेखा २५ व सबके सबइकट्ठेहो बिकरालरूप पर्व्वताकारपड़े बहुतदिनोंसे सोतेहुये कुम्भकर्ण को जगानेलगे २६ उसके सबरोम ऊपरको खड़ेथे व सर्प्पके समानऊर्ध्व सांसलेरहाथा व अपनेनिश्वासोंसे राक्षसोंकोभ्रमायरहाथा व भीमविक्रमी वह सोरहाथा २७ व बड़ेभीमउसकेनासाकेपुटथे व पातालसदृश बड़ामुखथा

सब अङ्ग बिस्तरोंपर लगायेथा चरबी रुधिरकी गन्धियुक्त २८ सुवर्णके बहूँटा धारणकिये व सुवर्णहीका किरीट धारण करनेसे सूर्य्यवत् प्रकाशितथा ऐसे कुम्भकर्ण को राक्षसों ने देखा २९ तिसके पीछे महात्मा राक्षसों ने कुम्भकर्ण के आगे बहुतसे जीवोंकी राशि उसके खानेकेलिये खड़ीकरदी ३० उनमें मृगों महिषों शूकरों व अन्नोंकी परम अद्भुतराशि राक्षसव्याघ्रोंने इकट्ठीकी ३१ फिर रुधिरसे भरेहुये घड़े व विविधतरह के मांस कुम्भकर्णके समीप उन्होंने किये ३२ व उसके अङ्गोंमें बड़ेमोल का चन्दन लगाया व दिव्य मालादि सुगन्धित पदार्थोंसे वहां सब सुगन्धित करदिया ३३ व सबराक्षसों ने धूपगन्ध किया व स्तुतिभी की व मेघोंके समान बड़ाभारी नाद भी किया ३४ व चन्द्रसम उजल शङ्ख भी बजाये जब इतनेपर भी न उठा तो सबोंने एकहीसङ्ग हल्लाकिया ३५ व कोईकोई राक्षस जोरसे पुकारनेलगे व कोई कोई बाहँ आदि बजाय बजाय ताड़देनेलगे व कोईकोई उसकेपाद उठाय उठाय भूमिमें पटकने लगे व कोईकोई कुम्भकर्णके जागनेकेलिये बिबिधप्रकारके शब्द करने लगे ३६ जैसे कि शङ्ख नगारे तुरुँही नरसिंहा आदि बजाये व बड़े बड़े जोरसे सिंहवत्नाद करनेलगे जिसेसुन सबपक्षी सबदिशाओंको भाग चले व आकाशको उड़े फिर वहांसे गिरगिरपड़े ३७ जब इतने उपायों सेभी कुम्भकर्ण महात्मा न जागा तब सबराक्षसोंने भुशुण्डी मुद्गर मूसर आदि अस्त्रलिये ३८ व पर्व्वत शृङ्ग मुशल गदा मुद्गर व मूकोंसे कुम्भकर्णकी छातीमें मारनेलगे ३९ परन्तु तिस राक्षस कुम्भकर्णके निश्वास के लगनेसे बलवान् भी राक्षसलोग आगे न खड़ेहोसके ४० तबराक्षस अच्छीतरह धोतीआदि बस्त्रोंकी चौतनी मार मृदङ्ग नगारे तुरुँही शङ्ख व घड़े आदि बाजे बजानेलगे ४१ व दशहजार राक्षस एकहीसङ्ग घेरकर नीलांजनके ढेरके आकार तिस राक्षस को जगानेलगे ४२ प्रथम तो चारोंओर घूम घूम बड़ाभारी नाद किया फिर सबकेसब मारनेलगे परन्तु वह न जागा ४३ जब इन सब उपायोंसे राक्षसलोग कुम्भकर्ण को न उठाय सके तो उससे दारुण व बड़ाउपाय करनेलगे ४४ घोड़े ऊंट गदहे हाथी आदि जीवोंको उसके ऊपर चढ़जाने के लिये लोहके दण्डों आदिसे मारमार खेदनेलगे व उनके पीछे शंख तुरुँही मृदंगादि

है १२ जब यह उत्पन्न हुआथा और बहुतही छोटाथा तभी इसने हज़ारों किशोरों प्रजासमूह भक्षणकरलिये १३ जब बहुतसी प्रजाओंको इसने खालिया तो सबशेष प्रजा अपना रक्षकजान इन्द्रके निकटगई व सब प्रयोजन वर्णनकिया १४ तब महाकोपकर इंद्रजीने वज्रसे कुम्भकर्णको मारा पर इंद्रके वज्रके लगनेपर इसमहात्मा कुम्भकर्णने बड़ाकोपकर बड़ेज़ोरसे नादकिया १५ तब इसकुम्भकर्ण राक्षसके गर्ज्जने से प्रजा औरभी बहुत भयभीतहुई १६ व क्रुद्ध कुम्भकर्णने ऐरावत हाथीकादाँत उखाड़ उसीसे इंद्रकी छातीमेंमारा १७ तिसकेलगनेसे इंद्र बहुतसन्तप्त हुये व देवता ब्रह्मर्षि दानव मनुष्य बड़े दुःखितहुये १८ तब इन्द्र सब प्रजाओंको सङ्गले ब्रह्माजीके स्थानकोगये १९ व ब्रह्माजी से कुम्भकर्णकीदुष्टता उनलोगोंने कही जिसतरह प्रजाओंको उसने भक्षणकिया व देवताओंको पराजितकिया व ऋष्यादिकोंके मन्दिर तोड़डाले व औरोंकी स्त्रियाँ हरलीं येसब समाचारभीकहे २० व यहभी कि जोयह कुम्भकर्ण इसीतरह प्रजाओंका भक्षणकरेगा तो सबलोक शून्यहोजायगा २१ इन्द्रके बचनसुन ब्रह्माजीने सब राक्षसोंको अपने निकट बुलवाया तब कुम्भकर्णको भी देखा २२ कुम्भकर्णकोदेख ब्रह्माजीभीबहुतडरे व व्याकुलहो इसी कुम्भकर्णसे बोले २३ कि हमने निश्चयकिया कि बिश्रवाने तुमको लोकबिनाशही करनेकेलिये उत्पन्नकियाहै इससे अब आजसे मृतकसमानहो तुम सोतेहीरहो २४ तब ब्रह्माजीके शापकेकारण कुम्भकर्ण ब्रह्माजीके आगेही जँभुआकर गिरपड़ा इस दशाकोदेख अतिव्याकुलहो रावण बोला २५ हे ब्रह्माजी सुवर्णकावृक्ष बढ़ाथा जब फरनेका समयआया तब आपने काटडाला यह आपकोउचितनहीं है इससे इसको ऐसा शापदेना योग्यनहींहै २६ परंतु आपके बचनभी तो मिथ्यानहींहोसक्ते इससे यहसोवेगा तो अवश्यही इसमेंकुछभी संदेहनहीं परंतु इसकेसोने व जागनेका कुछकाल आपनियत करदीजिये २७ रावणके बचनसुन ब्रह्माजीबोले कि यह छःमासतक सोतारहेगा फिर एकदिनजागेगा २८ तब यहबीर भारेभूंखके एकहीदिनमें मुखबाय लोकोंमें बहुत लोगोंको खाजायगा जैसा प्रलयसमयका अग्निबढ़जाताहै २९ सो अब आपके पराक्रमसे डरकर राजा रावणने कुम्भकर्णको जगायाहै ३० यह बीर

कुम्भकर्ण अहाँ सेनाविन्यास रूपकहै गई। गुहामें सोताथा अबउठाहै क्रुद्धहोकर वानरोंकोखाता चलाजाताहै ३१ सो कुम्भकर्ण को देखकर ये सबवानर भागेचलेजातेहैं तो ये प्रकारे उसको समरमें रोंक सकेंगे ३२ इससे आप सबवानरोंसे कहें कि हमारे पास यह बड़ाभा यन्त्रहै जिससे राक्षस सिकुड़जाते हैं बस इसबात को जान सब वान निर्भयहोजावेंगे ३३ बिभीषणजीका सहेतुक व अच्छीतरहसे कहाहुआ बचनसुन श्रीरामचन्द्रजी नीलनाम सेनापतिसे बोले ३४ हे नीलजाव सबवानर सैन्योंके बिजनबनाय व किलेबांध लङ्काके फाटकोंपर लेजाय जाय व उसके सबमुरचों व अन्यसब आनेके मार्गोंमें जाय लगावो व खड़ेकरो ३५ व सब वानरलोग पर्ब्बत शृङ्ग वृक्षशिलाआदि आयुध ले लेजायखड़ेहों ३६ श्रीरामचन्द्रजीके बचनसुन वानरोंके सेनापति नील ने बिधिपूर्ब्बक वानरोंकी सेनाको सिखलाया ३७ तब गवाक्ष शरभ हनुमान व अङ्गद ये चारोवानर श्रेष्ठ पर्ब्बतशृङ्ग लेले लङ्काके द्वारपर जा खड़ेहुये ३८ इनकेसिवाय और भी सबवानर श्रीरामचन्द्रजी के बचन सुन वृक्षोंसे राक्षसोंको पीड़ित करनेलगे ३९॥

चौपाई॥ तरु अरु शैल लियेकरमाहीं। वानरसैन्यबिराज तहाँहीं॥
जिमिपर्ब्बतढिगगतजलधरगण। शोभितहोत सैन्य सोतिमिरण॥१४०॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकषष्टितमस्सर्गः॥६१॥

वहाँ वह बिपुलबिक्रमी राक्षसशार्दूल कुम्भकर्ण निद्राकेमदसे आकुल चित्त शोभायुक्त राजमार्ग्गमें चला १ उसके संग संग हज़ारों राक्षसभी चलेजातेथे व सबघरोंसे उनसबोंके ऊपर फूलोंकी बर्षाहोती चलीजाती थी इसतरह वहचला २ व जाते जाते उसने सुबर्ण समूहसेबना व सूर्य्यवत्प्रकाशित रम्य बड़ाभारी अपने भाईका स्थानदेखा ३ व जैसे बादर समूहमें सूर्य्य पैठतेहैं वैसेही भाईके मन्दिरमें पैठ कुम्भकर्ण ने दूरहीसे आसनपर बैठेहुये अपने भाईकोदेखा जैसे आसनपरबैठेहुये ब्रह्माजीको इंद्रजी जब कभीजाते हैं तबदेखते हैं ४ राक्षसों के संग भाईके भवनको जातेहुये कुम्भकर्णने अपने पैरोंके चलाने से पृथ्वी को कँपादिया ५ व भाईके भवनकेबनाय भीतरजाय पुष्पकबिमानपर बैठेहुये उदासीनचित्त

ड़ेबड़े नेत्रनिकाले कुम्भकर्ण यूपाक्षसेबोला ७८ हेयूपाक्ष आजही सब
ानर सैन्य सहित लक्ष्मण व रामचन्द्रको समरमेंजीत फिर रावणको
खेंगे ७६ वानरोंके मांस व रुधिरसे तो राक्षसोंको तृप्तकरावेंगे व राम
लक्ष्मणका रुधिर हम आप पान करेंगे ८० कुम्भकर्णके अहंकारयुक्त व
रोषकेमारे सदोष बचनसुन राक्षस वीरोंमें मुख्य महोदर नाम राक्षस
हाथजोर फिरबोला ८१ कि रावणके बचनसुन फिर गुण दोषका विचा-
रांशकर पीछेसे समरमें शत्रुओंको जीतोगे ८२ महोदर के बचन सुन
महातेजस्वी कुम्भकर्ण राक्षसों के संग चला ८३ व भीमरूप पराक्रमी
कुम्भकर्ण को शयन करने से जगाय बहुतसे राक्षस प्रथमही रावणके
निकट पहुंच गयेथे ८४ वे राक्षस लोग परमासन पर बैठेहुये रा-
वणसे हाथ जोड़कर बोले ८५ हे राक्षसेश्वर तुम्हारा भाई कुम्भकर्ण
जागाहै अबवहींसे संग्रामभूमिको चलाजावे अथवा तुम यहां आयेहुये
उसको देखाचाहतेहो ८६ यहसुन बड़ाढीठ रावण उन राक्षसोंसे बोला
कि हम प्रथम यहांही देखाचाहतेहैं इससे आदर पूर्ब्बक यहांलावो ८७
रावणकी आज्ञापाय उसे अंगीकारकर राक्षसलोग कुम्भकर्ण के समीप
आयबोले ८८ सर्ब्ब राक्षसोंकेराजा रावण आपको वहांही देखाचाहतेहैं
इससे चलनेकी तैयारी कीजिये व अपने भाई को हर्षित कीजिये ८६
भाईकी आज्ञाजान महादुर्द्धर्ष व महावीर्य्य कुम्भकर्ण बहुत अच्छाकह
बिस्तरापरसे उठा ६० व बहुत हर्षितहो मुहँधोय स्नानकर प्यासाहो
पीनेकीबस्तु मांगनेलगा ६१ तब सब राक्षसलोग रावणकी आज्ञासे
मद्यमांसादि विविधप्रकारकी खानेपीनेकी चीज बहुतही शीघ्र कुम्भ-
कर्ण के समीपलाये ६२ तब दोहजार घड़े मद पीकर गमन करने का
बिचारकिया यद्यपि कुम्भकर्णने बहुत मदपान किया परन्तु वह बहुत
बलवान्तोथाही कुछहीमतवाला न हुआ उससमय क्रोधकियेहुये काल
के समान विदितहुआ ६३ महाबलवान् कुम्भकर्ण राक्षसभाईके मंदिर
को चलते समय पदन्यासोंसे पृथ्वी कँपाताहुआचला ६४ व अपने श-
रीरसे राजमार्गको प्रकाशित कराताहुआ किरणोंसे पृथ्वीकोप्रकाशित
करतेहुये सूर्य्यके समान चला व हाथजोड़े मन्दिरकी ओर चला जैसे
इन्द्रब्रह्माके भवनको चलतेहैं ६५ तिसको शत्रुघाती व महापर्ब्बताकार

कुम्भकर्णको मार्गमें जाताहुआदेख बाहर खड़ेहुये वानरलोग देख सब यूथपालों सहित भयभीतहुये ६६ उनमें कोई कोई तो सबकेरक्षक रामचन्द्रजीके शरणकोगये कोई कोई ऐसेही गिरपड़े कोई कोई भहराभार जाय दिशाओंमें गिरे कोईकोई मारेभयके पृथ्वीमें गिरकर सोरहे ६७।

दोहा ॥

गिरिवर शृङ्ग समान शिर भूषणसों रवितुल्य ।
शोभितलखि रघुहि कपिगण भागे जहँतहँ कुल्य १ । ६८।

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेषष्टितमस्सर्गः ॥ ६० ॥

तब महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजीने धनुष हाथमेंले मुकुट शिरपरधारे महाभयंकर शरीर कुम्भकर्णकोदेखा १ व पर्वताकार भीमदर्शन तिस राक्षस श्रेष्ठको आकाश मापतेहुये वामनजी के समान बढ़ाहुआ देख २ व फिरजलसहित जलधरके समान शोभितसुवर्णका वजुल्लाबांधे उसको देख वानरोंकी सबसेना भाग खड़ीहुई ३ वानरोंकी सेना भागीहुई व राक्षसको बढ़ाहुआदेख विस्मितहो रामचन्द्रजी विभीषणजीसे बोले ४ कि लंकामेंकिरीट धारणकिये वानरोंकेसे नेत्रवाला व पर्वताकार कौन वीर दिखाई देताहै जोकि बिजुली सहित बादरके समान शोभित होरहाहै ५ यह पृथिवीका पताकारूप अकेलाही दिखाई देताहै जिसको देख सबवानर जहांतहां भागेजातेहैं ६ बतावोतो बड़ाभारी यहराक्षस है वा दैत्यवाहैजोहो हमने इसजन्ममें ऐसाप्राणी कभी नहींदेखा ७ जब महात्मा महाराजकुमार अपूर्व्वकर्म्मकारी रामचन्द्रजीने ऐसापूंछा तो महाप्राज्ञ विभीषणजी श्रीरामचन्द्रजी से बोले ८ कि जिसने युद्धमें यमराज व इन्द्रको पराजितकिया विश्रवाका पुत्र कुम्भकर्ण नाम महाप्रतापी है इसके प्रमाण के तुल्य और राक्षस नहीं है ९ हे राघव इससे संग्राममें हजारों देवता दानव यक्ष सर्प राक्षस गन्धर्व्व विद्याधर हारकर भागगये १० शूलहाथमें लिये खड़े नेत्रकिये व महाबली कुम्भकर्णकोदेख इसको कालसमझ देवतालोग ऐसे मोहितहुये कि मार नसके ११ क्योंकि और और राक्षसेन्द्रोंको तो वरदानपानेसे बलाधिक्यहै व यह कुम्भकर्ण अपनी प्रकृतिहीसे तेजस्वी व महाबलवान

गुरुरूप अपने बड़ेभाई रावणकोदेखा ६ समीप आयेहुये कुम्भकर्ण को देख बड़ीजल्दीके साथउठ रावण कुम्भकर्णको बनाय अपने निकटलाया ७ व आप आसनपर बैठगया तब बैठेहुये अपने भाईके चरणोंमें कुम्भकर्णने प्रणामकिया व कहाकि क्याकरनाहै ८ यह सुन रावण अत्यानन्दितहो उठकर फिर अच्छीतरह कुम्भकर्णको लपटकर मिला व कुम्भकर्ण भाईसे मिलनेके कारण बहुत आनन्दित हुआ ६ व उसने भाईका दियाहुआ बड़ाउत्तम आसन बैठनेकेलियेपाया व महाबली कुम्भकर्णउस आसनपरबैठे १० मारेक्रोधके लालनेत्रकर रावणसेबोला हेराजन् किस लिये बड़ेआदरसे तुमने हमको जगवाया ११ बतावो तो तुमको आज कहांसे भयहै व कौन मराचाहताहै ऐसाकह परमक्रोधकियेहुये अपनेभाई कुम्भकर्ण से १२ मारेक्रोधके नेत्रटेढ़े कर रावण बोला १३ हेमहाबल तुम को तो सोतेसोते बहुत समय बीतगया इससे बहुत सो जाने के कारण रामचन्द्रसेजोभय हमकोहै उसे तुमनहीं जानते १४ ये महातेजस्वी व श्रीमान् व महाबली श्रीरामचन्द्र सुग्रीवको सङ्गले समुद्र को नांघ अब हमारे कुलका नाशकरतेहैं १५ देखो लङ्कामें सब बन व उपबन उजाड़ पड़ेहैं समुद्रमें सेतुबांध उसपरसे उतर वानरोंने एकार्णव करदिया १६ व जोजोराक्षस मुख्यमुख्यथे उन सबोंकोसमरमें वानरोंने मारडाला व युद्ध में हमने वानरोंका नाश किसी तरहसे न देखा व न दिखाई देताहै १७ क्योंकि कोईवानर युद्धमें आजतक हाराही नहीं यह हमको भय उत्पन्न हुईहै हेमहाबल अबइस भयसे हमारी रक्षाकरो व इनसबोंको आजही तुम मारडालो इसीलिये आपको हमने आज जगाया है १८ सब द्रव्य सैन्यआदि नाश कराये हुये हमारी तुम रक्षा करो व इस लङ्कापुरी की रक्षाकरो क्योंकि इसमें बालक व वृद्धोंको छोड़ और कोई ज्वान राक्षस नहीं रहगया सबको वानरोंने ढूंढ़ ढूंढ़ मारडाला १६ हेबीर अब भाईके लिये दुष्कर कर्म्म करो हमने आजतक किसी भाईसे ऐसा दीन बचन नहीं कहाथा २० परन्तु तुममें हमारा बड़ाभारी स्नेहहै व तुम्हारा बड़ा भारी भरोसाहै क्योंकि हेराक्षसश्रेष्ठ देवता व असुरोंसे जबकभी तुमसे युद्ध हुआहै २१ तुमने बहुतसे देवताओं व दैत्योंको पराजित किया बरन जोईकोई तुमसे लड़ा वहीहारा २२ तिससे हेभीम पराक्रम अब अपने

वीर्य्यपर आरूढ़होवो क्योंकि सब प्राणियों में तुम्हारे सदृश बली और कोईनहीं दिखाई देता २३ ॥

कुण्डलिया ॥

प्रियरण बान्धव प्रियपरम विक्रम अति रणधीर ।
यहमम प्रिय हित सुभग तुम करहु न होहु अधीर ॥
करहु न होहु अधीर बीर सिख मानहु मेरी ।
निज तेजहिसों कीश कटक हनु करसि न देरी ॥
जिमि प्रचण्ड अति पवन उड़ावत है वारिद गोल ।
तिमि अबदेहु उड़ाय सकल कपिदल हो [illegible] ॥ २४ ॥

इत्यार्षेश्रीमद्रामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेद्विषष्टितमस्सर्गः ॥ ६२ ॥

तिस राक्षसराज का बिलाप सुन कुम्भकर्ण बोला व बड़े जोरसे हँसा १ कि पूर्व्वकाल में बिभीषणादि जब इसबिषय में सम्मत करते थे व जो दोष हम लोगोंने बिचारा था वह अपने अहित में युक्त तुमको प्राप्तहुआ २ तुमको शीघ्रही पापकर्म्म करने का फल मिलगया जैसे पाप करनेवाले पुरुषको नरकवास शीघ्रही मिलता है ३ हे महाराज पहिले इस कार्य्यका बिचारांश आपने नहींकिया केवल अपने बीर्य्यही के घमण्डसे इसका परिणाम नहीं बिचारा ४ जो पुरुष ऐश्वर्य्यके अहङ्कारसे प्रथमका कार्य्य पीछे करता व पीछेका कार्य्य पहिले करता वह नीति अनीति नहीं जानता ५ अनुचित देशकाल में कियेहुये कर्म्म बिपरीत फल देतेहैं इससे दूषित होजातेहैं जैसे सँस्कारके अयोग्य शूद्रादिके छूनेसे खीर दूषित होजातीहै ६ जो पुरुष मन्त्रियोंकी सम्मति से बिचार पूर्व्वक कर्त्तव्य क्षय व वृद्धिस्थान इन तीनों को कर्म्मारम्भोपाय पुरुष द्रव्य सम्पति देशकाल बिभाग बिपत्ति प्रतीकार व कार्य्य सिद्धि इन पांचो प्रकारोंके साथ करताहै वह राजमार्ग में अच्छीतरह चलता है ७ व जो राजा राजनीतिके अनुसार सलाह करता व मन्त्रियोंकी सम्मतिले फिरअपनी बुद्धिसे भी बिचारलेता व सुहृदोंसे भी पूछलेता वह अच्छाकार्य्य करता है ८ जो नीति निपुण पुरुष अपने अपने समयपर

धर्म्म अर्थ व कामका सेवन करता अर्थात् प्रातःकाल धर्म्मसेवन करता व मध्याह्नमें अर्थ सेवन व सन्ध्याके पीछे कामका सेवन करता अथवा तीनों कालोंमें जैसा अवकाश मिलता तीनों अर्थ धर्म्म कामोंका सेवन करता वा दोदो एकसङ्ग सेवताहै वह पुरुष सुखी रहताहै ९ व इन तीनोंको सुन जो श्रेष्ठहोता उसको नहींमानता तो चाहे राजाहो वा राजपुत्रहो उसके बहुत सुनने व लिखनेपढ़ने से कुछभी फल नहींहोता १० हेराक्षसश्रेष्ठ जो पुरुष दान साम भेद व पराक्रम योग नीति व अनीति ११ धर्म्म अर्थ व काम इनसबका सेवन मन्त्रियोंकी सम्मतिसे अपने उचित समयपर करताहै संसारमें वह दुःखित नहीं होता १२ राजाको चाहिये कि अर्थके निश्चय जाननेवाले सचिवोंसे व अन्य सेवकोंसे भी पूछकर जिसमें अपना हितदेखे वही कार्य्य करे १३ परन्तु बाज बाज पुरुष किसी प्रकारसे जो सम्मति करनेमें बुलाये गये तो वे पशुबुद्धि लोगमारे ढिठाईके शास्त्रका अर्थ न जाननेवाले पुरुषसे कुछ औरका औरही कहदेतेहैं १४ परन्तु जो शास्त्र न जानतेहों उनका बचन कभी न मानना चाहिये क्योंकि वह अहितही होता क्योंकि वे लोग अर्थ शास्त्र को तो जानते नहीं व धनकी आशा बड़ी रखते हैं इससे ठकुरस्वहाती कहदेतें उनकी बातका कौनठीकहै १५ व जो पुरुष अहितबात बनायकर ऐसी कहदेते मानों हितही कहतेहैं ऐसे धूर्त्तोंको सलाहसे बाहर करदेना चाहिये क्योंकि वे सबकार्य्य भ्रष्ट करदेतेहैं १६ व बहुत मंत्री ऐसेहोतेहैं कि वे शत्रुओंको मिलकर अपने स्वामीका नाश करदेतेहैं व सब कार्य्य बिपरीतहो करतेहैं १७ स्वामीको चाहिये कि उन मंत्रियोंको जोहैं तो बैरी परन्तु मित्र बनेहैं व्यवहारसे जानलेवे व जानकर दूर करदेवे १८ जो राजा चञ्चलचित्तहो अविचारसे इधर उधर दौड़ता फिरता उसके छिद्र और शत्रुलोग जानजाते हैं जैसे छिद्र रहित क्रौञ्चनाम पर्व्वत में षड़ाननकी शक्तिसे कियेहुये छिद्रमें पक्षीलोग चलेजातेहैं १९ जो राजा शत्रुको तुच्छ समझ उसका अनादर करता वह अनर्थोंको पाता व अपने स्थानसे भी उतारदिया जाताहै २० तुमसे जो बात मन्दोदरीने व हमारे तुम्हारे छोटे भाई विभीषण ने कहीथी वही हमको भी अच्छी लगतीहै कि सीताको लेचल रामचन्द्रको देदो जो तुमको यह न अच्छा समझपड़े

तो जो भावे सो करो २१ कुम्भकर्णके ऐसे बचनसुन रावण क्रुद्धहो भौंह टेढ़ीकर बोला २२ कि पिता व आचार्य्यादि मान्यलोगोंके समान तुम हमको अब क्या सिखातेहो हम तुम्हारा कहा न करेंगे इस वार्त्तालापसे क्याहै क्यों बहुत बतलातेहो इससमय जो तुम्हारे करनेके योग्यहै वह करो २३ बिभ्रमसे व अविवेकसे अथवा बलबीर्य्यके आश्रयसे जो कार्य्य अबतक हमने न किया अर्थात् सीताको न दिया तो अब उसकी कथाही वृथाहै क्यों बकतेहो अब तुम्हारे सिखाने से न देंगे २४ इस समय जो योग्यहै उसका बिचारकरो हमको अन्याय करनेसे जो दुःख उत्पन्नहुआ है वह अपने बिक्रमसे मिटाओ २५ यहकार्य्य तबकरो जब हमारे बिषय में कुछ तुमको स्नेहहो व अपने बिक्रमकी ओर कुछ ख्यालहो व हमारा यहकार्य्य तुम्हारे हृदयमें अति कार्य्यहो २६ सुहृद वही कहाताहै जो द्रब्यहीन दुःखीके भी सङ्ग खड़ाहो व बन्धु वहीहै जो अनीति करनेसेभी दुःखित अपने बन्धुकी सहायताकरे २७ इसतरहके धीर व दारुणबचन कहतेहुये रावणको क्रुद्धजान बहुतधीरेसे मधुरबचन कुम्भकर्ण बोला२८ भाईको बहुत ब्याकुलजान समझाताहुआ कुम्भकर्णबोला २९ हे राजन एकाग्रचित्तहो हमारे बचनसुनो हे राक्षस राजेन्द्र सन्ताप करनेसे कुछ लाभनहींहै रोष छोड़ अब स्वस्थहोनेके आप योग्यहैं ३० हे राजन् हम जीते बनेहैं तबतक आप अपने मनमें ऐसी उद्विग्नता न लावें जिसके कारण आप परितप्त होतेहैं समरमें हमउनको मारडालेंगे ३१ सब अव-स्थाओंमें हमको तुम्हारे हितकीही बात अवश्य कहनी चाहिये इसीसे भाईके स्नेहसे व बन्धुभावसे हमने ऐसाकहाथा ३२ इससमय जो प्रिय व उत्तमबन्धुको करना उचितहै वह हमारा कियाहुआ अपने शत्रुओंकानाश शीघ्रहीदेखो ३३ हे रावण आजसमरमें हमारे मारेहुये राम लक्ष्मणके पीछे भागतीहुई वानरोंकी सेनादेखो ३४ आजहमारा लेआयाहुआ राम-चंद्रका शिर देख आप सुखीहोवें व सीता दुःखितहो ३५ जिन राक्षसोंके बंधु मारेगयेहैं वे लोग आजलङ्कामें हमारे मारेहुये रामचन्द्रको देखें ३६ आज अपने बन्धुओंके बधका शोचकरतेहुये शोकयुक्त राक्षसों के आँशु समरमेंशत्रुको मारडालनेसे पोंछेंगे ३७ आज सूर्य्यसहित बादरकेसमान पर्ब्बताकार वानरेश्वर सुग्रीवको मारेहुये समरमें आपदेखें ३८ हे पाप

रहित रामचन्द्रको मारनेकी इच्छाकियेहुये इनराक्षसों व हमसेभी रक्षित हो आपकैसे व्यथित होतेहैं ३९ हे राक्षसाधिप पहिले रामचन्द्र हमको मारडालेंगे तो फिर तुमको मारनेपावेंगे क्योंकि हम इस सन्तापको न सहेंगे ४० हे परन्तप आप हमको अच्छीतरह आज्ञा दीजिये अब युद्ध करनेकेलिये और किसीकीओर न देखिये ४१ हम अकेलेही बड़ेबलवान् तुम्हारे शत्रुओंको मारडालेंगे चाहे इंद्रहों वा यमराज व अग्नि व पवन ४२ तिन सबसे हमलड़ेंगे व कुवेर व वरुणसेभी युद्धकरेंगे क्योंकि पर्ब्बताकार शरीरधारी व शूल धारणकिये हमारे ४३ तीक्ष्णनाद करनेसे बेचारे इंद्र डरजाते हैं अथवा जब हम शस्त्रास्त्र बहाय शत्रुओंको रौंदने लगेंगे ४४ तो जिसको जीनेकी इच्छाहोगी वह कोईभी हमारे सामने न खड़ाहोसकेगा हम न तो शक्तिसे मारेंगे न गदासे न खड्गसे न तीक्ष्ण बाणोंसे ४५ केवल अपने हाथोंसेही मारडालेंगे चाहे इन्द्रभीहों ४६ जो आजहमारे मूकाकाबेग रामचन्द्र सहलेंगे व नमरेंगे तो फिरउनका रुधिर हमारे बाणपीवेंगे ४७ हे राजन् हमारी विद्यमानतामें तुम क्यों चिन्ताकरतेहो हम तुम्हारे शत्रुओंको मारडालनेके लिये जानेको तैयार हैं ४८ अब रामचन्द्रसे घोरभयछोड़ो हम उनको समरमें मारडालेंगे रामचन्द्र लक्ष्मण व महाबली सुग्रीव कोईभी न बचेंगे ४९ व जिन्होंने पहिले लङ्का फूंकदीहै उन हनुमान्को भी मारडालेंगे व सम्हरमें पहुँचतेही पहुँचते सबवानरोंको खालेंगे ५० हमतुमको महायशदेंगे जो इन्द्र से भयहोगी व ब्रह्मासे भी ५१ तो भी हमनाशही करदेंगे जैसे रात्रिका अंधकार सूर्य्य नाशतेहैं जब हम क्रोधकरेंगे तो देवता भी होंगे तो पृथ्वी पर शयनही कररहेंगे ५२ यमराजका भी नाशकरदेंगे व अग्निको भी बुझाडालेंगे व सहितनक्षत्र सूर्य्यको भी पृथ्वीपर गिरादेंगे ५३ इन्द्रको भीमारडालेंगे व समुद्रभीपीलेंगे पर्ब्बतोंकोभी चूर्णकरडालेंगे व पृथ्वीको भी बिदीर्णकरदेंगे ५४ बहुतदिनोंसे सोतेहुये कुम्भकर्णका वीर्य्य सब ओरसे भक्ष्यमाण प्राणी आजदेखें ५५ यह सब स्वर्ग्ग हमको अघाने भरको नहींहै अबहम रामचन्द्रके मारने से तुमको सुखदायक सुखदेने केलिये जाते हैं समरमेंराम व लक्ष्मण को मार सब वानरोंको खालेंगे ५६ हे राजन् अब विहारकरो व मदिरा पानकरो व दुःखमिटाय कार्य्य

करो अब हम रामचन्द्र को यमपुरको भेजेदेते हैं इससे सीता आप ब
दिनोंतक तुम्हारे वशमें रहेंगी ५७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रिषष्टितमस्सर्गः॥ ६३॥

बड़ेभारी शरीरवाले अतिबली व बाहुशाली कुम्भकर्णका वचनसु
महोदरनाम राक्षस बोला १ हे कुम्भकर्ण प्रशस्तकुलमें उत्पन्न होने
तुमको बड़ागर्व्वहै इससे अतिढीठ होगयेहो इससे प्राकृतीलोगोंके स
मान विदित होनेलगे इसीसे सब विषयकी बातनहीं जानसक्ते २ हे
कुम्भकर्ण राजारावण क्यानीति अनीति नहींजानता जो तुमसिखलाते
हो हमारीजान तो तुम लड़कपन के कारण ढीठे होगयेहो इससे ऐसा
कहतेहो राजा किसीतरह अन्यायी नहींहै ३ वरन उचित देशकालको
अच्छीतरह जानते अपनी व शत्रुओंकी हानिवृद्धि व निवासस्थान सब
कुछ जानतेहैं ४ जो अनुचित कर्म्म प्राकृत बुद्धिवाला व वृद्धोंकी सेवा
बिनाकियेहुआभी पुरुष केवल अपने बलहीके भरोसे नहींकरता वैसा
कर्म्म और विज्ञनर कैसेकरेगा ५ व जो धर्म्मअर्त्थ कामोंको तुमअलग
अलग भिन्नभिन्न समयोंमें सेवनकरनेको कहतेहो उनकोतुमखुद अच्छी
तरह नहींजानते फिर राजाको क्या सिखलावोगे ६ व सबकारणोंका
प्रयोजन कर्म्महीहै इसीसे पापकर्म्मोंकाभी फलहोताहै जो कुछप्रारब्ध
में होता वहीहोताहै इससमय तुम्हारा ऐसा कथना अनुचितहै ७ धर्म्म
व अर्त्थदोनों मोक्षकोभी देतेहैं व इनसे स्वर्ग्गप्राप्ति व यहांराज्यादि
भोगभी मिलसक्तेहैं व अधर्म्म व अनर्त्थकी जो प्राप्तिहो तोभी कभी
कभी अपराधीको सुखमिलजाताहै ८ पुरुष इसलोककेलिये व परलोक
के लियेभी कर्म्म करतेहैं व कामपर आरूढ़ पुरुषभी समर्त्थ कर्म्मोंका
फलपाताहै ९ तिससे जो कुछ राजानेकियाहै वह अच्छीतरह विचार
लियाहै व उसविषय में हमलोगोंकीभी सम्मति होचुकीहै इससे शत्रुके
विषयमें जो साहसहै अब उसे क्यों दूरकरते हो १० व जो तुमने कहा
कि केवल हम अकेलेही जाकर सबको मारआवेंगे उसविषयमेंभी जो
उचितहै वह हम बतातेहैं व जो अनुचितहै वहभी बतातेहैं ११ भला
जिन रामचन्द्रजीने अकेलेही जनस्थानमें बड़े बड़े बलवान बहुत रा-

सोंको मारडाला उनको तुमअकेले कैसे जीतसकोगे १२ जो बड़े बड़े राक्रमी राक्षस पूर्व्वसमयमें जनस्थानमें जीतिगयेहैं भला उनको लङ्का अबतुम नहींदेखते कि कैसे भयभीत होरहेहैं १३ बड़ेशोचकी बातहै कि उन रामचन्द्रजीको सोतेहुये सिंहकेसमान क्रुद्ध सोतेहीहुये सर्प्पके ल्य बिनाजानेबूझे तुमजगाया चाहतहो १४ भला ऐसा कौन त्रिलोकी है जो तेजसे नित्यही बरतेहुये व क्रोध करनेसे औरभी भयंकर श्री-रामचन्द्रजीको मृत्युके समान असह्यको भयभीत करसक्ताहै १५ इस सबकार्य्यमें संशयहै जो शत्रुको पराजित करनेके लिये अकेलेही जाया चाहतेहो इससे हमकोतो अकेलेजाना नहींरुचता १६ भला ऐसा कौन है जो आप निर्व्वलही अतिबलवान् शत्रुको प्राकृत समझ अपने प्राण छोड़नेपर निश्चयकर उसको अपने वशमें करना चाहै १७ हे राक्षसो-त्तम जिन रामचन्द्र जी के समान मनुष्यादिकों में और कोई नहीं है भला इन्द्र व यमराज से भी अधिक पराक्रमी व तेजस्वी श्रीरामचन्द्र जीसे तुम अकेले कैसे युद्ध करनेको कहतेहो १८ क्रोधकिये हुये कुम्भ-कर्णसे ऐसाकह महोदर राक्षसोंके बीचमें बैठेहुये रावणसे बोला १९ कि भला तुमतो बहुत दिनोंसे सीताको पाचुकेहो अब क्यों बिलम्ब करते हो जब चाहोगे तभी सीता तुम्हारे बशमें होजावेगी २० सो सीताको वशकरनेका उपाय हमने एक बिचाराहै हेराक्षसेन्द्र जो तुम्हारी बुद्धिमें भी यहबिचार आवेतो सुनो २१ वह यहहै कि तुम सबकहीं यह ढिंढो-रा पिटादो कि महोदर द्विजिह्व संह्रादी कुम्भकर्ण व वितर्द्दन ये पांच रामचन्द्रके मारनेको जावें २२ तब हमलोग जाकर यत्नसे रामचन्द्रको युद्धदान देंगे जो तुम्हारे शत्रुओंको जीतलेंगे तोफिर औरकुछ उपाय करनेकी आवश्यकताही नहींहै २३ अथवा जो हम लोगोंके युद्ध करने परभी तुम्हारे शत्रुजीते रहेंगे हमलोग न मारसकेंगे तो जोबात हमलो-गोंके मनमेंहै फिर वही करेंगे २४ वह यहहै कि रामनामाङ्कित रामच-न्द्रजी के तीक्ष्ण बाणोंसे अपना अपना देह कटाय अङ्गोंसेरुधिर बहाते हुये हमलोग समर भूमिसे यहां आवेंगे २५ व हमलोग यह कहतेहुये आपकेपास आवेंगे कि हमलोगोंने रामचन्द्र व लक्ष्मण को भक्षण कर-लिया यहकह आपके प्रणामकरेंगे तबतुम हमारे मनोरथ पूरे करना २६

व हाथीपर एक राक्षसको चढ़ाय लङ्काभरमें पुकरवादेना किसैन्य व भाई सहित श्रीरामचन्द्रजी मारगये २७ व प्रसन्नहो तुम नौकर चाकरोंको भोग परिवार वस्त्र भूषण धनादि दिलाने लगना २८ फिर वीरोंको भी अच्छी अच्छी माला वस्त्र अनुलेपनादि देना इसतरह योधोंको बहुत बहुतदे फिरहर्षितहो आपभी पीनाखाना व पहिरना २९ जब इसतरह लङ्काभरमें राक्षसलोग सर्व्वत्र कहनेलगें कि रामचन्द्रको राक्षसोंने भक्षण करलिया ३० तबतुम एकान्तमें सीताके निकटजाय बहुत तरहसे समझाय बुझाय धनधान्य व रत्नादि अनेक पदार्त्थ देदे सीताको ललचवाना ३१ इस उपाधिके करनेसे औरभी शोकमेंपड़ अनाथ होजानेके कारण यद्यपि तुम्हारीइच्छा नहींकरतीं पर अवशहो अवश्य तुम्हारेबश में होजावेंगी ३२ परम मनोहर अपनेस्वामी श्रीरामचन्द्रजी को मृतक जान निराश होने व स्त्रियोंके लघुस्वभाव होनेकेकारण अवश्य तुम्हारे बशमें आजावेंगी ३३ क्योंकि वे पूर्व्वसमय में बड़ेबड़े सुख करकर बढ़ी हैं इससेसदा सुखही करनेके योग्यहैं परन्तु अबमारे दुःखके दुर्ब्बल होगईहैं औरसुख आपके आधीन होनेमें जान सब तरहसे आपके समीप आवेंगी ३४ हमने अपनीबुद्धिसे यहबनाय निश्चय करलियाहै कि जो तुम रामचन्द्र के सामने फिरगये तो बड़ा अनर्त्थ होगा अर्त्थात् तुमको मारहीडालेंगे इससेयहीं बैठेबैठे तुम्हारा बड़ालाभ सिद्धहोगा अब रामचन्द्रसे युद्ध करनेकी इच्छा किसीतरहसे भी न करो बिना युद्धही किये तुम्हारे सबकार्य्य सिद्धहोंगे ३५ ॥

कुण्डलिका ॥

जो राजा बिन रणकिये रिपु गणजीतत तात ।
नष्टहोत तासैन्य नहिं अरुनहिं संशय लात ॥
अरुनहिं संशय लात बात यह सत्य हमारी ।
पावत वह यश पुण्य कीर्ति श्री सौख्य करारी ॥
अरुसबसों चिरकाल सुखादिभोगि गुण भ्राजा ।
रहत अनन्दित सदाकरत यहिबिधि जो राजा ॥ १ । ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुष्षष्टितमस्सर्गः ॥ ६४ ॥

जब इसतरह महोदरने कुम्भकर्णको कहा तो वह महोदरको दुर्व्व-चन कह फटकार अपनेभाई राक्षसश्रेष्ठ रावणसे बोला १ कि हम राम-चन्द्रको मार तुम्हारी घोर भय मिटादेंगे इससे अबतुम शत्रुरहितहोकर सुखीहोवो २ निर्ज्जलबादरोंके समान शूरलोग वृथानहीं गर्ज्जते अब समरमें कर्म्मकर हमारागर्ज्जना देखो व सुनो ३ क्योंकि शूरलोग अपने मुखसेअपनी बड़ाईनहीं कियाचाहते जबतक वैसाकर्म्म नहीं दिखादेते चुपबैठेरहते हैं जब दुष्करकर्म्म करते तो औरहीलोग कहनेलगतेहैं ४ रावणसे इतनाकह महोदरसे कहनेलगा हेमहोदर जोराजालोग कातर होते व अपनाको पण्डित मानते हैं उनको तुम्हारे बचन अलबत्ता अच्छे लगेंगे पर रावणको तो कभी न अच्छे लगेंगे ५ आपलोगोंके समान का-तर व प्रियबादी पुरुष जिसराजाके सङ्गरहतेहैं उसके सबकार्य्य नष्ट करदेतेहैं ६ वही तुमने भी किया कि अबलङ्कामें राजाके सिवाय और बीरनहींरहा सबको मरवाडाला व सब खज़ाना क्षीणहोगया इससे बल घटगया इन राजाको पाय सुहृदरूप धारणकिये तुमपूरे बैरीहो ७ इस से हमतुम लोगोंकी अनीति मिटानेकेलिये अब शत्रुओंके मारनेको युद्ध करनेजातेहैं ८ ऐसाकहतेहुये कुम्भकर्णके बचनसुन रावण हँसताहुआ बोला ९ हेयुद्ध बिशारद हेतात कुम्भकर्ण सत्य सत्य यह महोदर राम-चन्द्रसे बहुत डरा हुआहै इसमें कुछभी सन्देह नहीं इससे इसको युद्ध नहीं अच्छालगता १० हेकुम्भकर्ण सौहृदसे व बलसेभी तुम्हारेसमान हमारे ओर कोई नहींहै इससे शत्रुओंको मारने व जीतनेके लिये अब तुमशीघ्रही जावो देर न करो ११ व शत्रुके नाशनेही केलिये सोतेहुये आपकोहमने जगवायाहै हेशत्रुसूदन राक्षसोंका यह बड़ाभारी कालआ-याहै १२ इससे अब पाश हाथमेंलिये यमराजके समान तुमशूल हाथमें लेजावो वानरों व सूर्य्यसम तेजस्वी उन दोनों राजपुत्रोंको भक्षणकरो १३ तुम्हारा रूप देख वानर भागेंगे व राम लक्ष्मण के भी हृदय फट जावेंगे १४ महातेजस्वी रावण महाबली कुम्भकर्ण से ऐसाकह अपना को जानों फिरसेउत्पन्न समझा १५ क्योंकि कुम्भकर्ण के बलको अच्छी तरह जानता था व उसका पराक्रम भी जानता था इससे शरदऋतु के निर्म्मल चन्द्रमा के समान हर्षितहुआ १६ राजाके बचनसुन हर्षितहो

महाबली कुम्भकर्ण प्रसन्नचित्तहोकर राजाके कहनेसे युद्धकरनेकोउद्यत हुआ व उसशत्रुनाशकने पैन व १७ कालेलोहसेबनाहुआ तपायेहुयेसुवर्णसे भूषित अतिप्रकाशित इन्द्रकेबज्रकेतुल्य व बज्रहीकेसमान गरू १८ व देवता दानव यक्ष गन्धर्ब्ब व नागोंका बिध्वंसक लालफूलोंकी मालासे भूषित मानों अपनाहीसे प्राप्तहुये अग्निकेसमान प्रज्वलित १९ व शत्रुओं के रुधिरसे रंगाहुआ शूलहाथमें ले महातेजस्वी कुम्भकर्णरावणसेबोला २० कि हमअकेलेहीजातेहैं यह तुम्हारी बड़ीभारीसेना यहांहीरहै इसके जानेकीकुछ आवश्यकता नहींहै २१ क्योंकि आज क्रोधकिये व भूखे हम उनसब वानरोंको भक्षणकरलेंगे कुम्भकर्णके बचनसुन रावणबोला २२ कि शूल मुद्गरहाथमेंलिये बहुत सैन्योंके सङ्ग जाइये क्योंकि वानर लोग बड़ेशूर व बड़ेमहात्मा व बड़ेउद्योगीहैं २३ अकेले मदान्ध तुमको देख झटपट दांतोंसे काटकाट मारडालेंगे तिससे परम दुर्द्धर्ष सैन्यों को सङ्गलेही करजावो व राक्षसोंका अप्रिय करनेवाली वानरोंकी सब सेना मारहीडालो २४ इतनाकह आसन परसे उठ महातेजस्वी रावण ने मणिकीमाला कुम्भकर्णके गलेमें पहिनादी २५ व बहूंटा मुंदरी आदि श्रेष्ठ भूषण व चन्द्रवत् उज्ज्वल हार महात्मा कुम्भकर्ण को रावण ने पहिराया २६ व दिब्य सुगन्धित पुष्पोंकी माला रावणने कुम्भकर्णके सबअङ्गोंमें पहिराई व कानोंमें सुंदरकुण्डल पहिराये २७ सुवर्णके बहूंटा आदिभूषण धारणकर बड़े बड़े कानोंका कुम्भकर्ण प्रज्वलित अग्निके समान शोभितहुआ २८ करिहावँमें कालासूत्र बाँधनेसे समुद्र मथनेके समय बासुकि सर्प्पसे बँधेहुये मन्दराचलके समान शोभितहुआ २९ व बिजुलीकेसमान चमकताहुआ कवच धारणकर सन्ध्यासमयके बादरसे घिरेहुये सुमेरुपर्ब्बत के समान शोभितहुआ ३० सबअङ्गोंमें सब भूषण धारणकिये वह राक्षस तीनपैग नापने के समयके बामनजी के समान शोभितहुआ ३१ रावणके प्रणामकर व उसको अच्छीतरह लपटायमिल व प्रदक्षिणाकर महाबली कुम्भकर्णचला ३२ व प्रशस्त आशिषदेरावणने तिसकोभेजा ३३ चलनेके समय शङ्खनगारे आदि बाजेबजे व श्रेष्ठआयुध धारण किये सैन्य चली हाथी घोड़े रथ पैदरोंसेयुक्त चतुरंगिनीसेनाचली व सब रथी लोग तिसके पीछे पीछे चले ३४ व महाबली कुम्भकर्ण के

छेपीछे सर्प्प ऊंट गदहे सिंह हाथी मृग व पक्षियोंपर चढ़चढ़ सब राक्षस चले ३५ छत्र लगाये काला त्रिशूल हाथमें लिये ऊपरसे फूलोंकी वर्षासे आच्छादित बड़ाउद्भट व रुधिर की गन्धिसे मदान्ध देवताओं व दानवोंका शत्रु कुम्भकर्ण लङ्कासे निकला ३६ व उसके पीछे पीछे बहुत से पैदर बड़े सारवाले व बड़े बलवाले भीमपराक्रमी व भयङ्कर नेत्रवाले राक्षस हाथोंमें शस्त्रलिये चले ३७ उन सबराक्षसोंके लाललाल तो नेत्र थे व सब बहुतदण्ड करनेवालेथे व सब काजल के पहाड़के समान थे वे लोग शूल खड्ग पैन फरसे ३८ धनवासी परिघ गदामुशल ताल स्कन्ध व बड़े बड़े क्षेपणीय आदि शस्त्रास्त्रलिये चले ३९ कुम्भकर्ण भी अबतक तो और रूपधारण कियेथा और घोरदर्शनरूप धारणकरचला ४० उस समय कुम्भकर्णका शरीर सौ धनुष अर्थात् तीनसौ हाथका तो फैलाव मेंथा व एकसै छः धनुष अर्थात् तीनसौ अठारह हाथका लम्बा व शकट की पहियाओंके समान नेत्रथे व बड़े भारी पर्ब्बतके समान दिखाईदेता ४१ राक्षसोंकेआगे झुंककर जलेहुये पर्ब्बतके समान भारी व पर्ब्बतकी कन्दराके समान मुखवाला कुम्भकर्ण राक्षसों से बोला ४२ कि आज मुख्य मुख्य वानरों के यूथोंको जातेही जाते भस्मकरदेंगे जैसे अग्नि पतङ्गोंको भस्मकरदेता ४३ जिन बेचारे वानरोंकी जाति हमलोगों के पुरके उद्यानोंका भूषणहै वे वानर हमारा अपराध कुछनहींकरते इससे उनको न मारनाचाहिये ४४ जो कहोकि इन्हीं वानरोंनेहीं लङ्काघेरीहै सो लङ्का घेरनेकेमूल रामचन्द्रजी हैं व लक्ष्मणभी इससे हम समरमें उन्हीं दोनोंजनोंको मारेंगे क्योंकि उनके मारजानेपर और सब आपमर जावेंगे ४५ कुम्भकर्ण राक्षसने जबऐसाकहा तो राक्षसोंने मानों समुद्र कँपातेहीहुये नादकिया ४६ जब बुद्धिमान् कुम्भकर्ण ऐसा कह जोर से चला तो चारोंओरसे अतिघोर निमित्त होनेलगे ४७ जैसे कि उल्कापात व वज्रपात सहित बादर गदहोंके रङ्गका होगया व समुद्र बन सहित सब पृथ्वी कांपनेलगी ४८ व मुखमें कवल लिये सब शृगालियां फ-करनेलगीं पक्षीलोग मण्डल बांधबांध दहिनी ओर चलनेलगे ४९ व मार्ग्गमें चलेजातेहुये उसके शूलके ऊपर गृध्रबैठगया बामनेत्र फरकने लगा व बामभुज काँपउठा ५० व बड़ीभारी जलतीहुई उल्काउसकेआगे

गिरपड़ी सूर्य्यकी प्रभा जातीरही व कर्कशपवन बहनेलगा ५१ इन सब रोम हर्षण उत्पातोंको कुछभी न समझताहुआ कुम्भकर्ण यमराज की प्रेरणासे चलाहीगया ५२ पर्ब्बताकार कुम्भकर्ण पैदरही चलकर शहरपनाहके बाहरहुआ कि उसने मेघोंके समान वानरोंकी सेनादेखी ५३ व उसराक्षस श्रेष्ठका देखतेही सब वानरलोग सबदिशोंकी ओर ऐसेभागे जैसे प्रचण्ड पवनके बेगसे बादर इधर उधर उड़जातेहैं ५४ वानरोंकी प्रचण्डसैन्य बादरोंकेसमान सबओरको भागतीदेख मेघाकार कुम्भकर्ण हर्षितहो बहुतहीगर्ज्जा ५५ तिसका घोरशब्दसुन आकाशमें मेघोंके शब्दकेसमान बहुत वानर पृथ्वीपर गिरपड़े जैसे जड़ कटजाने पर साँखूकेवृक्ष गिरपड़तेहैं ५६ ॥

दोहा ॥

बिपुल परिघधारी महात्मा रिपु मारणहेतु ।
पुरसोंनिकस्यो प्रलयमहँ यमसम अतिदुखदेतु ॥ १ । ५७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपंचषष्टितमस्सर्गः ॥ ६५ ॥

पर्ब्बताकार महाबली व भयङ्कर कुम्भकर्ण शहर पनाहको नाँघ बाहरकोचला १ व बज्रपातके शब्दको भी जीतताहुआ व पर्ब्बतोंको भी मानों कँपाताहुआ व समुद्रको क्षुभित कराताहुआ बड़ेज़ोरसे गर्ज्जा २ तिसको इन्द्र वरुण व यमादिकोंसेभी अवध्य आतादेख सबवानर भाग खड़े हुये ३ तिन बड़े बड़े प्रतापी वानरोंको भी भागतेहुयेदेख वानर राजकुमार अंगद नल नील गवाक्ष व महाबली कुमुदसेबोले ४ कि भला अपने बड़े बड़े भारी बीर्य्योंको व परिवार जातिवाले लोगोंको भुलाय भयसे ब्याकुलहो साधारण वानरों के समान कहाँ भागेजातेहो ५ हे बीरो अभीकुछनहीं बिगड़ा लौटआवो अरेप्राणोंकीरक्षा क्याकरतेहो यह राक्षस युद्धकरनेमें कुछभी समर्त्थनहींहै यह केवल बड़ीभारी ऊपर से गिदरभभकीहै ६ हे वानरो लौटआवो राक्षसोंकी इस बड़ीभारी बिभीषिकाको अपने बिक्रमोंसे नाशकरदेंगे ७ इसतरह बड़े कष्टसे समझबूझ सब वानर लौटे व इकट्ठे हो सबके सब वृक्षलेले खड़ेहोगये ८ व क्रोधकर सब वानर मदान्ध हाथियों के समान क्रोधकरके कुम्भकर्णको

साथही मारनेलगे ६ उनमें कोईकोई वानरतो बड़ेबड़े ऊँचे पर्व्वतों के शृङ्गों से मारने लगे व कोईकोई महाबली शिलाओंसे व कोई कोई फूलेहुये वृक्षोंसे यद्यपि वानरोंने बहुत मारा परन्तु कुम्भकर्ण किञ्चिन्मात्र भी कम्पित न हुआ १० बरन तिसके गात्रोंपर गिरने से बहुतसी शिला फूटगईं व बहुतसे फूलेफले वृक्ष टूट टूट पृथ्वीपर गिरपड़े ११ व वहभी बड़ा क्रोधकर महापराक्रमी वानरोंकी सेनाओंको सँभरकर मथने लगा जैसे कि दावानल बनोंको एक ओरसे मथताहै १२ इससे बहुतसे वानर तो रुधिर से भीगे हुये पृथ्वी पर लोटनेलगे व ऐसे शोभित होते थे जैसे कटे हुये भूमि में पड़े लाल पुष्पवाले वृक्ष शोभित होते हैं १३ जब यहदशाहुई तो जो वानरमरने व घावलगनेसेबचेथे वेएक दूसरोंको नाँघते व दौड़तेहुये भागे पीछे फिरकर कोईभी वानर नहीं देखते थे कोई तो जाय समुद्रमें गिरपड़े व कोई बनमें जायछिपे १४ जब उसमहाबलवान् राक्षसको ओरसे वे वानरवीर मारेगये तो जिस मार्ग्गहोकर समुद्रउतरेथे उसीमार्ग्गकी भागखड़ेहुये १५ व मारेभयके विवर्णमुखहो वानरलोग झरीभूमिको ओदी व ओदीकोझरी माननेलगे व कोई कोई ऋक्षजाय वृक्षोंपर चढ़कर बैठे व कोई पर्व्वतोंपर चढ़गये १६ कोईकोई गिरपड़े कोईकोई खड़े ही न हुये भागतेही चलेगये व कोई कोई भूमिमें गिरपड़े कोई कोई मारेभयके मृतकों के समानहो सोरहे १७ उनसबको इसतरह भागतेहुयेदेख अंगदजीबोले कि वानरो खड़े होवो लौटोतो आवो फिर युद्धकरें १८ भागकर गयेहुये तुमलोगों को पृथ्वीभरमें हमऐसा निर्भयस्थान नहींदेखते जहांबचसको क्योंकि यहांसे भागेहुओंको सुग्रीव सबको मारडालेंगे इससे अपना भलाचाहो तो लौटआवो क्याप्राणबचातेहो १९ जबतुमलोग निरायुधहो भागोगे तो मार्ग्गमें पुरुषोंकेसमान गमन व पौरुषसहीनभी स्त्रियां तुमलोगोंको हँसेंगी वह उनलोगोंका उपहास तुमलोगोंको जीतेजीते मरणकेसमान होजावेगा २० तुम सबलोग बड़े बड़े भारी व उत्तमकुलोंमें उत्पन्नहुये हो भयभीतहो कहां भागेजातेहो जैसे साधरण वानर भागतेहैं तुम लोगोंको वैसा न भागना चाहिये २१ तुमलोग बड़ेअनारीहौ जोडरके मारे वीर्य्यकोछोड़ भागे चलेजातेहो भलाजोलोगों के आगे सभामेंआप

लोग बड़ीबड़ी बातें मारतेथे व बड़े बड़े ऊँचेमनोरथ करतेथे कि हमं अकेले राक्षसोंको मारडालेंगे कोई कहताथा लंकाही उठा लेजावेंगे सबबातें तुमलोगोंकी कहांगई जो अब उड़े चलेजातेहो २२ जिसपुरु को सत्पुरुष धिक्कारतेहैं उसडरपोंकके नरकपातादि प्रवाद सुनाईदेतेहैं इससे सत्पुरुषों के सेवाकरनेके योग्य मार्ग्गमेंचलो व भयछोड़दो क्या डरतेहो २३ जो अबथोड़ीही आयुर्व्वल बाकीहोगी तो मरकर पृथ्वीपर सोयहीरहेंगे नहीं तो न मरेंगे सो यदि समरमें मरभीजावेंगे तो ब्रह्मलोक पावेंगे जो अधर्म्म युद्धकरनेवालोंको अतिही दुर्लभहै २४ अथवा जो समरमें शत्रुकोही मारडालेंगे तो लोकमें कीर्त्तिहीपावेंगे व जो मारे जावेंगे तो वीरोंकेलोकका धन भोगकरेंगे दोनोंओरसे अच्छाही है २५ इसकेसिवाय श्रीरामचन्द्रजीको देख कुम्भकर्ण तो जीताहुआ फिरलंका को जायहीगा नहीं जैसे जलतेहुये अग्निको पाय कीट पतङ्ग जीतेनहीं लौटते २६ वीरोंमेंगिनेहुये हमलोग जो एककुम्भकर्णहीके भयसे बहुत भागगये व भागकर अपनेप्राणोंकी रक्षाकरली तो कीर्त्तिनाशक होजावेगी कि इतने वीरवानर एक राक्षसकी भयसे भागगये २७ सुवर्णका बहूंटापहिरे महाशूर अंगदके बचनसुन भागते चलेजातेहुये वानरलोग शूरलोगों के आगे निन्दाकरने के योग्य बचनबोले २८ कि कुम्भकर्ण राक्षसने हमलोगोंका बड़ा घोर नाशकियाहै इससे अब खड़े होनेका समय नहींहै हमलोगोंको अपने अपने प्राण बहुतप्रियहैं इससेजातेहैं २९ ऐसेबचन कह सब वानरलोग महाभयंकर नेत्रवाले व परमभयंकर रूप कुम्भकर्णको आतादेख दशोदिशोंकीओर भागे ३० जब सबवानर वीर भागेतो अंगदने वालिके वधके समयके अनुमान कियेहुये रामचंद्र जीके पराक्रमोंसे कुम्भकर्णके मारजानेकी प्रतीतिकराय बहुत समझाय बुझाय वानरोंको लौटारा ३१ व परम बुद्धिमान् अंगदजीने उनसबको बहुत हर्षित भी किया कि जिससे वे फिर वहांखड़े हुये व सब यूथप अंगदकी आज्ञाको परखनेलगे ३२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेषट्षष्टितमस्सर्गः ॥ ६६ ॥

अंगदके बचनसुन बड़ेबड़े शरीरवाले सब वानर नैष्ठिकी बुद्धि

ारणाकर युद्धकरनेकी इच्छासे सबके सब लौटे १ व सब अपने अपने शौर्य्यका स्मरणकर व अच्छीतरह विक्रमकर युद्धकरनेको आरूढ़हुये क्योंकि अतिबलवान् अंगदने अच्छे अच्छे सहेतुक बचन कहकह उनको बनाय दृढ़करदियाथा २ इससे हर्षितहो सबकेसब आये व सब मरने पर उतारूहुये यहांतक कि अपना अपना जीव छोड़नेपर तैयारहो बड़ा तुमुलशब्द करनेलगे ३ व पर्ब्बताकार वानरलोग बड़ेबड़े वृक्ष व पर्ब्बतों के शृङ्ग उठाय उठाय कुम्भकर्णके सामने दौड़े ४ व महाकाय कुम्भ-कर्णभी बड़ाक्रोधकर गदाउठाय चारोंओरसे सबको धर्षित करताहुआ शत्रुओंके ऊपर प्रहार करनेलगा ५ यहांतक कि कुम्भकर्ण के मारेहुये सातसौ आठसौ व हज़ार हज़ार वानर पृथ्वीमें मरकर सोगये ६ व सोलह सोलह आठआठ दश दश बीश बीश तीश वानर हाथोंसे एकही संग पकड़ खायखाय दौड़नेलगा ७ जैसे गरुड़ बड़ाक्रोधकर सर्प्पोंको खाने लगतेहैं फिर इसतरह भक्षित होनेपरभी वानरलोग बड़ेकष्टसे स्वस्थचित्तहो इकट्ठे हो वृक्षपर्वत शिलादिहाथोंमें लेलेकर समरभूमिमें खड़े हुये ८ उनमें बादरके समान लम्बमान् द्विविदनाम वानर श्रेष्ठ पर्व्वतउखाड़ हाथमेंले पर्व्वताकार कुम्भकर्ण के ऊपरको दौड़ा ९ व उठाय वहीपर्व्वत कुम्भकर्णके ऊपर चलाया परन्तु पर्व्वत उसको न पाय उसकी सेनापर जायगिरा १० व बहुतसेघोड़े हाथी रथोंकोचूर्ण करदिया व बहुतसेराक्षसोंकोभी पीसडाला इसतरह फिरऔर राक्षसोंके मारनेकेलिये पर्व्वतकाऔर शिखरउठाया ११ यहांतक पर्व्वतकेबेगसे हाथीघोड़े रथ सारथिआदि मारेगये कि समरभूमि राक्षसोंके रुधिर से बिलकुल भीजगई १२ व वानरेन्द्रों के रथीलोगोंने कालान्तक के समान बाणोंसे नादकरतेहुये राक्षसोंके शिरकाट बड़ा भयंकर शब्द किया १३ इसीतरह और और भी महात्मा वानरोंने बड़े बड़े वृक्ष उखाड़ उखाड़ रथों घोड़ों हाथियों ऊंटों व राक्षसोंको मारडाला १४ तिसकेपीछे हनुमान्जी अकाशमेंखड़ेहो पर्ब्बतोंके शृंग विविधप्रकारकी शिला व बड़े बड़े वृक्ष कुम्भकर्णके शिरपर बर्षनेलगे १५ व उनपर्वत शृङ्गोंको व वृक्षोंकीवर्षाको महाबली कुम्भकर्णने शूलसे तोड़फोड़डाला १६ व तीक्ष्णशूलले वानरोंकी बड़ी उग्रसेनाके ऊपरको दौड़ा व दौड़े

हुये उसके सामने एक पर्ब्बत हाथमें ले हनुमान् जी टिकेरहे १७ व उसी पर्ब्बतसे महाभूधराकार शरीर कुम्भकर्णको बड़ा कोपकर मारा उसके लगने से कुम्भकर्ण कुछ चलायमानहो उठा व अंगऐसे विदीर्ण होगये कि चरबी व रुधिर बहनेलगा जिससे वह बनाय भीगगया १८ तब अग्निवत्प्रज्वलित पर्ब्बतके शृङ्गके समान बिजुलीकी चमककीतरह चमकताहुआ शूलहाथमेंले व अच्छीतरह अज़माय कुम्भकर्णने हनुमान् जीकी छातीमेंमारा जैसे षडाननने बड़ी उग्रशक्ति से क्रौञ्चनाम पर्ब्बत को माराथा १६ उस शूलके हनुमानूजी की छातीमें लगनेसे वे बहुत ब्याकुल होगये व रुधिरमुखसे बहानेलगे व मारे रोषके हनुमानूजी ने युगान्त समयके मेघके गर्ज्जनेके समान नादकिया २० तब हनुमानजी को ब्यथितदेख सबराक्षसलोग बहुत हर्षितहो बड़ेजोरसे नादकरनेलगे व कुम्भकर्णकी भयसेपीड़ित हो वानरलोग बहुत ब्यथितहो रणसे भागनेलगे २१ तिसकेपीछे अतिबलवान नीलनामवानरों के सेनापति ने सबसैन्यको लौटारा व फिरएक पर्ब्बतका शृङ्गले बुद्धिमान् कुम्भकर्णके ऊपर चलाया २२ उसको अपने ऊपरको आतादेख कुम्भकर्ण ने मूका मारा कि जिससे वह पर्ब्बतका शृङ्ग चूर्ण होगया २३ व उसमेंसे चिनगारियां निकलनेलगीं इससे ज्वालासहित उसके टुकड़े पृथ्वीपर गिर पड़े २४ तब ऋषभ शरभ नील गवाक्ष व गन्धमादन ये पांच वानरशार्दूल एकहीसङ्ग कुम्भकर्णके सामने दौड़े २५ व जाय सबओरसे महाकाय कुम्भकर्णको पर्ब्बतों वृक्षों चरणों मूकोंसे मारनेलगे २६ परन्तु उसको बिदितहुआ कि जानों कोई खजुवाताहै ब्यथा तो कुछभी उसको न हुई फिर उसने बाहोंसे ऋषभको पकड़ ज़ोरसे अपनी छातीमें लपटा लिया २७ तब कुम्भकर्णके भुजोंसे पीड़ितहो वानरोंमें श्रेष्ठ ऋषभ पृथ्वी पर गिरपड़े व उनके मुखसे रुधिर बहनेलगा २८ फिर इन्द्रके शत्रु कुम्भकर्णने मूकासे शरभको मारा व जांघसे नीलको व गवाक्षको लात से समरमें मारा २६ ऐसे ज़ोरसे इन सबोंको उसने मारा कि जिससे सबकेसब मूर्च्छित होगये व सबके अङ्गोंसे रुधिर बहनेलगा फिर सब पृथ्वीपर गिरपड़े जैसे काटेहुये टेसूके वृक्ष गिरतेहैं ३० जब वानरों में मुख्य उन महात्मा वानरों को कुम्भकर्णने गिरादिया तो उसके ऊपर

एकबारगी हज़ारों वानर टूटे ३१ व पर्ब्बताकार सब वानरश्रेष्ठ पर्ब्बताकार उस राक्षसके ऊपर चढ़कर ठौर ठौर काटनेलगे ३२ व नखों दांतों मुक्कों व बाहों से महाबाहु कुम्भकर्ण को सब वानरश्रेष्ठ मारनेलगे ३३ परन्तु पर्ब्बताकार वह राक्षस हज़ारों वानरोंके लपटजानेसे ऐसा शोभित हुआ जैसे पर्ब्बत अपने ऊपर जमेहुये वृक्षोंसे शोभित होताहै ३४ तब वह महाबली राक्षस अपने हाथोंसे पकड़ पकड़ सब वानरोंको खाने लगा जैसे गरुड़ सर्प्पोंको खातेहैं ३५ कुम्भकर्णने पातालाकार अपने मुखमें जिन वानरोंको झोंकलिया वे वानरश्रेष्ठ कोईतो नासिकाके छेदों में होकर निकलआये कोई कानोंकी गलीसे ३६ पर वह पर्ब्बताकार राक्षस अतिक्रुद्धहो वानरोंको खानेलगा व बहुतोंको मारेक्रोधसे उठाय उठाय देदै मारनेलगा जिससे वे अङ्ग भङ्ग होगये ३७ वह राक्षस भूमिकोमांस व रुधिरसे ओदी करताहुआ मारेक्रोधके मूर्च्छितहो प्रलय समय के अग्नि के समान वानर सैन्यों में घूमने व उनको खाने भी लगा ३८ बज्र हाथमें लिये इन्द्रकेसमान व पाश हाथमेंलिये यमराज के समान शूल हाथमें लिये महाबली कुम्भकर्ण समरमें शोभित हुआ ३९ जैसे ग्रीष्मऋतुमें अग्नि सूखे बनोंको जारता है तैसेही कुम्भकर्ण वानरोंकी सैन्योंको जारनेलगा ४० तब यूथपोंके मारजाने से व आप भी मारजानेहीके समानहो जानेकेकारण मारेभयके व्याकुलहो सबके सब बड़े भयङ्कर शब्द करनेलगे ४१ व कुम्भकर्णसे मारेहुये बहुतसे वानर व्यथितहोकर व बिदीर्णहृदय होजानेसे रामचन्द्रजी के शरणको गये ४२ इसतरह वानरोंको मारेपीटे व भागेहुयेदेख अङ्गदजी समरमें कुम्भकर्णके ऊपरकोदौड़े ४३ व बड़ाभारी पर्ब्बतका शृङ्गले बार बार नादकरतेहुये व कुम्भकर्णके सेवक राक्षसोंको डरवातेहुये अङ्गदने पर्ब्बत का शिखर कुम्भकर्णके शिरपरमारा ४४ उसके लगनेसे इंद्रकाशत्रु कुम्भकर्ण मारेक्रोधके बरगया ४५ व बड़ाभारीनादकर वानरोंको डरवाता हुआ कुम्भकर्ण असहनशील अंगद के सामने दौड़ा ४६ व मारेरोष के अंगदके ऊपर उसने शूलचलाया ४७ परंतुयुद्धमार्ग्ग बिशारद महाबली अंगदजी अपने ऊपर शूलगिरता देख बड़ीजल्दबाजी के साथ बचागये ४८ व उछलकर बड़ा कोपकर एकलात ज़ोरसे कुम्भकर्ण की छाती में

मारा उसकेलगने से पर्ब्बताकारभी कुम्भकर्ण मूर्च्छितहोगया ४९ जब थोड़ीदेरमें उसकी मूर्च्छाजागी तो बड़ेज़ोरसे मूकाबाँध उसने अंगदको मारा कि जिससे मूर्च्छितहो अंगद भूमिपर गिरपड़े ५० जब वानर शार्दूल अंगदजी मूर्च्छितहो पृथ्वीपर गिरपड़े तो फिर वहीशूल उठाय सुग्रीव के ऊपरको दौड़ा ५१ तब महाबलवान् कुम्भकर्ण को आते देख वानरोंकेस्वामीअतिबीर सुग्रीवजीउछले ५२ व पर्ब्बतका शिखरउठाय व उसको अच्छीतरह अजमाय बड़ेबेगसे महाबली कुम्भकर्ण की ओर दौड़े ५३ तिनको सामनेदौड़े आतेदेख सबअंग फैलाय कुम्भकर्ण वानरेन्द्र के संमुख खड़ाहोगया ५४ तब वानरों का रुधिर अंगोंमें लगाय व बड़े बड़े वानरोंको भक्षण करतेहुये कुम्भकर्णको देख सुग्रीवजी बोले ५५ कि तुमने बड़े बड़े बीरवानरोंको मारकर गिरादिया यहबड़ादुष्कर कर्म्मकिया व वानरोंकी सैन्यभी बहुतसी भक्षणकरली इससे तुमनेबड़ा भारी यशपाया ५६ तिससे अब वानरोंकी सेनाको तो जानेदो क्योंकि साधारण वानरोंको लेकर क्याकरोगे हे राक्षस भला एकहमारे इसपर्ब्बतकी चोटतोसहो ५७ वानरराजके धैर्य्ययुक्त बचनसुन राक्षस शार्दूल कुम्भकर्णबोला ५८ कि जँभुआकर ब्रह्माके चारों मुखोंसे उत्पन्न ऋक्षरजस्नाम वानर के पुत्र व ब्रह्माजी के तुमपौत्र हो इसीसे गर्ज्जतेहो हे वानर ५९ कुम्भकर्णकेबचनसुन अच्छीतरहअजमायकर वहपर्ब्बतछोड़ा व उसीबज्रसमान कठोर पर्ब्बतसे कुम्भकर्णकी छातीमेंमारा ६० परंतु बड़ीभारी उसकी छातीमें लगकर व पर्ब्बत फूटगया इसकोदेख वानर लोग बहुत ब्यथितहुये व राक्षसलोग मारेहर्षके नादकरनेलगे ६१ परंतु उसपर्ब्बत शृङ्गके लगनेसे कुम्भकर्ण ने बड़ा क्रोधकिया फिर मारे क्रोधके मुंहबाय बिजुलीसम चमकताहुआ शूलले वानर व ऋक्षोंके स्वामी सुग्रीवजीके बधकरने केलिये छोड़ा ६२ कुम्भकर्णके भुजोंसे बड़ेज़ोरसे चलायाहुआ पैन व सुवर्णकीमाला पहिरायाहुआ शूल सुग्रीव के ऊपर चला परंतु बड़ीजल्दीकेसाथ ऊपरको उछल हनुमान्जीने अपने भुजोंसे पकड़ तोड़डाला ६३ सौभार काले लोहसे बनाहुआ शूल अपनीजाँघपर धरकर अति हर्षितहो हनुमान्जीने तोड़डाला ६४ हनुमान्जी के शूल तोड़नेकेपीछे वानरोंकी सेना हर्षितहो बड़ानादकर आगेको दौड़ी ६५

र्ण कुम्भकर्ण उदासीन मुखहो बहुतभयभीत हो उठा व सबवानर बहुत हर्षितहो बड़ेज़ोरसे नादकरउठे ६६ व शूलको दोखण्ड कियेदेख हनुमा-न्जीकी सबबड़ाई करनेलगे व अपना शूल टूटाहुआदेख महात्मा कुम्भ कर्ण बहुत क्रुद्ध हुआ इससे लङ्कावाले मलयाचल का एक शृङ्ग उखाड़ सुग्रीवके निकटआय उसीसे सुग्रीवको उसनेमारा ६७ उसपर्ब्वत शृङ्ग के लगनेसे मूर्च्छितहो सुग्रीवजी समरभूमिमें गिरपड़े तिसको मूर्च्छित हो भूमिमें गिरपड़े देख सबराक्षस गर्ज्जनेलगे ६८ व समरमें पड़े हुये अद्भुत घोरबीर्य्यवाले सुग्रीवके पासआय कुम्भकर्ण उनको उठाकर उ-ड़ालेगया जैसे प्रचण्डपवन बादरको उड़ालेजाताहै ६९ व महामेघाकार रूपवाले सुग्रीवको समरभूमिमें से उठाय पर्ब्बताकार कुम्भकर्ण बड़े ऊँचेशृङ्गवाले पर्ब्बतहीके समान शोभितहुआ ७० तब तिनकोलेकर बीर कुम्भकर्ण राक्षसोंसे बड़ाई पाताहुआ व वानरराजके पकड़जाने से बि-स्मित देवताओंका हाहाकारशब्द सुनताहुआ लङ्काकोचला ७१ व इंद्र सम पराक्रमी वानरराजको लेकर इन्द्रसेभी अधिक पराक्रमी इन्द्रादि-कोंके शत्रु कुम्भकर्णने अपने मनसे मानाकि बस इन सुग्रीवके मारजाने से रामचन्द्र सहितजानो सब वानरोंकी सेना मारगई ७२ व उससमय इधर उधर भागीहुई वानरोंकी सेनादेख व कुम्भकर्णके पकड़े हुये सु-ग्रीवकोभी देख ७३ पवनकेपुत्र बड़े बुद्धिमान् हनुमानूजी अपने मनमें चिन्तना करनेलगे कि अब सुग्रीव इसतरह पकड़े गयेहैं हमको क्या करनाचाहिये ७४ जोकुछहमको करनाउचितहै वह अवश्यकरेंगे इसमें कुछभी संदेहनहीं हमजानतेहैं कि पर्ब्बताकार होकर हम इसराक्षसको मारडालें ७५ क्योंकि समरमें जो हम महाबली कुम्भकर्णको ऐसामारेंगे कि मुकाकेमारे उसकासर्ब्बाङ्ग फटजावेगा व मरजावेगा व सुग्रीवजी छूट जावेंगे तो सबवानर बहुतही हर्षितहोंगे ७६ अथवा हमकाहेको छुड़ावें क्योंकि जो देवता दैत्य व नागभी इन सुग्रीवको पकड़ते तोभी ये अपने आप छूटआते फिर इस अकेलेके पकड़नेसे क्या होसक्ताहै वे आप छूट आवेंगे ७७ हम जानतेहैं कि समरमें कुम्भकर्णने पर्ब्बतसे सुग्रीवको ऐसा माराहै कि वे इससमय अपनाको जानतेही नहीं कि हमकहाँहैं ७८ पर एकमुहूर्त्तहीभरमें जैसे इनकी मूर्च्छाजागेगी तैसेही अपनेलिये व वानरों

केलिये जो कुछ करनाहोगा अवश्यकरेंगे ७६ व जोहम इनको छुड़ालें तो इन महात्मा सुग्रीवकी इसविषयमें ज़रूर अप्रसन्नता होगी क्योंकि इसमें उनकी निरंतर कीर्त्तिका नाशहोगा इससे अधिक कष्टहोगा ८० तबतक अपनेराजा सुग्रीवके विक्रमको क्षणभर परखलें व भागीहुई इस वानरोंकी सेनाको समझावें भी ८१ मारुतके पुत्र हनुमान्जी इसतरह बिचारकर भागीहुई वानरोंकी सेना फिर थँभानेलगे ८२ व वानरराज को लेकर कुम्भकर्ण लङ्काकोगया वहां बिमानों व फाटकों व शहरपनाह व अन्य मन्दिरोंपरसे उसके ऊपर फूलोंकी बर्षाहुई ८३ तब अक्षत चन्दनसंयुक्त जलकी बर्षासे धीरेधीरे सींचेजानेके कारण व राजमार्ग्ग की शीतलताके महाबली सुग्रीवजीकी उसीबीचमें मूर्च्छाजागी ८४ तब बड़ेकष्टसे चैतन्यहो तिस महाबली कुम्भकर्ण की गोदमें दबेहुये सुग्रीव जी राजमार्ग्ग देख देख बार बार चिन्ता करनेलगे ८५ कि इसतरह बँधोईमें पड़ेहुये हम कैसाकरें जो इसदुष्टसे बदला लेसकें अब हमको ऐसाकार्य्य करनाचाहिये जिससे वानरोंकाभी अभीष्टसिद्धहो व औरभी सब कार्य्य सिद्धहों ८६ अपने मनमें दृढ़बिश्वासकर वानरोंके राजा सुग्रीवजीने झटपट लपककर कुम्भकर्णके कान व नाक अपनेतीक्ष्णदांतोंसे काटलिया व बगलपांवोंसे चीड़फाड़ डाली ८७ तब नकटा व कनकटा हो व दांतों नखोंसे अपनेअङ्ग बिदारितदेख व सर्ब्बाङ्गसे रुधिर बहता देख कुम्भकर्णने मारेक्रोधके ब्याकुलहो सुग्रीवको झिझकोर भूमिमें बड़े जोरसे धरकर पीसदिया ८८ जब उसने बड़ेजोर से भूमिपर धरके पीसदिया तो सब राक्षस ऊपरसे लातों मूकोंआदिसे मारनेलगे परन्तु सुग्रीवजी झटपट गेंदकेसमान लुढ़ककर बड़ेबेगसे उछल आकाशको चलेगये व फिरझट आय रामचन्द्रजीकेनिकट खड़ेहुये ८९ कान व नाक के नहोनेसे बलबलाय रुधिर बहनेके कारण बनाय रक्तसे भीगाहुआ कुम्भकर्ण झरना बहतेहुये पर्ब्बतके समान शोभितहुआ ९० व रुधिरसे भीगाहुआ भयङ्कर रूप व महाकाय कुम्भकर्ण रुधिर उगिलता हुआ बहुत शोभितहुआ ९१ व सन्ध्या सहित बादरके समान व नीलरङ्गके अंजनके ढेरकेतुल्य अतिभयङ्कर रूप निशाचरने फिर युद्धभूमिको चलने के लिये मनकिया ९२ व सुग्रीवजीके चलेआनेकेपीछे इन्द्रकाशत्रु कुम्भ-

कर्ण मारे क्रोधके रण करनेकेलिये फिर दौड़ा दौड़नेके समय महारौद्र रूप उसने बिचारा कि हमारे पास इससमय कोई आयुधनहीं है इससे उसने बड़ाघोर एक मुद्गरलिया ६३ व वह महात्मा लङ्कासेबाहर निकल अतिघोर वानर सैन्यको खानेलगा जैसे प्रलयसमयमें प्रलयाग्नि प्राणियोंका भक्षण करताहै ६४ भूंखातोथाही इससेरुधिर व मांसपीनें खानेकी इच्छा कियेहुआ कुम्भकर्ण समरमें मारे अविवेकके अतिप्रचण्ड वानरोंकी सेनामें पैठकर वानरों राक्षसों पिशाचों व यक्षोंको भी खानें लगा क्योंकि उसको अपना बेगाना सूझताही नहींथा ६५ इससे जिस तरह मृत्यु युगान्तमें प्रजाओं का संहार करतीहै वैसेही वह वानरोंका संहारकरनेलगा ६६ मारेक्रोधके एक दो तीन वा बहुत वानर व राक्षसों को सङ्गही पकड़ पकड़ बड़ी जल्दबाजीके साथ एकही हाथसे उठाय उठाय मुखमें झोकनेलगा ६७ व पर्ब्बतके शृङ्गोंसे मारमार वानरोंको खानेलगा इससेरुधिर व चरबीमुखसे इधरउधर बहनेलगी ६८ जबइस तरह सब वानर मारेजानेलगे तो भागभाग श्रीरामचन्द्रजीके पासगये व कहनेलगे कि कुम्भकर्ण बड़ा क्रुद्धहोकर सब वानरोंको दौड़दौड़खाये लेताहै ६६ सौ सात आठ बीश तीश आदि वानरोंकोबाहोंसे पकड़ छपटा लेता व फिर खाताहुआ आगेको दौड़ा चलाजाताहै १०० व मेदचरबी रुधिर अङ्गोंमेंलगायेहुआ व आंतोंकीमाला धारणकिये व आंतोंके दोनों खूंथकानोंमें लपेटे तीक्ष्णदांत निकालेहुआ कुम्भकर्ण शूलोंकी बर्षाकरता है मानों बढ़ाहुआ युगान्तका कालहीहै दिखाई देताहै १०१ यह बात सुन सुमित्राजीके पुत्र शत्रुसैन्य नाशक लक्ष्मण क्रोधकर युद्धकरनेलगे १०२ पहुंचतेही पहुंचते महावीर्य्यवान् लक्ष्मणजीने सातबाणकुम्भकर्ण के शरीरमें गाड़े व फिर औरभी बाणले उसके ऊपर छोड़े १०३ उन बाणोंसे पीड़ितहो कुम्भकर्णने लक्ष्मणजी के बाणोंको फिर पकड़ पकड़ तोड़डाले इससे लक्ष्मणजी ने बड़ाही कोपकिया १०४ व बाणोंसे कुम्भकर्णके कवचको रोंकदिया जैसे सन्ध्या समयके मेघको पवनरूंध ले उसीतरह उसका कवच बाणोंकेलगने से शोभितहुआ १०५ नीलआंजनकी राशिके आकारका कुम्भकर्ण सुवर्ण भूषित बाणोंके लगनेसे अति पीड़ित हो सुमेरुपर्ब्बत पर प्राप्त सूर्य्यकेसमान शोभित हुआ १०६ तब

वह महाभयङ्कर राक्षस लक्ष्मणजीसे मेघके समान गर्ज्जताहुआ निरा-दरकेसाथ बोला १०७ कि समरमें बिनापरिश्रम कियेही हुये यमराज के भी जीतनेवाले हमारे साथ संग्राममें युद्ध करतेहुये तुमने वीरता सब को जनादी १०८ आयुधलेकर समरमें मृत्युकेसमान खड़ेहुये हमारे आगे समरमें जो खड़ारहजावे वही बड़ाईकरनेके योग्यहै फिर जो हमसे युद्ध करै उसको क्या कहनाहै वह तो जानों बड़ीही बड़ाईके योग्यहै १०६ क्योंकि आजतक ऐरावत हाथीपर सावर व सब ओरसे देवताओंके बी-चमें घिरेहुये बड़े समर्त्थ इन्द्रभी हमारे आगे समरमें नहीं खड़ेहोसकते ११० हेलक्ष्मण परन्तु आजतुमने अपनेबल व पराक्रमसे हमको बहुत सन्तुष्ट किया इससे तुमसे सम्मति ले अबहम रामचन्द्रके निकट युद्ध करनेके लिये जायाचाहते हैं १११ जोकि तुमने अपने बीर्य्य बल के उत्साहसे हमकोरणमें सन्तुष्टकियाहै इससे हम अब अकेले रामचन्द्रही के मारनेकेलिये जानाचाहते हैं क्योंकि उनके मारजाने पर जानो सब मारेही पड़ेहैं ११२ व सायद रामचन्द्रके मारजाने पर समरमें और भी कोई हमारे सामने खड़ेहोंगे तो हम अपने प्रचण्ड बलसे उनका भी मानमथेंगे ११३ ऐसा कहतेहुये कुम्भकर्ण से बड़ाई करतेहुये लक्ष्मण जी समरमें बड़ाघोर तरबचन हँसतेहुये बोले ११४ कि तुममें जोसमर में इन्द्रादिदेवोंसे असह्य बिक्रमपाना बताया वह सत्यहै झूंठ कुछभी नहीं है क्योंकि जैसा तुम कहतेहो वैसा तुम्हारा पराक्रम हमनेदेखाभी ११५ व जो तुम रामचन्द्रजीको पूंछतेहो तो वे तो ये क्याहैं पर्ब्बत के समान निश्चल होकर समरमें टिकेहैं ऐसा सुन लक्ष्मणजीका अनादरकर वह निशाचर ११६ व उनको वहींछोड़ आप पृथ्वीको कँपाताहोसा श्रीराम-चन्द्रजीकेही सामनेदौड़ा ११७ तब महाराजाधिराज चक्रवर्ती दशरथ जीकेपुत्र श्रीरामचन्द्रजी बड़ाकठोरअस्त्र उसके ऊपर छोड़नेके विचारसे कुम्भकर्णके हृदयमें बड़ेतीक्ष्ण बाणमारे ११८ जब रामचन्द्रजीके बाण उस राक्षसके लगे तो बड़वेगसे समरमें दौड़ा तब बहुत क्रोध करनेके कारण उसके मुखसे अङ्गार संयुक्त ज्वाला निकलनेलगीं ११६ राम-चन्द्रजीके अस्त्रोंसेविरुद्धहो बड़े जोरसे गर्ज्जताहुआ राक्षसश्रेष्ठ बड़ाक्रोध कर समरमें बानरों को डरवाता हुआ सामने दौड़ा १२० रामचन्द्र

जीने मोरकेपङ्खोंकी फोंके लगेहुयेवाण उसकी छातीमेंमारे कि जिनकी व्यथाके कारण उसके हाथसे गदागिरपड़ी १२१ व सब आयुध जोजो वहलियेथा भूमिमें गिरपड़े तब उसने अपनाको बिना आयुधका मान मुकों व हाथोंसे वहसबको मारनेलगा १२२ व आपभी वाणोंके लगने के कारण सब अंगोके छेदजानेसे घावोंके मार्ग्गसे रुधिर चुआनेलगा जैसेपर्ब्बत झरनेचुआतेहैं १२३ व मारेकोपके रुधिरसे मूर्च्छित कुम्भ-कर्ण वानरों राक्षसों व ऋक्षोंको खाताहुआ दौड़नेलगा १२४ व महा भीम पराक्रमी उसराक्षसने अतिभयङ्कर पर्ब्बतका शृङ्गउठाय यमराज सम बलवान् कुम्भकर्णाने रामचन्द्रजीके ऊपर चलाया १२५ व उसी बीचमें रामचन्द्रजीनेभी सीधे चलनेवाले वाणोंसे पर्ब्बत के टुकड़ेको काटडाला तब फिर धनुषपर और वाणचढ़ाये १२६ व सुवर्णसे भूषित वाणोंसे धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजीने तिस राक्षसका कवच काटडाला १२७ परन्तुवाणोंसे कटाहुये उसकेपर्ब्बतके शृङ्गके आकारके प्रकाशित कवचने गिरनेके समयभी दोसो वानरों को कचरडाला १२८ व उस समय धर्म्मात्मा लक्ष्मणजी कुम्भकर्ण के मारनेलिये बहुत यत्नदृढ़ श्री-रामचन्द्रजीसे बोले १२९ हे राजन् यह कुम्भकर्ण रुधिरकी महकसे मदान्धहोकर वानरों व राक्षसोंको नहींजानता इससे अपनेपराये सबों को खाता चलाजाता है १३० इससे सब बड़े वानरश्रेष्ठ व यूथप व यूथप मुख्य लोग इस मतवालेके ऊपर चढ़जावें १३१ तो यहदुष्ट मारे भारके पीड़ितहो भूमिमें धीरेधीरे चलनेलगेगा इससे अन्यबेचारे वानरों को न खावेगा १३२ महाराज कुमार लक्ष्मणजीके ऐसे बचन सुन वे महाबली वानरलोग हर्षितहोकर कुम्भकर्णके ऊपरचढ़े १३३ जब ये सबवानर कुम्भकर्णके ऊपर चढ़गये तो उस दुष्टने बड़ेवेगसे अपनी देहहिलाई जिससे बहुतसे वानरजाय अलगगिरे जैसे मतवाला हाथी अपने ऊपर चढ़नेवालोंको गिरादेताहै १३४ सब वानरोंको कँपतेहुये देख रामचन्द्रजीने जाना कि यहराक्षस क्रुद्धहै इससे बड़ाउत्तम धनुष उठाय ग्रहणकिया व बड़े वेगसे दौड़ा १३५ तब मारेक्रोध के लालनेत्र कर नेत्रोंसे मानों भस्मही करतेहुये श्रीरामचन्द्र जी उसके ऊपरको दौड़े व कुम्भकर्ण के बलसे पीड़ित वानरों को हर्षित कराया १३६

सर्प्पाकार दृढ़ पनच सहित व सुवर्णके बेलबूटे बनाहुआ धनुष व उत्तम तरकसमें भरेहुये बाणले वानरोंको समझाय श्रीरामचन्द्र जो कुम्भकर्ण की ओर ज़ोरसे चले १३७ उनके चारोंओर घेरेहुये अति दुर्ज्जय वानर भी चले व पीछे पीछे लक्ष्मण जी भी इसतरह रामचन्द्रजी ने प्रस्थान किया १३८ व आगेचल महात्मा मुकट शिरपर धरे शत्रुओंके नाशकरने वाले रुधिरवत् अरुण नेत्रकिये महाबलवान् १३९ कुम्भकर्णको सबके ऊपर क्रोधकियेहुये यमराजके समान दौड़तेहुये व वानरोंको ढूंढ़तेहुये व क्रोधयुक्त व राक्षसोंके बीचमें चलेआतेहुये १४० व बिन्ध्याचल मन्द-राचल के समान व सुवर्णका बहूँटा बांध मुखते रुधिर चुआतेहुये व बर्षा के मेघके समान उठेहुये १४१ व रुधिर लगेहुये गलफर जीभसे चाटते हुये व यमराजके समान वानरोंको मर्द्दतेहुये कुम्भकर्णको श्रीरामचन्द्र जीने देखा १४२ व प्रज्वलित अग्निके समान तेजस्वी तिस राक्षसश्रेष्ठ को देख पुराणपुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजीने धनुषको टङ्कोरा १४३ परंतु तिन महात्मा रामचन्द्रजीके धनुषके टङ्कोरसे राक्षसश्रेष्ठ बड़ा क्रुद्धहुआ व तिस शब्दको न सहकर श्रीरामचन्द्रजीकी ओर दौड़ा १४४ तब बा-सुकिनागके शरीरके समान चढ़ाउतार व दृढ़ बाहुवाले श्रीरामचन्द्रजी जल बर्षतेहुये मेघके समान उद्धत व पर्ब्बताकार कुम्भकर्णको दौड़ेआते देख बोले १४५ हे राक्षसाधिप आवो विषाद न करो हम धनुर्ब्बाण लिये खड़ेहैं हमको राक्षसबंशके नाशक समझो इससे एक मुहूर्त्तमात्रमें मूर्च्छित होजावोगे १४६ जब कुम्भकर्ण ने जाना कि रामचन्द्र यहीहैं तो बड़ेज़ोरसे चिघड़कर हँसा व समरमें वानरों को भगाताहुआ दौड़ा १४७ व फिर सब वानरोंके हृदय मानों बिदीर्णही करताहुआ कुम्भकर्ण मेघके गर्ज्जने के समान भीम ठहाय कर हँस १४८ श्रीरामचन्द्रजी से बोला कि हमको बिराध न जानना व कवन्ध व खर भी न समझना १४९ व न बाली न मारीच कहीं समझलेना किन्तु हम कुम्भकर्ण हैं तुम्हारी मुलाकातको आयेहैं १५० यहसब कालै लोहका हमारा भीम मुद्गर देखो इसीसे हमने अगाड़ी सब देवता व दानवोंको जीतलियाहै १५१ देखना हमको नकटे व कनकटे देख न अनादर करना क्योंकि कान नाक काटजानेसे हमको थोड़ीभी पीड़ा नहींहुई १५२ हे पापरहित

श्रीराम हमारे अङ्गपर अपना वीर्य्य दिखावो तब फिर बड़े दृढ़ पौरुष व बिक्रमवाले तुमको हम भक्षण करेंगे १५३ कुम्भकर्ण के बचन सुन श्रीरामचन्द्रजीने अच्छी फोंकवाले बाण उसके ऊपर चलाये परन्तु उन बज्रसमान बेगवालेबाणोंके लगनेसे वह राक्षसश्रेष्ठ न तो चलायमानही हुआ न व्यथितही हुआ १५४ जिन बाणोंसे सात तालके वृक्ष कटगये व वानरोंमेंश्रेष्ठ बालि भी मारागया वही बज्रसमानबाण उससमय कुंभ-कर्णके शरीरमें लगे परन्तु उसको किञ्चिन्मात्र भी व्यथा न हुई १५५ तब उन बाणोंको इन्द्रके शत्रु कुम्भकर्णने जलकीधाराओं के समान पीलिया व फिर रामचन्द्रजी को उग्रबेग मुद्गर से मारा १५६ व उसी रु-धिर लगेहुये व देवताओंकी सेनाको भी डरवाने वाले मुद्गरसे वानरोंकी सेनाको भी भगादिया १५७ तब श्रीरामचन्द्रजी ने वायव्यास्त्रले निशा-चरके ऊपरको चलाया व उससे मुद्गरसहित उसकाहाथ काटडाला हाथ कटजानेपर वह बड़ेजोरसे गर्ज्जा १५८ व रामचन्द्रजीके बाणसे काटा-हुआ पर्ब्बत के शृङ्गके समान उसका हाथ मुद्गरसहित जाय वानरों की सेनाके ऊपर गिरा जिससे बड़ीभारी वानरों की सेना मरगई १५९ व मुद्गरसहित कुम्भकर्णके उसहाथसे मरनेसे बचेहुये वानर भागभाग दूर खड़ेहोकर अति उदासीन मुखहो व अति पीडितहो नरराज व राक्षस राजका अतिघोर युद्धदेखनेलगे १६० व रामचन्द्रजीके अस्त्रसे बाहु काटा हुआ कुम्भकर्ण बड़भारी खड्गसे काटेहुये पर्ब्बतकेसमान अपनेहाथसे एक बड़ाभारी वृक्षउखाड़ समरमें नरेन्द्र श्रीरामचन्द्र जी के सम्मुख दौड़ा १६१ परन्तु सांखूवृक्ष सहित व सर्प्पके शरीरके समान चढ़ा उतार व ऊपरको उठाहुआ उसका वह भी हाथ रामचन्द्रजीने इन्द्रमन्त्रसे अभि-मन्त्रितकर सुवर्ण से चित्रबिचित्र बाणसे काटडाला १६२ व काटाहुआ पर्ब्बताकार कुम्भकर्णका बाहु भूमिमें गिरपड़ा व फिर इधर उधर छट-पटातेहुये उस हाथने बहुतसे वृक्ष पर्ब्बत शिला वानर व राक्षसों को पीसडाला १६३ हाथकटेहुये व बारबार नाद करतेहुये कुम्भकर्णको देख श्रीरामचन्द्रजीने दो अर्द्धचन्द्राकार मुखवाले बाणोंसे समरमें उस राक्षस के दोनों पाद भी काटडाले १६४ काटेहुये उसके वे दोनोंपाद प्रदिशा दिशा पर्ब्बतोंकी गुहा महार्णव लङ्का व वानरों राक्षसोंकी सेना इन सब

को शब्दायमान करातेहुये भूमिपर गिरपड़े १६५ बाहु व पाद कटाहुआ कुम्भकर्ण घोड़ीके मुखके आकारका मुखफैलाय बड़ेजोरसे गर्ज्जता हुआ श्रीरामचन्द्रजीकी ओर आकाशमार्ग्ग हो दौड़ा जैसेराहु कटजानेपर चन्द्रमाकीओर दौड़ाथा १६६ तब रामचन्द्रजीने उसकेमुखमें सुवर्णकी फोंकेंलगेहुये हज़ारोंबाण भरदिये कि उसकामुख बनाय भराहुआ इससे बोलनसका तो बड़ेकष्टसे कुछ सूक्ष्म शब्दकर मूर्च्छित होगया १६७ तब श्रीरामचन्द्रजीने सूर्य्यके किरणोंकेसमान प्रज्वलित व ब्रह्मदण्ड व कालदण्डसे कुछेकही न्यून शत्रुमारक अति तीक्ष्ण व सुन्दर फोंक लगाहुआ व प्रचण्डपवन के बेगकेतुल्य ऐन्द्रनाम बाण १६८ जोकि हीरा व सुवर्णसे रचित फोंकवाला व प्रदीप्त सूर्य्य अग्निके समान प्रकाशित व इन्द्र के बज्रके तुल्य बेगवाला था उस निशाचर के ऊपर चलाया १६९ व रामचन्द्रजीके बाहुसे चलायाहुआ वह बाण अपनीदीप्तिसे दशोदिशाओं को प्रकाशित कराताहुआ व निर्द्धूम अग्निके समान भीमदर्शनहो इन्द्रके बज्रकेसमान भीमविक्रमी उस राक्षसके ऊपरपहुंचा १७० व पहुंचतेही महापर्ब्बतके शिखरकेसमान व दांत निकालेहुये व सुन्दर कुण्डलधारण कियेहुये कुम्भकर्णका शिर उससे श्रीरामचन्द्रजीने काटडाला जैसे पूर्ब्ब समयमें इन्द्रने वृत्रासुरका शिरकाटाथा १७१ तब कुण्डलोंसे भूषित बड़ाभारी कुम्भकर्णका शिर उदयहुये दो सूर्य्योंके मध्यमें दैवयोगसे टिके हुये चन्द्रमाके समान शोभितहुआ १७२ वह कुम्भकर्णका पर्ब्बताकार शिर रामचन्द्रजी के बाणसे कटकर लङ्काकी शहरपनाह सेना निवासस्थान व प्राकार परगिरा उसके गिरतेही ये सब भहरापड़े १७३ व वह राक्षसका बड़ाभारी लुण्डअति प्रकाशितहो जाय बीच समुद्रमेंगिरा व वहां बड़ेबड़े ग्राह मत्स्य व सर्प्पोंको मर्द्दताहुआ भूमिमें पैठगया १७४ ब्राह्मण व देवताओंके शत्रु महाबली कुम्भकर्णके मारजानेपर मारेहर्षके पृथ्वी चलउठी व पर्ब्बत भी चलायमान हो उठे व देवता लोग भी मारे हर्षके बड़ेजोरसे हल्लाकरनेलगे १७५ तिसके पीछे रामचन्द्रजी के पराक्रमसे देवर्षि महर्षि सर्प्प देवता भूत गरुड गुह्यक यक्ष गन्धर्ब्बादिकोंके गण आकाशमें टिकेहुये अति हर्षितहुये १७६ तिस कुम्भकर्णके बड़ेभारी बधसे राक्षसराजके सब भाईबन्धु व्यथितहो बड़े ऊंचेस्वरसे रामचन्द्रजी

का देख देख रोदन करनेलगे जैसे श्रीविष्णुको देख समरमें मारेहुये दैत्योंके भाईबन्धु रोयेथे १७७ जैसे राहुके मुखसे छूटेहुये सूर्य्य देवलोक का अन्धकार दूरकर शोभित होते हैं तैसेही समरमें कुम्भकर्णको मार वानरोंकी सेनाके मध्यमें खड़ेहुये श्रीरामचन्द्र शोभितहुये १७८ ॥

कुण्डलिका ॥

वानर गण प्रमुदित भये फुल्ल कमल मुखहोय ।
भीमबली रिपुनाश सों उदासीन नहिंकोय ॥
उदासीन नहिंकोय मुदित मुख श्रीरघुबीरहि ।
लगेसराहन सकल बिमलमति अतिरणधीरहि ॥
गुनतरहे कपिनिकर मनहिंधौं कबयह पामर ।
कुम्भकर्ण खलमरिहि दुखावतहै जो वानर १ । १७६ ॥

हरिगीतिका ॥

अतिसमर निकर न महँ सदाजो अजितरह्यहु निशङ्कही ।
सुर सैन्य मर्द्दन घोर नर्द्दन कुम्भकर्णहि डङ्कही ॥
दै राममारि प्रमोदयुत अतिभयहु जिमि सुरनाहजू ।
रणमाहिं वृत्रासुरहि हतिकै मुदितभे मनमाहजू १ । १८० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेकुम्भकर्णवध
स्सप्तषष्टितमस्सर्गः ॥ ६७ ॥

महात्मा श्रीरामचन्द्रजीके बाणोंसे समरमें कुम्भकर्णको मारेहुयेदेख सबराक्षसोंने राक्षसोंकेराजा रावणसे जायकहा १ हे राजन् कालसदृश कुम्भकर्ण कालधर्म्म संयुक्तहुये प्रथम पहुंचतेही पहुंचते उन्हों ने सब वानरोंकीसेना भगादीथी फिर जब वानर निकटआये तो हज़ारों लाखोंको उन्होंनेखालिया २ इसतरह एकमुहूर्त्तभर सबको सन्तप्तकर व आपभी सन्तप्तहो फिर रामचन्द्रके तेजसे आपही बुझगये वह रामचन्द्रकातेज आधा तो समुद्रमेंथा आधा बाहरथा ३ प्रथम तो सुग्रीवने उनकी नाक व कान काटलिये इससे रुधिर बहता चलाजाताथा फिर वह उनका शरीरजाय लङ्काके फाटकको रूँधकर खड़ाहुआ क्योंकिपर्ब्बताकार तो उनका शरीरथाही ४ इसतरह तुम्हारे भाई कुम्भकर्ण राम-

चन्द्रके बाणोंसे दग्धहुये जैसे दावानल लगनेसे वृक्ष जलजाताहै शिर तो अलगकाटडाला गया हाथ अलग पांव अलग इससे उनका शरीरभी नहीं चीन्ह पड़ताथा मरनेकेपीछे लुण्डजाय समुद्रमें गिरा ५ महाबली कुम्भकर्णको समरमें मारगये सुन मारे शोकके सन्तप्तहो रावण मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़ा ६ अपने चचा कुम्भकर्णको मारगयेसुन रावणके पुत्र देवान्तक नरान्तक त्रिशिरा व अतिकाय मारेशोकके पीडितहो रोदनकरनेलगे ७ व अपने भाईको सरलकर्म्मकारी श्रीरामचन्द्रजी से मारेगयेसुन महोदर व महापार्श्व ये दोनों शोककेमारेदबगये ८ तिसके पीछे बड़ीदेरपर रावणकी मूर्च्छाजागी तबचैतन्यहो कुम्भकर्णके बधसे अतिदुःखितहो बिलापकरनेलगा ६ ॥

चौ० हा रिपुदर्प्प बिनाशनहारे । कुम्भकर्ण बलवान पिआरे ॥ हमहि छोड़ि तुम गयहु पराई । दैवयोग यमपुरहि सिधाई १ । १० रिपुबलध्वंसि बैरिशररूपा । बिना उखारेका अनुरूपा ॥ सकल बन्धुगण अहें दुखारे । तिन्हें छोड़ि तुमकहाँ सिधारे २ । ११ जासु नाहिं दक्षिण भुजभाई । जियब न सो हमकौन उपाई ॥ सुर अरु असुरन सों न डराने । ज्यहिबल हमसो कहाँलुकाने ३ । १२ दानवदेव दर्प्प अपहारक । महाबीर रिपुबर गणमारक ॥ कालानल समानसो आजू । किमि रघुबर करमर्यहु अकाजू ४ । १३ ॥

भला जिस तुमको कभी बज्रपात भी दुःख नहीं करसक्ताथा वे तुम रामचन्द्रके बाणसे पीड़ित पृथ्वीपर कैसे सोतेहो १४ देखो ये देवगण ऋषियोंके सङ्ग आकाशमें टिकेहुये तुमको रणमें मारेहुये देख हर्षितहो बड़ेज़ोरसे गर्ज्जतेहैं १५ यह निश्चयहै कि इससमय हर्षितहो वानरलोग सबओरसे बड़ेदुर्ग्गम भी लङ्काके फाटकोंपर चढ़आवेंगे १६ राज्य से हमारा कुछभी कार्य्यनहीं व सीताको लेकर हम क्याकरेंगे क्योंकि कुम्भकर्ण बिना तो हम अपना जीवनही नहीं प्रसन्न करते १७ जो हमने अपने भाईके हन्ता रामको रणमें न मारडाला तो हमारा मरणही अच्छा है यह ब्यर्त्थ जीना किसी कामकानहीं १८ हम अभी वहीं जावेंगे जहां हमारा छोटाभाई है क्योंकि हम अपने भाइयोंको छोड़ क्षणमात्र भी जीना नहींचाहते १६ हे कुम्भकर्ण तुम्हारे मारजानेपर अब पूर्व्वसमय

छ अपकारी हमको देख देवतालोग हसेंगे तो फिर हम इन्द्रको बिना तुम्हारे कैसे जीतेंगे २० महात्मा विभीषणके बचन अपने अज्ञानसे जो हमने नहींमाने वही विभीषणका शुभबचन हमको प्राप्तहुआ २१ जबसे प्रहस्त व कुम्भकर्णका महादारुण बिनाश हुआहै तबसे विभीषणका बचन हमको लज्जित करताहै २२ यह उसी कर्म्मका शोक देनेवाला फल हमको मिलाहै जोकि धार्म्मिक महात्मा व श्रीमान् विभीषणको हमने यहांसे निकालदियाहै २३ इसतरह बहुत प्रकारसे ब्याकुलहो व कुम्भकर्णका नाम लेले बिलापकर इन्द्रके मारनेवाले छोटेभाईको मरा जान मारेशोकके अति पीड़ितहो रावण फिर पृथ्वीपर गिरपड़ा २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टषष्टितमस्सर्ग्गः ॥ ६८ ॥

इसतरह रोदन करतेहुये दुष्टात्मा रावणका बिलाप सुन त्रिशिरा नाम राक्षस बोला १ कि हां हमलोगोंके पिताके मझिलेभाई कुम्भकर्ण इसीतरहके महावीर्य्य रहे परन्तु अबतो मारेही गये हे राजन् आप सरीखे सत्पुरुष इसतरह नहीं बिलाप करते जैसे कि आप करते हो २ क्योंकि यहबात निश्चय है कि तीनोंलोकोंके नाशने में आप समर्त्थ हो सो ऐसे अपना को प्राकृतपुरुषों के समान क्यों शोचते हो ३ देखो तुम्हारे ब्रह्माजीकी दीहुई तो शक्तिहै व कवचवाण धनुष व हजारगदहे जुततेहैं मेघकेसमान गर्ज्जनेवाला रथभी है ये सब ब्रह्माजीही के दिये हुये हैं इससे तुम्हारी पराजय नहीं होसक्ती ४ आपने तो बिना अस्त्र शस्त्र धारणहीकिये अनेक बार देवता व बहुतसे दानवोंको मारडालाहै फिर बड़ीबड़ाई अब सब आयुध धारणकर रामचन्द्र को अच्छीतरह शिक्षादो ५ सो भी कुछनहीं हे महाराज आप मनमाने यहांहीं बैठें हम अकेलेजाय तुम्हारे शत्रुओंको रणमें बिध्वंस डालेंगे जैसे गरुड़ सर्प्पोंको बिध्वंसते हैं ६ जिसतरह इन्द्रने शम्बरासुरको मारडाला व विष्णुने जृम्भकासुरको उसीतरह हमारे मारेहुये रामचन्द्र समरमें सोवेंगे ७ त्रिशिराके बचनसुन राक्षसोंकेराजा रावणने अपनाजन्म जानों फिरसे समझा कि अब प्राणबचेंगे ८ व त्रिशिराके बचन सुन देवान्तक नरान्तक अतिकाय ये सब महातेजस्वी रावणकेपुत्र युद्धकरनेकेलिये हर्षित

हुये ६ व सब रावणकेपुत्र इन्द्रतुल्य पराक्रमी वीर कहनेलगे कि हम युद्धकरनेको जावेंगे हम युद्धकरनेको जावेंगे १० अन्तरिक्षमें प्राप्तहोकर सब मायाकरनेमें चतुरथे व सब देवताओंका अहङ्कार नाशनेवालेथे व सब समरमें बड़ेदुर्म्मदथे ११ व सब सुन्दर बलसम्पन्नथे व सबबड़े यशस्वीथे व सबोंको समरमेंजाय कभी कोई हारा नहींसुना १२ चाहे उनलोगोंने देवोंसे युद्धकिया वा गन्धर्व्वोंसे वा किन्नरोंसे वा नागोंसे पर पराजित कहीं नहींहुये क्योंकि सब युद्धकरनेमें बड़ेचतुरथे १३ व सब बड़े विज्ञानीथे व सबोंने किसी न किसीसे कुछपैकुछ बरदानपाया था सूर्य्यतुल्य दिखाईदेतेहुये व शत्रुओंकीलक्ष्मी नाशनेवाले तिनअपने पुत्रोंके बीचमें बैठाहुआ रावण अति शोभितहुआ जैसे दानवोंका अहङ्कार नाशनेवाले देवताओं के बीचमें बैठ इन्द्र शोभित होतेहैं १४ तब रावणने पुत्रोंकोछातीमें लपटाय व सबभूषणोंसे भूषितकराय व प्रशस्त आशीर्व्वाददे रणमें जानेकेलिये आज्ञादी १५ फिर युद्धोन्मत्त व उन्मत्त नाम दो अपने भाइयोंको उनपुत्रोंकी रक्षाकेलिये संगभेजा १६ व वे लोग शत्रुओंको रोदनकरानेवाले रावणके प्रणाम व प्रदक्षिणाकर युद्ध करनेको चले १७ व वे छः राक्षस घाव निवारण करनेवाली बूटी व सब सुगन्धित पदार्त्थ छूकर युद्धकीइच्छासेचले १८ कालकेभेजेहुये त्रिशिरा अतिकाय देवान्तक नरान्तक महोदर व महापार्श्व ये छः राक्षस युद्ध करनेको चले १९ तिसकेपीछे कालेबादरके समान व ऐरावतके कुलमें उत्पन्न सुदर्शननाम हाथीपर महोदर सवारहुआ २० उसकेऊपर सब हथियार धरेथे व तरकसभी धरेथे ऐसे हाथीपर सवारहोकर महोदर ऐसा शोभितहुआ जैसे अस्ताचल पर्ब्बतकेशृङ्गपर टिककर सूर्यशोभित होतेहैं २१ व उत्तम घोड़े जुतेहुये व सब आयुध धरेहुये रथश्रेष्ठ पर रावणकापुत्र त्रिशिरा सवारहुआ २२ धनुष धारणकर त्रिशिरा रथपर सवारहो ऐसा शोभितहुआ जैसे बिजुली व उल्कासहित व ज्वाला समेत व इन्द्रधनुषसहित बादर शोभितहोताहै २३ उत्तमरथपर सवारहो तीनकिरीट तीनोंशिरोंपर धरेहुआ त्रिशिरा ऐसाशोभितहुआ जैसे तीन सुवर्णके शृङ्गों समेत हिमवान् पर्ब्बतराज शोभित होताहै २४ व सब धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ व रावणका पुत्र अतितेजस्वी अतिकाय बड़े उत्तम

रथपर सवारहुआ २५ उसरथमें सुन्दरपहिया डाबुआ बकौरा गुम्मज लगेबनेथे व सबशस्त्रास्त्रभी उसपरधरेथे व प्रासखड्गादि औरभीआयुध धरेथे २६ वह सुवर्णकामुकुट शिरपैधरे व अन्य उत्तमउत्तम भूषणधारण कियेहुआ ऐसा शोभितहुआ जैसे प्रभासे सबको प्रकाशित करताहुआ सुमेरुपर्ब्बत शोभितहोताहै २७ व वह रावणकापुत्र राक्षसोंके संग रथ पर सवारहो ऐसा शोभितहुआ जैसे देवोंकेसंग इंद्र शोभितहोतेहैं २८ सुवर्णके भूषणोंसे भूषित उच्चैश्श्रवा घोड़ेकेतुल्य उजलेघोड़ेपर जो कि बड़ाभारीथा व मनको इसारापातेही जहांचाहो पहुँचादेताथा उसपर नरान्तकनाम राक्षस सवारहुआ २९ व भालालिये अतितेजस्वी नरा-न्तक उसघोड़ेपर ऐसाशोभितहुआ जैसे शक्तिले महातेजस्वी षडाननजी मयूरपर आरूढ़हो शोभितहोतेहैं ३० व वज्र बिभूषित परिघहाथमें ले देवान्तक ऐसाशोभितहुआ जैसे समुद्र मथनेकेलिये मन्दराचल लिये विष्णुजी शोभितहुयेथे ३१ व महाशरीरवाला महापार्श्वगदा हाथमें ले ऐसा शोभितहुआ जैसे गदा हाथमेंलिये समरमें कुबेरजी शोभितहोतेहैं ३२ वे महात्मा राक्षस अद्वितीय सेनालेकर अबकी युद्धकरनेकोचले व तिनके पीछे पीछे हाथियों घोड़ों व रथोंपर चढ़ चढ़ ३३ बड़ेबड़े आयुध लेले कर महाकाय राक्षसलोगचले वे सूर्य्य वत्तेजस्वी राजकुमार ३४ किरीट धारणकिये आकाशमें प्रकाशित ग्रहोंके समान शोभितहुये व उनलोगोंके हाथोंमेंकी उजले आयुधोंकीपाँति ऐसीशोभितहुई जैसे शरद ऋतुमें आकाशमें उड़तीहुई हंसोंकीपाँति शोभित होतीहै ३५ वे बीर अपने मनसे अपना अपना मरण वा शत्रुओंकी पराजयका निश्चयकर युद्धकरनेकी इच्छासेचले ३६ मार्गमें गर्ज्जे व चिघड़े व बाणफेंकने लगे व एकदूसरेका बाण पकड़नेभीलगे इसतरह रणमें दुर्म्मद वे बीर चले ३७ मदान्ध राक्षसोंके कूदकूद चलने व नादकरनेसे पृथ्वी चला-यमान होउठी व राक्षसों के सिंह व नादसे जानों आकाश फूटहीगया ३८ उन महाबली अत्यानन्दित राक्षसोंने वृक्ष शिलादि हाथोंमें लिये व ऊपरको उठायेहुये बानरोंकोदेखा ३९ व महात्मा वानरोंने भी सैकरों किङ्किणी बाजतीहुई व रथ घोड़े हाथीयुक्त राक्षसोंकी सेनादेखी ४० वह सबसेना कालेबादरोंके समान प्रकाशितथी उसमें प्रज्वलित अग्नि

व सूर्य्यकेसे प्रज्वलित राक्षस भरेपरे चलेआतेथे ४१ तिससेनाको च
तीदेख वानरलोग बड़े बड़े पर्ब्बतोंकी शिला व पर्ब्बत हाथों में ले
बार बार गर्ज्जनेलगे ४२ राक्षसलोग तो इनका गर्ज्जना नहीं सह
सकेथे परंतु ये वानर और भी अधिक गर्ज्जते थे ४३ तब वानरोंका ब
भयङ्कर शब्दसुन उसे न सहकर राक्षसलोगभी ऐसा शब्दकरनेलगे
वानरोंके शब्दसे भी कठोरथा ४४ परंतु वानरलोग राक्षसों की सेन
पैठ ऊपरको पर्ब्बत उठायेहुये घूमनेलगे वे शिखरसहित पर्ब्बतोंके तु
दिखाईदेतेथे ४५ कोई वानर तो आकाशमार्ग्ग होकर व कोई पृथ्वीही
मार्ग्गहोकर वृक्ष व शिला हाथोंमेंलिये व क्रोधकिये राक्षसों की सेन्यों
पिले ४६ व बड़ी डालोंवाले वृक्षलेकर वानरलोग घुसे इससे वानरों
राक्षसोंका घोरयुद्ध होनेलगा ४७ उनमें वानरलोग वृक्षशिला व पर्ब्बत
कीवर्षाकरते व अपने वृक्षादिकोंके ऊपर राक्षसोंके बाणादि आड़ते ४
व रणमें वानर व राक्षसलोग सिंहनाद करनेलगे व वानरलोग राक्ष
सोंको शिलाओंसे चूर्णकरनेलगे ४९ बड़ा क्रोधकर कवच व भूषणधारण
कियेहुये राक्षसोंको मारनेलगे कोईकोई तो रथपर चढ़नेवालोंको मारते
कोई हाथीपर चढ़ेहुये बीरोंको ५० इसतरह शीघ्रता के साथ कूद कू
वानरलोग राक्षसोंको मारनेलगे कोई तो पर्ब्बतोंके शृङ्गलियेथे वे उन्ह
से मारतेथे व कोई मूकोंसेही धुनकतेथे ५१ इसकारण राक्षसलोग क
पतेगिरते व नादकरतेथे व राक्षसलोग भी तीक्ष्णबाणोंसे कपि कुञ्ज
को मारतेथे ५२ व शूलमुद्गर भालाखड्ग शक्तिआदि से मारतेथे इसत
वानर व राक्षस परस्पर जीतनेकी इच्छासे परस्पर अपनेअपने हथिय
रोंसे मारते थे ५३ ऐसा युद्धहुआ कि राक्षस व वानर दोनों के अङ्गों
शत्रुओंकारुधिर ठौरठौर लगगया वानरों व राक्षसोंके चलायेहुयेपर्ब्बत
व शस्त्रास्त्रोंसे ५४ एक मुहूर्त्तभर में पृथ्वी पूर्णहोगई व सब ओर रुधि
से डूबगई व रण करने में बड़े तम्मेंद पर्ब्बताकार राक्षसों से ५५ पृथ्व
पूर्णहोगई जब मारते मारते व फेंकते फेंकते वृक्ष पर्ब्बतादि टूटफूटगये त
वानरलोग अपनेअङ्गोंसे युद्ध करनेलगे ५६ व राक्षसलोग वानरोंसेही
फेंकफेंक वानरोंको मारनेलगे व वानरोंके यूथपलोग राक्षसोंसेही राक्ष
सोंको फेंक फेंक मारनेलगे ५७ व फिर वानरों के हाथों से छिन को

उन्हींसे राक्षसलोग वानरोंको मारनेलगे व राक्षसोंके हाथोंसे शस्त्रास्त्र और वानरलोग उन्हींसे राक्षसों को मारनेलगे ५८ इसतरह परस्पर राक्षस व वानर शस्त्रास्त्र व वृक्ष पर्ब्बतोंसे परस्पर मारमार समरमें नाद करनेलगे ५९ इसतरह मार होतेहोते वानरोंकी मारसे राक्षसोंके कवच वखतरादि सब रत्तीरत्ती उड़गये व असंख्यों राक्षस मरभीगये उनकेअंगोंसे रुधिर ऐसा बहनेलगा जैसेवृक्षोंसे गोंदबहताहै ६० तब वानरलोग रथसेतोरथ तोड़नेलगे व हाथीसेहाथीमारनेलगे व घोड़ेसे घोड़ा इसतरह सजातीय के ऊपर सजातीयको देदै मारनेलगे ६१ व फिर हर्षित मनहो सब वानर बड़ी बड़ी शिलाले व वृक्षले राक्षसोंको मारनेलगे ६२ इसतरह राक्षसों व वानरों का बड़ाघोर युद्धहुआ तब बड़ेबड़े पैने अर्द्ध चन्द्रवाणों व अन्य पैनेशरोंसे राक्षस लोग वानरों के वृक्ष व शिला काटनेलगे ६३ तब फूटेहुये पर्ब्बतों व कटेहुये वृक्षोंसे व मरेहुये वानरों व राक्षसोंसे पृथ्वीदुर्ग्गमहोगई कहीं आनेजानेका मार्ग न रहगया ६४ तब वानर लोग गर्ब्बित हो बहुत हर्षित चित्तहुये व संग्राम को पाय भय छोड़ नाना प्रकार के शस्त्रास्त्र लियेहुये राक्षसों के साथ बड़ी प्रसन्नता के साथ युद्ध करनेलगे ६५ जब इसतरह कारण संकुल युद्धहुआ कि सबवानर जो हर्षितहुये व राक्षसलोग मारेगिराये गये तो महर्षिलोग व देवगण हर्षितहो नादकरनेलगे ६६ तब पवन तुल्य वेगवाले घोड़ेपर सवारहो व पैनशक्ति हाथमेंले नरान्तक वानर राजकी सेनामेंपैठा जैसे बड़ामत्स्य समुद्रमेंपैठै ६७ उसवीरने आतेही के साथ भालासे सातसौ वानर मारडाले व एक क्षणमात्रमें उसमहा इन्द्रशत्रुने सब वानरोंकी सेनाकोमारा ६८ व घोड़ेपर चढ़ेहुये व वानरोंकी सेनामें अकेले विचरतेहुये तिसमहात्मा नरान्तक को महर्षियोंने देखा ६९ पतित वानरोंसे संयुक्त होनेकेकारण मांस व रुधिरकी कीच से युक्त उसनरान्तकका मार्ग्ग दिखाई देनेलगा ७० जबतक उनवानरोंने युद्धकरनाचाहा कि तबतक नरान्तकने सातसे को मारहीडाला ७१ वानरोंकी सेनाको ऐसा भस्मकिया कि जैसेवनको अग्नि भस्मकरता है जबतक वानरलोग वृक्ष व पर्ब्बत उखाड़ाचाहैं कि तबतक भालासे कट कट ऐसे गिरे जैसे वज्र से कटकर पर्ब्बत गिरेथे ७२ व महा बलवान

नरान्तक भालाले संग्रामके किनारेकिनारे घूमने व सबओरसे घूमघूम वानरसैन्यों को मर्द्दनेलगा जैसे वर्षाकालमें प्रचण्ड पवन सबओरसे झिकोड़देदे सबको ब्याकुल करदेताहै ७३ ऐसाउसने सबओरसे अकेलेही गड़बड़ाकर घेरलिया कि कोईवानरवीर न तो बोलसक्ते थे न मारे भयके वहां खड़ेही रहसक्ते थे न अपने अंगही डुलासक्तेथे जो उछलता उसको ऊपरही मारडालता जो खड़ारहता उसे खड़ेही पर जो कुछ इधर उधरको चलता तो उसे चलतेही चलते इसतरह महा वीर्य्यवान् व जल्दवाज नरान्तकने सब वानरोंको मारा ७४ सूर्य्यतुल्य तेजस्वी केवल एकही कालसम भालासे कट कुटकर वानरोंकी सबसेना धरणी पर गिरपड़ी ७५ इसबज्रके निपातकेतुल्य भालाका गिरना वानरलोग न सहसके इससे बड़ेजोरसे नाद करनेलगे ७६ गिरतेहुये वानरवीरों के रूप बज्रसेश्टङ्ग कटजानेपर गिरतेहुये पर्ब्बतों के समान शोभितहुये ७७ व जो महात्मा वानर पूर्व्व समयमें कुम्भकर्ण से मारेगयेथे वे सब स्वस्थहोकर सुग्रीवजी के निकटगये ७८ व उसी समयमें सुग्रीवजी ने जो इधर उधरदेखा तो नरान्तककी भयसे ब्याकुल इधरउधर भागती हुई वानरोंकी सेना दिखाईदी ७६ व फिर घोड़ेपर सवार भालालिये नरान्तककोभी भागतीहुई सेनाकेपीछे पीछे आतेहुयेदेखा ८० व देखतेही महातेजस्वी वानरोंके स्वामी सुग्रीवजी इन्द्रतुल्य पराक्रमी अंगद जीसेबोले ८१ कि यह जो राक्षसवीर घोड़ेपर चढ़ाहुआ वानरोंकीसेना को भगाताहुआ चलाआताहै जाकर इसेशीघ्रही मारडालो देर न होने पावे ८२ अपने स्वामी व चचा सुग्रीवजी के बचन सुन दलबादर रूप व भारी वानरों की सेनाके बीच से अंगद झट आगे को कूदे जैसे सूर्य्यनारायण उदयाचल परसे झट निकलआते हैं ८३ हीरा आदि मणिजटित सुवर्ण का वजुल्ला बांधे महापर्ब्बताकार वानरों में उत्तम अंगदजी उससमय धातुयुक्त पर्ब्बतके समान शोभित हुये ८४ महातेजस्वी वालिपुत्र अंगदजी केवल नख व दांतोंकोही आयुध बनाये और कुछ भी पर्ब्बत वृक्षादि आयुध न लियेहुये आय बनाय नरान्तक के समीप पहुंच उससे बोले ८५ कि तुम खड़ेरहो इन बेचारे साधारण वानरोंको मारकर क्याकरोगे बज्र समान पुष्ट हमारी इस छाती में तो

एक भालामारो ८६ अङ्गद के बचनसुन नरान्तक ने बड़ाही क्रोध किया फिर दाँतों से ओंठ चबाय चबुरीबाँध व सर्प्पों के समान बड़े ज़ोर से साँस ले बालिके पुत्र अङ्गद के बनाय सामनेआय व और भी अधिक क्रुद्धहो नरान्तक ८७ अग्नि समान प्रज्वलित बचन कहता हुआ भाला बड़ेज़ोर से अजमाय झटपट अङ्गद की छातीमें हनकर मारा परंतु बज्रसमान पुष्ट अङ्गदजीकी छातीमेंलगकर वहभाला टूटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ८८ तबगरुड़के काटेहुये महाभयङ्कर सर्प्पके शरीर केसमान टूटेपड़ेहुये भालाको देख अंगदजीने कूदकर एकलात नरान्तक के घोड़ेके शिरपरमारा ८९ कि उसलातके लगने से उस घोड़ेका शिर रत्ती रत्ती फटगया इससे उसके चारोंपैरभी टूटगये व आँखोंके बीचकी पुतलीभी फूटगई व बड़ीभारीजीभ आगेको निकलपड़ी इससे पर्ब्बताकार उसकाघोड़ा पृथ्वीपर भहरायपड़ा व मरगया ९० अपने घोड़ेको माराहुआ पृथ्वीपर पड़ादेख नरान्तकने अतिक्रोधकिया व महा प्रभाववान् उसने एकमूका ज़ोरसेजाय अंगदजीके शिरपरमारा ९१ कि जिससे अंगदका मूंड़ फटगया व बहुत गरम रुधिर बलबलाय बहनेलगा जिससे अङ्गदजी थरायराय काँप व मूर्च्छितहोगये पर झटपट फिरचैतन्यहो बहुत बिस्मितहुये ९२ तब फिर बज्रकेसमान दृढ़मूकाबाँध अङ्गदजीने पर्ब्बतके शृंगके समान नरान्तककी छातीमें मारा ९३ कि जिसके लगनेसे नरान्तक की छाती फटगई व मुखसे ज्वाला निकलनेलगी व रुधिरकी धारबही फिर निर्ज्जीव होकर वह पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे बज्रके लगनेसे पर्ब्बत गिरेथे ९४ जब इसतरहसे बालीकेपुत्र अङ्गदजीने नरान्तकको मारडाला तो अंतरिक्षमें तो देवतालोगोंने व समर भूमिमें वानरों ने बड़ाभारी नादकिया क्योंकि यह बड़ाही प्रचण्ड योधाथा ९५ ॥

हरिगीतिका ॥

बरबालिसुत रघुबीर मनकर हर्षकर बरकर्म्मही ।
अतिकीन बिक्रम अपरदुष्कर जौनबीरन धर्म्मही ॥
सो देखिदुष्कर भीमकारी रामबिस्मितही भये ।
पुनि बालिनन्दन अनँदह्वै रणमाहिं हर्षितह्वैगये ॥ १ । ९६

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकोनसप्ततितमस्सर्ग्गः ॥ ६९ ॥

नरान्तकको मारेगयेदेख देवान्तक त्रिशिरा व महोदरादि रावणके पुत्र व औरभी बड़े बड़े राक्षसलोग रोदन करनेलगे १ फिर मेघाकार बड़ेभारी रथपरचढ़ महोदर महावीर्य्यवाले अङ्गदजी के सामनेदौड़ा २ अपनेभाईके दुःखसे सन्तप्तमहाबली देवान्तक अतिघोर परिघले अङ्गदजी के ऊपरको दौड़ा ३ व सूर्य्यवत्प्रकाशित बड़े बड़े घोड़ेयुक्त रथपर सवारहो त्रिशिरानाम बीरअङ्गदजीके ऊपरदौड़ा ४ जबतीन राक्षसेन्द्र साथही अङ्गदके ऊपरको दौड़े तो बालितनयने शाखादि समेत एकबड़ा भारीवृक्ष उखाड़लिया ५ वह बड़ी बड़ी शाखा समेत वृक्ष देवान्तक के ऊपरचलाया जैसे इन्द्र अति प्रकाशित बज्र दैत्योंके ऊपर छोड़तेहैं ६ परन्तु त्रिशिरानें बिषधर सर्प्पोंकेसमान बाणोंसेउसे काटडाला जबवृक्ष कटगया तो अङ्गदजी ऊपरको उचके ७ व शिला वृक्षादिकोंकी बर्षाकरनेलगे परन्तु त्रिशिराने तीक्ष्ण बाणोंसे उन्हेंभी काटडाला ८ व त्रिशिरासे बचेबचाये वृक्षादिकोंको महोदरने परिघसे तोड़डाला फिर त्रिशिराभी अङ्गदके ऊपर घोर बाणोंकी बर्षा करनेलगा ९ व अपनेहाथीको बालिपुत्रके सामने दौड़ाय अतिक्रोधकर महोदरने बज्रसमान कईभाला अङ्गदकी छातीमें मारे १० व देवान्तक भी बड़ा क्रोधकर परिघ उठाय अङ्गदको मार आपअलग हटगया ११ यद्यपि उनतीनों राक्षसश्रेष्ठोंने एकहीसाथ अङ्गदकोमारा तथापि महातेजस्वी व महाप्रतापी अङ्गदजी ब्यथित न हुये १२ बरन महाबेगवान् अङ्गदजीने महाबेगकर कूदकर महोदरके बड़ेभारी हाथीको लातसे मारा १३ कि उस लातकेलगनेसे उस गजराज के नेत्रनिकलपड़े व वह भी गिरकर मृतक होगया १४ तब महाबली बालिपुत्रने उसका एकदांतले दौड़कर देवान्तकके मारा १५ जिसके लगने से उस महातेजस्वी देवान्तक के मुखसे लाखकेरङ्ग के समान रक्त बहनेलगा व पवनसे कम्पित वृक्षके समान कँपनेलगा १६ परन्तु महातेजस्वी व महाबली देवान्तकने बड़ेकष्टसे ऊंधीसांसले परिघउठाय अच्छीतरह अजमाय बड़े बेगसे अङ्गदको मारा १७ उस परिघके लगनेसे वानरेन्द्र बालिकुमार जाँघोंकेबल पृथ्वीपरबैठगये व फिर झट्टही उठखड़ेहुये १८ तिनको उठतेदेख त्रिशिराने सीधे चलनेवाले तीनबाण अङ्गदजीके ललाटमें मारे १९ तब तीनराक्षसेन्द्रोंके बीच

मेंपड़े युद्धकरतेहुये अङ्गदको जान हनुमान् व नील येभी दोनोंमहाबल-
वान् वानरश्रेष्ठ वहां आये २० व पहुंचतेही नीलने एक पर्व्वतका शृङ्ग
ले त्रिशिराकेऊपर चलाया परन्तु बड़ बुद्धिमान् रावणके पुत्र त्रिशिराने
बाणोंसे उसे काटडाला २१इससे सौबाणोंसे कटनेके कारण उसके सब
शिलातल विदीर्णहोगये व चिनगारियां व ज्वाला निकालताहुआ वह
पर्व्वतका शृङ्ग पृथ्वीपर गिरपड़ा २२ व उसी बीचमेंमारे क्रोधके खड़े
जँभुआतेहुये हनुमान्जीको देख महाबली देवान्तक परिघले समरमें
पवनतनयके सामने दौड़ा २३ तिसको सामने आते देख पवनके पुत्र
हनुमान्जीने उसके शिरपर एक बज्रसमान मूकामारा २४ व मारकर
महाबली पवनकुमारने ऐसानादकिया किजिससे सबराक्षस थराथराय
कँपनेलगे २५ व वह राक्षसराज का पुत्र देवान्तक मूका के लगनेसे
विदीर्णशिरहो व दांतजीभ निकालप्राणरहितहो पृथ्वीपर गिरपड़ा २६
जब देवताओंका शत्रुमहाबली व राक्षस बीरोंमेंश्रेष्ठ देवान्तक मारगया
तो बड़ाक्रोधकर त्रिशिराने नीलकीछातीमें तीक्ष्ण बाणमारे २७ व फिर
क्रोधकर महोदर पर्व्वताकार हाथीपर मन्दराचल पर आरूढ़ सूर्य्यके
समान चढ़कर २८ नीलकी छातीपर बाणोंकी बर्षा करनेलगा जैसे इंद्र
धनुषसहित बादर पर्व्वतके ऊपर जलवृष्टि करताहै २९ इसतरह महा-
बली महोदरने जब नीलको असंख्य बाणोंसे मारा तो वानरोंकी सेना
के पति नीलके बहुतअङ्ग फटगये इससे वे मूर्च्छित होगये ३० परन्तु
बहुतही शीघ्र चैतन्यहो नीलने एकबड़ाभारी वृक्षादियुक्त पर्व्वतउखाड़
लिया व कूदकर बड़ेबेगसे महोदरके शिरपर देमारा ३१उस पर्व्वतके
लगनेसे महोदरके सर्व्वाङ्ग चूर्णहोगये क्योंकि एकतो पर्व्वत दूसरे म-
हाबली वानर कुञ्जर का चलायाहुआ था बस इसकारण निर्ज्जीव हो
महोदर पृथ्वीपर हाथपैर फैलायगिरपड़ा जैसेकि बज्रकेलगनेसेपर्व्वत
गिरतेथे ३२ अपने चचा महोदरको माराहुआदेख त्रिशिराने धनुष लिया
व क्रोधकर हनुमान्जी के ऊपर बड़े तीक्ष्ण बाण मारे ३३ उसी समय
महाबली पवनतनयने भी एकपर्व्वतका शिखरले त्रिशिरा के ऊपर च-
लाया परंतु उसमहाबली ने बाणोंसे उसे रत्तीरत्ती काटडाला ३४ उस
पर्व्वत शिखरको व्यर्थदेख हनुमान्जी उसरावणके पुत्रकेऊपर वृक्षोंकी

बर्षाकी ३५ परंतु वृक्षोंकीवर्षा अपने ऊपर आती देख महाप्रतापी त्रि
शिराने पैनेबाणोंसेकाट बड़ानादकिया ३६ तब बड़ाक्रोधकर कूदक
हनुमान्जीने त्रिशिराके घोड़ेको नखोंसे चीरफाड़ डाला जैसे गज
को सिंह चीरडालताहै ३७ तब जैसे यमराज प्रलयसमयमें कालरा
त्रिकोपाय सबप्रजाओंको भक्षणकरतेहैं वैसेही शक्तिले त्रिशिराने पवन
कुमारके ऊपरचलाया ३८ परंतु आकाश से गिरतीहुई उल्काके तुल्य
बड़ेवेगसे आतीहुई उस शक्तिको वानरशार्दूल हनुमान्जी ने पकड़कर
तोड़डाला व बड़ाभारी नादकिया ३९ तब अति घोररूप उस शक्तिको
हनुमान्जीकी तोड़ीहुईदेख सब वानरलोग बहुत हर्षितहुये व मेघोंके
समान गर्ज्जनेलगे ४० तब राक्षसोंमें उत्तम त्रिशिराने खड्गले उसीसे
वानरेन्द्र हनुमान्जीकी छातीमेंमारा ४१ जब पवनकेपुत्र हनुमान्जीके
खड्गलगा तो बड़े बीर्य्यवान् उन्होंने त्रिशिराकी छातीमें एकलातमारा
४२ उसलातके लगनेसे महातेजस्वी त्रिशिरा अपने बस्त्रहाथोंसे पकड़े
हुआ मूर्च्छितहो पृथ्वीपर गिरपड़ा ४३ जब वह गिरपड़ातो हनुमान
जीने उसके हाथसे उसकी तलवार छीनली व बड़ा नादकर उससे सब
राक्षसोंको भयभीत किया ४४ तबतक त्रिशिरा की मूर्च्छाजागी इनका
गर्ज्जना न सहकर उसने एक मूका बड़े ज़ोरसे आय हनुमान् जी की
छातीमें मारा ४५ तिस मूकाके लगनेसे महाकपि हनुमान्जी ने बड़ा
कोपकिया व उसराक्षसके तीनोंकिरीटदौड़कर पकड़लिये ४६ व उसके
किरीट कुण्डलसहित तीनोंशिर उसीके उसी खड्गसे काटडाले जैसे कि
इन्द्रने बिश्वरूप के तीनों शिर काटे थे ४७ व वे प्रज्वलित अग्नि के
समान नेत्रोंसहित व नेत्र निकलेहुये पर्व्वताकार उसकेशिर सूर्य्यमार्ग
से गिरे हुये नक्षत्रों के समान पृथ्वी पर गिर पड़े ४८ जब इस तरह
देवताओं के शत्रु त्रिशिरा को इन्द्रतुल्य पराक्रमी हनुमान् जी ने मार-
डाला तो वानर लोग मारेहर्षके गर्ज्जनेलगे व पृथ्वी चलउठी व सब
राक्षस चारोंओर को भागखड़े हुये ४९ त्रिशिरा को माराहुआ देख व
महोदरको भी व महादुर्द्धर्ष देवान्तक व नरान्तक कोभी मारेहुये देख
५० इससमाचारको न सहकर महापार्श्वनाम राक्षसने बड़ाभारी कोप
किया व लोहसे बनीहुई अति प्रज्वलित बड़ीभारी गदा उठाली ५१

महागदा सुवर्णके पत्रसेमढ़ी व मांसरुधिरसे चभोरी व शत्रुओंकेरुधिरसे तर्पितहोनेसे शोभित होरहीथी ५२ व मारेतेजके लपलपारहीथी व लाल फूलोंकी मालाओंसे भूषितथी व ऐरावत महापद्म सार्वभौमादि दिग्गजोंकोभी भयकरने वालीथी ५३ सो ऐसीगदाले क्रोधकर महापार्श्व निशाचर युगान्तके अग्निकेसमान प्रज्वलितहो वानरोंके सामने दौड़ा ५४ मदान्ध सेनासहित उस महापार्श्व को आतादेख वरुणका पुत्र ऋषभनाम वानर कूदकर जाय युद्धकरनेकेलिये उसके आगे खड़ा होगया ५५ तिस पर्व्वताकार वानरश्रेष्ठको आगे खड़ादेख क्रोधकर उसनेछातीमें वज्रसमान गदामारी ५६ उसगदाके लगनेसे उसवानर श्रेष्ठकीछाती फटगई इससे रुधिरकीधारा बहनेलगी व थराथरायकाँप मूर्च्छितहोगया ५७ फिर बड़ीदेरकेपीछे उसवानरश्रेष्ठकी मूर्च्छाजागी तब क्रोधकेमारे ओठ कँपातेहुये उसने महापार्श्वकीओर जोरसेनिहारा ५८ व पर्व्वताकार उसवानरोंमें मुख्य ऋषभने बड़ेवेगसे महापार्श्वके निकटजाय बड़ेजोरसे मुक्काबांध छातीमें कसकर मारा ५९ कि जिसके लगनेसे जड़काटेहुये वृक्षकेसमान वहराक्षस भूमिमें गिरपड़ा व सर्वाङ्गोंसे रुधिर बहनेलगा उसीबीचमें ऋषभने यमदण्डके समान अति घोर उसकी गदाछीनली व बड़ेजोरसे नादकिया ६० एकमुहूर्त्तभरतक वहराक्षस मृतकहीकेसमान पड़ारहा तिसकेपीछे चैतन्यहुआ व कूदकर सन्ध्यासमयके बादरकेरंगके उसमहापार्श्वने वरुणजीकेपुत्र ऋषभनाम वानरको मारा ६१ कि जिससे मूर्च्छितहो ऋषभ पृथ्वीपर गिरपड़ा व एकमुहूर्त्तकेपीछे जब मूर्च्छाजागी तो तो वहीपर्व्वताकार उसकीगदा जोकि उसकेहाथसे छीनलीथी खींचकर बड़ेजोरसे महापार्श्वकी छातीमें मारा ६२ व उसघोर राक्षसकी उसघोर गदाने देवतायज्ञ व ब्राह्मणों के शत्रु उसराक्षसकी छातीमें लगाकर छातीको विदीर्ण करदिया कि जिससे उसकीछातीसे रुधिरकीधारा बहनेलगी जैसे पर्व्वतराज हिमवान्से जलकीधारा बहतीहै ६३ परन्तु फिर महात्मा ऋषभकी गदा के सामने वहमहापार्श्व दौड़ा परन्तु फिर उस भीमगदा को बारबार अजमाय व तौलकर महात्मा ऋषभने बड़ेजोरसे महापार्श्व के शिरपर मारा ६४ कि जिससे ऋषभहीकी गदाकेलगनेसे महाबली वह महापार्श्व

विदीर्ण होगया दाँतजीभ निकलपड़ी व बज्रसे हतहुये पर्व्वतकेसमान भूमिमें गिरपड़ा ६५ जब इसतरह नेत्रादि फूटाहुआ आयुधरहित निर्ज्जीवहो महापार्श्व भूमिपर गिरपड़ा तो राक्षसोंकी सब सेना भाग खड़ीहुई ६६ जब रावणका भाई महापार्श्व मारगया तो राक्षसोंकी समुद्राकार वहसेना वहीं आयुध डार डार केवल अपनाजी बचानेकी इच्छासे भागगई ६७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुद्धकाण्डेसप्ततितमस्सर्गः॥ ७० ॥

अतिभयङ्कर व लोमहर्षण अपनी सेनाको मारीहुई देख व अपने भाई त्रिशिरा नरान्तक व देवान्तकको भी निहत देख जोकि इन्द्रतुल्य पराक्रमीथे १ व अपने चचामहोदर व महापार्श्वको भी समरमें निहत सुन २ ब्रह्मासे बरदान पायाहुआ देवता व दानवोंका अहङ्कार नाशने वाला पर्व्वताकार अतिकायनाम राक्षस समरमें अति क्रुद्धहुआ ३ व हज़ार सूर्य्योंके एकत्रहोनेके प्रकाशसमान प्रकाशित रथपर सवारहो वह इन्द्रकाबैरी अतिकाय वानरोंके सामने दौड़ा ४ व प्रथम आतेहीके साथ किरीट धारणकिये व सुन्दर कुण्डलोंसे बिभूषित उसने अपने धनुषपर टङ्कोरदे फिर अपनानाम बड़ेज़ोरसे पुकार सबको सुनाया ५ व तिस सिंहतुल्य नादकरने से व नाम सुनाने से व धनुषके घोरशब्द सुनानेसे वानरोंको बहुत व्याकुलकिया ६ वानरोंने इसके देहका माहात्म्य देख जानाकि यह कुम्भकर्णाही है फिर उठकर खड़ाहोगया है इससे सबकेसब मारेभयके व्याकुलहो एकदूसरेको लपटगये ७ व फिर तीनोंलोक नापनेकेलिये बढ़ेहुये भगवान् वामनजीका सा उसका बड़ा भारी रूपदेख मारेभयके वानरोंके यूथकेयूथ इधरउधर भागखड़ेहुये ८ व महाकाय अतिकायको प्राप्तहो मारेभयके विक्षिप्तसे हो सब वानर शरणागत पालक श्रीरामचन्द्रजीके शरणको गये ९ तब महाराजाधिराज रामचन्द्रजीनेभी पर्व्वताकार अतिकायको रथपर सवार धनुर्ब्बाणादि धारणकिये व प्रलय समयके मेघोंकेसमान गर्ज्जते देखा १० व तिस महात्माको देख श्रीरामचन्द्रजी विस्मितहो वानरोंको समझाय विभीषणजी से बोले ११ कि यह हरे लोचनका पर्व्वताकार कौन है

जो हज़ार घोड़े जुतेहुये रथपर चढ़ाहुआ आता है १२ यह तो अति-
तीक्ष्ण व पैने शूल मुद्गर भालाआदि धारणकिये व मारेतेज के प्रका-
शित भूतों सहित महादेवही के समान शोभित होताहै १३ व कालजिह्वा
के समान प्रकाशित रथकी शक्तियों समेत होने से यह बिजुली सहित
मेघके समान बिराजमान हो रहाहै १४ व सुवर्णकी पीठ बनेहुये व
रोदा चढ़ेहुये इसके धनुष इस रथ श्रेष्ठको ऐसा शोभित करते हैं जैसे
इन्द्रका धनुष आकाश को शोभित करताहै १५ जो यह राक्षस शार्दूल
महारथियोंमें श्रेष्ठहो सूर्य्यवत्प्रकाशित रथपर सवार समरभूमि को शो-
भित करता चलाआताहै कौनहै १६ जो यह सूर्य्यके किरणों के तुल्य
प्रभावाले बाणोंसे दशोदिशाओंको प्रकाशित करताहुआ व अपने रथके
शृङ्गके ऊपर ध्वजा में राहुकी मूर्त्ति लिखायेहुआ शोभित होरहा है १७
व तीन ठिकाने झुंकाहुआ मेघतुल्य शब्द करताहुआ व सुवर्णसे पीठ
मढ़ाहुआ इसतरह भूषितहोनेसे इन्द्रके धनुष के समान इसका धनुष
शोभित होताहै १८ व ध्वजा पताका सहित चार असवार संयुक्त व मेघ-
वत् घर्घराताहुआ अतिसुन्दर इसका रथहै १९ व रथपर ३८ तरकस
व अतिभयंकर इतने धनुष व बहुतसे सुवर्ण सम पीली प्रत्यञ्चा धरी
हैं २० व अतिप्रकाशित दोखड्ग बगलोंमें धरेहैं जोकि दशदश हाथके
लम्बेहैं व चारचार हाथके कबुजे जिनमेंलगेहैं २१ व आप लालफूलों
की मालापहिने व महापर्व्वताकार रूप व कालेरंगके मृत्युके समान
बड़ेभारी मुखवाला मानों मेघपर बैठेहुये सूर्य्यकेसमान शोभितहोरहा
है २२ व सुवर्णके बजुल्लबांधे भुजोंसे यहऊँचे दोशृङ्गोंसहित हिमवान्
पर्व्वतोत्तम के समान शोभित होरहाहै २३ व जिसका यह सुन्दरनेत्र
सहितमुख दोकुण्डोंके बीचमें पुनर्व्वसू नक्षत्रोंकेबीचमें टिकेहुये चन्द्रमा
के समान शोभित होरहाहै २४ हे विभीषण जिसइसके देखनेसे सब
वानर भागखड़ेहुये इस राक्षसोत्तमको तुमहमसे बतावो कि कौनहै २५
जब इसतरह अमिततेजस्वी महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजीने पूंछा तो
महातेजस्वी विभीषणजी श्रीरामचन्द्रजीसे कहनेलगे २६ कि कुवेरजी
का छोटाभाई महाप्रतापी भयंकर कर्म्मकारी व महात्मा राक्षसोंको
ईश्वर जो रावणहै २७ उसीकायहपुत्रहै यहवीर्य्यमें व बलमें रावणही

के समानहै व वृद्धोंकी बड़ी सेवाकरता जोबात एकबार सुनता धारण करलेता व सबअस्त्रविद्या जाननेवाले राक्षसोंमेंश्रेष्ठ है २८ व घोड़ोंपर चढ़नेमें हाथियोंपर सवारहोनेमें खड्गोंके चलानेमें धनुर्विद्या के सब कर्म्मोंमें व भेदकरनेमें समझाने बुझानेमें व दानदेकर शत्रुकोबशकरनेमें यह बड़ाचतुरहै २९ इसकेही बाहुबलकी रक्षासे लंका निर्भय रहतीहै रावणकी धान्यमालिनी नाम स्त्रीका यहपुत्रहै व अतिकाय इसका नाम कहतेहैं ३० इसने बड़ी तपस्यासे ब्रह्माजीको प्रसन्न कियाहै जिससे बहुतसे शस्त्रास्त्रपायेहैं उन्हींसे असंख्यों शत्रुभी जीतेहैं ३१ ब्रह्माजीने इसेऐसा बरदान दियाहै कि देवतादैत्य कोईभी नहीं मारसक्के व यह कवच व सूर्य्यवत्प्रकाशित यह रथभी ब्रह्माजीनेही दिया है ३२ इसने सैकरों देवताओं व दैत्योंको पराजित कियाहै व राक्षसों की रक्षाकी है यक्षोंकोभी पराजित करदियाहै ३३ व इस बुद्धिमान् ने अपने बाणोंसेव इन्द्रकावज्रभी रोंकदिया व वरुणजीकी फाँसो भी समरमें इसने ब्यर्त्थ करदी ३४ सो यह राक्षसोंमें श्रेष्ठ व देवता दानवोंके अहङ्कारका भञ्जन करनेवाला अतिबलवान् रावणकापुत्र अतिकाय है ३५ व जबतक यह वानरोंकी सेनाका नाशकिया चाहे तबतकआप बहुतही शीघ्रइसके मारनेकाउपाय कीजिये ३६इसीबीचमें बलवान् अतिकायनेवानरोंकी सेना मेंआय अपने धनुषपर टङ्कोरदिया व बारबार बड़ेजोर सेनादकिया ३७ व महारथियोंमेंश्रेष्ठ बड़ाभयङ्कररूप रथपरसवार तिसको देख वानरोंमें जो प्रधान प्रधान थे व सब महात्मा उसके ऊपरको दौड़े ३८ उनमें कुमुद द्विविद मैन्द नील व शरभ ये वानरश्रेष्ठ वृक्ष व पर्ब्बत शृङ्ग लेले एकहीसङ्गदौड़े ३९ व सबोंनेचलाये परंतु तिन लोगोंके वृक्ष व पर्ब्बत शृङ्ग महातेजस्वी व धनुर्द्धारियोंमें श्रेष्ठ अतिकायने सुवर्णसे भूषित बाणोंसे काटडाले ४० व सामने दौड़े आतेहुये उन सब वानरश्रेष्ठोंको खालिस लोहके बाणोंसे अतिचतुर व महाकाय अतिकाय ने मारा ४१ कि वे सबबाणोंकी बर्षासे बनाय पीड़ितहोगये व सबकेअङ्ग छिन्नभिन्न होगये इससे पराजितहोकर फिर अतिकायके सामने कुछभी नकरसके ४२ तब उसने और भी जो वानरोंकी सेनाथी सबको भयभीत करदिया जैसे युवावस्थाके मदसे गर्ब्बित सिंहक्रोधकर क्षुद्रमृगों को भयभीतकर

देताहै ४३ वानरोंमेंसे जो उसबीरसे युद्धकरनेको खड़ानहींहुआ उस किसीको इस राक्षसेन्द्र ने नहींमारा झटपट धनुर्ब्बाण धारणकर अहङ्कारयुक्त बचन श्रीरामचन्द्रजी से बोला ४४ कि हम धनुर्ब्बाणलिये इस समय रथपरस्थितहैं व किसी साधारण पुरुषसे नहीं युद्धकरते जिस किसीके शक्तिहो व युद्धकरनेकी प्रक्रिया उसे अच्छीतरह आतीहो वह शीघ्रहमको युद्धदानदेवे ४५ ऐसा कहतेहुये अतिकायका वह बचनसुन शत्रुओंके हन्ता लक्ष्मणजी ने बड़ाकोपकिया व उसके बचन न सहकर बिस्मितहो कूदकर झटपट धनुष हाथमेंलिया ४६ व क्रोधकर उचक फिर तरकश से बाण भी निकाल अतिकाय के उन्होंने धनुषपर बड़ेज़ोरसे टङ्कारभी दिया ४७ कि लक्ष्मणजीके धनुषके उसशब्दसे सब पृथ्वी व आकाश व समुद्र व सबदिशा पूर्णहोगई व सब राक्षस कँपने लगे ४८ लक्ष्मण जी के धनुष का ऐसा भयङ्कर शब्दसुन अतिबली व महातेजस्वी रावणकापुत्र अतिकाय बहुत बिस्मित हुआ ४९ व लक्ष्मणजीको युद्धकरनेकेलिये उद्यतदेख कुपितहो पैनेबाण ले धनुषपर चढ़ाय यहबचनबोला कि ५० हे लक्ष्मण तुम अभीबालकहो इससे बिक्रम करनेमें चतुरनहींहो यहाँसे चलेजावो कालसमान हमसे क्योंयुद्ध कियाचाहतेहो ५१ क्योंकि हमारे भुजों से चलायेहुये बाणोंका प्रहार हिमवान् पर्ब्बत व अंतरिक्ष व पृथ्वीभी नहींसहसक्ती ५२ तुम सुखपूर्ब्बक सोतेहुये कालाग्निको जगायाचाहतेहो बस अच्छाहोगा कि चुप्पे धनुष यहींरखकर लौटजावो हमकोप्राप्तहोकर अपने प्राणनछोड़ो ५३ अथवा जो हमारे बचन तुमको अंगीकारनहों तुमको कुछ अपने बलका अहङ्कारहो न लौटना चाहतेहो तो खड़े रहो प्राणत्यागकर यमपुरको जावोगे ५४ अच्छा शत्रुओंके दर्पनाशनेवाले तपायेहुये सुबर्णसे भूषित व पैन महादेवके त्रिशूलके समान कराल हमारे बाणदेखो ५५ सर्प्पाकार यह हमाराबाण तुम्हारा रुधिरपानकरेगा जैसे क्रोधयुक्तहो सिंह गजराजका शोणितपीताहै ५६ इतनाकह क्रोधकर अतिकाय ने धनुष पर बाणचढ़ाया व समरमें रोषयुक्त व गर्ब्बसहित अतिकायके बचनसुन महाराजकुमार श्रीलक्ष्मणजी बड़े बलवान् तो थेही इससे बड़ेक्रुद्ध हुये व महा अर्थयुक्त बचन बोले ५७ कि केवल बतलानेहीसे तुम प्रधान

नहीं होसक्ते क्योंकि झूंठ मूंठ बकनेसेही सत्पुरुष नहींहोते हे दुष्ट धनु-
र्व्वाण धारणकिये हम सामने तो खड़े हैं अपनाबल दिखाव ५८ कर्म्मसे
अपनाको जनाव बकनेसे क्या है बयों बकता है क्योंकि जिसके पौरुष
होता वह शूर कहाताहै केवल बकने से नहीं ५९ सब शस्त्रास्त्र लिये तू
रथपर सवारहै इससे चाहे बाणोंसे वा और अस्त्रोंसे अपना पराक्रम
दिखाव ६० तिसके पीछे पैनबाणोंसे हम तेराशिर काटेंगे जैसे परिपक्व
तालके फलको उसकी गवदसे पवन अलग हिलाय गिरादेताहै ६१
आज तपायेहुये सुवर्णसे भूषित हमारे बाण तेरे अङ्गोंसे निकल गांसी
में लगाहुआ रुधिर पानकरेंगे ६२ हमको बालकजान निरादर न करना
कि ये हमारा क्या करसकेंगे क्योंकि चाहे हम बालकहों वा वृद्ध परन्तु
हमको अपनी मृत्युही समझना ६३ क्योंकि भगवान् विष्णु बामनजी
भी तो बालहीथे परन्तु अपने चरणोंसे उन्होंने तीनोंलोक नापलियेद६४
लक्ष्मणजीके सहेतुक व परमार्थ युक्त बचनसुन अतिकाय ने बड़ा क्रोध
किया व एक उत्तम बाणलिया ६५ व उसी बीचमें महात्मा बिद्याधर भूत
देव दैत्य महर्षि गुह्यकआदि लोग उस युद्धके देखनेको आये ६६ तब
अतिकायने अति कोपकर धनुषपर बाण चढ़ाय अपनी जान जानों आ-
काशहीको उड़ाये देताथा ज़ोरसे लक्ष्मणजीके ऊपरको चलाया ६७ उस
बिषधर सर्प्पके समान बाणको अपने सामने आताहुआ देख शत्रुओंके
नाशनेवाले लक्ष्मणजी अर्द्धचन्द्राकार मुखवाले एकबाणसे काटडाला६८
तिस बाणको शरीर कटेहुये महासर्प्पके समान कटाहुआ देख अतिकाय
अति क्रोधकर और पांच बाण हाथमें लिये ६९ व उस निशाचर ने वे
पांचोंबाण लक्ष्मणजीके ऊपर चलाये परन्तु उनको मार्ग्गहीमें लक्ष्मण
जीने अपने तीक्ष्णबाणोंसे काटडाला लगेतक पहुँचने भी नहींपाये ७०
व बैरियोंके नाशक लक्ष्मणजीने उन बाणोंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काट
तेजसे प्रज्वलित एक बड़ा पैन बाण लिया ७१ व उसको लेकर अपने
धनुश्श्रेष्ठपर अच्छीतरह चढ़ाया व बड़े बेगसे खींचा ७२ व अपनी हीक
भर खिंचेहुये व बनाय गांसी झुकगये हुये उस बाण से उस राक्षस
श्रेष्ठके बीच ललाटमें तानकर मारा ७३ व उस भीमराक्षस के ललाट में
वह बाण घुसकर बिलकुल उसमें लीन होगया कि जिससे पर्व्वतमें घुसे

हुये रुधिर लगेहुये सर्प्पके समान दिखाई देनेलगा ७४ व उस बाण के लगनेसे वह राक्षसऐसापीड़ितहुआ जैसेकि महादेवजीके बाणकेलगनेसे त्रिपुरासुर के तीनोंपुर पीड़ित हो कँपने लगेथे ७५ फिर कुछदेरमें बड़ी ऊर्ध्वसाँसें ले व बिचारकर वह राक्षस चिन्ता करनेलगा व लक्ष्मणजीसे बोला कि स्याबास बहुतअच्छा बाण तुमनेमारा यद्यपि हमारेशत्रुहौ पर बड़ाई करनेहीके योग्यहो वाहरेबीर ७६ व ऐसाकह मुहफैलाय बड़ेलम्बे भुज रथपरधर रथपर चढ़ाहीहुआ अतिकाय आगेको सरका ७७ व एक फिर दो फिरतीन पाँच व सातबाण उसराक्षसश्रेष्ठने लिये व लेकर धनुष पर चढ़ाये व जोरसेखींचकर छोड़ेभी ७८ वे राक्षसेन्द्रके धनुष्से छूटेहुये कालसमान व सुवर्णकी फोंकेंलगेहुये बाण सूर्य्यसम प्रज्वलित तो थेही उन्होंने आकाशको ऐसाप्रकाशित किया मानों बालहीदिया ७९ परन्तु राक्षसके छोड़ेहुये उनबाणोंको रामचन्द्रजीके छोटेभाई लक्ष्मणजीने बड़ी सावधानताकेसाथ बहुतसेपैनबाणोंसे काटडाला ८० उनबाणोंकोभी काट डालेहुये देख रावणकापुत्र अतिकाय अतिक्रुद्धहुआ व उसने एकबड़ा उग्र बाणलिया ८१ व धनुषपर अच्छीतरह चढ़ाय महातेजस्वी उसनेचलाया व उसीबाणसे आगेको बढ़ेचलेआतेहुये लक्ष्मणजीकी छातीमेंमारा ८२ व अतिकायके मारेहुये उसबाणसे लक्ष्मणजीछातीमें ताडितहुये इससे बहुत रुधिरबहानेलगे जैसे कि मदान्धहाथी अपनेअंगोंसे मद बहाताहै ८३ परन्तु बहुतही शीघ्र लक्ष्मणजीने अपनीछातीसे वह बाण खींच अलग बहाय व अपनाकोब्यथारहितकर एकतीक्ष्णबाणलिया व उसको आग्नेय मन्त्रसेभी युक्तकिया ८४ जब आग्नेयअस्त्रसे उस बाणको संयुक्त किया तो उसबाणने इनमहात्मा लक्ष्मणजीके धनुषकोभी प्रज्वलितकिया ८५ तब अतितेजस्वी अतिकायने रौद्रास्त्र धारणकिया व उसअस्त्रसे सर्प्पाकार बाणको योजितकिया ८६ व लक्ष्मणजीने जो बाण अभिमन्त्रित कर उठायाथा उसको अतिकायके ऊपरचलाया जैसे कि यमराजअपना कालदण्ड प्रलयके समय चलातेहैं ८७ जब राक्षसेन्द्रने आग्नेयास्त्रसे संयुक्त बाणको आतेदेखा तो उसने सूर्य्यास्त्रसे योजित कर रौद्रास्त्र चलाया ८८ तो वे दोनोंबाण आकाशमें जुटकर आपसमें एक दूसरेको काटनेलगे क्योंकि मारेतेजके दोनोंकेअग्रभाग प्रज्वलित होरहेथे इससे

वे दोनों लड़तेहुये दो विषधर सप्पोंके समान शोभितहुये ८६ फिर वे दोनोंपरस्पर एकदूसरेका तेजमिटाय निश्शक्तिहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े व दीप्तिरहित व जलजानेके कारण दोनों उत्तमवाण शोभित नहींहोते थे ६० यद्यपि वे दोनोंवाण बड़े दीप्तिमान्थे परन्तु पृथ्वीमें पड़ेहुये बिलकुल श्रीहतहोगयेथे इससे नहीं शोभित होतेथे तब क्रोधकर अति-काय ने त्वाष्ट्रदेवताकेमन्त्रसे योजितकर ऐषिकनाम वाणछोड़ा ६१ तब लक्ष्मणजीने ऐन्द्रास्त्रसे योजितकर एकवाण चलाया कि जिससे उस निशाचरका वहवाण नष्टहोगया ऐषिकवाणको निहतदेख रावणकेपुत्र अतिकायने एकवाण को यमदेवता के अस्त्रसे योजितकिया ६२ व वह वाण उसनिशाचरने लक्ष्मणजीके ऊपरचलाया परन्तु लक्ष्मणजीने उस वाणको वायव्यास्त्रसेकाटडाला ६३ व बड़ाक्रोधकर रावणके पुत्रकेऊपर लक्ष्मणजीने बाणोंकी वर्षाकरदी जैसे कि बादर जलकीवर्षा करताहै ६४ परंतु वे बाण बज्रसेभूषित अतिकायके कवचपर लगनेसे सबकेसब टूट टूट पृथ्वीपर गिरपड़े ६५ शत्रुओंकेहन्ता लक्ष्मणजीने उनबाणोंको निष्फल देख हज़ारबाण एकहीसङ्ग अतिकायके ऊपरछोड़े ६६ यद्यपि वे सब बाण अतिकायके ऊपर लगे परंतु वह तो अभेद्य कवच धारण कियेथा इससे उनबाणोंसे कुछभी न व्यथितहुआ ६७ जबनरोंमें उत्तम लक्ष्मणजी किसीभी तरहसे अतिकायके अङ्गोंमें एकभीघाव न करसके तो उनके समीपआय पवनदेव बोले ६८ कि यह राक्षस अभेद्य कवच धारणकियेहै ब्रह्माजीका बरदानपायेहै इससे इसको ब्रह्मास्त्रसे मारिये क्योंकि सिवाय ब्रह्मास्त्रके यह किसीभी अस्त्रसे नहींमरसक्ता ६६ अन्य शस्त्रोंसे जबतक यहबलवान् कवचधारण कियेरहेगा कभीनमरेगा १०० पवनदेवताके ऐसे बचनसुन इन्द्रसे भी अधिक वीर्य्यवान् लक्ष्मणजीने अतिबेगवाला व बड़ाउग्र एकबाणलिया व उसे ब्रह्मास्त्रसे संयुक्त किया १०१ जब लक्ष्मणजीने सबबाणोंमें श्रेष्ठ उस बाणको ब्रह्मास्त्रसे संयुक्त किया तो सबदिशा व चन्द्र सूर्य्यादि सबग्रह व आकाश डरउठे व पृथ्वी चरचराय शब्द करनेलगी १०२ व लक्ष्मणजीने यमदूतके तुल्य उस बाणको ब्रह्मास्त्रसे अच्छीतरह योजित कर इंद्रकेशत्रु रावणके पुत्र अति-कायके ऊपर समरमें बज्रहीके समान छोड़ा १०३ व लक्ष्मणजीके छो-

ड़नेके कारण अतिबेगसे चलेआतेहुये व प्रचण्ड पवनसेभी अधिक बेग से दौड़तेहुये व सुवर्ण व हीराआदि मणियोंसे जड़ेहुये पुङ्खोंसे शोभित उसबाणको आतेहुये समरमें अतिकायनेदेखा १०४ व देखतेही अति बड़ीजल्दीकेसाथ बड़ेपैन बाणोंसे उसबाणको काटनेलगा परंतु गरुड़के समान बेगवान् वहबाण अतिकायके निकट पहुंचहीगया बाणोंके लग- नेसे कुछभीनरुका १०५ जब वहबाण बनाय समीपही पहुंचगया तो अतिकाय शक्तिऋष्टि गदा फरसा शूल बाणादिकों से तरपटक उसको काटनेलगा १०६ परंतु उनसबअद्भुतरूप आयुधोंको निष्फलकर अग्नि समान प्रज्वलित वहबाण मुकुट सहित अतिकाय का शिर पकड़ फिर काटकर उसने अलग फेंकदिया १०७ लक्ष्मणजीके बाणसे कटाहुआ वह अतिकायकाशिर कूंड़ीआदि जो उसकी रक्षाकेलिये वह धारणकिये था उससहित पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे इंद्रके काटनेसे हिमवान् पर्व्वत का शृंगगिराथा १०८ व बस्त्रभूषण रहित अतिकायका शिर भूमिमें कटापड़ा देख मारनेसे बचेहुये निशाचरबहुत ब्यथितहुये१०९ व बनाय उदासीन मुखहो व अतिदुःखितहो एक तो घावोंके लगनेही से पीड़ित थे दूसरे स्वामी की यह दशादेख बड़े ऊंचे स्वर से रोदन करने लगे११० व स्वामीके मारजाने के कारण निराश हो सब बचे बचाये निशाचर मारे डरके लङ्काकीओर मुखकर कर भागखड़े हुये १११ ॥

हरिगीतिका ॥

अरु कमल बिकशित सम प्रफुल्लित बदन बानर गाजहीं ।
अति हर्षयुतह्वै लषण लालहि बहुसराहि सभाजहीं ॥
त्यहि योग्यसो तासों बखानत हत्यहु रिपुहि प्रचारिकै ।
जो अतिदुरासद भीमबल युत रह्यहु कबहुं न हारिकै ॥ १ ॥ ११२

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेएकसप्ततितमस्सर्गः ७१ ॥

महात्मा लक्ष्मणजीके मारे हुये अतिकायको सुन रावण बहुत उ- द्विग्न हुआ व यह बोला कि १ सब शस्त्रास्त्र धारियों में श्रेष्ठ व शत्रुओं के कड़े बचनादि न सहने वाला धूम्राक्ष अकम्पन प्रहस्त व कुम्भकर्ण २ ये सब महाबली अतिबीर सदा युद्धकी इच्छा रखनेवाले व शत्रुओं की

सेना के जीतनेवाले व शत्रुओं से कभी न हारने वाले राक्षस ३ ये सब सैन्य सहित सरल कार्य्य करने वाले रामचन्द्र जीकी द्वारा मारेगये व इनके सिवाय महाकाय व नानाप्रकारके शस्त्रास्त्रों के चलाने में चतुर ४ और बहुतसे शूरबीर राक्षस जोकि बड़े महात्माथे सबके सब मारे गये व प्रख्यात बल बीर्य्य वाले हमारे पुत्र मेघनादसे ५ वे दोनों भाई बरदान से मिलेहुये बाणों से बांधेगये जिस बन्धन को देव दैत्य कोई भी नहीं छुड़ा सक्तेथे ६ व न यक्ष गन्धर्व्व किन्नरादि कोईभी छुड़ासक्तेथे सो नहीं जानतेकि अपने प्रभावोंसेवा मायासे अथवा मोहनमन्त्र यन्त्रादिकों से ७ राम लक्ष्मण दोनोंभाई शर बन्धन से छूटगये व जो बड़े शूरबीर योधा हमारी आज्ञासे युद्ध करने के लिये यहां से गये ८ उन सब को महाबलवान् बानरोंने समर में मारडाला अब हम ऐसा किसी को नहीं देखते जो युद्धमें आज रामचन्द्र व लक्ष्मणको ९ सेना व सुग्रीव बिभीषण सहित जाय मारडाले अहो रामचन्द्रजी बड़े बलवान्हैं व उन के अस्त्रका बड़ाभारी बलहै कि जिसके बिक्रमको प्राप्तहो सब राक्षस बिनाश होगये १० इससे अब बड़ी सावधानता व सजगईके साथ इस पुरीकी रक्षा करनी चाहिये व अशोक बनिकाकीभी अच्छी रक्षा चाहिये जहां की सीता रखाई जातीहैं ११ व जो कोईलङ्कासे बाहरको निकले वा बाहरसे लङ्काको आवेतो उसकाहाल जरूर जान लियाजावे व जहां जहां आनेजाने का मार्ग्ग हो तहांतहांबारबार १२ सब ओरसे तुमलोग टिकेरहो व सबकहीं सेना भी टिकी रहै हे निशाचरो बानरों के स्थान व उनकेपद सदादेखतेरहो १३ चाहे सन्ध्याकालहो वा आधीरातहो वा प्रातःकालहो बानरोंकोकम न समझनाचाहिये क्योंकिक्या जानें किससमय लङ्कामें पिलआवें व उपद्रव मचादें १४ क्योंकि हम लोगोंकेनिकट बानरों की भारी सेना तैयार पड़ीहै नहींजानते कबआकरऊपरफाटपरै १५ लङ्केश्वरके ऐसे वचनसुन सबराक्षस लोगोंने वैसाही प्रबन्ध किया जैसाकि रावणनेकहाथा १६ व राक्षसोंका अधिप रावण क्रोधरूपबाण अपनेहृदय में धारणकिये हुआअति प्रकाशितअपने राजमन्दिरको चलागया १७।

दोहा ॥

कोपानल महँ जरत निशिचर पति बहुत बिहाल ।

पुनि पुनि शोचत पुत्रदुख सुसुकत अतिहि कराल १ । १८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेद्विसप्ततितमस्सर्ग्गः ॥ ७२ ॥

व जो राक्षस मारनेसे बचगयेथे उन्होंने जायरावणसे नरान्तकदेवा-न्तक त्रिशिरा महोदर महापार्श्व व अतिकायका बध बड़ीजल्दीकेसाथ कहा १ व तिन सबको मारेहुयेसुन रावण मारेशोकके मूर्च्छित होगया फिर रोदनकरनेलगा व फिरपुत्रोंका बध व भाइयोंका बिनाशसुन बड़ी देरतक विचार करतारहा कि क्याकरना चाहिये २ तब शोकसागरमें डूबतेहुये राजारावण को देख परम श्रेष्ठ राक्षसराजका पुत्र मेघनाद बोला ३ हेराक्षसेन्द्र हेतात जबतक इन्द्रके जीतनेवाले हमजीतेहैं तब-तक आपको शोक व मोह न करनाचाहिये क्योंकि इन्द्रकेशत्रुके बाणसे माराहुआ कोईभी ऐसा समर्थनहीं जो अपने प्राणोंकीरक्षा करसके ४ आजही हमारेबाणोंसे भिन्नहोनेसे सब अंगअंग कटेहुये व सब अंगोंमें बाण गड़ेहुये निर्ज्जीव राम लक्ष्मणको भूमितलपर सोतेहुये देखोगे ५ आजही रामचन्द्र व लक्ष्मणको सफल बाणोंसे तृप्तकरदेंगे इन्द्रशत्रुकी पौरुष व भाग्ययुक्त व निश्चित इसप्रतिज्ञाको सुनो ६ आज इन्द्र यम-राज विष्णु रुद्र साध्यगण अग्नि चन्द्रमा व सूर्य्य राजावलिकी यज्ञमें वामनविष्णुके समान हमारा अप्रमाण विक्रमदेखेंगे ७ इसतरह राजा रावणसे कहकर व पूंछकर प्रसन्नचित्तहो मेघनाद श्रेष्ठ गदहे जुते वायु बेग रथपर असवारहुआ ८ व सूर्य्यके रथके समान रथपर असवारहो महातेजस्वी मेघनाद झटपट युद्धभूमिकोगया ९ तिसमहात्माको समर को जातेदेख धनुर्ब्बाणादि हाथमें लिये बड़े हर्षित और बहुतसे राक्षस वीर पीछे पीछे चले १० उनमें कोई हाथियों पर चढ़कर चले व कोई घोड़ोंपर कोई ब्याघ्रोंपर कोई रीछोंपर कोई बिलारोंपर कोई गदहों ऊंटों व सर्प्पोंपरभी चढ़करचले ११ कोई शूकरोंपर कोई कुत्तोंपर कोई सिंहोंपर कोई पर्ब्बताकार शृगालोंपर व काकों हंसों मयूरोंपर चढ़चढ़ भीमविक्रमी राक्षसलोगचले १२ व सबभालापटा निस्त्रिंश फरसागदा आदि धारणकिये व भुशुण्डी मुद्गर लाठी शतघ्नी परिघादि आयुधलिये चले १३ चलनेकेसमय शङ्खतुरुही नगारे आदि बाजनबाजे तबदेवताओं

का शत्रु मेघनाद इसतरहसे चला १४ उसके ऊपरभी चन्द्रके रंगका श्वेतछत्र लगाथा उससे वह पूर्णचन्द्रमासे रात्रिको आकाशके समान शोभित होताथा १५ सुवर्णसे विभूषित मनोहर चमरभी उसके ऊपर ढरताथा इसतरह वह वीरचला १६ सूर्य्यसम तेजस्वी इन्द्रजित् के चलनेसे लंकापुरी ऐसी शोभितहुई जैसे अतिप्रकाशित सूर्य्यसेअन्तरिक्ष शोभितहोताहै १७ इसप्रकार चलते चलते वह महातेजस्वी युद्धभूमिमें पहुंचा व पहुंचतेही उसने अपनेरथके चारोंओर सबराक्षसोंको स्थापित करदिया १८ व आपरथसे उतरकर वह अग्निसम तेजस्वी राक्षसश्रेष्ठ उत्तममन्त्रोंसे विधिपूर्व्वक अग्निमें होमकरनेलगा १९ व खीर अक्षत माला चन्दनादि सुगन्धित द्रव्योंसे प्रतापवान् राक्षसेन्द्र अग्निमें आहुति देनेलगा २० उसमें जहां शरपतकुण्डके चारोंओर बिछानेचाहिये थे वहां तो शस्त्रबिछाये व इन्धन बहेराकी लकड़ीका बनाया वस्त्र सब लाल धारणकिये व श्रुवा लोहेका बनाया क्योंकि मारणादि प्रयोगोंमें यहीपदार्थ कार्य्यके होतेहैं २१ उसने वहां शरपतरूप भालोंके ऊपर अग्नि स्थापनकर बिलकुल कालेरंगका छागले उसका गलपकड़ जीते जी उसे समूचही अग्निमें डालदिया २२ एकही बार ऐसी आहुति देने से बड़ी ज्वाला युक्त भी अग्नि शान्तहोगया धुआं बिलकुल बन्द होगया लपकें जो निकलती थीं वहभी बन्दहोगईं सब वही चिह्न होगये जो कि विजय दिखानेलगे २३ प्रथमतो अग्निकी शिखा दहिनी ओरकोघूमी फिर तपायेहुये सुवर्णकेसमान अग्निका रङ्गहोगया फिर उसमेंसे उठकर अग्निने मूर्तिधारणकर अपने आप आय आहुतिग्रहण किया २४ तब अस्त्रविद्यामें बिशारद मेघनाद ने अपना ब्राह्मास्त्र मंगवाया व धनुष रथ कवचभी मँगवाया व सबको उसी स्थानपर मन्त्रोंसे अभिमन्त्रितकिया २५ जब उसने अपने अस्त्रोंको मँगवाय अभिमन्त्रित किया व अग्निमें आहुति देनेका प्रारम्भ किया तैसेही सूर्य्य चन्द्र नक्षत्र ग्रहादिसहित आकाश डरउठा कि अबक्या होगा २६ व प्रज्वलित अग्निके समान तेजस्वी मेघनाद अग्निमें आहुति दे धनुषबाण खड्ग रथ घोड़े शूलादियुक्त वह इन्द्रसम प्रभावी आकाशमें जाय अदृश्य होगया २७ व गहाँनीच घोड़े हाथी रथसहित व पताका ध्वजायुक्त राक्षसोंकी

सेना युद्धकरनेकी इच्छासे गर्ज्जतीहुई आगेकोबढ़ी २८ व सब राक्षस लोग समर भूमिमें पहुँचतेही पहुंचते चित्र विचित्र भूषित बाणों से व भाला अंकुशादिकों स वानरोंको मारनेलगे २९ तबक्रोधकर मेघनाद ऊपरसे राक्षसोंसेबोला कि हर्षितहोकर आपलोग वानरोंके मारनेकी इच्छासे युद्धकरें किसीबातकी शङ्कानकरें ३० तब वे राक्षसलोग बिजय की इच्छा कियेहुये गर्ज्जनेलगे व वानरों के ऊपर घोरबाणोंकी वृष्टि करनेलगे ३१ व मेघनादभी नालीकनाम बाणोंसे व गदा मुशलादिकों से राक्षसोंके सङ्गहोकर वानरोंको काटनेलगा ३२ व समरमें इसतरह मारेजातेहुये वानरलोग भी पर्व्वतकी शिलाओं व वृक्षोंसे मेघनादको मारनेलगे ३३ तब महातेजस्वी मेघनादने अतिक्रोधकर वानरोंके शरीर बाणोंसे काटनेका प्रारम्भकिया ३४ एकहीबाण के चलाने से नव नव पाँच पाँच व सात सात वानरोंको मार मार राक्षसोंको हर्षितकरने लगा ३५ इसतरह सुवर्ण भूषित बाणों से वहबीर समरमें वानरोंको छिन्नभिन्न करनेलगा ३६ व वानरलोग बाणों से सबअङ्ग कटजाने के कारण अतिपीड़ितहो पृथ्वीपर गिरपड़े जैसे देवताओंके मारने से देवासुरादि संग्रामोंमें दैत्यलोग गिरेथे ३७ व फिर घोर बाणोंकोही किरणबनाये सूर्य्यके समान समरमें तपतेहुये मेघनादके ऊपर क्रोधकर वानरलोगभी बड़े बेगसेदौड़े ३८ परंतु सबकेअङ्ग तो छिन्नभिन्न होही गयेथे इससे बिचेत व्यथितहो रुधिरसे डूबेहुये इधर उधर भागनेलगे उसके सम्मुख न जायसके ३९ परंतु फिर रामचन्द्रजीके अर्थ अपने अपने प्राणछोड़नेकी इच्छासे गर्ज्जतेहुये शिला वृक्षादि धारण कर कर लौटखड़े हुये ४० व सबकेसब वानर स्थिरता पूर्व्वक समरमें खड़े होकर पर्व्वतशृङ्ग व शिला वृक्षादि मेघनादके ऊपर बरसानेलगे ४१ परंतु वृक्षों व पर्व्वतशृङ्गो व शिलाओंकी प्राणहरनेवाली बड़ीभारी वर्षा महातेजस्वी वसमरबिजयी मेघनादने काटडाली ४२ व तिसकेपीछेप्रज्व लित अग्निकेसमान प्रकाशित व विषधर सर्प्पोंकेतुल्य बाणों सेमेघनाद नेवानरोंकी सेनाओंकोमारा ४३ दूरहीखड़ेहुये गन्धमादनकेतो अठारह बाणमारे व दूरही खड़ेहुये नलकेनव ४४ व मर्म्मस्थल बिदारणकरनेवाले सातबाण मैन्दकेमारे व समरमें पाँचबाण गजनामवानर श्रेष्ठकेमारे ४५

व जाम्बवानके दशबाण मारे व नीलके तीश फिर इनसबको तो इसतरह मार सुग्रीव ऋषभ अङ्गद व द्विविदको वरदानसे पायेहुये घोरबाणोंसे मार बिलकुल प्राणरहितहीके समान करदिया ४६ व इनके सिवाय अन्यभी जो मुख्य मुख्य वानरथे उनकोभी बहुत बाणोंसे क्रोधकर व कालाग्निके समान मूर्च्छितहो उस महापराक्रमीने मारा ४७ यहांतक कि सूर्य्यवत्प्रकाशित शीघ्रगामी अच्छीतरहसे चलायेहुये उन बाणोंसे समरमें सब वानरोंकी सेनाको उसने नाथडाला ४८ व बाणोंसे पीड़ित होनेसे ब्याकुल व रुधिरसे भीगीहुई वानरोंकी सेनादेख मेघनाद बहुत प्रसन्नहुआ ४९ व फिर वह महाबली राक्षसेन्द्रका पुत्र मेघनाद बाणों व अन्य शस्त्रास्त्रोंकी दारुण वर्षा करकर ५० बड़ी शीघ्रताके साथ सब वानरोंकी सेनाको मर्द्दनेलगा बरन मार सबको परास्त करदिया ५१ व फिर अपनी सेनाको छोड़ बड़ी जल्दीकेसाथ अदृश्यमानहो वानरोंकी सेनाओंमें आय बाणोंकी वर्षा करनेलगा जैसे कालाबादर जलकी वर्षा करताहै ५२ यहांतक बाणोंकी वर्षाकी कि उन बाणोंके लगने से सब वानरोंके देह बिलकुल फटगये व मायाके बाणोंके लगनेके कारण कुछ मोहित भी होगये इससे बड़े भयङ्कर शब्दसे नादकरतेहुये पर्व्वताकार सब वानर पृथ्वीपर गिरपड़े जैसे कि इन्द्रके बज्रसे हत होनेके कारण सब बड़ेबड़े पर्व्वत गिरेथे ५३ तिन वानरोंने समरमें वानरोंकी सेनाओं पर गिरतीहुई केवल बाणोंकी वर्षाही देखी परन्तु मायासे गुप्तरूप इंद्र के शत्रु मेघनाद राक्षसको न देखा कि कहांसे बाणोंकी वर्षा करताहै ५४ तिसकेपीछे फिरभी उस महात्मा राक्षसेश्वर मेघनादने पैन गांसीवाले बाणोंसे सम्पूर्ण दिशाओंको भरदिया व सूर्य्यवत्प्रकाशित बाणोंसे वानरेन्द्रोंको विदीर्ण करदिया ५५ व फिर उसने प्रज्वलित अग्निकेसमान प्रकाशित व चिनगारी उठतेहुये अग्निके तुल्य शूल निस्त्रिंश व फरसा वानरोंकी सेनाओं पर वर्षादिये ५६ तब अग्निवत् चमकतेहुये बाणों से ताड़ित वानरलोग फूलेहुये पलाशके वृक्षोंके समान दिखाई देनेलगे ५७ व राक्षसेन्द्रके बाणोंसे सर्व्वाङ्ग छिन्नभिन्न होजानेके कारण एक दूसरेके निकट जायजाय व घोर पुकार करतेहुये वानरलोग पृथ्वीपर गिर पड़े ५८ गिरनेपर कोईकोई वानर आकाशकी ओर निहारनेलगे किदेखें

बाण कहांसे आतेहैं कि निहारतेही उनके नेत्रोंमेंही आय बाण लगे कि जिससे चुपचाप एक दूसरेको लपट लपट पृथ्वीपर सब गिरकर पड़रहे ५९ तिसकेपीछे हनुमान् सुग्रीव अङ्गद गन्धमादन जाम्बवान सुषेणवेगदर्शी ६० मैन्द द्विविद नील गवाक्ष गवय केसरी हरिलोमा विद्युद्दंष्ट्र ६१ सूर्य्यानन ज्योतिमुख दधिमुख पावकाक्ष नल व कुमुद इनवानरश्रेष्ठों को ६२ राक्षसेश्वरमेघनादने भालाशूलपैनबाणमंत्रसेसंयोजितकरकेमारा ६३ इसतरह वानरयूथोंमें मुख्यमुख्य वानरोंको नानाप्रकार के आयुधों से अच्छी तरह मार व्याकुल कर फिर सुवर्ण की फोंकें लगेहुये बाणोंसे व गदावोंसे व अन्य शरोंके समूहों से रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी के ऊपर वर्षा करनेलगा ६४ जब इसतरहकी बाणवृष्टि दोनों भाइयोंके ऊपर हुईतो यद्यपि जलकी धाराहीके समान लगातारहोतीथी परन्तु उसकी ओर कुछभी न ध्यानदे इधर उधर देखतेहुये अद्भुत शोभायुक्त श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीसे बोले ६५ कि हे लक्ष्मण इन्द्रकाशत्रु यहराक्षसेन्द्र फिर ब्रह्मास्त्र लेकर वानरों की सेना को मारगिराय यहां खड़ेहुये हम लोगोंके ऊपर बाण बरसाताहै ६६ व इस महात्मा मेघनादको ब्रह्माजी का बरदान है इससे यद्यपि उसका बड़ाभारी शरीरहै दूरसे दिखाई देना चाहिये तथापि आकाशमें अन्तर्द्धान होजानेसे उसका देहनहींदिखाई देता व सब शस्त्रास्त्र लिये हमलोगोंको मारना चाहता है इसे समरमें एकाएकी किसी तरहसे नहींजीतसक्ते ६७ जो स्वयम्भू भगवानब्रह्माजी इसमनुवंशकी उत्पत्तिके कारणहैं इससे उनका अनादरकरना मनुवंशमें जन्मलिये हुये हमलोगोंको अनुचितहै व उन्हीं ब्रह्माजीका यह अस्त्रहै जिससे मेघनाद मारताहै इससे प्रसन्न मनहो हमारे संग खड़ेखड़े तुमभी इसअस्त्रका निपात सहो बस और कुछ न करो हमइसी को अच्छा मानतेहैं ६८ यहराक्षसेन्द्र बाणोंके समूहसे सब दिशाओंको मूंदेलेताहै इसीसे मृतक पड़ेहुये मुख्य वानरों सहित यह वानरोंकी सेना नहीं शोभित होती ६९ जो हम व तुम इसके बाणोंकी वर्षा सहलेते हैं तो इससे यह प्रयोजन होगा कि हमको तुमको युद्धकरने से निवृत्त व हर्ष रोषनिहत व मूर्च्छित होकर भूमिमें पतित देख यह राक्षस अपनी विजय समझ फिर लंका को चलाजायगा ७० यह विचार फिर दोनों

भाई इन्द्रजीत के बाणोंसे मृतकके समान होगये व वहभी अपनी जान इनदोनों भाइयोंको भी विषादित कर संग्रामभूमिमें बड़े जोरसे गर्जा ७१ व वानरराजकी सैन्य व रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको भी समर में एक प्रकारसे पराजितकर मेघनाद रावणके भुजोंसे रक्षित लंकापुरीको चलागया ७२ व राक्षसोंने उसकी बड़ी अस्तुतिकी व वहांपहुँच हर्षित होकर अपने पितासे समरके सबवृत्तान्त उसने कहे ७३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रिसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७३ ॥

जब ये दोनों भाई भी समरभूमिमें इसतरह दुःखित होकर पड़े तो वानरोंकी सब सेना बनाय मोहित होगई सुग्रीव नील अंगद जाम्बवान आदि वानर फिर कुछ भी न करसके १ तब वानरोंकी सेना अति दुःखित देख बुद्धिमानोंमें बड़ेश्रेष्ठ बिभीषणजी वानरराज बीरोंको उत्तम उत्तम बचन कहकर समझातेहुयेबोले २ कि तुमलोग कुछभी न डरो जो महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी अवशहोकर दुःखित होगये तो यह विषाद का समय नहींहै क्योंकि उन दोनों भाइयोंने ब्रह्माजीके बचनको सत्य करनेके लिये अपनाको मेघनादके अस्त्र जालसे दुःखित करायाहै ३ क्योंकि यह ब्रह्मास्त्र ब्रह्माजीने मेघनादको दियाथा इससे इसका वीर्य्य सफल है व तिसकी सफलता को चरितार्थ करते हुये महाराजकुमार पतित हुयेहैं तो इस बिषयमें बिषादका कौन काल है ४ व हनुमान्जी ब्राह्मास्त्रको मुहूर्त्तभरतक मान उसके अधीनरहकर फिर विभीषणजीके बचनसुन बोले ५ कि बिभीषणजी इस मारीहुई वानरी सेनामें जो अभी जीताहो आवोहम व आप उनसबको समझावें बुझावें व आशा भरोसादेवें ६ यहकह हनुमान्जी व बिभीषणजी लूकाबार हाथ में ले ले रात्रि में उस समरभूमिमें घूमनेलगे ७ तो देखा कि सब समरभूमि पूंछ हाथ जांघ पाद बगल शिरओठ कटेहुये व पर्व्वतोंके झरनोंकेसमान अङ्गोंसे रुधिर चूतेहुये ८ पर्व्वताकार वानरोंके पड़ने से पूर्णहोरहीहै व अस्त्रशस्त्र भी बहुतसे टूटेफूटे पड़ेहुयेहैं ९ व हनुमान्जी व बिभीषणजीने सुग्रीव अङ्गदनील शरभ गन्धमादन जाम्बवान् सुषेण वेगदर्शी १० मैन्द ज्योतिमुख द्विविद व पनस को समरभूमि में मारे

पड़ेहुयेदेखा ११ व दिनके पँचयें भागमें अर्थात् छादगडमें सरसठ कि-
ड़ोर वानर ब्रह्माजीके अस्त्रसे मेघनादने मारेथे उनसबको भी इनदोनों
जनोंनेदेखा १२ व यह समुद्रकेजल समूहकेतुल्य वानरोंकीसेना बाणों
से पीड़ितदेख हनुमान् व विभीषण जाम्बवान्को ढूंढ़नेलगे १३ क्योंकि
एकतो वे बहुत वृद्धहीथे व बुढ़ापाकेमारे ब्याकुलथे दूसरे सैकरोंबाण
उनकेअङ्गोंमें लगे परन्तु वे ब्रह्माजीके पुत्रथे इसकारण इसदशापर भी
बुझेहुये अग्निकेसमान कुछ कुछ दीप्तियुक्त बनेहोंगे इसबिचारसे प्रथम
उन्हींको ढूंढ़नेलगे १४ जाते जाते जाम्ववान् को देख विभीषणजी बोले
कि हेआर्य्य भला तीक्ष्णबाणोंके लगनेसे तुम्हारे प्राण निकलने से तो
बचगये कि नहीं १५ विभीषणके बचनसुन ऋक्षराज जाम्बवानजी बड़े
कष्टसे बचन उगिलतेहुये यहबोले कि १६ हेराक्षसेन्द्र महावीर्य्य तुम
को हमबोलसे पहिंचानतेहैं परन्तु पैनबाणोंसे सबअङ्ग ऐसे छिन्नभिन्न
होगयेहैं किमारे ब्याकुलीसे नेत्रसे तुमको नहींदेखते १७ हेराक्षसोत्तम
भला जिनसे अञ्जना सुप्रजाहुई व पवन भी सुप्रजाहुये वे वानरश्रेष्ठ
हनुमान् कहींजीतेहैं किनहीं १८ जाम्बवान् के वचनसुन विभीषणजी
बोले किभला आर्य्यपुत्र श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजी को छोड़तुम हनुमा-
नूजी को कैसे पूंछतेहो १९ जैसा श्रेष्ठस्नेह तुमने पवनतनय में प्रकट
किया वैसानतो वानरराज सुग्रीवमें प्रकटकिया न अङ्गदमें न श्रीराम-
चन्द्रमें २० विभीषणके बचनसुन जाम्बवानूजी बोले कि राक्षसशार्दूल
जिसकारण हम हनुमानही को पूंछतेहैं वहसुनो २१ इनबीर हनुमान्
के जीनेपर मारीहुई भी सेनाजानों बिना मारीहुईहै व हनुमान् के मर
जानेपर हमलोग जीतेभीरहैं तो मरेहीहैं २२ इससे जो पवनतनय प्राण
धारणकियेहों तो हमलोगोंको जीनेकीआशा होगी नहींतो नहीं क्यों
कि वे समरमें पवनहीके समानहैं व बीर्य्यमें अग्निकेसमान व वेगमें भी
अपने पिताहीके समान हैं इससे जो कार्य्य करनाहोगा शीघ्रही कर-
लावेंगे २३ यहसुन हनुमानूजी भी जाम्बवानूके चरणपकर बिधिपूर्व्वक
प्रणामकर बोले कि हां हमआपकी कृपासे जीतेहैं २४ हनुमानूजी के
बचनसुन मारेप्रेमके और भी ब्यथितेन्द्रिय हो ऋक्षराजने अपना को
जानोंफिरसे उत्पन्न माना २५ व फिर जाम्बवान् जी हनुमान् जी से

बोले कि हेवानर शार्दूलआवो वानरोंकी रक्षाकरने के तुमयोग्यहो २६ औरकोई बिक्रममें समर्थनहीं है वतुम इनबानर लोगोंके परम सखाहो अब तुम्हारे पराक्रमका समय आयाहै व और किसीको हमनहीं देखते जो ऐसाकार्य्य करसके २७ इससेअब ऋक्षों व वानरोंकी सेनाके बीरों को हर्षावो व दुःखमें पड़ेहुये रामचन्द्र व लक्ष्मण जीको पीड़ा रहित करो २८ हे पवनतनय समुद्रके ऊपर ऊपरजाय बड़ीदूर तक चलेजाओ जातेजाते हिमवान् पर्व्वत श्रेष्ठपर पहुंचो २६ फिर उसके आगे तुमको सुवर्णका ऋषभ नाम पर्व्वत दिखाईदेगा उसके आगे कैलास पर्व्वत देखोगे ३० व तिनदोनों ऋषभ व कैलास पर्व्वतोंके बीचमें सब औषधि युक्त औषधि पर्व्वत देखोगे ३१ हेवानर शार्दूल तिस पर्व्वतके ऊपर दशो दिशाओंको प्रकाशित कराती हुई अति प्रकाशित चार औषधियां देखोगे ३२ उनमें एक कातो मृतसंजीवनी नामहै यह मरेहुओंको जिलादेती है व एकका बिशल्य करणीनाम है यह अंगोकी ब्यथा दूरकरदेतीहै व एकका सुवर्णकरणीनामहै यहघाव आदिकी ब्यथासे जोबिवर्णता आजातीहै फिर सुन्दरबर्ण करदेतीहै व एक महोषधीका सन्धानी नामहै इसके स्पर्श मात्रहीसे घावपूर्ण होजातेहैं ३३ हे हनुमन तिनसब औषधियों को तुम्हींलेआने के योग्यहो इससे हे पवनतनय तिनको लाय वानरोंको जिलाय समझावो बुझावो ३४ जाम्बवान केबचनसुन वानर श्रेष्ठ हनुमान्जी बलकी उद्धतासे पूर्ण होगये जैसे जलके बेगों से समुद्र पूर्ण रहताहै ३५ वस इतनेमें हनुमान्जी पर्व्वतोत्तमको पीड़ित करतेहुये पर्व्वतके तटकेआगे खड़े हो मानोंदूसरे पर्व्वतही के समान दिखाई देनेलगे ३६ व वानर शार्दूल हनुमान्जीके पादसे निर्भिन्न होवह त्रिकूट पर्व्वत जिसपर कि खड़ेहुयेथे ऐसामर्दित हुआकिनीचे को घुसगया यहांतक कि अपनाको जहांथा वहां न रखसका ३७ उस पर्व्वतको जब हनुमान् जीने पीड़ितकियातो उसके सब शृङ्ग गिरपड़े व वानर बीरके बेगसे गिरकर सब शृंग प्रकाशित होनेलगे वफिरसबशिखरफटगये ३८ जबवह पर्व्वत इसतरहसेपीड़ित हुआव उसके ऊपरके वृक्ष व शिलाभग्न होगई व पर्व्वत घूमनेलगा तो उसपरके बानरलोग न टिकसके ३६ व उसी पर्व्वत पर जानों लङ्कापरी भी तो बसीहीहै

उसकेभी द्वारभूमि मन्दिरआदि बहुत गिरपड़े व फूटगये व छहर दीवारी फाटक आदितो भग्नही होगये रात्रिको लंका मारेभय के जानों नाचनेसी लगी ४० पर्वताकार हनुमान्जी उसपर्व्वतको अच्छी तरह दबायसमुद्र सहितपृथ्वीकोचलायमानकरदिया ४१दोनोंपादोंसे पर्व्वत को दबाय व घोड़ीके मुखके समान मुखबाय ऊपरको उठाय राक्षसोंको भयभीत करतेही हुयेसे हनुमान्जी ने बड़े ज़ोरसेनाद किया ४२ तिन हनुमान् जीके बार बार गर्ज्जनेका शब्द सुन लङ्का में टिके हुये राक्षस व्याघ्रमारेभयके जहांकेतहां सिमिट कर पड़रहे कोई हाथपैर न चलाय सके ४३ तब भीमविक्रमीभी हनुमान् जी रामचन्द्रजीके प्रणाम कर रामचन्द्रजीकेही अर्थ परम उत्कृष्ट कर्म्म करनेकी इच्छा करनेलगे ४४ बड़े प्रचण्ड बेगवाले मारुतनन्दन सर्प्पाकार अपनी पूंछ ऊपर को उठाय व पीठ खलाय व कान सिकोर व घोड़ीके मुखके समान मुख फैलाय आकाश मार्ग्ग होकर कूदे ४५ व कूदने के समय उन्होंने वृक्षोंके झुंडके झुण्ड व पर्ब्बतकी शिला व वहांसदा रहनेवाले प्राकृती वानरों को मारे बेगसे हरलिया कि इनके बाहु व जांघोंकेबेगसे प्रेरित सब वृक्ष शिला वानरादि समुद्र में जायगिरे ४६ व गरुड़ समान बेग व वीर्य्यधारी हनुमान्जी सर्प्प के शरीर के समान चढ़ाउतार व लम्बे अपने भुज फैलाय पर्ब्बत राजों में श्रेष्ठ हिमालय पर्वतको सब दिशाओं को खींचतेही से गये ४७ व घूमतीहुई लहरों समेत व जलके चलने से सब जीवोंको भ्रामित कराते हुये समुद्रको देखते हुये हनुमान् जी विष्णुजीके कराग्रसे छूटे हुये चक्रके समान बेग से चले ४८ व अपने पिता पवनके बेग के तुल्य बेगवाले वानरश्रेष्ठ हनुमान्जी ऊपर उड़ते हुये चलेजाने के समय पर्वत वृक्ष समूह सर नदी तड़ाग उत्तम उत्तम पुर धन धान्य युक्त राज्य व मनुष्य देखते हुये गये ४९ पिताके तुल्य पराक्रमी हनुमान्वीर सूर्य्यमार्ग्गहोकर बिना श्रमही किये बड़ीशीघ्रता के साथ चले ५० व बड़ेबेगके साथ पवन के समान पवनकुमार सब दिशाओं को शब्दसे नादित करतेहुये गये ५१ जाम्बवान् के बचनों का स्मरण करते हुये जाते जाते हनुमान्जी ने बड़ी शीघ्रता के साथ जाय हिमवान् पर्वत रात्रिहीको देखा ५२ जो हिमवान् नाना प्रकार

के झरने व सोतोंसे युक्त व नाना प्रकारके कन्दरा निर्झरों सहित व श्वेत बादर के समान उजला व अपने बहुत कँगूरों के कारण सुंदर मनोहर दर्शन युक्त है ५३ व नाना प्रकार के वृक्षों से शोभित उस पर्बतोत्तम पर हनुमानुजी गये व बड़े बड़े ऊंचे उत्तम सुवर्णके शृंगों के उस पर्ब्बत को पाय ऋषि समूहोंसे सेवित उसपर दुग्धरूप बहुत से आश्रम उन्होंने देखे ५४ व फिर उसीपर ब्रह्मकोशनाम स्थान व रजतालय इन्द्रालय व रुद्रशर प्रमोक्ष जहां कि त्रिपुर नाश करने के लिये शिवजीने बाण छोंड़ाथा वह यग्नीवस्थान व ब्रह्मास्त्रालय ये सब अति प्रकाशित स्थान व यमराजके किङ्करोंको देखा ५५ फिर अग्निका स्थान कुवेर का स्थान व सूर्य्य वत् प्रकाशित सूर्य्य निवन्धन स्थान जहां सूर्य्य निवास करते हैं व ब्रह्मासन व शङ्करकार्म्मुक व पृथ्वी की नाभि येभी स्थान देखे ५६ फिर कैलास पर्ब्बत देखा उसपर स्थित शिवजीको देखा व फिर एक हिमयुक्त शिलादेखी व महादेवजी के वृषभ नन्दीश्वरको देखा व सुवर्ण का समूह एक शिलाकार देखा व प्रज्वलित सब ओषधियोंसमेत सर्व्वौषधि नाम पर्ब्बतोत्तमभी देखा जिसके देखने का मुख्य प्रयोजनथा ५७ तिस पर्ब्बतको अग्नि की राशि के समान प्रकाशित देख हनुमानुजी बहुतविस्मित हुये व कूदकर उस पर्ब्बतपर संजीवनीआदि औषधियां ढूंढ़नेलगे ५८ ढूंढ़ते ढूंढ़ते हनुमानुजी चारसौ कोसंतकघूमें परंतु दिव्योंपाध धर पर्ब्बतके बाहर न गये यह बड़ाभारी पर्व्वत है ५९ परंतु उस पर्वत परजो चारो महौषधियां थीं हनुमानुजी को अर्थी समझ सबको सब अदृश्य होगईं ६० जब महात्मा हनुमानु जीने उन औषधियोंको न देखा तो बड़ाकोपकिया व बड़ा नादभी किया व इस बातको न सहकर अग्निके समान नेत्रकर उस सर्व्वौषधि पर्व्वतसे बोले ६१ कितुमने यह कौनसा निश्चय कियाहै जो रामचन्द्रजीके विषयमें दयानहीं करते खैर जोकिया सोकिया अबहमारे बाहुका बलदेखो कि ऐसा तुम्हारा अनादर करें कि रत्तीरत्ती तुमको चूर्णही करडालें ६२ इतनाकह हनुमानुजीने शृंग शिला कूट हाथी सर्प्प सुवर्णकी खानि व अन्य सैकरों धातुओं सहित पर्व्वतको पकड़कर बनाय नीचेसे अतिवेग युक्तहो बड़ीशीघ्रताके साथ उखाड़लिया ६३ व लैकर आकाशकोउछर

गये व सब देवता दैत्यादिकों व सब लोकोंको भयभीत कर व आकाश गामी अनेक देव ऋष्यादिकों से अस्तुति किये जातेहुये गरुड़ समान वीर्य्यवाले हनुमान्जी चलदिये ६४ व सूर्य्यकेमार्गमें प्रवेशकर सूर्य्य-प्रकाशित पर्व्वतको ले सूर्य्यके बराबरपरआय दूसरेसूर्य्यहीकेसमान प्रकाशित व शोभित हुये ६५ व उस पर्व्वतको लेकर पर्व्वताकार हनुमान्जी आकाशमें सहस्रधार सहित सुदर्शनचक्रको लिये आकाश में चलेजाते हुये श्रीविष्णु भगवान् के समान शोभित हुये ६६ व पर्व्वत लेकर झटपट लंकामें पहुंचगये तिन हनुमान्जी को पर्व्वतलिये आते देख सब वानरलोग नादकर उठे व तिन वानरोंको नाद करते सुन व देख हनुमान्जी ने बड़े जोरसे नादकिया व तिन वानरों व हनुमान्जी का उत्कृष्ट शब्द सुन लङ्काके रहनेवाले राक्षस लोग मारे डरके अति भयंकर नाद करनेलगे ६७ तिसके पीछे महात्मा हनुमान्जी त्रिकूट पर्व्वत परटिकी पड़ीहुई वानरोंकीसेनाके बीचमें पर्व्वत लियेहुये उतरे व अपनासे अवस्थामें बड़े बानरों के शिर झुंकाकर प्रणामकर फिर विभीषणजी को लपटाय मिले ६८ बस जैसेही वह पर्व्वत वहां आया कि उन औषधियों कीगन्धिसूंघ मानुष राजकुमार श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी पीड़ारहित होगये व अन्य सब वानर बीरभी पीड़ा रहित हो उठ खड़ेहुये ६९ तिन औषधियोंकी सुगन्धि लेतेही सब वानरबीर जोकि मेघनाद के मारने से मूर्च्छित व मृतक पड़ेथे सब व्यथा रहित व बाण रहित होगये ऐसा बिदित हुआकि जानों रात्रिको सोतेथे अब प्रातःकाल जागउठेहैं ७० जोकहियेकि जैसेइन औषधियोंकी सुगन्धि पातेही सबवानर तो उठखड़ेहुयेतो राक्षसभीतो मारेहुये उसी रणभूमि में पड़े होंगे वे क्यों न उठ खड़े हुये तो जबसे लंकामें वानर व राक्षस युद्ध करनेलगे थे तबसे जो राक्षस वानरोंसे मारे जातेथे ७१ वे रावण के मानके लिये कि जिसमें जानपड़े कि राक्षस मारेही नहींगये इस लिये रावणकी आज्ञासे जैसेही कोई राक्षस माराजाता था कि राक्षस लोग तुरन्तही उसे उठाय समुद्रमें फेंकआतेथे वहां रहनेही नहीं देतेथे फिर राक्षस कैसेजीउठें ७२ जब सबवानर जीआये तो अत्युग्रवीर्य्य हनुमान्जी उससर्व्वौषधि पर्व्वतको फिरहिमवानपर्व्वतके उसपारलेजाकर

जहाँ वहथा वहाँस्थापनकर फिर श्रीरामचन्द्रजीके समीपआगये ७३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुस्सप्ततितमस्सर्गः ॥ ७४ ॥

तिसके पीछे महातेजस्वी सुग्रीवजी अर्थयुक्त कोई बात जाननेकेलिये हनुमान्‌जीसे बोले १ कि यहाँ कुम्भकर्ण मारागयाहै व नरान्तक देवान्तक त्रिशिरा महोदर महापार्श्वादि मारेगयेहैं वहाँ अब उनलोगोंको इससमय रावण जलादि न देनेपावे २ इसकेलिये यहउपाय कियाजावे कि जो बड़े वा छोटे वानरहैं सब बहुतशीघ्र लुकेठ वा हड़ाही मसाल आदि जलाय जलाय लङ्काको शीघ्रही चलेजावें ३ इसतरह की आज्ञा पाय सन्ध्याहोतेही सब वानरलोग उल्कादि हाथोंमें ले ले लङ्काकेसम्मुखचले ४ व जाकर उल्का हाथोंमेंलिये वानरोंने फाटक गोपुरादिकों की रक्षाकरतेहुये राक्षसोंको डरवाया कि वे भागखड़े हुये ५ तब वानरोंने गोपुर अटारी छज्जा व चर्य्या आदि बिबिधप्रकार के स्थानोंमें व सब धवरहरोंमें व जहाँकहीं अवकाश पाया अग्नि लगादिया ६ तिन राक्षसोंके हजारोंगृह अग्निनें जलादिये यहाँतक कि पर्व्वताकार प्रासाद जल जल कर पृथ्वीपर गिरपड़े ७ लङ्कामें ठौर ठौर अगरजलने लगा व चन्दन मोती मणि व हीरा मूंगाआदि भस्महोनेलगे ८ व क्षौम कौशेय आदि बहुत रेशमी कपड़े जलनेलगे व बिविध प्रकार की भेडियोंके ऊनसे बनहुये बस्त्र व सुवर्ण चाँदी बरतन आयुध सबजलनेलगे ९ व नानाप्रकारके अन्नादि धरनेकेस्थान व घोड़ोंके अलङ्कार व अन्य भी अलङ्कारादि व हाथियोंके गलेमें बाँधनेके पदार्त्थ व हाथियोंकी कटिमें बाँधनेवाले रस्से व रथोंकेभूषण व अन्य बनेबनाये जो भोजनादि धरेथे १० व योधोंके कवच बखतरआदि तथा हाथियों व घोड़ों के कंवचांदि व खड्ग धनुष पनच बाण भाला अंकुश व शक्तियाँ ११ व कम्बलादिरोमज बस्त्र व चामरादि बालसे उत्पन्न व चर्म्म तथा व्याघ्र चर्म्म व कस्तूर्य्यादि अण्डजपदार्त्थ व मुक्ता मण्यादि जटित चित्रबिचित्र प्रासाद १२ व बिविधप्रकारके अस्त्रशस्त्रादि इनसबको अग्निने भस्मकरदिया व नानाप्रकार के चित्रबिचित्र गृहभी अग्निने जालडाले १३ व सब गृहनिवासी राक्षसोंकेस्थान व सुवर्णके कवचादि धारणकिये माला

भूषणवस्त्रधारी १४ मदिरापानसे चलायमाननेत्र व मदकेलिये विह्वल चलनेवाले व स्त्रियों के वस्त्र पकड़े हुये व शत्रुओं के ऊपर कोपकियेहुये १५ व गदा शूल खड्ग हाथोंमें लिये व खातपीतेहुये व अपने अपने प्रियोंके सङ्ग बड़े बड़े मोल के बिछौनोंपर सोतेहुये १६ व मारेभय के अपने अपने पुत्रोंको लेले सबओरोंको भागतेहुये १७ ऐसे सैकरोंहज़ारों लङ्कानिवासियोंके झुण्डके झुण्ड अग्निने जलाडाले व फिरफिर प्रचण्ड होहो फेर जालताही चलाजाताथा १८ व पुष्ट बड़े बड़े मोलकेगम्भीर गुणवाले सुवर्णके चन्द्रमा व अर्द्धचन्द्राकार बने दुमहला तिमहला पँच महलाआदि १९ व रत्नोंके चित्र बिचित्र झरोखेबने व सुधामय हर्म्य मण्डलादि बनेबनाये व मणियोंमूंगोंके चित्रबने वजानोंसूर्य्यको कूलिया चाहतेथे २० क्रौञ्च मयूर बीणा व भूषणोंके शब्दोंसे नादित वपर्व्वताकार मन्दिर अग्निने जलाडाले २१ व अग्निसे जलतेहुये तोरण बिजुलीसहित मेघोंकेसमान प्रकाशित होनेलगे २२ व अग्निसे जलतेहुये गृह दावाग्नि लगेहुये महापर्व्वतके शृङ्गोंकेसमान प्रकाशित व शोभित होनेलगे २३ जबइसतरह अग्नि चारोंओरसे जलानेलगा तो विमानों व विमानाकार मन्दिरों में सोतीहुई अच्छी अच्छी स्त्रियां गहना व वस्त्रादिदेहोंसे निकाल निकाल बहातीहुई हाहाकार मचानेलगीं २४ व अग्निसे बनाय जलकर लङ्काके मन्दिर इन्द्रके वज्रसे कटेहुये महा पर्व्वतोंके शृङ्गोंकेसमान पृथ्वीपर गिरनेलगे २५ व गिरनेपरभी जलते हुये वे मन्दिर जलतेहुये हिमवान्पर्व्वत के शिखरोंके समान दूरसे प्रकाशित व शोभित होनेलगे २६ ज्वालासे प्रज्वलित हर्म्यादिकोंके जलनेसे रात्रिमें लङ्कापुरी फूलेहुये पलाशके वृक्षोंके समान शोभितहुई २७ हथिवालों व साईसोंके छोड़दियेहुये हाथियों व घोड़ोंके इधरउधर अग्निकेभयसे भागनेसे लङ्कापुरी उससमय प्रलयान्त समयमें इधर उधर ग्राह मकरादिकोंसे भ्रान्त समुद्रहीके समान शोभित व भयङ्कर लगनेलगी २८ व कहींकहीं छूटेहुये घोड़ेकोदेख मारेडरके हाथीभागता था व कहीं डरेहुये हाथीकोदेख घोड़ाही लौटपड़ताथा २९ जब लंका जलनेलगी तो उसकी छाया पड़नेसे लालरंगके समुद्रके समान वह क्षारसमुद्र शोभितहुआ ३० एक मुहूर्त्तहीभरमें वानरोंने लंकाको ऐसा

जलाया कि वह प्रलयसमयमें जलतीहुई सम्पूर्ण पृथ्वीकेसमान शोभित हुई ३१ व अग्निसे जलतीहुई व धुआँकेमारे ब्याकुल लंकाकीस्त्रियोंका बड़ेजोरसे रोदनकरना सौयोजनतक सुनाईदिया ३२ व जो राक्षस जलकर मरजानेके भयसे नगरकेबाहर जले अधजले भागआये उनको युद्धकरनेकी इच्छासे तैयार वानरलोग मारनेलगे ३३ उस समय बड़े जोरसे गर्ज्जतेहुये वानरोंकाशब्द व रोदन करतेहुये राक्षस राक्षसियों की पुकारसे सबदिशा व समुद्र व सब पृथ्वी पूर्णहोगई ३४ व उसी समयमें बाण ब्यथासे रहितहो सावधान चित्त रामचन्द्रजी व लक्ष्मण जीनेभी धनुष धारणकिये ३५ व जब रामचन्द्रजीने धनुषपर टंकोरदी तो बड़ाभारी रोमहर्षण शब्दहुआ जिससे राक्षसलोग भयभीत होगये ३६ उससमय धनुषपर टङ्कार देतेहुये रामचन्द्रजी प्रलय समयमें कोप कियेहुये हाथमें धनुष धारणकिये महादेवजीके समान शोभितहुये ३७ व वानरोंके गर्ज्जने व राक्षसोंके रोनेकाशब्द व श्रीरामचन्द्रजीके धनुष का शब्द ये दोनों एकदूसरेको जीततेहुये सुनाईदेतेथे ३८ व फिरवानरोंके गर्ज्जनेका शब्द व राक्षसोंके रोदनका व रामचन्द्रजी के धनुषका ये तीनोंशब्द सबदिशाओं में ब्याप्तहोगये ३९ व रामचन्द्रजीके चापसे छूटेहुये बाणोंके लगनेसे लङ्कापुरीके फाटक शहरपनाह आदि विदीर्ण होकर कैलासपर्ब्बतके शृङ्गकेसमान पृथ्वीपरगिरपड़े४० व तिसकेपीछे रामचन्द्रजीके चलायेहुये बाण लंकाके प्रतिगृह व प्रतिविमानोंमें घुसते मारतेदेख राक्षसलोग हरबराकर युद्धकरनेकेलिये तैयार होनेलगे ४१ तिन राक्षसों के तैयार होने व सिंहनाद करनेसे वह रात्रि कालरात्रिके समान भयङ्करहुई ४२ व वहांभी सुग्रीवजीने वानरोंको आज्ञादी कि हे वानरो तुम अपने अपने समीपके फाटकपर जाय युद्धकरो ४३ व जो अपने अपने मुरचोंपर खड़ाहुआ हमारी आज्ञाके प्रतिकूल करैगा युद्ध न करेगा वह राजाज्ञा भङ्गकारक अवश्य मारडाला जावेगा इसमें कुछ भी सन्देहनहीं ४४ तब इसआज्ञाको पाय सब वानर उल्काहाथों में लेजाय अपने अपने मुरचोंपर लङ्काके फाटक घेरखड़े हुये तबतो रावण बड़ाक्रुद्ध हुआ ४५ व क्रोधकर जब उसने जँभोईली तो सबदिशा उससे युक्तहोगई उस समय रावणका रूप जानों महादेवके रूपवान् क्रोधही

के समान दिखाईदिया ४६ व क्रोधकर रावणने कुम्भ वनिकुम्भ नाम कुंभकर्णके पुत्रों को बहुत राक्षसोंके साथ युद्ध करने के लिये भेजा ४७ व रावणकी आज्ञासे कुम्भकर्णके उन दोनांपुत्रों के साथ यूपाक्ष शोणि-ताक्ष प्रजङ्घ व कम्पन ये भी राक्षस श्रेष्ठ चले ४८ व उनसबको रावण ने आज्ञादी कि हे राक्षसो तुमलोग यहींसे सिंहनाद करतेहुये चले जा-ओ ४६ रावणकी ऐसी आज्ञापाय राक्षस लोग बारबार नाद करतेहुये लङ्कासे नानाप्रकारके आयुधलिये निकले ५० राक्षसोंकेभूषणोंमें लगी हुई उल्काओंकी उजियालीकी दीप्तिसे वानरोंने आकाशको प्रकाशित करदिया ५१ उसरात्रिमें चन्द्रमा की प्रभा व नक्षत्रोंकी प्रभा व दोनों सैन्यों के भूषणोंकी प्रभा इनसबोंने अन्तरिक्ष को प्रकाशित करदिया ५२ व चन्द्रमाकी दीप्ति तथा भूषणोंकी दीप्ति व सबग्रहोंकी दीप्तितथा लङ्काके जलनेकी भी दीप्ति इन सबोंने सबओरसे वानरों व राक्षसोंकी सैन्योंको शोभित किया ५३ व तहां फिर अधजले हुये लङ्काके मन्दिरों की दृप्तिसे संयुक्त जलहोनेके कारण समुद्र लहरों के उठनेपर अधिक शोभित हुआ ५४ व पताका ध्वजसंयुक्त उत्तम खड्ग फरसा समेत भय-ङ्करघोड़े हाथीसहित नानाप्रकारके पैदरसहित ५५ दीप्तशूल गदा खड्ग भाला तोमर धनुष संयुक्त व घोर विक्रमपौरुषसे संपूर्ण ज्वलितभालोंका चमचमाहट से परि पूर्ण व सैकरों किङ्किणियों से नादित ५६ व सुवर्ण समूहसे जटित भुजों सहित फरसोंसे व्यप्ति महाशस्त्रों से घूमताहुआ व धनुषोंपर बाण चढ़ाये हुआ ५७ व गन्धमाला मधुओंकी महकसे प-वनको मोदित करता हुआ शूरजनों के भरेहोनेसे अतिघोर व बड़ेभारी मेघोंके गर्ज्जनेके समान नादित ५८ ऐसीराक्षसोंकी सैन्य आतीहुई देख वानरोंकीसेना आगेकोबढ़ी व नादकिया ५६ व वह राक्षसोंकी बड़ा भारी सेना बड़ेबेगसे कूदकरवानरोंकी सेनामें घुसपड़ी जैसेपांखी अग्निमेंघुस पड़तीहैं ६० व तिन राक्षस लोगोंके भुजोंके व्यापारसे कँपाये गये वज्र व अशनि संयुक्त राक्षसोंकी वह सेना फिर अति शोभित हुई ६१ ऐसी सेनामें वृक्ष पर्ब्बत मूका आदिसे निशाचरों को मारते पीटते बानरलोग युद्धकरनेकी इच्छासे उन्मत्तलोगोंकेही समान पिले ६२ व जैसे ये बानर लोग पिलेहैं कि वैसेही भीमविक्रमी राक्षसलोग पैने व तीक्ष्ण बाणोंसे

वानरोंके मूंड़काटनेलगे ६३ व वानरोंनेभी दांतोंसे राक्षसोंको ऐसानोचा कि दांतोंसे कानकाटेहुये व मूकोंसे शिरफूटेहुये व शिला प्रहारोंसे अङ्ग भङ्गहुये राक्षसलोग इधरउधर घूमने व मुंहफरनेलगे ६४ व तिसीतरह और राक्षसलोगोंने वानरोंकेभी शिर मुखहाथ कर्णादि पैन बाणोंसे काट डाले व मुख्यमुख्य वानरोंकोतो ज़रूरमारा ६५ इसतरह महायुद्ध होने लगा कि जैसेहीकिसीने किसीकेमारनेको हाथउठायाकि उसनेप्रथमही उसको मारडाला व इसी तरह जिसने गिराने को मन किया उसने उसकोही गिरादिया जैसेही कोई दूसरेकी निन्दा करनेलगा कि उसकी निन्दादूसरा पहिलेही करचुका व जैसेही कोई किसीको काटनेलगा उसकोउसने भी काटलिया ६६ जैसेही एकदूसरेसे कहता कि युद्धदो तैसेही दूसरादेदेता व फिर और बोलता कि क्या क्लेशदेतेहो खड़ेरहो हम युद्धदेतेहैं इसतरह परस्पर बतकहीहोतीथी ६७ इधर उधरसे श-स्त्रोंकी बचावा बचाई सहित व कवचोंपर आयुध चलतेहुआ व बड़े बड़े भाला मूका शूल खड्ग कुन्तआदि उठायेहुआ इसतरहका महाघोर युद्ध वानरों व राक्षसोंका होनेलगा ६८ दश वा सात वानरोंको एकहीसङ्ग राक्षसोंनेमारा व दश वा सात राक्षसोंको वानरोंने एकहीसङ्ग मारा इ-सतरह युद्धबढ़चला ६९ यहांतक युद्धहुआ कि राक्षसोंके अस्त्रशस्त्र चलते चलते टूटगये व उनके कवचध्वज वानरोंके मारनेसे तिलतिल उड़गये इसतरहकी राक्षसोंकी सेनाको वानरलोगोंने करदिया ७० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपञ्चसप्ततितमस्सर्ग्गः ॥ ७५ ॥

जब इसतरहका बीरजनोंका नाशक घोररण संकुलयुद्धहुआ तो रण करनेमें बड़ीप्रीति कियेहुये अङ्गदजी कम्पनके सम्मुखआये १ आतेही अङ्गदकोपुकार कम्पनने बड़ी जल्दबाजी व कोपकेसाथ गदासे अङ्गदको मारा उसके लगनेसे अङ्गद मूर्च्छितहोगये २ परन्तु महातेजस्वी अङ्गद जीने शीघ्रही चैतन्यहो पर्व्वतका शृङ्गउठाय कम्पन को मारा जिसके लगनेसे बनाय अर्द्दित हो कम्पन भूमिमें गिरपड़ा ३ कम्पनको इसत-रह रणमें मारगयेहुये देख शोणिताक्ष रथपर असवार हो भयरहितही सा अङ्गदसे युद्ध करनेको आया ४ व बड़ी जल्दबाजी के साथ पैनबाणों

हुये उसबाण से कुम्भने द्विविदको मारा ३९ व उसके लगनेसे पैरफट-कतेहुये द्विविद त्रिकूटाचलके समान बिह्वलहो पृथ्वीपर गिरपड़े ४० तो अपने भाईको समरमें भग्नदेख मैन्दनाम बानरश्रेष्ठ बड़ीभारी शि-लाले कुम्भके सामने दौड़े ४१ व वह शिला उस राक्षसेन्द्र के ऊपर चलाया परन्तु कुम्भने पांच बाणोंसे वह शिला काटडाली ४२ व अन्य विषधर सर्प्पके समान बाणले बड़ेजोरसे द्विविद के बड़े भाई मैन्द के मारा ४३ वहबाण मैन्दके मर्म्मस्थल में लगा इस कारण मूर्च्छित हो वेभी पृथ्वीपर गिरपड़े ४४ तब अंगदने अपने मामा द्विविद व मैन्दको निहत देख धनुष उठायेखड़ कुम्भके ऊपरको दौड़े ४५ तिसको सामने दौड़ेआतेदेख कुम्भने पांचलोहेकेही बाणोंसेव तीन औरभी तीक्ष्ण बाणोंसे अङ्गदको भी मारा ४६ व फिर तरपटक औरभी बहुत बाणों से कुम्भ ने अंगदको अच्छी तरह ताड़ित किया ४७ परंतु तिन सबोंके लगनेसे अं-गद कुछभी न व्याकुल हुये व फिर शिला वृक्ष पर्ब्बतादि कुम्भके ऊपर बरसाने लगे ४८ परंतु महाप्रतापी कुम्भने बालिपुत्रके भेजे हुयेशिला वृक्षादि सबके सब काटडाले ४९ व फिर उनको सामने आतेदेख कुंभ ने अङ्गदकी भौंहके बीचमें दो बाण मारे जैसे उल्कासे लोग हाथी को मारतेहैं ५० उसके लगनेसे अङ्गदके रुधिर बहने लगा व नेत्र मूंदआये ५१ तब रुधिरसे ढकेहुये नेत्र अङ्गदजीने एकहाथसे मूंद व एक हाथसे सन्निकटही प्राप्तसांखूका वृक्षलिया ५२ व उसेछातीमें दबाय व हाथसे झुकाय व कुछनवाय उसकेपत्र व छोटीछोटी डारें तोड़डाला ५३ व तिस इन्द्रध्वजके समान कुम्भके ऊपर मन्दराचलके समान वह वृक्ष चलाया ५४ परन्तु उसने शरीरभेदन करनेवाले सातबाणोंसे उसे काटडाला व अंगदके जानों घावतो पहिलेही लगचुकाथा इससे व्यथित होकर गिर पड़े व मूर्च्छित होगये ५५ अंगदको गिरकर अति व्याकुल व समुद्रमें डूबतेसेदेख सब बानरोंने जाय श्रीरामचन्द्रजीसे कहा ५६ अंगदजीको व्यथितहोकर रणमेंपड़ेसुन श्रीरामचन्द्रजीने जाम्बवान् आदि बानरोंको वहां जानेके लिये आज्ञादी ५७ रामचन्द्रजी की आज्ञापाय सब बानर क्रोधकर धनुष उठायेहुये कुम्भके ऊपर जायटूटे ५८ व वृक्ष शिलादि हाथमेंलिये मारेकोपके नेत्र लालकिये व अङ्गदकी रक्षाकरनेकेलिये सब

वानरजाय पहुंचे ५६ उनमें जाम्बवान् सुषेण व बेगदर्शी ये तीनबानर क्रोधकर कुम्भकर्णकेपुत्र कुंभके सामने दौड़े ६० इनमहाबली बानरेन्द्रों को सामनेदौड़े आतेदेख बाणसमूहचलाय उसनेरोंका जैसेलोग पर्वतके टुकड़ेडालकर जलाशयको रोकते हैं ६१ तिसके बाणोंके ढेरको पाय ये तीनों बानरेन्द्र आगेको न बढ़सके जैसे समुद्रका जल बड़ेबेगसे चलता परन्तु किनारेकोपाय फिर रुकरहताहै ६२ जबयेभी तीनबानर ब्याकुल हो वहांरुकेतो सुग्रीवजी वहां आय अंगद अपने भतीजेको पीछेकर ६३ रणमें खड़ेहुये कुम्भकर्णके पुत्रके सामने बड़े बेगसे दौड़े जैसे पर्ब्बत के शृङ्गपर चरतेहुये हाथीके ऊपर सिंह दौड़े ६४ व पहुंचतेही अश्वकर्ण धवआदि बड़ेबड़े बहुत वृक्षउखाड़ उसकेऊपर सुग्रीवजीने चलाये ६५ व आकाशको मूंदेलेतीहुई उसदुरासद वृक्षोंकीबर्षाको कुम्भने पैनबाणों से रत्तीरत्ती काटडाला ६६ वे कटेहुये वृक्ष पृथ्वीपर गिरकर घोर शतघ्नियोंकेसमान दिखाईदेनेलगे इसतरह कुम्भकी काटीहुई वृक्षोंकीबर्षा देख महाबीर्य्यवान् ६७ श्रीमान् वानरराज महापराक्रमी तो थेही इससे कुछभी उदासीननहुये परंतु कुम्भ ने बहुतबाण सुग्रीवकेमारे व उनकोसह सुग्रीवजीने कुम्भकाधनुषछीन अपने हाथमेंलेकर तोड़डाला ६८ व कूदकर ऐसा दुष्करकर्म्मकर कोपकियेहुये व दांतटूटेहुये हाथीके समान खड़े हुये कुम्भसेजाबोले ६९ कि हे निकुंभके बड़ेभाई कुम्भ तुम्हाराबीर्य्य व बाणबेग अद्भुतहै व सन्नतिवप्रभावभी जैसातुम्हाराहै वैसा रावणकाहै वैसा और राक्षसोंमें हमने नहींदेखा ७० व प्रह्लाद बलि हिरण्यकशिपु कुबेर व वरुणके समान तुम्हीं एक अपने पिताकेसमान बलवान् हमको दिखाईदियेहो ७१ तुमअकेलेही जबशूल हाथमेंलेकर खड़े होजातहोगे तो देवतालोग मारेडरके सामने न आयसक्तेहोंगे जैसे जितेन्द्रिय पुरुषके सामने मनकीब्यथा नहींआती ७२ इससे युद्धमें बिक्रमकरो व हमारेभी कर्म्मदेखो ७३ क्योंकि तुम्हारे चचा रावण तो बरदानके कारण देवता व दानवोंका बीर्य्यसहलेतेहैं व कुम्भकर्ण अपने बीर्य्यहीसे देवता व दैत्योंको सहतारहा ७४ व तुम धनुर्बिद्यामें तो मेघनादके समानहो व प्रतापमें रावणके तुल्य इससे बल व बीर्य्य से इसलोकमें सबराक्षसोंसे तुमश्रेष्ठहो ७५ इससे आजसमरमें हमारेसाथ

से अङ्गदकोमारा व फिर भी अति बिदारक शरोंसेमारा जोशर कालाग्नि के समान चमकतेथे ५ व क्षूराकी धारसे भी अधिक तीक्ष्ण बाणोंसे व वत्सदन्त बाणोंसे फिर शिलीमुखशरों से फिर कर्णीशल्य बिपाट व बहुत पैन शरोंसेमारा ६ इनसबोंके लगनेसे अङ्गदके सर्व्वाङ्ग में घावहोगये परन्तु बालिकेपुत्र महातेजस्वी अङ्गदजीने अपने आयुधोंसे उसका धनुष रथ व बाण सब एकलागे तोड़फोड़ डाला ७ तब अतिशीघ्र शोणिताक्ष ने ढाल तलवार हाथोंमेंली व अङ्गदको कुछभी न समझता हुआ क्रोध कर उचका ८ उसको उचकते देख अङ्गदजी उससे भी अधिकउचक व अपने मनसे तुच्छसमझ उसके हाथसे खड्गछीनलिया व बड़ा नादकिया ९ व उसकाही खड्ग उसकेबायें कांधेपर इस डौलसे मारा कि यज्ञोपवीत वत् उसके दो खण्डसे होगये अर्थात् बायांहाथ तो लुण्डमें लगारहा व दहिनाहाथ शिरकेसङ्ग औरभी अपनेनीचेके भागोंसहित अलगही मानों गिरा १० व फिर वही खड्गले व बारबार नादकर अङ्गदजी समरमें और शत्रुओंको मारनेदौड़े ११ तबतक शोणिताक्ष फिर चैतन्य होगया व लोह की गदा ले फिर अङ्गदजीके ऊपरको दौड़ा १२ व महाबली प्रजङ्घ भी यूपाक्षसहित गदा हाथमेंले वालितनयके ऊपरकोदौड़ा १३ व तिनदोनों शोणिताक्ष व प्रजङ्घके बीचमें अति बलवान् अङ्गदजी विशाखा नक्षत्रोंके बीचमेंस्थित पूर्णमासीकेचन्द्रमाके समान शोभितहुये १४ व अङ्गदजीकी रक्षा करनेके बिचारसे व अपना परस्पर बल देखनेकी इच्छासे मैन्द व द्विविद दोनोंभाई आय अङ्गदकेपास खड़ेहुये १५ व तब खड्गबाण गदा धारणकिये व महावीर्य्य महापराक्रमी वे तीनोंराक्षस तैयारहोकर अङ्गद के ऊपर गिरनेको आये १६ व तीनोंउन अङ्गद मैन्द द्विविद वानरेन्द्रों का शोणिताक्षप्रजङ्घ यूपाक्ष तीनराक्षसोंकेसंग महाभयङ्कर युद्धहोनेलगा १७ इनतीनों वानरोंने उनतीनों राक्षसोंके ऊपर वृक्षोंकी वर्षाकी परन्तु उनमेंसे प्रजङ्घ नाम महाबली राक्षसने खड्गसे सबवृक्षोंकोऊपरही काट डाला १८ तब इनलोगोंने वृक्षों व पर्ब्बतशृङ्गोंसे रथों व घोड़ोंको मारना चाहातो उनमेंसेमहाबली यूपाक्षने बाणसमूहोंसेसबवृक्ष व शृङ्गकाटडाले १९ व द्विविद व मैन्दके चलायेहुयेवृक्ष व पर्व्वत महावीर्य्यवान् व प्रतापवान् शोणिताक्षने गदासे बीचहीमें तोड़फोड़डाले २० तब बड़ावेगवान्

प्रजङ्घ बड़ाभारी खड्ग निकाल व ऊपरको उठाय वालिपुत्रकी ओर दौड़ा २१ उसको अपनेबनाय समीप आयादेख महाबलीवानरेन्द्र अंगदजीने असनाका वृक्षले उसके बड़ेजोरसे मारा २२ व जिसहाथमें वहराक्षस खड्ग लियेथा उसमें वालितनयने एकमूंका जोरसेमारा कि जिससे उसके हाथसे तलवार गिरपड़ी २३ उसखड्गको मुशलके समान भूमिमेंपतित देख महाबली उसराक्षसने मूंका उठाया २४ व महावीर्य्यवाले अंगद जीके ललाटमेंमारा उसके लगनसे अंगदजी मुहूर्त्त भरतक मूर्च्छितरहे २५ व फिर संज्ञापाय महातेजस्वीवालिपुत्रने मारा प्रजङ्घकाशिर काँधे परसे जाय अलगगिरा २६ जब उसकाचचा प्रजङ्घ समरमें मारागया तो यूपाक्षने बहुतरोदनकर रथसे उतर बाणलिया पर बाणतुरंतही काट डालेगये तो उसने खड्ग लिया २७ तिसयूपाक्षको खड्ग हाथमेंलिये सामने दौड़ा आतादेख द्विविदने बड़ीशीघ्रताके साथ क्रोधकर उसकी छातीमें एक मूंकामारा व फिर उसको पकड़भीलिया २८ तब महाबली शोणिताक्षने अपनेभाईको बँधुआदेख द्विविदकीछातीमें वेगसेमारा २९ उसके प्रहारसे द्विविद काँपउठे तबतक उसने फिर मारनेके लिये गदा उठाई परन्तु ऊपरको उठीहीहुई उसकीगदा द्विविदनेछीनली ३० इसी समयमें मैन्दभी द्विविदके समीपआये व शोणिताक्ष यूपाक्षनाम दोनोंरा-क्षसोंसे ये दोनों वानरश्रेष्ठ कुस्तीलड़नेलगे ३१ द्विविदने नखोंसे शोणि-ताक्षका मुख पकड़कर फारडाला व पकड़कर बड़ेजोरसे भूमिमें दबाकर पीसडाला ३२ व वानरोंमेंश्रेष्ठमैन्दनेक्रोधकर यूपाक्षको दोनोंबाहोंसेपकड़ पीड़ितकर जोरसे पृथ्वीपरदेमारा ३३ इसतरहये दोनोंभी मारेगये तब मालिकोंकेमारजानेसे राक्षसोंकीसेना व्यथितहो जहांकुम्भकर्णकापुत्रथा वहांकोभागकर चलीगई ३४ व बड़ेवेगसे भागी आतीहुई सेनादेखकुम्भ-कर्णके पुत्र कुम्भ ने सेनाको बहुत समझाया ३५ व वानरोंसे मारीहुई सेनाकोजान व देख महातेजस्वीकुंभनेरणमें बड़ादुष्कर कर्म्मकिया ३६ धनुर्द्धरोंमें श्रेष्ठ उस कुम्भनाम राक्षसने धनुषले सावधानहो देह बिदा-रण करनेवाले व बिषधर सर्पोंके समान बाण छोड़े ३७ उसका बाणों सहित धनुष बिजुली व ऐरावत सहित इन्द्रधनुषके समान शोभित हुआ ३८ कानतक खींच सुवर्णकी पोंक लगेहुये व पत्रकोही बस्त्र बनाये

शोभित होनेलगा १३ व उस परिघके लगने से महाकपि हनुमान्‌जी कुछभी न चलायमान हुये जैसेभूमि तलमें पवनके लगनेसे पर्ब्बतनहीं चलाय मानहोता १४ व उस परिघ के लगने पर महाबली हनुमान्‌ जीने बड़े बलसे मूकाबांधा १५ व उसको ऊपर को उठाय अतिवीर्य्य- वान् बेगवान्‌व वायुसम बिक्रमी हनुमान्‌जीने निकुम्भकी छातीमेंजोर सेमारा १६ उसके लगनेसे जहांलगा वहांका कवच टूटगया व रुधिर बहनेलगा व उस मूकाके लगनेसे उसके हाड़ोंसे चिनगारियां निकलीं जैसे मेघसे बिजुली निकलती है व दिखाई देतीहैं १७ उस प्रहार के लगनेसे निकुम्भ प्रथम तो बहुत कंपा परन्तु झट स्वस्थ होकर उसने महाबलवान् हनुमान्‌जीको दौड़कर पकड़ लिया १८ तब निकुम्भ के पकड़ेहुये महाबली हनुमान्‌जी को देख लंकानिवासी राक्षस लोग अ- पनी बिजयजान बड़ाशब्द करनेलगे १९ यद्यपि निकुम्भ इनको पकड़े लिये भी चलाजाताथा परन्तु पवन तनयने बज्र समान एकमूका फिर बड़े जोरसे निकुम्भके मारा २० व अपनाको उससे छुड़ाय झट पृथ्वी पर खड़े होगये व उसको पकड़ शीघ्रही पृथ्वी पर पटकदिया २१ व फिर बड़ाजोरकर ऊपरसे धरकर पीसदिया वबड़ेबेगसे ऊपरको उछल उसकी छातीपर कूदकर चढ़बैठे २२ व दोनोंहाथोंसे उसका शिर व ओंठ पकड़ उखाड़लिया यद्यपि उसने बड़ानाद किया परन्तु शिरतोड़ अलग बहादिया २३ इसतरह से जब हनुमान्‌जी ने निकुम्भ को मारडाला तो श्रीरामचन्द्र जी व राक्षसेन्द्र खरके पुत्र मकराक्षसे बड़ा युद्ध होनेलगा क्योंकि उसनेव रामचन्द्रजीने भी बड़ाभारी रोषकिया २४ ॥

भुजङ्गप्रयात ॥

मराजोनिकुम्भो सुखीह्वै कपीशा । कियो शब्दभारी प्रसन्नोमुनीशा ॥
फटीसीमहीऔचलोसोअकाशो । भयंराक्षसापाय लङ्कानिवासो ॥ २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेसप्तसप्ततितमस्सर्गः ७७ ॥

कुम्भ व निकुम्भ दोनोंको मारेहुये सुन इसबातको न सहकर रावण अग्निके समान जलउठा १ व क्रोध व शोकदोनोंके कारण मूर्च्छितहो-

गया फिर उसने खरकेपुत्र अति विशालाक्षमकराक्षको आज्ञादी २ कि हे पुत्र सेनासङ्कुले हमारीआज्ञासे तुमजाय वानरोंसहित रामचन्द्र व लक्ष्मणको मारडालो ३ रावणके ऐसेबचन सुन अपनाको शूरमानी अति ढीठेमकराक्षने कहा बहुतअच्छा अभी मारेआतेहैं ४ यहकह रावणके प्रणाम व प्रदक्षिणा कर महाबली मकराक्ष रावणकी आज्ञासे उत्तम उजलेगृहसे युद्धकरनेकेलिये निकला ५ व समीपही खड़ेहुये सेनाध्यक्ष से बोला कि हमारेलिये शीघ्रही तो रथलावो व सङ्गचलनेकेलिये सेना भी ६ तिसके बचनसुन सेनाध्यक्ष राक्षसने रथ व सेना सबउसके आगेलायें प्राप्तकरदी ७ तब रथके प्रदक्षिणाकर मकराक्ष रथपर असवार हो रथ हांकनेवालेसे बोला कि रथबहुत शीघ्रताकेसाथ हांको ८ फिर मकराक्ष अपनेसङ्गवाले राक्षसोंसे बोला कि प्रथमतो तुम सबलोगयुद्ध करो ९ फिरहम युद्धकरेंगे क्योंकि राक्षसराजने हमको केवल रामचन्द्र व लक्ष्मणही को मारनेकी आज्ञादीहै १० इससे हे निशाचरो आजहम रामचन्द्र व लक्ष्मण दोनोंजनों को मारडालेंगे व वानरराज सुग्रीवको भी व अन्य वानरोंको भी पीछसेमारेंगे ११ आजशूलके निपातोंसे वानरोंकी बड़ीभारी सेनाको ऐसा भस्मकरेंगे जैसे अग्नि सूखे ईंधनको १२ मकराक्षके बचनसुन बड़े बलवान् निशाचरलोग नानाप्रकारके आयुध लिये सब सावधानहुये १३ व यथेच्छा रूपधारी शूरबीर बड़े बड़े दांत काढ़े कञ्जीआंखेंलिये वे सबराक्षस हाथियों के समान गर्ज्जने व बाल फटकारने लगे १४ बड़े बड़े शरीरवाले राक्षस बड़े भारी शरीरवाले मकराक्षको चारोंओरसे घेरेहुये हर्षितहो पृथ्वीको चलातेहुयेचले १५ उससमय शङ्ख व तुरुही नगारोंके हज़ारोंका व बीरोंके ताल देनेका बड़ा भारी शब्दहुआ १६ व सारथिके हाथसे कोड़ा अलग गिरा व मकराक्ष के रथकाध्वज जायअलग भूमिपर गिरा १७ व उसके रथकेघोड़े बिलकुल बिक्रम रहितहो दीनमुखहो धीरे धीरे चरण धरते व नेत्रोंसे आंशु बहाते चलेजाते १८ व उसके सामने धूलिसहित तीक्ष्णपवन बहनेलगा जब दुष्ट मकराक्ष ने यात्रा की तो ये सब अशकुन हुये १९ इसतरहके अशकुन देखकर भी बड़े पराक्रमी राक्षसलोग उनकी ओर ख्याल न करतेहुये जहां रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी थे वहांको चलेहीगये २० ॥

तुम्हारा अद्भुतयुद्ध सबप्राणीदेखेंजैसे इंद्र व महादेवजीकायुद्धदेखाथा७६
तुमने जो इन भीमविक्रमी अंगद जाम्बवान् सुषेण बेगदर्शी आदि वा-
नरोंको भी मारकर मूर्च्छितकरदिया तो बड़ाभारी दुष्कर कर्म्मकिया
जिसके समान अन्यराक्षस नहींकरसक्ता व युद्धमें कुशलताभी तुम्हारी
इससे बिशेष दिखाईदी ७७ व जिससेकि तुमने बहुतोंकेसङ्ग युद्धकियाहै
व इससे थकउठे थे इससे हमने बीर्य्य कर तुमको नहींमारा कि लोग
हमारी निन्दाकरेंगे कि थकेहुये कुम्भको सुग्रीवने बहुत वानरोंके साथ
जाकर मारारहा अबसो तो सुस्ताचुके हो इससे हमारा बलदेखो ७८
इसनिन्दायुक्त सुग्रीवके बचनसे मानपानेसे घृतहुतहुये अग्निकेसमान
कुम्भका तेजबढ़ा ७६ व कूदकर कुम्भ ने दोनोंहाथों से सुग्रीवको झट
पकड़लिया तब ऊधी साँसलेतेहुये मदान्ध हाथियोंके समानदोनों ८०
लपटकर एकदूसरेको खींचनेलगा व मारेपरिश्रमके धुंआँ सहितज्वाला
दोनोंके मुखोंसे निकलनेलगी ८१ तिनदोनोंकेपादोंकी धमकसे पृथ्वी
नीचेको कुछचलीगई व समुद्रमें बड़े बड़े तरङ्ग उठनेलगे व बड़े ज़ोरसे
शब्दहोनेलगा ८२ इसतरह कुश्ती होते होते सुग्रीव ने बड़े ज़ोर से
कुम्भको उठाय समुद्रमें ऐसाफेंकदिया कि वह बताय नीचेतकजाय भू-
मिमेंछूगया ८३ व कुम्भके गिरनेसे समुद्र उफलायउठा व बिन्ध्याचल
व मन्दराचलके समान ऊँचेको जलउमँड़ा व सबओर पसरगया ८४
तब बड़ीदेरकेपीछे कुम्भसमुद्रसे उतराना व आयक्रोधकर सुग्रीवजीकी
छातीमें बज्रसमान एकमूका मारा ८५ उसके लगनेसे सुग्रीवजीका क-
वच टूटफूटगया व रुधिरबहनेलगा व उसमहावेगसे चलेहुये मूकानेजाय
छातीके हाड़तोड़डाले ८६ तिसके बेगसे हाड़ोंसे ज्वालानिकली जैसे बज्र
के लगनेसे सुमेरु पर्ब्बतसे ज्वाला निकलीथी ८७ उसमूकाके लगने पर
वानरोंके राजा सुग्रीव जी ने बज्रसमान अपना मूका अजमाया ८८ व
सहस्र सूर्य्यके किरणोंके समान प्रकाशित मूका तान कर कुम्भकी बीच
छातीमें मारा ८६ उसके लगनेसे बिह्वलहो कुम्भ लपकरहित अग्निके
समान पीड़ित व मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़ा ६० वह राक्षस मूकाके
लगनेपर गिरने के समय अपने आप आकाश से गिरेहुये मङ्गलग्रह के
समान शोभितहुआ ६१ व मूकालगनेसे छाती फटेहुये कुम्भके गिरने पर

का रूप महादेवके मारनेसे गिरेहुये सूर्य्यकेसमान शोभितहुआ ६२ ॥

दोहा ॥

कीशाधिप सुग्रीवकर निहत कुम्भ यहि काल ।
बन पर्ब्बतयुत क्षिति चली राक्षस अधिक बिहाल १ । ६३

इत्यार्षे रामायणेलंकाकाण्डेषटसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७६ ॥

सुग्रीवकेमारे हुये अपनेभाई कुम्भको देख निकुंभने बड़ेकोपकेसाथ सुग्रीवको ओर जोरसे देखा १ व फूलकी मालासे बँधा व पांचअंगुलके चौड़ेबन्दसे बँधाहुआ सुन्दर पर्ब्बताकार परिघ उसबीरने लिया २ वह सुवर्णके बंदोंसे बँधा व हीरा मूँगाजड़ा यमराजके दण्डकेसमान व राक्षसों के भयकानाशक था ३ इन्द्रके ध्वजके समान तेजस्वी उस परिघ को महातेजस्वी व महाभीम पराक्रमी कुम्भने उठाय व तोल मुंहबाय बड़ानाद किया ४ उससमय छातीमें निष्कनाम भूषण धारण किये व भुजोंमें बहूंटा बांधे व सुन्दर कुण्डल पहिने व बिचित्रमाला पहिने ५ निकुम्भ तिन भूषणोंसे व परिघसे ऐसा शोभित हुआ कि जैसेइन्द्र धनुष बिजुली व गर्ज्जनो सहित मेघ शोभित होता है ६ उसके परिघके अग्रभाग से आवह प्रवह आदि सातपवन की गांठें फूटगईं व शब्दसहित वह परिघ निर्धूम अग्निके समान शोभित हुआ ७ अलका पुरी सहित व गन्धर्बोंके उत्तम उत्तम भवनों सहित व अमरावती सहित व अन्यसब मन्दिर सहित ८ व तारा नक्षत्रादि सहित चन्द्रमा व अन्य ग्रह सहित आकाश निकुंभके परिघसे घूमउठा ६ परिघ के भूषणों से प्रकाशित अति प्रचण्ड क्रोधरूप इन्धन सहित निकुम्भ रूप अग्नियुगान्त के अग्निहीके समान उठा १० जिसके सम्मुख राक्षस व बानर कोईभीन खड़े होसके व न मारेभयके कहींको भागही सके परन्तु छाती फैलाय हनुमान् महाबली सामने टिकेही रहे ११ परिघसमान बाहु वाले महाबली निकुम्भने अति बलवान हनुमान् जीकी छातीमें सूर्य्यवत् प्रकाशित परिघ मारा १२ परन्तु बड़ी भारी व बज्रवत् पुष्ट हनुमानूजीकी छातीमें लगनेसे परिघके सौटुकड़े होगये व वह रत्ती रत्ती पृथ्वीमें बिथरगया जैसेकि आकाशमें सौ उल्का शोभित हों उसीतरह

दोहा ॥

मेघदन्ति महिपाङ्ग रँग समर कटे सब अङ्ग ।
हमहम आगे लंड़ब्रइमि कहत निशाचर वङ्ग १ । २१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टसप्ततितमस्सर्गः ॥ ७८ ॥

मकराक्ष को आयेहुयेदेख सब वानरश्रेष्ठ कूदकर युद्ध करनेकेलिये तैयारहुये १ व राक्षसों व वानरोंसे बड़ाभारी युद्धहोनेलगा जैसे आगे देवताओं व दैत्योंसेहुआथा २ वानर व राक्षस परस्पर वृक्ष शिला शूल परिघआदिसे युद्धकरनेलगे वानर राक्षसोंको व राक्षस वानरोंको मारनेलगे ३ शक्ति खड्ग गदा भाला साँग पट्टिश भिन्दिपाल व वाणोंसे तो सबओरसे राक्षसलोग वानरोंको मारनेलगे ४ व फिर पाश मुद्गर दण्ड आदि वरायुधोंसेभी मारनेलगे यहांतक कि हज़ारों वानरोंको उन्होंने मारडाला ५ व वाणसमूहसे खरकेपुत्र मकराक्षने वानरोंको ऐसामारा कि पीड़ितहोकर वानरलोग भागखड़ेहुये ६ तिन वानरोंको भागतेहुये देख सब राक्षसलोग ढिठाई के मारे व अपनी जीतहोनेसे बड़े हर्षकेसाथ नादकरनेलगे ७ वानरोंको भागतेहुयेदेख व उनकेपीछे पीछे राक्षसोंको दौड़ेआतेभीदेख श्रीरामचन्द्रजीने वाणोंकी वर्षासे सब राक्षसोंको रोंकदिया ८ व राक्षसोंको रोंकदियेहुयेदेख मकराक्ष निशाचर कोपकर श्रीरामचंद्रजीसे बोला ९ कि हेरामचन्द्र खड़ेरहो हमारा तुम्हारा द्वन्द्वयुद्ध होगा व उसमें अपने धनुषसे छूटेहुये वाणोंसे तुम्हारे प्राण हरलेंगे १० व जोकि दण्डकारण्यमें हमारे पिता खरको तुमने मारडाला है व फिर राक्षसोंके मारनेहीपर उतारूहो तुमको इसकर्म्म पर कमर बांधे स्मरणकर हमको बड़ा क्रोध आता है बरन कोप बढ़ता जाताहै ११ हे दुष्ट राम हमारे अंग अत्यन्त जलेजातेहैं सो कुशल यह हुई कि उससमय हमारी दृष्टिके सामने तुम नहीं पड़ेथे १२ परन्तु बड़े भाग्यकी बातहै जोअबभी तुम हमारी दृष्टिमेंपड़ेहो वह तुम्हारा हमारी दृष्टिमें पड़ना ऐसाहै जैसे भूखासिंह बैठाकहीं भोजनकी इच्छा कररहा हो व उसकेसामने कोई छोटासा मृग आजावे १३ आजहमारे वाणोंके बेगसे मारेहुये तुम यमराजके देशकोजाय उनलोगोंकेसाथ बसोगे जि-

नको कि तुमने पूर्व्वसमयमें माराहै १४ हेराम अबबहुत कहनेसे क्याहै हमको व तुमको समरमें आयेहुये सबलोगदेखें व तुम इसबातकोसुनो १५ कि चाहेअस्त्रोंसे वा गदासे वा बाहोंसे समरमें जिसकाममें तुमको अच्छा अभ्यासहो हेराम उसी रीतिसे हमसे युद्धकरो १६ मकराक्ष के ऐसे बचनसुन महाराजाधिराज दशरथजीके पुत्र श्रीरामचन्द्रजी बहुत हँसकर आगे आगे कहते चलेजाते उससे बोले १७ हेराक्षस तू रणमें क्यों बहुतबकता चलाजाताहै अरेदुष्ट विनायुद्धकिये समरमें कोई केवल बातोंहीके बलसे नहीं जीतसक्ता १८ हां दण्डकारण्य में चौदहहजार राक्षसोंको व तेरेबापको व त्रिशिरा व दूषणको भी हमने जरूर माराहै १९ व अब हे पापतीक्ष्ण ठोंट व तीक्ष्णही नखवाले गृध्र शृगाल व काक तेरेमांससे अच्छीतरह अघायँगे २० जब रामचन्द्रजीने ऐसाकहा तो महाबली मकराक्ष समरभूमिमें रामचन्द्रजी के ऊपर बाणोंकी वर्षा करनेलगा २१ तिनवाणोंको श्रीरामचन्द्रजीने कई खण्डकर कर काट-डाले इससे गाँसी व फोंक कटेहुये सहस्रों बाण पृथ्वीपर गिरपड़े २२ वहयुद्ध परस्पर एकदूसरेके निकट बड़े पराक्रमके साथ भयकरहुआ इधरसे महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी लड़तेथे व उधरसे खरराक्षसका पुत्र मकराक्ष २३ धनुषोंकी पनचोंका जो शब्दहोताथा वहमानो दोमेघों का शब्दथा इसतरह धनुषोंसे उठाहुआशब्द दोनोंओरोंसे सुनाईदेता था २४ व वहअद्भुतयुद्ध देखनेकेलिये देवता दानव गन्धर्व्व किन्नर व नाग अन्तरिक्षमें प्राप्तहोकर आये २५ जिसके अङ्गोंमें घाव लगताथा उसके दूनाबल बढ़ताथा व जब एकदूसरेको मारताथा तो दूसराभी उसेउसी अङ्गमें मारताथा जिसअंगमें उसके घावलगाथा २६ रामचन्द्रजीके च-लाये बाणतो समरमें उसराक्षसने काटडाले व उसराक्षसके चलायेहुये बाणोंको रामचन्द्रजीने सहस्रोंखण्ड करडालाथा २७ यहांतक बाणकाटे गये कि उनसे सबदिशा पूर्णहोगईं व कोणभी सबभरहुये पृथ्वीभीसब मूंदगई व आकाशभी ऐसा भरगया कि उसका प्रकाशही जातारहा २८ तिसके पीछे महाबाहु श्रीरामचन्द्रजीने कोपकर उसका धनुष काटडाला व आठबाण उसके सारथिके मारे २९ व फिर बाणोंसे रथभी भिन्नकर दिया फिरघोड़ोंकोभी मारडाला इससे बिरथहो मकराक्ष भूमिमें खड़ा

होगया ३० भूमिमेंखड़ेहुये उसराक्षसने सब प्राणियोंको डरवानेवाला व युगान्त के अग्निके समान प्रकाशित शूल अपने हाथमें लिया ३१ यहशूल इसको बड़ी तपस्या करनेपर महादेवजीने दियाथा इससे बड़ा भयङ्कर आकाशमें ऐसा प्रकाशितथा मानों दूसरा संहार करनेहीका अस्त्रथा जिसको देख सब देवतालोग मारेभयके पीड़ितहो सब दिशों को भाग गयेथे ३२ सो ऐसाशूल बड़ेज़ोर से घुमाय उस राक्षसने बड़े क्रोधसे महात्मा श्रीरामचन्द्रजीके ऊपर चलाया ३३ परंतु खरपुत्र के हाथसे छूटेहुये व प्रज्वलित उसशूलको अपनेऊपर गिरतेदेख श्रीराम-चन्द्रजीने चारबाणोंसे आकाशहीमें काटडाला ३४ तब रामचन्द्रजी के बाणोंसे कटाहुआ व कटकर सैकरों खण्डहोगया हुआ वह शूल उलका के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा ३५ सरलकर्मकारी श्रीरामचन्द्रजीने जब सहजहीमें वहशूल काटडाला तो आकाशमें टिकेहुये युद्धदेखतेहुये देव-ता ऋषि गन्धर्व किन्नरादिलोग बहुतअच्छा बहुतअच्छा कहनेलगे ३६ शूल को कटाहुआ देख मकराक्ष निशाचर मुक्काउठाय खड़ेरहो खड़े रहो ऐसा कहताहुआ श्रीरामचन्द्रजीके ऊपरकोदौड़ा ३७ तिसको दौड़ाआता देख श्रीरामचन्द्रजीने हँसकर अपने धनुषपर अग्निबाण चढ़ाया ३८ व उसीसे उस राक्षसको मारा कि जिससे हृदयकटकर वहराक्षस पृथ्वीपर गिरपड़ा व मरभीगया ३९ मकराक्षको इसतरहसे माराहुआदेख राम-चन्द्रजीके बाणोंसे पीड़ित औरसब राक्षसलोग लङ्काकोभागगये ४० ॥

भुजंगप्रयात ॥

महाराजश्रीरामजी बाणलागे । मरोहै खरीसूनु दैवानुरागे ॥
[illegible]भे सबै लोगजो दुःखपावा । यथावज्रपातेन भूभृन्नशावा ४१

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये लङ्काकाण्डे एकोनाशीतितमस्सर्गः ७९ ॥

[illegible]मकराक्षको माराहुआ सुन समरविजयी रावण बड़े रोपसे युक्तहो व दांत [illegible]य १ बड़ाक्रुद्धहुआ कि अब क्याकरना चाहिये यहशोच फिर कोप कर युद्धकरने के लिये अपनेपुत्र मेघनादको आज्ञादी २ कि हेवीर तुम महा वीर्य्यवाले दोनों भाईरामचन्द्र व लक्ष्मण को मारडालो चाहे उनको सम्मनेहोकर युद्धकरना वा अदृश्यहोकर परन्तु तुम्हारे सब

तरहसे उनसे अधिकबलहै ३ तुमनेतो अप्रतिमकर्म्म करनेवाले इन्द्रको समरमें पराजित करदिया फिरइन दोनों मनुष्यरूप धारण किये रामचन्द्रजी व लक्ष्मणको समरमें पाय क्यों न मारसकोगे ४ अब इसतरह राक्षसेन्द्रनेकहा तो पिताके वचन ग्रहणकर मेघनादनेयज्ञभूमिमें विधिपूर्वक अग्निका आवाहनकिया व आहुतिदेनेलगा ५ मेघनाद जैसे आहुति देनेलगा कि लालवस्त्रलिये राक्षसी स्त्रियां आयगईं ६ ये लाल वस्त्रतो ऋत्विजोंके धारण करनेके लिये हुये व शस्त्रजो उसने वहां बिछाये वही शरपतकेतुल्यहोगये व समिधबहाराकीलकड़ियोंका बनाथा व सबलोगों ने अरुणरंगकेवस्त्र धारणकिये व कालेलोहका श्रुवबनाया ७ व भालोंको शरपत बनाय उसकेऊपर अग्निधर व बारजीतहुये कालेछागका गला पकड़ा ८ व उसीअग्निमें हनदिया तबउस अग्निसे धुआंका निकलना बन्दहोगया व सुंदरलपक उठनेलगी ये सबचिह्न बिजय सूचक हुये ९ व अग्निकी शिखा दहिनीओरको घूमने लगी व वह शिखा तपाये हुये सुवर्णके समान निर्म्मल व चमकतीथी व अग्निने आप उठकर हविग्रहणकिया १० इस तरह अग्निमें आहुतिदे फिर देवता दानव राक्षसों का तर्प्पण कर अन्तर्द्धान होकर चलनेके योग्य सुन्दर रथपर वहचढ़ा ११ वहरथ चारघोड़ोंके जुतनेवबिबिध प्रकारके बाणोंसे संयुक्त होनेसे व बड़े धनुषके धरनेसे शोभित होनेलगा १२ व सुवर्णके बहार पड़ने से सब ओरसे चमकताहुआ व सबतरहके मृग व चन्द्र अर्द्धचन्द्रोंसे बना हुआ रथ सबतरह से भूपितहुआ १३ व सुवर्णका तो उस रथपर बड़ा भारी शंख धरागया जोकि दीप्त अग्निके समान प्रज्वलित था व मेघनादका ध्वज बैदूर्य्यमणि से भूषितहुआ १४ व उससूर्य्यसम प्रकाशित ब्रह्मास्त्र से पालित महाबलवान् मेघनाद ऐसेही प्रचण्ड था अब और भी दुराधर्ष होगया १५ वह इन्द्रजित् राक्षसीमंत्रों से अग्निमें आहुति दे नगरसे निकला व बाहर निकलतेही अन्तर्द्धान होगया १६ व बोला कि येजो दोनोंभाई मिथ्या बनको निकाले गयेहैं इनको रणमेंमार समरमें बटोरी हुई बिजय लेकर अपने पिताको देऊंगा १७ आज पृथ्वी को बानर रहित करदूंगा व रामचन्द्र व लक्ष्मण को भी मार डालूंगा इससे सबको प्रसन्न कराऊंगा इतनाकह वहझट अन्तर्द्धान होगया १८

व रावणकी आज्ञासे इन्द्रकाशत्रु मेघनाद क्रोधकर बड़ी शीघ्रताके साथ चला व तीक्ष्ण धनुषबाण उसने हाथमें लिया १६ व जाते जाते तीन शिरके नागोंके समान महावीर्य्य श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको बानरोंके बीचमें खड़े बाणोंकी वर्षा करतेहुये देखा २० व जाना कि ये वही दोनोंभाई हैं इससे धनुषपर उसने रोदा चढ़ाया व बाणोंकी वर्षाकरने लगा जैसे मेघजलकी झर लगातेहैं २१ व आकाशमें अपना रथ खड़ाकर समरमें खड़े हुये रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी के ऊपर आप गुप्तरूप होकर बाणोंकी वर्षा करनेलगा २२ व तिसके बाणसमूह से रामचन्द्र व लक्ष्मणजी दोनोंभाई घेरमें पड़गये व धनुषोंपर बाण चढ़ाये वे भी मारनेलगे २३ यहांतक कि उनदोनों महाबलोंने बाणों से आकाश को मूंदलिया पर बाणोंसे मेघनादको न स्पर्शकरासके क्योंकि वहतो अन्तर्द्धान था २४ फिर मेघनादने धुआंका अन्धकार छोड़ा जिससे सबदिशा आच्छादित होगईं व सबदिशाभी अँधियारी से ढँकगईं २५ इस तरह गुप्त होकर मेघनाद बाणवृष्टि करता था कि न तो प्रत्यञ्चा का शब्द सुनाई देताथा व न उसके रथके पहियोंका तीक्ष्ण शब्द सुनाई देता व चलनेहुये उसका शब्दभी सुनाई नहींदेता था २६ जैसे मेघोंकी अँधियारी में शिलाकी वृष्टिहो व कोई न जाने इसीतरह बाणों व नाराचों की वृष्टि गुप्त होकर करनेलगा २७ बरदानसे पायेहुये बाणोंसे उसने रामचन्द्र जीके सब अंगोंमेंमारे २८ जब इसतरह दोनों भाई बाणों से पीड़ित हुये तो बाणोंकी वर्षा करनेलगे जैसे मेघ जलकी वर्षा करते हैं २९ अन्तरिक्ष में खड़ेहुये मेघनादको रामचन्द्रजीके बाणोंने काटा व फिर रुधिरमें डूबकर पृथ्वीपर गिरपड़े ३० व इनदोनों भाइयोंकेअङ्गों मेंभी बाणलगे परन्तु बाणों की भालोंसे रामचन्द्रजी ने काटडाला ३१ जिसओरसे बाणआते देखतेथे उसीओर ताककर दोनोंभाई बाणचलाते ३२ व मेघनाद घूमघूम सब दिशोंमेंहोकर देखदेख रामचन्द्र व लक्ष्मणजीके बाणमारता था व ये दोनोंजन जानों उसको देखतेही न थे ३३ उसके दारुण बाणलगनेके कारण दोनों महाराजकुमार फूलेहुये पलाश के से वृक्षोंकेसमान शोभितहोतेथे ३४ न तो कोई उससमय मेघनादकी चालदेखताथा न उसकारूप देखताथा न धनुष न बाण उसका कोई भी

पदार्थ किसीको न विदितहुआ जैसे बड़ेघोर बादरमें छिपजाने से सूर्यका रूपादि नहींविदितहोता ३५ व तिसने वानरोंकोभी बहुतमारा जिससे वे निश्चेष्टहोकर पृथ्वीपरगिरपड़े ३६ तबलक्ष्मणजी क्रोधकर अपने भाईसेबोले कि हम ब्रह्मास्त्र चलावेंगे जिससे पृथ्वीभरमें जितने राक्षसहैं सबकेसब मृतकहोजावें ३७ यहसुन श्रीरामचन्द्रजी शुभलक्षणवाले लक्ष्मणजीसे बोले कि एकमेघनादके कारण पृथ्वीभरके राक्षसोंको मारडालने के योग्य आपनहीं हैं ३८ क्योंकि जो तुमसे युद्ध न करताहो व जो अदृश्यमानहो व जो हाथजोड़ शरणागत हुआहो व जो देखकर भगाजाताहो व जो मदान्ध व विक्षिप्तहो इनलोगोंको तुमकभी न मारना ३९ हे महाभुज हम तिसदुष्टके वधका यत्नकरेंगे व दोनोंजने विषधर सर्पोंके समान बाण उसके ऊपरको छोड़ेंगे ४० तब गुप्तरथ कियेहुये उसक्षुद्र मायावीकोदेख वानरलोग खुद मारडालेंगे अभी तो दिखाईनहींदेता ४१ चाहे वह दुष्ट भूमिमें पैठजावेगा वा स्वर्गको चलाजावेगा वा रसातलको वा आकाशको चलाजावेगा इनस्थानोंमें भी जाकर गुप्तहोगा तो भी हमारे अस्त्रसे जलकर निर्जीवहो पृथ्वीपर ज़रूर गिरेगा ४२ इसतरह कह महात्मा श्रीरामचन्द्र जी वानरों केसङ्ग खड़े हुये उसदुष्ट मूर्ख व भयङ्कर मेघनाद के वधका उपाय सबओर निहारनेलगे ४३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽशीतितमस्सर्गः ॥ ८० ॥

महात्मा रामचन्द्रजीके मनका हालजान समरसे निवृत्तहोकर मेघनाद अपने पुरकोचलागया १ परंतु पुरमें पहुँच मेघनादने जानाकि बिनाहमारे वहाँबिचारे राक्षस मारडालेजावेंगे इससे फिर क्रोधकेमारे मंत्र लालकर समरभूमि में चलाआया २ रावणका पुत्र मेघनाद बहुत राक्षसोंको सङ्गलेकर पश्चिमवाले फाटककी ओरकोनिकला ३ व देखा तो रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी दोनोंभाई रणकरनेपर तैयारखड़ेथे इससे प्रत्यक्षमें इनसे जीतना कठिनदेख दुष्टइंद्रजित् ने माया उत्पन्नकी ४ क्याकिया कि मायाकी सीताबनाय रथपरचढ़ाय व बड़ीराक्षसोंकीसेना सङ्गलेआय सीताकावध सबको दिखानेलगा ५ दुष्टने यहदुर्म्मति सबके

मोहनेके अर्थकीथी व सीता के मारनेकेलिये बानरों के सामने चला ६ तिसको सामने आतेदेख सब वानर लोग शिला इत्यादि आयुध ले क्रोधकर युद्धकरने की इच्छासे आय उसके ऊपरदौड़े ७ उन बानरोंमें कुञ्जररूप हनुमान्‌जी सबसे आगेथे इससे पर्व्वतका बड़ाभारी शृङ्ग उखाड़ ८ चलानेका विचार कियाथा कि उन्होंने आनन्दरहित सीताजीको मेघनादकेरथपर बैठीदेखा जोकि एकवेणी धारणकियेदीनरूप व उपास करनेसे दुर्बल मुखवाली होरहीथीं ९ व एक मलिन वस्त्रधारण किये व बिना स्नानकिये रामचन्द्रजीकी प्रिया सीताजीको धूलि व मैलसेलिप्त सबगात्र यद्यपि सर्वस्त्रियोंमें श्रेष्ठथीं तथापि बँधोईके कारण ऐसारूप था १० तिन मैथिलीजी को देख हनुमान्‌जी उनके रूपके बीचमेंजानों लीनहोसे होगये क्योंकि बहुत दिनोंके पीछे देखने को पायाथा ११ आनन्दरहित तपस्विनी व शोकके मारे दुःखित मेघनादके बशमें पड़ीहुई सीताजीको देख हनुमान्‌जी वानरोंसे बोले १२ इस इन्द्रजित्‌का क्या विचारहै जो जानकीजीको ऐसी दुःखित अपनेरथपर बैठायेहै यह विचारतेहुये हनुमानजी सबवानरोंको संगलिये मेघनादकी ओरदौड़े १३ बानरोंकीसेना अपने ऊपरको दौड़ी आतीदेख मारेक्रोधके मूर्च्छितहो मेघनादने नंगीतलवारकर सीताके शिरपर धरकर खींचलिया १४ व तिनवानरों के देखतेही देखते उसस्त्रीको जिसको कि सीता बनायेथा उसने बड़ेजोरसे ताड़ितकिया व वह राम राम कहकर रोदन करने लगी तो उसेपकड़ झिझकोर रथपरबैठाया १५ व उसकेबाल पकड़कर खींचा ऐसी दुर्दशाकोप्राप्त सीताकोदेख हनुमान्‌जीके मनमें बड़ीदीनता आयगई इससे दुःखकेआँशु नेत्रोंसे छोड़तेहुये १६ तिनशोभन अंगयुक्त श्रीरामचन्द्रजीकी पट्टराज्ञी सीताजीको देख बड़ेक्रोधसे रावणके पुत्र मेघनादसे बोले १७ हेदुष्टात्मन् जो सीताजीके शिरकेबाल तूनेपकड़े हैं तो अपने नाशहीकेलिये और किसी कामकेलियेनहीं अरे तू ब्रह्मर्षियों के कुलमें उत्पन्नहोकर राक्षसीयोनि कासाकार्य्य करनेलगाहै जो ऐसा करताहै १८ तुझपापीको धिक्कारहै जिसकीमति इसतरहकीहै हेमूर्ख हेअनारी हेदुराचारी हेनीचपराक्रम यहक्याकरताहै १९ हेनिर्दय भला तुच्छकासा कर्म्मकरताहै तुझको दयानहींआती देखो जानकीजी एक तो

राज्यसे च्युतहुई फिर घरसे फिर रामचन्द्रजी के हाथसे भला इन्होंने तेराकौन अपराधकिया जो इनको मारेडालताहै हेनिर्दय २० परन्तु सीताको मारकर किसीतरहसे बहुत दिनोंतक न जीतारहेगा क्योंकि हमारे नजरके सामने ऐसाकाम करताहै तेरावध हमारेही हाथमेंहै २१ जो स्त्रीघाती पुरुषोंको लोक मिलते हैं वही तुझदुष्टको मरनेपर मिलेंगे २२ यहकह सबवानरों सहित हनुमान्जी क्रोधकर राक्षसेन्द्रके पुत्रके सामने दौड़े २३ इनवानरोंकी बड़ीभारी सेनाको अपने सामने दौड़ी आतीदेख बड़े कोपकरनेवाले राक्षसोंकी सेनासे उनको लौटवाया २४ व सहस्त्रों बाणोंसे उस वानरसेनाको लौटाय वानरश्रेष्ठ हनुमान्जीसे मेघनाद बोला २५ कि सुग्रीव रामचन्द्र व तुम जिस जानकीकेलिये यहांआयेहो तिसको तुम्हारे देखतेही देखते हम मारेडालते हैं २६ इस को मार फिर राम लक्ष्मण व तुमको व सुग्रीवको मारेंगे फिर उस दुष्ट बिभीषण को मारेंगे २७ हेवानर जो तुम कहते हो कि स्त्रियां अबध्यहोती हैं सो राजनीति के अनुसार अमित्रों को जो कर्म्मकरने से पीड़ा पहुंचे वह करनाही चाहिये उसके करनेमें पाप नहींहोता २८ हनुमान्जीसे ऐसाकह रोदन करतीहुई माया की सीताका शिर तीक्ष्ण धारवालेखड्गसे मेघनादने खुदअपने हाथसेकाटडाला २९ यज्ञोपवीत के मार्ग्गसे मरीहुई तपस्विनी सीताजी पृथ्वीपर गिरपड़ीं ३० तिस मायाकीस्त्रीको मार मेघनाद हनुमान्जी से बोला ३१ कि हमारी मारी हुई रामचन्द्र की प्रिया बैदेहीजी को देखो ये बैदेही अब मारगई तुम लोगोंका परिश्रम अब वृथाहै ३२ खड्गसे तिसकोमार मेघनादहर्षित होकर अपनेरथपर चढ़ाहुआ बहुतगर्ज्जा ३३ व उसकेनिकटही स्थित वानरलोगोंने मुखबाये गर्ज्जतेहुये मेघनादका शब्द अच्छीतरहसे सुना ३४ दुष्टमति मेघनाद मायाकी सीताको मार अतिप्रसन्न चित्त हुआ व तिसको हर्षितदेख वानरलोगबहुत उदासीनहोकर भागखड़ेहुये ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेएकाशीतितमस्सर्ग्गः ॥ ८१ ॥

इन्द्रके वज्रके शब्दके समान मेघनादका बड़ाभयङ्कर शब्दसुन सब दिशोंकीओर देखतेहुये वानर भाग खड़ेहुये १ तिन भागेहुये उदासीन

मुख.वानरोंसे मारुतात्मज श्रीहनुमानूजी बोले २ हेवानरो उदासीन क्यों हो राक्षसोंकी ओर दौड़ो भलायुद्धका उत्साह तुम लोगोंने कैसे छोड़दिया तुमलोगोंकी शूरता कहां चलीगई ३ समरमें आगे आगे चलतेहुये हमारे पीछे पीछे तुमलोग चलेचलो जब धीमान् हनुमानूजीने ऐसाकहा तो सब वानर हर्षित मुखहोकर ४ पर्व्वत शृङ्ग व वृक्ष प्रसन्न मुखहो सबोंनेलिये व गर्ज्जतेहुये सबवानर राक्षसोंके सामनेदौड़े ५ व हनुमानूजीके अगल बगल सब समरकरनेको धाये व हनुमानूजी उन वानरोंके बीचमें चलतेहुये अग्निके समान शत्रुसेनाको नाशनेलगे ६ व वानरोंकी सेना सङ्गलिये हनुमानूजी ने बहुतसे राक्षसोंका नाशकरदिया जैसे कालान्तक प्रजाओंका नाशकरता है ७ व हनुमानूजी ने बड़ाशोक व महाकोपकर मेघनादके रथपर एक बड़ीभारी शिलाचलाई ८ परन्तु उस शिलाको आतीहुई देख सारथिने अपने आज्ञाकारी घोड़ोंको ऐसा हांका किजाय रथचलता होरहा ९ व वह शिला रथपर चढ़हुये मेघनाद व सारथिसहित रथको न पाय धरणीको फोड़ वृथाहो रसातलको चली गई १० परन्तु जबयह शिलागिरी तबराक्षसोंकी सेनाबहुत व्यथितहुई क्योंकि जबवह गिरकर पातालको चलीथी तब उसने बहुतसे राक्षसों को चूर्णीभूत करदिया था ११ शिलातो इसतरह चलीगई व वानरलोग वृक्ष पर्व्वतादि ले लेकर मेघनादके सामने दौड़े १२ व भीम बिक्रमी वानरलोग इन्द्रजितकी सेनापर वृक्ष पर्व्वत शिखर शृङ्गादि बरसाने लगे यहांतक कि बहुतसे शत्रुओंकी सेनामार उन्होंने विविधप्रकार के शब्दों से नादकिया १३ वानरोंने वृक्षोंसे ऐसे बीर्य्यकेसाथ राक्षसों को मारा जिसमें वे पृथ्वीपर छिन्नभिन्न होकर लौटनेलगे १४ मेघनाद अपनीसेना वानरोंसे अर्द्दितदेख आयुधले व क्रोधकर शत्रुओंके सामने दौड़ा १५ व अपनी सेनाकेबीचमें खड़ेहोकर उसने बड़ीबाणोंकी बर्षाकी जिस से बहुतसे वानर मृतकहोगये १६ व शूल बज्र खड्ग व पट्टिश कूट मुद्गरादिकों से बानरोंने भी मेघनादके अनुचर बहुतसे राक्षसोंको मारा १७ व महाबली हनुमानूजी ने भी जड़ मूड़सहित वृक्षों व शिलाओंसे भीमकर्म्म करनेवाले बहुत से राक्षसोंका नाश करदिया १८ व राक्षसोंकी सेनाको उसीजगह पररोंक महाबली हनुमानूजी वानरों

सेबोले हेवानरो अबआवो लौटचलें क्योंकि यह राक्षसोंकी सेनाइस समय हमारे मारनेके योग्यनहीं है १९ क्योंकि जिससीताजीके कारण रामचन्द्रजीका प्रिय करनेकी इच्छासे विविध प्रकारकी चेष्टा हमलोगों नेकी व युद्धभी बड़े बड़े किये परन्तु वेजानकीजीतो मारही डाली गईं इससे युद्धकरनावृथा है २० इससे अबयह प्रयोजन चलो रामचन्द्रजी व सुग्रीवजीसे भी कहदें फिर जैसावे कहेंगे वैसाहमलोग करेंगे २१ यहकह हनुमान्‌जीने धीरे धीरे सब अपनी सेनाको युद्ध करनेसे रोंक दिया इससे सबआय उनके समीप खड़ीहुई व निर्भयहो धीरेधीरेलौट खड़ीहुई २२ जब इसतरह बिचार हनुमान्‌जी अपनी सेनालेकर लौट गये व उनको उसने जानाकि जहां रामचन्द्रजी हैं वहांको येजातेहैंतब वह दुष्ट मेघनाद होम करनेके लिले निकुम्भिलानाम देवालय कोगया २३ व वहांपहुंच इन्द्रजित अग्निमें आहुति देनेलगा जब यज्ञभूमिमें उस राक्षसने जाय २४ अग्निमें अच्छीतरह होम कियातो रुधिरमांस भोजन कर अग्निधधा कर बरउठा व उसकी ज्वाला रुधिर से मूंद गई इससे तर्प्पितहो अग्नि सन्ध्या समयके सूर्य्यके समान आप उठ खड़ाहुआ २५ व मेघनादने फिर राक्षसोंके ऐश्वर्य्य बढ़ने केलिये बिधि पूर्व्वक होमकिया क्योंकि वहआप सबबिधान जानताथा किसीसे पूंछने की भी आवश्यकता नथी वउसको हवन करते हुयेदेख समरमें कर्त्तव्य अकर्त्तव्य जाननेवाले राक्षस लोगभी उसी स्थानपर खड़ेरहे २६ ॥

इत्यार्षेरामयणेवाल्मीकियेलंकाकांडेयुग्माशीतितमस्सर्ग्गः॥ ८२ ॥

वयहां रामचन्द्रजी नेभी राक्षसों व वानरोंका बड़ाभारी संग्रामका शब्दसुन जाम्बवान् से कहाकि १ हेसौम्य यह निश्चय हैकि हनुमान् जीने दुष्कर कर्म्मकिया क्योंकि आयुधोंका बड़ाभीमनाद सुनाई देताहै २ तिससे हे ऋक्षेश शीघ्रही अपनीसेना सहित वहांजावो व युद्धकरते हुये हनुमान् की सहायता करो ३ यहसुन बहुतअच्छा ऐसाकह जाम्बवान् जी अपनी सेनासङ्ग ले जिस पश्चिमके फाटकपर हनुमान्‌जी युद्ध करतेथे वहांको चले ४ परन्तु संग्राम कियेहुये जोरसे सांसें लेतेहुयेवानरोंको सङ्गलिये हनुमान्‌जीको मार्ग्गहीमें देखा ५ व हनुमान्‌जी ने

भी काले बादरोंके समान कालेऋक्षोंकी सेना युद्धकरनेपर तैयार आती देख दूरहीसे रोंका कि जिससे सेनाखड़ी होगई ६ व उस सेनाको व बानरोंकी सेनाको सङ्गलिये महायशस्वी हनुमान् जी दुःखित होकर श्रीरामचन्द्रजी से बोले ७ कि समरमें युद्धकरतेहुये हमलोगोंके सामने मेघनाद ने रोदन करतीहुई सीताजीको मारडाला ८ हे शत्रुसूदन तिन को हम इस दशाको प्राप्तदेख उद्भ्रान्त चित्तहो व बनाय दुःखी हो आप से यह वृत्तान्त कहनेके लिये यहांआयेहैं ९ तिसके ऐसे बचन सुन मारे शोकके मूर्च्छितहो श्रीरामचन्द्रजी जड़कटे हुयेवृक्षके समान पृथ्वीपर गिरपड़े १० देवरूप श्रीरामचन्द्रजी को भूमिमें पतित देख सबवानर सब ओर से दौड़कर वहां आयगये ११ व मारे दुःखके जानो सबको भस्म करतेहीहुये रामचन्द्र जीके ऊपर सुगन्धित जलके छिष्पे मारने लगे १२ व अति दुःखित हो दोनों हाथोंसे पकड़रामचन्द्रजी को उठाय व मिलकर ब्याकुल रामचन्द्रजीसे हेतुयुक्त बचन लक्ष्मणजी बोले १३ किहेआर्य्यश्रीरामचन्द्रजीमहाजितेन्द्रियवशुभमार्गपर टिकेहुये आपको जो अनर्थोंसे धर्मरक्षा न करसका तो फिर धर्म्म निरर्थकही ठहरा १४ स्थावर जङ्गम महाभूत दिखाई देते हैं उस तरह धर्म्म प्रत्यक्ष में नहीं दिखाईदेता इससे हम निश्चयकरते हैं कि धर्म्म कहींनहींहै १५ जिस तरह स्थावर वृक्ष पर्ब्बतादि व जङ्गम मनुष्य पशु पक्ष्यादि जिसतरह दिखाईदेते वह अर्थ धर्म्ममेंनहींहै नहीं तो आप ऐसेलोगोंको विपत्ति न पड़ती १६ व यदि संसारमें धर्म्माधर्म्म दोनोंहैं तो अधर्म्म करनेसे रावण अवश्य नरकको जायगा व धर्म्मयुक्त आपको दुःख न होगा १७ व जो रावणको दुःख न हुआ सुखहीहुआ व आप को दुःखहुआ तो धर्म करनेसे अधर्म्म होताहोगा व अधर्म्म करनेसे धर्म्म इससे ये दोनों परस्पर विरोधरक्खेंगे १८ चाहिये तो ऐसा कि धर्म्मकरनेसे धर्म्ममिले व अधर्म्म करनेसे अधर्म्म तो जिन रावणादिकों में अधर्म्म टिकाहै वे जरूर अधर्म्मका फलपावेंगे १९ व अधर्म्म करनेवाले लोग धर्म्मफल कभी न पावेंगे व धर्म्मपर चलनेवाले पुरुष सदा धर्म्मही पावेंगे २० परन्तु जिन रावणादिकोंमें सदा अधर्म्मही टिकाहै व उनअर्थ बढ़तेही चलेजातेहैं व धर्म्मशील आपलोगोंको सदाक्लेशही बनारहताहै तो फिर

धर्म्म अधर्म्म दोनों निरर्थकठहरे क्योंकि धर्म्मवालेको धर्म्मफल नहीं मिलता देखपड़ता व अधर्म्मवालेको अधर्म्मफल नहीं मिलता २१ हे राघव जो अधर्म्मसे पापकारी बँधेरहैं तो अधर्म्म वधकर्म्मसे अपनेआप मरजावें फिर वह किसको मारेगा २२ अथवा क्रियासे बनेहुये किसी अतिशय रूपवाले अधर्म्मसे यह जनमाराहीजाय व औरको मारेभीतो जानो विधिहीसे वह मरगया कुछ पापकर्म्मसे नहीं मारागया २३ अदृष्ट विनाश व अप्रकाशमान असत्केसमान विदित सत्तारूप धर्म्मसे पररूप कैसे जानाजावेगा २४ हे सज्जनोंमें मुख्य जो सत्कर्म्म फल दायक होता तो तुममें तो कोई असत्कर्म्म नहींहै व फिर तुमनेभी जो इसतरहका कष्टपाया तो सत्कर्म्म सत्फलदायक नहींहोता नहीं तो तुमको दुःख न होता २५ अथवा धर्म्म दुर्व्वलहोता क्योंकि बलकेपीछे पीछे चलताहै तो फिर दुर्व्वलहीठहरा तो इसमें धर्म्मको फलदेनेकीशक्ति ही नहींहै तो हमारेमतसे धर्म्मका सेवनही न करनाचाहिये २६ फिर जो बलकाधर्म्मगुणभूतहोतो धर्म्मकोछोड़ बलही करनेपर उद्यतहोवो क्योंकि जैसे धर्म्म तैसहीबल २७ अथवा यहबचन सत्यहीहो धर्म्मही ठीकहै तो परन्तु तुम्हारेही साथ झूठाहुआ जाताहै तो सबके रक्षक आपने निर्दयहोकर उसधर्म्मको क्यों न मारडाला २८ जो धर्म्मही अबलहो वहीकरनेके योग्यहो वा अधर्म्म उससे भिन्न पौरुष प्रबलहोतो पौरुषसे विश्वरूपकोमार इन्द्र फिर यज्ञरूप धर्म्मनकरते इससे विदित होताहै कि पौरुषसे कुछ नहींहोता धर्म्मही सब कुछहै २९ हेराघव पौरुषको लिये जो धर्म्महै वह सदा नाशही करता इसीसे लोग इनको अलग अलग सेवन करते हैं ३० हे राघव हमारा तो यह मत है कि धर्म्म का सेवन सदा करना चाहिये परन्तु जब आपने राज्य छोड़दिया धर्म्म का मूल तभी काटडाला ३१ क्योंकि जो अर्थ बने रहते व बढ़ते रहतेहैं तो सब क्रिया हुआ करती हैं जैसे पर्व्वतों से नदियां निकलतीं व बढ़ती जाती हैं ३२ व जिस पुरुष के पास अर्थ नहीं होता उसकी कोई क्रिया सिद्ध नहीं होती जैसे ग्रीष्मऋतु में बिना सोतों की नदियां सूखजातीहैं ३३ सो प्रथम सुखसे बढ़ाहुआ पुरुष धनका परित्यागकर सुखकी इच्छासे पापकरने लगताहै तो फिर राजाके यहांसेदंड

पाता है यही बड़ा उसमें दोषहै ३४ जिसकेधनहै तिसीके सो संसारमें मित्रहोते व जिसके धन होता उसीके भाईबन्धुभी होतेहैं व जिसके धन है वही उत्तमपुरुष कहाताहै व जिसके धनहै वही पण्डित कहाता ३५ व जिसके धनहै वही विक्रमी गिना जाता व जिसके धन है वही बुद्धि- मान कहाता जिसके धनहै वहीवीर व जिसके धनहै वही गुणीकहा- ता ३६ व धनके परित्यागमें यहीसब दोष हैं परंतु आपने राज्य धन छोड़दिया इससे सबजो धनहोने में गुण होतेउनके विपरीत अगुणराज्य छोड़ने के कारण आपमें आये ३७ जिसके धनहै उसके धर्म्म अर्थकाम सब सिद्धहोतेहैं वजो पुरुष अधन होता उसका अर्थ व कामसे कुछनहीं कार्य्य चलता ३८ हेराजन् धनसे हर्षकाम दर्प्पधर्म्म क्रोध शमदम सब होतेहैं ३९ व जोलोग धर्म्महो करने में लगे रहते इसलोककी बातोंकी ओर कुछभी ध्याननहीं देते उनका लोक बिगड़जाताहै फिर धर्म्मअर्थ कामभी नहींदिखाई देते जैसे बदरी की रात्रिमें नक्षत्रादि नहीं दिखाई देते ४० हेवीर केवल पिताके वचनोंका पालन करना इसीको धर्म्मवान आपवनको चलेआये यहां प्राणोंसेभी अधिक प्रिय भार्य्या राक्षस हर लेगया ४१ अब मेघनाद ने जानोंबड़ाही दुःखदिया जोकिउसने सीता जीको मारडाला अबयह दुःख अपने पौरुषसे दूरकरेंगे तिससे अब उठिये ४२ हे नर शार्दूल दीर्घ वाहु धृतव्रत श्रीरामचन्द्र जी उठिये अपने महात्मा आत्मा को क्यों नहीं जानते ४३ हे पापरहित यह ध- र्म्माधर्म की व्यवस्था जो हमनेकही वहआपके प्रियके अर्थ वास्तव में आपमें यहकोई व्यवस्था सम्भवित नहींहोती अबयह दुःख मिटानेके लिये हनुमानजीके वचन से सीताजीका मरणसुन क्रोधकरहम रथगज अश्व सहित व सब रावणादिराक्षसों सहित लङ्कापुरी बाणोंसे नष्ट भ्रष्टकरदेंगे ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेत्र्यशीतितमस्सर्ग्गः ॥ ८३ ॥

इसतरह भ्रातृवत्सल लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रजी को समझायही रहेथेकि सब मुरचोंपर बीरोंकोस्थापितकर व देख भालकर वहांबिभी- षणजीआये १ उनकेसाथ नानाप्रकारके अस्त्रशस्त्रधारणकियेउनके चारो

मन्त्री भी आये उननीलाञ्जन के ढेरके समान चारों मन्त्रियों के बीचमें यूथप हाथियों के बीचमें स्थित गजराज के समान शोभित होतेथे २ बिभीषणजीने वहां आय महात्मा श्रीरामचन्द्रजी को शोकयुक्त देखा ववानरोंकोभी मारे शोकके रोदनकरतेदेखा ३ व इक्ष्वाकु कुलके बढ़ाने वालेश्रीरामचन्द्रजीकोमूर्च्छितहोलक्ष्मणजीकीगोदमेंशिरधरे लेटेदेखा ४ व रामचन्द्रजीको शोककेमारेसन्तप्तदेख बिभीषण बड़ेदुःखसे व्याकुलहो यहक्याबातहै ऐसाबोले ५ बिभीषणका मुखदेख व सुग्रीव व सबवानरों की ओरभीदेख लक्ष्मणजी बोले ६ हे सौम्य मेघनादने सीताजीकोमार-डाला यहबात हनुमान्जीके कहनेसे जान उसीसे रामचन्द्रजी मूर्च्छित होगयेहैं ७ ऐसा कहतेहुये लक्ष्मणजी को मनाकर बिभीषणजी अति पुष्ट अर्थयुक्त वचन श्रीरामचन्द्रजी से बोले ८ हेमनुजेन्द्र दुःखित नहो हनुमानजी ने जो आपसे कहाहै वह हम ऐसा अयोग्य समझतेहैं जैसे कोईकहे कि किसीने समुद्र शोषलिया तो यह असम्भवहीहै ९ क्योंकि हम सीताजी के विषयमें दुष्टात्मा रावणका अभिप्राय जानतेहैं व सी-ताजीको कभी न मारसकेगा १० क्योंकि उसकाहित जाननेवाले हमने उसकी बड़ी प्रार्थनाकीथी कि जानकीजीको छोड़दो परन्तु उसने नहीं माना ११ न समझानेसे न दानदेने से न भेदकरने से वैदहीको उसने दिया फिर युद्धकरने से क्यादेगा व सीताजीको कोई और पुरुषदेखभी नहींसक्ता फिर मारनाकैसा १२ हमजानतेहैं कि वहराक्षसकहीं वानरों को मोहितकर कहींको चलागयाहै इससे आप जिसको उसने माराहै उसे मायाकी जानकी समझिये सत्य सत्य की किसीतरहसे नहींहै १३ व वह मेघनाद निकुम्भिलानाम देवालयकोगयाहै वहाँजाय होमकरेगा जैसेही होमकर बाहर आवेगा तो देवता दानवादिकोंसे अवध्य व दुरा-धर्ष होजावेगा १४ सो उसीदुष्टने सबको मोहितकर यहमायाप्रकटकीहै उसने ऐसाकरनेसे वानरोंके पराक्रममें विघ्नसमझाहै १५ अब हमलोग सेनासहित वहाँ तबतक पहुँचजायँ जबतक कि वह होमसमाप्त न करहो हे नर शार्दूल यह मिथ्या संताप आयाहै इसे छोड़दीजिये १६ क्योंकि आपको शोककर्शित देख यह सब सेना व्याकुल होरहीहै आप स्वस्थ चित्त हो यहां टिकेरहें १७ व हम लोगोंसहित लक्ष्मणजीको भेजें १८

क्योंकि ये नरशार्दूल निशित बाणोंसे उसका वहकर्म्म छुड़ादेंगे तिसके पीछे फिर उसेभी यहींमारेंगे १९ व इनके गरुड़ के समान वेगसे जाने वालेबाण उसदुष्टका रुधिर जरूर पानकरेंगे २० तिससे शुभलक्षण युक्त लक्ष्मणजीको आपआज्ञादेदें जिसमें उसराक्षसके बिनाश करनेके लियेजावें २१ हे मनुजबर अबशत्रु के मारनेके लिये बिलम्ब न होना चाहिये उसके बधकेलिये आप बज्ररूप लक्ष्मणजीको आज्ञादें जैसे दैत्योंके मारनेकेलिये इन्द्र बज्रको आज्ञादेतेहैं २२ व जो वहराक्षस होम करचुकेगा तो समरमें अदृश्यरहेगा देवता दानव चाहे जो हो कोईभी बाधा न करसकेगा जब होम समाप्तहोगा तो देवता व दैत्योंकोभी उसके सामने संदेहहोगा २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेचतुरशीतितमस्सर्गः ॥ ८४ ॥

मारेशोकके कर्शित श्रीरामचन्द्रजीने बिभीषणके बचनसुन जो उन राक्षसने कहाथा वह न माना १ परंतु कुछधैर्य्य धारणकर शत्रुओंकेमार- नेवाले श्रीरामचन्द्रजी वानरोंके आगे बिभीषणजी से बोले २ हे राक्ष- साधिप बिभीषण जो तुमनेकहा वह हमारे फिर सुननेकी इच्छाहै जो बात तुमने बिचारीहो कहो ३ रामचन्द्रजी के वचनसुन वाक्य कहनेमें बड़ेचतुर बिभीषणजी वही बाक्य फिर कहनेलगे जो पहिले उन्होंने क- हाथा ४ हे बीर जैसा आपने मुरचाबन्दी करनेको कहाथा आपके बचन सुनतेही सबहमने जाकर करदी ५ सबसेना सबओर हमनेजाकर बाँटदी व जिस स्थानपर जिस यूथपको उचित था वहां उसको टिकादिया ६ अब जो फिर हमकोकहनाहै वहसुनिये आप जो ब्यर्थ दुःखितहैं उससे हमसब दुःखितहैं ७ हेराजन् यहशोक छोड़दीजिये क्योंकि यहसन्ताप मिथ्याही आपको हुआहै अब शत्रुओंको हर्ष बढ़ानेवाली यह चिन्ता छोड़दीजिये ८ इससे हेवीर अब उद्यमकीजिये व हर्षका सेवनकीजिये जो आपको सीताजीका पाना अभीष्टहो व निशाचरोंका मारनाभी अ- भीष्टहो तो ऐसाही कीजिये ९ हे रघुनन्दन हम आपसे कहते हैं हमारे वचनसुनिये ये लक्ष्मणजी बड़ीभारी सेनालेकर यहांसे १० निकुम्भि- लामें प्राप्त मेघनाद को समरमें मारनेकेलिये चलें व धनुषसे छूटेहुये

विषधर सर्प्पोंकेसमान बाणोंस उसेमारें ११ क्योंकि उसवीर मेघनाद ने ब्रह्माजीके बरदानसे ब्रह्मशिरनाम अस्त्र व जहांचाहे तहां पहुँचादेने वाले घोड़ेपायेहैं १२ सो वह इससमय सेना सहित निकुम्भिला नाम देवालयको गयाहै जो वहां जिसकामकेलिये गयाहै व सफलकर वह उठा तो हम सबलोगोंको मरेही समझिये कोईभी उससे जीता न ब-चेगा १३ क्योंकि ब्रह्माजीने उसको यही बरदान दियाहै कि हेइन्द्रके शत्रु जो कोई तुम्हारा शत्रु तुमको निकुम्भिला में पहुँच बिना होमनहीं कियेहुये मारडालेगा तोतो मारडालेगा व जबसे तुम निकुम्भिला में पहुँच अग्निमें आहुति डालदोगे तो फिर कोई न मारसकेगा १४ हे महाबाहु रामचन्द्र यह वर सबलोकों के ईश्वर ब्रह्माजीने उसेदियाहै इससे हेराजन् उस बुद्धिमान्का वध इसतरहसे नियतहै १५ इससे उस मेघनादकावध करनेकेलिये महाबली लक्ष्मणजीको आज्ञादीजिये व जब वह मारजावेगा तो सपरिवार रावणको माराही समझिये १६ विभीषणजीके बचनसुन रामचन्द्रजीबोले कि हे सत्यपराक्रम हम उस दुष्टकी माया जानतेहैं १७ कि वह महाप्राज्ञ ब्रह्मास्त्र चलानेमें बड़ा निपुणहै इससे बड़ामायावी व बलवान् इसीसे समरमें इन्द्र वरुणादि देवताओं को भी मूर्च्छित करदेताहै १८ व बड़े सघन बादर में चलते हुये सूर्य्य की जैसे चाल नहीं विदित होती उसीतरह रथपर चढ़े अंत-रिक्षमें चलतेहुये उसदुष्टकी चालनहीं जानपड़ती कि कहां चलाजाता है १९ शत्रुकी माया का बल जान रामचन्द्रजी कीर्ति सम्पन्न लक्ष्मण जी से बोले २० कि जितनी सुग्रीवजी की सेनाहै उसको अपने संग ले व हनुमानादि यूथपोंको भी संगले २१ व सेना सहित ऋक्षराज जाम्बवान् को भी साथ ले जाकर माया बलसे युक्त उस मेघनाद को मारडालो २२ व उसदेशके सब मार्ग्गादि जाननेवाले महात्मा विभी-षणजी तुम्हारेपीछेसे आवेंगे २३ रामचन्द्रजी के बचनसुन विभीषण सहित लक्ष्मणजीने भीमपराक्रम के साथ और धनुश्श्रेष्ठ हाथमेंलिया २४ व तैयारहोकर कवच बखतर धारणकर तलवार बाण व धनुषले रामचन्द्रजीके चरणारविन्दोंमें प्रणामकर लक्ष्मणजीबोले २५ कि आज हमारे धनुषसे छूटेहुये बाण मेघनादको मार लङ्कामेंजाय ऐसे गिरेंगे

जैसे हंसलोग मानसरोवर आदि सरमें गिरतेहैं २६ व आजहीहमारे चापसे छूटेहुये बाण उस दुष्टात्मा के शरीरमें पैठ उसकोमार रत्तीरत्ती उड़ादेंगे २७ अपने भाईकेआगे दीप्तिमान् लक्ष्मणजी ऐसाकह मेघनाद के मारनेकी इच्छासेचले २८ व गुरुके समान श्रीरामचन्द्रजीके प्रणाम कर व प्रदक्षिणाभी कर लक्ष्मणजी निकुम्भिलानाम देवालयको जोकि मेघनादसे रक्षितथा गये २९ महाप्रतापवान् श्रीमान्राजकुमार लक्ष्मण जी विभीषणको संगले अपने भाईकी ओरसे स्वस्त्ययनादि मङ्गलादि कराय बड़ीशीघ्रताके साथ चले ३० व लक्ष्मणजीके साथ हज़ारों वानर संगलिये हनुमान्जी व अपनेमंत्रियोंकेसंग विभीषणजीभी चले ३१ इसतरह वानरोंकी बड़ीभारी सेनालिये लक्ष्मणजी चलेजातेथे कि मार्ग्गमें जाम्बवान्की सेनाभी देखपड़ी ३२ इसतरह मित्रों के बढ़ानेवाले लक्ष्मणजीने बहुत दूरजाकर मुरचेबन्दीकिये राक्षसोंकीसेना दूरहीसे देखी ३३ व वहाँ पहुँच धनुर्बाण हाथमें लिये लक्ष्मण जी मायासेही युद्धकरने के बिचारमें लगे हुये मेघनादको जीतनेकेलिये ब्रह्माजीने जो विधि उसके मारनेकेलिये नियतकरदीथी उसीरीतिसे जायखड़ेहुये ३४ बिभीषण अङ्गद व अतिबीरहनुमान्जी भी उनप्रतापी राजपुत्रके सङ्ग थे ३५ निर्म्मल शस्त्रधारण करनेसे प्रकाशित व ध्वजोंके कारण सघन व महारथोंके हेतु औरभी सघन व अतिभयङ्कर व अप्रमेयसेनामेंलक्ष्मणजी पैठे जैसे कोई बिबिधप्रकारके तिमिरमें पैठें ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपञ्चाशीतितमस्सर्ग्गः ॥ ८५ ॥

इसकेपीछे उसीसमयमें बिभीषणजी लक्ष्मणजीसे शत्रुओंका अहित व अपना अर्थसाधक बचन बोले १ कि यह जो मेघोंके समान श्याम राक्षसोंकीसेना दिखाईदेतीहै शिला आयुध धारण कियेहुये वानरों से युद्धकरावो २ हे लक्ष्मण इससेनाके भेदन करने में शीघ्रही यत्नकरो क्योंकि जब यहसेनामारजायगी तभी रावणकापुत्र मेघनाद देखपड़ेगा ३ इससे आप इन्द्रके बज्रकेसमान बाणोंकीबर्षा करतेहुये जब तक वह अपना कर्म्मसमाप्त न करने पावे तब तक सामने दौड़तेही जाइये ४ व इसदुरात्माको जो कि मायासे अपना को परमधार्म्मिक जानताहै व

आपबड़ा क्रूरकर्म्माहै व सब लोकोंको भयपहुँचाताहै इससेमारडालिये ५ बिभीषणके बचनसुन शुभलक्षणवाले लक्ष्मणजी मेघनाद के ऊपर बाण बरसानेलगे ६ ऋक्ष व वानरलोग वृक्षोंसे युद्धकरतेहुये सामने खड़ीहुई राक्षसोंकी सेनाके आगेदौड़े ७ तब वानरोंकी सेनाको मारने के बिचारसे राक्षसलोग पैनेबाण खड्गशक्ति तोमरआदि बरसानेलगे ८ बड़े शब्दसे लङ्काभरको शब्दित कराताहुआ वानरों व राक्षसोंकी सेनाका बड़ाभारी युद्धहुआ ६ यहाँतक कि राक्षसोंके चलायेहुये बाणों व शस्त्रोंसे व वानरोंके चलायेहुये वृक्षों व पर्व्वतशृङ्गोंसे आकाश आच्छादितहोगया १० व विकृतमुख बाहु वाले राक्षसों ने वानरों के ऊपर शस्त्रास्त्रचलाय बड़ीभय पहुँचाई ११ व तिसी तरह वानरों ने वृक्षों व पर्व्वतशृङ्गोंसे सबराक्षसोंको सामने जाय जाय मारा १२ महाकाय व महाबली वानरों व ऋक्षोंकेसङ्ग युद्धकरतेहुये राक्षसोंको बड़ीभारीभय उत्पन्नहुई १३ इसतरह अपनी सेनाको शत्रुओं से मारीगई सुन उस हवनकर्म्मके बिनासमाप्तहुयेही वहमेघनाद उठखड़ाहुआ १४ वृक्षोंके अन्धकारसे निकल बड़ाक्रुद्धहो मेघनाद पूर्व्वकाल से तैयार खड़े हुये रथपरकूदकर असवारहुआ १५ व भयङ्कर चाप बाण धारण किये व काले आँजनके ढेरकेसमान नयन व मुख लाललाल किये वहक्रूर मेघनाद सबके नाशकरनेवाली मृत्युहीके समान शोभितहुआ १६ मेघनाद को रथपर सवारदेखतेही भयङ्कर बेगवाले व लक्ष्मणजी से युद्धकरने की इच्छाकियेहुये राक्षसलोग जो भागनेपर बनाय उद्यतथे लौट खड़े हुये १७तब पर्व्वताकार हनुमान् जी ने बड़ाभारी एकवृक्ष उठाय १८ व राक्षसों की उस सेना को कालाग्नि के समान जलातेहुये वृक्षोंसे मारमार बनाय मूर्च्छित करदिया १६ बड़ेबेगसे बिध्वंस करतेहुये हनुमानजीको देख हजारों राक्षस आयबाण बरसानेलगे २० पैने शूले धारणकिये हुये राक्षसतो शूलोंसे व खड्ग धारण कियेहुये खड्गोंसे व शक्ति हाथोंमें लियेहुये शक्तियोंसे व पट्टिशवाले पट्टिशोंसे २१ व सैकरों हजारों राक्षस परिघ गदा भाला शतघ्नी व लोहेके मुद्गरोंसे २२ व घोर मूकों फरसों भिन्दिपालों लातोंआदिसे २३ चारोंओरसे घेर पर्व्वताकार हनुमानजीको मारनेलगे परन्तु हनुमानजीने क्रोधकर उनसबको

मारडाला २४ तब वानरश्रेष्ठ हनुमान्‌जीको शत्रुओंको मारतेहुये देख मेघनाद २५ अपने सारथिसे बोला कि जहांयह वानर हमारे राक्षसों को मारेही डालताहै वहींरथ लेचल २६ यहसुन जहां पवनतनयथे वहीं इन्द्रजित्‌को रथपर चढ़ाय सारथि लेगया २७ व वह पहुंचतेही हनुमान्‌जीके शिरपर बाण खड्ग पट्टिश फरसा व कत्तीआदि अस्त्रशस्त्रचलाने लगा २८ तिन सब शस्त्रास्त्रों को हाथसे पकड़ व तोड़कर पवनकुमार जी बड़ारोषकर बोले २९ हे दुर्म्मति रावणात्मज जो अपनाको शूर समझताहो तो युद्धकर वायुपुत्रकोपाय अबजीता न जानेपावेगा ३० जो समरमें तू हमसे बाहांजोटी करके द्वन्द्वयुद्धकर व हमाराबेग सहले तो राक्षसोंमें श्रेष्ठहै नहींतोकुछभी नहीं ३१ उसीसमय हनुमान्‌जीको मारनेकी इच्छाकियेहुये धनुषउठाये मेघनादकोदेख बिभीषणजी लक्ष्मण जीसे बोले ३२ कि जिस रावणके पुत्रने इन्द्रको जीतलियाहै वह यही है जोरथपर चढ़ाहुआ हनुमान्‌जीको माराचाहताहै ३३ हेलक्ष्मणतिस इसमेघनादको जिनबाणोंको कोई रोंक न सके व वे शत्रुओंको रोंक सकें व लगतेही प्राणहरलें ऐसेघोर बाणोंसे मारिये ३४ शत्रुओंको भयभीत करनेवाले विभीषणजीने जब ऐसा कहा तो महात्मा लक्ष्मणजीने भयङ्कर बल व दुरासद मेघनाद को रथपर चढ़ाहुआ देखा ३५ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकांडेपडशीतितमस्सर्ग्गः ८६ ॥

धनुषहाथमें लियेहुये लक्ष्मणजीसे ऐसाकह व उनको संगले बड़े हर्षितहो बिभिषणजी आगेआगे चले १ व थोड़ेही दूरजाय एकबड़ेबन में पैठ बिभीषणजीने वहकर्म्म लक्ष्मणजीको दिखाया २ प्रथमतो महातेजस्वी रावणके भाई विभीषणजीने कालेमेघके रङ्गका एक बड़ाभारी बरगद्‌का पेड़दिखाया ३ कि इसी बरगदकेनीचे यह रावणका पुत्र भूतों को बलिदानदे फिरपीछेको संग्राम को जाताहै ४ व वहांजाय अदृश्य होकर समरमें शत्रुओंको घोरबाणोंसे मारताहै व बांधलेताहै ५ इससे इस बरगदकेनीचे बिनाआयेहीहुये बलवान् मेघनादको रथसारथि घोड़े सहित तीक्ष्णबाणोंसे मारडालिये ६ मित्रोंके ऊपर वत्सल लक्ष्मणजीने बहुतअच्छा ऐसाकह व चित्रविचित्र धनुषपर टङ्कोर देतेहुये युद्धकरनेको

तैयारहो वहां खड़े होगये ७ व उसीसमय अग्निवर्णरथ पर चढ़ाहुआ कवच धारणकिये व खड्ग लिये धनुषहाथमेंकिये रावणके पुत्रकोदेखा ८ व देखतेही महातेजस्वी लक्ष्मणजी कभी किसीसे न हारेहुयेमेघनादसे बोलेकि हमतुमको युद्धकरनेकेलिये पुकारतेहैं इससेहमको अच्छी तरह युद्ध दानदो ९ जब इसतरह लक्ष्मणजी ने कहा तो महातेजस्वी व मनस्वी मेघनाद लक्ष्मणजीके निकट खड़ेहुये बिभीषण जीको देखबड़ा कठोर बचनबोला १० कि तुमइस उत्तम राक्षस कुलमें तो उत्पन्न हुये व यहींबढ़े व साक्षात् हमारे पिताजीके भाईहो इसीसे हमारे पितृव्य हो फिरहमतो तुम्हारे पुत्र ठहरे हमको क्यों मरवातेहो ११ हेधर्म्म-दूषण तुम्हारे ज्ञातिका धर्म्म नहींहै इससे अंतःकरण स्वच्छ नहींहै व इसीसे तुम्हारी अबकोई जातिभी नहींहै वइसीसे अबकुछ तुममें धर्म्म भी नहींरहा व इसीसे अबएक उदर मेंसे उत्पन्न होनेका जो भाइयों का धर्म्म है वहभी नहींरहा व इसीसे तुम्हारा कुछप्रमाणभी नहींरहा १२ हेदुर्बुद्धे जोकि तुम स्वजनोंको छोड़ शत्रुकी सेवकाई में जायलगे हो इससे साधुओंसे शोचकरने व निन्दाकरने के योग्य हो १३ कहां अपने लोगोंके बीचमें रहना व कहां नीच अन्यलोगोंके आश्रयी होकर रहना इसबातको मन्दमति होनेके कारण तुम नहीं जानसक्के परन्तु इसमें बड़ाभारी अंतरहै १४ चाहे अनारीजनगुणवान् भीहो व अपना जन निर्ग्गुणभीहो परन्तु अपनाजन निर्ग्गुण भी भला व गुणीभीअना-रीभलानहीं क्योंकि जो अनारीहै वह अनारीही है व अपना अपना है कहांतक जायगा १५ जो अपनेपक्षको छोड़ परायेपक्षकी सेवाकरता है वह जब अपना पक्ष नाश होजाताहै तब पराये पक्ष वालोंसे मार-डाला जाताहै १६ हेरावणानुजबिभीषण जिसतरहकी यहनिर्दयता व पौरुष तुम्हारेहै उसीतरह का काम स्वजनभी होकर तुमहमारे साथ करतेहो और तो कोईभी अपना अपनेके संग ऐसा न करेगा १७ जब भाईके पुत्र मेघनादने ऐसाकहातो बिभीषण जी उससे बोलेकि हेरा-क्षस हमारे स्वभावको जानों बिना जानतेहीसे तुम क्यों मिथ्या बकते हो १८ हेअसाधु राक्षसपुत्र महात्माके आश्रयीभूत होने के कारण हमारे गौरव हेतुसे कठोर बचन कहना छोड़ो यद्यपि हम क्रूरकर्म्म-

कारी राक्षसों केही कुलमें उत्पन्नहुये इसमें कुछ संदेह नहीं तथापिजो गुण पुरुषों में प्रथम होता है अर्थात् सत्वगुण वही सत्वगुण युक्तही हमारा स्वभावहै राक्षसोंका स्वभाव नहींहै १९ इससे हम अधर्म्म में नहीं रमते व न परपीड़ा करनेवाले दारुणकर्म्म में रमते हैं २० चाहे भाई दुष्ट स्वभाववाला भीहो परन्तु भाई उसको कैसे निकाल दे सो तुम्हारे पिताने हमको निकालदिया यह दोष उन्हींका है जो कहो कि वेतो तुम्हारे ज्येष्ठभाई थे तुमको उनका त्याग योग्य नथा तो जो धर्म्म से बिरुद्ध काम करे व सदा पापही करनेपर निश्चय किये रहै उसको त्यागही देनेसे सुखहोताहै जैसे बिषधर सर्प्पको हाथ से त्यागही देने से प्राण बचतेहैं इससे हम अपने प्राण बचाने के लिये रामचन्द्रजी के समीप आयेहैं २१ क्योंकि जो पुरुष परायाधन हरलेताहो व जोपराई स्त्रीके संग भोगकरताहो वा भोग करनेकी इच्छा रखताहो ऐसे दुष्टका त्यागही करना पण्डितलोग कहते हैं जैसे अग्निसे जलतेहुये गृह का त्यागहीउचितहै नहींतोघरतोजरताहीहै आपभीउसीमेंजलजायगा२२ परद्रब्योंका हरना व परस्त्रियोंकेसङ्ग भोगकरना व भोग करनेकी इच्छा करना व सुहृदोंके बीचमें भी शङ्का करना येतीनों दोष नाश करनेवाले होतेहैं सो तुम्हारे पितामें येतीनों दोषहैं इससे उनकानाश अपनेआप होगा ऐसे पुरुषका संसर्ग न करना चाहिये नहींतो उसके पापसे समीपबर्तीलोग भी नष्ट होजाते हैं २३ फिर महर्षियोंका घोर बध व सब देवताओं से बिग्रह अभिमान रोष बैर व प्रतिकूलता २४ ये सब प्राण व ऐश्वर्य्य नाशने वाले दोष हमारेभाई व तुम्हारे पितामें हैं सो इन दोषोंने उनके गुणोंको आच्छादित करलिया जैसे बादर पर्ब्बतको आच्छादित करलेतेहैं २५ इन्हीं दोषोंके कारण तुम्हारे पिता व अपने भाईको हमने छोड़दिया क्योंकि नतो यहलङ्कापुरी रहेगी न तुम न तुम्हारे पिता २६ हेराक्षस तुम अति अभिमानी व बाल व दुर्ब्बिनीतहो व कालकी फांसी से बँधेभी हो इससे जोजो चाहो हमको कहते जाव २७ जब हमको तुम्हारे पिताने त्यागाथा तब तुमनेभी हमको कठोर बचन कहेथे उससे तो अबयह कष्ट तुमको मिला व जो इससमय फिर कठोर बचन कह उसकाफल आगे मिलेगा २८ हे राक्षसाधम अबतुम

इस बरगदके नीचेको नहीं जासक्ते व लक्ष्मणजी का निरादर कर अब जीतेभी नहीं रहसक्ते २६ अच्छा अब जिनको तुम नर समझतेहो उन नरदेव श्री लक्ष्मणजी से युद्धकरो शीघ्रही मारे जावगे तब यमपुर को जाय देवताओंका सन्तोष करना ३० अब अपना बल दिखाय उठाये हुये अपने सब आयुधोंको चलावो परन्तु लक्ष्मणजीके बाणोंके समीप जाय सेनासहित तुमजीते न जावगे ३१ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकांडेसप्ताशीतितमस्सर्ग्गः ॥ ८७ ॥

विभीषण के बचन सुन बड़ा क्रोधकर मेघनाद कठोर बचन बोला व मारेक्रोधके उछला भी १ व ऊपर को खड्ग उठाय सब तरहसे भूषित व काले घोड़े जुतेहुये रथपर चढ़कर कालान्तकके समान स्थितहुआ २ व बड़ा दृढ़ बड़ाभारी धनुष उठाय उसपर शत्रुनाशकबाण भी चढ़ाये ३ व बड़ेबाण चलानेवाले उस मेघनादने स्वाभाविकरूपसे भूषित लक्ष्मण जीको देखा ४ तोहनुमान्की पीठपर उदयाचलपरस्थितसूर्य्यके समान चढ़ेदेख बिभीषण सहित लक्ष्मणजीसे बोला व सब वानरशार्दूलोंसे भी बोला कि तुमसबलोग हमारा पराक्रमदेखो ५ आज हमारेधनुषसे छूटी हुई दुरासद बाणोंकीवर्षादेखो जोकि आकाशसे बरसतीहुई जलधाराके समान दिखाईदेगी उसको तुमसबलोग सहोगे ६ आजहमारे धनुषसे निकलेहुये महाबाण तुमलोगोंके अङ्गोंको कँपा व धुनुक डालेंगे जैसेरुई की राशिकोअग्नि भस्मकरताहै ७ आज तीक्ष्णबाणोंसेकटेहुये तुमलोगों को शूल शक्ति ऋष्टि पट्टिश आदि शस्त्रास्त्रोंसे काटकर सबको यमपुरको भेजेंगे ८ भला समरमें बड़ीशीघ्रताकेसाथ बाण छोड़तेहुये हमारे आगे कौनखड़ाहोगा जैसे गर्ज्जतेहुये बादरके सम्मुख कोईनहींजाता ९ भला रात्रिकेयुद्धमें पूर्वकालमें बज्रसमबाणोंसे तुमदोनोंभाइयोंको मूर्च्छितकर हमने भूमिपर सुवादियाथा व सबतुम्हारे आगेचलनेवाले बानरादि भी सुवायेगयेथे १० क्या उसकीसुधि नहींहै हमजानतेहैं कि अब यमपुरको जायाचाहतेहो इससे वहबात भूलगई है इसीसे बिषधर सर्प्पके समान क्रोधकियेहुये हमसे युद्ध कियाचाहतेहो ११ राक्षसेन्द्रके ऐसे बचनसुन निर्भय व क्रोधयुक्तहो लक्ष्मणजी मेघनादसे बोले १२ हेराक्षस तुमने

कार्य्योंके पारकाजाना अतिदुर्ग्गम कहाहै परन्तु जो कार्य्यों व कर्म्मोंके पारकोजाताहै वहबुद्धिमान् कहाताहै १३ निषिद्धवक्ता व निर्ब्बुद्धि तुम बड़ेदुःखसे पानेकेयोग्य कर्म्मको केवल बचनसे कहकर अपनाको कृतार्थ समझतेहो १४ व जो अन्तर्द्धान होकर पूर्व्वसमयमें हमलोगोंको मूर्च्छित करादियाथा वहतो चोरोंकामार्ग्गहै वीरलोगोंके सेवनकरनेवाला मार्ग्ग नहींहै १५ हेराक्षस जिसतरह हमतुम्हारे वाणोंकेसामने खड़ेहैं उसीतरह तुमभी हमारे वाणोंके सामने खड़ेहोकर अपना तेज हमको दिखाओ क्यों बकतेहो १६ जब इसतरह लक्ष्मणजीने कहा अतिभयङ्कर धनुषले महाबली मेघनादने वाणोंकी वर्षाकरदी १७ उसकेप्रेरित वाण यद्यपि सर्प्पोंके विषकेतुल्य विषाशीथे तथापि लक्ष्मणजीके ऊपर पहुँचजाय अलगगिरे जैसे मन्त्रौषधिसे रुद्धवीर्य्य सर्प्प ऊधीसाँसें लेतेहैं १८ व फिर महावेगवान्वाणोंसे मेघनादने शुभलक्षणयुक्त लक्ष्मणजीके मारे. १९ व वाणोंके लगनेके कारण रुधिरसे भीगेहुये लक्ष्मणजी विधूम अग्निके समान शोभितहुये २० इन्द्रजीतने अपना किया कर्म्म देख बड़ेजोरसे नादकर लक्ष्मणजीसे कहा २१ हेलक्ष्मण आज हमारे धनुषसे छूटेहुये पैनवाण तुम्हारे प्राणलेलेंगे २२ हेलक्ष्मण आजहमारे मारेहुये प्राणरहित तुम्हारे ऊपरशृगालोंके समूह व बाजोंके झुण्डके झुण्ड व गृध्रभीकूदेंगे २३ व क्षत्रियोंमें नीचसदाअनारी व परमदुर्म्मति रामचन्द्र अपने भक्तभाई तुमको हमारे मारेहुये देखेंगे २४ व फिर हमारे मारेहुये तुम्हारा कवचकटा व धनुष भूमिमेंपड़ा व शिर कटापड़ा आजदेखेंगे २५ ऐसा कहतेहुये मेघनादसे सब वाक्यार्थ जाननेवाले लक्ष्मणजी सहेतुक बचनबोले २६ हेदुर्व्बुद्धिराक्षस यह वाग्बलछोड़दे अरे ऐसा क्यों बकताहै सुन्दर कर्म्मकर के इसबातको सिद्धकर २७ हेराक्षस बिनाकियेहुये कर्म्मको क्यों बकताहै वैसा कर्म्मकर जिससे हमतेरे बचनकाभी विश्वासकरें २८ अच्छा अबतूचाहे जो बक परन्तु हमतुझको बिनाकठोर बचन कहेहीहुये आज मारडालेंगे २९ यहकह पाँचवाण धनुषपर चढ़ाय लक्ष्मणजीने बड़े वेगसे मेघनाद की छातीमें मारे ३० सुन्दर पङ्खलगे ज्वलित सर्प्पोंकेसमान वे वाण उसराक्षसकी छातीमें सूर्य्यकेकिरणोंके समान लगेहुये प्रकाशितहुये ३१ वाणोंके ल-

गनेसे क्रुद्ध होकर मेघनादने तीनबाण लक्ष्मणजीके मारे ३२ इसतरह नरराज व राक्षसराजका बड़ाभारी युद्धहुआ जिसमें परस्पर दोनोंजन जीतनेकी इच्छाकरतेरहे ३३ क्योंकि दोनोंजने बड़ेविक्रान्त व दोनोंबड़े विक्रमशालीथें ३४ व दोनोंका बलतेज अतुलथा इससे आकाशमें प्राप्त दोग्रहोंके समान ये शोभितहुये ३५ व दोनों जने इन्द्र व वृत्रासुर के समान युद्धमें बड़े प्रचण्डथे इससे दोनों महात्मा दोसिंहोंके समान युद्ध करने लगे ३६ व बहुत बाण समूहों को छोड़ते हुये नर व राक्षस में मुख्यमेघनाद व लक्ष्मण प्रहृष्टहो युद्ध करनेलगे ३७ धनुर्व्बाण धारण किये विजयकी इच्छा किये प्रहर्षचित्त लक्ष्मण व मेघनाद मेघोंकेसमान बाणोंकी बर्षा करने लगे ३८ व इसकेपीछेयुद्ध करनेमें बड़ेचतुर व बड़े तीक्ष्णशस्त्र धारी दोनोंबीर शम्बरासुर व इन्द्र के समान बार बार एक दूसरेके ऊपर बाण वृष्टि करतेथे ३९ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टाशीतितमस्सर्ग्गः ॥ ८८ ॥

तब लक्ष्मण जीने धनुष पर बाण चढ़ाया क्रोधकिये हुये सर्प्पके समान सांसले मेघनादके ऊपर बाण छोड़े १ व लक्ष्मण जीकी प्रत्यंचा का शब्द सुन मेघनाद बिवर्णमुख होकर लक्ष्मण जीकी ओर देखने लगा २ रावणके पुत्र राक्षसको बहुत ब्याकुल देख युद्ध करतेहुये लक्ष्मण जीसे बिभीषणजी बोले ३ देखिये आपके धनुषका शब्द सुन इसका मुख बिवर्ण होगया येसब निमित्त इसके पराजयके कारणहैं इससे अब आप इसके मारनेमें जल्दी कीजिये क्योंकि यह अब भग्न हीधराहै इसमें कुछभी सन्देह नहींहै ४ यहसुन लक्ष्मण जीने बिषधर सर्प्पोंके समान बाण धनुषपर चढ़ाय मेघनाद के ऊपर छोड़े ५ लक्ष्मणजीके चलाये हुये इन्द्रके बज्रके तुल्य बाणोंके लगनेसे सब इन्द्रियोंसे चलायमानहो मेघनाद एक मुहूर्त्त भरतक मूर्च्छित रहा ६ मुहूर्त्तभरके पीछे जब मूर्च्छा जागी व सुस्थिरचित्त हुआतो उसने अतिबीर लक्ष्मणजीको समरमें खड़े देखा ७ व मारे रोषके लालनेत्र कर लक्ष्मण जी को निकट आय फिरकठोर बचन कहनेलगा ८ किक्या प्रथम युद्ध के हमारे पराक्रमका स्मरणनहीं करते जोकि हमनेभाईसहित तुमको

नागफांस से बांधलियाथा इससे तुमपरे लोटतेथे ६ वज्रतुल्य बाणों से तुमदोनों जनोंको व तुम्हारी सेनाको ऐसा माराथा कि तुम सबके सब मूच्छित होगयेथे १० कितो अब तुमको उस बातका स्मरण न होगा कि तो हमजानते हैं कि यमपुरको आया चाहतेहो क्योंकिनहीं तोफिर हमसे युद्ध करनेका मन न करते ११ यदि पहिले युद्धमें तुमने हमारा पराक्रम न देखाहोतो अच्छा अब खड़ेरहो अभी तुमको दिखातेहैं १२ यहकह सातबाणतो लक्ष्मणजीके मारे व अतितीक्ष्ण धारवाले दशबाण हनुमान् जीके मारे १३ व बड़ा क्रोध करनेसे द्विगुण बीर्य्यहो सौबाण बड़े जोरसे बिभीषणजी के मारे १४ मेघनाद का किया कर्म्म देख व उसको कुछभी न समझ व यह कहकर कियह कुछनहीं है लक्ष्मणजी ने १५ निर्भयहो व बड़ा क्रोधकर मेघनाद के अतिघोर बहुतसे बाण मारे १६ व कहा हेनिशाचर रणमें प्राप्त होकर शूरलोग इस तरहका तुच्छ प्रहार नहीं करते क्योंकि तुम्हारे ये अल्पबीर्य्य व लघुबाण तो हमलोग तुम्हारे शत्रुओंको सुखप्रदही हैं ऐसा बाणोंसे कुछभी कष्टनहीं हुआ १७ अरे युद्धकी बाञ्छा कियेहुये शूरलोग इस तरहका लघु युद्ध नहीं करते इसतरह मेघनादसे कह लक्ष्मणजी ने तिसके ऊपर बाणों की बर्षा करदी १८ उन बाणोंके लगने से उसका कवच रत्ती रत्ती टूट कर रथपर गिर बिथरगया जैसे आकाशसे नक्षत्रोंका समूह दैवयोग से कभी भूमिपर गिर पड़ताहै १९ बाणोंसे कवच कटजानेसे व अङ्गोंमें घाव होजाने से मेघनाद प्रातःकाल के सूर्य्य के समान शोभित हुआ २० व बड़ा क्रोधकर उस बीर मेघनाद ने समरमें हजार बाण एकही सङ्ग भीम पराक्रमी लक्ष्मणजी के मारे २१ उनके लगने से लक्ष्मण जी काभी कवच रत्तीरत्ती उड़कर भूमिपर गिरपड़ा बस अब दोनोंबीर बराबर होगये क्योंकि लक्ष्मणजीने उसका कवच काटडालाथा व उसने उनका इससे बराबरकी मारहुई २२ बाणोंके लगने से दोनोंजने बार बार श्वासें लेनेलगे व तुमुलयुद्ध करनेलगे व बाणों से दोनों जनों के सर्व्वाङ्ग कटगये इससेदोनों रुधिरसे भीगगये २३ परन्तु दोनोंजनेबड़ी देरतक परस्पर तीक्ष्णबाणोंसे युद्धकरतेरहे व एकदूसरेके अंगोंको सूक्ष्म करतेरहे क्योंकि दोनों युद्धकर्म्ममें बड़ेचतुरथे २४ व दोनों भीमपराक्रमी

अपनी अपनी जीतकेलिये नानाप्रकारकी युक्तियां करतेरहे २५ व दोनों जनोंके कवच बाण समूहोंसे कटगयेथे व दोनों गर्म्म रुधिर चुआते थे जैसे दोपर्व्वत झरनोंको चुवावें २६ बाणोंकी बर्षाकरतेहुये व बड़ा भारी शब्द करतेहुये दोनों जने लगातार दृष्टिकरतेहुये प्रलयसमय के मेघों के समान शोभितहुये २७ इसतरह युद्ध करतेकरते दोनोंजनों को बहुत समय बीतगया परंतु दोनोंजनों मेंसे नतो किसीने पीछेको मुख किया व न कोई कष्टितहुआ २८ अस्त्रविद्या जाननेवालोंमें श्रेष्ठदोनों जने परस्पर एकदूसरेको अपनेअपने शरोंकी प्रबलता दिखाताथा यहां तक कि बाणोंकेमारे आकाश पूर्णकरदियाथा २६ व दोनों दोषरहित बड़ी शीघ्रता व सुंदरताके साथ तुमुलयुद्ध करतेथे ३० व दोनोंजनों का अलग अलग बड़ा भयानकशब्द सुनाई देताथा उसेसुन लोग ऐसे कम्पित होतेथे जैसे बज्रके शब्दसे कम्पित होतेहैं ३१ समरमें मत्त दोनोंजनोंका शब्द बड़ा घोरशब्द करतेहुये मेघोंके समान सुनाईदेताथा ३२ सुवर्णकी फोंकेंलगे हुये बाणोंके घाव लगेहुये दोनों बीर जानों समरमें बटोरा हुआ यशही चुआतेथे ३३ व दोनों जनोंके अंगोंसेनिकलेहुये व रुधिरलगे हुये सुवर्ण कीफोंकवाले बाणगिरे व धरणीमें पैठगये ३४ व बहुतबाण आकाश में एकदूसरेके बाणोंसे भिड़गये इससे सैकरोंबाण कटगये व टूट गये ३५ इसतरह दोनों जनोंका वह बाणमययुद्ध बड़ा घोरहुआ जैसे प्रज्वलित दो अग्नियोंके किनारे किनारे कुशका ढेर लगजाताहै ३६ तिन दोनों महात्माओंके शरीरघावोंके बाण ऐसे शोभितहोतेथे जैसे फूलेहुये पलाश व सेमरके दोवृक्ष शोभितहोतहैं ३७ मेघनाद व लक्ष्मणजी दोनों परस्पर जीतनेकी इच्छा कियेहुये बारबार अति प्रचण्डयुद्ध करतेथे ३८ लक्ष्मणजीतो मेघनादको व मेघनाद लक्ष्मणजीको बराबरमारते थे व दो मेंसे कोईभी इस बड़ेभारी श्रमको श्रमनहीं समझताथा ३६ दोनोंजने शरीरमें गड़ेहुये बाणोंसे वृक्षलगेहुये दो पर्व्वतोंके समान शोभित होतेथे ४० बाणोंसे छेदेहुये व रुधिर बहतेहुये उनदोनोंजनोंके सब अंगजलते हुये अग्नियोंके समान शोभित होतेथे ४१ इस तरह युद्धकरते करते उनदोनों जनोंको बहुतसमय बीतगया परंतु न तो कोई पीछेहीको लौटा व न कोईकुछ थकीगया ४२ समरमें अजित लक्ष्मणजीका श्रमदूरकरते

के लिये व अपने प्रियोंका हित करतेहुये महात्मा बिभीषण जी समरमें आयबहुत समीपहोकर खड़ेहुये ४३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेएकोननवतितमस्सर्ग्गः ॥ ८९ ॥

परस्पर जीतनेकी इच्छा कियेहुये दो मदान्ध हाथियोंके समान युद्ध करतेहुये व एकमें बनाय भिड़ेहुये मनुष्यश्रेष्ठ व राक्षसश्रेष्ठको १ परस्पर लड़तेहुये देखनेकी इच्छासे महाबलवान् व शूर रावणके भाई बिभीषण जी आय संग्राममें खड़ेहुये २ व अच्छीतरह सँभरकर बड़ेभारी अपने धनुषपर उन्होंने टंकोरदिया व राक्षसों के ऊपर तीक्ष्णबाण चलाये ३ अग्निके समान स्पर्शवाले वे बिभीषणजीके चलायेहुये बाणराक्षसों को कैसे बिदारण करनेलगे जैसेवज्रपर्व्वतोंका बिदारण करतेहैं ४ व राक्षसों में उत्तम व शूरबीर बिभीषणजीके चारोंअनुचरभी शूल खड्ग पट्टिशआदि शस्त्रोंसे समरमें राक्षसोंको मारनेलगे ५ उन अपने चारोंराक्षसोंके बीचमें बिभीषण जीअपनेबच्चोंके बीचमें खड़ेहुये महागजके समान शोभितहुये६ राक्षसोंकेवध होनेसे प्रसन्नहोनेवाले बानरोंको प्रेरणा करतेहुये बिभीषण जी उस कालके उचित बचन बोले ७कि लक्ष्मणजी तो अकेलेइस राक्षसेन्द्र से युद्ध कररहेहैं व यहराक्षसोंकी बाकीसेनातो सरतयारीही खड़ीहै फिर हे बानरो तुमलोग क्या खड़ेहो ८ जब यह पापी राक्षस मारा जायगा तोफिर इस दुष्टकी इतनी सेना तो रहजायगी कितोरावण रहजायगा और तो फिर कोई बाकीही न रह जायगा ९ क्योंकि प्रहस्त वीर मारागया व महाबली निकुम्भ भी मारागया व कुम्भकर्ण कुम्भ व धूम्राक्षनिशाचरभी मारागया१० जम्बुमाली महामालीतीक्ष्णवेग अशनिप्रभ सुप्तघ्न यज्ञकोप व वज्रदंष्ट्रनामराक्षस ११ संह्रादि विकट अरिघ्न तपन मन्द प्रघास प्रघस प्रजंघ व जंघ १२ व महादुर्द्धर्ष अग्निकेतु व वीर्य्यवान् रश्मिकेतु विद्युज्जिह्व द्विजिह्व व सूर्य्यशत्रु राक्षस १३ अकम्पन सुपार्श्व चक्रमाली कम्पन व बड़े सत्व सम्पन्न देवान्तक व नरान्तक १४ इन राक्षस सत्तमों को तो अबजानों मारही चुकेहो फिर अब बाहों से समुद्रउतर इस गायके खुरसे बनेगढ़ा में भरे पानीके उतरने में क्यादेर करतेहो यह सेनातो अब कुछभी बाकी नहीं

रही १५ हेवानरो अवतो इतनी सेनाजीतनेको बाकीरहगईहै और सब बलकेमारे दर्प्पित राक्षस तो मारगये १६ जो कहोकि अवजो बाकीहैं इनको तुम्हीं मारडालो तो हम इसके चचा ठहरे इससे पुत्रका बध करना हमको अनुचितहै क्याकरें तथापि रामचन्द्रजीके अर्थ अपनेभतीजे को भी मारनेको तैयार हैं १७ परन्तु क्याकरें जबमारनेको मनकरतेहैं तो आंशुओंके मारे नेत्रमूंद आतेहैं इससे नहीं माराजातासोभी हम न सही उसको महा शूरबीरये लक्ष्मणजी मारडालेंगे उसे तुमलोग रहने दो १८ परन्तु इसके समीपवर्त्ती जो इसके नौकर चाकर और राक्षस हैं उनको तो तुमलोग मारडालो इसतरह जब अति यशस्वी बिभीषणजीने कहातो १९ सब बानर बहुत हर्षित हुये व अपनी अपनी पूंछ उठाय उठाय कँपाने लगे व सबके सब बार बार नाद करनेलगे जैसे बादरों को देखमोर शोरकरने लगतेहैं २० वानरतो ऐसा करनेहीलगे जाम्बवान्जी भी अपने ऋक्षोंके यूथपोंको सङ्ग ले पत्थरोंसे राक्षसोंको मारने व मरवानेलगे २१ परन्तु मारतेहुये ऋक्षोंके अधिप जाम्बवान्जीको नानाप्रकारके आयुध लियेहुये राक्षसोंने भयछोड़ आय आच्छादित करलिया २२ व राक्षसी सेनाको मारते हुये जाम्बवान्जीको शर फरसा पट्टिश मुद्गर तोमरादिकोंसे सबराक्षस समर में मारनेलगे २३ राक्षसों व वानरों ऋक्षोंका यह बड़ाभारी समर हुआ जैसे देवताओं व दैत्योंसे बड़ेभारी शब्द सहित युद्धहुआथा २४ इसतरह युद्ध होतादेख हनुमान्जीने भी बड़ा क्रोधकर पर्व्वत परसे एक बड़ाभारी शृङ्ग उखाड़ लिया व लक्ष्मणजीको अपनी पीठपरसे उतारदिया व सहस्त्रोंराक्षसों को कूद कूद जाय मारडाला व उनके सामने कोई राक्षस न आय सका २५ व महाबली मेघनाद अपने चचा विभीषणजी को महायुद्धदे फिर आय शत्रुओंके मारनेवाले लक्ष्मणजीके सामने दौड़ा २६ तब समर में बड़े बीर राक्षस व लक्ष्मणजी बाणसमूह बरसाते हुये परस्पर मारने लगे २७ न तो दोनों जनोंको कोई बाण लेते देखता न चढ़ाते व न धनुष टूटजाने पर दूसरा धनुष लेते देखता न फिर बाण छोड़ते देखतान धनुष खींचते न शर तरकससे निकालते २८ न मूकाबांधते न दूसरे केऊपर चलाते कोई देखताथा क्योंकि युद्धकरते समय दोनों जने

ऐसीजल्दीके साथ हाथ चलातेथे कि ओर.कोकुछ समझही नहीं पड़ता था २९ व दोनों महाबली बारबार बाणसमूहोंसे मूंदजातेथे कि न कोई उन्हींको देखपाता न उसीको जैसे बर्षाकालमें बादरोंसे चन्द्रमा व सूर्य्य मूंदजाते व फिर बादर कमपड़नेपर निकलआते ३० धनुषकेबेगसे छूटे हुये बाण समूहोंसे चारोंओरसे आकाश ऐसाभरहुआ कि इनकेक्या उस समय किसीकेभी रूपनहीं प्रकाशितहोतेथे ३१ लक्ष्मणजीतो मेघनादको पाय व मेघनाद लक्ष्मणजीकोपाय ऐसायुद्धकरतेथे कि उनकेमारे उसको व उसकेमारे उनको क्षणमात्रकोभी अवकाश नहींहोता ३२ तिनदोनों जनोंके जल्दबाजीके साथ मारेहुये बाणोंसे आकाश ऐसाकस बैठाथा कि सबमें अँधियारी छागईथी ३३ व तिन दोनोंजनोंके बाणोंके चलनेसे दिशा प्रदिशा सबपूर्णहोगई व सब दिगन्तर अन्धकार से पूर्णहोगया ३४ ऐसा अन्धकार होगयाकि सूर्य्य बिलकुल छिपगये वरुधिरसे बड़ी बड़ी नदियाँ बहनेलगीं ३५ व मांसभक्षी पक्षी रूखी अनच्छी बोली बोलनेलगे व पवनका चलना बन्दहोगया अग्नि सबबुझगये ३६ व महर्षिलोग कहनेलगे कि लोकोंकेलिये स्वस्तिहो व गन्धर्व्व लोग भी आकर यही कहनेलगे ३७ इसकेपीछे सुवर्णके भूषणपहिने उसकेचारों कालेघोड़ोंको लक्ष्मणजी ने बाणोंसेमारा ३८ व एक बज्रसमान पीत व पैन व बड़े ज़ोरसे खींचकर चलायेहुये व सुवर्ण प्रकाशित ३९ व इंद्रके अशनिकेसमान बाणसे बहुत इधरउधर रथदौड़ातेहुये सारथि का ४० शिर उसी बज्रसम बाणसे बड़ी शीघ्रताके साथ लक्ष्मणजीने शरीर से बाहर काटकर फेंकदिया ४१ जबसारथि मारागया तो मन्दोदरीकापुत्र मेघनाद आपही तो सारथिकाकाम करनेलगा व फिर झटबाणले मारने ४२ यहदशादेख लोगबड़े आश्चर्य्यितहुये ४३ जब वह घोड़ेहांकनेलग ताथा तब तो लक्ष्मणजी बाणोंसे उसको मारते व जब वह धनुष उठाने लगता तो उसी बीचमें घोड़ोंको मारदेते ४४ इसतरह जब अवकाश मिलता तो लक्ष्मणजी बाणोंसे बड़ीशीघ्रताकेसाथ मेघनादकोमारते ४५ समरमें सारथिको माराहुआदेख मेघनादने समरका बड़ाभारी हर्षछोड़ दिया व वह बनाथ उदासीनहोगया ४६ उसकोउदासीन व व्याकुलदेख बड़े प्रसन्नहो वानरलोग लक्ष्मणजी की बड़ाई करनेलगे ४७ व उसी

समय प्रमाथी रभस शरभ व गन्धमादन ये चार वानर युद्धमें मेघनाद का घोड़ोंकाहाँकना व युद्धकरनाभी न सहकर इन्होंने बड़ाबेगकिया ४८ व बड़ेबेगसे ऊपरको भरजोरकूद उसके चारोंघोड़ोंके ऊपर बड़ेज़ोरसे कूदपड़े ४६ जब पर्व्वताकार वे चारो वानर एक एक घोड़ेके शिरपर ज़ोरसेकूदे तो उनबेचारे घोड़ोंके मुखोंसे रुधिर बहनेलगा ५० इससे बनाय चूर्णीभूतहो वे घोड़े निर्ज्जीवहो धरणीपर गिरपड़े इसतरह घोड़ोंकोमार व रथभी तोड़ वेचारों वानर कूदकर फिर लक्ष्मणजीके समीप चलेआये ५१ तब घोड़ेमरेहुये व सारथि निहतहुये व रथटूटे रथसे उतर मेघनाद लक्ष्मणजीके ऊपरबाणोंकी वर्षा करनेलगा ५२ ॥

हरिगीतिका ॥

सुरराजसम रघुराज लक्ष्मण तुरग निहत पदातिही ।
लखि मेघनादहि करत नादहि सृजतबाण अरातिही ॥
लैबाण निकरप्रमाण भरगहि त्यहिविदारण कीनजू ।
अतिभयहु व्याकुल सोनिशाचरबहुरिभो अतिहीनजू १ । ५३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेनवतितमस्सर्गः ॥ ६० ॥

रथटूटने व घोड़े मरजानेपर भूमिपर खड़ेहुये उस महातेजस्वीमेघनादने प्रज्वलितहो बड़ा क्रोधकिया १ व वे दोनोंजने धनुर्ब्बाणलिये एक दूसरेको मारतेहुये बिजयकरनेमें उतारू बनमें गजश्रेष्ठोंके समान शोभितहुये २ व राक्षस व वानरलोग भी यद्यपि इनको समर में बड़ाभारी कष्टहुआ परन्तु अपने अपने स्वामियों को छोड़ छोड़ न लौटे ३ तिसके पीछे सब राक्षसों को हर्षाता हुआ मेघनाद स्तुति कियाजाताहुआ व हर्षितहोबोला ४ हे राक्षसोत्तमो इस बड़ीभारी भयकारी अँधियारी के कारण सबदिशा अँधेरीहैं इससे अपना बेगाना नहींजानपड़ता ५ इस कारण आपलोग वानरोंके मोहनेकेलिये निर्भयसे युद्धकरते रहना तब तक हम रथपर चढ़कर झटपट फिर समरमें आजावेंगे ६ आपलोग ऐसा उपायकरें कि जिसमें जबतक हम नगर से फिर न आवें तबतक ये वानर युद्धही न करें ७ यहकह वानरोंको धोखादे शत्रुओंके मारनेवाला मेघनाद रथलेनेके कारण लंकापुरीको चलागया ८ वहां पहुँच

सुवर्णसेभूषित रथको औरभी भूषितकराय भाला खड्ग बाणादिकोंसे पूर्णकराय व अच्छेवेगवान् घोड़े नधवाय ९ व अच्छा आज्ञाकारी व घोड़ोंके हाँकनेमें अतिचतुर सारथिकोचढ़ाय समर जीतनेवाला मेघनाद आपरथपर असवारहुआ १० व मुख्यमुख्य राक्षसोंकी संगलें मंदोदरी का पुत्र मेघनाद कालकेबलसे प्रेरितहोकर बड़ी शीघ्रताकेसाथ लंकासे निकला ११ शत्रुवीरोंका हन्ता मेघनाद नगरसेनिकल बड़ेवेगसे चलनेवाले घोड़ेजुते रथकीद्वारा लक्ष्मण व विभीषणके सामने फिर आय पहुँचा १२ रथपर असवार मेघनादको देख लक्ष्मणजी व सबवानर व राक्षसश्रेष्ठ विभीषणजी १३ सबकेसब तिस बुद्धिमान्की बुद्धिमत्ता के कारण व जल्दबाजीके हेतु बहुत विस्मितहुये १४ व मेघनाद भी क्रुद्ध होकर समरमें वानरोंके सकरों व हजारों यूथपोंको बाणसमूहोंसे मारनेलगा १५ व बड़ी शीघ्रताकेसाथ धनुष बनायनवाय व बाणचढ़ाय क्रोधकर वानरोंको मारचला १६ बाणोंकीमारसे व्याकुलहो सबवानर लोग लक्ष्मणजी की शरणकोगये जैसे प्रजालोग प्रजापति के निकट जातेहैं १७ तब समरके कोपसे ज्वलितहो लक्ष्मणजीने अपनेहाथोंकी शीघ्रता दिखातेहुये उसका धनुषबाणोंसे काटडाला १८ तब उसने बड़ी जल्दबाजीके साथ और धनुष धारणकिया व झट उसपर रोदा चढ़ाया परन्तु उसेभी लक्ष्मणजीने तीक्ष्णबाणोंसे काटडाला १९ तब धनुष कटेहुये उस मेघनादकी छातीमें लक्ष्मणजीने जोरसे पाँचविषधर सर्प्पोंकेसमान फुफुआतेहुये बाणमारे २० वे बाण उसके शरीरको भेदनकर लालसर्प्पोंके समान भूमिमें जायगिरे २१ इनबाणोंके लगनेसे उसका कवच छिन्नभिन्न होगया व मुखसे रुधिर उगिलतेहुये उसने दृढ़ प्रत्यञ्चावाला व अति बलवत्तर धनुश्श्रेष्ठ और धारणकिया २२ व उसपर चढ़ाय चढ़ाय लक्ष्मणजीके ऊपर बाणोंकी ऐसी वर्षाकरनेलगा जैसे इन्द्रकीआज्ञासे बादर जलकीवर्षा करतेहैं २३ मेघनादकी छोड़ी हुई बाणवृष्टि यद्यपि बड़ीकठिनतासे आनेके योग्यथी परन्तु लक्ष्मण जी ने बिना प्रयास उसका वारण करदिया २४ व बड़ी सावधानी के साथ लक्ष्मणजीने वारणरूप अपना पौरुष दिखाया वहजानो बड़ाही अद्भुत दिखाईदिया २५ व फिर अपनी शीघ्रता दिखानेकेलिये सबराक्षसोंके

एकहोसैंग तीनतीन बाणमारे २६ व फिर मेघनादको तो बाणसमूहोंसे अच्छीतरह धुनका २७ व शत्रुघाती परमशत्रु व बलवान् लक्ष्मणजीके बाणोंके लगनसे असकहो बहुतसे बाण लक्ष्मणजी के ऊपरछोड़े २८ पर वे बाण पहुँचनेही नहींपाये कि लक्ष्मणजीने दूरहीसे काटडाले व रणमें रघुसत्तमजीने उसकेसारथिका २९ शिर बड़भारी भालासे काटलिया जब वे घोड़े बिना सारथि के होगये तो इधर उधर रथ लेकर भागनेलगे ३० व ठौरहीपर मण्डलाकार घूमनेलगे यह बात बड़ी अद्भुतहुई व फिर लक्ष्मण जी ने उसके रथके घोड़ेभी मारडाले ३१ इसबातको न सहकर अतिबली रावणके पुत्र ने लक्ष्मणजी के दशबाण मारे ३२ परन्तु वे सर्पके विषके समान बाण सुवर्ण सम प्रकाशित लक्ष्मणजीके कवचमें लगकर बिलायगये ३३ तब लक्ष्मणजीको अभेद्य कवचमान मेघनादने तीनबाण उनके मस्तकमें मारे इसमारनेसे अपने बाणोंके चलानेकी शीघ्रता उसने प्रगटकी ३४ व उनतीनोंबाणोंके मस्तकमें गड़नेसे रणमें प्रशंसाके योग्य लक्ष्मणजी तीनशृङ्गके पर्वत के समान शोभितहुये ३५ उस राक्षसके तीन बाणोंसे महासंग्राम में बिद्धभी हुये तोभी लक्ष्मणजीने पांचबाण मेघनादके मारे ३६ ये बाण ऐसे खींचकर व ताककर मारे कि इन्द्रजीतके मुखहीमें लगे इसेतरह लक्ष्मणजी व मेघनाद परस्पर एक दूसरेको बाणोंसे मारतेरहे ३७ इससे लक्ष्मण व मेघनाद दोनोंजने रुधिर बहनेके कारण फूलेहुये पलाशके दो वृक्षोंके समान शोभितहुये ३८ व उनदोनों बीरोंने अपनी अपनी जीत की इच्छाकिये बनाय समीप जाय अति हर्षाय घोर बाण एक दूसरे के मारे ३९ व फिर समरमें कोपकियेहुये मेघनादने विभीषणजीके मुखमें तीनबाण मारे ४० तीनबाण विभीषणजीके मार फिर उसने सब बानर यूथपोंके एकएक बाण मारा ४१ तिसके ऊपर अतिक्रुद्धहो विभीषणजीने उस दुष्टात्मा मेघनादके घोड़ोंको गदासे मारा ४२ घोड़े मरेहुये रथपर से उतर उसने अपने चचा विभीषणजीके ऊपर शक्ति चलाई ४३ उस शक्तिको विभीषणजीके ऊपरको आतीहुई देख लक्ष्मणजीने पैनेबाणोंसे अलगही काटडाला कि जिससे वह दश खंडहो पृथ्वीपर गिरपड़ी ४४ व अतिक्रोध किये विभीषणजीने घोड़े मरेहुये उसके ऊपर बज्रके समान

स्पर्शवाले पांचबाण चलाये वेजाय मेघनादकी छातीमेंलगे ४५ व वेबाण उसकी छाती में गड़जाने के कारण रुधिर लगजाने से लालसर्प्पों के समान होगये ४६ तब अपने चचाके ऊपर क्रोधकर मेघनादने यमराज का दिया बहुतउत्तमबाण लिया ४७ उसको यमबाण लियेदेख लक्ष्मण जीने क्रोधकर और बाण उठाया ४८ जोकि कुवेरजीने आपआय स्वप्न में लक्ष्मणजी को दियाथा यहबाण इन्द्रादि देवता व सब दैत्योंको भी बड़े दुःखसे भी सह्य नहींथा ४९ जब दोनों जनोंने अपने अपने बाण धनुषों परचढ़ाये तो दोनों के धनुष करांकुल पक्षी के समान चूंचूं कूजने लगे ५० व दोनों जनोंके धनुषोंपर चढ़ायेहुये वेदोनों बाण खींचने पर मारेशोभाके प्रज्वलितहो उठे ५१ व धनुषोंसे छूटेहुये दोनों बाण आकाशको प्रकाशित करतेहुये आपसमें मुखसे मुखमें टक्करमार मारे बेग के गिरपड़े ५२ जबअति भयंकररूप उनदोनों बाणों का टक्कर लगातो धुआं व चिनगारियों सहित उनसे दारुणअग्नि उत्पन्न हुआ ५३ व वे महाग्रहोंके समान दोनोंबाण परस्पर एक दूसरेका बड़ेजोरसे टक्करखाय समरमें सौसौ खण्डहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े ५४ समर में अपने अपने बाण टूट टूट भूमिमें गिरेपड़े देख लक्ष्मणजी व मेघनाद दोनोंजने बहुत लज्जितहोकर फिर बहुत क्रुद्धहुये ५५ व बड़ा क्रोधकरलक्ष्मणजीने तो बरुणास्त्र लिया व मेघनादने रुद्रास्त्र व दोनोंने एकदूसरे के ऊपर चलाया ५६ तब मेघनादके चलायेहुये रौद्रास्त्रको लक्ष्मण जीके चलाये हुये बारुणास्त्र ने नष्टकरदिया तब समर बिजयीइन्द्रजीतने बड़ाही क्रोध किया ५७ व त्रिलोकीको जलानेही के लिये जानों उसने आग्नेय बाण धनुष पर चढ़ाय छोड़ा तब लक्ष्मणजी ने सौर्य्यास्त्र चलाय उसको वारण करदिया ५८ अपने अस्त्रको निवारित देख मेघनाद मारे क्रोध के मूर्च्छित होगया व उसने शत्रुओंको दारुण रूप आसुरबाण लिया ५९ इस आसुरास्त्र के चढ़ाने से उसके धनुषसे अति प्रकाशित मुद्गर कूट शूल भुशुण्डी गदा खड्ग व फरसा हज़ारों छूटे ६० तिस अस्त्रको समर में देख लक्ष्मणजीने बड़ाघोर व दारुण वजिसे कोई प्राणी न रोंकसके व वहसब शस्त्रास्त्रोंका नाश करदे ६१ ऐसा माहेश्वरास्त्र ले उससेमेघनाद प्रेरित आसुरास्त्र को रोंकदिया ६२ इसतरह दोनों जनोंका रोम-

हर्षणा युद्ध हुआ तब आकाशमें टिकेहुये प्राणियोंने लक्ष्मणजी को रोंक लिया अर्थात् अपनी अपनी रक्षाके लिये लक्ष्मणजी को घेर घेर सब खड़ेहुये ६३ जब इसतरहका महाघोर युद्ध भयङ्कर शब्दयुक्त वानरों व राक्षसों काहुआ तबउसके देखनेके लिये बहुत प्राणी स्वर्ग में आये जिनसे युक्तहोआकाश शोभितहोनेलगा ६४ व ऋषि पितर देवता गन्धर्वगरुड़ नागादि इन्द्रको आगेकर समरमें आय लक्ष्मणजी की रक्षा करनेलगे ६५ तब लक्ष्मणजी ने और बाण श्रेष्ठ धनुष पर चढ़ाय यह अग्निके समान तो स्पर्शमें था व मेघनादको बिदारण करनेवाला ६६ सुन्दर पङ्ख लगा बहुतगोल सुन्दर धार सहित अच्छी तरह बना हुआ सुवर्णसे ठौरठौर बना व जिसके लगे उसके शरीरका नाशक ६७ बड़े दुःखसे वारण करने के योग्य व बड़ेदुःख से सहनेके योग्य राक्षसों को भय पहुंचानेवाला बिषधर सर्प्पके बिषके समान देवता लोगोंसे सदा पूजित ६८ व जिससे महा तेजस्वी इन्द्रजीने देवासुर संग्राम में सब दैत्योंको जीत लियाथा ६९ वहसमरमें कभी न हाराहुआ इन्द्रका शर श्रेष्ठ अपने धनु श्रेष्ठ परनरश्रेष्ठ लक्ष्मणजी नेचढ़ाया ७० ऐसे अस्त्रको चढ़ाय धनुष खींचा इसतरह जोरसे व बड़ी सावधानता केसाथ खींचा जैसे प्रलय समयमें काल अपना दण्ड खींचता है ७१ खींचनेके समय लक्ष्मीवान् लक्ष्मणजी ने धनुष पर चढ़ाय यह अपना साधक बचन बोले कि ७२ हेवाण जो रामचन्द्रजी धर्म्मात्मा व सत्यप्रतिज्ञ व पौरुष में अपने समान दूसरे को न रखते हों तो तुम इस मेघनाद को मारडालो ७३ यह कह वाण को कानतक खींच महाबली लक्ष्मणजी ने समरमें मेघनादके ऊपर बाण छोड़ा ७४ छोंड़ने के समय शत्रुओं के हन्ता लक्ष्मणजीनेऐन्द्रास्त्रसेयोजित भी उस अस्त्रकोकिया व फिर उस अस्त्रसे कूंड़ी आदि शिरोरक्षक सहित व कुण्डल सहित मेघनाद का शिर काटकर शरीरसे बाहर कर भूमिमें गिरादिया ७५ वह रावण के पुत्रका कटाहुआ शिर रुधिर से भीगाहुआ तपाये सुवर्ण के समान भूमिमें दिखाईदेनेलगा ७६ शिर कटजानेके पीछे कवच धारणकिये व शिरोरक्षक युक्त व धनुषटूटाहुआ हाथमेंलिये मेघनादपृथ्वीपर शीघ्रही गिरपड़ा ७७ जब मेघनाद मारगया तो सब वानर व विभीषण बहुत

हर्षितहुये व हल्लाकरनेलगे जैसे देवतालोगोंने अगाड़ी वृत्रासुरके बध में हर्षितहो हल्लाकियाथा ७८ इसकेपीछे आकाश में देवता ऋषि सिद्ध गन्धर्व्व व अप्सराओंका बड़ाभारी हर्षका सन्नादहुआ ७९ मेघनादको पतितजान जीतहोनेसे बड़ेजोरसे शब्द करतेहुये वानरोंकी मारपीटसे पीड़ित राक्षसोंकी बड़ीभारीसेना सबदिशोंको भागगई ८० वानरोंकी मारसे मारेहुये राक्षस वहीं अपने आयुध छोड़छोड़ मूर्च्छितहो उठते गिरते पड़तेहुये लङ्काकीओर को बहुतभागे ८१ व बहुत राक्षसलोग तो मारेभयके नानाप्रकारके अपने आयुध डारडार सबदिशोंको भागे ८२ उनमें कोईकोई तो वानरोंसे पीड़ित लङ्काकोगये व कोईकोई जाय समुद्रमें फाटपड़े व कोईकोई जाय पर्व्वतोंकी गुहाओंमेंघुसे ८३ मेघनाद के मारजानेकेपीछे समरभूमिमें सोतेहुयेदेख यद्यपि लाखोंराक्षस उसके संगथे परन्तु एकभी न वहां दिखाईदिया सबके सब तुरन्त भाग खड़े हुये ८४ जैसे सूर्य्य अस्त होजानेपर किरण नहीं रहजाते इसीतरह मेघनादके मरतेही सबराक्षस सबओरको भागगये ८५ प्राण निकल जानेपर महाबाहु मेघनाद किरण मिटजातेपर सूर्य्यके समान व बुझे-हुये अग्निके समान मन्दहोगया ८६ व तिसके मरनेपर सबकी बड़ी भारी पीड़ा शान्तहोगई व शत्रुमारगया इससे संसार हर्षितहुआ ८७ व उसक्रूरकर्म्मा निशाचरके मारजानेपर सब देवगणसहित इन्द्रभग-वान् हर्षितहुये ८८ व आकाशमें हर्षित देवताओंके नगारोंका शब्द व नाचतीहुई अप्सराओंका व गातेहुये गन्धर्व्वोंका शब्द सुनाई देने-लगा ८९ व देवतालोग फूलोंकीवर्षा करनेलगे यहकर्म्म बड़ाअद्भुतसा हुआ व पृथ्वीकी रज जो उड़ती थी उसदुष्टात्माके मरतेही शान्तहोगई ९० व जल निर्म्मलहोगये व आकाशभी निर्म्मलहोगया देवता दानव बहुत हर्षितहुये व ये सब सम्पूर्ण संसार के भयदायी उसके मरनेपर वहांआये ९१ व देवता दानव गन्धर्व्वादि एकत्रहो कहनेलगे कि अब विजयीहोकर ब्राह्मणलोग विज्वरहों व उनके हृदयके दुःखबीते व वे निर्भयहो जहांचाहें वहांबिचरें ९२ व तिसमहाबली को समरमें मरा पड़ादेख वानर लोग हर्षितहो बहुत आनन्दितहुये ९३ व विभीषण हनुमान् व जाम्बवान् ये सब विजयहोनेसे अतिप्रसन्नहो लक्ष्मणजीकी

स्तुति करनेलगे ९४ व अवसर पाय वानरलोग किलकारीमारने व नाद करने व गर्ज्जनेलगे व लक्ष्मजीको घेर घेर सब समीपही खड़ेहुये ९५ व पूंछ उठाय उठायपटकपटक व तालदेनेलगे व लक्ष्मणजीकीजयहोतीहै ऐसाबचन सबको सुनानेलगे ९६ व एकदूसरे वानरको हर्षित व प्रसन्न मनहो लपटाय लपटाय वानरलोग रामचन्द्रजी की आश्रयकी समीचीन कथा कहनेलगे ९७ ॥

हरिगीतिका ॥

प्रियसुहृद लक्ष्मणकर कठिन अतिकर्म्म सुनि सबदेवहू ।
भे सुखी अरु घननाद बध लषि परमहर्ष कहेवहू ॥
जय जयति लषन उदारकीरति इमि बखानत गावहीं ।
अरु कहत बहुचितलाय निजमन और आन सुनावहीं १ । ९८ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेमेघनादबध
एकनवतितमस्सर्गः ॥ ९१ ॥

रुधिरसे सबअङ्गभीगेहुये लक्ष्मणजी समरमें इन्द्रकोभी जीतनेवाले मेघनादकोमार बहुत हर्षितहुये १ व जाम्बवान् हनुमान् व सब और वानरोंको सङ्गलेकर २ व बिभीषण और हनुमान्जीको भेंट जहाँ सुग्रीव रामचन्द्रजी थे वहाँआयपहुँचे ३ फिर रामचन्द्रजीके बनाय निकट जाय व प्रणामकर लक्ष्मणजी भाईके समीप बैठगये जैसे इन्द्रके समीप बामनजी बैठतेथे ४ महातेजस्वी लक्ष्मणजी अपनी प्रसन्नताही से अति घोर मेघनादकाबध जानो प्रथमहीसे कहतेथे परन्तु फिर सब वृत्तान्त कहा ५ व फिर बिभीषणजीने अपनेमुखसेकहा कि महात्मालक्ष्मणजीने मेघनाद का शिर समरमें काटडाला ६ लक्ष्मणजीके हाथों से मेघनादका बधसुन महाबीर्य्य श्रीरामचन्द्रजी बहुत हर्षितहुये व बोले ७ हे लक्ष्मण हम बहुत प्रसन्नहुये तुमनेबड़ाभारी कर्म्मकिया जो मेघनादको मारा अब इसके मारजाने से रावणको परास्तही समझो ८ यह कह लक्ष्मणजी का शिर सूंघलिया तब कीर्त्ति बढ़ानेवाले लक्ष्मण जी अति मानपानेसे कुछलज्जितहोगये परंतुबीर्य्यवान् रामचन्द्रजीने जबरदस्ती गोदमें बैठालिया व मारेस्नेहके छपटालिया ९ व फिर अच्छीतरह उ-

त्सङ्गपर बैठाय बार बार छपटाया व फिर बड़ेज़ोर से लपटाया व भाई लक्ष्मणको फिर देखनेलगे १० देखातो अङ्गोंमें अभीतक बाणोंकी गाँसीगड़ीथीं व ऐसाकोई अङ्ग न था जहाँघाव न लगाहो इससे लक्ष्मणजी बारबार साँसेंलेतेथे इसतरह दुःखसे सन्तप्त व निश्वास लेनेसे पीड़ित ११ लक्ष्मणका फिर शिरसूँघा व जल्दी जल्दी सबअङ्गोंपर फिर हाथ फेरा व बहुत समझायबुझाय पुरुषश्रेष्ठ रामचन्द्रजी फिर लक्ष्मणजी से बोले १२ भाई तुमने बड़ादुष्कर कर्म्मकिया व बड़ेकल्याणकाकामकिया जो मेघनादको मारडाला क्योंकि आजपुत्रके मारजानेपर हमने रावण को मराहुआ समझा १३ आज अब हम बिजयीहुये क्योंकि दुष्टात्मा इतना बड़ाभारीशत्रु तुमने मारडाला हे बीर बड़े भाग्यकी बातहै कि तुमने दुष्ट रावणका समरमें १४ दहिनाहाथ आज काटलिया क्योंकि वहदुष्ट रावण इसी मेघनादहीके भरोसे बैठाथा व बिभीषण व हनुमान् ने भी रणमें बड़ाभारी कर्म्म किया १५ क्योंकि तीनदिन व तीन रात्रि बराबर युद्ध होता रहा व तुम तीनों बराबर युद्ध करतेरहे तब जाय इस दुष्टको मारपाया १६ इससे हमको शत्रुरहित तुमने करदिया जैसेही पुत्रको मरासुनेगा बड़ीभारी सेना लेकर रावण तुरन्त आवेगा १७ व जैसेही पुत्रके बधसे सन्तप्तहोकर आतेहुये रावणको हम देखेंगे वैसेही उसे मारडालेंगे १८ हे लक्ष्मण तुमको नाथपाय इन्द्रसम तेजस्वी ऐसे शत्रुके मारजाने पर अब सीता भी हमको मिलजायँगी व पृथ्वीभी मिलेगी १९ भाईको इसतरह समझाय व लपटाय हृदयमें लगाय श्रीरामचन्द्र जी आनन्दित हो सुषेणजीसे बोले २० कि जैसा करनेसे लक्ष्मणजी स्वस्थचित्त होजायँ घावोंकी पीड़ा जातीरहै वैसा तुमकरो २१ लक्ष्मणजी व विभीषण दोनों जनोंको बनाय अच्छा करदो व ऋक्षों वानरोंकी सेनाओं में जो बड़े बड़े शूर यूथपहैं २२ उनको भी व जो कोई अन्यत्र युद्धकरतेहों व उनके बाणोंके लगनेसे भी घावहुयेहों तो उनको भी विशल्य व पीड़ा रहित करदो २३ रामचन्द्रजीने जब इसतरह कहा तो वानरोंके यूथप सुषेणजीने लक्ष्मणजीको नाश दियासो बड़ी उत्तम औषधका नाशथा २४ क्योंकि उसके सूंघतेही लक्ष्मणजीके अङ्गोंसे बाणोंकी गांसियां निकल गईं व घाव पूरआये व पीड़ा भी जातीरही घावोंके चिह्नभी मिटगये २५

फिररामचन्द्रजीकी आज्ञासेविभीषणादिसबसुहृदोंकी भीचिकित्सासुषेणनेकी२६ व लक्ष्मणजीकी सबपीड़ा जातीरही क्योंकि बाणोंकेसबघावमिटगयेइससेक्षणमात्रमेंहीज्वररहितहो लक्ष्मणजी अत्यानन्दितहुये२७॥

हरिगीतिका ॥

तब राम सुगल विभीषणार्क्षप अति बली प्रमुदित भये।
लषि लषनबीरहि बिगतरोग बिहीन ब्रण सबदुख गये॥
सकल वानर सैन्य प्रमुदित ऋक्षगण बिहसे भले।
सबलोक भयहु विशोक शोक बिहाय निजनिजपुरचले १।२८॥
सुनि समरमहँ पुरुहूत शत्रुहि मेघनादहि मारनो।
रघुनाथ कोशलनाथ लषनहि बहु प्रशंस्यहु पारनो॥
तुम कीन दुष्करकर्म्म लक्ष्मण अपर को करिहैं कहो।
सुग्रीव वानर पीवहू बहु मुदित सो सुनि सुख लहो २।२९॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेद्विनवतितमस्सर्ग्गः॥ ९२॥

वहां मेघनादके बधकी खबर रावणके मन्त्रीलोगोंने राक्षसोंके मुखोंसे सुन सब सत्पुरुषों के अनादर करनेवाले रावणसे जाय कहा १ हे महाराज बिभीषणको सहायककर लक्ष्मण ने समर में तुम्हारे पुत्रको मारडाला यह हाल हमलोगोंने भी देखाहै २ सो कुछनहीं मेघनादशूर होने के कारण कभी समरमें पराजित तो हुआही न था इससे अतिशूर लक्ष्मण के हाथोंसे मारागया व समरमें बाणोंके लगने से प्राण छोड़ वह तो परमधामको गया अब यहां चाहे जो हो उसने समरमें बाणोंसे लक्ष्मणको भी बहुत प्रसन्न करदियाथा क्योंकि उनके भी अङ्ग बिनाघावके कोईनहीं बचे ३ इन्द्रकोभी पराजित करनेवाले अपनेपुत्रकादारुणबध सुन रावणअतिदुःखित हुआ व मूर्च्छित होगया४ फिरबड़ीदेरके पीछेजब मूर्च्छा जागी तो राक्षसोंका राजारावण पुत्रके शोक से आकुलहो बड़ी ब्याकुलीसे बिलाप करनेलगा ५ व कहनेलगा कि हा राक्षस सेनाओंके मुख्य महारथ हमारेपुत्र अरे वत्स समर में इन्द्रको जीत अब आज लक्ष्मणके हाथसे कैसेमरे ६ अयिप्रिय तुमतोक्रुद्धहोकरकाल व यमराज को भी वाणोंसे चाहते तो मारडालते व मन्दराचलके भी शृङ्गभिन्नकर-

देते फिर समरमें लक्ष्मणको मारडालनेमें क्या था ७ जिसहेतुसे तुमभी आज मृत्युको प्राप्तहुये इससे हमने आज बहुतअच्छीतरहसे जाना कि यमराजदेव भी कोई बड़ेजीवहैं जिन्होंने समय पाय तुमको भी मरवा-यही डाला ८ जो अपने स्वामी के अर्त्थ समर में माराजाता है उसके लिये व सब धर्म्मयुद्धकरनेवाले सुयोधोंकेलिये यह स्वर्गका मार्गलगा है सब उसीकी होकर स्वर्गीहोतेहैं ९ आज इन्द्रजित्को समरमें मरा देख सब देवगण व सब लोकपाल व सब महर्षिलोग निर्भयहो सुखसे सोवेंगे १० आजअकेले इन्द्रजीतहीके न रहनेसे तीनोंलोक व बन पर्ब्बत सहित सब पृथ्वी हमको शून्यही दिखाई देतीहै ११ आज जनाने में राक्षसोंकी कन्याओंका शब्द हमसुनेंगे जैसे बड़े हाथीके पकड़जाने या मारजाने पर पर्ब्बतकी गुहामें हथिनियोंका शब्द सुनाईदेताहै १२ हे शत्रुओंके सन्तप्त करनेवाले यौवराज्य व लङ्का व सब राक्षस व माता व हम व अपनी भार्य्याको छोड़ कहां चलेगये १३ हे बीर जब हम यमपुर को जाते तब तुमको चाहियेथा कि हमारे सब प्रेतकार्य्य करते परन्तु तुमने उसके बिपरीत किया जो हमसे पहिले ही चल दिया १४ सो तुम सुग्रीव लक्ष्मण व रामचन्द्र के जीतेहीजी हमारे हृदय में बाण रूप गड़तेहुये इन लोगोंको बिना उखाड़ेही हम लोगोंको छोड़ कहां चलेगये १५ इसी आदि बिलाप करतेहुये व पुत्रके शोकसे अत्यन्त पी-ड़ित रावणके पुत्रके शोकसे उत्पन्न बड़ाभारी कोपहुआ १६ अपने स्व-भावहीसे जलतेहुये महाकोपी रावणको पुत्रके शोकसे उत्पन्न मानसी ब्यथाओंने औरभी अधिक जलायदिया जैसे बड़ेघाममें किरण सूर्य्यको औरभी सन्तप्त करदेतेहैं १७ कोपसे बड़ीजँभोई लेतेहुये रावणकेमुखसे प्रत्यक्षमें प्रज्वलित परन्तु सधूमअग्निकी ज्वालाऊपरको निकली जैसे युद्धकेसमय वृत्रासुरके मुखसे निकली थी १८ पुत्रके बधसे सन्तप्तहो शूररावण क्रोधके बशीभूतहो अपनीबुद्धिसे मेघनादके मरनेका कारण जानकीजीको जान इससे उसे सीताजीका बधहीकरना रुचा १९ रा-वणके नेत्र एकतो स्वभावहीसे लालथे दूसरे फिर क्रोधाग्निसे औरभी लालहोगये इससे उसकेनेत्र बहुतभयङ्कर होगये २० व उसका रूप एकतो स्वभावहीसे भयङ्करथा फिर क्रोधाग्निसे मूर्च्छित होगया इससे

उसकारूप क्रोधकियेहुये रुद्रभगवान्‌के रूपकेसमान होगया २१ क्रोध कियेहुये रावणके नेत्रोंसे लाललाल आंशुओंके बूंद गिरनेलगे जैसे बरतेहुये दोदीवोंसे दीप्तिसहित तेलके बूंदगिरें २२ व समुद्र मथतेहुये दानवोंके खींचेहुये मन्दराचल यन्त्ररूपके शब्दकेसमान दांत कटकटाते हुये रावणके दांतोंका शब्द सुनाईदिया २३ चराचर सबसंसारके खाने को इच्छा कियेहुये यमराजके समान क्रोध कियेहुये सब दिशोंकी ओर देखतेहुये रावणकेसमीप उससमय कोईभी राक्षस न आसके २४ तिसकेपीछे परमसंक्रुद्ध राक्षसोंकाराजा रावण राक्षसोंको समरमें टिकाने केलिये राक्षसोंके बीचमेंबोला २५ कि हमने हज़ारोंबर्षतक परमतप करके जबजब तपस्या समाप्तहुई तबतब ब्रह्माजीको सन्तुष्टकिया २६ तिस तपस्याके फलकेउदयसे व ब्रह्माजीके प्रसादसे हमको न दैत्योंसे भयहै व न कभी देवताओंसे २७ क्योंकि ब्रह्माजीका दिया हुआजो सूर्य्यवत्प्रकाशित हमारा कवचहै जबजब हमसे व देवताओं दैत्योंसे युद्ध हुयेहैं तबतब कभीनहीं वह छिन्नहुआ २८ तिससे आज जबहम रथपर चढ़कर समरमेंजाय खड़ेहोंगे तो हमारेसामने कौनआवेगा चाहें साक्षात् इन्द्रभीहों २९ जो बड़ाभारी धनुष व बाण देवताओं व दैत्योंकेसाथ हमको लड़तेदेख प्रसन्नहोकर ब्रह्माजीने हमेंदियाहै ३० आज महासंग्राम में रामचन्द्र व लक्ष्मण के मारनेकेलिये मङ्गलके हज़ारोंबाजे बजातेहुये आपलोग वह हमारा धनुषउठालावें ३१ इतनाकह अतिशूर भी रावण पुत्रकेबधसे सन्तप्तहो क्रोधको प्राप्तहो अपनेमनसे सीताजीकोही पुत्रादि बधकाहेतु जान जानकीजीके मारडालनेका बिचार करनेलगा ३२ इससे अतिभयङ्कर रावणने भयङ्कररूप राक्षसोंकी ओरदेखा व दुःखितहो उन दुःखित राक्षसोंसे बोला ३३ कि हमारे पुत्रने माया से वानरों के मोहनेके लिये किसी बस्तुको मारडाला था व उसी बस्तुको सीता कर उनको दिखादिया था ३४ सो वह बात हम आज सत्यहीकरेंगे क्योंकि हमको प्रियहै इससे क्षत्रियोंमें नीच रामचन्द्रहीमें जी लगाये हुई वैदेहीको मारडालेंगे ३५ मन्त्रियोंसे ऐसाकह बड़ीजल्दीके साथउसने अपनी खड्गपर हाथफेरा ३६ व सबगुण संयुक्त धुलेहुये वस्त्रके समान उज्ज्वल खड्गमिआन से निकाल अपनी भार्य्या व मन्त्रियोंको संगले

वहांसे झट उठखड़ा हुआ ३७ व पुत्रके शोकसे व्याकुलचित्त हो क्रोध करखड्ग हाथमेंले वहांको चला जहां जानकी जी रहतीथीं ३८ रावण को इसतरह क्रोध कियेहुये जातेदेख राक्षस लोग आपस में लपटाय लपटाय बड़ा हल्ला कर फिर धीरे धीरे एक दूसरे से कहने लगे ३९ आज इनकोदेख रामलक्ष्मण दोनोंभाई बहुत व्यथितहोंगे क्योंकि इसी तरहका क्रोधकर तोइन्होंने सबलोकपालोंकोजीतलियाहै ४० व लोक-पालोंके सिवाय बहुत शत्रुओं को समरों में इन्होंने मार गिरायाहै व तीनों लोकोंमें जितने रत्नहैं सब जबरदस्ती छीनलेआय येभोगतेहैं ४१ व पृथ्वीमें बिक्रममें व बलमें भी इनके समान और कोई दूसरा नहींहै राक्षसलोग इसतरह बतलाते चलेही जातेथे किमारे क्रोधके मूर्च्छित रावण अशोकबनिका में बैठीहुई जानकीजीकी ओरको झपटा ४२ य-द्यपि हितकारी सुहृदोंने रावणको रोंकाभी परंतु क्रोधकर रावणफिर भी दौड़ाही चलागया जैसेक्रोधकर मंगलग्रह आकाशमें रोहिणी को दौड़ाथा ४३ व उधरसे राक्षसियोंसेरक्षित जानकीजीनेभी नंगीतलवार हाथमें लिये व क्रोधकेमारे मूर्च्छित रावणकोदेखा ४४ व राक्षसियोंसे सुना कि इसको सुहृद्लोग रोंकतेथे परंतु तबभी यहनहीं लौटा व खड्ग लिये चलाही आताहै इससे जानकीजी बहुत व्यथितहुईं ४५ व राम-चन्द्रजीके बियोगसे तो जानों सीताजी दुःखितहीथीं अबअधिक दुःखित हो बिलाप करतीहुई बोलीं जिसतरहके बेगसे क्रोधकिये यहहमारीओर दौड़ाआताहै ४६ इससे तो यही विदित होताहै कियद्यपि हमसनाथा हैं परंतु यह दुष्ट हमें अनाथाके समान मारडालेगा ४७ क्योंकि अपने पतिमेंही चित्तलगायेहुई हमसे बहुतबार इसने कहाकि हमारी भार्य्या होवो परन्तु हमने उसके वचन नहीं अंगीकारकिये ४८ अबजिस्से कि कि हम इसके निकट नहीं प्राप्तहुईं इससे हमारी ओरसे यह निराश होगयाहै इसीसे क्रोध व मोहसे युक्तहो आजहमको मारने आयाहै ४९ अथवा नरव्याघ्र रामलक्ष्मण दोनों भाइयोंको हमारे निमित्त इस दुष्ट नीचने आजमारडाला होगा ५० क्योंकि अपनेकिसी प्रियकेलिये हल्ला करतेहुये व हर्षित बहुत राक्षसोंका बड़ाभारी व भयंकरनादहमनेसुना था ५१ यदिऐसाहुआकि हमारे निमित्त उनदोनों महाराज कुमारों का

बिनाश हुआ तो हमको धिक्कार है अथवा पुत्रके शोक के मारे इस दुष्ट ने रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी को न मार पाया होगा तो पाप निश्चय यह भयंकर राक्षस हमीको मारडालेगा ५२ व क्षुद्रस्वभाववाली हमने जो हनुमान्का वचननहीं माना किइस दुष्टकी मारसेतबतक तो बचीही हुईथीं हनुमान् की पीठपर चढ़कर चलीगईहोतीं ५३ तो आज अपने पति की गोदमें बैठीहुई न शोचकरतीं ५४ खैरअब और तो जोहुआसो हुआ व जोहोगा सोहोगा परतु हमजानती हैं कि जैसेही कौशल्याजी अपनेपुत्रको मारगये हुयेसुनेंगी वैसेही उनकाहृदय फटजायगा क्योंकि उनके एकही यही रामचन्द्रही पुत्रहैं ५५ क्योंकिवेरोदनकरनेके समय इन महात्मा श्रीरामचन्द्र अपनेपुत्रकाजन्म व बालपन व ज्वानी व धर्म्म के कार्य्य व रूपका स्मरण करेंगी ५६ व पुत्रके मारजानेपर निराशहो बनाय मूर्च्छितहो फिरकिसी तरह उनके लिये श्रद्धादि करकराय आप यातो अग्निमें गिरकर मरजायँगी अथवा जलमेंगिरकर डूबमरेंगी ५७ दुष्टा पापिनी कुबरी मन्थराको धिक्कारहै जिसकेनिमित्त कौशल्याजीको ऐसाशोकहोगा ५८ चन्द्रमा बिना राहुग्रहके बशीभूत पड़ी रोहिणीके समान बिलाप करतीहुई तपस्विनी जानकी जी को इसतरह देख ५९ रावणका मन्त्री शीलवान् व पवित्रचित्त व बड़ा बुद्धिमान् सुपार्श्वनाम कि जिसको अन्य मन्त्रियोंने रोंकाभी कि अब तुम इसविषयमें कुछ न कहो तथापि वह धर्म्मात्मा रावणसे यहबोला ६० हेरावण आपसाक्षात् कुवेरजी के छोटेभाई होकर क्रोधके मारे धर्म्मको छोड़ वैदेहीको कैसे मारा चाहतेहो ६१ हेराक्षसेश्वर हेवीर वेदविद्या के पारगन्ता व सदा अपनेकर्म्ममें युक्तहोकर भला स्त्रीकावध तुमकैसे अच्छा मानतेहो ६२ हमारीजान तो अति रूपवती जानकीको प्रतिदिन देखाकरो और यह अपना क्रोध हमलोगों सहित चल उन्हीं रामचन्द्रके ऊपर छोड़ो ६३ आज कृष्णपक्षकी चतुर्दशीहै इससे अभी उठिये व तैयारीकीजिये और कल्ह अमावास्याको हमलोगोंकेसाथ विजय करनेकेलिये यात्राकीजिये ६४ अभी जानकीको मारडालनेसे क्या पावोगे तुमतो बड़ेशूर धीमान् हो इससे खड्गधारणकर व श्रेष्ठ रथपर सवारहो समरमेंजाय रामचंद्र व लक्ष्मणको मार पीछेसे मैथिलीको प्राप्तहोगे ६५ ॥

कुण्डलिका ॥

दुष्टात्मा रावण सुहृद कथित धर्म्म युत वैन ।
सुनि निजमन गुनिपुनि हृदय धरिगवन्यो निजऐन ॥
धरि गवन्यो निज ऐन बहुरि अति वीर्य्य महाना ।
सङ्कलीन सब हितू सभा पैठ्यहु बलवाना ॥
दुःखित ह्वै बहु भांति बहुरि ब्याकुल करि स्वात्मा ।
कहनलगा सब पाहिँ कछू रावण दुष्टात्मा १ । ६६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रिनवतितमस्सर्गः ॥ ९३ ॥

रावणराजा सभामेंजाय दीन व परम दुःखितहो आसनपर बैठा व ऊधीसाँसें लेनेलगा जैसे क्रुद्धसिंह ऊधीसाँसें लेताहै १ व पुत्रकेदुःखसे अतिदुर्ब्बल व दुःखीहो हाथजोड़ महाबली रावण सब अपने सेनापतियोंसे बोला २ कि आप सबलोग हाथीघोड़े रथ व पैदललोगोंकी चतुरङ्गिनी सेनासंगले शीघ्रही जावो ३ व हर्षितहो वर्षाकालके मेघों के समान बाणोंकी वर्षाकर अकेले रामचन्द्रहीको घेरकर मारडालो ४ अथवा जो आज तुमलोग रामको समरमें न मारसको तो तुमलोगों के बाणोंसे भिन्नअंग रामचन्द्रको प्रातःकाल हमतो मारहीडालेंगे ५ राक्षसेन्द्रके ऐसे बचन अंगीकारकर व सब राक्षसलोग नानाप्रकार की सेनाओंके संग शीघ्र चलनेवाले रथोंपर चढ़चढ़ चले ६ व समरमें पहुंचतेही परिघ पट्टिश बाण खड्ग फरसादि शरीर नाशनेवाले आयुध वानरोंके ऊपर छोड़नेलगे ७ व वानरलोग राक्षसों के ऊपर वृक्ष व पर्व्वतोंके शिखर तोड़ तोड़ उखाड़ उखाड़ फेंकनेलगे वह महाभयङ्कर संग्राम सूर्य्योदय होतेहोते राक्षसों व वानरोंका होनेलगा ८ व राक्षस व वानर बिचित्र गदापरशु भाला खड्ग परशुआदि परस्पर एकदूसरे को मारनेलगे ९ इसतरहका वानरों व राक्षसोंका संग्राम होनेलगा तो मारे रुधिरके बहुतभी जो धूलि वहां उड़रहीथी वह रुधिरसे बनाय भीगगई १० व रुधिरकी नदियांबहचलीं जिनमेंमरे व टूटेपड़ेहुये हाथी व रथहीतो किनारेथे व बाण मछलियों के स्थानपर थे व ध्वजा वृक्षरूप थे व पुरुषोंकी जो लोथैंपड़ीथीं वही ठौरठौर घाटरूप होगये ११

तिसके पीछे सब वानर रुधिरसमूहसे ओदेहोकर ध्वज ढाल रथ घोड़े व नानाप्रकारके आयुध १२ समरमें कूदकूद तोड़ने फोड़नेलगे १३ व फिर वानरलोग अपने तीक्ष्णदांतों व नखोंसेराक्षसोंके बालकान मस्तक व नाक आदिचीड़ने फाड़नेनोचनेलगे १४ एकएकराक्षसके ऊपरसौसौ वानरश्रेष्ठ दौड़ते थे जैसे फरेहुये एक वृक्षके ऊपर सैकरों पक्षीदौड़तेहैं १५ उससमय फिर पर्व्वताकार राक्षस लोगवानरोंको बड़ीबड़ी गदा-ओंसे व भालों व फरसोंसे मारनेलगे १६ तब राक्षसोंकी मारीहुई वानरोंकी बड़ीभारीसेना सबकेशरण्य रामचन्द्रजीकी शरणाकोगई १७ तब महावीर्य्यवान् श्रीरामचन्द्रजी धनुष उठाय राक्षसोंकी सेनाके मध्यमें आय बाणोंकीवर्षा करनेलगे १८ बाणोंके अग्निसे जलातेहुये श्रीराम-चन्द्रजीके सामने राक्षसलोग न आसके जैसे तपतेहुये सूर्य्यके सामने मेघनहींजासक्ते १९ रामचन्द्रजीके कियेहुये अति कठिनकार्य्य राक्षसोंने समरमेंदेखे २० महाअनीको चलातेहुये व महारथोंको मारते काटते हुये रामचन्द्रजीको राक्षसोंने न देखा जैसे बनमेंचलताहै पर पवनकहीं दिखाईनहींदेता २१ छिन्नभिन्न व बाणोंसेजलीहुई व शस्त्रोंसेपीड़ितहो सेनातो रामचन्द्रजीकी मारीहुई राक्षसोंकी नज़रमें पड़ती परंतु उनका रूप राक्षसनहींदेखतेथे २२ शरीरोंमेंमारतेहुये रामचन्द्रजीको राक्षस लोग नहीं देखते थे जैसे इंद्रियों के अर्थोंमें टिकेहुये भूतात्माको प्रजा लोग नहींजानते २३ देखो ये राम हाथियोंकी सेनाको मारतेहैं व ये महारथोंको मारतेहैं व ये घोड़ों व पैदरोंको मारतेहैं २४ ऐसा कहकह वे राक्षसलोग रामके सदृश आपसही में राक्षसोंकोही राम मान मारने लगे २५ परंतु सेनाको भस्मकरतेहुये भी श्रीरामचन्द्रजीको उन्होंनेन देखा क्योंकि महात्मा श्रीरामचन्द्रजी ने अपने अत्युत्तम गान्धर्व्वास्त्रसे उनको मोहित करदियाथा २६ इससे राक्षसलोग समरमें हज़ारोंराम देखनेलगे फिरकुछघड़ीमें महारथी श्रीरामचन्द्रजीको अकेलेहीदेखा २७ फिर लुकेठके समान घूमतीहुई रामचन्द्रजीके धनुषकी कोटि तो देखतेथे परंतु श्रीरामचन्द्रजीको नहींदेखपाते २८ फिर रामचन्द्रजीका शरीरही जानोंनाभीहै जिसका बलहीज्वालाहै जिसके आरागज मासोंकाबाहैं व प्रत्यञ्चा और छलकाशब्दही जानोंतेजहै व बुद्धिहीजानों गुणोदयहैं २९

दिव्यास्त्रही जानो अस्त्रबाणके अंतहैं इसतरहका रामरूप चक्र राक्षसों नेदेखा जैसे प्रजा कालचक्रकोदेखतीहैं ३० दशसहस्र तो रथोंकीअनी व अठारहसहस्र अतिबेग हाथियोंकी अनी ३१ व चौदहहज़ार असवारोंकी व दोलाप पैदर राक्षसोंकीअनी ३२ इतनी कामरूपी राक्षसों कीसेना पौने चारही घड़ीमें अकेले रामचन्द्रजी ने मारडाली ३३ तब हाथी घोड़े रथ ध्वजपताकादि हत होजानेपर मारने से बचीहुई सेना लङ्कको भागगई ३४ उन हाथी घोड़े रथ पैदरोंके मरेहुओं के संयुक्त होनेसे वह रणभूमि क्रोधकियेहुये महात्मा रुद्रजीके खेलनेकी भूमिही के समानहोगई ३५ तब देवता गन्धर्व सिद्ध व परमर्षि लोग बहुत अच्छाबहुतअच्छा यह कह कह रामचन्द्रजी की प्रशंसा करनेलगे ३६ तिसके पीछे धर्म्मात्मा श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीव बिभीषण हनुमान् ३७ जाम्बवान् मैन्दद्विविदादि वानरोंसेबोले कि इसतरहका अस्त्र कि तो हमारेहै वा महादेवजीके ३८ ॥

दोहा ॥

अस्त्रशस्त्र महँ श्रम रहित राम महात्मा मारि ।
राक्षस सेना कहँ सुरन सोंस्तुत भे गतहारि १ । ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुर्न्नवतितमस्सर्गः ॥ ६४ ॥

असवार चढ़ेहुये हज़ारों हाथी व असवार सहितही हज़ारों घोड़े व ध्वज सहित घोड़े जुते व असवार चढ़े हुये हज़ारों रथ १ व गदा परिघों से लड़ने वाले हज़ारों राक्षस व सुवर्ण के चित्र बिचित्र ध्वजवाले व यथेष्टरूपधारी और भी हज़ारों राक्षस २ रावण के भेजे हुये इन सबों को सरलकर्म्मकारी रामचन्द्रजी ने तप्त सुवर्ण से भूषित तीक्ष्ण बाणों से मारडाला ३ तिन सबको मारे हुये देख व सुनकर भी मारने से बचे हुये निशाचर व राक्षसियां भी एकत्र बैठ दुःखितहो मारे चिन्ता के व्याकुल होगई ४ उनमें बहुतसी तो आप बिधवा होगईं थीं व बहुतों के पुत्र मारेगये थे इससे सब चिल्लाती थीं व बहुतों के और भाई बन्धु मारेगये थे येसब दुःखित हो एकत्र बैठ रोदन व बिलाप करने लगीं ५ भला अंधऊ कुंआ के समान पेटलिये वह महाबृद्धा शूर्पनखा

काम समरूप वाले रामचन्द्रजी के निकट कैसे प्राप्त हुई ६ बड़े आश्चर्य्य की बातहै कि सुकुमार अङ्गवाले व महासत्ववाले व सब प्राणियों काहित करनमें तत्पर ऐसे रामचन्द्रजीको देख लोकभरसे मारहीडालने के योग्य व हीन रूपवाली उसने कैसे अपनाको उनकीस्त्री बनायाचाहा वह उनके योग्य कबहै ७ हमलोग कहती हैं कि भला गुणवान् महापराक्रमी प्रसन्नचित्त रामचन्द्रजीसे सब गुणोंसे हीन व दुष्टमुखवाली वह कैसे कहसकी कितुम हमारे पतिहोवो ८ कुछ नहीं हमतो जानती हैं कि इन लङ्का निवासियों की अल्प भाग्य से महावृद्ध सब बाल जिसके उजले होगय हैं ऐसी शूर्पनखा ने जो रामचन्द्रजी से ९ ऐसा अकार्य्य करने को कहा तो वह सबलोगों के हसने के योग्यहै क्योंकि संसार में इससे निन्दित कौनसा कर्म्म है यह सबजो रामचन्द्रजीका अपमान उसने किया तोसब राक्षसों के व खर दूषण के बिनाशही के लिये किया नहीं तो रामचन्द्र के योग्यरूप न धारण किये वह कैसे ऐसा कहती १० व उसीके निमित्त रावण ने रामचन्द्रजी से यह बड़ा भारी बैर किया व अपने व अपने परिवार के नाश कराने के लिये रावण सीताको यहां लाया ११ सो अब जनकात्मजा सीताजीको रावण पाताभी नहीं व्यर्थ बलवान् रामचन्द्रसे बैर भले होगया जिस बैरका नाशही नहीं होसक्ता इससे साफ जान पड़ता है कि बैदेही के निमित्त रावणभी अवश्यही मारा जायगा १२ क्योंकि बैदेही के लेनेकी इच्छा से विराध राक्षस वहांगयाथा परन्तु रामचन्द्रजी ने एकही बाणसे उसे मारडाला बसअब दृष्टान्त देनेकीकुछ आवश्यकता नहीं इसीतरह रावण को भी मार डालेंगे १३ देखो जन स्थानमें भयङ्कर कर्म्म करने वाले चौदह सहस्र राक्षसों को अग्निसमान प्रज्वलित बाणों से अकेलेही रामचन्द्रजी ने मारडाला १४ व समरमें खर दूषण और त्रिशिरा को भी सूर्य्यवत् प्रकाशित बाणोंसे मारडाला बस अब दृष्टान्त देनेकीकुछ आवश्यकता नहीं १५ तिसके पीछे योजन भर लम्बी बाहें लगाये रुधिर पीनेवाला कबन्धभी वहां पहुंचा व घोरनाद करने लगा उसे भी उन्होंने मारडाला बस अब दृष्टान्त देनेकी कुछ आवश्यकतानहीं १६ व बड़े भारी बलवान् इन्द्रकेपुत्र वालिको रामचन्द्रजीने मारडाला बस

दृष्टान्त देनेकी कुछ आवश्यकता नहीं १७ देखो दुःखित हो व भग्न मनोरथ होकर सुग्रीव जी ऋष्यमूक पर्व्वत पर बसे रहते थे तिनको राज्य दिला दिया बस दृष्टान्त देने की कुछ आवश्यकता नहीं १८ व धर्म्म अर्थ सहित व सब राक्षसोंका हितकारक बचन विभीषणजीने कहा परन्तु अज्ञानके मारे रावणको नहीं रुचता १९ जो रावण विभीषणके बचन करे तो दुःखके मारे पीड़ित लङ्का श्मशानभूमिके समान न होजाय २० देखो महाबली कुम्भकर्ण को रामचन्द्रजी ने मारडाला व अति दुर्द्धर्ष अतिकायको लक्ष्मणजी ने मारडाला २१ व परमप्रिय पुत्र मेघनाद को भी मारा हुआ सुन रावण नहीं समझता व हमारा पुत्र हमारा भाई हमारा पति भी रणमें मारागया इसतरह का शब्द सब राक्षसियों के प्रतिसमूह में सुनाई देनेलगा २२ देखो अति शूर रामचन्द्रजीने रथ घोड़े व हज़ारों हाथी भी रणमें मारडाले व बहुत पैदर राक्षसोंको भी मारडाला २३ हमतो जानतीहैं कि रामचन्द्र का रूप धारणकिये कितो रुद्र भगवान् हमलोगोंको मारडालते हैं वा श्री विष्णु भगवान् वा सौ अश्वमेध यज्ञ करनेवाले इन्द्रजी अथवा यमराज आपही मूर्त्ति धारणकरके मारतेहैं नहींतो हम जानतीहैं कि इनसबोंके स्वामी ये रामचन्द्र औरही कोईहैं क्योंकि इन सबमें ऐसी सामर्थ्यनहीं है नहींतो अबतक कवन कुम्भकर्णादिकोंको मारडालते २४ हमसबोंके पतियोंको तो रामचन्द्रजीने मारहीडाला इससे हम भी अपने प्राणोंसे निराश होगईहैं व भयमिटानेका उपाय कोईभी नहींदेखतीं इससे अनाथ हो बिलाप करतीहैं २५ महावरदान पायाहुआ शूर रावण रामचन्द्रजी के हाथसे उठी यहबड़ो भयङ्करभयको नहींसमझता २६ परन्तु जैसेही रामचन्द्रजीके सम्मुख रावण समरमें जायगा वैसेही रामचन्द्रजी मारही डालेंगे क्योंकि देवता गन्धर्व्व पिशाच व राक्षसोंमें ऐसा कोई नहीं जो उससमय रावणकी रक्षाकरले २७ क्योंकि रावणके प्रति रणमें जो उत्पात दिखाईदेतेहैं व सबयहीसुचित करातेहैं कि समरमें रामचन्द्रजी की द्वारा रावणका बधहोगा २८ व ब्रह्माजीने प्रसन्नहोकर जो बरदान रावणको दियाहै उसमें देवता दानव व राक्षसोंसेही अभयदानहै मनुष्यों से तो अभय रहना इसने मांगाही नहीं २९ सो अब हम सब राक्षसों

व रावणके भी प्राणोंके नाश करनेवाली यह मनुष्योंसेही उत्पन्न भय मानतीहैं बस इसीसे सबका बिनाशहोगा ३० क्योंकि इस बली राक्षस रावणसे पीड़ित होकर देवतालोगोंने प्रकाशित तपस्यासे युक्त ब्रह्माजी की पूजा की है ३१ इससे देवताओंके हितके लिये महात्मा ब्रह्माजीने सब देवताओंसे यह कहाहै कि ३२ अब इससमयसे लेकर बहुत दिनों तक सब दानव व राक्षस भययुक्तहो पृथ्वीपर इधर उधर मारेमारे घूमेंगे ३३ इस बरदानके सिवाय इन्द्रादिक सब देवगणोंने एकत्रहो त्रिपुरासुरके मारनेवाले महादेवजीको प्रसन्न कियाहै ३४ व प्रसन्न होकर महादेवजीने देवताओंसे यह कहाहै कि तुमलोगोंके हितकेअर्थ राक्षसों को भय पहुंचानेवाली एक स्त्री उत्पन्नहोगी ३५ सो जैसे प्रथमके किसी कल्पमें क्षुधारूप होकर देवोंकी प्रेरणासे दानवोंको इसने खायाथा उस तरह इससमय राक्षसोंके मारनेवाली सीता होकर रावण सहित सब राक्षसोंको भोजन करजायगी ३६ सो यहनाश अन्यायी व दुष्टमतिवाले रावणके अन्यायसेही प्राप्तहुआहै ३७ युगान्तसमयमें कालके वशीभूत प्रजाओंके समान रामचन्द्रजीके पंजेमें पड़ीहुई हमलोगों व सबराक्षसों को भी ऐसा कोईनहीं जो रक्षाकरसके ३८ अब इस बड़ीभारी भयमें टिकेहुये हमलोगोंका रक्षक कोईनहींहै जैसे दावाग्नि से जलती हुई हथिनियोंका बनमें कोईरक्षक नहींरहता ३९ भाई बिभीषण ने बड़ा दूरन्देशी कामकिया जोकि जिससे भय आनेवालीथी उसीके शरणमें पहिलेही से जाय लुके ४० ॥

त्रिभङ्गी ॥

इमिराक्षस नारी करैं पुकारी निज मनहारी बातकहैं ।
सब भुजापसारी मिलिमिलि न्यारी अतिदुखभारी आंशुवहैं ॥
भयपीड़ित गाता बदनसुखाता मुखनहिं बाता आवसही ।
अरु दारुणरोवैं सबसुख खोवैं मनदुख होवैं जातदही १ । ४१ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपंचनवतितमस्सर्गः ॥ ९५ ॥

इसतरह दुःखित राक्षसियोंका करुणा पूर्व्वक रोदन लङ्कामें रावण ने सुना १ व बड़ी ऊर्ध्वी सांसलेव बड़ी देरतक बिचारकर भयङ्कररूप

रावण अति क्रुद्धहुआ २ इससे क्रोधके मारे लालनेत्र कर दांतोंसे ओठ चबाताहुआ सब राक्षसों से भी दुराधर्ष कालाग्निही के समान दुर्दर्श दिखाईदेनेलगा ३ व क्रोधकेमारे नेत्रोंसे औरोंकोजलाताहीहुआ समीप बैठेहुये राक्षसोंसे बोला ४ कि तुमलोग हमारी आज्ञासेजाय महोदर महापार्श्व व बिरूपाक्षनाम राक्षसोंसेकहो कि सेनासहित शीघ्रआवें ५ तिसके बचनसुन भयसे व्याकुलहो सबराक्षस लोगोंने रावणकी आज्ञा सबअन्य महोदरादि राक्षसोंकोसुनाई ६ वे सबराक्षस रावणकी आज्ञा पाय स्वस्त्ययनादि कर करस्य समर करनेकेलिये चले ७ व रावण के पासजाय हाथजोड़ व प्रणामकर स्वामीकी बिजयकी इच्छा कियेहुये खड़ेहोगये ८ तबमहोदर महापार्श्व व बिरूपाक्षसे मारेक्रोधके मूच्छित रावणबोला ९ कि आज युगान्त के सूर्य्यके समान प्रकाशित बाणों से रामचन्द्र व लक्ष्मणको यमपुरको भेजदेतेहैं १० क्योंकि शत्रुकेमारडालनेसे आजखर कुम्भकर्ण प्रहस्त व मेघनादादिकों के मारनेका बदला लियेलेतेहैं ११ आज मेघरूप हमारे बाणोंसे आच्छादित होनेकेकारण अन्तरिक्ष दिशा आकाश व साती समुद्र न प्रकाशितहोंगे १२ व आज अपने धनुषसे चलायेहुये बाणों से वानरों के सब यूथपोंको मारडालेंगे १३ आज पवन समान बेगवाले रथपर सवारहो धनुषरूप समुद्र से उठीहुई बाणरूप लहरोंसे वानरोंकी सेनाओंको मथडालेंगे १४ आज बिकशित कमलरूप मुखयुक्त कमलकी धूलिके रङ्गवाले वानरोंके यूथपोंके तडागोंको हम हाथीके समान मथडालेंगे १५ आज समरमें बाण युक्त मुखोंसे वानरोंके यूथप पृथ्वीको भूषितकरेंगे जैसेनाड़ीसहित कमलोंसे जल भूषितहोताहै १६ आज वृक्षों से युद्धकरनेवाले व समरमें बड़ेप्रचण्ड वानरोंको समरमें एकहीबाण से सौसौ कोमारेंगे १७ जिन लोगोंकाभाई मारगयाहै व जिन लोगोंकेपुत्र मारगयेहैं आजशत्रुके मारजानेसे उनके आँशुपोंछेंगे १८ आज संग्राममें हमारे बाणोंसे छिन्न भिन्नहोकर मृतक वानरोंके पड़नेसे पृथ्वीतल बड़ेयत्नसे देखनेके योग्य होजावेगा १९ आज शृगालों व गृध्रोंको व अन्यमांस भक्षियोंको भी बाणोंमें छेदेहुये मांसोंसे तृप्तकरेंगे २० हमारारथ शीघ्रही तैयारकरो व शीघ्रहमारा धन्वालावो व सब अच्छेअच्छे निशाचर हमारे पीछेपीछे

चलो २१ तिसका बचनसुन महापार्श्वनाम राक्षस तहाँ खड़ेहुये सेनाध्यक्षोंसे बोला कि सबसेना शीघ्रही तैयार करो २२ ऐसी आज्ञा के सुनतेंही सब सेनाध्यक्षोंने बड़ी शीघ्रताकेसाथप्रत्येक गृहोंमेंजाय जाय सब लङ्कानिवासियोंको प्रेरणाकी २३ तबएकमुहूर्त्तही भरमें सबभीमदर्शन निशाचरलोग बड़ानादकरतेहुये व नानाप्रकारके शस्त्रास्त्रहाथोंमें लिये आयपहुँचे २४ वसब खड्ग पट्टिश शूल गदा मुशल हल तीक्ष्णधार वाली शक्ति व बड़े बड़े कूट मुद्गरादि हाथोंमें लियेथे २५ व बिविध प्रकारके लट्टु व चक्र व पैन फरसा भिन्दिपाल शतघ्नीआदि और भी श्रेष्ठ श्रेष्ठ आयुधलियेआये २६ व वे चारो सेनाध्यक्ष रावणकी आज्ञासे सेना लाय फिर आठघोड़े जुताहुआ सारथिसहित रथभीलाये उस पर अपने तेजसे देदीप्यमान व भीमदर्शन रावणचढ़ा २७ व सब राक्षसोंके सङ्ग मारेसत्वकी गम्भीरतासे पृथ्वीको बिदीर्ण करताहुआ रावण चला २८ व रावणकी आज्ञा से महापार्श्व महोदर व बिरूपाक्षभी अपने अपने रथोंपर असवार हुये २९ व अतिहर्षित हो बड़े जोरसे नाद करतेहुये व पृथ्वीको मानों बिदीर्णही करते हुये व घोरनाद छोड़ेहुये सबके सब चले व सबबिजय होनेहीं की इच्छा कियेथे ३० तिसकेपीछेकालान्तक यमराजकेसमान तेजस्वीरावण सबराक्षसोंकेसङ्ग धनुष उठाय युद्धकरने के लिये चला ३१ तिसके पीछे अतिबेग चलनेवाले घोड़े जुते हुये रथपर असवाररावण उसी फाटक होकर निकला जिसके सामनेरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी थे ३२ रावण के चलने के समय बड़े बड़े अशकुन व उत्पात हुये जैसे कि सूर्य्य प्रभाहीन होगये दिशाओं में अँधियारी छागई व पक्षीलोग घोरशब्द करने लगे व पृथ्वी चलउठी ३३ बादरसे रुधिर बरसनेलगा रथके घोड़े अकस्मात् गिरगिर पड़ने लगे व ध्वजके आगे गृध्र गिरपड़ा व शृगालियां फेंकरनेलगीं ३४ व बाम नेत्र फरकने लगा व बामबाहु भी कँपने लगा मुख भी बिवर्ण होगया व गोल भी कुछ बिगड़ गया ३५ जब राक्षस रावण समर करनेको चलातो उसके मरणके सूचक इतने कारण दिखाई दिये ३६ जैसे कि आकाश से बज्रपात समान शब्द करती हुई उल्कागिरी व गृध्र काक अकल्याणकारक बचन कहनेलगे ३७ यद्यपि ये सब उत्पात सामने

हीपर हुये परन्तु इन सबोंकीओर न दृष्टि देकर मारे अज्ञानसे रावण कालकी प्रेरणा से अपना बध करानेकी इच्छासे चला ३८ तिनलोगों के रथोंके घोर शब्दोंसे राक्षसों व बानरोंकी भी सेना युद्ध करनेकेलिये तैयार होगई ३९ व अपनी अपनी जयकी इच्छा किये हुये व परस्पर एक दूसरेको पुकारतेहुये वानरों व राक्षसोंका बड़ाभारी युद्धहुआ ४० तब रावण ने क्रोधकर सुवर्णसे भूषित बाणोंसे वानरों की सेनामें से बहुतों को मारडाला ४१ किसी किसी वानरके तो शिरही कटगये व किसीकिसीके हृदय फटगये व किसीकिसीके कानही काटलियेगये ४२ व कोई कोई वानर तो रावणकी ऊर्द्धश्वासही से मरगये व किसीकिसी की बगलें नोचलीगईं किसी किसीके शिरही कटगये व किसी किसीके नेत्रही फूटगये ४३ ॥

दोहा ॥

क्रोध विवश जहँ जहँ सुरथ चढ़िचढ़ि गो दशशीश ।
तहँतहँ कपि यूथप नहीं शर सहिसके अनीश १ । ४४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेपणणवतितमस्सर्गः ॥ ९६ ॥

इस तरह रावण के बाणोंसे अङ्ग कटेहुये वानरों से सब वहां की पृथ्वी पूर्ण होगई १ रावण के बाणोंका असह्य सम्पात वानर लोग न सहसके जैसे कीट पतङ्ग अग्नि की दीप्तिको नहीं सह सक्ते २ इससे तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ित हो रोदन करते हुये वानर भाग खड़ेहुये जैसे अग्निकी लपक से जलतेहुये हाथी बनसे भाग खड़े होतेहैं ३ बाणोंसे मारता हुआ रावण बानरोंकी सेनाओं में ऐसा पहुंचा जैसे बादरों के समूहमें पवन पहुंचता ४ इसतरह बड़ी शीघ्रताके साथ सब वानरोंको मार पीट भगाय रावण समरमें आय श्रीरामचन्द्रजीके निकट पहुंचा ५ इसी अवसरमें भगाये हुये वानरोंको भागते देख सुग्रीवजीने सुषेण को अपने मुरचेपर नियतकर अपने युद्धकरनेको मनकिया ६ क्योंकि सुषेण भी सुग्रीवही के तुल्य थे इससे उनको वहां नियतकर वृक्ष हाथमें ले आप युद्ध करनेको चले ७ इनके पीछे व बगल बगल और सब वानर यूथपचले ये सब बिबिध प्रकार के पर्ब्बत व वृक्ष हाथोंमें लियेथे ८ व

वहां पहुंचतेही पहुंचते सुग्रीवजी बड़ा उच्चस्वर कर बहुत से उत्तम राक्षसोंको मारने पीटने लगे ६ इसतरह सुग्रीवजीने वहां राक्षसोंको मारमार अलगबहाया जैसे प्रलयसमयमें पवनवृक्षोंको उखाड़ उखाड़ अलग फेंकताहै १० राक्षसोंकी सेनाओंके ऊपरइसतरह पर्ब्बतोंकीवर्षा सुग्रीवजीने की जैसे बादर पक्षियोंके ऊपर कभी कभी पत्थरोंकी वर्षा बनमेंकरतेहैं ११ वानरराजके चलायेहुये पर्ब्बतोंसे शिर फूटफूट राक्षस लोग पृथ्वीपर ऐसेगिरे जैसे इन्द्रके बज्रके लगनेसे पर्ब्बतगिरेथे १२ जब इसतरह सुग्रीवजीकी मारसे ब्याकुलहो राक्षस बहुत तो मरगये व बहुतसे इधर उधर भाग खड़ेहुये व बहुत वहीं गिरपड़े १३ तो धनुष हाथमेंले अपना नाम सुनाय विरूपाक्ष नाम राक्षस रथसे उतर झट हाथीपर असवारहुआ १४ व हाथीपर चढ़ महाबली विरूपाक्ष अतिभयंकर नाद करनेलगा व फिर वानरोंकी ओरदौड़ा १५ व सेना के बीचमें विद्यमान सुग्रीवजी के ऊपर बाणोंकीवर्षा करनेलगा व सब ऊबेहुये व ब्याकुल राक्षसोंको हर्षित कराय स्थापित किया १६ तब उसराक्षस के पैनबाणोंके लगनेसे मारेक्रोधके बड़ाशब्दकर सुग्रीवजी ने उसके मारनेका बिचारकिया १७ इससे प्रथम एक वृक्षउखाड़ व बनाय समीपजाय विरूपाक्षके हाथीके मस्तकपरमारा १८ कि जिसके लगनेसे वह महागज तीनहाथ पीछेको पछरगया व बड़े जोर से चिग्घाड़मार भूमिपर बैठगया १६हाथीको इसतरहध्वस्तदेख महावीर्य-वान् विरूपाक्ष झट उसपरसे कूदपड़ा व शत्रुके सामने बनाय निकट आनखड़ाहुआ २० गैंड़ेकीढाल व अति तीक्ष्णखड्ग हाथमेंलिये सुग्रीव को अपकार बचन कहताहीसा प्राप्तहुआ २१ परन्तु उसके पहुँचतेही बड़ा क्रोधकर सुग्रीवजीने एकबड़ीभारी शिलाउठाय विरूपाक्षके ऊपर देमारी २२ उसशिलाको अपने ऊपर आतीदेख वह राक्षसश्रेष्ठ कूदकर बचागया झट बड़े जोरसे सुग्रीवके एकखड्गउसने जोरसेमारा २३ उस महाबली राक्षस के मारेहुये खड्गके लगनेसे सुग्रीवजी ब्याकुलहो एक मुहूर्त्त भरतक मूर्च्छितसे होगये २४ फिर बड़ी शीघ्रताके साथ कूद मूकाबाँध बड़े वेगसे जाय उसराक्षसकी छातीमेंमारा २५ परन्तु मूका लगनेपरभी विरूपाक्षने क्रोधकर खड्गसे फिर सुग्रीवकोमारा २६ कि

जिससे कटकर सुग्रीवकाकवच भूमिपर गिरपड़ा व फिर दोनोंचरणोंसे उसनेमारा कि जिससे सुग्रीव भूमिपर गिरपड़े व फिर झट उठकर उसराक्षसकी छातीमें २७ बज्रसमान एकलात बड़ेजोरसे मारा परन्तु वहराक्षस सुग्रीवका चलायाहुआ तलप्रहार बचागया २८ व सुग्रीवकी छातीमें एकमूका बड़ेजोरसे मारा उसके लगनेसे वानरराज ने बड़ाही क्रोधकिया २९ व देखा कि हमारा तलप्रहार यह राक्षस बचागया उसीबीचमें अन्तरदेख उन्होंने ३० उसविरूपाक्ष के ललाटपर और एकलात बड़े जोरसेमारा कि बज्रसमान उसलातके लगनेसे वहराक्षस पृथ्वीपर ३१ रुधिरसे भीज व मुखसेरक्त डाकताहुआ गिरपड़ा जैसे सोतोंसे जलगिराताहुआ पर्व्वत कभीगिरै ऐसेही वहगिरा ३२ गिरने पर उसकेनेत्र निकलआये व मुखसे फेनासहित रुधिर बहनेलगा इस तरह महाविरूपरूप विरूपाक्षको सबवानर व राक्षस देखनेलगे ३३ वानरोंने तो अच्छीतरहसे इधरउधर लोटते व फटकते व करुणापूर्व्वक रोदन करतेहुये विरूपाक्षको देखा ३४ व उससमय समरमें युक्त वानरों व राक्षसोंकी समुद्ररूप दोनोंसेना बड़ाशब्द करतीहुई बढ़ेहुये दो समुद्रोंके समान शोभितहुईं ३५ ॥

त्रिभंगी ॥

अतिबिकृतबिलोचन युतबहुशोचन अतिमतिपोचन जासु हते ।
बर बानरराजा सहितसमाजा करि बहुसाजा मारिलते ॥
तब राक्षस बानर सैन्यउजागर अति मतिनागर मुदितभये ।
जिमिबाढ़ी गंगा सहित तरंगा युतशुभ अंगा होत चये १ । ३६

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकांडेसप्तनवतितमस्सर्ग्गः ९७ ॥

महासंग्राममें परस्परहतहोनेके कारण दोनोंसेनाऐसी क्षीण होगई जैसे ग्रीष्म ऋतुमें दोतड़ाग सूखकर क्षीणहोजातेहैं १ अपनी सेनाके मारजानेसे व बिरूपाक्षके मारजानेसे राक्षसोंका ईश्वर रावणदूना क्रुद्धहुआ २ व बानरोंसे मारेजानेके कारण अपनीसेना बनाय प्रक्षीण देख व दैवको कुछउलटाजान समरमें रावण बहुत व्यथितहुआ ३ व समीपही खड़ेहुये शत्रुओं के मारने वाले महोदर से बोला हे महावीर

महोदर अब इस समय में हम बिजय की आशा तुम्हीं में देखते हैं ४ इससे हे बीर आज शत्रुकी सेना को मारो व अपना पराक्रम दिखावो क्योंकि स्वामी का अन्नजलादि जो तुमने आज तक खाया पिया है उसके प्रत्युपकार का यही समय है इससे अच्छी तरह युद्धकरो ५ यह सुन बहुतअच्छा ऐसाही करेंगे यह कह महोदर शत्रु की उस महा-प्रचण्ड सेनामें पैठा जैसे पांखिया अग्निमें पैठतीहैं ६ व अपने स्वामी की आज्ञासे अपने बड़े भारी तेजसे महाबली महोदरने बानरोंकी सेना कोमारातितिरबितिर करदिया ७ परन्तु सँभरकरमहासत्वयुक्त बानर बीरोंने राक्षसोंकीसेनामेंपैठ बड़ीबड़ीशिलालेसबराक्षसोंको बड़ेजोरशोर समारा ८ यहांतककि क्रोधकर उसनेसुवर्णसे भूषित बाणोंसे बानरोंके हाथपैर जांघ आदिअंग समरमेंकाटडाले ९ जब उसराक्षसने इसतरह सब वानरोंको पीड़ितकिया तो कोईकोई बानरतो दशोंदिशाओंको भाग गये व कोईकोई सुग्रीवजीके पीछे जाघलुके १० बानरोंकी महासेनाइस तरह भागीहुई देख सुग्रीवजी महोदरके ऊपरको झपटे ११ व पर्व्वता-कार एक बड़ीभारी शिलाउठाय महोदर के मारडालनेके लिये उसके ऊपर चलाया १२ तिस शिलाको अपनेऊपर गिरतीहुई देख महोदरने बाणोंसेउसेकाटडाला यद्यपिवह बड़ीदुरासदथी १३ तिसराक्षसकेबाण समूहोंसे कटीहुई वहशिला अतिव्याकुल गृध्रोंके चक्रकेसमान पृथ्वीपर गिरपड़ी १४ उसशिलाको भिन्नदेख मारेक्रोधके मूर्च्छितहो सुग्रीवजी ने एकसांखूका पेड़उखाड़उसकेऊपरचलाया परन्तुउसनेउसेभी कईखंड करके गिरादिया १५ व शत्रु सेनाको पीड़ा करनेवाले सुग्रीवजीको भी परमशूर उसने बाणोंसेमारा उसकेपीछे सुग्रीवने पृथ्वीपर पड़ाएकबड़ा भारीपरिघदेखा १६ व उसे उठायभ्रमाय महोदरको दिखाय उसउग्र बेगवाले परिघसे महोदरके घोड़ोंको मारा १७ कि घोड़ेमरकर गिरपड़े तबउस घोड़ेमरेहुये रथसे झटउतर महोदरबीर ने क्रोधकर बड़ीभारी गदाली १८ तबगदा व परिघहाथोंमेंलिये महोदर व सुग्रीव दोनोंबीर डकरतेहुये बड़ेभारी बैलोंकेसमान बिजुलीयुक्त दोमेघोंकसमान शोभित हुये १९ व फिरसूर्य्यवत्प्रकाशित व प्रज्वलितगदाक्रोधयुक्तहो महोदरने सुग्रीवकेऊपरचलाई २० उसगदाको अपनेऊपरगिरतीहुईदेख मारेरोष

के लालनेत्रकर व परिघउठाय सुग्रीवजीने २१ उससे महोदरकी गदा मेंमारा परन्तुउस गदा में लगनेके कारण टूटकरगदासहित परिघभूमि पर गिरपड़ा २२ तबसुग्रीवजीने सबओरसे सुवर्णसेभूषित लोहेकाबड़ा भारी मुशलपृथ्वीपरसे उठाया २३ व महोदरकेऊपरको चलाया व महोदरनेभी एक और गदा उनके ऊपरको चलाई वे दोनों मार्गमें परस्पर लगनेसेटूटकर पृथ्वीपरगिरपड़ीं २४ जब दोनोंजनोंकेआयुध टूटगये तो मूकोंसे दोनों मारनेलगेउससमय तेजबलसे युक्तहोनेकेकारणप्रज्वलित अग्निके समान वे शोभितहुये २५ व बारबारनादकरतेहुये दोनों परस्पर मारनेलगे फिर लातोंकी मार करते करते दोनों पृथ्वीपर गिरपड़े २६ फिर शीघ्रही उठकर परस्पर मारनेलगे व एक दूसरेके ऊपर हाथ चलानेलगे आपसमें हारा कोई नहीं २७ परन्तु बड़ी देरतक बाहुयुद्ध करते दोनों बहुत श्रमितहुये तब महोदर राक्षसने निकटही धराहुआ खड्ग व ढाल हाथमें लिया २८ व सुग्रीवजीने भी ढाल तलवार बड़ी जल्दीके साथ ली २९ अब ढाल तलवार बांधने चलानेमें बड़ेचतुर दोनों हर्षितहो खड्ग उठाय उठाय व बड़ाशब्द करते हुये परस्परदौड़े ३० व दक्षिणावर्त्तमण्डल व इधर उधर दोनों कावा देनेलगे दोनों परस्पर क्रोध कियेहुयेथे व दोनों अपनी अपनी विजय चाहतेथे ३१ इसी अवसर में उस दुष्टमतिवाले व शूर व अपने वीर्य्यकी प्रशंसा करनेवाले महोदरने खड्गउठाय ज़ोरसे सुग्रीवजीके बखतरपर मारा ३२ इससे उसका खड्ग इनके कवचमें अरुझगया जबतक वह झुककर निकालनेलगा कि सुग्रीव जीने अपनेखड्गसे उसकाखड्ग काट फिर कुण्डिका सहित व कुण्डलयुक्त उसका शिर भी काटडाला ३३ जब शिर कटजानेपर उसका लुण्ड पृथ्वी पर गिरपड़ा तो उसेदेख राक्षसोंकी सेना भाग खड़ीहुई ३४ इसतरह इस महोदरको मार सुग्रीवजीने वानरोंकेसाथ बड़ानादकिया इसबातको जान रावणने बड़ाही कोपकिया व श्रीरामचन्द्रजी बहुत हर्षितहुये ३५ व उदासीनमुखहो व दीनचित्त होकर सबराक्षस मारे भयके व्याकुलहो इधर उधर भागखड़ेहुये ३६ ॥

दोहा ॥

महोदरहि हति भूमिपर पुनि गिराय रविपूत ।

निज श्रीसों शोभित भयो रबिसम तेज प्रभूत १। ३७
कपिपति रणमहँ बिजयलहि क्षितिगत सुर गन्धर्ब्ब ।
यक्षसिद्ध मुदयुत लखत हर्षित भयहु अगर्ब्ब २। ३८॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टनवतितमस्सर्ग्गः ॥ ९८ ॥

जब सुग्रीवजीने महोदरको मारडाला तो महाबली महापार्श्व मारे क्रोधके लालनेत्रकर बाणोंसे अति भयङ्कर अङ्गदकी सेनाको मारने व चलायमान करनेलगा १ व सब मुख्यमुख्य वानरोंके शिर बाणोंसे काट काट देहोंसे अलगकर गिरानेलगा जैसे पवन गवदोंसे फल गिराताहै२ व उसराक्षसने किसीकिसीकेतोशिर काटडाले व किसी किसी के कांधे व किसीकिसीके बगलोंमेंबाणमारे ३ महापार्श्वकेमारेहुयेबाणोंसे पीड़ितहो सब वानर मारेविषादके निस्तेज होगये व सबोंने युद्धकरनेसे मुंह फेर लिया ४ अङ्गदने सुना व जाना कि हमारीसेना राक्षससे पीड़ितहोगई है इससे उन्होंने पूर्णमासीके समुद्रके समान बेगकिया ५ व सूर्य्यके किरणोंके समान प्रकाशित लोहेका परिघ उठाय समरमें उन्होंने महापार्श्व के ऊपर चलाया ६ उसके लगनेसे महापार्श्व अचेत होगया व सारथि सहित उस रथके ऊपरसे मूच्छितहो भूमिपर गिरपड़ा ७ उसी बीचमें मेघसम कालेऋक्षोंके यूथोंमेंसे झटआय महातेजस्वी जाम्बवान्जीने ८ पर्ब्बतके शृङ्गकेआकारकी बड़ीभारी शिलाउठाय बड़ी शीघ्रताके साथ उसके घोड़ोंको मारडाला व सारथिसहित रथका भी विनाश करदिया ९ एक मुहूर्त्तभरमें महापार्श्वकी मूर्च्छाजागी तब उसने अङ्गदके बहुत बाणमारे १० व जाम्बवान्की छातीमें भी तीन बाण मारे व गवाक्षको भी बहुतबाणोंसे मारा ११ गवाक्ष व जाम्बवान्को बाणोंसे पीडितदेख मारेक्रोधके मच्छितहो अङ्गदजीने परिघ हाथमेंलिया १२ व तिसके ऊपर बड़ा कोपकर सूर्य्यकिरणवत्प्रकाशित परिघ उठाय १३ दोनों हाथोंसे पकड़ बड़ेबेगसे घुमाय मारडालनेही के बिचारमें महापार्श्वके ऊपरचलाया १४ बड़े बलवान्के चलायेहुये उसपरिघके लगनेसे उस राक्षसका धन्वा टूटगया बाणभीसब चूर्णीभूत होगये व उसके शिरकी रक्षाकरनेवाली कूंड़ीभीगिरपड़ी १५ तब महातेजस्वी बालिपुत्रने उसके

समीपजाय बड़ेज़ोरसे एकलात उसकी कनपटीमेंमारा १६ तबमहाबली महापार्श्व ने एकहाथ से बड़ाभारी फरसालिया १७ तेल लगाहुआ चमाचम पर्ब्बतसारसे भी बड़ापुष्ट फरसा महापार्श्वने अङ्गदजीके ऊपर चलाया १८ व उससे बायेंकांधे के जोड़पर मारा परन्तु क्रोधयुक्त हो अङ्गदजी उसे बचायगये १६ व अपने पिताकेतुल्य पराक्रमी अङ्गदजी ने बज्रवत् अपना मूकाबांध महापार्श्वकीओर चलाया २० व मर्म्मस्थान तो अङ्गदभली तरहजानतेही थे इससे इन्द्रके बज्रके समान मूकाराक्षस के हृदयमें मारा २१ तिसके लगनेसे उस राक्षसका हृदयफटगया इससे मृतक होकर वह पृथ्वीपर गिरपड़ा २२ जब महापार्श्व भी मारगया तो उसकी सबसेना भागखड़ीहुई व रावण को बड़ा क्रोधआया २३ व हर्षितहो वानरोंने बड़ाभारी नाद किया उसनाद से जानों अटागोपुर फाटक शहरपनाह सहित लंकाही फूटीजाती थी २४ वहनाद इन्द्र के संग देवताओंके शब्दके समान हुआ इन्द्रका शत्रुरावण बानरों व देवताओं काभी बड़ाभारी नादसुन फिरयुद्धकरनेपर उद्यतहुआ २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकांडेएकोनशततमस्सर्ग्गः ६६ ॥

महोदर व महापार्श्वको मारेहुयेदेख व बीर बिरूपाक्षके भी मारजाने पर समरमें खड़ेहुये रावणके १ बड़ाभारी क्रोधहुआ इससे सारथि को प्रेरितकर यहबोलाकि २ इनसब अमात्यादिकों के मारजाने व नगरके घेरमें पड़नेका दुःख रामचन्द्र व लक्ष्मणको हम अकेलेही मारमिटावेंगे ३ वृक्षरूप रामचन्द्र को किजिसमें पुष्प व फलरूप तो सीताहैं व डालें सुग्रीव जाम्ववान् पनस नल४ मैन्द द्विविद अंगद गन्धमादन हनुमान् सुषेण व सबअन्यभी बानरोंके यूथपहैं समरमें यह वृक्ष हम काटडालते हैं ५ अतिरथ रावण ऐसाकहता हुआ रथके शब्दसे दशो दिशाओंको नादितकराताहुआ शीघ्रहीवहां पहुँच रामचन्द्रजीकेसामने दौड़ा ६ उस के चलनेके शब्दसे नदी पर्ब्बत बन शूकर मृग हाथी सहित सबपृथ्वी पूर्णहोगई व चलउठी ७ व जाय राहुदेवताका अस्त्रछोड़ा जोकि बड़ाही दारुण व कठोर अस्त्रथा इससेसब बानर जलनेलगे व जलकर ठौरठौर पृथ्वीपर गिरपड़े ८ व फिर उठउठ भागे उनके भागने से बड़ी भयंकर

धूलिउठी उसअस्त्रको वे बानर बिलकुल न सहसके क्योंकिवह खास ब्रह्माजीका बनाया हुआथा ६ तिनसब सैकरों सेनाओंको रावणके उत्तम बाणोंसे भागी हुई देख रामचन्द्रजी सामने आयखड़े हुये १० तब सब बानरीसेनाको भगाय रावणने जोकभी किसीसे हारेही नहींथे ऐसे रामचन्द्रजीको ११ बिष्णु के संग इंद्रके समान शोभित लक्ष्मणजी के संग शोभायमानदेखा जोकिबड़ाभारी धन्वालिये मानोंआकाशको छूतेहीसेथे १२ व कमलदल समान बिशालनयन व शत्रुओंके दमन करनेवालेथे तिसके पीछे लक्ष्मणसहित महातेजस्वी व महाबली श्रीरामचंद्रजीने १३ बानरोंको रणमें भागते व रावणको बड़ेधूमधड़क्केकेसाथ आते देख झटपट हाथमें धन्वालिया १४ व उस उत्तम धन्वाको टंकोरदेनेका प्रारम्भकिया जिसके वेग व नादसे जानों पृथ्वीहीकोबिदीर्ण कियेदेतेथे १५ रावणके बाणोंके चलनेसे व रामचन्द्रजीके धन्वाकी टङ्कोर के शब्द से सैकरों बानरगिरपड़े १६ व उनदोनों महाराजकुमार रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके बाणोंके मार्ग्गमेंप्राप्तहो रावण चन्द्रमा व सूर्य्यकेसमीप जानेसे राहुके समान शोभित हुआ १७ उससमय प्रथम लक्ष्मणजीने रावणसे युद्धकरने की इच्छाकी इससे धन्वापर चढ़ाय पैन व अग्निकी शिखाके समान बाणछोड़े १८ परंतु महाधनुर्द्धरभी लक्ष्मणजीके चलाये हुये बाण रावणने छूटतेही छूटते अपनेबाणोंसे आकाशहीमें रोंक दिये १६ सो इसतरहसे कि लक्ष्मणजीको अपने हाथोंकी शीघ्रता दिखाते हुये रावणने एकबाणसे एकबाण व तीनसे तीन व दशसे दशबाण काट डाले २० व औरभीबाणचलाये लक्ष्मणजीने उसकेबाण अपनेअन्यबाणों से रोंकदिया तब समर बिजयी रावण लक्ष्मणजीकोछोड़ पर्ब्बताकारजमे खड़ेहुये श्रीरामचन्द्रजीके सामने आया २१ रामचन्द्रजीके सामने आय मारेक्रोधके लालनेत्रकर रावण श्रीराघवजीके ऊपर बाणोंकी बर्षाकरने लगा २२ तबरावणके धन्वासे छूटीहुई बाणोंकीधारा अपनऊपर गिरती हुई देख श्रीरामचन्द्रजीने भालाहाथमें लिये २३ व उन तीक्ष्णभालोंसे क्रुद्धसर्प्पोंके समान फुफुआते चलेआतेहुये बाणोंको श्रीरामचन्द्र जीनेकाट डाला २४ व बड़ी शीघ्रताकेसाथ रामचंद्रजीतो रावणके ऊपर व रावण रामचन्द्रजीके ऊपर बिबिधप्रकारके तीक्ष्ण बाणोंकी बर्षा परस्परकरने

लगे २५ व बाणोंके बेगसे इधर उधर कूदकूद परस्पर कोई किसीसे न हारताहुआ बायें दायें चित्र बिचित्र मण्डलोंमें दोनोंजने घूमनेलगे २६ जब यमराज व अन्तककेसमान अतिभयङ्कर रूप दोनोंजने परस्परबाणों की वर्षा करनेलगे तोसब प्राणी भयभीतहुये किदेखें क्याहोताहै २७ ऐसे बिबिधप्रकार के बाण दोनों ओरोंसे चले कि आकाश बिल्कुलभर गया जैसे वर्षाकालमें बिजुली सहित मेघोंसे भरहोताहै २८ महावेग-बती अतितीक्ष्ण गृध्रोंके पत्र लगीहुई व अतिबेगसे चलीआतीहुई बाण-बृष्टियों से आकाशमानों झांझर होगया २९ व सूर्य्य के अस्तहोजाने पर भी महामेघों के समान उठे हुये रामचन्द्रजीने व रावणने बाणों से अन्धकार करदिया ३० परस्पर एक दूसरे के मारडालने का बिचार करता था इससे वृत्रासुर व इन्द्र के युद्ध से भी अधिक व भयङ्कर चिन्तनाकरने के अयोग्य महायुद्ध हुआ ३१ क्योंकि दोनों महाबीर बाण चलाने में बड़े निपुण थे व दोनों युद्ध कर्म्म में बड़े प्रबीण थे व दोनों अस्त्रज्ञानियों में मुख्यथे व दोनों युद्ध में बिचरते थे ३२ जिस जिस मार्ग में वे दोनोंजने जाते थे उस उस मार्ग में उनके पीछे पीछे व बगल बगल बायुसे प्रेरित दो समुद्रोंकी लहरों के समान बाणोंकील-हरें चलीजाती थीं ३३ व बाण प्रयोग में हाथ लगाये हुये रावण ने श्रीरामचन्द्रजी के ललाटमें बाणसमूह मारे ३४ परन्तु यद्यपि बड़े रौद्र धन्वासे वहबाण समूह छोड़ा गया था उसे नीलकमलोंके समूहके समान शिरपर रामचन्द्रजीने धारण करलिया व वेकुछभी ब्यथित न हुये ३५ व फिर रौद्रास्त्र चढ़ाय रौद्रमन्त्र जपते हुये श्रीरामचन्द्रजी ने बड़ाक्रोध कर अन्यबाण ले ३६ व धन्वा झुंकाय बड़े वीर्य्यसे रावण के ऊपर चलाये परन्तु वे बाण रावण के अभेद्य मेघाकार कवच पर लगे इससे कुछभी ब्यथा न करसके ३७ तबफिर दिव्यास्त्रमें कुशल श्रीराम-चन्द्रजी ने रथपर चढ़ेहुये रावणके ललाटमें एक बड़ा भारी अस्त्र मारा ३८ उस अस्त्रके बाण रावणके लगे तोसही परन्तु उसने ऐसा निवा-रण किया कि कुछ घाव न करसके बरन पंचमुहे सर्पोंके समान फुफु-आतेहुये जाय भूमिमें पैठगये ३९ इस तरह रामचन्द्रजी के अस्त्र को बिफलकर मारेक्रोधके मूर्च्छितहो रावणने महाघोरआसुरास्त्र प्रगटकिया

४० जिस अस्त्रमें बहुत बाणतो सिंह व व्याघ्रों के मुखों के आकार के मुखवालेथे व बहुत कङ्ककाल मुखवाले बहुत गृध्र बाजों के मुखवाले बहुत शृगालोंके मुखोंके आकार के ४१ व बहुत भ्यड़होंके समान मुह बाये अति भयंकर थे व बहुत पंचमुहे थे वे इधर उधर जीभें लफलपाते थे इसतरह के अनेक बाण उस आसुरास्त्र के अन्तर्गत उसने चलाये ४२ व गदहों के मुखवाले व शूकरों के मुखवाले व कुत्तों के व मुरगों के मुख व महाविषधर सर्प्पों के मुखोंके आकारवाले ४३ इतने तीगिनाये ऐसेही और भी बिबिध प्रकार के पैनबाण क्रोध कर सर्प्पसमान श्वास लेतेहुये रावणने रामचन्द्रजी के ऊपर चलाये ४४ जब इसतरह आसुरास्त्र श्रीरामचन्द्रजी के ऊपर प्राप्तहुआ तो उन्होंने बड़े उत्साहसे आग्नेयास्त्र चलाया ४५ जिसमें बहुत बाणतो अग्निकेसमान प्रज्वलित मुखवाले थे व बहुत सूर्य्यवत्प्रकाशितमुखवाले बहुत चन्द्राकार व अर्द्धचन्द्राकार मुखवाले व बहुत केतुके मुख के आकार केथे ४६ बहुतग्रहों व नक्षत्रों के वर्णके व बहुत बड़ीभारीउल्काओंके समान थे बहुतबिजुली के आकार की जीभवालेथे इसी रीतिसे बिबिध प्रकारके बाण श्रीरामचन्द्रजीने चलाये ४७ तिन रामचन्द्रजीके बाणोंसे अतिघोर रावण के बाण हत होकर आकाशही में नष्ट भ्रष्टहोगये व सब टूटगये ४८ तब सरलही रीति से रामचन्द्रजी की ओरसे रावण का अस्त्र निहत होते यथेष्टरूपधारी वानरलोग बहुतही हर्षित हुये ४९ व सुग्रीवादि सब मुख्य मुख्य वानरतो रामचन्द्रजीके निकट आय श्रीराघवको लपटाय लपटाय हर्षितहुये ५० ॥

दोहा ॥

रावणभुज निस्सृत सुशर निकर निहति रघुनाथ ।
प्रमुदितभे अरु सकल कपि नादकीनशुभगाथ १ । ५१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेशततमस्सर्ग्गः ॥ १०० ॥

उस अस्त्रके प्रतिहत होनेपर राक्षसों के स्वामी रावणने दूनाक्रोध किया व उसके पीछे मारेक्रोध के १ मयनाम दानव का बनाया अति भयङ्कर अस्त्रले रामचन्द्रजीके ऊपर छोड़ा २ जिस अस्त्रमें से शूलगदा मुशल व दीप्यमान वज्रवत् पुङ्ख औरभी बहुतसे अस्त्र निकले ३ जैसे

कि मुद्गर कूट पास व प्रकाशित अशनि ये सब ऐसे वेगसे सरसराय निकले जैसे युगक्षयमें पवन निकलते व बहते हैं ४ वह रावणका अस्त्र उत्तम अस्त्रज्ञानियों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजीने अपने गान्धर्व्वास्त्रसे काट डाला ५ जब महात्मा श्रीरामचन्द्रजी ने वह अस्त्र काटडाला तो मारे क्रोधके लाल नेत्रकर रावणने और अस्त्र चलाया ६ जिसके कि बड़े प्रज्वलित बड़े बड़ेभारी हजारों लाखों चक्र निकले येसब भीमवेग रावण के धन्वासेही निकलनेलगे ७ उन प्रज्वलित चक्रोंसे सब आकाश प्रकाशित होगया जैसे कि दैवयोग से गिरते हुये चन्द्र सूर्य्यादि ग्रहों से सबदिशा प्रकाशित होजाती हैं ८ समर में आयेहुये रावण के चक्र व औरभी आयुध बाणोंसे श्रीरामचन्द्रजी ने काटडाले ९ तिस अस्त्रको निहत देख रावणने रामचन्द्रजी के सब सुकुमार अंगों में दश बाण मारे १० बड़े धन्वासे निकलेहुये उनबाणोंके लगने से श्रीरामचन्द्रजी कुछभी न कम्पित हुये ११ व समरबिजयी श्रीरामचन्द्रजीने भी बड़ा क्रोधकर रावण के सर्व्वाङ्गों में अतिपैने बहुतसेबाणमारे १२ इसीअवसर में रामचन्द्रजी के छोटे भाई महाबली व शत्रुओं के मारने वाले लक्ष्मणजी ने बड़ा क्रोधकर सातबाण हाथमेंलिये १३ व उनबाणोंसे महाद्युतिमान् लक्ष्मणजी ने मनुष्य के शिर के आकारका रावण का ध्वज काटडाला १४ व परमश्रीमान् लक्ष्मणजी ने उस राक्षस रावण के सारथिका कुण्डल सहित शिरभी बाणसे काटडाला १५ व हाथीकी शूंड़के आकार का उसका धनुष भी बाणोंसे काटडाला इसतरह सातो बाणों से लक्ष्मणजी ने उसके इतने पदार्थ काटे १६ व उसी बीच में रावण के काले बादरों के रंग के पर्ब्बताकार बहुत उत्तम आठो रथके घोड़े बिभीषणजी ने कूदकर अपनी गदासे मारडाले १७ तब घोड़ेमरे हुये रथपर से उतर रावणने अपनेभाई बिभीषण के ऊपर बड़ा कोप किया १८ व महाशक्ति वाले रावणने प्रदीप्त वज्रके समान महाशक्तिले विभीषण के ऊपर को चलाया १९ परन्तु लक्ष्मणजी ने ऊपरही बिना विभीषणके ऊपर पहुंचनेही पर बड़ेपैने अपने तीन बाणोंसे उसे काट डाला यहदेख समरमें वानरोंने बड़ाभारी शब्दकिया २० वहसुवर्णकी मालासे भूषित रावण की शक्ति बाणोंसे कट तीन खण्ड होकर

आकाश से गिरी चिनगारी उड़तीहुई उल्का के समान पृथ्वीपर गिरते समय शोभित हुई २१ तब रावणने शत्रु के प्राणहरनेवाली व काल-चक्रसे भी कठोर व असह्य व अपनेही तेज से दीप्यमान बड़ी भारी एकशक्ति बिभीषणजी केही मारने को उठाया २२ व उठाय महाबल-वान् रावणने बड़े वेगसे चलानाचाहा चलाने के समय वह इन्द्रकेवज्र के समान चमकी २३ लक्ष्मणजीने देखाकि बस इसके लगनेसे बिभी-षण मृतकही होजायँगे इससे बड़ीजल्दीके साथ उनको बचालिया२४ बचाने की युक्ति यहकी कि शक्ति चलानेपर उद्यत रावणके ऊपर बड़े जोरसे धन्वा नवाय बाण चढ़ाय अनेक शरमारे २५ इससे महात्मा व बलवान् लक्ष्मणजी के बाणोंके वेगसे रावण ऐसा घबड़ाया व व्याकुल होगया कि बिभीषणजीके ऊपर शक्ति न चलासका २६ रावणने देखा किहमारे भाईको लक्ष्मणजीने बचालिया इससे वह लक्ष्मणके सम्मुख खड़ा होकर बोला कि २७ हे अपने बलकी बड़ाई करने कराने वाले लक्ष्मण जिससे कि तुमने बिभीषणको इस युक्तिसे बचालियाहै इससे अब बिभीषणको छोड़ यह शक्ति हम तुम्हारेही ऊपर गिराते हैं २८ यह हमारे परिघाकार बाहुसे छोड़ीहुई शक्ति तुम्हारा हृदय बिदीर्णकर रुधिरसे रँगकर तुम्हारे प्राणोंको लेहीकरजायगी इसेसहज न समझना २९ इतनाकह आठघंटा बँधीहुई व बड़ाशब्द करतीहुई व मयकी माया सेबनीहुई शत्रुओंकेप्राण नाशकरनेवाली व कभीभी मिथ्या न होनेवाली शक्ति ३० तेजके मारेदीप्यमान लक्ष्मणजी के ऊपरको बड़ा क्रोधकर रावणने चलाय बड़ेजोरसे नादकिया ३१ व अति भयङ्कर वेगसेचलाई हुई इन्द्रके वज्रके समान वहशक्ति बड़ेवेगसेजाय लक्ष्मणजीके ऊपरको हहाय चली ३२ उसशक्तिको आतीदेख रामचन्द्रजीनेउस शक्तिकी अ-धिष्ठात्र देवताकीओर इसाराकर कहा कि रावणने जिसबिचारसे तुम्हें चलायाहै वहमिथ्याहो तुम्हारा उद्यम ब्यर्थहो व लक्ष्मणजीका कल्याण हो तुमसे उनके प्राण न जावें ३३ रामचन्द्रजीतो ऐसाकहीरहेथे किअति क्रोधकिये रावणकी चलाईहुई बिषधर महासर्प्प के समान भयङ्कर वह शक्ति महाशूल लक्ष्मणजीके हृदयमेंलगकर पैठगई ३४ व लक्ष्मणजीकी बड़ीभारीछातीमें उसकाधक्कालगा व लपलपातीहुई फिरजाय अलग हो

गई उस समय वह वासुकि नागकी जिह्वाके समान दीप्यमान दिखाई दी ३५ बड़ेजोरसे व दूरसे सँभालकर रावणकी चलाईहुई उस शक्तिका धक्का लगनेसे लक्ष्मणजीका हृदय फटगया इससे अति मूर्च्छित होकर वे पृथ्वीपर गिरपड़े ३६ इसदशाको प्राप्त लक्ष्मणजीकी देख समीपही खड़ेहुये महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी भाईके स्नेहसे अति उदासीन चित्त होगये ३७ इसतरह एक मुहूर्त्तभर नेत्रों से आंशु बहातेहुये रामचन्द्र जीने युगान्तके अग्निके समानकोप किया ३८ क्योंकि उन्होंने अपने मनसे बिचारा कि यहबिषाद करनेकाकाल नहींहै इससे रावणका बध करना अपने हृदयमेंधर फिर महायुद्ध करनेलगे ३९ व सब यत्नसे उलट पुलट लक्ष्मणजीको शत्रुओं के हन्ता श्रीरामचन्द्रजीने देखा तो उनका हृदय शक्तिके लगनेसे बिदीर्ण होगयाथा इससे रुधिर बहाचलाजाताथा बिदित होताथा कि सर्प्प लपटाहुआ कोई बड़ाभारी पर्व्वत पड़ा है ४० व महाबलवान् रावण की मारीहुई उसशक्तिको सब बानरश्रेष्ठ यत्न से तोड़ डालनेमें न समर्थहुये ४१ बरन जब वे उसशक्तिकी ओर चले तोबड़े जल्द बाज रावणने बाणसमूहसे सबोंकोमारा जिससे सब पीड़ितहोगये व वह शक्तिभी लक्ष्मणजीकी छाती को बिदार पृथ्वीमें पैठीजातीथी ४२ किसबको भय पहुंचानेवाली उसशक्तिको दोनोंहाथों से पकड़ महाबल-वान् श्रीरामचन्द्रजीने क्रोधकर बीचरणमें तोड़डाला व पकड़कर पृथ्वी पर इधरउधर खींचा ४३ जबये इसतरह उसशक्तिको पृथ्वीपर धरघसी-टनेलगे तोमहाबलवान् रावणने उसीबीचमें उनके सब सुकुमारस्थानों में बाणमारे ४४ परन्तु उनबाणोंकीओर कुछभी न खयालकर लक्ष्मण जीको लपटाय श्रीरामचन्द्रजी हनुमान् व सुग्रीवजी से बोले ४५ हे वानरोत्तमो अबतुम सबलोग लक्ष्मणको चारोंओर से घेरेहुये यहाँटिको हमारा अबपराक्रम करनेका समयआयाहै क्योंकि इससमयको हमबहुत दिनोंसे चाहतेथे ४६ किअब इस पापात्मा व पापनिश्चय रावणको हम मारेंगे इसकोहम ऐसापरखतेथे जैसेचातक बहुतदिनोंसे बादलोंका होना चाहताहै फिर बर्षाकालमें बादर देख पड़तेहैं तो वह सुखी होताहै ४७ हे वानरो इससमय हम अब सत्य सत्य प्रतिज्ञा करके तुम लोगों से कहते हैं कि थोड़ीही देरमें तुमलोग किंतो बिना रावणही का जगत्

देखोगे अथवा बिना रामहीका ४८ क्योंकि राज्य का नाश बनमें बास दण्डकवन में इधर उधर दौड़ना जानकीजीका हरण राक्षसोंका समागम ४९ इन सब बातोंसे हमने नरकके समान बड़ाघोर दुःख पायाहै परन्तु रावणको आजरणमें मारसब दुःख त्याग करेंगे ५० जिसलिये यह सब वानरों की सेना हमयहां लाये व जिसलिये रणमें बालिको मार सुग्रीवको राजा बनाया ५१ व जिसलिये समुद्रको अपने बलसे भयभीत किया व फिर सागरमें सेतुबांधा सो वह पापी रावण इससमय हमारे नेत्रोंके सामने खड़ाहै ५२ तिससे अब हमारे सामने आय रावण जीताहुआ नहीं बच सक्ता जैसे दृष्टि विषवाले सर्प्पके सामने होकर कोईनहींबचसक्ता हमरावण के लिये उसीदृष्टि विष सर्प्पही के समानहैं ५३ अथवा जैसे गरुड़की दृष्टिके सामने पड़ सर्प्पफिर बचनहीं सक्ता वैसेही रावणहमारी दृष्टिमें पड़अब न बचेगा ५४ तिससे हेवानरो तुमलोग पर्व्वत परबैठे हुये सुख से हमारा व रावणका युद्धदेखो ५५ आज गन्धर्व सिद्ध यक्षदेवता आदि सब प्राणी सहित तीनों लोकनिवासी समरमें हमरामका रामत्वदेखें ५६ आजहम ऐसा कर्म करेंगे जिसे चर अचर सहित सबलोकनिवासी व देवतालोगभी जबतक यह पृथ्वी रहेगी तब तक कहते रहेंगे ५७ इतना कह श्रीरामचन्द्रजी सुवर्ण भूषित बाणोंसे रावणको समरमें मारने लगे ५८ व उसीतरह रावण भी प्रसिद्ध बाणों व मुशलोंसे रामचन्द्रजीके ऊपर वृष्टिकरनेलगा जैसेबादर जलकीधारा छोड़ताहै ५९ रामचन्द्र व रावणके परस्पर चलायेहुयेश्रेष्ठ बाणोंका बड़ा भारी शब्दहुआ ६० व रामरावणके बाण आकाशमें परस्पर लड़लड़कर टूटटूट पृथ्वीपर गिरनेलगे ६१ रामचन्द्रजी व रावणके चापों का बड़ा घोरशब्दसब प्राणियोंको त्रासपहुंचानेवाला व अद्भुतदर्शन हुआ ६२ ॥

त्रिभंगी ॥

शरजालबिदारित मनमहँ हारित गतसब वारित रक्ष पती ।
अतिबिदित महात्मा हरिपरमात्मा रामसदात्मापाणिगती ॥
लहिरावण अर्द्दित ह्वैशरमर्द्दित तनिक न नर्द्दित भागिचला ।
जिमि पवनहिलागे बादरभागे तिमिबिन रागे सोबिचला ॥ ६३

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकाधिकशततमस्सर्ग्गः १०१ ॥

इसतरह रावणको बाणवृष्टि से पीड़ित कर भगाय श्रीरामचन्द्र जी बलवान् रावणकी शक्तिसे मारेहुये शूर लक्ष्मणजी को रुधिर से डूबेहुये समरमें परेदेख १ दुष्टात्मा रावण के संगतुमुल युद्धकर बाणसमूह छोड़तेहुये श्रीरामचन्द्रजी सुषेणसे बोले २ कि ये लक्ष्मण रावणके वीर्य्यसे पृथ्वीपर पड़े सर्प्पके समान लोटतेहैं इससे हमको शोक बढ़ातेहैं ३ अब प्राणोंसेभी प्रियतर लक्ष्मणवीरको रुधिर से भीजेहुये पृथ्वीपर पड़े देख मारे दुःखके ब्याकुल होनेसे हमारी ऐसीशक्ति कहाँहै जो युद्धकरसकें ४ यदि समरमें बड़ाईपाने के योग्य व सब शुभ लक्षणयुक्त हमारे ये भाई लक्ष्मण कहीं मृतकहोगये तो हमको प्राणों व सुखोंसेक्याहै ५ हमारा वीर्य्य इनकी यह दशादेख जानों लज्जितही होताहै व हाथ से जानों धन्वा गिराही पड़ताहै बाण जानों टूटेही जाते हैं दृष्टिमारे आँशुओं के बन्दहुई जातीहै ६ अङ्ग सब काँपते हैं जैसे दुस्स्वप्न देखनेसे रात्रिको कम्पित होतेहैं अब बड़ीभारी चिन्ताहमारी बढ़ीचली आतीहै व यही जी चाहताहै कि हमभी मररहैं ७ दुष्टात्मा रावणसे अपने भाईको मरेहुये व दुःखसूचक शब्दकरते व दुःख से पीड़ितदेख हमपरम विषादको पाय ब्याकुलेन्द्रियहो बिलाप करतेहैं ८ हेशूरबीर बिजयभी हमको प्रिय नहीं समझपड़ती क्योंकि अन्धेजन के समीपभी जो चन्द्रमाटिका हो तोभी उसको कौनसी प्रीति उत्पन्न करावैगा कुछभीनहीं ९ अब हमारे युद्ध करनेसे क्याहै व प्राणोंके रखनेसे भी क्याहै अबतो युद्धका कोईकार्य्यही नहींरहा क्योंकि हमारे प्राणप्रिय व सर्ब्बस्व लक्ष्मण तो मारे समरमें पड़ेहीहैं फिर अब किसकेलिये ये सब कार्य्य हैं १० जिसतरह ये बीर लक्ष्मण वनको आतेहुये हमारे पीछेपीछे चलेआये अब हमभी उसीतरह इनके पीछे पीछे यमपुरको चलेजावैंगे ११ हाय हमारे इष्ट बन्धुजन व नित्य हमारी आज्ञामें तत्पर लक्ष्मणको मायासे युद्धकरनेवाले राक्षसों ने इस अवस्थाको पहुँचादिया १२ पुरुष सबकुछ छोड़कर चाहेजहांजाय प्रतिदेशमें स्त्रियां मिलसक्तीहैं व प्रतिदेश में बान्धव मिलसक्ते हैं परन्तु हम वहदेश कहींनहीं देखते जहां सहोदर भाई मिलता हो कहीं नहीं मिलसक्ता १३ दुर्द्धर्ष लक्ष्मणबिना हमको राज्यसे क्या है भलाहम पुत्र वत्सला सुमित्रा मातासे जाय क्या कहेंगे १४ व हम सुमित्राजीकी की

हुई निन्दा न सहसकेंगे व फिर कौशल्यामाता व कैकेयीसे जाय क्या कहेंगे १५ भलाहम महाबल भरत व शत्रुघ्नसे क्या कहेंगे जब वे पूछेंगे कि लक्ष्मणके साथ तो तुम बनको गये अब बिना उनके कैसेआये १६ इससे भाई बन्धुओंके बीचमें जाय निन्दित होनेसे तो यहीं मरजाना अच्छाहै १७ हाय हमने अन्यजन्ममें कौनसा पापकियाहै जिससे हमारा परमधार्म्मिक भाई माराहुआ आगेपड़ाहै व हम देखतेहैं १८ हा ! भाई हा ! मनुष्यश्रेष्ठ हा ! शूरबीरोंमें श्रेष्ठ लक्ष्मण हमको छोड़ अकेले परलोक को क्योंचलेजातेहो १६ हे भ्राता रोदन करतेहुये हमसे क्योंनहीं बोलते उठो देखो क्या सोतेहो नेत्रसे हमदुःखीको देखो २० तुमतो जब हम प्रमत्तहो पर्ब्बतोंपर व बनोंमें घूमतेथे व उदास होजातेथे तो हमको समझाया करते थे अब क्योंनहीं समझाते २१ इसतरह बिलाप करते हुये व शोकके मारे ब्याकुलेन्द्रिय श्रीरामचन्द्रजीको समझाते हुये सुषेण बीर बोले २२ हे नृपशार्दूल शोक उत्पन्न करनेवाली व समरमें बाणोंके लगनेके दुःखके समान व बिकलता करानेवाली यह बुद्धि छोड़ दीजिये २३ ये लक्ष्मी बढ़ानेवाले लक्ष्मणजी मृतक नहीं होगये क्योंकि इनके मुखमें कुछ बिकार नहीं पायाजाता नतो मुख श्यामहुआहै न प्रभाहीन है बरन इनकामुख सुन्दर प्रसन्न व प्रभायुक्त दिखाईदेताहै २४ हाथों की गदोरियां कमलके पत्रकेसमान बनीहैं नेत्र प्रसन्न बनेहैं हे प्रजा-पालक निर्ज्जीव प्राणियोंके रूप ऐसेनहीं दिखाईदेते जैसे कि लक्ष्मण जीके हैं २५ हे बीर हे शत्रुसूदन बिषाद न कीजिये लक्ष्मणजी अभी जीतेहैं क्योंकि शिथिल अङ्गकिये व पृथ्वीपर सोतेहुये लक्ष्मणजीका श्वाससहित हृदय बारबार अभी कांपताहै यही बताताहै कि ये अभी जीतेहैं केवल गाढ़मूर्च्छाही आगईहै २६ रामचन्द्रजीसे ऐसाकह सुषेण जी समीपही खड़ेहुये महाकपि हनुमान्‌जीसे बोले २७ हे सौम्य हे बीर जिस पर्ब्बतको पूर्ब्बसमयमें जाम्बवान्‌ने तुमसे बतायाथा अब शीघ्रही यहांसे उसपर्ब्बतको फिरजावो २८ उस पर्ब्बतके दक्षिणवाले शिखर पर जो चार औषधियांहैं शीघ्रही यहांलावो २६ हे बीर उनमें एकतो बिशल्य करणीहै इसके सुंघातेही जो बाणादि गड़ेहोते अपनेआप निकल पड़तेहैं एकका सावर्ण्यकर्णीनामहै इसकेसुंघातेही घाव भरआतेहैं एकका संजी-

वकर्णी नामहै इसको सूंघतेही जीउठताहै एक महौषधीका सन्धानीनाम हैं इसके सूंघतेही सबअंगोंमें प्रथमसे अधिकबल होजाताहै सो लक्ष्मण बीरके जिलानेके लिये तुम सब औषधियां यहांलावो ३० यहसुन हनुमानूजी यहांसेकूद व उस पर्ब्बतपर जायपहुँचे परन्तु उन महौषधियोंके न पहिचाननेके कारण बड़ी चिन्ताको प्राप्तहुये ३१ तब हनुमानूजीके बिचारमें आया कि अब हम इस पर्ब्बतका यह शृंगही उखाड़लेजावें ३२ हम अपनी तर्कणा से जानते हैं कि वे महौषधियां इसी पर्ब्वत शिखर पर होंगी क्योंकि सुषेणजीने इसी तरह का पर्ब्बत बताया था ३३ व जो बिना पहिंचाने और की औरही कोई औषधी यहां से लेगये या कहदिया कि नहींपाया तो फिर बड़ा अगुणहोगा जोकहें कि कोईयहां से लेचलें जो वह न होगी तो फिर लेजायँगे तो बहुत समय बीतजाने पर औरभी बड़ी बिकलता होगी ३४ यह अपने मनमें बिचार महाबली हनुमानूजी उस पर्ब्बतश्रेष्ठ परजाय व तीनबार उसकेनीचे पकड़ हिलाया ३५ व नानाप्रकारके फूलेफले वृक्षलगेहुये उस शिखरको उखाड़लिया दोनोंहाथों परधर वानरशार्दूलने तौला व अन्दाजा ३६ व जलसेपूर्ण कालेबादर के समान आकाशसे उसपर्ब्बत के शिखरको ले हनुमानूजी वहाँसेउछले ३७ व झटआय लङ्कामेंपहुँच पर्ब्बतका शिखर धरकर व कुछ सुस्ताकर सुषेणजीसेबोले ३८ हे वानरश्रेष्ठ हमतो उन औषधियोंको नहींचीन्हते इसीकारण उसपर्ब्बतका वहपूरा शिखरका शिखर उठालायेहैं ३९ ऐसा कहतेहुये हनुमानूजीकी प्रशंसाकर वानरोंमेंश्रेष्ठ सुषेणजीने उसपरसे औषधियाँ उखाड़लीं ४० व देवताओं के भी बड़ेदुःखसे करनेकेयोग्य हनुमानूजीका कर्म्मदेख सब वानरयूथप बड़ेविस्मितहुये ४१ व वानरोंमें उत्तम सुषेणजीने उस औषधीका चूर्ण बनाय लक्ष्मणजीकी नासिकामें नासदिया ४२ कि उससे महात्मा लक्ष्मणजी व्यथितथे निर्व्यथित व नीरोगहोगये इससे झट पृथ्वीपरसे उठखड़े हुये ४३ पृथ्वीपरसे लक्ष्मणजीको उठेहुयेदेख सबवानर बड़े प्रसन्नहो बहुत अच्छा कह कह लक्ष्मणजी की प्रशंसा करनेलगे ४४ व शत्रुबीरोंके मारनेवाले श्रीरामचन्द्रजी अये लक्ष्मण यहाँआवो ऐसा कह लक्ष्मणजी को बड़ेप्रेमसे छपटाय नेत्रोंमें आँशुभर अच्छीतरह भेंट

करबोले ४५ बनाय अच्छीतरह फिरसेभेंट रामचन्द्रजी फिरसे लक्ष्मणजीसे बोले हे वीर बड़े भाग्यकी बात है जो कि मरकर फिर आयेहुये तुमको देखतेहैं ४६ हे वीर तुम्हारे मरजानेपर हमारे जीने से हमारा कौन प्रयोजनथा क्योंकि बिना तुम्हारे न तो हमको जीनेहीसे कुछप्रयोजनथा सीताहीसे न बिजयहोनेही से ४७ ऐसा कहतेहुये महात्मा रामचन्द्रजीसे अतिदीन मुखहो शिथिलबाणी से लक्ष्मणजी बोले ४८ हे सत्यपराक्रम श्रीरामचन्द्रजी राक्षसोंके मारडालनेकी प्रतिज्ञाकर सत्त्वरहित किसी लघुमनुष्यके समान ऐसा कहनेकेयोग्य आपनहीं हैं ४९ सत्यवादीलोग अपनी प्रतिज्ञाको मिथ्यानहीं करते क्योंकि प्रतिज्ञाका पालनकरनाही महत्वकालक्षणहै ५० हे पापरहित हमारेलिये तुमको निराशहोना उचितनहींहै अब आज रावणकोमार अपनी प्रतिज्ञा पूरी कीजिये ५१ तुम्हारे बाणोंके बशमेंआय शत्रुजीताहुआ न जायगा जैसे गर्ज्जतेहुये तीक्ष्णदांतवाले सिंहके आगेसे फिर हाथी नहींजासका ५२ हम जबतक ये कर्म्मसाक्षी सूर्य्यअस्तनहों तिसकेपहिलेही इसदुष्टात्मा रावणकाबध शीघ्रही चाहतेहैं ५३ ॥

हरिगीतिका ॥

यदिचहहु रावणबध महाभुजसमरमहँ रघुनाथ जू ॥
अरु कालसमकै निजप्रतिज्ञा करणचहहु स्वहाथजू ॥
अरुयदि जनकतनयाभिलाषा लहन होय कृपालजू ।
तौकरहु बचनहमार शीघ्रहि हरहुरावण भालजू १ । ५४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेयुग्माधिकशततमस्सर्गः १०२ ॥

लक्ष्मण जी के कहे बचन सुन शत्रुनाशक श्रीरामचन्द्र जी ने धनुष उठाय व झुंकाय रावण के मारने के लिये बाण चढ़ाया व रावण के ऊपर चलाया १ परन्तु रावण अबकी अन्यरथपर असवार होकर रामचन्द्रजी के सामने दौड़ा जैसे राहु सूर्य्यके सामने दौड़ता है २ रथ पर चढ़ाहुआ रावण बज्रसमान बाण रामचन्द्रजी के ऊपर बरसावे लगा जैसे बड़ेभारी पर्व्वतपर धाराओं से मेघ बरसताहै ३ व रामचन्द्रजीने भी तपाये हुये सुवर्ण से भूषित व अग्निवत् प्रकाशित बाणों की वर्षा

रावणके ऊपरकी ४ भूमिपर टिकेहुये रामचन्द्रजीका व रथपर चढ़ेहुये रावण का युद्ध समान नहीं है यह देवता गन्धर्व व दैत्यलोग पुकार पुकार कहने लगे ५ तिन लोगों के बचन सुन देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र जी अपने सारथि मातलिको बुलाय यह बचन बोले कि ६ हमारे रथ पर असवार हो भूमिपर टिके हुये श्रीरामचन्द्र जी के निकट शीघ्रही तुमजावो व भूतलमें जाय रामचन्द्रजीको बुलाय इस रथपर असवार कराओ तिससे देवताओं का बड़ाभारी कार्य्य करो ७ इन्द्र का सारथि मातलि जब इस तरहसे कहागया तो शिर झुकाय प्रणामकर इन्द्रजी से बोला ८ हे देवेन्द्र हम शीघ्रही जायँगे व सारथ्यभी करेंगे यह कह हरे रंगके इन्द्रके उत्तम घोड़े रथमें जोतकर ९ तिसके पीछे सुवर्ण से चित्र विचित्र सौ क्षुद्रघण्टिकाओंसे भूषित प्रातःकालके सूर्य्यके समान प्रकाशित वैदूर्य्य मणिओंके गुम्मजसे शोभित १० व सुवर्णहीके भूषणों से भूषित अच्छे घोड़े जुता व श्वेत रंगके चामरादि धरे व सूर्य्यवत्प्रकाशित हरेरंगके घोड़ेनहा व सुवर्णकेभूषणोंसे सबभूषित ११ व सुवर्णके बांसमें ध्वजटँगा इस तरहका देवराज का रथ श्रेष्ठथा उसपर चढ़ इन्द्र की आज्ञासे मातलि चला १२ व आकाश से उतर श्रीरामचन्द्र जीके निकट रथलेकर आया १३ व चाबुक हाथमें लिये हाथजोर पुरन्दरका सारथि रामचन्द्रजीसे बोला १४ हेमहासत्व हेश्रीमन् हे शत्रुसूदन श्रीरामचन्द्रजी यहरथ आपकी विजयके लिये इन्द्रजीने आपको दिया है १५ इसपर इन्द्रका यह बड़ाभारी धनुषभी धराहै व अग्निवत्प्रकाशित कवच भीहै व सूर्य्यवत्प्रकाशित बाण भीहैं व बड़ीपैन साफ शक्ति भीहै १६ इससे हेवीर रामचन्द्र इस रथपर चढ़कर रावण को मार डालिये जैसे हमको सारथि बनाय इन्द्र दानवों को मारतेहैं हम आप केभी सारथि बने रहेंगे १७ यह सुन देवता इन्द्रका रथजान व अपना को मनुष्यावतार समझ मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी रथके प्रणाम व प्रदक्षिणा कर अपनी शोभा से तीनों लोकों को शोभित कराते हुये रथपर सवारहुये १८ व अब उधरतो रावणका रथ व इधर रामचन्द्रजी का इससे वह लोमहर्षण युद्ध बहुत शोभित हुआ १९ उस समरमेंश्रीरामचन्द्रजीने रावणका गान्धर्व्वास्त्र तो अपने गान्धर्व्वास्त्रसे

व दैवास्त्र दैवास्त्रसे काटडाला क्योंकि येतो अस्त्र विद्यामें बड़ेही निपुण थे फिर क्यों न काटें २० जब येसब अस्त्र काटडालेगये तो परम क्रोध कर रावणने परमघोर राक्षसास्त्र चलाया २१ इस अस्त्रसे रावण के धनुष से जो बाण निकले सब सर्प्प होकर श्रीरामचन्द्र जीके शरीर में आयलगे २२ येसब बाण अपने प्रज्वलित मुखोंसे प्रज्वलित अग्नि उगिलतेहुये व भयानक मुखबाये रामचंद्रजीकेसामने आयआय लपटने लगे २३ तिन बासुकि नागके समान स्पर्शवाले व प्रकाशित शरीर महाबिषधर सर्प्पोंसे सब दिशा बिदिशा भरहुईं २४ समर में तिन सर्प्पोंको आते व अपने ऊपर कूदते देख श्रीरामचन्द्रजीने सर्प्पोंका भय पहुंचानेवाला गारुड़ास्त्र छोड़ा २५ रामचन्द्रजीके धन्वासेछोड़ेहुये सुवर्णके पंखलगाये व अग्निके समान प्रकाशित सुवर्ण के गरुड़रूप वे सर्प्पोंके शत्रु बाण सब ओरको चले २६ वे रामचन्द्रजीके गरुड़रूप यथेच्छ रूपधारी बाण रावणके उन सर्प्परूप बड़े बेगवान बाणोंको काटने लगे २७ जब इस तरह रावण का राक्षसास्त्र जो सर्प्प रूपथा रामचन्द्रजीके गारुड़ास्त्रसे नष्ट होगया तो रावणने बड़ा कोपकर घोर शक्तियोंकी बर्षा रामचन्द्रजीके ऊपरकी २८ रामचन्द्रजीको तो हजार बाणोंसे मार पीड़ितकर फिर मातलिनाम सारथि को मारनेलगा २९ प्रथम तो एकबाण केतुके ऊपर को चलाया उससे पताका काट रथपर गिरादिया ३० फिर उसने बहुतसे बाणोंसे इन्द्रजीके घोड़ोंको मारा जो देख देवता दानव गन्धर्ब्ब चारणादि सब उदास होगये ३१ व रामचन्द्रजी को बाणोंसे पीड़ितदेख सिद्ध व परमर्षि लोग सब ब्यथितहुये व वानर ऋक्ष व इनके सब यूथप तथा विभीषण ये लोग तो अति ब्यथितहुये ३२ चन्द्ररूप रामचन्द्रजीको राहुरूप रावणसे ग्रस्त देख चन्द्रमाके अतिप्रिय रोहिणी नक्षत्रपर बुधग्रह जाय झटहोरहा जोकि इसनक्षत्रपर आनेसे सबलोगोंको अशुभ पहुँचाताहै ३३ व धुआँ सहित लहरों से प्रज्वलित होताहीसा समुद्र क्रोधकरमानों सूर्य्य को छूनेहीकेलिये ऊपर को उछला ३४ व सूर्य्य श्यामवर्णहो अतिकठोर होगये व सब उनके किरण मन्दहोगये कबन्ध उनकी गोद में दिखाई देने लगा व केतुसेयुक्त दिखाई देनेलगे ३५ व यहबात जानों प्रसिद्धही

है कि जितने इक्ष्वाकुबंशी राजाहैं उनका नक्षत्र विशाखाहै जिसकेइंद्र व अग्नि दो देवताहैं उसपर आय झट दबाकर आकाश मङ्गलग्रह बैठ गया ३६ व दशमुखका व बीशभुजाका रावणहाथमें धन्वालिये मैनाक पर्ब्बतके समान दिखाई देनेलगा ३७ व रावण राक्षस से पीड़ितहो श्रीरामचन्द्रजी मर्य्यादापालक तो थेही इससे समरमें उसके बाणोंकी मर्य्यादा रखनेकेलिये उसके बाणोंसे अपनाको न छुड़ासके ३८ परन्तु क्रोधकर कुछ भौंहें टेढ़ीकर व नेत्र लालकर राक्षसोंको जलातेही ऐसे श्रीरामचन्द्रजी महाक्रुद्ध रावणको प्राप्तहुये ३९ तिनबुद्धिमान् श्रीरामचन्द्रजीका क्रोधसहित मुखदेख सबप्राणी डरउठे व पृथ्वीकँपउठी ४० व सिंहशार्दूल सहित पर्ब्बत चलायमानहो उठे जिससे उनके ऊपरके वृक्षभी चलउठे व नदियोंकापति समुद्र तो अति चलायमानहोउठा ४१ व गदहे बड़ा कठोरशब्द करनेलगे आकाशमें बादरजोरसे तड़पनेलगे व चारोंओरसे घूमघूम उत्पातसूचक शब्द करनेलगे ४२ रामचन्द्रजी को तो क्रोधकिये व सबदारुण उत्पातदेख सबप्राणी डरउठे व रावण भी बहुतहीडरा ४३ व फिर युद्धहोनेलगा जिसे देवता दानव गन्धर्व्व नाग ऋषि दैत्य गरुड़ व सब ग्रह नक्षत्रादि अपने अपने विमानोंपर चढ़चढ़ ४४ लोकके प्रलयके समान युद्ध देखनेलगे जोकि नानाप्रकार के शस्त्रास्त्रोंसे रामचन्द्र व रावण परस्परकरतेथे ४५ व देवतादैत्यादि सब परस्पर विरोधभी रखतेहैं परन्तु वह युद्धदेख भक्तिसे हर्षितहो आपसमें बड़ाईकरनेलगे ४६ उनमें दैत्यलोग देवता व मनुष्योंसे सदा वैर रखनेके कारण रावण को पुकार पुकार कहनेलगे कि तुमजीतो व देवतालोग बारबार श्रीरामचन्द्रजीसे कहनेलगे कि आप इसदुष्टरावण को शीघ्रहीजीतो ४७ इसी अवसरमें रामचन्द्रजी के ऊपर प्रहार चलानेकी इच्छा से दुष्टात्मा रावण ने बड़ाभारी आयुध लिया ४८ वह बड़ाभारी शूलथा जोकि बज्रके समान पुष्ट महानादयुक्त सब शत्रुओंके नाशनेवाला व पर्ब्बतके शृङ्गोंसमान कूटोंसे संयुक्त होनेकेकारणचित्त व दृष्टि दोनोंको भयदायकथा ४९ व धुआँसहित तीक्ष्णलपकेंयुक्त प्रलय समयके अग्निकेढेरके तुल्यथा व अतिभयानक जिसेकोईभी न सहसके व कालसेभी बड़ेदुःखसे सहनेके योग्य ५० व सब प्राणियोंको डराने

वाला व सबका विदारण व भेदन करनेवाला इसतरह का शूल मारे क्रोधके जलतेहुये रावणने ग्रहणकिया ५१ व अतिशूर सैन्योंके बीचमें खड़ेहुये रावणने क्रोधकर उसे ले अच्छीतरहसे अजमाया ५२ व मारे रोषके लाल नेत्रकर अपनी सेनाको हर्षित करातेहुये उस रावण ने शूल ऊपरको उठाय बड़ा भयङ्कर नादकिया ५३ रावण के उस बड़े भारी नादसे पृथिवी अन्तरिक्ष दिशा व प्रदिशा सबकोकँपायदिया ५४ बड़े भारी शरीरवाले दुष्टात्मा रावण के उस नादसे सब प्राणी भयभीत होगये व समुद्र भी खलभलाय उठा ५५ व वह महावीर्य्य रावण शूल उठाय व बड़े ज़ोरसे नादकर रामचन्द्र जी से कठोरबचन बोला ५६ हेराम हमने यह शूल तुम्हारे ऊपर कोप करके उठाया है इससे भाई को सहायक बनाये हुये तुम्हारे प्राण यह लगतेही निकाल लेगा ५७ हे समरमें अपनी बड़ाई चाहनेवाले रामचन्द्र आज तुमकोमार समरमें मरेहुये राक्षसोंके सदृशकरेंगे ५८ हेराघव खड़ेरहो तुमको इस शूलसे अभी मारेडालतेहैं यहकह रावणने रामचन्द्रजी के ऊपर शूल चलाया ५९ रावणके हाथसे छूटाहुआ आठघण्टा बँधाहुआ व बिजुली की पांतियोंकेसमान चमकताहुआ वह शूल आकाशमें शोभितहुआ ६० वह घोरशूल देख धन्वाझुंकाय श्रीरामचन्द्रजी ने उसके खण्डनकेलिये विविधप्रकारके बाण चलाये ६१ व अपनेऊपर गिरतादेख बाणोंसेरोंका जैसे प्रलयकेसमय उठेहुये अग्निको इन्द्रजी जलकी धाराओं से शान्त करतेहैं ६२ परन्तु रावणके उसशूलने रामचन्द्रजी के धन्वासे छूटेहुये उनसब बाणोंको भस्मकरदिया जैसे अग्नि पांखियोंको भस्मकरदेताहै ६३ शूलमें स्पर्शहोनेहीसे चूर्णहोकर भस्महोगये अपनेबाण आकाशमें देख श्रीरामचन्द्रजी ने बड़ा क्रोधकिया ६४ व मातलिकी लाईहुई इन्द्र की परमप्रिय वहशक्ति बड़े कोपसे उन्होंने हाथमेंली ६५ व घण्टाबँधीहुई होनेकेकारण जो भगवान् श्रीरामचन्द्रजी ने अजमायातो युगान्त की प्रभायुक्त उल्काकेसमान उसने आकाशभर प्रकाशित करदिया ६६ व रावणके उसशूल के ऊपरको चलाया इससे जाय ठीक उसीपर वह गिरी उसशक्ति के लगनेसे वह बड़ाभारी शूल टूटगया व प्रभाहीन होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ६७ व तब श्रीरामचन्द्रजी ने सीधेचलनेवाले

व वज्रकेसमान तीक्ष्णवाणोंसे रावणके रथके सब घोड़े मारडाले ६८ व फिर महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजी ने बहुत से पैनवाण रावण की छाती में मारे व तीनवाण बड़ेजोरसे उसके शिरमें ६९ तब वाणों से सर्व्वाङ्ग भिन्न होजानेसे अंगोंसे रुधिर बहनेके हेतु रावण वृक्षोंके समूहमें स्थित फुलाने अशोकके वृक्षकेसमान शोभितहुआ ७० ॥

हरिगीतिका ॥

रघुनाथ शरहत भिन्नतनु रुधिराक्त रावण ह्वै गयो ।
तब समरमहँ अतिखेदकीन्ह्यो लह्यहुदुःखहि सोनयो ॥
पुनिरोष सब गुणखोय कोप अपारकरि अकुलायगो ।
नहिँ जानतो इमिशूल नाशहि पाइ है यासों ठगो १ । ७१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्र्यधिकशततमस्सर्ग्गः ॥ १०३ ॥

श्रीरामचन्द्र जी के उस प्रहार से अर्दित हो समर में अपनी बड़ाई चाहनेवाले रावण ने बड़ा क्रोधकिया १ व मारेक्रोध के नेत्रलाल कर महावीर्य्यवाला रावण धन्वाउठाय रामचन्द्रजीकी ओरदौड़ा २ व वाणों को सहस्त्रोंधाराओंसे रामचन्द्रजीको भरदिया जैसे वर्षाकालमें आकाश से मेघ सहस्त्रोंधाराओं से तालाबको भरदेतेहैं ३ रावणके धनुषसे छूटे हुये वाणोंसे श्रीरामचन्द्रजी पूर्णभी होगये तथापि अचलपर्व्वतों के समान तनुकभी कम्पित न हुये ४ तब वाणोंसे रामचन्द्रजीके वाणसमूह रोकनेकेलिये रावणने सूर्य्य के किरणोंके तुल्य प्रकाशित वाणलिये ५ व क्रोधकर रामचन्द्रजी की छाती में हज़ारवाण तरपठक मारे ६ उन वाणोंके लगनेसे रुधिर बहने के कारण श्रीरामचन्द्रजी फुलाने हुये पलाशके वृक्षके समान दिखाईदिये ७ वाणों के लगने से बड़ा क्रोधकर महावीर्य्यवान् श्रीरामचन्द्रजी ने भी युगान्त के अग्नि के तुल्य प्रचण्ड वाण ग्रहण किये ८ व राम रावण दोनोंजने परस्पर वाण चलानेलगे यहांतक कि वाणोंकेमारे ऐसीअँधियारी छायगई कि रामचन्द्र व रावण दोनोंजने दिखाई नहींदेते थे ९ तब महाराजाधिराज दशरथजी के पुत्र श्रीरामचन्द्रजी क्रोधकर हँस रावणसे कठोर बचनबोले १० हेराक्षसाधम जिससे कि तूने बिना हमारा पराक्रम जानेबूझे जनस्थानसे अलि

कान्तिमती हमारीभार्य्या चोरीसेलाया इससे तू वीर्य्यवान् नहींहै ११ हमारे न होनेपर एकान्तमें बैठीहुई दुःखित सीताको बलसे चोरलाय हठसे तू अपनाको मानताहै कि हमभी शूर हैं १२ हे बिनापतिवाली स्त्रियोंके सामने शूररावण तू परस्त्रीके बाल पकड़कर खींच ऐसा नीच पुरुषोंकासा कर्म्मकर अपनाको मानताहै कि हमभीशूरहैं १३ हेमर्य्यादाभिन्न करनेवाले हे निर्लज्ज हे आचारभ्रष्ट मारे अहङ्कार के मृत्युकारण रूप परस्त्री चुरालाय तूभी मानताहै कि हमभी शूरहैं १४ कुवेरकेभाई व शूरहो व बलसे हर्षितहो तुम न बड़ीप्रशंसा के योग्य व बड़े यशका कामकिया चोरीकरनाही तो ऐसेलोगोंका कामहीहै हानष्ठ १५ अच्छा अब जो मारे अहंकारके कियेहुये निन्दित व अहितकर्म्म करनेका आज बड़ाभारी फल ले १६ हे दुष्ट मतिवाले रावण अरे तू अपनाको शूर समझता अरे चोरके समान सीताको लेकर भगाहै इसकी तेरे कुछभी लज्जानहींहै १७ क्याकहें जो हमारेसामने कहींतूनेसीताको जबरदस्ती कुछ कठोरवचन भी कहाहोता तो हमारेबाणोंसे वहीं हतहोकर अवश्य अपनेभाई खरको देखता १८ खैर अबभी जो तू हमारेनेत्रों के सामने आया तोभी बड़ेभाग्य की बातहै अभीतुझको बाणोंसेमार यमद्वार को भेजदेतेहैं १९ आज हमारेबाणोंसे कटाहुआ कुण्डल सहित तेराशिर मांसभक्षी पक्षी व शृगालादि जन्तु धूलिमें इधर उधर घसीटेंगे २० बाणोंसे मारेहुये पृथ्वीमें पड़ेहुये तेरी छातीपर बैठबैठ गीध बाणों की गाँसीकेनीचेसे निकलाहुआ रुधिर बड़ी अभिलाष के साथपियेंगे २१ आजहमारे बाणोंसे भिन्नहोकर निर्ज्जीव हो पृथ्वीपर पड़ेहुये तेरीआंतें गृध्र कौवा चील्हआदि पक्षी पकड़ पकड़ खींचेंगे जैसे गरुड़ सर्पोंको पकड़ पकड़ खींचतेहैं २२ ऐसाकहतेहुये अतिशूरबीर श्रीरामचन्द्रजीने शत्रुओंको मारनेवाले समीपही टिके हुये रावणके ऊपर बाणोंकीवर्षा करदी २३ व जैसेही शत्रुकेमारनेकी इच्छाकी कि रामचन्द्रजीके समर में दूनाबलवीर्य्य व हर्षहोआया व अस्त्रकाबल भी दूनाहीहोगया २४ व आत्मज्ञानी श्रीरामचन्द्रजीके आगे अपनेआप सब अस्त्रभी आय प्रकटहुये इससे युद्धकरनेकी इच्छासे वे बहुतही हर्षितहुये २५ अपनामें प्राप्त इतने शुभचिह्नदेख व जान राक्षसोंकेनाशक श्रीरामचन्द्रजी फिर

रावणकोवाणोंसे पीड़ितकरनेलगे २६ तब वानरोंके मारेहुये पत्थरोंसे व रामचन्द्रजी के चलायेहुये वाणोंसे मारेगये रावणका हृदय घूमउठा २७ व बनाय विकलहोगया जब शस्त्र न उठायसका व न धनुषही खींचसका तो फिर रामचन्द्रजीने भी उसकेऊपर वाणचलाना बन्दकर दिया क्योंकि वह तो व्यथाके मारे बनाय व्याकुल होगयाथा २८ उसके प्रथम जो वाण व औरभी शस्त्र श्रीरामचन्द्रजी ने रावणके मरने के लिये चलाये वे सब उसके मरनेही के अर्थहुये इससे वह बनाय मरनेहीपर उद्युक्तहुआ क्योंकि उसके मृत्युकासमय आगया २९ उसके रथके हाँकनेवाले सारथिने उसकी यह अवस्थादेख धीरेसे उसकारथ बड़ीसावधानता के साथ समरसे बाहरलेगया ३० ॥

दोहा ॥

वीर्य्य निहत नृपलपि तवहि भययुत सारथि आप ।
जलद शब्द समरथ रसे लैगो अलग सदाप ११।३१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुरधिकशततमस्सर्गः १०४ ॥

जब सारथि रणसे रावण को बाहरलेगया तो उसकी कुछ मूर्च्छा जागी फिर कालकी प्रेरणासे अब बनाय मृत्युनिकटभी आगई तथापि क्रुद्धहोकर अपने सूतसेबोला १ कि वीर्य्यरहित के समान व सामर्थ्य रहित के तुल्य व पुरुषधर्म्मसे रहित अर्थात् स्त्री के समान व डरपोंक के तुल्य व क्षुद्रजीवकेसमान व सत्वहीनके तुल्य व तेजसेहीनके तुल्य २ व मायाओंसे बँधेही के समान व अस्त्रोंसे बाहरहीहुये के तुल्य मानों हमको समझ हमारा निरादरकर तू अपनीमति के अनुसार काम करताहै ३ अरेहमारे बिचारकीओर कुछभी न दृष्टिदेकर व हमारानिरादर कर तूने शत्रुके सामनेसे हमारा रथ क्यों हटाय रणसे बाहरलाया ४ हे अनार्य्य बहुतदिनोंसे बटोराहुआ हमारा यश वीर्य्य तेज व विश्वास सबतूने नाशकरदिया ५ क्योंकि विक्रमोंसे प्रसन्न करनेके योग्य व अति-विख्यातवीर्य्य शत्रुके सामने से युद्धकीसदा अभिलाषा किये हुये हमको तूने बाहरलेआय कातरपुरुषों की गिनतीमेंलेकर डालदिया ६ जिससे कि अब किसी तरह से भी तू हमारा रथनहीं ले चलता इससे साफ

विदित होताहै कि शत्रुकीओरसे तेराकुछ सत्कारहोचुकाहै यह हमारा वितर्क सत्यहीहै झूंठ किसीतरहसे नहींहै ७ तूने जो कर्म्मकियाहै वह शत्रुओंकेही कर्म्मके तुल्यहै क्योंकि हित चाहनेवाला सुहृद ऐसा कर्म्म कभी नहींकरसक्ता ८ जो बहुतदिनोंसे हमारे यहां रहेहो व हमारे गुणोंका स्मरणकरतेहो तो जबतक हमाराशत्रु समरसे लौटनजावे उसके प्रथमही हमारारथ लौटाकर वहां पहुँचाव ९ जब निर्बुद्धि रावण ने हित बुद्धिवाले अपने सूतसे ऐसेकठोरबचन कहे तो वह सारथि हित व नीतियुक्त बचन रावणसे बोला १० कि न हम डरेहुयेहैं न मूढ़हैं व न शत्रुओंसे कुछ घूसआदि लेकर उनके बशमें पड़ेहैं न मतवाले हैं न आपके बैरीहैं न आपकी ओरसे आजतक जो हमारा सत्कार हुआहै उसेभूलेहैं ११ किन्तु हमने तो आपका हितकरने व यशकी रक्षाकरने के लिये स्नेहसे प्रसन्नमनहो यहतुम्हारा हितकियाहै जिसेतुम अहित समझतेहो १२ हेमहाराज इसविषयमें तुम्हारे हित व प्रियकरनेमें युक्त हमको किसीअनारी पुरुषके समान दोषदेने के योग्य तुमनहींहो १३ जिसलिये जैसे जलकेवेगसे नदीका वेग रोंका जाताहै उसीतरह हमने रथ लौटाराहै उसकाहेतु आपसुनें १४ हमनेजाना कि बड़ाभारी रणकर्म करने से आपको बड़ा श्रमपड़ा है इससे अब इस समय वीर्य्य दिखाने का समय नहीं है १५ इसके सिवाय ये घोड़े भी बड़ी देर से रथमें जुते जुते बनाय थकगये थे क्योंकि पसीनाके मारे बनाय डूबगये थे ऐसे ब्याकुल थे जैसे अकाल की बर्षा में भीजने से गायें ब्याकुल होजाती हैं १६ इसके सिवाय जो जो निमित्त दिखाई देते हैं उन सबके देख पड़ने से सब अमङ्गलही दिखाई देताहै १७ सारथि को चाहिये कि रथीका देशकाल लक्षण व चेष्टादीनता हर्ष खेद बल अबल सब जानेरहै व जिसमें उसका हितहो वहीकाम करे १८ पृथ्वी के नीचे गढ़ा आदि स्थान देखे रहै व समबिषम ऊंचा खाली आदिभी जाने रहै युद्धका समयभीजाने व शत्रुके छिद्रभीदेखतारहै १९ व शत्रुके समीप कबरथलेजाना चाहिये व कबउससे दूररखना चाहिये इसकाभी बिचाररक्खे व कबतक शत्रुकेसामने रथरखना चाहिये व कबतक शत्रुके पीछे खड़ारहनाचाहिये येसबबातेंरथहांकनेवालेको जाननी चाहियें२०

में ये सब बातें अच्छीतरह जानता हूं इसीसे तुम्हारे सुस्तानेकेलिये व इन घोड़ों के भी सुस्तानेकेलिये व बड़ा कठोरखेद बरानेकेलिये हमने ऐसा कार्य्यकियाहै २१ हेस्वामिन् हमने अपने मनसे नहीं रथहटाया बरन आपके स्नेहकेकारण हटायाथा किआप मूर्च्छितहैं ऐसानहो कोई शत्रुआय मारडाले २२ रहा अबसो आप आज्ञादीजिये जो आपकहैंगे वह हम करेंगे व आपके ऋणसे उद्धारहोंगे २३ सारथिका ऐसाबचन सुन रावण बहुतप्रसन्नहुआ व उसकी बड़ाईकर युद्धकरनेकालोभी रावण बोलाभी २४ हेसूत यहरथ अब शीघ्रही रामचन्द्रके सामने लेचलो क्योंकि समरमें बिनाशत्रुओंको मारे रावण न लौटेगा २५ यहकह प्रसन्नहो रावणने अपने एकहाथेका कोई भूषणउतार सारथिको दिया २६ व रावणके बचनसुन सारथिने रथलौटाया रावणके बचनसे प्रेरित सारथिने शीघ्रही घोड़ोंको हांका कि जिसमें राक्षसेन्द्रका वह महारथ शीघ्रही जाय इससे रामचन्द्रजीके सामनेपहुंचा २७ ॥

इत्यार्परामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेपञ्चाधिकशततमस्सर्ग्गः १०५ ॥

तिसकेपीछे युद्धकरनेसे थके व समरमें चिन्तायुक्तहोकरखड़े व युद्ध करने पर उपस्थित रावण को आगे खड़ादेख १ सब देवताओंके साथ प्राप्तहो रण देखनेकेलिये रामचन्द्रजी के बनाय समीपआय भगवान् अगस्त्यजी बोले २ हेमहावाहु रामचन्द्र जिसके धारणकरने से समर में सबशत्रुओंको जीतोगे वह सनातन आदित्यहृदय नामस्तोत्र सुनो ३ क्योंकि शत्रुओंका बिनाशक पुण्यदायक नाशरहित व कल्याणरूप व जयदेनेवाला यह आदित्यहृदय सबको जपनाचाहिये ४ यहस्तोत्र सब मङ्गलवाले कामोंमें मङ्गल करनेवालाहै व सबतरह के कायिक वाचिक व मानसिक पापोंका नाशकरनेवालाहै व चिन्ता व शोकका नाशकरता है तथा आयुर्ब्बल बढ़ाता व सबसे उत्तमहै ५ इससे तुमभी सब भुवनोंके ईश्वर भास्कर व विवस्वान् आदिनामों से प्रसिद्ध अपने किरणोंसहित उदितदेवता असुरोंके भी नमस्कार करनेकेयोग्य सूर्य्यकी पूजाकरो ६ क्योंकि इनमें सबदेवता टिकेहैं व बड़ेतेजस्वीहैं इसीसे अपने किरणोंसे सबको प्रकाशित करतेहैं व ये अपनीकिरणोंसे देवगण व दैत्यगणों की

रक्षाकरतेहैं व सबलोकोंकी भी रक्षा यही करतेहैं ७ ब्रह्मा विष्णु शिव स्कन्द प्रजापति इन्द्र कुबेर काल यम चन्द्रमा वरुण सबयहीहैं ८ व पितर वसु साध्य अश्विनीकुमार देवता मनु पवन अग्नि प्रजा प्राण व सब ऋतुओंके कर्त्ता व सबकेप्रकाशक यहीहैं ९ ॥

चौपाई ॥ सवितासूर्य्यपूषखग आदित । भानुगभस्तिमानगुणनादित ॥ स्वर्णरेत दिनकर सुवर्ण सम । करहिं विश्वकेसकल पापशम १ । १० सप्तसप्ति हरिदश्व शम्भु हरि । सहस्राचितिमिरघ्न प्राण भरि ॥ त्वष्ठ मरीचिमान अँशुमाना । मार्त्तण्ड गुणनिधिभगवाना २ । ११ ॥

व हिरण्यगर्भ शिशिरतपन अहस्कर रवि अग्निगर्भ अदितिपुत्र शङ्ख व शिशिरनाशन १२ व्योमनाथ तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारग घनवृष्टि अपांमित्र विन्ध्यवीथी प्लवङ्गम १३ आतापी मण्डली मृत्यु पिङ्गल सर्व्वतापन कवि विश्व महातेज रक्त सर्व्वभवोद्भव १४ नक्षत्रग्रहताराधिप विश्वभावन तेजसामपितेजस्वी व द्वादशात्मा इतने नाम लेकर सूर्य्य के नमस्कार करो १५ पूर्व्व के पर्व्वत पर उदय होनेवाले तुम्हारे नमस्कार हैं व पश्चिमके पर्व्वतपर अस्त होनेवाले तुम्हारे नमस्कार हैं नक्षत्रगणों के पति के व दिनके अधिपतिके नमस्कारहैं १६ जय जयभद्र व हर्य्यश्व के नमस्कार हैं सहस्रांशु तुम्हारे नमस्कारहैं व आदित्य तुम्हारेभी १७ उग्र वीर सारङ्ग पद्मप्रबोध व प्रचण्ड तुम्हारे नमस्कारहैं १८ ब्रह्मेशानाच्युतेश सूर आदित्यवर्चस् भास्वान् सर्व्वभक्ष व रौद्र व पुष् तुम्हारे नमस्कारहैं १९ तमोघ्न हिमघ्न शत्रुघ्न अमितात्मा कृतघ्नघ्न देव ज्योतिःपति तुम्हारे प्रणामहैं २० तप्तचामीकराभ हरि विश्वकर्म्मा तमोऽभिनिघ्न रुचि व लोकसाक्षी तुम्हारे नमस्कारहैं २१ ये सूर्य्य प्रलयसमयमें सबप्राणियोंको नाशतेहैं व सृष्टिके समय सबको उत्पन्नकरते व फिर सबकी पालनाकरते व यहीसदा तपाकरते व यहीसदा अपने किरणोंसे बरसतेहैं २२ व सबप्राणियोंके सो जानेपर ये जागाकरतेहैं व अग्निहोत्र यज्ञयही हैं व अग्निहोत्रकरने वालोंको फल यही देतेहैं २३ देवता यज्ञ यज्ञोंकाफल व औरभीजोजो कृत्य तीनोंलोकोंमें होते हैं सबके परमप्रभु यही हैं २४ हे रामचन्द्रजी विपत्तियों कष्टोंवनों व भयोंमें जो कोई इनका कीर्त्तन करताहै वह पुरुष

कष्टित नहींहोता २५ इस स्तोत्र को तीनबार जपकर एकाग्रचित्त हो इन देवदेव व जगत्पति सूर्य्यकी पूजाकरो युद्धमें तुम्हीं जीतोगे २६ हे राघव ऐसा करनेसे इसीक्षणमें तुम रावणकोजीतोगे इतनाकहअगस्त्य जी जिसतरह आयेथे उसीतरह चलेगये २७ यहसुनमहातेजस्वी रामचन्द्रजीका सब शोक नष्टहोगया पवित्र व प्रसन्न होकर इस स्तोत्र को रामचन्द्रजीने धारणकिया २८ व सूर्य्यनारायण की ओर निहार इस स्तोत्रको तीनबार जपा इसके जपनेसे बड़े हर्षितहुये जपनेकेपीछे फिर तीनबार आचमनकर पवित्रहो महावीर्य्यवान् रामचन्द्रजी ने धनुष हाथमेंलिया २९ व रावणको देख बहुत हर्षितहुये व युद्धकरनेके लिये आगेबढ़कर खड़ेहुये व उसके बधकेलिये बड़ाभारी यत्नकरनेलगे ३० देवताओंके मध्यमें प्राप्त सूर्य्यनारायण उसीसमय रावणका बधहोना जान अतिप्रमुदित व प्रहर्षितहो रामचन्द्रजीको देख बोले कि बस अब मारनेमें जल्दीकरो ३१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेषडधिकशततमस्सर्गः ॥ १०६ ॥

शत्रुकीसेनाको भयभीत करनेवाला व गन्धर्व्व नगरके आकार अत्याश्चर्य्ययुक्त व बड़ीऊँची पताकायुक्त रथदेख रावणका सारथि बहुत हर्षितहुआ १ फिर सुवर्णकी मालाओं से भूषित घोड़ोंसेयुक्त व युद्धकी सामग्रीसेपूर्ण व पताका ध्वजमालासे भूषित आकाशको मानोंलीलताही हुआ व पृथ्वीको नादित करताहुआ २ अपनी सेनाओंको हर्षितकराता हुआ व शत्रुकी सेनाओंको नाशताहुआ रावणकारथ सारथि ने शीघ्रही फिर रणभूमिकोचलाया ३ व बड़ीभारी ध्वजायुक्त बड़ानाद करताहुआ सामने चला आता हुआ राक्षसराजका रथ नरराज श्रीरामचन्द्रजी ने देखा ४ उसमें काले तो घोड़ेजुतेथे व भयङ्कर तेजसेयुक्तथा इसीसे आकाशमें सूर्य्यवत्प्रकाशित बिमानकेसमान शोभितहोताथा ५ बिजुलीके आकारकी पताकाओंसे सघन व इंद्रकेधनुषके आकार आयुधोंसेयुक्त व बाणोंको धारा छोड़ता हुआ जलधारा छोड़ते हुये बादर के समान ६ मेघसमान चलाआता शत्रुका रथ वज्रलगनेसे फटेहुये पर्व्वतके शब्दके समानघरघराताहुआदेख ७ द्वितीयाके चन्द्रके समान टेढ़ाधनुषशब्दित

कराते हुये श्रीरामचन्द्र इन्द्रके सारथि मातलिसे बोले ८ मातलि देखो सामने शत्रुका रथ दौड़ा चलाआताहै ९ व बाईंओरको झुंकाहुआरावण समरमें हमको मारनेके बिचारसे चलाआताहै १० तिससे अबतुमसावधान होजावो व शत्रुके रथके सामने रथलेचलो क्योंकि जैसे बायुमेघ को बिध्वंस करडालता है वैसेही हम यह रथ बिध्वंसा चाहते हैं ११ इससे निर्भयहो व भ्रान्तिरहित हो हृदय व नेत्र सुस्थिरकर घोड़ोंकी बाग खींचने व ढीलकरनेमें सावधानहो शीघ्र रथलेचलो १२ यद्यपि तुम सिखानेके योग्य नहींहो क्योंकि इन्द्रजी के सारथि हो तुम अच्छी तरह सब प्रक्रिया जानतेहो तथापि हम एकाग्रहोकर युद्धक्रिया चाहते हैं इससे तुमको स्मरण करातेहैं कुछ सिखलाते नहींहैं १३ रामचन्द्र जीके इसबचनसे प्रसन्नहोकर देवताओंके सारथियोंमें उत्तम मातलिने रथ अच्छीतरहसे चलाया १४ इसतरहसे रथचलाया कि रावणका रथ बाईंओर पड़गया व पहियोंकी धूलिसे रावण मूंदगया १५ तब रावण मारे क्रोधके लालनेत्रकर रामचन्द्रके रथकेऊपर बाणबरसाने लगा१६ रावणकी इस ढिठाईको न सहकर मारे क्रोधके समरमें रामचन्द्रजी ने इन्द्रका धनुषउठाया १७ व दोनोंजने परस्पर अपनीअपनी बिजयकी इच्छाकिये हुये उन्मत्त दोसिंहोंके समान युद्ध करनेलगे १८ तबदेवता गन्धर्व्व ऋषिचारण सिद्धादि रावणके नाशनेकी इच्छा कियेहुये श्रीरामचन्द्रका युद्धदेखने के लिये आये १९ व उसीअवसर में रावणकेनाश के लिये व रामचन्द्रजीकी बिजयके लिये बड़ेभारी दारुण उत्पात होने लगे २० जैसे कि देवतालोग रावणके रथके ऊपर रुधिर बरसानेलगे व रावणकी बाईंओर मण्डलाकार बौंड़रके आकार बायुबहनेलगा २१ व जिधरजिधर उसका रथजाता उधरउधर गृध्रोंकीपंक्ति पिछवायेचली जाती २२ व दुपहरीके फूलके समान लाल संध्यासे लंका आच्छादित होगई इससे वहांकी भूमि दिनमेंभी अग्निसे जलतीहुईसी दिखाईदेने लगी २३ व बज्रपात सहित बड़ीबड़ी उल्कारावणके आगे आयगिरीं व उन्होंने रावणके प्रतिकूल होनेके कारण राक्षसोंको विषादयुक्त कर दिया २४ व जहां रावणथा वहांकीपृथ्वी कँपनेलगी व प्रहारकरतेहुये राक्षसोंकी जानों किसीने बाहें पकड़लीं २५ व सूर्य्यके किरण लाल

हातहैं परंतु जानों पीले व श्वेतरंगके होकर रावणकेअंगोंमें बिविधप्रकार के दिखाई देनेलगे जैसे पर्व्वतपर गैरिकादि धातु दिखाईदेतेहैं २६ व पीछेपीछे गृध्र आगे आगे शृगालियां रावणका मुख देखतीहुई मुखोंसे ज्वाला निकालतीहुई अमंगलशब्द बोलनेलगीं २७ व रावण के प्रतिकूल पवन बहनेलगा इससे सबधूलि रावणके मुखहीमें पड़तीथी २८ व रावणकी सेनामें चारोंओरसे बज्रपात होनेलगे व बिना बादरके आकाश गर्ज्जनेलगा २६ सबदिशों व प्रदिशोंमें अँधियारी छागई व मारे धूलिके आकाश मूंदगया ३० व उसके रथके ऊपर मैना युक्त करकर गिरनेलगे इसतरह सैकरों दारुण पक्षी दारुण शब्द करते हुये उसके रथ पर गिरनेलगे ३१ व उसके रथके घोड़ोंकी जांघोंसे चिनगारियां व नेत्रों से आंशु निकलनेलगे व आंशु जो बहते अग्नि के तुल्य गरम बहते ३२ रावणके बिनाशके लिये इसतरहके बहुतसे दारुणउत्पातहुये जिनको देखनेवालोंको भयहोती थी ३३ व रामचन्द्रजी के सामने सब कल्याण कारक सौम्यनिमित्त दिखाई दिये जो कि श्रीरघुनाथ जी की जय बताते थे ३४ अपनी जय के सूचक निमित्त देख रामचन्द्र जी ने रावण को माराहुआ समझलिया ३५ ॥

हरिगीतिका ॥

रघुनाथ लषि निजगत निमित्त सुहावने प्रमुदित भये ।
सकल कारण चतुर राघव अतिहि हर्षित ह्वै गये ॥
अरु चित्त महँ सन्तोष कीन्ह्यों जानि रावणको हतो ।
यासों समरमहँ अधिकविक्रम करनलाग्यो सुखयुतो १ । ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेसप्ताधिकशततमस्सर्गः १०७ ॥

तिसकेपीछे राम रावणका महाक्रूर व सबलोकोंको भय पहुँचानेवाला युद्ध होनेलगा १ यहांतक कि हाथों में शस्त्रास्त्रलिये राक्षसों व वानरोंकी सेना निश्चेष्ट होकर गिरपड़ी २ व राम रावणको बड़ी बलिष्ठताके साथ युद्धकरते देख राक्षस व वानर बहुत बिस्मितहुये ३ व नानाप्रकारके आयुधों व भुजोंसे युद्धहोते देख बिस्मितहो ठौर ठौर खड़े रहगये परस्पर युद्ध करनाही भूलगये ४ रावणको देखतेहुये राक्षसोंकी सेना व रामचंद्र

जीके देखतेहुये वानरोंकी ऐसी चकड़ाकर खड़ीहोगई मानों चित्रसारीमें
लिखदीगई इससे अति शोभितहुई ५ रामचन्द्रजी व रावण दोनों जने
जो निमित्त प्रथमहुयेथे उनका स्मरणकर निर्भय होकर युद्ध करनेलगे
६ उनमें रामचन्द्रजीने तो अपने शुभ निमित्तोंसे अपने मनमें ठानलिया
कि हमें जीतना है व रावण ने अशुभनिमित्तों से अपने मनमेंठानलिया
कि हमेंमरना है इससे दोनोंजने समरमें अपना अपना वीर्य्य दिखाने
लगे ७ तब क्रोधसे रावणने बहुतसे बाण रामचन्द्रजीके ध्वजके काटनेके
लिये चलाये ८ परन्तु वे बाण इन्द्रके अद्भुत शक्तिवाले रथपर लग व कुछ
भी अङ्गभङ्ग न कर पृथ्वीपर निष्फल होकर गिरपड़े ९ तब रामचन्द्रजी
ने भी बदला लेनेके बिचारसे अपने धनुषपर बहुतसे बाण चढ़ाये १०
व रावणके ध्वजपर एक पैन सर्प्पाकार बाण तेजसे प्रकाशित चलाया
११ वह रामचन्द्रजीका चलायाबाण रावणका ध्वज काटजाय पृथ्वीमें
पैठगया १२ व वह रावण का ध्वज कटकर भूमिपर गिरपड़ा अपना
ध्वज कटादेख महाबली रावण १३ क्रोधसे उत्पन्न अग्निसेप्रज्वलितहो
समरमें अग्निके समान प्रकाशित हुआ व मारेक्रोधके जानों सबको भ-
स्महो करनेलगा १४ व मारेक्रोधके रावण रामचन्द्रजीके ऊपर बाण
बरसानेलगा प्रथम तो दीप्तबाणों से रामचन्द्रजीके घोड़ोंको मारा १५
परन्तु वे घोड़े तो दिब्यथे इससे न कुछ हिले न चले व न कुछ भ्रान्तही
हुये बरन स्वस्थहृदय ज्योंकेत्यों बनेरहे जैसे कमलोंकी मालाके लगनेसे
कुछ ब्यथा नहींहोती वैसेही वे निर्ब्यथित बनेरहे १६ उन घोड़ोंको साव-
धानही देख क्रोधकर रावणने फिर बाणोंकी बर्षाकी १७ व गदा परिघ
चक्र मुशल पर्व्वतोंके शृङ्ग वृक्ष शूल फरसादि १८ अस्त्रमायाके बलसे
बनाय बनाय उसने चलाये इस तरह सैकरों हज़ारों बाण चलाये पर
हृदयसे कुछभी नहींथका १९ व वह महातुमुल सबको त्रासकारक भय-
ङ्कर शब्दयुक्त अस्त्रोंकी बड़ीभारी वर्षाहुई २० फिर रामचन्द्रजी के रथ
को तो उसने छोड़दिया बड़ी बाणोंकी वर्षा वानरोंके ऊपर करनेलगा
जिस वर्षासे सब अन्तरिक्षबाणोंसे भरगया इसतरह सावधानताकेसाथ
रावणने बाणावरी की २१ रावणको बानरोंके ऊपर बाणवृष्टि करतेदेख
हँसतेहुये श्रीरामचन्द्रजी ने पैनबाण धन्वापर चढ़ाये २२ व सैकरों ह-

बज़ारों बाण तरपटक चलाये तिन बाणोंको देख रावणने बाणोंसे आकाश पूर्ण करदिया जिससे कहीं भी बाकी न रहा २३ उससमय रामचन्द्रजी व रावणके चलायेहुये बाणोंके एकमें सँटजानेके कारण जानों दूसरा और आकाशही बनगया २४ वे बाण उत्साहरहित न हुये व जितना उनको ज़ोर करना चाहियेथा उससे अधिक ज़ोर नहींकिया व निष्फल भी नहींहुये जो जिसके ऊपर चलायेगये उसपर अवश्यलगे २५ व लग कर परस्पर एक दूसरेको तोड़ साथही धरणीपर गिरपड़े इसतरह समरमें बाण छोड़तेहुये रामचन्द्र जी व रावणके २६ निरन्तर बाण चले कुछभी अन्तर नहींपड़ा ऐसे बाणचले कि जानों आकाशका श्वासलेनाही बन्द होगया सब बाणही बाण होगये २७ फिर रावणके घोड़ोंको तो रामचन्द्रजीने मारा व रामचन्द्रजीके घोड़ोंको रावणने इसतरह परस्पर दोनों जनोंने मानों एक दूसरेसे बदला लेनेके लिये बाण चलाया २८ इसप्रकार क्रोधकर दोनोंजने बराबर युद्ध करते रहे जिससे एक मुहूर्त भरतक महातुमुलयुद्ध हुआ जिसेदेख देखनेवालोंके रोम खड़ेहोगये फिर जो युद्ध करतेथे उनको क्या कहें २९ ॥

दोहा ॥

शिव बाणनसों लरतरण रावण राघव दोय ।
ध्वज निपातसों रामपर रावण कोप करोय १ । ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टाधिकशततमस्सर्गः॥ १०८ ॥

तमामें राम रावणको युद्ध करतेहुये देख सबप्राणी विस्मितहुये १ वे दोनोंजने परस्पर क्रोधकर परस्पर दौड़ परस्पर एक दूसरेकारथ अर्दित करतेहुये २ व परस्पर एकदूसरेके मारनेमें तत्परहो मण्डलाकार सीधेतिरछेइधरसे उधरउधरसेउधरजानेआनेसे व बिबिधप्रकारकी सारथिकी युक्ति दिखातेहुये घोररूप होगये ३ व बड़े बेगसे आनेजाने से कूद कूद रावणको तो रामचन्द्रजी अर्दित करते व रामचन्द्रजी को रावण ४ व दोनोंजने परस्पर एकदूसरे के रथपर बाणोंकी झर करते हुये बरसतेहुये दो मेघोंके समान दिखाई देनेलगे ५ इसतरह समरमें बिबिधप्रकार की गति दिखाय फिर परस्पर एकदूसरे के सामने खड़े

होगये ६ इसतरह वनाथसमीप दोनोंजनोंने आमनेसामने अपनेअपने रथ खड़ेकिये उनके घोड़ोंसे उनके घोड़ोंकेमुख जुटगये व पताका पताका में मिलगईं ७ तब श्रीरामचंद्रजीने धनुषसे छूटेहुये अपने चार पैनेबाणों से रावणके चारों घोड़ोंको ऐसामारा कि वे बड़ीदूरतक पछरगये ८ घोड़ों के पछरनेसे बड़ाभारी क्रोधकर रावणने भी रामचन्द्रजीके ऊपर बड़ी बाणोंकी झर लगाई ९ परन्तु अति बलवान् भी रावणके बाणोंके लगने से रामचन्द्रजीको न तो कुछ बिकारही हुआ न वे कुछ ब्यथितही हुये १० फिर रावणने बज्रपातके समान शब्द करतेहुये बाण इंद्रके सारथि के ऊपर चलाये ११ यद्यपि बड़ेबेगसे मातलिके शरीरपर बाण चलाये परन्तु उन बाणोंने थोड़ी भी ब्यथा व चित्तवैकल्य न किया १२ तब जिसतरह अपने ऊपर भी बाणोंके लगनेसे क्रोध नहीं कियाथा तिससे अधिकक्रोध मातलिके ऊपर बाणछोड़ने से किया व क्रोधकर ऐसीबाणों की बर्षा शत्रुके ऊपर की कि जिससे रावणने रणकी ओरसे मुख फेर-लिया १३ रावणके रथपर लगातार बीस तीस साठ सैकरों व हजारों बाण मारे १४ फिर रावणनेभी बड़ा क्रोधकर अपने रथ पर टिकेही टिके गदा मुशलोंकी बर्षारामचन्द्रजीकेऊपरकी १५ इससे फिरगदाओं मुशलों व परिघोंके भयंकर शब्दसेबड़ारोमहर्षण व रणसंकट युद्धहुआ १६ व उससमयके चलायेहुये बाणोंके पवनसे सातोंसमुद्र खलभलाय उठे १७ समुद्रोंके खलभलाने व चलायमान होनेसे पातालके निवासी दानव नागादि सब ब्याकुलहोगये १८ व पर्व्वत बनादि सहित सब पृथ्वी कांपउठी व सूर्य्य प्रभारहित होगये पवनका चलना बन्दहोगया १९ इस दशाके होनेसे देवता गन्धर्ब किन्नर सिद्ध नाग व ऋषिलोग बड़ी चिन्ताको प्राप्तहुये २० ब्राह्मणों व धेनुओं को स्वस्ति हो व सब लोक निरन्तर अपने अपने स्थान पर टिके रहें समर में रामचन्द्रजी रावणको जीतें २१ इसको जपते हुये देवता व ऋषिगण रामचन्द्र व रावण का बड़ाघोर व रोमहर्षण युद्ध देखनेलगे २२ व आकाशके तुल्य आकाशही समुद्रके तुल्य समुद्रही ऐसेही राम रावणके युद्धके समान रामरावणही का युद्ध है और नहीं है २३ अद्भुत व अनुपम युद्ध देख गन्धर्व्व व अप्सराओं के झुण्ड ऐसा कहते हुये राम रावण का युद्ध

देखते थे २४ तब रघुबंशियोंकी कीर्त्ति बढ़ानेवाले श्रीरामचन्द्रजीने क्रोध कर बिषधर सर्प्प के समान बाण अपने धन्वापर चढ़ाया २५ व उससे मारा कुण्डलसहित रावणका शिर कटकर पृथ्वीपर गिर पड़ा व पृथ्वी पर पड़ा हुआ वह शर तीनोंलोक के निवासियों ने देखा २६ परन्तु जिसतरह का रावणका शिर रामचन्द्रजीने काटडाला उसके उसीतरह का और शिर जमआया तब बड़ीजल्दी हाथ चलानेवाले व सब युद्ध की क्रियामें कुशल श्रीरामचन्द्रजीने २७ समरमें और बाणों से दूसरा भी रावणका शिरकाटडाला परन्तु काटडालने के पीछे तुरंतही फिर वह शिर ज्योंकात्यों रावण के धड़पर जुड़ा दिखाईदिया २८ उसे भी वज्र समान बाणोंसे रामचन्द्रजी ने काटडाला इसतरह उसी तरह सौबार तक रावण के शिर रामचन्द्रजी काटतेगये परन्तु रावण के शिरोंका व रावणके प्राणोंके नाशका अन्त न दिखाईदिया २९ तब कौशल्याजी के आनन्द बढ़ानेवाले वीरशिरोमणि व सब अस्त्रशस्त्र बिद्या में निपुण श्रीरामचन्द्रजी हाथ व तरकसमें बहुतसे बाणलिये बड़ीचिन्ताको प्राप्त हुये ३० व बिचारनेलगे कि जिनबाणोंसे हमने मारीचकोमारा व जिनसे खरदूषण को मारा व जिनसे क्रौञ्चारण्य में कवन्धको मारा तथा दण्डकारण्य में बिराध को मारा ३१ व जिनसे सात साँखू के वृक्ष एकहीबार में काटडाला व जिनसे बालिको मारा फिर समुद्रको चलायमान करदिया वही हमारे सब ये बाण युद्धमें सदा सफलही रहने वाले बिद्यमान हैं ३२ फिर यह कौन कारण है जो रावण के ऊपर वे मन्दतेजहोगये ३३ इसतरह चिन्तायुक्त तो हुये परंतुसमरमें सावधान चित्त बनेरहे इसबात पर कुछ घबड़ाने नहीं इससे फिर श्रीरामचंद्रजी रावणकी छातीमें बाणों की बर्षा करनेलगे ३४ व रावणभी बड़ाक्रोध कर गदा मुशलादिकों से रामचन्द्रजी को मारनेलगा ३५ अबकी भी बड़ा रोमहर्षण व रणसंकटयुद्ध हुआ जो कभी अन्तरिक्ष में हुआ कभी भूमिपर कभी पर्ब्बतपर ३६ देवता दानव यक्ष पिशाच नाग राक्षस इन सबोंके सामने यहयुद्ध सात रात्रितक होता रहा ३७ न रात्रिको बन्द हुआ न दिन को न मूहूर्त्त भर बन्दहुआ न क्षणभर रामचन्द्र व रावणका युद्ध इसतरह हुआ ३८ ॥

कुण्डलिका ॥

दशरथ सुत निशिचर अधिप लड़तरहे बहु भांति ।
विजय न लषि रघुनाथकी रणमहँ लही न शांति ॥
रणमहँ लही न शांति महात्मा इंद्र सारथी ।
मातलि अस ज्यहिनाम सदा रघुबर जय अरथी ॥
सो बोल्यहु संग्राम बीच जो सुरनर बरनुत ।
बातें सकल बुझाय सुनहु ममबच दशरथ सुत ॥ १ । ३६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेनवाधिकशततमस्सर्गः ॥ १०६ ॥

इसतरह युद्धकरतेदेख इंद्रका सारथि मातलि रामचन्द्रजीको स्मरण दिलाताहुआ बोला कि हे वीर राघव आप तो ऐसायुद्ध इसकेसाथ करतेहो जानों इसके मारनेकाउपाय जानतेहीनहीं १ हे महाराजाधिराज इसके मारनेके लिये ब्राह्मास्त्र चलाइये क्योंकि इसके बिनाशका काल जो हमसे देवताओं ने बतायाथा वह अब आगया तो क्योंबिलम्ब करतेहो २ जब मातलिने इसतरह रामचन्द्रजीको स्मरणकराया तो उन्होंने सर्प्पसमान श्वासलेताहुआ बाण हाथमें लिया ३ यहबाण इनको अगस्त्यजीने अपनी कुटीपर प्रथमही दियाथा उनको यहसफल बाण ब्रह्माजीने दियाथा ४ इसे अमिततेजस्वी ब्रह्माजी ने इंद्रके लिये बनायाथा व तीनोंलोकोंके जीतनेकी इच्छाकियेहुये इन्द्रको दियाथा ५ जिस महाबाण के पक्षोंपर तो पवनको स्थापित किया था व गाँसीपर अग्नि औरसूर्य्यको व अन्यसब शरीर आकाशमय बनाया था व गरोई में सुमेरु व मन्दराचल के समानकिया ६ व शरीरभर इसबाणकी जोज्वल्यमान सुवर्णके सुन्दर पङ्खोंसे भूषित व सबप्राणियोंके तेजसे इसे बनाया इससे सूर्य्यवत्प्रकाशित रहता ७ देखने में धुआँसहित अग्नि के समान काला व सर्प्प के बिषके समान चमकता रथ हाथी घोड़ों के समूहों को भेदन करनेवाला व बड़ी शीघ्रता से कार्य्य करनेवाला ८ व द्वारों परिघों व पर्व्वतों कोभी भेदन करनेवाला व नानाप्रकार के रुधिरों से युक्त व चरबीके लगनेसे अतिदारुण ९ बज्रके सारांशसेभी पुष्ट महानादयुक्त व नानाप्रकारके संग्रामों के लिये दारुण सब देखने

वालोंको भयानक व श्वास लेतेहुये बिषधर सर्प्पके समान भयंकर १० व युद्धमें नित्यही कङ्क गृध्र बगुला शृगालगण व राक्षसों को भोजन देनेवाला व यमराजके समान सबको भय पहुंचानेवाला ११ वानरेन्द्रों को प्रसन्न करनेवाला व राक्षसों को मारनेवाला व गरुड़के चित्र बिचित्र पँखोंसे युक्त १२ व इक्ष्वाकुबंशियों के भयका नाशक व शत्रुओं की कीर्तिका हरनेवाला व अपना को हर्ष बढ़ानेवाला ऐसे उत्तम बाण को १३ महाबली श्रीरामचन्द्रजीने मंत्र युक्तकर वेदकी बिधिसे धन्वा पर चढ़ाया १४ जब रामचन्द्रजी ने वह उत्तम बाण धन्वा पर चढ़ाया तो सब प्राणी थरथराय कांप उठे व पृथ्वी चल उठी १५ व रामचन्द्रजीने बड़ा क्रोधकर रावण के बधके लिये धन्वानवाय बड़े जोरसे सब मर्म्मस्थल बिदारण करनेवाला बाण चलाया १६ व इंद्रके हाथ से चलायेहुये बज्रके समान दुर्द्धर्ष व यमराज के समान किसीके न रोंकने के योग्य वह बाण जाय रावणकी छातीमें लगा १७ व महाबली रामचन्द्रजीके छोड़ेहुये शरीरान्त करनेवाले उस बाणने दुष्टात्मा रावणका हृदय बिदीर्ण करडाला १८ व रुधिर लगा हुआ व बेग से शरीर के अन्त करनेवाला वह बाण रावण के प्राणोंको हरता जाय पृथ्वीमें पैठ गया १९ व फिर वह रावण को मार रुधिर से गीला बाण कार्य्यकर अपने तरकस में आगया २० व निर्ज्जीव होजाने के कारण रावण के हाथसे धनुर्व्वाण उसके प्राणसहित गिरपड़ा २१ व महा दीप्तिमान् रावण प्राणहीनहो बड़े वेगसे रथ परसे भूमिपर गिरपड़ा जैसे बज्रके लगनेपर वृत्रासुर निर्ज्जीव होकर गिराथा २२ तिसको भूमिपर पतित देख अपने स्वामीके मारजानेपर जो मारनेसे बचेबचाये राक्षसथे मारे भयके सब इधर उधर भाग खड़ेहुये २३ व नाद करतेहुये बानरलोग उनके मारने के लिये पीछे पीछे दौड़े परन्तु रावणको मारा हुआ देख व रामचन्द्रजीकी बिजयदेख बानरों से मारपीटे हुये सब राक्षस मारे भयके लङ्काको भागगये २४ क्योंकि जिसरावणके वेलोग आश्रित थे तिसके मारजाने पर अनाथ होगये इससे करुणापूर्व्वक रोदन करते हुये बेचारे भागगये २५ व बानरलोग रामचन्द्र की बिजय व रावण का बध जोरसे कहतेहुये बड़े हर्ष से नाद करनेलगे २६ व आकाश में

बड़े जोरसे देवताओं का नगारा बाजनेलगा व सुगन्धित पवन सुख देनेके लिये बहनेलगा २७ व देवताओं के हाथोंसे छूटीहुई अन्यलोगों को दुर्ल्लभ पुष्पोंकी वृष्टि आकाश से रामचन्द्र जीके रथ परसे होकर भूमिपर गिरी २८ व महात्मा देवतालोग आकाश से रामचन्द्र जीकी स्तुतिके साथ बहुत अच्छा बहुत अच्छा ऐसे उत्तम बचन कहने लगे वसबको सुनाई दिये २९ व सब लोकोंको भय पहुंचानेवाले दुष्टात्मा रावणके मारजानेपर देवता व चारणलोग बहुत हर्षितहुये ३०राक्षसों के स्वामी रावणको मार प्रसन्न मनहो रामचन्द्रजीने सुग्रीव व अङ्गद के सब मनोरथ पूर्ण करदिये ३१ ॥

हरिगीतिका ॥

देवगण भयरहित भे सब दिशा सकल प्रकाशही ।
आकाश बिमल प्रकाशयुतभो अचलभूमि बिकाशही ॥
सुखकारि बहन बयारिलागी सूर्य्यसुस्थिर प्रभ भयो ।
दशमौलि नाश पोसान सबकहँ सकलदुख सबकरगयो १ । ३२ ॥
सुग्रीव अङ्गद अरु बिभीषण लषन सब सुहृदादिहू ।
अरु बिजयपाय बनाय प्रमुदित हर्षयुतन बिषादिहू ॥
समर महँ अभिराम पूरण काम रामहि शंसही ।
अरु बिबिधभांति बिचारिपूजहि जयतिदिनकरबंशही २ । ३३ ॥
रिपुमारि निजपणकारि स्वजन बिहारि राघव समर में ।
निज सुहृदगण युतमुदितह्वै अतिभयहु शोभित धरम में ॥
जिमि देवगण युत अपरपति सोहत भली बिधि वैसही ।
रघुनाथ करतसनाथ सबजन साथलैकै वैसही ३ । ३४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेदशाधिकशततमस्सर्ग्गः ॥११० ॥

रामचन्द्रजी से पराजित व मारेहुये अपने भाई रावणको देख मारे शोकके बेगसे व्याकुलहो बिभीषणजी बिलाप करनेलगे १ हेबीरबिक्रान्त बिख्यात हेसुनीति जाननेवालोंमें चतुर तुमतो बड़ेमोलकी शय्यापर शयनकरनेके योग्यथे २ अब बहूंटा धारण कियेहुये दोनोंभुजा पसारे व सूर्य्यवत्प्रकाशित मुकुट अलगबहाय बिना बिछाई भूमिपर कैसेसोतेहो ३

हेवीर हमने जो वचन पूर्व्वसमय में तुमसे कहाथा व काम मोहयुक्त तुमको न अच्छालगा उसीहेतु अब इसतरह मारेपड़ेहो ४ मारे अहङ्कार के हमारेवचनमें प्रहस्त मेघनाद कुम्भकर्ण अतिकाय व और लोगोंने व तुमनेभी नहींमाने यहउसीका परिणामहै जो इसदशाको पहुँचे ५ शस्त्र-धारियोंमें श्रेष्ठ वेदवेदाङ्ग पारगन्ता इसरावण के मारजाने पर सुनीति जाननेवालोंकी मर्य्यादा जातीरही व धर्म्मका शरीरभी जातारहा व सत्वका प्रचारभी जातारहा व स्तुतियोंकी भी गति जातीरही ६ सूर्य्य पृथ्वीपर गिरपड़े चन्द्रमा अन्धकारमें डूबगया अग्निकी ज्वाला शान्त होगई वीरोंका उत्साह जातारहा क्योंकि ऐसे महात्माकीभी जो ऐसी गतिहुई तो औरोंकी कौन गणनाहै ७ अबरणमें राक्षसशार्दूल तुम्हारे मारजाने व धूलिमें लोटनेसे सब लङ्कानिवासियोंका वीर्य्य हतहोगया अबलङ्कामें क्या शेषरहा कुछभीनहीं ८ धैर्य्यरूप नवपल्लवयुक्त सहन-शीलताहीको पुष्पबनाये तपस्याको धारणशक्ति समझे शूरताहीको दृढ़ जड़बनाये ऐसा वृक्षरूप राक्षसराज वायुरूप रामचन्द्रजीसे मर्दित होगया ९ तेजहीको दाँतबनाये व पिता पितामहादिकी परम्परा के समूहको पीठबनाये व कोप तथा प्रसन्नताही को सब और अङ्गकिये ऐसामदान्ध हाथीरूप रावण सिंहरूप श्रीरामचन्द्रजीके बशमेंपड़ अब पृथ्वीपर सोरहाहै १० पराक्रम व वीररसको ज्वालाकिये व क्रोधसे श्वासलेनेको धुआँबनाये व अपनेबलको जलानेकी शक्तिसमझे इसतरह का अग्निरूप राक्षस मेघरूप श्रीरामचन्द्रजी से बुझाडालागया ११ राक्षसोंकोही पूंछ काँधा सींगबनाये व शत्रुओंके जीतनेको मदबनाये व चञ्चलताको कान नेत्रकिये ऐसा राक्षसरूप बैल रामचन्द्र व्याघ्र ने मारडाला १२ इसतरह हेतु युक्त बचन कहतेहुये व साफ साफ अर्थ कहतेहुये व शोकयुक्त विभीषणजीसे रामचन्द्रजीबोले १३ समरमें बड़ा प्रचण्डविक्रमी बड़ाऊँचा व वीररस से भराहुआ यह रावण मरानहीं किन्तु निश्चेष्ट होगयाहै देखो अबभी यह निशङ्कही बनाहै १४ ऐसे मरेहुये वीरोंको क्षत्रियोंकेधर्म्ममें टिकेहुये लोग अनारियोंके समान नहीं शोककरते क्योंकि जो अपनी कीर्त्तिचाहतेहैं वहीलोग रणमें मृतक होकर गिरतेहैं १५ जिस महाबुद्धिमान् रावणने इन्द्रादि देवसहित तीनोंलोक

जीतलिये वह ऐसे समरमें मारेजानेपर शोचकरने के योग्य नहीं बरन प्रशंसाही करनेके योग्यहै १६ व ऐसा तो कभी होताही नहीं कि सदा किसीकी बिजयहोती रहै वीर समरमें पहुंचनेपर कितो आपही शत्रुको मारडालता है वा आप शत्रु से माराजाता है १७ इस समर के मरणकी प्रशंसा मन्वादि क्षत्रिय करते चलेआयेहैं इसीसे क्षत्रियों को यह मरण उचितहीहै बस जबक्षत्रिय समरमें माराजावे तोशोक करनेकेयोग्य नहीं है १८ तिससे अब इस बात को बिचार व उस पर आरूढ़हो शोक छोड़ मरणकेपीछे जो कृत्यकरना चाहिये वहकरो १६ ऐसा कहतेहुये महा-बिक्रमी महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजीसे शोककेमारे सन्तप्त बिभीषण जी अपने भाईकेलिये हित बचनबोले २० जो यह रावण समरमें आज तक कभी इंद्रादि देवताओं से भी नहींहारा परंतु आपको रणमें प्राप्त होकर भग्नहोगया जैसे तीरकोपाय समुद्रकानीर फिर अपने स्थानको लौटआताहै २१ इसने बहुत तो दानकिये व बहुत अभ्यागतों व देव-ताओंकी भी पूजाकी व नानाप्रकारके भोगबिलासकिये व नौकर चाकर भृत्यवर्ग्गोंका भरण पोषणभी खूबहीकिया व मित्रोंको बहुत धनदिया व शत्रुओंके ऊपर बैरभी बहुतहीकिया २२ व यहसदा अग्निहोत्रादि कियाकरता व तपस्याभी इसने बड़ीही भारीकीहै व वेदान्त शास्त्रकोभी अच्छीतरह से जानतारहा व कर्म्मकाण्ड करनेमें भी बड़ाशूरथा इससे आपके प्रसादसे इसकी प्रेतकृत्य हम कियाचाहतेहैं इसबिषयमें जो आज्ञाहो २३ इसतरहके करुणापूर्व्वक बिभीषणजीके बचनसुन महात्मा श्रीरामचन्द्रजी ने बिभीषणजीको आज्ञादी कि बहुत अच्छा अब इसके लिये पितृमेध यज्ञकीजिये २४ व संसारमें बैरतभीतक रहतेहैं जब तक उसके शत्रुजीतेहैं सो अब तो यह मृतकही होगया व हमाराकार्य्य भी सिद्धहोगया अब इसके संस्कारकरो क्योंकि अब तो जैसा यह आपका लगताहै वैसाही हमाराभी लगताहै क्योंकि हम और आप सखाहोनेके कारण भाईभाई हैं २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकादशाधिक
शततमस्सर्ग्गः ॥ १११ ॥

महात्मा रामचन्द्रजीसे रावणको माराहुआसुन मारेशोक के मूर्च्छित हो रावणकी सबस्त्रियाँ महलोंसे निकल निकल आयसमरभूमिमेंप्राप्त हुईं १ यद्यपि बहुत रोंकीगईं तथापि पृथ्वीकी धूलिपरलोटतीगिरतीपड़ती बारछूटी मारेदुःखके पीडितबछड़ा मरीहुई धेनुओंकेसमान व्याकुल २ उत्तरवाले फाटककी होकर राक्षसोंके साथ समरभूमिमें आय अपने हतपतिको ढूंढ़तीहुई ३ व हे आर्य्यपुत्र हे नाथ ऐसा बारबार कहतीहुई बिनशिरके राक्षसों से भरीहुई व रुधिर से कीचड़युक्त भूमिमें गिरती पड़तीआईं ४ पतिकेशोकमें परायण इससेरोदनकरतीहुई यूथपमरजाने पर हथिनियों के समान चिघड़ती हुई न शोभितहुईं ५ व आयकर उन सबोंने महाकाय महाबीर्य्य महाद्युति रावणको समरमें मरापड़ा काले अंजनकेढेरकेसमान ६ अपने पतिकोमाराहुआ भूमिमेंपड़ादेख सबकी सब अंगोंपर गिरपड़ीं ७ बड़ेमानसे लपटकर कोई रोदन करनेलगीं व कोई चरण पकड़कर कोई गलेमें लपटकर ८ व कोई अपने हाथफैलाय पृथ्वीहीपर लोटनेलगी व कोई मृतकपतिका मुखदेख मोहितहोगई ९ कोई कोरामें उसका शिरधर मुख देख देख रोनेलगी व आँशुओंसे उस शिरको भिगोनेलगी जैसे मेघजलसे कमलकोभिगोताहै १० इसतरह रावण अपनेपतिको माराहुआदेख मारेशोकके बड़ेज़ोरसे रोदनकरने व चिघड़ने व बिलाप करनेलगीं ११ कि जिसतुमने इंद्रको वित्रासितकर दिया व जिसने यमराजको वित्रासित करदिया व जिसने कुवेरको बिनापुष्पक बिमान करदिया १२ व जिसने गन्धर्ब्बों ऋषियों देवताओं व तपस्वियोंको बड़ीभय दिखाया सो तुम मारेहुये रणमेंपड़ेहो १३ हा जो रावण असुरों देवताओं व नागोंसे भी कभीनहीं डरताथा तिसको मनुष्यसे इतनी बड़ीभारी भयहुई १४ जो रावण देवता दानव व राक्षसोंसेभीअवध्यथा वहआजपैदरएकमनुष्यसेमरकर पृथ्वीपरसोताहै १५ जिसे कोई देवता न मारसका व न कोई यक्ष न असुर सो रावण सत्वहीन पुरुषके समान मनुष्यसे मृत्यु पागया १६ ऐसा कहतीहुई तिसकी सब स्त्रियां मारे दुःखके पीड़ितहो फिर अति रोदन व बिलाप करने लगीं १७ कि हितबादी सुहृदोंके बचन सुनतेहुये तुम अपने व निशाचरोंके मरने के लिये सीताको यहां लाये सो इन सब राक्षसों सहित

जीतलिये वह ऐसे समरमें मारेजानेपर शोचकरने के योग्य नहीं बरन प्रशंसाही करनेके योग्यहै १६ व ऐसा तो कभी होताही नहीं कि सदा किसीकी बिजयहोती रहै वोर समरमें पहुंचनेपर कितो आपही शत्रुको मारडालता है वा आप शत्रु से माराजाता है १७ इस समर के मरणकी प्रशंसा मन्वादि क्षत्रिय करते चलेआयेहैं इसीसे क्षत्रियों को यह मरण उचितहीहै बस जबक्षत्रिय समरमें माराजावे तोशोक करनेकेयोग्य नहीं है १८ तिससे अब इस बात को बिचार व उस पर आरूढ़हो शोक छोड़ मरणकेपीछे जो कृत्यकरना चाहिये वहकरो १६ ऐसा कहतेहुये महा-बिक्रमी महाराजकुमार श्रीरामचन्द्रजीसे शोककेमारे सन्तप्त बिभीषण जी अपने भाईकेलिये हित बचनबोले २० जो यह रावण समरमें आज तक कभी इंद्रादि देवताओं से भी नहींहारा परंतु आपको रणमें प्राप्त होकर भग्नहोगया जैसे तीरकोपाय समुद्रकानीर फिर अपने स्थानको लौटआताहै २१ इसने बहुत तो दानकिये व बहुत अभ्यागतों व देवताओंकी भी पूजाकी व नानाप्रकारके भोगबिलासकिये व नौकर चाकर भृत्यवर्गोंका भरण पोषणभी खूबहीकिया व मित्रोंको बहुत धनदिया व शत्रुओंके ऊपर बैरभी बहुतहीकिया २२ व यहसदा अग्निहोत्रादि कियाकरता व तपस्याभी इसने बड़ीही भारीकीहै व वेदान्त शास्त्रकोभी अच्छीतरह से जानतारहा व कर्म्मकाण्ड करनेमें भी बड़ाशूरथा इससे आपके प्रसादसे इसकी प्रेतकृत्य हम कियाचाहतेहैं इसबिषयमें जो आज्ञाहो २३ इसतरहके करुणापूर्व्वक बिभीषणजीके बचनसुन महात्मा श्रीरामचन्द्रजी ने बिभीषणजीको आज्ञादी कि बहुत अच्छा अब इसके लिये पितृमेध यज्ञकीजिये २४ व संसारमें बैरतभीतक रहतेहैं जब तक उसके शत्रुजीतेहैं सो अब तो यह मृतकही होगया व हमाराकार्य्य भी सिद्धहोगया अब इसके संस्कारकरो क्योंकि अब तो जैसा यह आपका लगताहै वैसाही हमाराभी लगताहै क्योंकि हम और आप सखाहोनेके कारण भाईभाई हैं २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेएकादशाधिक शततमस्सर्ग्गः ॥ १११ ॥

महात्मा रामचन्द्रजीसे रावणको माराहुआसुन मारेशोक के मूर्च्छितहो रावणकी सबस्त्रियाँ महलोंसे निकल निकल आयसमरभूमिमेंप्राप्त हुईं १ यद्यपि बहुत रोंकीगईं तथापि पृथ्वीकी धूलिपरलोटतीगिरतीपड़ती बारछूटी मारेदुःखके पीडितबछड़ा मरीहुई धेनुओंकेसमान ब्याकुल २ उत्तरवाले फाटककी होकर राक्षसोंके साथ समरभूमिमें आय अपने हतपतिको ढूंढ़तीहुई ३ व हे आर्य्यपुत्र हे नाथ ऐसा बारबार कहतीहुई बिनशिरके राक्षसों से भरीहुई व रुधिर से कीचड़युक्त भूमिमें गिरती पड़तीआईं ४ पतिकेशोकमें परायण इससेरोदनकरतीहुई यूथपमरजाने पर हथिनियों के समान चिघड़ती हुई न शोभितहुईं ५ व आयकर उन सबोंने महाकाय महाबीर्य्य महाद्युति रावणको समरमें मरापड़ा काले अञ्जनकेढेरकेसमान ६ अपने पतिकोमाराहुआ भूमिमेंपड़ादेख सबकी सब अंगोंपर गिरपड़ीं ७ बड़ेमानसे लपटकर कोई रोदन करनेलगीं व कोई चरण पकड़कर कोई गलेमें लपटकर ८ व कोई अपने हाथफैलाय पृथ्वीहीपर लोटनेलगी व कोई मृतकपतिका मुखदेख मोहितहोगई ९ कोई कोरामें उसका शिरधर मुख देख देख रोनेलगी व आँशुओंसे उस शिरको भिगोनेलगीं जैसे मेघजलसे कमलकोभिगोताहै १० इसतरह रावण अपनेपतिको माराहुआदेख मारेशोकके बड़ेज़ोरसे रोदनकरने व चिघड़ने व बिलाप करनेलगीं ११ कि जिसतुमने इंद्रको वित्रासितकर दिया व जिसने यमराजको वित्रासित करदिया व जिसने कुवेरको बिनापुष्पक बिमान करदिया १२ व जिसने गन्धर्बों ऋषियों देवताओं व तपस्वियोंको बड़ीभय दिखाया सो तुम मारेहुये रणमेंपड़ेहो १३ हा जो रावण असुरों देवताओं व नागोंसे भी कभीनहीं डरताथा तिसको मनुष्यसे इतनी बड़ीभारी भयहुई १४ जो रावण देवता दानव व राक्षसोंसे भी अवध्यथा वह आज पैदरएकमनुष्यसेमरकर पृथ्वीपरसोताहै १५ जिसे कोई देवता न मारसका व न कोई यक्ष न असुर सो रावण सत्वहीन पुरुषके समान मनुष्यसे मृत्यु पागया १६ ऐसा कहतीहुई तिसकी सब स्त्रियां मारे दुःखके पीड़ितहो फिर अति रोदन व बिलाप करने लगीं १७ कि हितवादी सुहृदोंके बचन सुनतेहुये तुम अपने व निशाचरोंके मरने के लिये सीताको यहां लाये सो इन सब राक्षसों सहित

व हमलोगों सहित अपना बिनाश तुमने कराया १८ तुम्हारे प्रियभाई बिभीषण हितभी वचन कहते थे परन्तु तुमने मारे अज्ञानसे अपने बध की इच्छा से उनको कठोर वचन कहे यह उसीका फलहै जो दिखाई देताहै १९ जोतुम सीताको फिर रामचन्द्रजीको देदेते तो हम लोगोंको यह मूलनाशक दुःख न होता २० जो तुम अपने भाई बिभीषणके वचन मानलते सीता को देडालते तो रामचन्द्रभी तुम्हारे मित्रवर्गों मेंसे होजाते व हम सब विधवा न होतीं व शत्रु लोगों के मनोरथ न सिद्ध होते २१ तुम मूर्खने जबरदस्ती सीताको अपने यहां रोंकरक्खा इससे इन सब राक्षसोंको व हमलोगोंको व अपनाको इनतीनों समुदायों को एकही सङ्ग मरवाडाला २२ इस बिषय में तुम्हारी लगाय भी नहीं क्योंकि हेराक्षस श्रेष्ठ तुम्हारी इच्छासे कुछभी नहीं होसका दैवने तुम को इसीतरहकी प्रेरणाकी व फिर दैवही ने तुमको मारभीडाला २३ व समरमें वानरों का बिनाश व राक्षसों का व तुम्हारा बिनाश यह सब दैवयोगहीसे हुआ २४ क्योंकि अर्थ काम बिक्रम व आज्ञासे संसार में दैवकी गति कोई नहीं मिटासक्ता २५ इसतरह रावणकी स्त्रियां दुःखित हो करांकुल पक्षियों के समान दुःखके मारे पीड़ित होगईं २६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेद्वादशाधिकशततमस्सर्गः ११२॥

तिसतरहसे बिलाप करतीहुईरावणकीस्त्रियोंमें सबसे बड़ीस्त्रीअपने पतिको निहारनेलगी १ व पतिको अचिन्त्य कर्म्म करनेवाले रामसे मारेहुये भूमिमें पड़ेदेख मन्दोदरी कृपणचित्त हो बिलाप करनेलगी २ हे महाबाहु कुबेर के छोटे भाई महाराज तुम्हारे क्रोध करने पर तो समरमें इंद्रभी डरतेथे ३ व तुम्हारे भयसे महात्मा ऋषिलोग व यशस्वी गन्धर्व्व लोग भी व चारणलोग भी दशो दिशाओं को भाग गये ४ वही तुम केवल मनुष्यमात्र रामचन्द्रके मारे मरगये भलाक्या लज्जित नहींहोते होतेतो होगे ५ हमनहीं जानतीं कि तीनोंलोकोंको जीत सब लक्ष्मीतो तुम भोगतेथे ऐसे असह्य तुमको बनबासी रामचन्द्रने कैसे मारडाला ६ मनुष्यों के देशमें कालरूपीहो बिचरते हुये तुम्हारा बध समरमें रामचन्द्रसे होना असम्भवहै ७ हमतो इस बिषय में बिश्वास

नहीं मानतीं कि रामचन्द्रने ऐसा कर्म्म कियाहो कि सब युद्धकी सामग्री से युक्त तुमको समरमें रामचन्द्रने मारडालाहो ८ हां ऐसा चाहेहो कि तुम्हारी माया बिनाशने के लिये रामचंद्रका रूप धारणकर काल आप आयाहो ६ अथवा रामरूप धारणकर इन्द्रने आय तुमको माराहो सो भी नहीं होसक्ता क्योंकि इंद्र बेचारे में तो इतनी भी शक्ति नहीं जो समरमें आपके सामने देखभी सकें फिर मार कैसे सक्ते हैं १० बस और कुछ नहींहै आदि मध्य अन्तहीन इससे नित्य बर्तमान व अविद्या से पर महान् ११ व ब्रह्मादिकों से भी अधिक श्रीवाले इससे नित्य बिभूतिवाले व इससे अपनी तनुके प्रकाशक द्वारा सबमें विद्यमान व शंख चक्र गदाधारी बिष्णुभी जिसके अधर नीचे हैं १२ व श्रीवत्स चिह्न युक्त बक्षस्थलवाले व जिसे कोईभी न जीतसके व सर्व्वत्र परिपूर्ण व महायोगवान् १३ व ब्रह्माजी को भी बिस्तारित करनेवाले व अति सत्यबक्ता बिष्णु सब कहीं ब्यापक इसीसे सब लोकोंके ईश्वर अति शोभावान् ये परमात्मा पुरुष मानुषका स्वरूप प्रकट कर बानरत्व को प्राप्त देवसखों को संगल लंकोंका हित करने की इच्छा से राक्षसों के परिवार सहित तुमको उन्होंने मारडाला बस यह बात सत्य है १४ अथवा हम जानतीहैं कि प्रथम तुमने अपनी सब इन्द्रियोंको जीत फिर तीनोंलोक जीतथे इससे जानों पूर्व्वकालकाबैर स्मरणकर तुमको तुम्हारी इन्द्रियोंनेही जीतलिया १५ जब जनस्थानमें बहुत राक्षसों सहित खर को रामचन्द्रजीने अकेलेही मारडाला हमने तभीजाना कि रामचन्द्रजी प्राकृती मनुष्य नहींहैं बरन प्राकृत बिलक्षण पुराण पुरुषहैं १६ व फिर जिस लङ्कापुरीमें देवता दैत्य भी मारेभयके नहीं पैठसक्तेथे उसमें जब हनुमानबीर निर्भय आय सबका मानमर्दन करगये तभी हमलोग भयभीत होगईं कि बस अबकोई महाप्रचण्ड आगयाहै १७ हमने जो कहा था कि रामचन्द्रजीसे बिरोध न करो पर तुमने न कहामाना उसकाफल यह उदयहुआ १८ न कुछ मुद्दा न मतलब अपने घरमें बैठथे अकस्मात् जो तुमने सीतामें अभिलाष किया वह सब ऐश्वर्य्यके व अपने देहके व स्वजनोंके बिनाशहीकेलिये किया १९ अरुन्धती व रोहिणीकी भी मान्य व उनसे भी पूजनीयसीताको जोतुम हरलायेयहबड़ा अनुचितकिया२०

व सबजन्तुके धारण करनेवाली पृथ्वीकोभी धारण करनेवाली वलक्ष्मी कीभी लक्ष्मी २१ व सदा सबदोष रहित अङ्गोंवाली सीता कोनिर्ज्जन बनसे छलकर लाय तुमने अपना व अपने कुलका बिनाश किया २२ आखिर जिस बिचार से जानकी को लाये वह भी न सिद्ध हुआ उसके बिपरीत उन पतिव्रता सीताकी तपस्यासे तुम भस्मही होगये बसयही बातहै २३ जोकहो किजबहम लायेथे तभी क्यों न भस्महोगयेथे तो तुमसे तो इन्द्रादि देवता भी डरतेथे व अग्न्यादि देव भी डरतेथे इसीसे उस समय अग्निदेवता तुमको न जलासकी २४ परन्तु पापकर्म्मका फल पाप करनेवालेको अवश्य मिलताहै हां इतना है कि तुरन्त नहीं मिलता जब समय आताहै तो मिलताहै २५ शुभ करनेवाला सुख पाताहै व पाप करनेवाला पापका फल दुःख पाताहै सो प्रसिद्धही है विभीषण ने पुण्यकिया इससे सुखपाया व तुमने पापकिया इससे इसतरहका दुःख पाया २६ यहां सीतासे भी अधिक रूपवाली और भी दो एक स्त्रियांथीं परन्तु कामके बशीभूतहो मारेअज्ञानसे तुम्हारी समझमें यहबात न आई २७ न रूपसे न कुलसे न दया दाक्षिण्यादि गुणोंसे मैथिली हमसे अधिकहैं बरन हमारे समान भी नहींहैं परन्तु अज्ञानके मारे तुमने न समझा २८ सदा सब प्राणियोंकी मृत्यु बिना किसी कारणके नहींहोती इसीसे तुम्हारी मृत्यु मैथिलीहीके कारणहुई आखिर तो किसी न किसी कारणसे होती २९ सो इस बिषयमें तुम्हारीही लगायहै क्यों सीताके कारणसे उत्पन्न मृत्यु तुमने दूरसे बुलालिया अब वे मैथिलीजी तो रामचन्द्रजीके साथ बहुत दिनोंतक बिहार करेंगी इसमें अल्पभाग्यवाली हमीं ठहरीं जो घोर शोकसागरमें डूबतीहैं ३० जो हम बिमानोंपर चढ़ी हुई तुम्हारे सङ्ग कैलास मन्दराचल सुमेरुपर्व्वतोंपर व चैत्ररथादि सब देवताओंके उद्यानों व बनोंमें ३१ अतुल शोभायुक्तहो बिबिधप्रकारके देश माला चन्दनादि देखती व भोगतीहुई बिहार करतीथीं हे बीर अब तुम्हारे मारजानेके कारण कामके भोगोंसे नीचे गिरादीगईं ३२ अब वही हम अन्य सामान्य स्त्रियोंके समान होगईं इससे महाचञ्चल राजाओंकी लक्ष्मीको धिक्कारहै ३३ हे राजन् तुम्हारा अतिसुकुमार सुन्दर भौहोंवाला व सुन्दर खालसहित ऊँची नाकवाला कीर्त्ति श्रीदीप्ति चन्द्र

कमल व सूर्य्यके समान शोभित ३४ व किरीटसे शोभित ताम्रवत् अरुण व दीप्ति कुण्डलयुक्त मद से व्याकुल होने से चञ्चल नेत्रयुक्त जो मुख मदपान भूमिमें होजाताथा ३५ व विविध प्रकार की पुष्पमालाओं से शोभित व मनोहर कथायुक्त तुम्हारा मुख शोभित होताथा हे स्वामिन् वही तुम्हारा मुख आज नहीं शोभित होता ३६ क्योंकि वह रामचन्द्रजीके बाण से भिन्न होगयाहै इससे लाललाल रुधिर बहता है व मस्तक फटगया है इससे खोपड़ी का गूदा व चरबी दिखाई देतीहै व ऊपर से रथकी धूलि पड़ने से रूखा पड़ गयाहै ३७ हां अब यह सब से पिछली वैधव्य देनेवाली दशा हमको प्राप्तहुई जिसे मन्दबुद्धिवाली हमने कभी स्वप्नमें भी स्मरण नहीं किया ३८ क्योंकि पिता तो हमारे दानवों के राजा मयनामथे व भर्त्ता आप राक्षसों के ईश्वर व पुत्र हमारा इन्द्र को जीतनेवाला इसी से हमें बड़ाभारी घमण्ड था ३९ व यही अपने मनमें शोचतीथीं कि हमारे ये सबनाथ अहङ्कारी शत्रुओंके मर्द्दन करनेवाले अति क्रूर व बिख्यात बल पौरुष व सबकहीं से निर्भय रहते हैं बस यहीमति रात्रि दिन हमारे हृदयमें टिकी रहती थी ४० सो इस तरहके प्रभावयुक्त आपलोगोंको एकाएकी बिनाजाने सुने मनुष्यसेकैसे भय आगई ४१ अब इन्द्रनीलमणि के समान श्याम व ऊँचे पर्ब्बत के समान उन्नत व बजुल्ला वैदूर्य्यमणि मुक्ताओं के हार व उजले फूलोंकी मालासे उज्ज्वल ४२ व बिहारसमयमें अधिक शोभित व संग्रामभूमिमें अधिक दीप्ति व गुरूलोगोंकी पूजाकरनेमें शिक्षित व महादेवजीकी पूजा में शान्त व भूषणों की आभा से बिजुलियों से शोभित बादर के समान शोभित तुम्हारा शरीर ४३ आज तीक्ष्णबाणोंसे रत्ती रत्ती भिन्नहोजाने के कारण यद्यपि इसका दर्शन फिर दुर्लभहै तथापि इस समय उसको हम झपटा नहीं सक्तीं ४४ क्योंकि निरन्तर बाणोंके गड़ने से साहीके कांटों से युक्तहोने के समान शोभित व अन्य मर्म्मस्थलोंमें लगे व गड़े बाणोंसे छिन्नहोनेसे नसोंसे बँधा ४५ श्यामशरीर रुधिरकी शोभासे युक्त होकर बज्रके प्रहारसे भिन्न पर्ब्बत के समान भूमिपर पड़ा है ४६ बड़े दुःखकी बातहै क्या यह स्वप्नहै वा सत्यहीहै जो सत्यहै तो तुम रामसे कैसे मारेगये क्योंकितुमतो मृत्युके भी मृत्युरूप थे फिर कैसे मृत्युबश

हुये ४७ क्या कहैं हमारा चित्त बड़ा स्थिरहै जोकि तीनलोककी द्रव्यके भोक्ता व तीनोंलोकोंको महाभयके दाता व लोकपालोंके जेता व महादेवजीके भी उठालेनेवाले ४८ व अहङ्कारियोंके पकड़लेनेवाले व पराक्रम प्रकट करनेवाले व लोकभर को चलायमान करनेवाले व नादोंसे प्राणियों के बिदारण करनेवाले ४९ व शत्रुके सामने मारे पराक्रम के अहङ्कारयुक्तही बचनके बक्ता व मृगरूप अपने यूथके रक्षक व भयङ्कर कर्म्मकारी शत्रुओंके हन्ता ५० व दानवेन्द्रों व सहस्रों यक्षोंके हन्ता व समरमें निवातक वचनाम राक्षसोंके पकड़ लेनेवाले ५१ व अनेकयज्ञों के बिध्वंस करनेवाले व अपने लोगोंके रक्षक व धर्म्मव्यवस्थाके भेदन करनेवाले व समरमें माया उत्पन्न करनेवाले ५२ व जहांतहांसे सहस्रों देवता दैत्य व मनुष्योंकी कन्याओंके हरनेवाले व शत्रुकी स्त्रियोंके शोक देनेवाले व अपनी सेनाके शिक्षा करनेवाले ५३ व लङ्काद्वीपके रक्षक व भयानक कर्म्मोंके कर्त्ता व हमलोगोंको कामभोगोंके दाता व महारथियों में श्रेष्ठ ५४ इसतरहके प्रभाववाले अपने भर्त्ताको रामचन्द्रसे माराहुआ देखकर भी अपना देह धारण कियेहीहैं ५५ हे राक्षसेश्वर बड़ेबड़े मोल के बिस्तरोंपर शयन करके अब पृथ्वीकी धूलि अङ्गोंमें लगाये यहां क्यों शयन करतेहो ५६ हमारे पुत्र मेघनादको जब समरमें लक्ष्मणने मार डालाथा हमतो तभी मरगईथीं अबतो तुम्हारे मारजानेपर बनाय मार गईं ५७ परन्तु ऐसेपर भी हमारे प्राण नहीं निकलते इससे बन्धुजनों से हीन व तुम नाथसे हीन व कामभोगोंसे बिहीनहो बहुत बर्षोंतक शोक करती रहेंगी ५८ हे राजन् तुमतो बड़ीभारी गलीमें चलकर सदा के लिये यहांसे चलेगये अब परमदुःख से पीड़ित हमको भी लेचलो क्योंकि बिनातुम्हारे हमयहां न रहसकेंगी ५९ अरे हम कृपण बेचारीको यहांछोड़ तुमकैसे जाना चाहतेहो व अतिदुःखित बिलाप करतीहुई मन्द भाग्यवाली हमसे क्योंनहीं बोलते ६० हे महाराज हमको पैदर बेपर्दगीके साथ नगरसे बाहर इस समाजमें आईहुई देख अब क्योंनहीं क्रोध करते ६१ हे इष्टदार अपनी स्त्रियोंको देखो व लज्जा छोड़ सब बिना कुछ आवरणके यहां चलीआईहैं इन सबकोदेख क्योंनहीं कोपकरते ६२ हेनाथ तुम्हारी क्रीड़ाके सहायक हम लोगोंको देख क्यों प्यार नहीं

करते क्यों नहीं समझाते व बहुत क्यों नहींमानते ६३ हेराजन् पति-
व्रता धर्म्ममें रत गुरुओंकी सेवामें निरत हजारोंकुलीन स्त्रियों को जो
तुमने बिधवा करडालाथा ६४ उन्हींसबोंने क्रोधसे तुमको शापदियां
है तभी तुमने पराईस्त्री को चाहनेलगे सो उन्होंने तुमसे दुःखपाय तो
शापदिया कि जैसे हम बिधवाहोनेसे दुःखितहैं वैसेही तुम्हारी स्त्रियां
भी हों वही शापका फलआज हमलोगोंको प्राप्तहुआ ६५ यहबातजो
प्रसिद्धहै कि पतिव्रता स्त्रियोंके आंशु अकस्मात् भूमिपर न गिराने
चाहिये नहीं तो गिरवानेवाले का बिनाश होजाताहै वह बात तुममें
सत्यहुई क्योंकि तुमने भीतो बहुत पतिव्रताओंके आंशु पृथ्वीपरगिर-
वाये हैं ६६ हेराजन् अपने पराक्रमसे तीनोंलोकोंको जीत फिरशूरता
के अभिमानसे युक्तहोकर भी यह परस्त्रीकी चोरी जो अतिनीच कर्म
है तुमने कैसेकिया ६७ सुवर्णके मृगके ओढ़रसे रामचन्द्र को आश्रम
से दूरकराय उनकी स्त्रीको जो तुमलाये यह तुम्हारी कदराईकालक्षण
है यदि बीरहोते तो उनके सामनेही लाते ६८ युद्धमें इस कदराई के
सिवाय और तुम्हारी कदराई हमनहीं जानती परन्तु यह कदराई तु-
म्हारे बिनाशका कारणहुई ६९ व भूत बर्त्तमान भविष्य के जानने में
निपुण सत्यवादी हमारे देवर बिभीषणने ७० जब तुम सीताको हर
लायेथे तब बहुत बिचारकरके व बड़ी ऊधोसांसें लेकरजो कहाथा कि
इसकार्य्यसे सब राक्षसोंका बिनाशहोगा वह सत्यहीहुआ ७१ काम
क्रोधसे उत्पन्न यहतुमसे जो परस्त्री हरणरूप दुःख प्राप्तहुआ उसीने
तुम्हारे मूलवर्गका नाशकरदिया ७२ तुमने यह सब राक्षसोंका कुल
अनाथ करदिया यद्यपि तुम्हाराबल पौरुष ऐसा विख्यात है कि तुम
शोचकरनेके योग्य नहींहो तथापि हमारीस्त्रीके स्वभावकी बुद्धिकरुणा
में पड़ीहै इससेरोदन करतीहैं ७३ तुमने जो पुण्य पापकिया वहलेकर
अब तुम अपनी गतिकोगये अब तुम्हारे बिनाशसे दुःखित अपनाको
हम शोचतीहैं तुमसे क्याकामहै ७४ हे दशानन तुम्हारे हितहीकीकहते
हुये सुहृदोंके बचन तुमने न सुने व अपनेभाई बिभीषणादिकों के भी
न सुने ७५ फिर खैर औरोंके बचन मानेथे या न माने थे हे तुव अर्थ
युक्त विधिपूर्व्वक कहेहुये सबतरहसे कल्याणकरनेवाले व मीठेबचन

जो विभीषणनें कहेथे उनको भी तुमने न सुना व न माना यह बड़ा अनर्थ किया ७६ व फिर मारीच कुम्भकर्ण व हमारे पिता के बचन वीर्य्यसे मतवालेहो तुमने नहींकिये उसीकाऐसा फलहुआ ७७ हेनील जलधरश्याम व पीताम्बर व अंगद धारणकरनेवाले अब अपने अंग इधर उधर फैलाय रुधिरमें भिगोय क्योंयहां पड़ेहो ७८ जानो शयन करतेहुये तुम महावीर्य्य सब कामोंमें चतुर सुमालीराक्षस की बेटीकी बेटी अतिदुःखसे पीड़ित हमसे ७९ आप क्यों नहीं बोलते भला एक बार तो बोलिये ८० इसनये निरादरके होनेसे लज्जितहो क्यों सोते हो उठो उठो आज निर्भयहो सूर्य्यके किरण लंकामें पैठआये ८१ इंद्र के वज्रके समान जिसपरिघसे तुम शत्रुओंको मारतेथे वह तुमसेपूजित ८२ व सुवर्णके जालसे बिभूषित परिघ रामचन्द्रके बाणोंसे छिन्नभिन्न होकर बड़ेभारी रणमें पड़ाहै ८३ इससमरभूमि को परमप्रियसीजान छपटेहुये क्यों पड़ेहो व हमको अप्रियसी जान क्यों नहीं बोलना चाहतेहो ८४ हमारे इसहृदयको धिक्कार है जो तुम्हारे मरजाने पर भी सहस्रखण्ड नहीं होजाता ८५ इसतरह बिलाप करतीहुई मन्दोदरी नेत्रों में आंशुभर मारे स्नेह के हृदयकँपाय मूर्च्छितहोगई ८६ व मारे दुःखके हतहोकर रावणकी छातीपर गिरकर मन्दोदरी सन्ध्या समय के बादरमें बिजुली के समान शोभित हुई ८७ इसतरह मूर्च्छित हो रावण के ऊपर गिरी हुई अति दुःखित मन्दोदरी को अति दुःखित उसकी सपत्नियों ने पकर कर उठाया ८८ व सब बोलीं हे देवि पाप पुण्य के बिभागमें लोकोंकी स्थिति व राजाओंकी श्री तुम नहीं जानती कि स्थिर होती है इसका कौन ठीक है ८९ जब इसतरह उन सबोंने कहा तो फिर अपने आँशुओंसे कुच भिगोतीहुई मन्दोदरी फिर रोदन करनेलगी ९० इसी अवसर में श्रीरामचन्द्र जी विभीषणजी से बोले कि अब अपने भाईके मरण समय के संस्कार करो और इनस्त्रियों को समझावो ९१ रामचन्द्रजी के ऐसे बचन सुन अपनी बुद्धि से बिचार परमधर्म्मज्ञ विभीषणजी ९२ रामचन्द्रजीके मनकी ठीक ठीकबात जाननेके लिये धर्म्म अर्थ सहित उत्तर बचन बोले ९३ हेमहाराजकुमार धर्म्मव्रतत्यागी क्रूरस्वभाव निर्लज्ज मृषावादी व परस्त्रीगामी महा-

दुष्ट इसरावणका संस्कार हम अपने हाथोंसे नहीं करसक्ते ६४ क्योंकि सब प्राणियों के अहित करने में रत यह रावण भ्रातृरूप हमारा भी शत्रुहै इससे यद्यपि जेष्ठ भाई होनेके कारण पिताके समानहै तथापि हमारे हाथकी कीहुई क्रियापानेके योग्य नहींहै ६५ हेरामचन्द्रजी जो लोग मरेहुये भाईका संस्कार न करनेसे हमको प्रथमक्रूर कहेंगे वही लोग जब इसदुष्टके सब अधर्म्महीके गुण सुनेंगे तो हमको पीछेसे पुण्यात्मा कहेंगे कि अच्छाकिया जो ऐसे पापीका संस्कार नहींकिया ६६ बिभीषणजीके बचनसुन धर्म्मात्माओंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी अतिप्रसन्नहो बचन कहनेमें परमचतुर बिभीषणजीसे बोले क्योंकि आपभी तो बचन रचनामें बड़े चतुरथे ६७ कहनेलगे कि तुम्हारे प्रभाव से हमने रावणकोजीता इससे तुम्हाराभी प्रिय हमकोकरनाहै सो जानों राज्य देहींगे व जो उचितहोगा वही बचनभी हमको तुमसे कहनेचाहिये ६८ यद्यपि अधर्म्म व मिथ्यामें यहनिशाचर तत्पररहा इसमें कुछभी संदेह नहीं तथापि यह बड़ातेजस्वी बलवान् शूर व संग्रामोंमें सदा प्रबलही रहा ६६ व बड़ामहात्मा बलसम्पन्न व लोकोंके रोवानेवालारहा क्योंकि सुनतेहैं कि समरमेंकभी इंद्रादिदेवोंसे भी पराजित नहींहुआ १०० व बैर मरण पर्य्यन्तहीतक रहतेहैं सो अबतो यह मृतकही होगया इससे हमसे अब बैरनहींरहा हमारा प्रयोजन तो निवृत्तहोगया इससे अब इसका संस्कारकरो अबतो यह जो सम्बन्ध तुमसेरखता है वही हमसे रखताहै १०१ इससेतुम्हारे कियेहुये संस्कार यहशीघ्रप्राप्तहोवे क्योंकि तुमबिधिपूर्व्वककरोगे व इसका संस्कारकरनेसे तुम यशके भागीहोवोगे अवश्यकरो १०२ रामचन्द्रजीके बचनसुन विभीषणजी बड़ी शीघ्रताके साथ अपनेभाई रावणका संस्कार करनेलगे १०३ लङ्कापुरीमें जाय राक्षसेन्द्र विभीषणजी रावणके अग्निहोत्रके अग्निको प्रज्वलितकिया १०४ व लंढ़ी काष्ठोंकेपात्र यज्ञाग्नि व यज्ञकरानेवाले लोग व चन्दन काष्ठ व औरभी विविधप्रकारके काष्ठजाय सङ्गउठवाये १०५ व अगरु आदि सुगन्धितपदार्थ व और बहुतसेगन्ध मणि मोती मूंगाआदि सब श्मशान भूमिको भेजा १०६ व सब राक्षसोंको सङ्गले आपभी आये व माल्यवान्केसाथ सब क्रियाकरनेलगे १०७ जैसेकि सुवर्णकी शिविका

मँगाय उसपर रेशमी वस्त्रों से आच्छादितकर रावण को स्थापितकर रोदन करतेहुये ब्राह्मणलोग लेचले १०८ व आगे आगे नगारे आदि बाजन बजानेवाले व स्तुति करने वाले लोगचले व उस शिविका के ऊपर विविध प्रकारकी पताका व पुष्पभी युक्त व बिथरायदिये १०६ फिर उस शिविका को उठाय विभीषण को आगेकर व काष्ठले सब के सब दक्षिण को मुखकर चले ११० व अध्वर्ज्जुलोगोंने अग्निप्रज्वलित किया व अग्निले रावण के सङ्ग सङ्ग सब चले १११ व पीछे से बार बार रोदन करती हुई रावण की सब स्त्रियाँ गिरती पड़तीचलीं ११२ व रावणको इसतरहलेजाय किसी पवित्रस्थानपर उतार अतिदुःखित हो चन्दन कमल उशीरआदि सुगन्धित पदार्थों व अन्य काष्ठोंसेभी चिताबनाय उसपर रंकुनाम मृगकाचर्म्म वेदके मन्त्र पढ़पढ़ बिछाया ११३ व राक्षसेन्द्रका पितृमेध यज्ञकरनेलगे प्रथम दक्षिण पूर्ब्ब के कोणपर वेदीबनाय उसपर अग्नि स्थापनकिया ११४ व उसपर रावण का शवधर दही व घी भर स्रुवकाँधेपर छोड़ा व पावोंपर शकट तथा जाँघोंपर उलूखल छोड़ा ११५ व सब काष्ठपात्र अरणी व उत्तरारणी व मुशलशास्त्र के अनुसार जो जहाँ चाहिये स्थापितकिया ११६ व शास्त्रकीरीतिसे तथा महर्षियोंकी कहीहुई रीतिसे रावणके अर्थपवित्र पशुका वधकिया ११७ व राक्षसराज रावणकेलिये घृतयुक्त परिस्तर-णिका प्राप्तकिया ११८ व विभीषणादिकों ने गन्धमाला भूषणादिकों से रावण को भूषितकिया व विविधप्रकार के उत्तम उत्तम वस्त्रोंसेभी भूषितकिया ११६ व रोदनकरतेहुये सबोंने अक्षत व पुष्पोंकीवर्षारावण के ऊपरकी तब विधिपूर्ब्बक विभीषणजीने उसचितामें अग्नि लगाया १२० उसकेपीछे स्नानकर ओदेवस्त्र धारण कियेहुये सबोंनेकुशहाथोंमें ले तिलजल ले विधिपूर्ब्बक तिलाञ्जलि दिया १२१ तिसकेपीछे बार बार समझाय बुझाय उनसबस्त्रियोंको सिखाय विभीषणजीनेकहा बस अब गृहकोचलो यहसुन सब फिर नगरमें पैठीं १२२जब सब राक्ष-सियांनगरमें पैठगईं तब विभीषणजी रामचन्द्रजीकेनिकट आये व नम्र होकर खड़ेहुये १२३व रामचन्द्रजीभी शत्रुकोमारसैन्य सुग्रीवलक्ष्मण के साथ बहुत हर्षितहुये जैसेवृत्रासुरको मारइन्द्र हर्षितहुयेथे १२४॥

हरिगीतिका ॥

शरचाप कवच पुनीत जो सुरराज नरराजहि दियो ।
सोराम सब गुणधाम पूरणकाम सकल जुदाकियो ॥
रिपुमारि रोषविहाय अति हरषाय पुनि प्रमुदितभयो ।
अरुभयहुसौम्यस्वभावजिमिनितरहतरह्यहुनकछुनयो १ । १२५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेत्रयोदशाधिक
शततमस्सर्ग्गः ॥ ११३ ॥

रावणका बधदेख देवता गन्धर्व्व दानव अपने अपने विमानोंपर चढ़चढ़ शुभकथा कहतेहुये वहांकोगये १ रावणका घोरबध व रामचंद्र जीका पराक्रम व वानरोंका सुन्दरयुद्ध व सुग्रीवका मन्त्रीहोना २ व हनुमान्जी का अनुराग व लक्ष्मणजीका बीर्य्य ये सब समाचार कहते हुये बड़े भाग्यवाले देवता आदि सब वहांआये ३ व रामचन्द्रजीने भी इन्द्रके दियेहुये अग्निसम प्रकाशित रथको जानेकेलिये आज्ञादे मातलिसे बड़ाई करतेहुये बोले ४ कि अब आपरथ लेजाइये रामचन्द्रजी की ऐसी आज्ञापाय इन्द्रका सारथि मातलि उस दिव्यरथ पर चढ़कर अपने स्वर्ग्गलोकको चलागया ५ जब इन्द्रकासारथि स्वर्ग्गको चलागया तो अति प्रसन्नहो रामचन्द्रजी सुग्रीवजीको मिलेभेंटे ६ व सुग्रीव अच्छीतरह लपटकर मिलभेंट व लक्ष्मणजीसे आप पूजितहो व अन्य वानरश्रेष्ठोंसेभी पूजित होतेहुये श्रीरामचन्द्रजी जहां सेनापड़ीथी वहां गये ७ व वहां सत्वसम्पन्न व दीप्त तेजस्वी समीपखड़े लक्ष्मणजी से बोले ८ हे सौम्य लक्ष्मण हममें अनुरक्त व हमारेभक्त व फिर हमारे संग उपकार करनेवाले इन विभीषणजी को लंकामें जाय राजतिलक करआवो ९ क्योंकि हमको इसबात की बड़ीइच्छा है जो हम रावण के छोटे भाई इन विभीषण को लंका में अभिषेक किये हुये देखें १० महात्मा श्रीरामचन्द्र जी ने जब लक्ष्मणजी से ऐसाकहा तो ऐसाही करेंगे यह कह लक्ष्मणजी ने हर्षित हो एक सुवर्ण का कलश हाथ में लिया ११ व वह कलश वानरेन्द्रों के हाथों में दे उन महापराक्रमियों को समुद्रसे जल लानेके लिये आज्ञादी १२ वे वानर लोग बड़ी

शीघ्रता के साथ समुद्रके तीरतक जाय व झट जललेकर आगये १३ वानरलोग तो कईघड़ा जललाये परन्तु उनमें से एकघड़ाका जलले व बिभीषणजीको सिंहासनपर बैठाय उस घटके जलसे उनका अभिषेक किया १४ सो यहांहीं नहीं लङ्कामेंजाय सबराक्षसोंके सामने रामचंद्र की आज्ञासे राक्षसों भरके राजा बनानेके लिये वेदके मंत्र विधिपूर्व्वक पढ़पढ़ाय सबसुहृदोंके देखतेही देखते बिभीषणजीका अभिषेक करदिया १५ जब धर्म्मात्मा लक्ष्मणजीने शुद्धात्मा बिभीषणजीका अभिषेककर दिया तो जो इनके मंत्रीथे व जो और राक्षस इनकाप्रिय करतेथे सब बहुत हर्षितहुये १६ बिभीषणको लङ्कामें अभिषेक किये देख लक्ष्मण सहित श्रीरामचन्द्रजी बहुत प्रसन्नहुये १७ व रामचन्द्रका दियाहुआ बड़ाभारी राक्षसोंका राज्य पाय बिभीषणजी सब मंत्री दीवान नौकर चाकर आदिको समझाय बुझाय उनका आदर सम्मानकर झट फिर रामचन्द्रजीकेनिकट आगये १८ तब सब अक्षतलड्डू लावा व दिव्यपुष्प आदि माङ्गलिक पदार्थ लङ्कानिवासी बिभीषणजीकी भेंटकेलिये लाये १९ परन्तु बिभीषणजीने सबवे माङ्गलिकपदार्थ ले श्रीरामचन्द्रजीको व लक्ष्मणजीको देदिया २० बिभीषणको कार्य्य कियेहुये व सबराज्य-लक्ष्मी पायेहुये देख बिभीषणकी प्रियकरनेकी इच्छासे जो कुछ पदार्थ बिभीषणजीने दिये श्रीरामचन्द्रजीने प्रसन्नता पूर्व्वक ग्रहण करलिये २१ तिसके पीछेआगे खड़ेहुये पर्व्वताकार हनुमानजीको हाथजोड़े देख श्रीरामचन्द्रजी बोले २२ हेसौम्य इन महाराज बिभीषणजीका सत्कार कर लङ्कामेंजाय फिर बिभीषणकी आज्ञाले २३ रावणके गृहमेंपैठ बि-जयसुनाय अच्छीतरह प्रसन्नकर बैदेहीसे हमको कुशली बताओ व सुग्रीव लक्ष्मणको भी कुशलपूर्व्वक बतावो व यह भी बताना कि राम-चन्द्रने रावणको मारडाला २४ यह प्रिय हमारासन्देश जानकीजीसे कह व उनकासन्देश ले शीघ्रही लौटआवो २५ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेचतुर्दशाधिकशततमस्सर्ग्गः११४॥

इसतरह रामचन्द्रजी की आज्ञापाय पवनकेपुत्र हनुमानजी निशा-चरोंसे पूजितहो लङ्कापुरीमें पैठे १ लङ्कामेंजाय बिभीषणजी की आज्ञाले

उनकी आज्ञासे हनुमान्जी उसी वृक्षवाटिका को गये २ व पहुंचतेही जानकीजी ने इनको चीन्हा व स्नानादिरहित रोहिणीनाम नक्षत्रके समान शङ्कासहित ३ वृक्षकेनीचे बैठी आनन्द रहित व राक्षसियों के बीचमेंबैठीहुई सीताजीको हनुमान्जी ने भी देखा देखतेही स्वस्थचित्त हो शिर झुंकाय प्रणामकर व प्रणाम का शब्द मुखसे भी कहकर फिर अभिवादनकर बनाय सम्मुखजाय हाथजोड़ खड़ेहोगये ४ महाबलवान् हनुमान्जी को आये देख देवी जानकीजी चुपरहीं क्योंकि उनको देख स्मरणकर प्रमुदित होगईं ५ व जानकीजी का सौम्य मुखदेख हनुमान्जी रामचन्द्रजी का सब सन्देश क्रमसे कहनेलगे ६ हेवैदेहि सुग्रीव व लक्ष्मणसहित व विभीषण सहायकसहित व वानरोंसहित महाबली श्रीरामचन्द्रजी बहुत कुशल पूर्ब्बकहैं ७ व शत्रुकोमार महाराजकुमारने तुम्हारीकुशल पूंछीहै हेदेवि विभीषणकी सहायतासे वानरोंको सङ्गले श्रीरामचन्द्रजी व वीर्य्यवान् लक्ष्मणजी ने रावणको मारडाला ८ हेदेवि यह प्रियबचन तुमसेहम कहतेहैं व फिर तुम्हारीबड़ाई करतेहैं क्योंकि तुम्हारे प्रभावसे रामचन्द्रजी ने समरमें बड़ीभारी ९ यह बिजयपाईहै अबसब व्यथादूरकर तुम स्वस्थचित्तहोवो पुत्र मन्त्री परिवार सहित पापीरावण मारडालागया १० यहकह रामचन्द्रजी के बचनद्वारा हनुमान्जी ने कहाकि जबसेतुमको रावण यहांलाया तबसे हमनेसोयानहीं अबआय रावणको मारडाला जो प्रतिज्ञा राक्षसोंके मारनेकी हमने की थी वह पूरीकरदी समुद्रमें सेतुबांध यहांआय सब राक्षसोंको मारडाला ११ अब राक्षसके स्थानमें रहनेसे तुम भयनकरना क्योंकि लङ्काका यह सबऐश्वर्य्य हमने विभीषणके अधीन करदियाहै १२ तिससेअब विभीषणका राज्यहोजानेके कारण अबतुम अपनेहीघरमेंबैठीहो इससेप्रसन्न होवो ये विभीषण भी तुम्हारे दर्शनोंके लिये तुम्हारे समीप आयाही चाहतेहैं १३ जब चन्द्रसमानमुखी सीताजी से हनुमान्जी ने ऐसाकहा तो मारे हर्षके कण्ठाव रोधन होआया सीताजीकुछभी न कहसकीं १४ सीताजी को कुछभी न कहतीहुई देख वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान्जी बोले कि हेदेवि तुम किसबातका बिचार करतीहो जोहमसे नहीं बोलतीहो १५ जब हनुमान्जीने ऐसाकहा तो धर्म्ममें टिकीहुई सीता जी गद्गद

बाणीसे हनुमानसे बोलीं १६ कि स्वामीकी विजय सुन मारे हर्षकेहम एक क्षणभर कुछ नहीं बोलसकीं १७ हेवानर यह जोहमसे प्रियसंदेश तुमने कहाहै उसके योग्य तुमको आनन्द करनेवाला कोई भी पदार्थ हम नहींदेखतीं १८ सोइसस्थानपर क्या हमपृथ्वीभरमें कुछ ऐसापदार्थ नहीं देखतीं कि जोयह प्रियबचन कहनेके पीछे तुमको दियाजावे जिससे तुमको सुखहो १६ हिरण्यसुबर्ण व बिबिध प्रकारके रत्न व तीनों लोकों का राज्य भी इस संदेशके कहने के बदले में दियाजावे तो यह बातकोई नहीं कहसक्ता क्योंकि येसब पदार्थ उसके आगे तुच्छहैं २० सीताजीके ऐसे बचन सुन हाथजोड़ जानकीजी के बनाय आगे खड़ेहो हनुमानूजी बोले २१ हेअपनेभर्त्ताके हितमेंयुक्त व भर्त्ताकी बिजय चाहने वाली सीताजी इसतरहका सचिक्कण व मीठाबचन तुम्हींकहनेकेयोग्य हो २२ तुम्हारा यह सौम्यसारांशयुक्त व मीठा बचन व सबरत्नसमूहों से व इन्द्रादि देवताओं के राज्यसे भी अधिकहै २३ व बास्तव में तो हमने देव राज्यादि गुणपाये क्योंकि शत्रुको मारेहुये बिजयी रामचन्द्र जीको सुस्थिर देखतेहैं २४ तिसके ऐसे बचनसुन जनककी कन्या मैथिलीभी हनुमानूजीसे उससे भी शुभतर बचन बोलीं २५ कि अति लक्षणसम्पन्न व मधुरता के गुण से भूषित व अष्टांग युक्त बुद्धिसे युक्त बोलना तुम्हींको आताहै २६ तुमपवनके परमधर्म्मात्मा पुत्रहो इससे प्रशंसाकरनेके योग्यहो व बल शौर्य्य श्रुतधरत्व सत्व बिक्रम उत्तम उदारता २७ तेज क्षमा धारणाशक्ति स्थिरता व नम्रताआदि सब उत्तम उत्तम गुण तुम्हींमेंहैं और किसीमेंनहीं इससे क्योंन ऐसाकहो २८ यह सुन सीताजीके सामनेही खड़े सावधान चित्तहो हाथजोड़ मारेहर्षकेऔर भी नम्रहोकर हनुमानूजी बोले २६ये जो सब राक्षसियां यहांहैं जिन्होंने तुमको अगाड़ी बहुत डरवायाथा कहो व अच्छासमझो तो हमइनको मारडालना चाहतेहैं ३० क्योंकि घोरदर्शन राक्षसियोंने क्लेशको प्राप्त परमपतिब्रता अशोकबनिकामें प्राप्त तुमको क्रूरनेत्र दिखाय दिखाय ३१ व दारुणकथा कहकह बहुत दिक्कियाहै इससे इनके मारडालने को आज्ञादेही दीजिये हम आपसे यहबरदान मांगतेहैं हमयही चाहतेहैं कि इनसबको मूकों लातों पैरोंसे ३२ व औरभी बिविधप्रकारके प्रहारों

से व घोरजांघोंके प्रहारों से व दांतोंके काटने से ३३ व नाककान काटलेनेसे व बाल उखाड़डालनेसे व मुखोंमें अग्नि डालदेनेसे व कूदकूद चरणप्रहार करनेसे ३४ व रीढ़ ग्रीवा कांधा बगलआदि अङ्गचीरफाड़ डालनेसे तुम्हारा बिप्रियकारिणी इन दुष्टाओंको हम मारडालना चाहतेहैं ३५ इसीतरह और भी नानाप्रकारके उपायों से इन दुष्टाओंको हम मारडालाचाहतेहैं क्योंकिइन्होंने आपकेसाथ बड़ापाप कियाहै ३६ हनुमान्जी के ऐसे बचनसुन परम यशस्विनी सीताजी हनुमान्जी से धर्म्म सहित बचनबोलीं ३७ हे वानरोत्तम राजसेवाके बशीभूत होनेसे पराई आज्ञासे कर्म्मकरतीहुई इनबेचारी रावणके यहांसे पेट जिलाने वालीदासियोंकेऊपर भलाकौन पुरुष कोपकरेगा हमतो जानतीहैं कोई भी न करेगा ३८ यहसब दुःख हमनेअपनी भाग्यकी बिषमता व पूर्ब्ब जन्मके पापसेपायाहै इनबेचारियोंका कौनदोषहै क्योंकिप्राणी अपनेही कियेहुये शुभ अशुभ भोगते हैं ३९ हमने यहबात निश्चय करलीहै कि हमारी कोई ऐसीही दशाआईथी जिससे ऐसादुःखपाया इससे अबयहां बैठीहुई इन रावणकी दासियों के भी कटु बचन आदि हमने सहे ४० हे वानरोत्तम रावणकी आज्ञासे ये राक्षसियां हमको डरवाती थीं अब जबसे रावण मार गया है बेचारी नहीं डरवातीं यदि अपनी दुष्टता से डरवातीहोतीं तो अब रावण के पीछे भी डरवातीं इससे इनका कुछभी दोषनहीं पराधीन तोथींहीं क्याकरें ४१ हे वानरोत्तम यह बड़ी पुरानी कथाहै एक ऋक्षने एक ब्याग्घ्रके समीप कहीहै उसका कहाहुआ श्लोक तुमको सुनातीहैं प्रथम वह कथासुनो एक बनमें ब्याग्घ्रने एक ब्याधाको खेदा वह ब्याधा एकवृक्षपर चढ़गया उसपर एकऋक्ष बैठाथा तबब्याग्घ्र उस वृक्षके नीचे आय वृक्षके ऊपर बैठेहुये ऋक्षसे कहनेलगा कि यह ब्याधा सब बनबासी जीवोंको मारा करताहै इससे इसे वृक्षपरसे गिरादो यहसुन ऋक्षनेकहा अपने स्थानपर आयेहुये इसकोहम न गिरावेंगे क्योंकि गिरानेसे बड़ा दोषहोगा ब्याग्घ्रसे ऐसा कह ब्याधा को आश भरोसादे स्वस्थचित्तकर ऋक्ष सोगया तब ब्याग्घ्रने ब्याधासे कहा कि सोतेहुये ऋक्षको नीचे गिरादो तो तुमको हम न खायेंगे ब्याग्घ्रके कहने से ब्याधाने ऋक्षको ढकेलदिया परन्तु ऋक्ष अपने अभ्यासके बलसे

और डालको पकड़ अड़गया नीचे न गिरा तब व्याघ्र ने फिर ऋक्ष से कहा कि इसनेतुमको गिरायाथा इससे अब इसको गिरादो व्याघ्र के बचनसुन ऋक्षने कहा कि यद्यपि इसने तुम्हारे कहने से अपराध किया परन्तु हम इसकी रक्षाही करेंगे यहकह व्याधाकी रक्षाकी ४२ वह ऋक्षका कहा श्लोक यहहै कि पापकरनेवाले पुरुषों का पाप और कोई धर्म्मात्मा पुरुष नहीं लेता नहींगिनता इससेसमयकी रक्षाकरनी चाहिये क्योंकि महात्मालोग सदाचारहीको करतेहैं ४३ इससेहेबान-रोत्तम पापीलोगोंके व अच्छेलोगों व बधके योग्य लोगोंकेभी ऊपरश्रेष्ठ पुरुषको चाहिये कि सदादयाकरे व किसीको दण्ड न दे व जो अपराधी को दण्डभी दे तो उसके अपराधकेयोग्य दे इन बेचारी पराधीन राक्ष-सियोंने ऐसा अपराध नहींकिया जो मारडालीजावें ४४ लोकोंकीहिंसा में बिहार करतेहुये कामरूपी राक्षसोंको जोकि सदा पापहीकियाकरते हैं इतनापाप बहुत अनुचित नहींहै वे तो इससे भी अधिककरें तो भी सन्देहनहीं इससे इनको जाने दीजिये ४५ सीताजी के ऐसे बचन सुन बचन रचनामें बड़ेचतुर हनुमानूजी परमयशस्विनी रामचन्द्रजीकीपत्नी सीताजीसे बोले ४६ कि रामचन्द्रजीकी धर्म्मपत्नी तो तुमहौही तुमको ऐसाही कहना उचितहै क्योंकि परमयशस्विनीहो अब हमको आज्ञाहो तो जहां रामचन्द्रजी हैं वहांको जावें ४७ हनुमानूजीके ऐसे बचनसुन जनकनन्दिनीजी बोलीं कि अबतो हम अपने स्वामीको देखाचाहती हैं ४८ तिनके ऐसेबचन सुन महाद्युति हनुमानूजी श्रीजनककिशोरीजीको हर्षित करतेहुये बोले ४९ हे महाराज्ञि मित्रोंके सङ्ग बैठेहुये व बैरियों को मारेहुये पूर्णचन्द्रसम मुखवाले श्रीरामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीको बहु-तही शीघ्र देखोगी जैसे इन्द्राणी इन्द्रको देखतीहैं ५० साक्षात् लक्ष्मी से भी अधिक शोभित सीताजीसे ऐसाकह हनुमानूजी जहांरामचन्द्रजी थे वहां आ गये ५१ व झटपट वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमानूजीने श्रीजनकंकु-मारीके बचन क्रमपूर्व्वक इन्द्रसे भी अधिक श्रीरामचन्द्रजीसे कहे ५२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेपञ्चदशाधिकशत-
तमस्सर्ग्गः ॥ ११५ ॥

हनुमान्‌जी जानकीजीके निकटसे आय रामचन्द्रजीके प्रणाम कर परम धर्म्मज्ञ वानरश्रेष्ठजी सब धनुर्द्धरोंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजीसे बोले १ कि जिसकेलिये युद्धादि कर्म्मोंका प्रारम्भ हुआ व वह सिद्ध भी होगया रावण मारागया अब शोककेमारे सन्तप्त सीताजीको देखिये २ क्योंकि यद्यपि वे मारेशोकके ब्याकुलथीं परन्तु जैसेही आपकी बिजय उन्होंने सुनी कि वैसेही बहुत हर्षित होगईं ३ व पूर्व्वसमयके बिश्वाससे देखतेही हमसेकहा कि अब सब कार्य्य सिद्ध किये हुये अपने भर्त्ता व लक्ष्मणजी को हम देखना चाहती हैं ४ हनुमान्‌जीके ऐसे बचन सुन सब धर्म्मात्माओंमें श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजीध्यानधर कुछ मनमें बिचार कुछ अँशु-आय आय ५ व बड़ेज़ोरसे श्वासले पृथ्वीकी ओर देखतेहुये रामचन्द्रजी समीपही बैठेहुये बिभीषणजीसे बोले ६ कि शिरसे स्नान कराय दिव्य उबटन व चन्दनादि शुभ अनुलेपन लगाय व दिव्य भूषण पहिराय जानकीको यहांलावो बिलम्ब न होनेपावै ७ रामचन्द्रजीके ऐसे बचन सुन बड़ी जल्दीकेसाथ अपने जनाने स्थानमें पहुँच अपनी सब स्त्रियोंसे कहा कि सीताजीको अब वहां लेचलनाहै इससे सबकीसब वहांचलो ८ सबको सङ्गले सीताजीके निकटजाय उनको देख हाथजोड़ शिरपर धर नीचे मुखकर बिभीषणजी सीताजीसे बोले ९ हे बैदेहि दिव्य चन्दनादि सुगन्धित पदार्त्थ अङ्गोंमें लगाय व दिव्य भूषण धारणकर बिमान पर चढ़ो तुम्हारा कल्याणहो तुम्हारे भर्त्ता तुमको देखा चाहतेहैं १० ऐसे बचनसुन जानकीजी बिभीषणजीसे बोलीं कि हे राक्षसेश्वर हमतो बिना स्नानही कियेहुई अपने स्वामीको देखाचाहतीहैं ११ तिनके ऐसेबचनसुन बिभीषणजीबोले कि जिसतरह आपकेभर्त्ताने आज्ञादीहै आपको वैसाही करनाचाहिये १२ तिसके ऐसेबचनसुन पतिव्रता शिरोमणि जानकीजी पतिकी भक्तिमें परायणतो थीहीं कहा बहुतअच्छा जैसी स्वामीकी आज्ञा है वैसीहीचलेंगी १३ इसकेपीछेस्त्रियोंने शिरसे स्नानकराय जानकीजी को दिव्यभूषण वस्त्र पहिराया व बनाय भूषणवस्त्रादि धारण की हुई सीताजीको १४ बड़ेमोलके व हारसे ढँकीहुई व बड़ेमोलकी शिबिकापर चढ़ाय आगेपीछे हज़ारोंराक्षसोंसे रक्षितकर बिभीषणजी वहांलाये १५ व रामचन्द्रजी के समीपजाय उन महात्मा को यद्यपि ध्यान करतेहुये

देखा तथापि आईहुई सीताजीको विभीषणजी ने रामचन्द्रजीसे बताया १६ बहुत दिनोंतक राक्षसके गृहमें रहीहुई सीताजीको आईसुन श्रीरामचन्द्रजी प्रथम तो बहुत हर्षितहुये फिर जानकीजीके दुःखकीओर बिचारकर दुःखितहोगये फिर राक्षसोंके कर्म्मोंकीओर खयालकर रोष भी किया १७ फिर विभीषणजीको अपनेसमीप खड़ेदेख तर्कणासहित बिचार करतेहुये रामचन्द्रजी कुछ अप्रसन्नहो विभीषणजीसे बोले १८ हेराक्षसाधिप हेसौम्य हे नित्यहमारी विजयमें तत्पर अब वैदेही बहुतही शीघ्र हमारे निकटआवें १९ रामचन्द्रजी के बचनसुन बिभीषणजीने बहुतशीघ्र वहांसे सबलोगोंके हटानेका उपायकिया २० इससे जामा पगड़ीआदि वस्त्र धारणकिये खोजेआदि जो वहां बेतछड़ी आदि लियेथे व चारोंओर घूमघूम सब पुरुषोंको वहांसे हटानेलगे २१ उनके हटानेपर ऋक्षों वानरों व राक्षसोंके जो झुण्डकेझुण्ड थे सबजाय बहुत दूर खड़ेहोगये २२ उनलोगों के हटानेमें बड़ाभारी शब्दहुआ जैसे प्रचण्डपवनके चलनेसे समुद्रमें शब्दहोताहै २३ उनसबको जबरदस्ती हटायेहुये उदासीन देख दयाकेमारे व उनसबका अनादर न सहकर श्रीरामचन्द्रजी ने रोंकदिया २४ व क्रोधकेमारे नेत्रोंसे जलातेहीहुये श्रीरामभद्रजी कुछ निन्दाकरतेसे विभीषणजी से बोले २५ हे विभीषण बिनाहमारी आज्ञा इनलोगोंको क्यों क्लेशदेतेहो अब यह उद्योग बन्द करो क्योंकि ये सब बानरादि लक्ष्मण के समान हमारे हैं २६ इसके सिवाय स्त्रीको अपनेअपने पतिकीओरसे जो सत्कारहोता व जो उसका सुन्दर आचारहोता यहीउनका पर्दाहै इसकेसमान नतो गृहके भीतरमें रहना पर्दाकरसके न बस्त्र न बड़ीऊँची दीवारें न और कनातआदि २७ इसकेसिवाय दुःखोंमें व विपत्तियोंमें व युद्धोंमें व स्वयम्बरमें यज्ञमें व बिवाहमें स्त्रियोंको सबके सामने निकलना दूषित नहींहै २८ सो ये सीता एकतो विपत्तिमें पड़ीहैं दूसरे दुःखितहैं इससे सबके देखनेमें इनमें कुछ दोषनहींहै इसके सिवाय हमारे समीप तो कभी इनमें कुछ दोष नहींहोसक्ता चाहे जो देखाकरै २९ तिससे शिविकापरसे उतर पैदर जानकी हमारे समीपआवें जिसमें ये बनबासी वानर ऋक्ष भी देखें ३० रामचन्द्रजीके ऐसे बचनसुन विभीषणजी बनाय अच्छीतरह

अभिप्राय विचार नम्रहोकर जानकीजीको पैदर रघुनन्दनजी के निकट बुलालाये ३१ परन्तु कोपयुक्त श्रीरामचन्द्रजी के ऐसे बचनसुन लक्ष्मण सुग्रीव हनुमान् बहुत व्यथितहुये ३२ विभीषण के पीछे पीछे आतीहुई सीताजी मारेलज्जा के जानों सिंकुड़ी हुई अपने अंगोंमें पैठीहीजाती थीं आते आते श्रीरामचन्द्र जी के निकट पहुँचीं ३३ व रामचन्द्र जीके कोप से विस्मितहो फिर हर्षितहो व स्नेहयुक्तहो पतिदेवता व सौम्यमुखी सीताजीने अपनेपतिका सौम्यमुख देखा ३४॥

हरिगीतिका॥

मनग्लानि नाशत जानकी वहु कालपर निज स्वामिको।
लषि पूर्णचन्द्र समान आनन पूर्णकाम अकामिको॥
भई आप विमल शशाङ्क आनन ध्यान आनन्द जाहिको।
सबऋक्ष कपिनिशिचरबिलोकत मातमतिसीताहिको १।३५॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेषोड़शाधिकशततमस्सर्गः ११६॥

नीचेकोशिर झुकाये प्रणामकरतीहुई प्रसन्नचित्त सीताजी को अपनी बगलमें बैठीदेख श्रीरामचन्द्र जी अपने अन्तःकरण का भाव प्रकाशित करनेलगे १ हे भद्रे हमने रण में शत्रुको जीत तुमको फिर उत्कर्ष को प्राप्तकिया पौरुषसे जो करनेके योग्यथा वहहमने करके दिखलाया २ अब हमारा क्रोध नष्टहुआ व शत्रुने जो तुमको हरलाय हमारा अनादर कियाथा वहभी अब दूरहुआ व शत्रुने जो बारबार अनादर की बातें कहीं थीं उनको व शत्रुको साथही हमने नष्ट करदिया ३ आज हमारा पौरुष तुमने देखा व आज हमारा श्रम सफलहुआ व आज जो हमने राक्षसोंके मारडालने की प्रतिज्ञाकीथी उसके पारको हमपहुँचे व आज अब हम प्रभाववान् हुये ४ हमारे वहां न होनेपर चञ्चल चित्तवाला रावण जो तुमको हरलायाथा वह दैवका कियाहुआ दोष तुममें प्राप्त हुआथा परन्तु हमतो मनुष्यहीथे पर दैवकृत दोषकोहमने दूरकरदिया ५ जिसका निरादर कहीं होजाय व वह अपने तेज से उसको दूर न करै अर्थात् निरादर करनेवालेका बिध्वंस न करै तो उस अल्पतेजस्वी पुरुष का कौन पौरुष ठहरा ६ समुद्र का नांघना व लंका का फूंकना

गिराना आदि जो हनुमान् का कर्म्म है वह आज सफलहुआ व बड़ाई करने के योग्यहुआ ७ व युद्धमें बिक्रम करतेहुये व हमको हितसलाह देते हुये सेना सहित सुग्रीव का परिश्रम आज सफल हुआ ८ अपने भाई को निर्गुणजान उसे त्याग अपने आप हमारे पास आये हुये परमभक्त बिभीषण काभी आज परिश्रम सफल हुआ ६ ऐसा कहते हुये रामचन्द्रजीके बचनसुन मृगीके समान उत्फुल्ल नयनवाली सीता जीके नेत्रोंसे आंशु बहने लगे १० समीप बैठीहुई प्राणोंसे भी अधिक प्रिय सीताजीको देखतेहुये रामचन्द्र का हृदय यद्यपि जानकीजीको वास्तवमें शुद्ध जानतेथे क्योंकि दूरदर्शित्व व अन्य के अन्तःकरण का अभिप्राय जानने आदिके गुण सब उनमेंथे परन्तु लोकापवाद के भय से रामचन्द्रजीका हृदय मारे दुःखसे जानों भिन्नही होगया ११ इससे कमलनयनी व काले घुंघुवारे केशवाली व श्रेष्ठगमनवाली सीताजी से राक्षसों व वानरोंके सामने श्रीरामचन्द्रजी बोले १२ कि शत्रुसे किये हुये निरादरको मिटातेहुये पुरुषको जो करनाचाहिये हे सीते रावणको मार उसके यहांसे तुमको छुड़ाय हमनेभी अपना निरादर का दुर्य्यश धोया १३ जैसे कि तपस्या से परमात्माको प्रसन्न करनेवाले महात्मा अगस्त्यजीने इल्वल व वातापीनाम दैत्योंके भयसे किसीकेभी न जाने के योग्य दक्षिण की दिशाको जीत लिया १४ तुम्हारा कल्याणहो जानतीहो जो यह बड़ाभारी परिश्रम हमने किया व इष्ट मित्रों की सहायता से इसके पारकोभी पहुंचे वह केवल तुम्हारेही लिये हमने नहींकिया १५ किन्तु सदाचार की रक्षा करनेके लिये व यह अपवाद मिटानेके लिये कि ये अपनी स्त्रीके हरनेवाले कोभी नहीं मारसक्के इस अपकीर्त्तिके मिटाने के लिये व हमारावँश दुष्टोंको दण्ड देनेमें प्रसिद्ध होरहाथा इससे रावण दुष्टको बिनामारे उसकी न्यूनताहोती उसे मिटानेकेलिये हमने रावणकोमारा कुछ तुम्हारे लियेनहीं १६ तुम हमारे सामने बैठीहो परंतु बहुतदिन रावण के यहां रहने से हमको तुम्हारे आचार में संदेह जान पड़ताहै इससे जैसे नेत्रोंमें पीड़ावालेको दीपक नहीं अच्छा लगता वैसेही इस समय हमको तुम नहीं अच्छी लगती १७ तिससे हेजनकनंदिनि जहां मनचाहे वहां इन दशों दिशोंमें चली

जावो तुमसे हमारा कुछभी कार्य्य नहींहै १८ क्योंकि ऐसा कौनतेजस्वी पुरुषहै जो बड़े कुल में उत्पन्न होकर सुहृदके लोभसे अन्यके घरमें रही हुई स्त्रीको फिर आप अंगीकार करलेवे १९ इससे रावण के कोरामें बैठी हुई व उसकी कुदृष्टिसे देखीहुई तुमको हम फिर कैसे ग्रहण करलें व कुलीन बने बैठेरहैं २० जिसलिये हमने तुमको रावण को पराजितकर फिर अपने निकट बुलाया वह कार्य्य होगया तुमको सबबातें सुनादीं अब तुम्हारा हमारा मेल नहींहै इससे यहांसे जहांचाहो चली जावो २१ तिससे हेभद्रे हमने बहुत विचार के साथ यह कहाहै इस विषयमें चाहे तुम लक्ष्मण भरतमें बुद्धि लगाय उनसे भी पूंछलो २२ वा वानरेन्द्र सुग्रीवसे वा राक्षसेन्द्र विभीषणसे पूंछो वा चाहे जोकरो जिसमें अपना को सुख देखो वही करो २३ दिव्यरूप मनोरम तुमको देख रावण को जो अभीष्ट हुआ होगा वह उसने किया होगा क्योंकि उसके घरमें तो तुम रहतीही थीं २४ ॥

हरिगीतिका ॥

प्रिय श्रवणायोग्य पुनीत सीता बहुत दिनसों भामिनी ।
सुनि प्राणप्रियके बचनअप्रिय जासुयोग्य न भामिनी ॥
पुनिकरन रोदनलगीं बहुबिधि कँपत सबअँग ताहिके ।
गजनिहतजिमिकदलीप्रकम्पत तिमिसोकांपतआहिके १ । २५

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेसप्तदशाधिकशततमस्सर्गः ११७ ॥

जब रोषयुक्त होकर रामचन्द्रजी ने जानकीजी से ऐसा कहा तो सीताजी बहुत दुःखित व ब्याकुलहुईं १ व जैसा वचन कभी न सुना था वैसा सब जनोंके सामने अति रूखे वचन अपने स्वामी के सुन मारे लाजके बनाय झुकगईं २ व अपने अंगोंमेंही पैठी जाती हुई जनकनंदिनी जी बचनरूप बाणोंकी गांसी हृदय में लगने से अति ब्यथित हुईं ३ तिसके पीछे आंशुओं से भीगा हुआ अपना मुख पोंछती हुई धीरे से गद्गदबाणी से अपने स्वामी से बोलीं ४ हे वीर इसतरह का अयोग्य सुननेमें अतिदारुण वचन हमसे कैसेकहतेहो जैसे कोई प्राकृत मनुष्य प्राकृतस्त्रीसे कहताहै प्राकृत विलक्षण आपको प्राकृत विलक्षण

हमसे ऐसा न कहनाचाहिये ५ हे महाराज इससमय तुमहमको जैसी समझतेहो हम वैसीनहीं हैं इसविषयमें आपबिश्वासहीमानें क्योंकि हम अपने पातिव्रतधर्म्मकी व आपकी शपथकरतीहैं ६ बड़ेसन्देहकी बातहै कि आप सामान्य प्राकृतस्त्रियोंका आचरणदेख प्राकृत विलक्षण स्त्रियों की जातिमेंभी शङ्काकरतेहैं ऐसातो न करनाचाहिये खैर जो अबहमारी परीक्षा होगईहो तो इसशङ्काको छोड़दीजिये ७ हे स्वामिन् जो हमने परवशहो रावणके अङ्गोंका स्पर्शकिया तो हमारी इच्छा तो नथी उस विषयमें तो दैवका अपराधहै जिसने हमको उसके बशमें करदिया ८ हमारे अधीन तो हमारामन है सो तो आपही के निकटरहा ये अङ्ग तो पराधीनथे इससे इनपराधीन अङ्गोंको हमक्याकरें उनके काबूकरने में तो हम समर्त्थनथीं ९ एकहीसङ्ग बढ़ेहुये अनुरागयुक्त सर्ब्बकालके सम्बन्धसे जो आपने हमको इतनेदिनोंतक न जानपाया तो इस आपके अज्ञानसे तो हमनिरन्तर मारीहीबैठीहैं १० ऐसाहीथा तो जब आपने हनुमान्वीरको लङ्कामें टिकीहुई हमारेदेखनेकेलिये भेजाथा तभीक्योंन कहलाभेजा कि हमने तुम्हारा परित्याग किया ११ जो हम तभी यह जानजातीं तो त्यागरूपवचनसुनतेही तुम्हारे इनवानरश्रेष्ठके सामनेही तुम्हारी त्यागीहुई हमप्राण त्यागकरदेतीं १२ तो संशयमें चित्तलगाये हुये आपको यह संग्राम करनेका परिश्रम काहेकोहोता व तुम्हारे इन सबसुहृदोंको क्लेशकाहे को नाहकहोता १३ हे नरशार्दूल तुमने लघुमनुष्योंके समान क्रोधके बशहोकर सामान्य स्त्रियोंकेसमान हमकोभी समझलिया १४ तुमने हमारे पिता जनकजी का धर्म्म न बिचारा व पृथ्वीसे हमारीउत्पत्ति न बिचारी कि ये ऐसेधर्म्मवान्की कन्या व पवित्र पृथ्वीसे उत्पन्नहुईहैं तो धर्म्मवती व पवित्रहीहोंगी इसीसे हमारेआचरणको आपने बहुत नहीं समझा १५ बाल्यावस्थाहीमें हमारा आपने पाणिग्रहणकिया तबसे आपहीके सङ्गरहीं फिर भक्ति व शील जैसाकुछ रहा सब आपजानतेहैं तिसपरभी इनसबका कुछ प्रमाण न किया १६ ऐसाकहती रोदनकरतीहुई सीताजी आँशु बहने व बाष्पसे कण्ठावरोधनकेकारण गद्गदबाणी बोलतीहुई दुःखितहो ध्यानकरनेमेंयुक्त लक्ष्मणजीसे बोलीं १७ हे लक्ष्मण चिता बनावो वही इस दुःखकी औषध है

हममिथ्या अपवादसेमारीहुई अबअपना जीवन नहींचाहतीं १८ जिस हमको हमारे गुणोंसे अप्रसन्नहोकर सबलोगोंकी सभामें हमारे पतिने छोड़दिया इससे हम अग्निमें प्रवेश करजायँगी क्योंकि इससमय अब अग्निही हमारी गतिहै १६ जानकीजीके ऐसे बचनसुन शत्रुओंके मारनेवाले लक्ष्मणजी इसबातको न सहकर रामचन्द्रजीकी ओर निहारने लगे २० देखतेही रामचन्द्रजीके आकारसे उनकेमनकी अभिप्रायजान रामचन्द्रजी की सम्मतिसे चिताबनायदी २१ उससमय रामचन्द्रजीने अपनारूप कालान्तक यमकेसमान ऐसा बनालियाथा कि न तो कोई कुछ सिखायहीसका न बोलहीसका २२ तबनीचेको मुखकियेहुये रामचन्द्रजीकी प्रदक्षिणाकर जानकीजी प्रज्वलित अग्निके समीपगई २३ व देवताओं व ब्राह्मणोंके प्रणामकर मैथिलीजी हाथजोड़ सबके सामने अग्निके समीपजाय ऐसाबोलीं २४ कि जैसे हमारामन कभी रामचन्द्र जीसे अन्यत्र कहीं नहींजाता तैसेही सबलोकोंके साक्षी अग्नि सबओर से हमारी रक्षा करें २५ व जिसतरहसे रामचन्द्रजी हमको आचरणसे दुष्ट समझतेहैं उसके भी साक्षी अग्निजी हैं जैसा होगा जानतेही होंगे इससे अग्नि सबओरसे हमारी रक्षा करें २६ ऐसाकह अग्निकी प्रदक्षिणा कर धधाकार जलतीहुई आगमें निश्शङ्कमनहो जानकीजी पैठगई २७ व अपने तेजसे प्रज्वलित जानकीजीको अग्नि में पैठती हुई बाल वृद्ध युवा सबजनोंने देखा २८ तपायेहुये नयेसुवर्णके रङ्गकी जानकीजी तपायेहुये सुवर्णके सब भूषण धारण कियेहुई हाहाकार करतीहुई उस चितामें सब लोगोंके सामने पैठगई २९ बिशालाक्षी व सुवर्णकी वेदीके समान प्रकाशित सीताजीको अग्निमें पैठतीहुई सबप्राणियोंनेदेखा ३० व देवता गन्धर्ब्ब ऋषियोंनेभी यज्ञमें पूर्णाहुतिके समान प्रज्वलित अग्नि में पैठतीहुई जानकीजीको देखा ३१ व संस्कारयुक्त वसुधारा के समान अग्निमें पैठतीहुई सीताजीको देख सबस्त्रियां चिल्लाय उठीं ३२ व तीनों लोकोंके देवता गन्धर्ब्ब व दानवोंने अग्निमें पैठतीहुई जानकीजीको शाप पाय नरकमें गिरतीहुई देवीके समान दिखाई दीं ३३ तिनके अग्निमें पैठनेकेसमय राक्षसों व वानरोंका बड़ाभारी शब्द हुआ ३४ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेऽष्टादशाधिकशततमस्सर्गः ११८

इसतरह सबको शब्दकरतेहुये सुन उदासीनहो रामचन्द्रजी व्याकुल हो कुछ अँशुआय एक मुहूर्त्तभरतक ध्यानकरतेरहे १ उसी बीचमें कुबेर व शत्रुओंके नाशनेवाले यमराजजी तथा हज़ारनेत्रके इन्द्रजी व शत्रुओंको सन्तप्तकरानेवाले वरुणजी २ व तीननेत्रके वृषध्वज महादेवजी व सब लोकोंकेकर्त्ता वेदवादियोंमेंश्रेष्ठ ब्रह्माजी ३ ये सब अपनेअपने विमानों पर चढ़चढ़ लङ्कापुरीको आये व फिरएक सङ्गहो श्रीरामचन्द्रजी के निकटआये ४ तिसकेपीछे भूषणभूषित अपनेहाथ उठायउठाय हाथजोरे खड़ेहुये श्रीरामचन्द्रजीसे बोले ५ किभला आपसब लोकोंकेकर्त्ता होकर व सबकुछ जाननेवालोंके प्रभुस्वामीहो जानबूझ अग्निमें गिरतीहुई सीताकीउपेक्षा कैसेकरतेहो क्योंकि तुमभी तो जानतेहो कि इनमें कोई दोषनहीं फिर अदोषमें दोषारोपकरना अनुचितहै ६ आपदेवगणोंसे भी अधिक अपनेस्वरूपको क्योंनहीं पहिचानते कि सृष्टिकेसमय प्रथमतीनों लोकोंकेकर्त्ता ऋतधामानाम वसुहुये व फिर प्रजापतिहुये तीनोंलोकोंके आदिकर्त्ता तुम्हींहो ७ व रुद्रमें अठयें रुद्रतुम्हींहो व साध्योंमें पँचये साध्यतुम्हींहो व तुम्हारे बिराट्स्वरूपके कानतो अश्विनी कुमारहैं व चन्द्रमा सूर्य्यनेत्रहैं ८ व अन्तमध्य व आदिमें तुम्हीं दिखाई देतेहो हे शत्रुतापन परम पुराण पुरुषहो सीताजीको प्राकृत मनुष्यकेसमान छोड़ देतेहो ९ चतुर्दश भुवनोंके स्वामी रामचन्द्रजी से जब ब्रह्मादिदेवों ने ऐसाकहा तो सब वेदवादियोंमेंश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी सब देवताओंसे बोले १० कि हमतो अपनाको महाराजदशरथके पुत्रहोनेके कारण मनुष्य मानतेहैं परन्तु जो हमहैं व जहांसे आयेहों व जिसके सम्बन्धीहों आप सबहमसे बतावें ११ ऐसा कहते हुये श्रीरामचन्द्रजी से वेदवादियों में श्रेष्ठ श्रीब्रह्माजीबोले कि हेसत्यपराक्रम श्रीरामचन्द्रजी हमारे सत्यबचन सुनो १२ आपसाक्षात् नारायणहैं जोकि चक्रायुध धारण कियेरहते व श्रीमान् सब कुछकरनेमें समर्थहैं प्रलयमें एकशृङ्गके मत्स्यका व बराह का अवतार अपनी इच्छासे लेतेहो व भूत भविष्यद्वर्त्तमान सब शत्रुओं को तुम माराकरतेहो १३ सत्य अक्षर परब्रह्म तुम्हींहो व आदिमध्य अन्त सबकहीं तुम बनेरहतेहो सबलोकोंके परमधर्म्मरूप तुम्हींहो व विष्वक्सेन चतुर्भुजी तुम्हारी प्रायःमूर्त्ति रहतीहै १४ शार्ङ्गधन्वा, हृषीकेश

पुरुषपुरुषोत्तम अजित खड्गधृक विष्णु कृष्णा वृहद्बल १५ सेनानी ग्रामणी आदि तुम्हारे नामहैं व सब पदार्त्थ तुम्हींहो बुद्धि क्षमाआदि सब तुम्हींहो सब संसारके उत्पत्ति के स्थान नाशरहित व नाशयुक्त उपेन्द्र मधुसूदन १६ तुम्हींहो व इंद्रके कर्म्म करनेवाले महेन्द्र तुम्हीं हो यहं बात दिव्य महर्षिलाग कहते हैं १७ सहस्रशृंग वेदात्मा शतशीर्ष महर्षभ आदिभी तुम्हारे नामहैं व तुम तीनोंलोकोंके आदिकर्त्ता व आप खुद सबके स्वामी हैं १८ व सिद्धों साधकोंके आश्रयरूप यज्ञ वषट्कार ओङ्कार व परात्पर ये सब तुम्हारेही नाम हैं १९ परन्तु आपकी उत्पत्ति व नाशका कोई कहनेवाला तो नहींहै जो कहे कि आप फलाने हो हां यहतो है कि ब्राह्मण गाय आदिमें तुम्हीं दिखाई देतेहो २० सब दिशाओंमें व सब पर्ब्बतों पर व आकाशमें व बनोंमें सहस्र चरण श्रीमान् शतशीर्ष सहस्रदृक् २१ व तुम सब प्राणियों को धारण करते पृथ्वी पर्ब्बतादि सब तुम्हारे ऊपर बिद्यमानहैं व पृथ्वीके नीचे बहुत दूरपर जलमें तुम शेषरूपको धारण करतेहो २२ हेराम तुम सब देवता गन्धर्ब्ब सहित तीनोंलोकोंको धारणकिये रहतेहो उसमें हमतो तुम्हारी हृदयहैं व जिह्वा सरस्वती देवीहै २३ व सब देवता तुम्हारे अंगोंके रोम बनाये गयेहैं तुम्हारा पलक मारना तो रात्रिहै व निहारना दिन २४ व तुम्हारे संस्कार वेदहैं कहांतक गिनावें ऐसा कोईभी पदार्त्थ नहीं जिसमें तुम नहो यह सब संसारतो तुम्हारा शरीरहै व पृथ्वीतल स्थिरता २५ अग्निकोप प्रसाद चन्द्रमा व श्रीवत्स चिह्नहैं तुमने अगाड़ी अपने तीन पैरोंसे तीनोंलोक नापलियेथे २६ व महासुर बलिको बांधि इन्द्रको राजा बनायाथा सीतातो लक्ष्मीहैं व आप श्रीविष्णुहैं २७ यहां रावणके मारने के लिये मनुष्य देह आपने धारण कियाहै सो हेधर्म्म धारियों में श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी वह रावण बधरूप हम लोगोंका कार्य्य तो आपनेकिया २८ रावणको मारडाला अब प्रहृष्ट होकर फिर अयोध्या को चलो वहांसे बैकुण्ठ कोभी शीघ्रही चलना होगा हेदेव तुम्हारा वीर्य्य सफलहै व तुम्हारे पराक्रम निष्फल नहींहैं २९ हेराम तुम्हारा दर्शन सफलहै व तुम्हारी स्तुति निष्फल नहींहै इससे जो तुम्हारे भक्त होंगे वे सफलहोंगे ३० हेदेव जो तुम्हारे भक्त पुराणपुरुषोत्तम तुमको

प्राप्तहोंगे वे इसलोकमें व परलोकमेंभी सबकाम पावेंगे ३१ हेराम यह हमारे तुम्हारे सम्बादका जो परमस्तोत्रहै बड़ापुरानाहै व बड़ेश्रेष्ठ मंत्रों से कहा हुआहै जोकोई इसकोपढ़ेंगे उनकाअनादर कभी न होगा३२॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेयुद्धकांडेएकोनविंशाधिकशततमस्सर्ग्गः११९

ब्रह्माजीके शुभबचन सुन गोदमें जानकीजीकोले अग्निदेवता मूर्ति धारणकर अपनी उस ज्वालाके भीतरसे निकले १ उस चिताको कँपाय मूर्त्तिमान् अग्नि जनकनंदिनीको लेकर निकले २ उस समय जानकी जीका रूप प्रातःकाल के सूर्य्यके समान व तपायेहुये सुवर्ण के भूषण धारणकिये लाल रेशमीबस्त्र ओढ़े घुंघुवारे बालोंसहित ३ व फुलानेहुये फूलोंकी मालापहिने अति सुंदरथा ऐसे रूपकी सीताजीको लाय अग्नि ने रामचन्द्रजीको सौंपदिया ४ व रामचन्द्रजीसे अग्निदेव सबकेआगे बोलेभी क्योंकि अग्निजी सब लोकोंके पाप पुण्यके साक्षीहैं हेराम ये तुम्हारी बैदेहीजीहैं इनमें पाप रत्तीभरभी नहींहै ५ न बचनसे न मनसे न बुद्धिसे न दृष्टिसे किसीसे इन्होंने कभी पाप नहीं किया न आपसे अन्य किसीमें कभी इन्होंने चित्त लगाया है ६ व रावण अपने वीर्य्यके अहङ्कारसे केवल अपने यहांको उठायही लेगयाहै सो तुमतो उस समय वहांथेही नहीं ये बेचारी क्याकरें अवशहो उसके संग जानाही पड़ा ७ वहां लेजाकर अपनी स्त्रियोंके बीचमें रक्षाकेसाथ इन्हें रक्खा जहां कोई पुरुष नहीं जाने पाताथा परंतु ये वहां भी तुम्हींमें चित्त लगाये रहीं व तुम्हींमें परायणरहीं वहां इनकीरक्षा घोर राक्षसियां करतीथीं ८ यद्यपि रावणने इनको नानाप्रकारके पदार्त्थ देनेकोकह बहुत ललचवाया तथापि आपमें चित्तलगायेहुई इन्होंने उस राक्षसकीओर कुछ दृष्टि नहीं की न उसकोतृणभरभी कुछसमझा९इससेविशुद्धभाव निष्पाप इन सीताजीको आपग्रहणकरें अबआप इनकोकुछभी न कहेंगे यह हम आपसे कहेजातेहैं १० अग्निके ऐसेबचनसुन रामचन्द्रजी प्रसन्नचित्तहो आपभी एक मुहूर्त्त भरतक ध्यानदेकर विचारकरतेरहे व हर्षकेमारे नेत्र ब्याकुल होगये ११ जब इसतरह अग्निके बचन सुने व बिचारे तो महातेजस्वी महापराक्रमी व धर्म्मात्माओंमेंश्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी अग्निदेव व ब्रह्मादिकोंसे भी

बोले १२ कि सबलोकके बीचमें अवश्य सीता पावन हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं परन्तु बहुतसमयतक रावणके जनानेमें ये रहीं १३ इससे जो हम जानकीको अग्न्यादिमें सबलोगोंके सामने शुद्ध न करलेते तो सबलोगयहीकहते कि दशरथके पुत्र रामचन्द्र बड़ेअनारीहैं व बड़ेकामी हैं जो इतने दिन जानकी रावणके यहां रहीं फिर ग्रहण करलिया १४ हम पहिलेहीसे जानतेथे कि जानकीजी अपने मनसे औरकिसीकोकुछ भी नहीं समझतीं व हमींमें सदा चित्तलगाये रहतीहैं व हमारे चित्तकी रक्षाकरती हैं १५ व यहभी जानतेहैं कि यद्यपि रावण इनको अपने यहां बँधुआ कियेरहा परन्तु येअपनेही तेजसेरक्षितरहीं किसीकेरखाने की कुछ आवश्यकता नहींथी क्योंकि इनके तेजके कारण इनके निकट रावण नहीं आयसका जैसे समुद्र अपनी मर्य्यादासे बाहर कभी नहीं जाता १६ वह दुष्टात्मा मनसे भी मैथिली को प्रधर्षित नहीं कर सका जैसे प्रज्वलित अग्निकी शिखाको कोई नहीं छूसक्ता १७ इससे रावण की स्त्रियोंके बीचमें रहनेसे इनको कुछ बिकलता व दोष नहीं होसक्ता क्योंकि ये तो हममें अनन्यभाव रखतीहैं हमकोछोड़ औरको कुछ समझतीही नहीं जैसे प्रभा सूर्य्यको छोड़ और कहीं नहीं जाती १८ भाई तीनोंलोकोंमें सीता सबतरहसे बिशुद्धहैं क्योंकि राजाजनककी कन्याहैं हम इनको किसीतरह नहीं त्यागसक्ते जैसे आत्मज्ञानी कीर्त्ति को नहीं छोड़सक्ता १६ इससे आप सब देवताओंके बचन हमको अवश्य करने चाहियें क्योंकि आपलोग लोकनाथ ठहरे फिर इसतरहकी हमारे हित की बात कहते हो २० बिजयी व महाबली व महायशस्वी रामचन्द्रजी अपने कर्मोंसे प्रशंसितहो जानकीजीको निकटबैठाय सुखके योग्य राघव सुख करनेलगे ॥ २१ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेविंशोत्तरशततमस्सर्गः १२० ॥

रामचन्द्रजीके ऐसे शुभबचन सुन महादेवजी अति शुभतर बचन बोले १ हे कमलनयन महाबाहु श्रीरामचन्द्रजी बड़ेभाग्यकी बातहै कि धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ आपने यह बड़ाभारी कर्म्मकिया २ बड़े भाग्य की बातहै कि सबसंसारका यह बड़ाभारी अन्धकाररूप रावण से भय उठी

थी वह आपने समरमें दूर करदिया ३ अब अयोध्यामें जाय दुःखित भरत व यशस्विनी कौशल्याजीको कैकेयी व लक्ष्मणकी माता सुमित्राजी को देख व समझाय बुझाय ४ व राज्यपाय सुहृदोंको आनन्दित कर व इक्ष्वाकुबंशियोंके कुलमें वंशस्थापितकर ५ व अश्वमेध यज्ञकर उत्तम यशपाय ब्राह्मणोंको धनदे फिर अपने दिव्य साकेतलोकको आपजानेके योग्यहैं ६ हे रामचन्द्रजी ये बिमानपर चढ़ेहुये राजा दशरथजी हैं जोकिमनुष्य लोकमें तुम्हारे पिताथे व महायशस्वी गुरु रूपथे ७ तुमपुत्र के तारने से अतिशोभितहो इन्द्रलोक को प्राप्तहुये इससे अब अपने भाई लक्ष्मण सहित तुम इनके प्रणामकरो ८ महादेवजीके बचनसुन रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीने बिमानपर चढ़ेहुये अपने पिताको प्रणामकिया ९ व अपने तेजसे शोभित निर्म्मलबस्त्र धारणकिये अपने पिताजीको रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीने देखा १० व प्राणोंसे भी अतिप्रियपुत्र रामचन्द्रजी को देख बिमानपर सवार महाराज दशरथजी बहुत हर्षित हो ११ दोनों हाथों से उठाय गोदमें बैठाय व अच्छीतरह छाती में लगाय बोले १२ कि तुम्हारे वियोगसेयुक्त हमको देवतालोग यद्यपि स्वर्ग्गबासको बहुत कुछ समझतेहैं परन्तु तुम्हारे सहबासके बराबर सुखनहीं देता यहबात सत्यही कहतेहैं १३ व तुमको बनबासदेने के लिये कैकेयीनेजो दुर्बचन हमसे कहेथे वे अबतक भी हमारेहृदय में ज्योंके त्यों धरे हैं १४ परन्तु तुमको व लक्ष्मणको कुशलपूर्व्वक देख व छातीमें लगाय आज दुःख से छूटे जैसे सूर्य्य अंधकारसे छूटतेहैं १५ हे पुत्र महात्मा सुपुत्र तुमने हमको तारदिया क्योंकि जोतुम बनको न आते तो हमारा सत्यप्रतिज्ञत्व जाता रहता तो काहे को तरते जैसे अष्टावक्र धर्म्मात्मा ने अपने पिताको हल ब्राह्मणको तारदिया १६ हे पुत्र हमने इससमय जाना कि देवताओंकी प्रार्त्थनासे पुराणपुरुषोत्तम तुमने रावणके मारनेके लिये हमारे यहां अवतार लियाथा सो भी कार्य्य इस बनयात्रामें तुमने किया १७ कौशल्या के सबअर्त्थ अब सिद्धहोंगे जोकि बनसे लौटेहुये शत्रुओंकेनाशक तुमको गृहमें प्राप्त अति हर्षितहोकर देखेंगी १८ व हे राम जो लोग भरतादिक पुरीमेंपहुँचेहुये तुमको राज्यसिंहासनपर बैठेदेखेंगे वेभी कृतार्त्थहोंगे १९ धर्म्मज्ञ पवित्रबली व तुममें प्रीतिलगाये भरतका व तुम्हारा समागम

हमारे देखनेकीइच्छाहै २० हे सौम्य सीता व लक्ष्मण सहित बनमें बस कर तुमने हमारीप्रीतिसे चौदहबर्षबितादिये २१ अबबनबाससेनिवृत्तहुये तुमने हमारी व अपनी प्रतिज्ञापूरीकी व समरमें रावणकोमार देवताओं को भी संतुष्टकिया २२ यह बड़ाभारी काम तुमने किया इससे प्रशंसा करनेके योग्य बड़ाभारी यशभी पाया अब राज्यपर टिक अपने भाइयों सहित बहुतदिनोंतक जीतेरहो २३ ऐसाकहतेहुये महाराज दशरथजीसे हाथजोड़ श्रीरामचन्द्रजीबोले हे धर्म्मज्ञ कैकेयी व भरतकेऊपर अबआप प्रसन्नहों २४ जो आपने कैकेयीसे कहाथा कि अबहम पुत्रसहित तुमको छोड़तेहैं वहशाप पुत्रसहित कैकेयीको न स्पर्शकरसके आप अयोध्यामें चल उनकोभी दर्शनदीजिये २५ यहसुन महाराजाधिराज दशरथजीने कहा बहुतअच्छा ऐसाहीहोगा रामचन्द्रजीसे इतनाकह फिर लक्ष्मणको छातीमेंलगाय उनसेबोले २६ हेधर्म्मज्ञ लक्ष्मणजोरामचन्द्र तुम्हारेऊपर इसीतरह प्रसन्नबनेरहेंगे तो तुमधर्म्म व बड़ायश पृथ्वीतलमें पावोगे व अन्तमें स्वर्गबास पावोगे व बड़ीभारी तुम्हारी महिमाहोगी २७ रामचन्द्र सबलोकों के हितकरनेमें सदातत्पर रहतेहैं इससे इनकीशुश्रूषा सदाकरते रहना इसमें तुम्हारा कल्याणहोगा २८ देखो इन महात्मा पुराण पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजीकी स्तुति ये सब इंद्रादिदेवता व अन्य तीनोंलोकों के निवासी व सिद्ध महात्मा ऋषिलोग भी करतेहैं २६ हे सौम्य ये रामचन्द्र ब्रह्मादि देवताओंके प्रेरकहैं इससे रामचन्द्रके बचन अतिगूढ़ाभिप्रायहोते इससेगुप्त व वेदकेतुल्य व नाशरहित होते इससे इनकेबचन सदामानना ३० वैदेहीसहित इन रामचन्द्रकी सेवा करते हुये तुमने बड़ाधर्म्म व सदाचार व विपुल यशपाया अब औरभी अधिक पावोगे ३१ लक्ष्मणसे ऐसाकह महाराज हाथजोड़े आगेखड़ीहुई पुत्रबधू सीताजीसे हे पुत्रि ऐसामधुर बचन धीरेसेकह बोले ३२ हे वैदेहि रामचन्द्रने जो तुमको त्यागकरनेको कहाथा इससे इनके ऊपर कभी क्रोध न करना क्योंकि रामचन्द्र ने तुम्हाराहित विचार विशुद्धकरने के लिये ऐसाकहाथा कुछ वैरदृष्टि से नहीं क्योंकि वेतो तुमको विशुद्धजानतेहीथे अग्निमेंपैठ उससेभी अधिक तेजस्विनी होकर निकलने से अन्यलोग राक्षस वानरादि भी तुम्हारी पवित्रताका प्रभाव जान गये

व देवता लोग तो जानों प्रथमही से जानतेथे ३३ हे पुत्रि तुमने जैसा दुष्कर यह कर्मकियाहै यह और स्त्रियाँ नहीं कर सकीं इससे इसतुम्हारे आचरणकोदेख सब स्त्रियोंका बड़ाभारी यशहोगा ३४ हेपुत्रि यद्यपि पतिकी शुश्रूषा करनेमें तुमकिसीके सिखानेके योग्यनहींहो क्योंकितुम आपसदा निश्चल बुद्धिसे किया करतीहो तथापि पिता माता सासु श्वशुर इनका धर्म यहीहै पुत्र कन्या वा पुत्रबधू को सिखावें इससे हमने तुमसे यहकहा ये पति तुमको परमदेवताहैं इनकी सेवाहीसे तुम्हें सब पदार्त्थ प्राप्तरहेंगे ३५ इसतरह अपने दोनोंपुत्रों व पतोहूको समझाय बुझाय व सिखाय बिमानपर चढ़हुये महाराज दशरथजी इन्द्रलोक को चलेगये ३६ ॥

हरिगीतिका ॥

निजतनय अरु सुतबधूसों मिलि सकल शिक्षाकरिभले ।
अति तेजसों अनुभाव युत नृपराज दशरथजी चले ॥
चढ़िकै सुदिब्य बिमानपर सुरराजलोक सिधार्यऊ ।
अतिहर्षयुत रघुनाथसीता लषण तिन्हें निहार्यऊ १ । ३७ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकांडेएकविंशाधिकशततमसर्ग्गः॥१२१॥

महाराज दशरथजी के चले जाने के पीछे पाकनाम दैत्य के मारने वाले इन्द्रजी परमप्रीति युक्तहो हाथजोड़े हुये श्रीरामचन्द्रजीसे बोले १ हे नर श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे दर्शन हम लोगोंको सफल हैं इससे तुमको देख हम सब बहुत प्रसन्न हुये अबजो बात तुमको अभीष्टहो उसकीआज्ञा हमको दो २ प्रसन्न मनहो महात्मा इंद्रजीने जब ऐसाकहा तो अतिप्रसन्न मनहो व बहुत हर्षितहो श्रीरामचन्द्रजी बोले ३ हे देवराज जो हमारे ऊपर तुम्हारी प्रीति उत्पन्न हुईहो तो अच्छा हम कुछ कहते हैं वह हमारा बचन सत्यकरो ४ हमारे लिये जो वानर लोग पराक्रम कर मृतक हो यम पुरको चले गये हैं वे सब फिर जीकर उठ खड़े हों ५ क्योंकि जो वानर लोग हमारे लिये अपने अपने पुत्र स्त्री आदि छोड़ यहां आये व मारगये उन प्रसन्नचित्त सब वानरों को हम देखा चाहते हैं ६ यद्यपि वेलोग बड़े बिक्रमी व बड़े शूररहे व मृत्युको कुछभी नहीं

समझते थे इससे नानाप्रकार के यत्नों से युद्ध करते रहे परन्तु युद्धका स्वभावहीहै कि वहां जानेपर किसी न किसीकी मृत्यु होतीहीहै इससे वे मृतकहुये अब उनकी येलोथें पड़ीहैं इनको जिला दीजिये ७ हमारे प्रिय करनेमें चित्त लगायेहुये ये लोग मृत्युको कुछ नहीं गिनतेथे अब वे तुम्हारे प्रसादसे जीआवें बस यही बर आपसे मांगतेहैं ८ क्योंकि इन सब गोपुच्छ ऋक्ष व अन्य वानरों कोभी अङ्गभङ्ग रहित व घाव-हीन व बल पौरुष युक्तहो अपने आगे खड़े हम देखना चाहतेहैं ९ व एक यहभी बरदान होवे किजहां कहीं येवानरलोग रहें वहां अकालमें भी फल पुष्प व बिमल नदियां बनी रहें १० रामचन्द्रजीके बचन सुन इन्द्रजी प्रीतिसहित बचन बोले ११ हे रघूत्तम तुमने जो बर मांगा है यद्यपि अनासाद्य है तथापि आजतक किसी को देने को कह फिर न दियाहो हमारा बचन मिथ्या नहीं हुआ इससे बहुत अच्छा जैसा तुम चाहतेहो वैसाही होगा १२ जो वानर ऋक्ष व गोपुच्छ वानर समरमें राक्षसोंसे मारेगयेहैं व उनके हाथपैर आदिअंग कटगयेहैं वेसब जीकर उठ आवें १३ अब अङ्गभङ्ग रहित व घावके चिह्नों से रहितहो व बल पौरुष आदिसे युक्तहो जैसे सोतेहुये पुरुष निद्रा मिटनेपर उठखड़े होते हैं वैसेही येभी उठ खड़ेहों १४ व अपने अपने सुहृदों वान्धवों व जाति वाले लोगोंसे व अपनेस्त्री पुत्रादिकों से परमानन्दितहो जाय मिलें १५ व जहांजहां येजायँगे वहां अकालमेंभी पुष्प फलयुक्त वृक्षहोंगे व नदियों में निर्म्मल जलभरा रहेगा १६ जब इन्द्रने ऐसा कहा तो प्रथमतो सब वानर घावसहितथे फिर घावरहित होगये फिर मानों सोतेहीसेथे उठ खड़ेहुये १७ व फिर सबके सब बड़े विस्मितहुये कियह क्याहुआ कैसे सब जीउठे १८ रामचन्द्रजी को परिपूर्णार्त्थ सब देवतालोग स्तुतिकर रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीसे बोले १९ हेमहाराज अब वानरोंको बिदा कीजिये अपने अपने घरोंकोजायँ व आपभी यहांसे अयोध्याको जायँ व अपनामें अनुरक्त इन परमतपस्विनी जानकीजी का आश्वासन करें २० व तुम्हारे शोकसे ब्रह्मचर्य्य धारण कियेहुये अपनेभाई भरतको देखो व महात्मा शत्रुघ्नको देखो तथा सब माताओंसे जायमिलो व अपना जाय अभिषेक कराय सब अयोध्यानिवासियों व देश राज्य निवासियों को

हर्षित करो २१ रामचन्द्र व लक्ष्मणजी से ऐसा कह सूर्य्यवत्प्रकाशित बिमानोंपर चढ़ अति प्रसन्नहो इंद्रादि देव अपने अपने स्थानोंको चले गये २२ व श्रीरामचन्द्रजी उन सब देवताओं से अपनी स्तुति कराय लक्ष्मणजीसे बोले कि यह बानरोंकी सेना जहां प्रथम टिकी रही वहां फिर चलकर टिके २३ ॥

कुण्डलिका ॥

वानर सेना मुदित मन महा यशस्विनि होय ।
रामलषण पालित सुभग श्रीशोभित नहिंगोय ॥
श्रीशोभित नहिंगोय सुशोभित भई सकलविधि ।
जिमि हिमांशुयुतनिशा प्रकाशित होतसहित ऋधि ॥
मुदित भये तिन मुदित देखि सबके सुख देना ।
राघव लषण सराहि भलीविधि वानर सेना १ । २४ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेद्वाविंशाधिकशततमस्सर्ग्गः१२२॥

उस रात्रिको सुखपूर्ब्बक वहां बस जब प्रातःकाल रामचन्द्रजी उठे व स्नान संध्या बंदनादि कर बैठे तब बिभीषणजी हाथजोड़ आपकी जय हो ऐसा कह बोले १ कि नानाप्रकार की सुगन्धित बस्तु मिलाय जल स्नान करने के लिये व अंगों में लगानेके लिये अरगजादि अङ्ग-राग सुंदर सुंदर बस्त्र व सबतरह के भूषण चन्दन माला आदि सब दिब्य बिविध प्रकारके लिये २ भूषित करनेमें बड़ी चतुर कमललोचनी येस्त्रियां सब पदार्त्थ लिये आप के सम्मुख खड़ीहैं इससे आपको स्नान कराय फिर भूषित करेंगी ३ बिभीषणके बचनसुन श्रीरामचन्द्रजीबोले कि इस अनुलेपनादिसे व स्नान सामग्रीसे तुम सुग्रीवादि वानर मुख्यों का सत्कार करो ४ हम अभी विशेष स्नानादि नहीं करसक्के क्योंकि अति सुकुमार सत्यवादी महाबाहु भरत धर्म्मात्मा हमारे हेतु तपस्या कर रहेहैं ५ इससे बिना उन धर्म्मात्मा कैकेयी के पुत्र भरतजीके हम स्नान भूषणादि को अंगीकार करना अच्छा नहीं समझते ६ हां इस बातका बिचारांश करना चाहिये जिसमें जल्द अयोध्यापुरी को पहुँच जावें क्योंकि अयोध्या जानेकेलिये यहाँ से बड़ा बड़बड़ मार्ग्ग है ७

यहसुन विभीषणजीबोले कि हे महाराजकुमार यहाँ से बस एकदिनमें आपको अयोध्यापुरीमें पहुँचवादेंगे ८ आपका कल्याणहो हमारा बलवान् भाई रावण कुवेरजीका पुष्पकनाम सूर्य्यवत्प्रकाशित विमान हर लायाथा वह अभीयहींहै ९ यहविमान कुवेरको जीत जबरदस्ती यहाँ आयाथा वह आपही की सवारीकेलिये युक्ति पूर्ब्बक धराहै यह विमान यथेष्टचारीहै १० वहविमान यहाँ विद्यमानही है तो आप उसीपर सवारहो अयोध्याजीको बिनापरिश्रमही चलेजावेंगे ११ अब पहुँचने का तो जानों उपायहोही गया जो हम अनुग्रह करने के योग्यहों व हमारे गुणोंका आपका स्मरण हो व हममें आपका स्नेह हो तो कुछदिन १२ अपने भाई लक्ष्मण व भार्य्या सीतासहित यहाँ रहिये हम सबतरह के उत्तम उत्तम पदार्त्थों से आपकी पूजाकरलें फिर चलेजाइयेगा १३ सो तीनहीजने नहीं अपने सबवानर ऋक्षादि सुहृदोंसहित टिकिये व प्रीति से कीहुई हमारी सत्क्रियाका ग्रहणकीजिये १४ हमस्नेह व बड़ेमान व सौहार्दसे ऐसा कहकर आपको प्रसन्नकरतेहैं क्योंकि सेवकहैं कुछ आपकेऊपर आज्ञानहींकरते १५ विभीषणजीके ऐसे बचनसुन श्रीरामचन्द्र जी सबवानरों व सब राक्षसोंको सुनायबोले १६ हेसौम्य तुमने मंत्रदेने व सौहार्दकरने व सबतरहकी सेवासे हमारी बड़ीपूजाकी अबकुछकरने की आवश्यकता नहीं १७ व तुम्हारा यहबचन हम इसलिये नहींकरसक्ते कि हमारामन शीघ्रही भरतको देखा चाहता है १८ जो भरत हमको लौटार लेजानेके लिये चित्रकूटतक चलेआये व मस्तक झुकाय करभी उन्होंने प्रार्त्थना की परंतु उनका बचन हमने नकिया १९ व कौशल्या सुमित्रा कैकेयीआदि माताओंको व गुरुलोगोंको तथा सब परिवारसहित पुरबासियों के देखने को मन अकुलाता है २० अब हमको कहिये कि शीघ्रजावें हम सबतरहसें पूजितहोचुके हे सखे हम तुमसे क्षमाकराते हैं इस बचनके न करनेसे क्रोध न कीजिये २१ हे राक्षसेश्वर अब विमान हमारेनिकट मँगाइये अब तो कार्य्यकरीचुके यहाँ रहनेसे क्या प्रयोजन है अबतो जानाहीठीकहै २२ रामचन्द्रजी की ऐसी आज्ञापाय राक्षसोंके इन्द्र विभीषणजी ने बड़ी शीघ्रता से पुष्पकनाम विमान वहाँ मँगवाया २३ जिस पुष्पकबिमान के सबअङ्ग तो सुवर्ण से बने थे व वेदी वैदूर्य्य

मणियों से व नानाप्रकार के शालागृह बनेथे व उज्ज्वल होनेके कारण चाँदीकीसी दीप्तिथी २४ व उजलीही ध्वजा पताकाओं से भूषित था सुवर्णका तो वहथाही गृहभी जो उसमें बनेथे वेभी सुवर्णहीके थे २५ व किङ्किणियोंके जाललगेथे मोतीव मणियोंसे जड़े झरोखेबनेथे व ठौरठौर घण्टाबँधीटँगीथी इससे सबओरसे मधुरशब्द होताथा २६ व वह पर्व्वत के शिखर के आकारका था व विश्वकर्म्माका बनाया हुआ था व मोती चाँदीसेबने बहुतसे धवरहर उसमें बिराजमानथे २७ व नीचेकी सबगच स्फटिकमणि से बनी थी व वैदूर्य्यमणिसे भी व बड़े बड़े मोलके बिछौने बिछेहुयेथे ठौर ठौर धनभराहुआ था २८ इसतरहका मनोवेग विमान जबआया तो रामचन्द्रजीसे बताय विभीषणजी वहीं खड़ेहोगये २९ ॥

दोहा ॥

गिरिसम अरु कामगसुभग पुष्पक लषत विमान ।
लषणसहित रघुनाथ अति विस्मितकरत बखान १ । ३० ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेत्रयोविंशाधिक
शततमस्सर्गः ॥ १२३ ॥

पुष्पोंसे भूषित पुष्पक बनाय समीप खड़ाकराय बनाय समीप खड़े हो रामचन्द्र जी से विभीषण जी बोले १ व हाथजोड़ माथनवाय नम्र हो राक्षसेश्वर बड़ी शीघ्रता से बोले कि अब हम कौन काम करें २ यहसुन महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणजीको भी सुनाय व बिचार कर विभीषणजी से स्नेहसहित बचन बोले ३ कि इन वानरों ने इस युद्धमें बड़ेबड़े प्रयत्न व कर्म्मकियेहैं इससे हे विभीषण मणिवस्त्र धनोंसे इनसबोंकी पूजाकरो ४ क्योंकि हे राक्षसेश्वर प्राणों की भयछोड़ संग्रामोंसे न लौटनेवाले इन्हीं वानरोंके संगहोकर तुमने लङ्काजीतीहै ५ तिससे इनवानरोंकी पूजा रत्नधन वस्त्रादि से कीजिये क्योंकि इन्होंने बड़ेबड़े कर्म्म किये हैं जिससे इनके कर्म्म सफलहों ६ ऐसा सम्मान इनका कीजिये जिसमें आप से अभिनन्दितहो ये अत्यानन्दितहों ७ देशकालपाय जब आप दानदेंगे व प्रजादिकोंसे करकी रीतिपर अपना भाग संग्रह करेंगे व सदा दयावान् तथा यशस्वी रहेंगे तो सब वानर

आपकेपास आते जाते रहेंगे इससे आपको समझाय दान कराते हैं ८ राजाहोकर दान न देनेमें बड़ेदोष भोग्मता है क्योंकि रतिरूप गुणोंके उत्पन्न करनेवाले सबदान मानादिकोंसे हीन व अनुचित बचनकहकर ताड़न करनेवाले राजाको उद्विग्नहो सेनाबीच समरमें त्यागदेतीहै ६ रामचन्द्रजी की ऐसी आज्ञापाय विभीषणजी ने रत्नवस्त्रादिदे सब वानरोंकी बड़ीभारी पूजाकी १० तिनसब वानरों को रत्न धनादिकोंसे पूजितदेख श्रीराम जानकीजीको ले ११ अपने धनुर्द्धर भाई लक्ष्मणके साथ उस उत्तम विमानपर श्रीरामचन्द्रजी चढ़े १२ व विमानपर चढ़ कर सबवानरों व सुग्रीव तथा विभीषणजीसे बड़ीबड़ाई करतेहुये श्री-रामचन्द्रजी बोले १३ हे वानरश्रेष्ठो मित्रोंको जैसा काम करनाचाहिये आपलोगोंने सब अच्छीतरह से किया अब हमसबको आज्ञादेते हैं कि अपनेअपने स्थानोंको जातिजावो १४ व हेसुग्रीव जो कार्य्य हितकारी व उत्तम स्वभाववाले मित्रको मित्रकेसाथ करना चाहिये धर्म्मकेभयसे व स्नेहसेभी आपने सबकिया १५ अब अपनी सेनालेकर बहुतशीघ्र किष्किन्धापुरी को जावो व हे विभीषण तुम लङ्कामें हमारे दियेहुये अपने राज्यमें बसो १६ तुमको अब हमारे सम्बन्धके कारण इन्द्रादि देवताभी धर्षित नहींकरसक्ते फिर औरोंकी कौन गिनतीहै व हम अब अपने पिताकी राजधानी अयोध्यापुरी को जातेहैं इससे अब आप सब लोगोंसे बिदाहुआ चाहतेहैं व सम्मति मांगतेहैं १७ रामचन्द्रजी के ऐसे वचन सुन सब वानर श्रेष्ठ व सुग्रीवजी तथा सब राक्षसश्रेष्ठ व विभीषणजी हाथजोड़ जोड़ बोले १८ कि हमलोग भी अयोध्याजीको चलाचाहतेहैं इससेआप हमलोगोंको भी लेतचलें मार्गमें नानाप्रकार के बनों व उपबनों में हर्षित होकर घूमेंगे १९ व वहां आपको राज्य सिंहासनपर विराजमान देख व कौशल्याजी के प्रणामकर बहुत जल्द अपने अपने गृहोंको चलेआवेंगे २० वानरों व विभीषण के ऐसे बचन सुन श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीवादि वानरों व विभीषणजी से बोले २१ कि यहबात हो तो जानोंहम प्रियसेभी प्रियतर पदार्थपावें कि अपने तुम सब सुहृदों के साथ पुरीमेंजाय फिर वहां कुछ दिन तक आपलोगों के संग प्रसन्न होवें २२ हेसुग्रीव सब वानरोंसहित तुम शीघ्र विमानपर

चढ़आवो व विभीषण तुमभी अपनेमन्त्रियोंसहित इसपर चढ़आवो २३ इसकेपीछे सब वानरों सहित सुग्रीवजी व अपने मन्त्रियों सहितविभीषणजी उस दिव्यविमान पर चढ़आये २४ जब सबलोग सवार होचुके तो कुवेरजी का उत्तम विमान रामचन्द्रजी की आज्ञा से ऊपर को चढ़ जाय आकाश में होरहा २५ जब वह हंसयुक्त प्रकाशित विमान आकाश मार्ग्ग होकर चला तो हर्षित व प्रतीति युक्त राम उसपर चढ़े हुये कुवेर के समान शोभितहुये २६ वह विमान दिब्यतो थाही इससे सब वानर व ऋक्ष व सब महाबली राक्षस सुख पूर्व्वक उसमें बैठगये व कुछ भी गचापची न हुई २७॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेचतुर्विंशत्यधिक शततमस्सर्ग्गः ॥ १२४ ॥

रामचन्द्रजीकी आज्ञापाय वह उत्तमविमान हंसयुक्त तो थाही आकाश को उड़गया व आगेको आकाशमार्ग्ग होकर चला १ तब सबओर निहार श्रीरामचन्द्रजी चन्द्रमुखी मैथिलीजी से बोले २ हेवैदेहि कैलास पर्व्वतके शिखरकेआकार त्रिकूटपर्व्वतके शिखरपर बसी व विश्वकर्म्मा की बनाईहुई लङ्कापुरी अच्छीतरह देखो ३ व हेसीते यह युद्धका स्थान देखो जिसमें राक्षसों व वानरोंके मांसका कीचड़होगयाथा व अबतक भी कच्चमांसकी बिसायँध आतीहै ४ हेबिशालाक्षि वरदान पायाहुआ सबको मारनेवाला राक्षसेश्वर तुम्हारेहेतु यहांहमने माराथा तब पड़ासोताथा ५ व इसी स्थानपर कुम्भकर्णको भी मारा व प्रहस्तनाम निशाचरको भी मारा व यहीं पर वानर हनुमान्जी ने धूम्राक्षको मारा ६ व यहीं सुषेणमहात्माने बिद्युन्मालीको मारा व यहीं लक्ष्मणने रावणकेपुत्र मेघनादकोमारा ७ व यहीं अङ्गदने बिकटनाम राक्षसकोमारा व विरूपाक्ष दुःप्रेक्ष महापार्श्व व महोदर ८ व अकम्पन भी मारागया तैसेही औरभी बहुतराक्षस त्रिशिरा अतिकाय देवान्तक व नरान्तकको भी मारा ९ व युद्धोन्मत्त व मत्त येभीदोनों राक्षस श्रेष्ठ यहीं मारेगये कुम्भकर्णके पुत्र बड़ेबली कुम्भ व निकुम्भ मारेगये १० बज्रदंष्ट्र व बज्रादि औरभी बहुतराक्षस मारेगये व महादुर्द्धर्ष मकराक्षको हमने इसस्थानपर मारा

११ अकम्पन शोणिताक्ष यूपाक्ष व प्रजङ्घ ये भी महावीर्य्यवान् राक्षस इसी समरभूमिमें मारेगये १२ व यहीं अतिभयङ्कर बिक्रमी बिद्युज्जिह्व राक्षस मारागया यज्ञशत्रु व सुप्तघ्नभी यहीं निहतहुआ १३ व सूर्य्य शत्रु ब्रह्मशत्रुभी मारेगये व इस स्थानपर रावणकी मन्दोदरीनाम भार्य्या रावणको बहुतरोई व बिलपी उसकेसङ्ग उसकी हज़ारों सौतेंभी थीं वे भी बिलापकरतीथीं १४ हेवरानने यह समुद्रका वहघाटहै जहां सागर उतरकर हम सबलोग पहिलीरात्रिमें बसेथे १५ हेबिशालाक्षि यहीसेतुहै जो तुम्हारे हेतुहमने समुद्रमें बाँधाहै जिसमें नलने बड़ादुष्कर कार्य्यकिया १६ हेवैदेहि अक्षोभ्य वरुणालय शङ्खशुक्ति समाकुल व अपारसागर देखो १७ यह हिरण्यनाभ मैनाकनाम पर्ब्बतहै जो हनुमान्के बिश्राम करनेकेलिये अपनेआप समुद्रसे निकलाथा १८ व यहसेनाके निवासका वह स्थानहै जहां पहिले आय सब सेनापड़ीथी इसेभी देखो १९ इसीस्थानपर हमनेप्रथम महादेवजीका स्थापनकिया था यह वही सागरकाघाटहै जो दिखाईदेताहै सेतुबन्ध तीर्थ इसीका नामहै यह तीनोंलोकोंमें पूज्यहै व होगा २० यह स्थानपरम पवित्र व महापातकोंका नाशकहै इसी स्थानपर ये राक्षसराज बिभीषणजी आय हमसे मिलेथे २१ हेसीते जहांहमने बालिको माराथा यहवही सुग्रीव की बड़ीप्रिय चित्रबिचित्र बनयुक्त किष्किन्धापुरी है जो दिखाई देती है २२ बालिकीपालित किष्किन्धापुरीको देख रामचन्द्रजी से प्रेमसे प्रकाशित सीताजी अतिमधुर बचनबोलीं २३ हेमहाराज ताराआदि परम प्रिय सुग्रीवकी सबस्त्रियोंके सङ्ग व अन्यभी वानरेन्द्रोंकी स्त्रियोंकोसङ्ग ले २४ आपकेसङ्ग हम अयोध्यापुरीको चलाचाहतीहैं २५ जानकीजी के बचनसुन श्रीरामचन्द्र जी तिनसेबोले २६ कि अच्छा ऐसाही किया जायगा जब बनाय किष्किन्धापुरीमें बिमानपहुंचा तो वहां बिमानउतार श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीवजी से बोले २७ हेवानरशार्दूल सब वानरश्रेष्ठोंसे कहो कि वे सब अपनीअपनी स्त्रियोंकोलेआवें व सीताजीके सङ्ग अयोध्याको चलें २८ व तुमभी अपनी सबस्त्रियोंको शीघ्रही लावो जिसमें बिलम्ब न हो जल्दीही चलें २९ अमित तेजस्वी रामचन्द्र जी ने जब सुग्रीवजीसे ऐसाकहा तो वे श्रीमान् वानरश्रेष्ठ सुग्रीवजी सबवानरोंको

सङ्गले ३० अपने जनाने मकानमें जाय ताराकी ओर देखबोले ३१ हे प्रिये श्रीजनकनन्दिनी जी का प्रिय करनेकेलिये श्रीरामचन्द्रजी ने इन सब महात्मावानरोंकी स्त्रियोंसहित तुमको बुलायाहै ३२ इससे सब वानरोंकीस्त्रियोंको सङ्गले तुमभी शीघ्रतैयारहोवो अयोध्याको चलतेहैं वहां महाराज दशरथजी की सबस्त्रियों को तुमलोगों को दिखावेंगे ३३ सुग्रीवजीके बचनसुन सर्व्वाङ्गसुन्दरी तारा वानरोंकीसबस्त्रियोंको अपने पासबुलवाय उन सबोंसेबोली ३४ कि सुग्रीव अपनेअपनेपतियोंकेसाथ तुमलोगोंको अयोध्याजीको चलनेको आज्ञादेतेहैं व हमभी वहां तुम्हीं लोगोंकेसङ्ग चलाचाहतीहैं इससेचलो अयोध्याजीका दर्शनकर हमारा भी प्रियकरो ३५ वहां सब पुरबासियों व देशनिवासियोंके सङ्ग रामचन्द्रजीका अयोध्याजीमें प्रवेशदेखोगी व महाराज दशरथजीकी सब स्त्रियोंकी बिभूतिभी देखोगी ३६ ताराके बचनसुन वानरोंकी सबस्त्रियां अपनाअपना बिधिपूर्व्वक शृङ्गारकर धरेधराये बस्त्र भूषणादि धारण कर ३७ सीताजीके दर्शनकीइच्छासे प्रदक्षिणाकर सबजाय बिमानपर चढ़ीं व सबवानरभी फिरचढ़आये तब बिमान फिरवहांसे आकाशमार्ग्ग होकर चला जब ऋष्यमूक पर्व्वतकेसमीप पहुँचा तो रामचन्द्र जी फिर जानकीजीसबोले ३८ हेसीते सुवर्ण व धातुओंसहित यहबड़ाभारी पर्व्वतोंमेंश्रेष्ठ ऋष्यमूकपर्व्वत बिजुलीसहित मेघकेसमान दिखाईदेता है ३९इसीपर्व्वतपर वानरेन्द्र सुग्रीवका हमारा समागम हुआथा व यहीं वालिके मारनेकी प्रतिज्ञाभी हमनेकीथी व सुग्रीवजी ने तुम्हारा खोज लगानेकी ४० व यहचित्र विचित्र बनयुक्त पम्पानाम नलिनी दिखाई देतीहै जहां कि तुम्हारेबिना हमने बड़ाबिलाप कियाथा ४१ व इसीके किनारे धर्म्मचारिणी शवरीको हमने देखाथा व यहीं चारचार कोशकी लम्बीबाहोंका कवन्धनाम राक्षस हमने माराथा ४२ हे जानकि जनस्थान में यह बड़ाभारी बरगद का वृक्ष दिखाई देताहै इसीस्थान पर तुम्हारे निमित्त ४३ महातेजस्वी पक्षियोंमें श्रेष्ठ व बली जटायुको रावणने मारडाला ४४ हे वरवर्णिनि यह वही हमलोगोंका आश्रमहै व चित्र विचित्र अभीवही पर्णशालाभी दिखाई देतीहै जहांसे कि तुमको जबरदस्ती राक्षसेन्द्र रावण हरलेगया था ४५ व यह प्रसन्न जलवती

कल्याणरूप गोदावरीनदी दिखाईदेतीहै व यह अगस्त्यजीका आश्रम दिखाई देताहै मैथिलि इसेदेखोतो ४६ व हेवैदेहि यह बड़ाभारी शरभङ्गजीका आश्रम दिखाईदेताहै जहां कि सहस्राक्ष इन्द्रजीआयेथे ४७ हे देविसीते ये वही तपस्वी लोग दिखाईदेतेहैं जिनके प्रधान सूर्य्य व अग्निके समान तेजस्वी अत्रिजीहैं ४८ इसीस्थान पर हमने महाकाय विराधको माराथा व हेसीते इसीस्थानपर तुमने अनसूयाजी के दर्शन किये थे ४९ व यह चित्रकूट पर्ब्बत दिखाईदेताहै जहां कि हमको मनानेकेलिये कैकेयी के पुत्र भरतआये थे ५० व यह चित्र विचित्र बन युक्त अतिरमणीय यमुनानदी दिखाई देतीहै व हे मैथिलि यह अति मनोहर भरद्वाजजीका आश्रम दिखाई देताहै ५१ व अति पुण्यरूप जिनकीधारा तीनोंलोकोंमें एकएक है वे गङ्गाजी दिखाईदेतीहैं व यहीं से देखो शृङ्गवेरपुर दिखाईदेताहै जहां हमारा सखा गुह रहताहै ५२ व देखो यहीं से नानाप्रकार के वृक्षों से युक्त व पुष्पितबनों समेत व किनारोंपर यज्ञस्तम्भमयी सरयू नदी दिखाई देती है ५३ व हे सीते वहदेखो हमारे पिताजीकी राजधानी अयोध्या दिखाई देती है बनसे फिर लौटआई हो इससे इसके यहींसे प्रणामकरो ५४ तिसकेपीछे सब वानरलोग व राक्षसराज विभीषणभी शिरउठाय उठाय नानाप्रकारके वृक्षोंसे युक्त अयोध्यापुरीको देखनेलगे ५५ ॥

दोहा ॥

गजबाजी संकुल विशद हर्म्म्य निकर युत नीक ॥
इन्द्रपुरी सम अवधपुर लखो कीश गण ठीक १ । ५६

इत्यार्षेरामायणेलङ्काकाण्डेपंचविंशाधिकशततमस्सर्गः १२५ ॥

इसतरह सबको अयोध्यापुरी उसी बिमानही के ऊपर से दूरसे दिखाय पूरे चौदहबर्षकी पंचमीको श्रीरामचन्द्रजीने प्रयागमें भरद्वाज जीके आश्रमपर पहुंच विमान परसे सहित समाज उतरजाय भरद्वाज जीके प्रणामकिया १ व तपोधन भरद्वाजजीसे बड़ी नम्रताके साथ हाथ जोड़ श्रीरामचन्द्रजीने पूंछा हेभगवन् भला कुछ सुनतेहो अयोध्यामें सुभिक्षतोहै व सबलोग अच्छीतरहहैं व भरत अच्छीतरह पालन पोषण

करतेहैं व माताओग सबजीती हैं २ रामचन्द्रजीके ऐसेबचनसुन महा-
मुनि भरद्वाज जी रघूत्तम श्रीरामचन्द्र जी से कुछ मुसकाय हर्षित हो
बोले ३ कि भरत तुम्हारीही आज्ञाके बशमें हैं जटा रखायेहुये व तुम्हारे
खराऊं आगेधरे उन्हींकी आज्ञा से सबकार्य्य करते हैं व तुम्हारी राह
देखतेहैं औरभी घरमें सबतरहकी कुशलहै ४ हे वीर राघव चीर बसन
धारण किये अपनी स्त्री व लक्ष्मण को संगलिये केवल धर्म्म के कारण
राज्य छोड़ेहुये ५ पिताकी आज्ञापालन करनेके लिये सब धन छोड़ेहुये
व सब भोग बिलासके पदार्थ त्यागेहुये स्वर्ग्गसे पतित देवताके समान
देदीप्यमान ६ कैकेयी के बचन पर आरूढ़ हो बनके कन्दमूल फलादि
भोजन करतेकराते पैदर बनकोजातेहुये तुमको देख हमको बड़ी करुणा
आईथी ७ परन्तु अब सबकार्य्य सिद्धकिये अपनेमित्रगण व बान्धवों के
साथ शत्रुओंको जीत यहांआयेहुये तुमको देख हमको बड़ीभारी प्रसन्नता
हुई ८ व तुम्हारे सब सुख दुःख हम यहीं बैठे बैठे जानते हैं जोकि जन-
स्थानमें रहनेके समय आपने दुःखपाया है वहभी जानते हैं ९ कि तुम
ब्राह्मणोंके अर्थमें तत्परहो सब तपस्वियोंकी रक्षाकरतेथे कि इनिन्दा
रहित तुम्हारी भार्य्या को रावण हरलेगया था १० फिर जिस तरह
मारीच आया तुम उसके पीछे चलेगये जिसतरह जानकी हरीगई फिर
कवन्ध दिखाईदिया फिर तुम पम्पा के समीपगये ११ फिर सुग्रीव की
तुम्हारीमित्रता हुईजिसमें तुमने बालीको मारडाला फिर जानकी ढूंढ़ने
के लिये सब ओर वानर भेजेगये उनमें पवन तनयने बड़ाभारी दुष्कर
कर्म्म किया १२जब जानकीके समाचार मिलगये तो जिसतरह नलने
समुद्रमें सेतुबनाया व फिरजिसतरह हर्षितहो वानरोंने लङ्काजलादी १३
व जिसतरह पुत्र बान्धव मंत्री सेना बाहन सहित बरदान से अहङ्कार
युक्तरावण समरमें मारागया १४ व जिसतरह देवतादिकोंके बैरीरावण
के मारजानेपर सब देवगण आपके निकटआये व आय तुमको बरदान
दिया १५ हेधर्म्मवत्सल येसब समाचार तपोबलसे हमको यहींसे वि-
दित होगयेहैं व वृत्तान्त जाननेवाले हमारेशिष्य प्रतिदिन यहांसे अयो-
ध्याको आयाजाया करतेहैं इससे वहांके समाचार प्रतिदिन सुनाकरते
हैं १६ व हेशस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ श्रीराम हमभी तुमको बरदेतेहैं अबआज

समाज सहित हमारे दिये अर्ग्घ पाद्यादि ग्रहणकरो प्रातःकाल अयोध्या जीको चलेजाना १७ तिन मुनिराज के बचन शिरझुंकाय रघुनाथजीने माथपर धर हाथजोर संहृष्टहो कहा बहुत अच्छा व फिर मुनिसे यह बर-मांगा १८ कि यहांसे अयोध्यातकके मार्ग्गमें जोवृक्षहों सब बिनाफरने के समय परभी फरउठें व सबोंसे मिठाईचुये व सबफल अमृतके समान महँकें व बहुत विविध प्रकारके होजावें १६ जिसमें अयोध्या को जाते हुये मार्ग्ग में यह आपकी बिभूति दिखाईदे मुनिने कहा बहुत अच्छा ऐसाहीहो जैसेही यह बचन मुनिके मुखसे निकलाहै कि २० प्रथम तो वहांके सब वृक्ष कल्पवृक्षके समान होगये जिनमें फलनथे वेफर उठे व जो फूलेनथे उनमें फूल निकल आये २१ जोवृक्ष सूखगये थे उनमें बड़े बड़े पल्लव निकल आये व सब वृक्षोंसे मिठाई बहनेलगी व प्रयाग से अयोध्या तकभी गलीके बारह बारहकोश इधर उधरके वृक्ष इसतरहके होगये २२ तिसके पीछे हर्षितहो सब बानर बहुत प्रकारके दिब्यफल अपने मनमाने तोड़तोड़ खानेलगे मानों उस समय तो वानरोंने स्वर्ग्ग के सुख जीतलिये २३ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेषड्विंशाधिक शततमस्सर्ग्गः ॥ १२६ ॥

यहाँ भरद्वाजके आश्रमपर बैठेहीबैठे श्रीरामचन्द्रजीनेअयोध्याजीका ध्यानकिया वहांके वृत्तान्तकी ओर अच्छीतरह दृष्टिदी क्योंकि भरतजी ने चित्रकूटसे बिदा होनेके समय कहाथा कि जोआप पूरे चौदह बर्षपर न आयें तोहम अग्निमें प्रवेश करजायँगे वही रामचंद्रजीने बिचारा कि किसीको भेजें जिसमें ऐसा नहो कि कुछ एक आध दिनकी देरी हो व भरत अग्निमें पैठ जायँ १ इसबिषयका बिचारकर वानरोंकी ओर दृष्टि की व महातेजस्वी बुद्धिमान् श्रीरामचन्द्र जी हनुमानजी से बोले २ हे वानरसत्तम बड़ी जल्दीकेसाथ तुम अयोध्याजीको जाव वहां शीघ्रहीदेखो कि राजाके मन्दिरमें सबलोग कुशल पूर्बकहैं ३ यहांसे चलोगे तोमार्ग्ग में शृङ्गबेरपुर मिलेगा वहां निषादोंकास्वामी गुहरहताहै उससे हमारी ओर से कुशल पूंछना व हमारी कुशल कहना ४ वह हमको जैसेही कुशल अरोग व ज्वररहित सुनेगा तुरन्त प्रसन्नचित्त होजायगा क्योंकि वह

हमारा सखाहै इससे हमारेही समान है ५ वह निषादों का अधिपति गुह प्रसन्न होकर तुमसे अयोध्याका मार्ग व भरत के समाचार अच्छी तरह बतावेगा ६ व जबभरतके निकट पहुंचना तोहमारी तरफ़से कहना कि रामचन्द्र लक्ष्मण जानकी सहित कुशलहैं व सब तरहके अर्थ उनके सिद्ध होगयेहैं ७ व बलवान् रावणजो जानकीजीको हरलेगयाथा वह भी कहना फिर सुग्रीवका सम्बाद व समरमें बालिकाबध ८ फिर जानकी को ढूढ़ना व जिस तरह तुमने उनका पता लगाया व जिसतरह नदियों केपति समुद्रको तुमनांघे ९ फिर जिसतरह समुद्र भेंटलेकर हमारेआगे उपस्थितहुआ व जिसतरह सेतु बांधागया फिर जिसतरह रावण मारा गया १० फिर जिसतरह इंद्र बरुण ब्रह्मादिकोंने बरदान दिया व जैसे महादेवजी के प्रसाद से पिताजीके हमको दर्शनहुये ११ यह सब कह फिर भरतसे हमको बनायसन्निकट आयेहुये बताना व यहभी कहना कि राक्षसराज व वानरराजभी उनके संगहैं १२ शत्रुगणोंको जीत व उत्तम यशपाय श्रीरामचन्द्र महाबलवान् मित्रगणोंके साथ बनाय निकटआगये यह कहदेना १३ यहसुन भरतका चित्तहर्षित वा दुःखित वा उदासीन जैसाहो सब तुमजानलेना व इसके सिवाय हमारेविषयकीजोजो बातेंहों सब जाने आना १४ निश्चय व मुखकेरङ्गसे दृष्टिसे व बचनोंसे सबप्रकार भरतके मनकीबातें जानलेना १५ क्योंकि इससंसार में सब पदार्त्थयुक्त पिता पितामहादिकों का राज्य पाय किसका मन नहीं बदलजाता १६ कदाचित् इतनेदिनोंसे राज्य भोगते भोगते श्रीमान् भरतजी के राज्य भोगकरनेकी इच्छाहो तो बहुतअच्छा सबपृथ्वी मण्डलका राज्यभले करें हम इसमें बहुत प्रसन्नहैं १७ तिसकीबुद्धि व बिचारका हालजान जब तक हम थोड़ीदूरभी यहाँसे न जानेपावें कि आय सबकहना १८ रामचन्द्रजी की ऐसी आज्ञापाय मनुष्यकारूप धारणकर हनुमान्जी बहुतशीघ्र अयोध्याजीको चले १९ पवनतनय हनुमान्जी वहाँ से ऐसे वेगसेउड़े जैसे सर्प्पों को पकड़नेकेलिये गरुड़ बड़ेवेगसे उड़तेहैं २० वहाँसेउड़ आकाशमेंआय गङ्गा यमुनाका सङ्गमनाँघ २१ शृङ्गबेरपुरमें आय गुहके निकटजाय हर्षितहो शुभबाणी से हनुमान्जीबोले २२ कि तुम्हारेसखा श्रीरामचन्द्रजी सीता व लक्ष्मणसहित अपनी कुशल तुमसे

कहीहैं २३ व पञ्चमीकी रात्रिभर भरद्वाजजीकी आज्ञासे वहाँ निवास कर फिर उनकीआज्ञाले तुम्हारे यहाँआवेंगे इससे यहीं रामचन्द्रजीको देखोगे २४ गुहसे ऐसाकह महातेजस्वी हनुमान्जी फिर वहाँसे उड़ व बड़ेवेगसे आकाशमार्ग होकरचले २५ चलते चलते रामचन्द्रजी का तीर्थवालुकिनी नदीदेखा फिर बरूथी व गोमतीनदी फिर बड़ाभयङ्कर साँखूका बन देखा २६ फिर हज़ारों प्रजाओं को व बहुत अच्छे अच्छे राज्यदेशदेखे इसतरह बहुतदूरतक चलेगये २७ जातेजाते नन्दिग्राम के निकटके फूलेफले वृक्षोंको पुत्र पौत्रसहित अच्छीतरह से भूषितस्त्रि-योंसे सेवित इंद्रके नन्दन बन व कुवेर के चैत्ररथ बनके वृक्षों के समान प्रफुल्लित देखा २८ फिर अयोध्याजीके दक्षिणके फाटक परसे कोशभर और दक्षिणओर उसी नन्दिग्राम अर्थात् भदरसा में बैठे हुये चीर व मृगचर्म्म ओढ़े पहिरे २९ दुःखित चित्त दुर्ब्बलगात्र अपने आश्रम पर अकेले बैठे जटारखाये मलयुक्त देह व भाईके दुःखसे अति कृशाङ्ग ३० फलमूल भोजन करले इंद्रियोंको दमनकिये तपस्वी धर्म्मचारी ऊपरको उठाये जटा बांधे भूर्ज्जपत्र व मृगचर्म्म बिछाये ३१ इंद्रियों को जीते सिद्ध स्वरूप ब्रह्मर्षियों के समान तेजस्वी राजगद्दीपर रामचन्द्रजी के खराऊं धर उनकी आज्ञा से पृथ्वी का अनुशासन करते ३२ व चारों बर्णोंके लोगों की सब भयों से रक्षा करते व पवित्र चित्तवाले अमात्य पुरोहितादिकों को समीप बैठाये ३३ तथा सब सेनापति लोगों व काषाय बस्त्रधारण किये दूतोंको समीप लिये ऐसे भरतजीको हनुमान् जीने अयोध्याजी से कोशभर ऊंचे से देखा भरत के बिना धर्म्मवत्सल सब अयोध्या निवासीभी अच्छेअच्छे भोगविलास नहीं करतेथे क्योंकि जबये राजा होकर चीर मृगचर्म्म धारणकिये फल मूलादि खातेथे तो वेलोग कैसे भोगवाले पदार्थ भोगें ३४ देह धारणकिये दूसरे धर्म्मके समान टिके परम धर्म्मज्ञ तिन भरतजी से हाथजोड़ पवनके पुत्र हनु-मान्जी बोले ३५ चीर जटा धारण किये दण्डकारण्य में बसे हुये ३६ जिन रामचन्द्रजीको तुम शोचतेहो उन्होंने तुमसे अपनी कुशल कही है हेदेव हम तुमको यह प्रियबचन सुनातेहैं इससे अब दारुण शोक छोड़ो इसी मुहूर्त्त में तुम अपने भाई रामचन्द्रजी से मिलोगे ३७ सपरिवार

रावणको समरमें मार मैथिलीजीको पाय सब अर्थ सिद्धकिये श्रीरामचन्द्रजी अपने मित्रवर्गों के साथ आतेहैं ३८ व महातेजस्वी लक्ष्मणजी व परम यशस्विनी बैदेही जीभी आती हैं सीताजी रामचन्द्रजीके साथ इंद्रके साथ इंद्राणी के समान शोभित होतीहैं ३९ हनुमान्जीके ऐसे बचन सुन कैकेयी के पुत्र भरतजी हर्षितहो एकाएकी गिरपड़े व मारे हर्षके मूर्च्छित होगये ४० फिर एक मुहूर्त्त भरके पीछे उठ बनाय सुस्ताय प्रियबचन कहनेवाले हनुमान्जी से बोले ४१ व अशोक से उत्पन्न प्रीति मय आंशुओं के बूंदोंसे श्रीमान् भरतजीने हर्षसे छपटाय छातीमें लगाय हनुमान्जीको सींच दिया ४२ भला तुम देवताहो वा मनुष्य जो हमारे ऊपर दयाकर यहां आयेहो इस प्रियबचन कहने के बदलेमें जो कहो वही दें ४३ यहसुन जब हनुमान्जीने कुछ न मांगा केवल चुप खड़ेरहे तोभरतजी अपनी ओर से कहनेलगे कि एकलक्षतो धेनु व सौग्राम व कुण्डलादि भूषण धारणकिये सुशीलतादि गुण युक्त सोरह कन्या भार्य्या बनाने के लिये देतेहैं ४४ इन सब कन्याओं का सुवर्ण कासा तो रङ्गहोगा व उनकी नासिका व जांघें बहुत सुन्दर व चन्द्रसमान मुख होगा व सबभूषण धारणकिये होंगी कुल व जातिमें भी बहुत ऊंचीहोंगी ४५ हनुमान्जीके मुखसे श्रीरामचन्द्रजी का अद्भुत आगमन सुन भरतजी रामचन्द्रजीके देखने की इच्छासे हर्षितहुये व हर्षसे फिर पूंछनेलगे ४६ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलङ्काकाण्डेसप्तविंशाधिक
शततमस्सर्ग्गः ॥ १२७ ॥

भरतजी कहनेलगे किदेखो हमारेभाईको बनकोगये बहुत्वर्ष बीतगये परन्तु अब इससमय फिर अपनेनाथका कीर्त्तन सुनतेहैं १ यह जो लोकमें कहावत चलीआतीहै कि जो पुरुषजीतारहै तो सौबर्षके पीछे भी उसको आनन्दप्राप्तहोताहै वह कहावत आजहमको कल्याणदायिनी जानपड़तीहै २ हेपवनतनय भला श्रीरामचन्द्र व वानरोंका सङ्ग कहां व क्योंहुआ सो तुम हमसे बतावो ३ वृषीपर बैठाय भरतजीने जब हनुमान्जीसे ऐसापूंछा तो वे रामचन्द्रजी के बनकेसब चरित क्रमसेकहनलगे ४ कि जिसतरह तुम्हारी माताको बरदानदे राजाने रामचन्द्रजी

को बनबास दिया व जिसतरह पुत्रके शोकसे राजा दशरथजी मृतकहुये ५ व जिसतरह तुमको तुम्हारे ननिऔरेसे दूत बुलालाये व जिसतरह अयोध्यामें आय तुमने राज्यकी इच्छा न की ६ व जिसतरह सज्जनोंके धर्म्ममें टिककर चित्रकूट पर्ब्बतपर जाय तुमने अपने भाईको राज्यदेने के लिये लौटारा ७ व जिसतरह महाराज दशरथजीके बचनके पालन करनेकेलिये श्रीरामचन्द्रजीने राज्य न ग्रहणकिया व जिसतरह अपने बड़ेभाईकी पादुका लेकर तुम फिर लौटआये ८ यह सबतो जानों आप को बिदितहीहै तुम्हारे चलआनेके पीछे जो वृत्तान्तहुये वे हमसे सुनिये ९ जब तुम चलेआये तो उस बनके पशु पक्षी बहुत ब्याकुलहुये इससे जानपड़ा कि यह बन परिक्षीणसा होगया १० इससे श्रीरामचन्द्रजी हाथी ब्याग्घ्र सिंह मृगों से भरेहुये अतिघोर दण्डकारण्यको चलेगये ११ उस गहनबनमें ये तीनोंजन चलेजातेथे कि इनके आगे बड़ा नाद करताहुआ महाबलवान् बिराधनाम राक्षस दिखाईदिया १२ तबहाथी के समान गर्ज्जतेहुये ऊपरको बाहु उठाये नीचेको मुख कियेहुये उस राक्षसको मार पृथ्वीके भीतर रामचन्द्रजीने गाड़दिया १३ इसतरहका दुष्करकर्म्म कर राम लक्ष्मण दोनोंभाई सन्ध्या समय शरभङ्गमुनिके आश्रमपर गये १४ इनके पहुंचनेके पीछे शरभङ्गजी तो स्वर्ग्गको चले गये तब सब मुनिलोगोंके प्रणामकर रामचन्द्रजी जनस्थानको चलेगये १५ वहां रहतेरहते रामचंद्रजीने वहींके रहनेवाले चौदह हज़ार राक्षसों को अकेलेही मारडाला १६ केवल अकेले रामचन्द्रजीको पाय डेढ़मुहूर्त्त में उतने राक्षस नष्टहोगये १७ ये राक्षसलोग महाबली महाबीर्य्यवाले थे व तपस्यामें बड़ा बिघ्न करतेथे व सदा दण्डकारण्यमें इसीलिये रहते थे इससे रामचन्द्रजीने मारडाला १८ इन सब राक्षसोंको मार फिर समरमें खरनाम राक्षसको मारा खरके पहिलेही दूषणको माराथा फिर तिसकेपीछे त्रिशिराको मारा १९ तिसकेपीछे शूर्प्पनखानाम राक्षसी रामचन्द्रजीके निकटआई व रामचन्द्रजी को अपना पति बनाना चाहा इससे रामचन्द्रजीकी आज्ञासे लक्ष्मणजी बड़ी जल्दीकेसाथ उठे २० व खड्गले उसकी नाक व कान काटडाले तब इनकी मारीहुई वह राक्षसी रावणके पास गई २१ रावणने अपने अनुचर मारीच नाम

राक्षसकोभेजा उसने यहांआय अपनास्वर्णकामृगबन बैदेहीजीको ललचवाया २२ उस मृगरूप राक्षसको देख जानकीजीने रामचन्द्रजी से कहा कि यह मृग हमारे खेलनेके लिये होगा इससे इसे पकड़ लाइये क्योंकि यह बड़ा सुन्दर व मनोहर है २३ यहसुन रामचन्द्रजी धन्वा हाथमें लियेहुये उस मृगके पीछे दौड़े व धावते हुये उस कपट मृगको बाण से मारडाला २४ हे भरतजी उसी बीचमें जब रामचन्द्रजी मृग के पीछे गये व उसका शब्द सुन जानकीजी के भेजने से लक्ष्मणजी भी चलेगये तब उस आश्रमपर रावण आया २५ व झट सीताजी को लेकर भाग खड़ा हुआ जब लेचला तो जानकीजी की रक्षा करने की इच्छासे जटायुनाम गृध्रराज प्राप्तहुआ पर उसको रावणने मारडाला व सीताजीको लेकर झटपट वह राक्षस चलागया २६ परंतु बड़े बड़े अद्भुत वानर ऋष्यमूक पर्ब्बतपर बैठेथे २७ रावणको जानकीजीको लियेजातेहुये उनपर्ब्बताकार विस्मितचित्त वानरोंने देखा २८ परन्तु सीताजीकोलिये मनोबेग उस पुष्पकनाम विमानपर चढ़ाहुआ रावण २९ जाय लङ्कापुरीमें पहुँचा व बड़ेसुंदर सुवर्णसे बनेहुये स्थानमें मैथिलीजीको बैठाय ३० नानाप्रकारकी बातें कह कह रावण सीताजीको समझानेलगा परन्तु उसकाकहना व उसको तृणवत्मान ३१ इससे कुछभी न खयालकर बैदेहीजी अशोकबनिकामें टिकाईगईं ३२ यहाँ रामचन्द्रजी मृगकोमार अपने आश्रमपरआये वहाँ जानकीजीको नदेख ब्याकुलहुये फिर आगेचल रामचन्द्रजी जटायुको निहतपड़े देख बहुत ब्यथितहुये ३३ व पिताकेसमान प्रियतर उस गृध्रको बैदेही की रक्षा करनेके निमित्त माराहुआ देख जानकीजीको ढूंढ़तेहुये रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजी ३४ गोदावरीनदीके समीपपहुँचे वहाँ बहुतपुष्पित वृक्षदेखतेहुये चलेजातेथे कि कवन्धनाम राक्षसमिला उसे दोनोंभाइयों ने मार डाला ३५ परंतु कवन्धहीकेकहनेसे सत्यपराक्रमी श्रीरामचन्द्रजी ऋष्यमूक पर्ब्बतपर आये वहाँ सुग्रीवसे मिलापहुआ ३६ ऐसी कुछबार्त्ता व समागमहुआ कि मारेप्रीतिके बड़ा सौहार्द बढ़ा उसके प्रथमही सुग्रीवके बड़ेभाई बालिने सुग्रीवको घरसे व राज्यसे निकालदियाथा ३७ यहां रामचन्द्र व सुग्रीवकी ऐसीबातेंहुईं कि दोनोंजनोंका प्रेम परस्पर बहुत

बढ़गया रामचन्द्रजीने अपने बाहुकेवीर्य्यसे सुग्रीवको राज्यदिलादिया ३८ उसमें ऐसाहुआ कि समरमें महाबली बालीको रामचन्द्रजीनेमार सबवानरोंसहित सुग्रीवको राज्यपर स्थापितकरादिया ३९ इसके बदलेमें सुग्रीवजीने महाराजपुत्री जानकीजीकेढुंढ़ादेनेकी प्रतिज्ञाकी इससे महात्मा वानरेन्द्र सुग्रीवजीकी आज्ञासे ४० दशकिड़ोर वानर सबदिशोंको भेजेगये ४१ उन्हीं वानरोंमें हमभी थे हम सबलोग चलेजातेथे कि विन्ध्यपर्ब्बतपर भूलजानेके कारण बड़ाशोकहुआ वह शोककरते करते बहुतसमय लगगया ४२ परन्तु कुछदूरपर गृध्रराजका भाई सम्पाति हम सबलोगोंको मिलगया उसने बताया कि लङ्कापुरीमें सीता रावणके मन्दिरमें हैं ४३ इस बातको सुन लङ्काकोकोई न जासका तो हम दुःखयुक्त अपनी जातिवालोंका दुःख मिटातेहुये अपने वीर्य्यको प्राप्तहो सौ योजनके समुद्रके उसपारजाहोरहे ४४ व वहाँलङ्कामेंजाय अशोकबनिकामें प्राप्त मलिनएक रेशमीवस्त्रधारणकिये आनन्दरहित पर रामचन्द्रजीमें दृढ़भक्तिकिये सीताजीकोदेखा ४५ व उनके निकट जाय उन निन्दारहित जानकीजीसे सब उनके समाचार पूंछा पीछेसे हमने रामनामसे चिह्नित अँगूठी निशानीके लियेदी ४६ व सीताजीसे यहांके चिह्नके लिये चूड़ामणिलाय फिर समुद्रनाँघ किष्किंधापुरीको आये ४७ व सब समाचार रामचन्द्रजीसे कहा मैथिलीजीके समाचारसुन रामचन्द्रजीने अपनेजीवनकी प्रशंसाकी जैसे मृतकमनुष्यपड़ाहो तो अमृतपड़नेसे चैतन्य होजाताहै ४८ व उद्योगकरनेमें उद्यतहो श्रीरामचन्द्रजीने लङ्काका विध्वंसकरनाचाहा व प्रलयसमयमें सबलोगोंके नाशकरनेकी इच्छाकिये हुये अग्निकेसमान रोषकिया ४९ व समुद्रकेतीरपरआय समुद्रमें नलसे पुल्ह बँधवाया उसी पुल्हपरकी वानरोंकी बड़ीधूमधामीसेना उतरी ५० वहांजाय प्रहस्तको तो नीलने मारा व कुम्भकर्णको रामचन्द्रजी ने व लक्ष्मणने मेघनादको मारा व रामचन्द्रजी ने आपखुद रावणको मारा ५१ इनसबों के मारजाने पर इन्द्र वरुण यमराज महादेव ब्रह्मा व दशरथजी वहांआये ५२ उन सबलोगोंने आय बरदान दिया व ऋषियों ने भी बरदानदिया व रामचन्द्रजीने ग्रहणकिया ५३ इसतरह बरदान पाय पुष्पक विमान पर चढ़ वानरों व राक्षसों सहित श्रीरामचन्द्र

किष्किन्धापुरी में आये ५४ व फिर वहांसे चल गङ्गानदी के किनारे भरद्वाजजी के आश्रमपर बसेहैं अब प्रातःकाल पुष्य नक्षत्रहोगा तो रामचन्द्रजी को देखोगे ५५ ॥

हरिगीतिका ॥

सुनि पवनसुतकी मधुरवाणी मुदित भरत भुआलहू ।
करजोरि विनय समेत बोले अधर खोले हालहू ॥
कह भयहु पूर्ण हमार मनरथ बहुतदिनसों जो रह्यो ।
हमचहत थे सबभांति सोई पवननन्दन ने कह्यो १ । ५६ ॥

इत्यार्षेरामायणेवाल्मीकीयेलंकाकाण्डेऽष्टाविंशाधिक
शततमस्सर्ग्गः ॥ १२८ ॥

परमानन्दयुक्त यह समाचार सुन शत्रुओं के नाशक व सत्यविक्रमी भरतजीने शत्रुघ्नजीको आज्ञादी १ कि इसीसमय आज्ञाकरो कि नगर में जितने देवमन्दिरहैं सबोंमें गन्धमालादिकोंसे जाय पवित्रहो मनुष्य पूजाकरें २ व सब स्तुति पुराण जाननेवाले सूतलोग व बंशावली कहनेवाले भाटलोग व सब बजानेवाले लोग तथा नाचने गानेवाली वेश्यालोग ३ व सब महाराजाधिराजकी कौशल्याआदि स्त्रियां व सब ब्राह्मणादि मान्यलोग सेना व सेनाकी स्त्रियोंके समूह व सब सामान्य ब्राह्मणलोग भी क्षत्रियभी जो कोई यहां बसे हैं व अन्य सब जातियों के लोग तथा सब दूकानदारलोग ४ ये सब रामचन्द्रजीका चन्द्रबदन देखनेकेलिये अगुआनी चलनेको तैयारहों व चलें भरतजीकी आज्ञासुन शत्रुओंके हन्ता शत्रुघ्न ने ५ लाखों मजदूरों को आज्ञादी कि तुम इतने लोग अमुकस्थान से अमुकस्थान तक व तुमलोग वहांसे वहांतक जो कहीं खाली वा ऊँचाहो उसको बराबर करदो ६ व अयोध्या से नन्दि-ग्रामतक जितने मार्ग्गमें टूटेफूटे मकानहों उनको गिरादो परन्तु जो देवमन्दिरहों उनको वैसेही रहनेदो केवल चूनाआदिसे रँगदो व फूटी टूटी मरम्मत भी झटपट करदो वहांसे यहां तककी सब पृथ्वीपर सुग-न्धित व शीतजलसे छिरकाव करदो ७ व और लोग जहां जहां छिर-काव होचुके तो अक्षतलावा पुष्पादि बिथरावें व मार्ग्गके सब मन्दिरों पर बड़ी बड़ी ऊँचीपताका बाँधी जावें इनसब बातोंसे काशी मथुरादि

सब पुरोंसेश्रेष्ठ अयोध्यापुर शोभित किया जावे ८ सब मन्दिर शोभित कियेजावें चाहे मार्ग्गकेहों वा अलगके व सूर्य्यके उदय होतेहोते सब तैयारी होजावे कहीं किसीबातमें कमी न रहे व राजमार्ग्ग तो माला मोती पुष्प सुवर्णआदिसे भूषितकरो ९ व ये मोती सुवर्णके गुच्छे आदि पदार्त्थोंसे मार्ग्ग ऐसेभरदो कि कहीं बांकी न रहे शत्रुघ्नजीकी ऐसी आज्ञापाय हर्षितहो १० सब वैसाही करदिया गया तब धृष्टि जयन्त विजय सिद्धार्त्थ अर्त्थसाधक अशोक मन्त्रपाल व सुमन्त्रभी येसब मन्त्री लोग चले ११ येलोग व औरभी प्रधानलोग मतवाले हजारों हाथियों पर सवारहुये उन हाथियोंपर भी ध्वजापताका खड़ी कीगईथी व सब प्रकारसे वे विभूषित कियेगये थे व बहुत और लोग सुनहुले सब रस्सा झूलआदि से भूषित हथिनियों पर व सामान्य हाथियोंपरभी चढ़े १२ बहुतलोग घोड़ोंपर सवार होकर चले व बहुत महारथ रथों पर चढ़चढ़ व बहुत शक्ति ऋष्टिपाश हाथ में लिये बहुत ध्वजा पताकादि झण्डियां हाथोंमेंलिये १३ व बहुतहजारों घोड़ोंपर जैसे जैसे घोड़ोंका मेलथा छोटे एकसंग बड़े एकसंग चढ़चढ़ चले उनवीरों के संग हजारों पैदरलोग भी नानाप्रकारके शस्त्रास्त्र धारणकिये चले १४ इनसबों के पीछे पालकी रथआदि सवारियोंपर महाराजाधिराज दशरथजी की सब रानियांचढ़ीं व चलीं उनसबोंमें सबसे आगे कौशल्याजीकी पालकी फिर सुमित्राजी की थी और सब इनके पीछे पीछे चली जातीथीं १५ व इनकेपीछे मुख्य मुख्य ब्राह्मणों को संगलिये व सब मुख्य मुख्य मन्त्रियों व महाजनों को भी सङ्गकिये व माला लड्डूआदि हाथोंमेंलिये बनियां लोगोंको सङ्ग लिये भरतजी १६ शङ्ख नगारे तुरुहीआदि बाजेबजवाते बन्दीजनोंसे बंशावली कहवाते व बड़ेभाई रामचन्द्रजी की पादुका शिरपरधरे धर्म्म जाननेमें बड़ेचतुर १७ व मालाआदिसे बिभूषित श्वेतछत्र हाथमेंलिये व शुक्लबालोंके सुवर्णकी डांड़ीलगे राजाओंकेयोग्य दोचमर हाथमेंलिये १८ मारे उपवासोंके कृशगात्र इससे औरभी दुःखितचित्त चीरमृगचर्म्म धारणकिये भाईका आगमनसुन प्रथम हर्षितहो १९ महात्मा भरतजी मन्त्रियोंकेसङ्ग ऐसेहीपैदर रामचन्द्रजी के लेनेकोचले उससमय घोड़ों की टापोंकेशब्दसे व रथोंकी घड़घड़ाहटसे २० व शङ्खों नगारोंके बाजने

के शब्दसे जानोंपृथ्वी डगमगातीथी व इसीसमय हाथियोंकेशब्द व शङ्ख नगारोंके शब्दसहित २१ सब अयोध्यानिवासी व राजसमाज नन्दि-ग्राममें पहुंचगई इससमाजको आईहुईदेख भरतजी हनुमान्जी से बोले २२ भलाआपने वानरोंके चञ्चल स्वभावकेकारण तो नहींकहदिया कि रामचन्द्रजी आतेहैं क्योंकि अबतक अपने बड़ेभाई श्रीरामचन्द्रजी को हमनहीं देखते २३ व न यथेच्छरूपधारी सबउनके सङ्गके वानरलोग ही दिखाईदेतेहैं यहसुन हनुमान्जी भरतजीको तबतक रामचन्द्रजी के न आनेकाकारण जनातेहुये बोले २४ कि नहीं हमने चञ्चलतासे नहीं कहदिया सबसमाज भरद्वाजजीके आश्रमपर आगईथी वहां भरद्वाजजी के प्रसादसे सबतरहके फलेफूले व मधुचूतेहुये वृक्षोंकोपाय २५ सब वानरलोग खानेपीने लगेथे व भरद्वाजजी को इन्द्रने ऐसा बरदान दे रक्खाहै कि तुमजब चाहोगे सब भोजनादि की सामग्री तुरन्त तैयार करालोगे २६ इसीसे तो जबआप वहां गयेथे तो ससैन्य आपका निम-न्त्रण उन्होंनेकियाथा सो तो आपजानतेहीहैं परन्तु अबवहांसे चलचुके होंगे क्योंकिदेखो हर्षितहुये वानरोंका बड़ाभारी शब्दसुनाई देताहै २७ हम जानतेहैं कि वानरोंकी सेना इससमय गोमतीनदीको उतरतीहै व देखिये अब सालबनकी ओर धूलिउड़ती दिखाईदेतीहै २८ इससे हम जानतेहैं कि रम्यसाल बनको वानरलोग हिलातेझुलातेहैं व फलादि खातेहैं नहीं देखिये तो चन्द्रवत्प्रकाशित वह बिमानतो दिखाईदेनेलगा २९ यह पुष्पकबिमान ब्रह्माजीने अपनेमनसे बनायाथा इसे महात्मा रामचन्द्रजीने परिवार व भाईबन्धुसहित रावणको मारपायाहै ३० यह रामचन्द्रजी का बाहन प्रातःकालके सूर्य्यकेसमान प्रकाशित कुबेरजीके प्रसादसे ऐसा मनोबेगहै ३१ दोनोंभाई रामचन्द्र व लक्ष्मण व जानकी जी व महातेजस्वी सुग्रीवजी व राक्षसराज विभीषणजी ये सब इसी बिमानपरहैं ३२ हनुमान्जीके ऐसाकहनेके अनन्तर स्त्री बालयुवावृद्धा-दिकोंका मारेहर्षसे एकहीसङ्ग कहाहुआ यहशब्द कि भाई रामचन्द्र यही हैं आकाशतक चलागया ३३ व तुरन्त रथ घोड़े हाथी आदि सवारियों परसे उतरउतर सबपुरुष बिमानपर चढ़ेहुये रामचन्द्रजी को आकाशमें उदित चन्द्रमाकेसमान देखनेलगे ३४व हाथजोड़हर्षितचित्तहो श्रीराम-

चन्द्रजीके सम्मुखखड़ेहो भरतजीने रामचन्द्रजीके योग्य अर्घ्यपाद्याचमनीयादि से श्रीराघवजी की पूजाकी ३५ व मनसे ब्रह्माजी के बनाये हुये उस बिमानपर चढ़े बड़ीबिशाल छातीवाले भरतजीके बड़े भाई श्री रामचन्द्रजी मानोंदूसरे इन्द्रहीकेसमानबिराजमानहुये ३६ तिसके अनन्तर बिमानपरचढ़ अपनेभाई रामचन्द्रजीके भरतजी ने प्रणामकिया जैसेलोग सुमेरु पर्ब्बतपरटिके सूर्य्यके प्रणाम करतेहैं ३७ तब रामचन्द्र जी की आज्ञासे हंसयुक्त महावेग अतिउत्तम वह बिमान ऊपरसे पृथ्वी परउतरा ३८ व उसपरझट श्रीरामचन्द्रजी ने भरतजीकोचढ़ालिया बिमानपर चढ़ सत्यबिक्रम भरतजीने रामचन्द्रजीके फिरप्रणामकिया ३९ बहुतदिनोंके पीछे भरतजीको देख रामचन्द्रजीने उठाय अपनी गोदमें बैठाय अत्यानन्दितहो अच्छीतरह छपटालिया ४० तिसकेपीछे लक्ष्मण जीने भरतके प्रणामकिया व भरतजीने जानकीजीके प्रणामकर फिर अपना नामलिया ४१ फिर भरतजीने सुग्रीव जाम्बवान् अङ्गद मैन्द द्विबिद नील व ऋषभको छपटालिया ४२ फिर सुषेण नल नील गवाक्ष गन्धमादन शरभ पनस इनसबसे भरतजी मिले ४३ वे कामरूपी वानर लोग मनुष्यका रूप धारणकिये हर्षितहो भरतजीसे कुशल पूंछने लगे ४४ तब महाराजकुमार धर्म्मधारियोंमें श्रेष्ठ भरतजी वानरों के राजा सुग्रीवजीको लपटाय भेंट फिर उनसे बोले ४५ हे सुग्रीव तुम हम चारों भाइयोंके पँचये भाईहो क्योंकि सौहार्दहीसे मित्र होताहै व अपकार करना शत्रुका लक्षणहै ४६ फिर भरतजी बिभीषणजीसे सान्त्व पूर्व्वक बचनबोले भाई बिभीषण बड़ेभाग्यकी बातहै कि तुम्हारी सहायतासे यह दुष्करकर्म्म कियागया ४७ फिर शत्रुघ्नजीने श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मणजीके प्रणामकर जानकीजीके चरणोंमें बड़ी बिनयकेसाथ प्रणाम किया ४८ फिर श्रीरामचन्द्रजी अपनी माता कौशल्याजीको बनाय बिवर्ण व मारेशोकके कर्शितदेख हर्ष बढ़ातेहुये माताके चरणोंपर जायगिर पड़े व दोनोंहाथोंसे दोनों चरण पकड़े ४९ तिसकेपीछे सुमित्रा व कैकेयी जीके प्रणामकर फिर और सब जो तीनसै तिरसठ माताथीं सबके प्रणाम किया फिर जाय बसिष्ठजीके निकट पहुँचे व प्रणाम किया ५० फिर सब अयोध्याबासियोंने हाथजोड़ रामचन्द्रजीसे कहा कि कौशल्या

जीके आनन्द बढ़ानेवाले श्रीराघव महाबाहु आप अच्छीतरहसे तो आये ५१ व तिन पुरवालियोंकी सहस्त्रों अञ्जलियां श्रीरामचन्द्रजीने विकसित कमलके पुष्पोंके समान देखीं ५२ व फिर भरतजीने श्रीरामचन्द्र जीकी पादुका अपने हाथोंसे रामचन्द्रजीके चरणारबिन्दोंमें पहिरादीं ५३ व हाथ जोड़ भरतजी रामचन्द्रजीसे बोले कि आपका राज्य जो हमारे पास धरोहरसा धराथा वह हमने अब आपके समर्पण किया आप ग्रहणकीजिये ५४ जो कि बनसे फिरआयेहुये आपको हम अयोध्या जीमें राजाहुये देखतेहैं इससे आज हमाराजन्म कृतार्त्थहुआ व हमारा मनोरथ पूर्णहुआ ५५ आपके तेजसे खज़ाना तोसेखाना गृह सेनाआदि सब जो हमने पूर्व्वसमयसे दशगुणा अधिककियाहै वहसब आप देखलें ५६ ऐसा कहतेहुये भ्रातृवत्सल भरतजीको देख सब वानरलोग व बिभीषणजी आनन्दके आंशु छोड़नेलगे ५७ तिसकेपीछे भरतजीको मारेहर्षके फिर गोदमें बैठाय श्रीरामचन्द्रजी उसी बिमान पर चढ़े चढ़े सेनासहित भरतजीके आश्रमकोगये ५८ व भरतजीके आश्रमपर पहुँच सेनासहित श्रीरामचंद्रजी बिमानसे उतर पृथ्वीपर बैठगये ५९ व उस पुष्पकबिमानसे बोले कि अब तुम जाय फिर अपने स्वामी कुबेरजीको अपने ऊपर चढ़ावो व घुमावो बस हमारी आज्ञाहै अब निस्सन्देहचले जावो ६० रामचन्द्रजीकी ऐसी आज्ञा पाय वह उत्तम बिमान कुबेर के स्थानकी ओर उत्तरदिशाको उड़ा ६१ इसतरह दिव्य पुष्पकबिमान जिसे पूर्व्वकालमें रावण कुबेरको जीतकर हरलायाथा वह रामचन्द्रजी की आज्ञासे फिर जाय कुबेरजीके यहां पहुँचा ६२ व यहां ॥

हरिगीतिका ॥

निज सखा गुरु सुबसिष्ठजीके चरणकमल पलोटिकै ।
जिमि इन्द्र सुरगुरुचरण मींजतहैं भलीबिधि जोटिकै ॥
रघुनाथ गुरुसन सुभग आसन पर बिराजे जायकै ।
अति बीर्य्यवान महान राघव सकल सेन टिकायकै १ । ६३ ॥

इत्यार्षेरामायणेबाल्मीकीयेलङ्काकांडेएकोनत्रिंशाधिकशततमस्सर्गः १२९

इसकेपीछे कैकेयीके आनन्द बढ़ानेवाले भरतजी हाथजोड़ शिरपर धर अपने ज्येष्ठभाई श्रीरामचन्द्रजीसे बोले १ आपने हमारी माताके

बचनमान उनका सत्कार किया इससे उन्होंने राज्य हमकोदिया वह राज्य अब फिर हम आपको देतेहैं जैसे आप हमको पूर्व्व समय में आप न अङ्गीकार करदियाथा २ क्योंकि जैसे धुरन्धर व बलवान् बैलका धरदिया हुआ जुआं छोटा बछड़ा मारेभारके नहीं उठासक्ता उसीतरह आपके उठानेकेयोग्य यह राज्यभार अब हम नहीं उठासक्ते ३ जैसेबड़े भारी जलके प्रवाहसे टूटगयाहुआ सेतु एकाएकी फिर जलबेगकोनहीं सँभारसक्ता इसीतरह अबहम चोरादिकोंके उपद्रवसेयुक्त इससेआपके सिवाय और किसीके न थांभनेकेयोग्य इसराज्यको हमनहींसँभारसक्ते ४ जैसे घोड़ेकीचाल गर्द्दभ नहींचलसक्ता व हंसकीचाल कौआ नहींचल सक्ता हे वीर इसीतरह हम आपकीचाल नहींचलसक्ते ५ हे महाबाहु राघव जैसे किसीने अपनेघरकी फुलवाड़ीमें अच्छावृक्ष लगाया इससे वह बड़ाभारी हुआ इसीसे उसकी शाखाभी बहुतबढ़ीं व शाखाओं में पल्लवभी बहुतहुये ६ फिर उसमें फूल बहुतसेलगे व फल उसने न दिखाये कि बीचहीमें टूटगया वा उखड़पड़ा तो जिसकेलिये जिसने लगा- याथा उनदोनोंका उसवृक्षसे कुछभी न प्रयोजन सिद्धहुआ ७ इसीतरह अपने सेवक हमलोगोंके राजाहोकर आपने हमलोगोंका पालन न किया तो यहउपमा आपमें सङ्घटितहोगी वहअर्थ आप अच्छीतरह जानतेहैं ८ इससे अब ऐसाहम चाहतेहैं कि दीप्तितेजस्वी मध्याह्नके सूर्य्यके समानतपतेहुये आपको आज सबराज्याभिषेक करायेहुये राज्यगद्दीपर बैठेहुये सब संसारदेखे ९ इससे राजाहोकर क्षुद्रघण्टिका नूपुरआदिके शब्दोंसे व मधुरगीतोंसे तो शयनकिया कीजिये व नगारोंके समूह बा- जनेसे जागाकीजिये क्योंकि महाराजाधिराज इसीतरह सोतेजागतेहैं १० जहाँ तक ज्योतिश्चक्र भ्रमताहै व जितनी सबपृथ्वीहै तितने सब लोककी स्वामित्वको आपप्राप्तहों ११ भरतजीके बचनसुन शत्रुओं के पुर नगर देशादि जीतनेवाले श्रीरामचन्द्रजी बहुत अच्छा तुम्हाराही कहा कियाजायगा यह कह अतिसुंदर आसनपरजाय बिराजमानहुये १२ तिसकेपीछे शत्रुघ्नजीके कहनेसे शीघ्रकार्य्यकरनेवाले व सुखदायक हाथोंवाले बड़े निपुण बारझारनेवाले व स्नानादि करानेवाले लोगआय रामचन्द्रजीके चारोंओर खड़ेहोगये १३ परंतु रामचन्द्रजीकी आज्ञासे

सबसे प्रथम भरतजीको उनलोगों ने अच्छीतरह स्नानकराया फिर लक्ष्मणजीको फिर वानरेन्द्रसुग्रीवजीको फिर राक्षसेन्द्र विभीषणजीको १४ तिसकेपीछे जटाकी अरझनछोड़ाय स्नानकराय चित्रविचित्रमाला व चन्दनाद्यनु लेपनलगाय बड़ेमोलकेबस्त्र धारणकराय श्रीरामचन्द्रजी को शोभासे प्रकाशितकराय सिंहासनपर परिचारकोंने स्थापित किया १५ फिर भरतजीने रामचन्द्रजी व लक्ष्मणजीके सबसत्कारादि कर्म्म अपने हाथोंसेभी किया व करवाया १६ व सीताजी के सब प्रतिकर्म्म महाराज दशरथजीकी सबस्त्रियोंने मारेस्नेहके अपनेही हाथोंसेकिया १७ व तिसकेपीछे पुत्रबत्सला कौशल्याजी ने अपने हाथोंसे सबवानरों की स्त्रियोंको भूषणादि पहिराय भूषितकिया १८ तब शत्रुघ्नजीके कहनेसे सुमन्त्रनाम सारथि सर्बाङ्गसुंदररथ सुंदरघोड़े जोतकरलाया १९ उसअग्नि व सूर्य्यके समान निर्म्मल दिब्यरथको आया देख शत्रुओंके पुरकेनाशक श्रीरामचन्द्रजी सवारहुये २० सुग्रीव व हनुमान् ये दोनों वानर इन्द्रके समान दीप्तिवाले स्नानकर दिब्यबस्त्र व कुण्डलादि शुभ भूषण धारणकर चले २१ व सब भूषण बस्त्रादि धारण किये नगरकी शोभा देखनेके लिये सुग्रीवकी स्त्रियाँ व सीताजी भी सङ्गचलीं २२ व अयोध्याजीमें राजादशरथजीके सबमन्त्रीलोग पुरोहित व मन्त्री व कुल गुरु वशिष्ठजीसे राज्याभिषेकके लिये सम्मतिकरनेलगे २३ उनमें सुमन्त्रादिमन्त्री जो प्रसिद्धहैं वे तो जानोंवेही अशोकविजय सिद्धार्थआदि औरभी बहुत मन्त्रीलोग एकाग्रचित्तहो रामचन्द्रजीकी बढ़तीके लिये व नगर राज्यकी भी बढ़तीके निमित्त बिचार करनेलगे २४ बिचार करते करते यहबातठहरी कि अब बहुतहीशीघ्र जयकेयोग्य महात्माश्रीरामचंद्र जीके अभिषेककेलिये जोजो मङ्गलवस्तु चाहियें सब मँगानीचाहिये २५ सबमंत्री व वसिष्ठजी इसतरहका बिचारकर व कार्य्याधिकारियोंसे कह रामचन्द्रजी के दर्शन करने के बिचार से नगर से निकले २६ व घोड़े जुतेहुये रथपर इन्द्रके समान विराजमान श्रीरामचन्द्रजी सवार होकर नन्दिग्राम से नगरको चले २७ चलनेके समय आगे सारथि के स्थान पर बैठ भरतजीने तो घोड़ों की बाग पकड़ी व शत्रुघ्नजी ने महाराज रामचन्द्रजी के ऊपर छत्रलगाया व लक्ष्मणजी तिनके शिरपर पङ्खा

करनेलगे २८ व इसतालके पङ्खेकेसिवाय श्वेतवालोंका एक चन्द्राकार पङ्खा राक्षसेन्द्र विभीषणजी ने अपने हाथमेंलिया २९ व उस समय आकाशमें आय देवतालोग व महर्षिलोग रामचन्द्रजीकी स्तुतिकरने लगे उसका शब्द रामचन्द्रजीके समीपवर्त्ती सबलोग सुनते चलेजाते थे ३० व उससमय रथपरसे अच्छीतरह शोभा न देखपड़नेके कारण सुग्रीवजी पर्ब्बताकार शत्रुञ्जय नाम महाराज दशरथजी के हाथीपर सवारहुये ३१ व इसीतरह सब बानरलोग मनुष्योंका रूप धारणकर सुन्दरभूषण वस्त्रादि धारणकर नवहजार हाथियोंपर पाँच पाँच सात सात एकएक पर चढ़े ३२ व शङ्खोंके शब्द चारोंओर से होते व नगारे तुरुहियोंकी धुधुकारहोती इन सबके शब्दोंके बीचमें पुरुषब्याघ्र श्री-रामचन्द्रजी अनेकों धवरहरवाली अयोध्यापुरी को चले ३३ रामचन्द्र जीको समाजसहित आतेदेख जो नगरनिवासी लोग राजमार्ग्ग के किनारे देखनेकी इच्छासे खड़ेथे अपने शरीरकी शोभासेशोभित रथपर चढ़े अतिरथ राघवजीको उनलोगोंने देखा ३४ व ठौरठौरसे रामचंद्र जीको आशीर्ब्बाद देनेलगे उन्होंने हाथआदि के उठाने व अन्यसञ्ज्ञा जनानेसे सबको आनन्दित किया फिर वे लोगभी जब भाइयोंके संग रामचन्द्रजीका रथ इधरको तो पीछे पीछे चले ३५ अमात्यों ब्राह्मणों व प्रजाओंके संग शोभासे रामचन्द्रजी ऐसे शोभितहुये जैसे नक्षत्रोंसे चन्द्रमा ३६ नगारेताल झाँझआदि बाजेबजाते व मंगलशब्द उच्चारण करतेहुये आगे चलनेवाले लोगोंसे संयुक्त रामचन्द्रजी चले ३७ अक्षत सुवर्ण गायें कन्या ब्राह्मण व लड्डूआदि मङ्गल वस्तुलिये और बनियां लोग ये सब मङ्गलार्त्थ रामचंद्रजी के आगे आगे चले ३८ मार्ग्गमें रामचंद्रजी सुग्रीवकी मित्रता व हनुमानजीका प्रभाव व वानरोंके अ-द्भुत अद्भुतकर्म्म मंत्रियोंसे कहते चलेजाते थे ३९ व वानरोंके कर्म्म व राक्षसोंका अद्भुत बलवीर्य्य सुनसुन सब अयोध्यापुरबासी विस्मितहुये ४० महातेजस्वी श्रीरामचंद्रजी ये सब समाचार कह हृष्टपुष्ट जनों से भरी अयोध्यापुरीमें पैठे ४१ वहां रामचंद्रजी के आगमनके हेतुसे सब पुरबासी अपनेअपने गृहपर पताकाबाँधकर तैयारीकररहेथे व सबकेगृह देखतेदेखते इक्ष्वाक्कादि राजाओंके रहनेकास्थान अपने पिताके गृहमें

श्रीरामचन्द्रजी प्राप्तहुये ४२ व पहुंचतेही श्रीरामचन्द्र अर्थयुक्त मधुर बाणीसे धर्म्मचारियोंमें श्रेष्ठ भरतजीसेबोले ४३ कि महात्मा सुग्रीवजी के पिताजीके मन्दिरमें लेजाय कौशल्याजी व सुमित्राजी व कैकेयीजीके प्रणाम करालावो ४४ व अशोकबनिकासहित सबसे श्रेष्ठ जो बड़ाभारी हमारा मन्दिरहै उसमें सुग्रीवजीकोटिकावो ४५ रामचन्द्रजी के ऐसे बचनसुन सत्यबिक्रमी भरतजी सुग्रीवजीका हाथपकड़ प्रथम कौशल्या-दिकों के प्रणामकराय फिर उस रामचन्द्रजीके मन्दिर को लिवालेगये ४६ जैसेही भरतजी उस मन्दिरकी ओर सुग्रीवजी को लेचलेहैं कि वैसेही शत्रुघ्नजीकी आज्ञा से परिचारकलोग मसालें व दीपक व पलंग बिछौने सबलेकर जायवहां पहुंचगये ४७ जबवहां सुग्रीव जी अच्छी-तरहसे बैठे तो भरतजीबोले कि स्वामी रामचन्द्रजीके अभिषेककेलिये समुद्रोंसे जललानेकेलिये वानरोंको आज्ञादीजिये ४८ सुग्रीवजीने यह सुन रत्नोंसे बिभूषित सुवर्णके चारघड़े मँगवाय चारवानरोंको दिये ४६ व उनचारो वानरोंसे कहा कि जिसमें प्रातःकाल होतेहोते चारोंसमुद्रों के जलसे पूर्ण चारो घड़ेलेकर आपलोग आय हमलोगोंको देखो वैसा उपायकरो ५० सुग्रीवजीकी ऐसी आज्ञापाय हाथियों के समान डील वाले चारोवानर एकएक घड़ा हाथमेंलेले गरुड़ के समान शीघ्रगामी हो आकाशको उड़गये ५१ व जाम्बवान् हनुमान् गवय व ऋषभ ये चारोवानर एकएक समुद्रसे जलभरे कलशलेले प्रातःकाल होतेहोते आगये ५२ व यहीलोग पाँचसै नदियोंकाभी जल कलशोंमें लेतेआये उनमें पूर्ब्बवाले समुद्रसे जलसेपूर्ण सबरत्नोंसे बनाकलश सुन्दर सेना-वान् अतिबल सम्पन्न जाम्ववान्जी लाये ५३ व ऋषभनाम वानरश्रेष्ठ बड़ी शीघ्रताकेसाथ दक्षिण के समुद्रसे लालचन्दन व कपूर लगेहुये सुवर्णके कलशमें जलभरकर लाये ५४ व गवयनाम वानरश्रेष्ठ पश्चिम के महासागरसे लालरंग के बड़ेभारी सुवर्णके कलशमें जल भर बहु-तही शीघ्रआगये क्योंकि इनवानरश्रेष्ठका वेग पवनके समानथा ५५ व उत्तरके महासागर से जोकि अयोध्याजी से सब समुद्रोंकी अपेक्षा अतिदूरहै धर्म्मात्मा सब गुणयुक्त व गरुड़ पवन के समान वेगवान् अतिबलवान् हनुमान्जी सबसे शीघ्र जलपूर्ण कलशलाये ५६ तिन

वानरश्रेष्ठोंका लायाहुआ सब समुद्रों व पाँचसै नदियों का जल राम-
चन्द्रजीके अभिषेककेलिये देख शत्रुघ्नजीने सब मन्त्रियोंके संग बैठेहुये
५७ वसिष्ठजीसे व सब सुहृदोंसेभी कहा ५८ शत्रुघ्नजीके बचन सुनने
के पीछे जितन्द्रिय व वृद्ध वसिष्ठजी ने सब ब्राह्मणोंको संगले सीता
सहित रामचन्द्रजीको रत्नोंसे बनीहुई बड़ीभारी चौकीपर बैठाया ५६
उन ब्राह्मणोंमें ये प्रधान थे जैसे कि वसिष्ठ विजय जावालि कश्यप
कात्यायन गौतम व वामदेव ६० इन ब्राह्मणश्रेष्ठोंने स्वच्छ सुगन्धित
व पवित्र उसजलसे नरब्याग्घ्र श्रीरामचन्द्रजीका अभिषेक किया जैसे
आठो वसुओंने इन्द्रजीका अभिषेक किया था ६१ व उनसब ब्राह्मणों
ने पहिले तो सब ऋत्विजोंसे अभिषेक करवाया फिर कन्याओंसे फिर
मन्त्रियोंसे फिर योधोंसे फिर अतिहर्षित बनियों महाजनोंसे ६२
उसकेपीछे सब औषधियुक्त जलसे फिर देवतालोगों ने आयआय आ-
काशमें खड़ेहो ऊपरहीसे आकाशगंगा के जलसे अभिषेक किया फिर
चारोलोकपालों ने फिर अन्य सब देवताओंने ६३ जब इसतरह अभि-
षेक होचुका तो जो रत्नोंसे शोभित किरीट पूर्ब्बसमय में ब्रह्माजी ने
बनवायाथा व जब दीप्ततेजस्वी राजामनुका अभिषेकहुआ था तबउनके
शिरपर धरागया था ६४ फिर उन मनुजीके बंशमें जो राजा लोगहुये
अभिषेककेपीछे सबके शिरपर सुवर्णकी बनीहुई व महाधनोंसे शोभित
६५ व नानाप्रकारके रत्नोंसे शोभित व नानाप्रकार की वस्तुओंसे वि-
चित्र सभामें नानाप्रकारके मणियोंसे बनीहुई चौकियोंपर बैठाय बैठाय
विधिपूर्ब्बक धरागया ६६ वही किरीट अभिषेक के पीछे महात्मा वसिष्ठ
जीने सब ऋत्विजोंके हाथोंसे छुआय छुआय सब भूषण साथों के साथ
श्रीरामचन्द्रजीके शिरपर धराया ६७ किरीट धरने के पीछे शत्रुघ्नजीने
महाराजाधिराजके ऊपर श्वेतछत्र लगाया व श्वेत बालोंका चमर
वानरोंके ईश्वर सुग्रीवजीने हाथमें लिया ६८ व दूसरा श्वेत बालोंका
चमर राक्षसों के इन्द्र बिभीषणजीने लिया ये दोनों जने दोनों बगल
खड़ेहो चमर ढुराने लगे व एक सुवर्णकी बनीहुई व अति चमकती हुई
बड़ीभारी माला इन्द्रकी प्रेरणासे वायुने आय श्रीरामचन्द्रजीकोदी ६९
व इंद्रही की प्रेरणा से उन्हीं बायु ने सब रत्नोंसे संयुक्त व मणियों से

विभूषित मोतियों का एकहार श्रीरामचन्द्रजीको दिया ७० व रामचंद्र जीके तिस अभिषेकमें तिसके योग्य बुद्धिमान् श्रीराघवजीके निमित्त देवता व गन्धर्व्वतो आय गानेलगे व अप्सरालोग नाचनेलगीं ७१ व रामचन्द्रजीके उस उत्सवमें पृथ्वीभरमें ठौरठौर अन्न फलापका अकाल मेंभी होआया व सब वृक्ष जिनका समय भी न था फलफूलउठे व जिन पुष्पोंमें सुगन्ध भी न थी वेभी सुगन्धित होउठे ७२ इसके पीछे महाराजाधिराज चक्रवर्त्ती श्रीरामचन्द्रजीने लाषघोड़े व लापही धेनु व सौ बैल ब्राह्मणोंको दिये ७३ फिर तीशकिरोड़ असरफियां ब्राह्मणोंको दीं फिर बड़ेमोलके नानाप्रकारके बस्त्र व भूषण भी ब्राह्मणोंको दिये ७४ फिर महाराजाधिराज ने सूर्य्यके किरणोंके समान प्रकाशित मणियोंसे जड़ी व सुवर्णासे बनी दिब्यमाला सुग्रीवजीको दी ७५ व फिर चंद्रमाके किरणके समान प्रकाशित वैदूर्य्यमणिसे बने दो बिचित्र अङ्गद बालिके पुत्र अंगदजीको दिये ७६ व फिर बीचबीचमें श्रेष्ठमणियोंसे गुहा चंद्रमा के किरणोंके समान प्रकाशित मोतियोंका हार सीताजीको दिया ७७ व रामचन्द्रजीकी ओर निहार उनका अभिप्राय पाय श्रीजानकीजीने दो बस्त्र जो कभी पुराने न होसकें व बहुतसे शुभ भूषण हनुमान्जीको अपने करकमलों से उठायकर दिये ७८ व फिर श्रीजनकनन्दिनीजीने अपने गलेसे हार निकाल सब वानरों की ओर व श्रीरामचन्द्रजी की ओरभी निहारा ७९ जानकीजीके मनकी अभिप्राय जाननेवाले श्रीरामचन्द्रजी जनकात्मजाकी ओर देख बोले हे भामिनि हे सुभगे जिसके ऊपर सन्तुष्ट हुईहो उसे हार देडालो ८० श्रीमहारानीजीने वह हार भी श्रीहनुमान्जीही को दिया ८१ क्योंकि तेज धारणाशक्ति यश चतुरता सामर्थ्य विनय नीति पौरुष विक्रम व बुद्धि येसब पदार्थ तो सदा उन्हीं हनुमान्जीहीमें बिद्यमान रहतेहैं फिर और किसकोदें ८२ तिस हारसे वानरश्रेष्ठ हनुमान्जी ऐसे शोभितहुये जैसे चन्द्रमा के किरण समूह के समान श्वेत बादरसे पर्व्वत शोभित होताहै ८३ सब वानर वृद्ध व सब वानरोत्तम इसीतरह जो जिसके योग्यथा उसकी वैसीपूजा कीगई ८४ फिर बिभीषण सुग्रीव हनुमान् जाम्बवान् आदि और भी सब वानरश्रेष्ठ बस्त्रभूषणादिकों से रामचन्द्रजीकी ओरसे यथोचित

पूजितहुये ८५ व जिनको और किसी रत्नादिकोंकी इच्छाहुई व जिनको नहींभीहुई उन सबको रत्नधनादि पदार्थदेदे श्रीरामचन्द्रजीने अयाची करदिया इससे अति प्रहृष्ट मनहो सब जहां जहां टिकेथे अपने अपने स्थानपर गये ८६ तिसके पीछे द्विविद,मैन्द व नीलको महाराजने सब कामदिये क्योंकि इनमेंभी बड़े विशेष गुणथे ८७ इसतरह प्रत्येक वानर को यथेच्छ पदार्थ दे व कृपादृष्टिसे सबकी ओर निहार श्रीरामचन्द्रजी ने सबको बिदाकिया व वे सब अपनी किष्किन्धापुरीको चले गये ८८ व वानरश्रेष्ठ सुग्रीवजी भी रामचन्द्रजी का अभिषेकदेख व रामचन्द्रजी से वस्त्र भूषणादिकोंसे पूजितहो अपनी किष्किन्धापुरीमेंजायपहुंचे ८९ व धर्म्मात्मा विभीषणजी भी अपनेसङ्गवाले राक्षसोंकेसाथ रामचन्द्रजी की ओरसे अपनेकुलका धनराज्य तो प्रथम पायहीचुकेथे व लङ्काकेराजा थे प्रायः किसी वस्तुकी इच्छातो थीहीनहीं इससे कुछयहांसे दिया भी नहींगया प्रसन्नचित्त अपनीराजधानी लङ्काको रामचन्द्रजी की आज्ञा शिरपरधर चलेगये ९० इसतरह सबलोगोंको बिदाकर श्रीरामचन्द्रजी शत्रुरहितहो अपनाराज्य करनेलगे परमउदार श्रीरामचन्द्रजी ने बड़े हर्षकेसाथ राज्यकिया ९१ एकदिन धर्म्मवत्सल श्रीरामचन्द्रजी धर्म्मज्ञ लक्ष्मणजी से बोले ९२ हेधर्म्मज्ञ पूर्व्वकालसे बहुतराजाओंसे भोगीहुई व सेनासहित इस सम्पूर्ण पृथ्वीका पालन हमारे साथहीसाथ करोजो कहोकि एकहीसमयमें दोराजाओंका निर्व्वाह नहींहोसक्ता तो ऐसानहीं कहते जैसे पिताके सामनेहीपुत्र इसराज्यमें युवराजपदवी भोगतेचले- आयेहैं वैसे हम जानोंराजाहैं तुम युवराजपदवी को अङ्गीकारकर राज्य का कुछभार उठाओ ९३ जब सबतरहसे रामचन्द्रजी ने व भरतजीने भी युवराजपदवीपर लक्ष्मणजी को नियतकिया परन्तु लक्ष्मणजी ने अङ्गीकार न किया तो फिर महात्मा श्रीरामचन्द्रजी ने भरतजीको युव- राजपदवीपर नियतकिया ९४ भरतजीको युवराजपदवीदे श्रीरामचन्द्र जी ने समय समयपर पौण्डरीकयज्ञ व अश्वमेधयज्ञ सङ्गहीकिया फिर अश्वमेधयज्ञ तो बारबार करतेरहे ९५ व ग्यारहहजार वर्षतक राज्य करनेमें बहुतबहुत दक्षिणा देदे व सुन्दर सुन्दर घोड़ेछोड़कर दश अश्वमेधयज्ञ किये ९६ व आजानुबाहु बड़ीचौड़ीछातीवाले महाप्रतापी

श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणको अनुचरपाय इस पृथ्वीकाराज्य करतेरहे ९७ जबतक रामचन्द्रजी ने राज्यकिया तबतककहींबिधवास्त्रीका रोदननहीं सुनाईदिया व नकिसीको सर्पसेभयहुई नकिसीके कोई रोगहुआजिसके कारण उसकोभयहो ९८ व सब पृथ्वीभर चोररहितहोगई व अनर्थ किसीको न स्पर्शकरसका व न किसीवृद्धने अपनेसे छोटेबालक का प्रेत कार्य्यकिया ९९ व सबजन मुदितहीरहे तथा सब छोटे बड़ेलोग अपने अपने धर्म्ममें तत्पररहे केवल रामचन्द्रजीको ही देखतेरहे परस्पर कोई एकदूसरेको कष्टनहींदेतेरहे १०० व एकएक मनुष्यके हज़ार हज़ार पुत्रहोतेथे उनअपने पुत्रोंकेसङ्ग हज़ारोंबर्षतक मनुष्यजीतेथेरामचन्द्रजी के राज्यमें ऐसा समय रहा १०१ उस समय सब वृक्षोंमें सदातो फूल लगे रहते व सदा फल व सदा उनकी जड़ें हरी बनी रहतीं व गञ्जी आदि कंदमूलभी सदा बनेरहते जब लोग चाहतेथे तभी मेघ बरसतेथे व जब चाहतेथे तभी पवन बहताथा १०२ लोग संतुष्टहो अपने अपनेही कर्म्ममें लगे रहतेथे व सबप्रजा धर्म्ममें तत्पररही कोई झूंठनहीं बोलताथा येसब बातें रामचंद्रजीके राज्यके समयमें रहीं १०३ जबतक ग्यारह हजारबर्षतक श्रीरामचंद्रजीने राज्यकिया तबतक सबलोग सब शुभलक्षण युक्त होतेरहे व सब अपने धर्म्म में परायण रहे १०४ यह धर्म्मयुक्त यश देनेवाला आयुर्बल बढ़ाने वाला व राजाओं को बिजय देनेवाला आदि काव्य बहुत दिनहुये कि बाल्मीकिजीने बनाया वसब पद इसके वेदके प्रमाण से युक्तहैं १०५ जोकोई पुरुष इसे नियम से प्रतिदिन सुनताहै वह सब पापोंसे छूट जाताहै जो पुत्रकी कामना से सुनता वह पुत्रपाता जोधनकी कामनासेसुनता वह धनपाताहै १०६ ॥

चौपाई ॥ जोनर सुनत समअभिषेका। पुत्रकाम सुतलहत अनेका ॥ धनकामी धनलहत बहूता। राजारिपुहति जयमजबूता १। १०७ जिमि माता कौशल्यारामहि। यथा सुमित्रा लषनललामहि ॥ भरतहिजिमि कैकेयीमाई। जीवपुत्र भाइँ तथालुगाई २। १०८ सर्ब्ब सरल कर्म्मनके कारक। रामबिजय यह अघगण हारक ॥ जो रामायण सुनत गुनत मन। चिरञ्जीवि सो होत लहत धन ३। १०९ वाल्मीकि कृत यह रामायण। श्रद्धायुतके सुनत परायण॥ जीतिक्रोध चितधरिनहिं दूजा।

दुर्ग्गतरतसो सबलहि पूजा ४।११० वालमीकि कृत यह रामायन । सुनतजोइ लहिसो निजआयन ॥ निजबंधुनसँग रमतसुनीके । रघुपति सों बरलहत सुठीके ५।१११।११२ सुनेसकल सुर प्रमुदितहोहीं । जो यहिसुनत करत हितओहीं ॥ ज्यहिगृह यह रामायण रहई । भूत प्रेत त्यहिबाट न गहई ६।११३ राजासुनियहि विजयीहोई । स्वस्ति विदेशी लहत नगोई ॥ रजस्वला नारी जो सुनई । जनत श्रेष्ठसुत अरु दुखलुनई ७। ११४ यहइतिहास पुरातन जोई । पूजतपढ़त लहतसुख सोई ॥ सकलपापसों छूटतनीके । दीर्ग्घायुर्ब्बल होतसुठीके ८।११५ द्विजमुखसों जोसुनत महीपा । करिप्रणाम पावतसो द्वीपा ॥ सबऐश्वर्य्य बहुरिसुतपावत । यामहँ संशय नहिं कछु आवत ९।११६ यहसब रामायण जोसुनई । अरु जोपढ़ै बहुरि मनगुनई ॥ विष्णुसनातन राममहाना॥ नारायणप्रभु करु त्यहिमाना १०। ११७ यह इतिहास देव पुरमाहीं । पूर्ब्बगयहुकछु संशयनाहीं ॥ देवनपढ़ा पढ़हु तुमनीके । पढ़ै विष्णुबल तब शुभहीके ११।११८ सुनतगहत रामायणकेरे । सुरसन्तुष्ट होतपुनिटेरे॥ अरुपीतर प्रमुदित त्यहिऊपर । होतभलीबिधिसों यहिभूपर १२।११९ ऋषिकृत यह संहिता पुनीता । प्रतिपद जामहिं राघव सीता ॥ जो करिभक्तिलिखहिंनरयेही । सुरपुरबासहोततिनकेही १३।१२० ॥

हरिगीतिका ॥

धनधान्य वृद्धि कुटुम्बवृद्धि सुसिद्धि बर नारी लहै ।
अरुसुख अनुत्तम अर्थसिद्धि समृद्धि बहु भारीसहै ॥
जो सुनै यहबर आदिकाब्य महार्थ युत क्षिति मेंसही ।
सो सकल बाञ्छित पावईनर कछुक संशयहै नहीं १४।१२१ ॥
दीर्ग्घायुकर आरोग्यकर यशकरण शुभप्रदहै सही ।
सौभ्रातृ करबर बुद्धिकररु प्रतापकर ऋषिने कही ॥
यहिपढ़हु सज्जन सुनहु पुनि मनगुनहु देर न लावहू ।
रघुनाथ नाथ सनाथकरिहैं यहँ लगावहु भावहू १५।१२२ ॥

इत्यार्षेरामायणेवालमीकीयेलङ्काकाण्डेत्रिंशदधिकशततमस्सर्ग्गः १३० ॥

समाप्तोयंलङ्काकाण्डः ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	**राग**	गोपीचंद भरतरी	स्वयम्बोध
…योगवाशिष्ठ	रागप्रकाश	कथा श्रीगंगाजी	ज्ञान चालीसी
…नंदामृतवर्षिणी	लावनी	अवधयात्रा	दोहावली
…त्व्यतत्वकौमुदी	**क़िस्सा वग़ैरह**	भरतरीगीत	बालाबोध
काव्य	नानार्थनौसंग्रहावली	दानलीला वनागलीला	विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक
…रसागर	ब्रह्मसार	दोहावली रत्नावली	किताबजंत्री
…ध्यासागर	शिवसिंहसरोज	गोकर्णमाहात्म्य	गणितकामधेनु
…श्रामसागर	भक्तमाल	श्रीगोपालसहस्रनाम	लीलावती
…म सागर	इन्द्रसभा	कथासत्यनारायण स॰	पटवारियों की पुस्तक ४ भा॰
…जविलास बड़ा व छोटा	विक्रमविलास	हनूनाटक	**वैद्यकभाषा**
…ष्णाप्रिया	बैताल पच्चीसी	हनुमानबाहुक	निघण्ट
…जयमुक्तावली	सिंहासनबत्तीसी	जनकपच्चीसी	अमरविनोद
…नेकार्थ	पद्मावती खण्ड	हरिहरसगुणनिर्गुणाप॰	वैद्य जीवन
…न्दोर्णव पिंगल	शुकबहत्तरी	दावली	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली
…रराज	बकावली सुमन	वनयात्रा	अमृतसागर बड़ा व छोटा
…तसई सूलव सटीक	चहारदरवेश	कायस्थवर्णनिर्णय	वैद्यमनोत्सव
…भाविलास	क़िस्सा हातिमताई	विहारवृंदावन	रसायन प्रकाश
…लसी शब्दार्थ प्रकाश	अपूर्व कथा	समर विहार वृंदावन	दुलाजुल गुब्बा
…जनावली	क़िस्सा गुलसनोबर	कल्पभाष्य	दिल लगन
…मरत्न	सहस्ररजनीचरित्र	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद	**ज्योतिषभाषा**
…ुगलविलास	रॉबिन्सन्‌का इतिहास	उपदेशचन्द्रिका	जातकचन्द्रिका
…विचन्द्रिका	सीताहरण	मंगलविनोद	जातकालंकार
…रहमासा बलदेवप्रसाद	सतीविलास	विजयचन्द्रिका	दैवज्ञाभरण
…नोहर लहरी	क़िस्सा मर्द औरत	सिद्धांतसंग्रह	ज्ञानस्वरोदय
…गालहरी	संगीत प्रह्लाद	नवीनसंग्रह	रमलसार
…मुनालहरी	**मुतफ़र्क़ात**	रामविनयशतक	रमलनौरत्न
…द्विनोद	शनिश्चर की कथा	**फ़ारसी**	इन्द्रजाल
…ारबत्तीसी	ज्ञानमाला	अक्षरावली	लीलावती संस्कृत

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत की पुस्तकें	संस्कृत उर्दू टीका	उर्दू कैथी महाजनी	व शिमाली २९ सन्
लघुकौमुदी	मनुस्मृति	टिकट के लाइसन्स का	तरमीम मजमूआ ज़ाबि
सिद्धान्त चन्द्रिका	विष्णुहारीत	ऐक्ट २ सन् १८७४ ई०	फ़ौजदारी ११ सन् १८७
भाषातत्व प्रकाश	महिम्न स्तोत्र	नागरी	तक़ावी के क़ायदे
पंचमहायज्ञ	व्रतार्क	ऐक्ट लगान मग़रबी व	सवाल व जवाब पुलि
निर्णयसिन्धु	याज्ञवल्क्य स्मृति	शिमाली १० सन् १८५९ ई०	अवध रुहेलखण्डरे
कर्म्मविपाक	संस्कृत भाषा टी०	इंडियन पिनल कोर्ट मज-	का दस्तूरुल अमल
संग्रहशिरोमणि	अमरकोष तीनों काण्ड	मूआ ज़ाबिता फौजदारी	ताज़ीरात हिन्द
भगवद्गीता पचरत्न	याज्ञवल्क्य स्मृति	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०	महाभारत सबलसिं
दुर्गापाठ मूल व सटीक	संध्यापद्धति	ऐक्ट रजिस्टरी २० सन्	१- आदिपर्व्व
विष्णुभागवत	व्रतार्क	१८६६ ई०	२- सभापर्व्व
कथायमद्वितीया	भगवद्गीता टीका ह०	ऐक्ट स्टाम्प १ सन् १८६२ ई०	३- विराट् पर्व्व
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीता टीका आ-	ऐक्ट स्टाम्प अदालत २६	४- उद्योगपर्व्व
कायस्थकुलभास्कर	गीतगोविंद	सन् १८६७ ई०	५- भीष्मपर्व्व
कायस्थधर्म्मनिरूपण	कथा सत्यनारायण स-	मजमूआ ऐक्ट अवध ल-	६- द्रोणपर्व्व
तथाच्छोटा	टीक	गान १९ सन् १८६८ ई०	७- कर्णपर्व्व
मयुरासभा	शार्ङ्गधरसंहिता	पुरगुज़ारी २६ सन् १८६६	८- शल्यपर्व्व
ज्योतिष	पाराशरी सटीक	ई० वग़ैरह	९- गदापर्व्व
मुहूर्त्तगणपति	शीघ्रबोध सटीक	ऐक्ट स्टाम्प दस्तावेज़ात	१०- स्त्रीपर्व्व
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	लघुजातक	१८ सन् १८६९ ई०	११- स्वर्गारोहण
मुहूर्त्तचिन्तामणि स-	परमार्थसार	ऐक्ट ताल्लुक़दारान मक़-	किताबें जो छप रहीं
मुहूर्त्तदीपक	सामुद्रिक	रूज़ अवध २४ सन्	उनके नाम नीचे लि
बृहज्जातक सटीक	गरुड़पुराण	१८७० ई०	मदनपारिजात
जातकालंकार	रामविवाहोत्सव	ऐक्ट चौपायों का मदाख़-	मार्कण्डेय पुराण उर्दू
जातकाभरण	अपरोक्षानुभव	लत बेजा १ सन् १८७१ ई०	का सहित
होरामकरन्द	लग्नचन्द्रिका	ऐक्ट मजमूआ ज़ाबिता-	ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई०
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	क़ानून कैथी	फौजदारी १० सन् १८७२ ई०	दीवानी
षट्पञ्चाशिका	पटवारियों के क़ायदे	ऐक्ट मालगुज़ारी मग़रबी	